महाभारतदर्पण

द्वितीय भाग

विराट, उद्योग, भीष्म और द्रोणपर्व सहित

स्वस्तिश्री महाराजाधिराज श्रीउदितनारायण
काशिराजकी आज्ञानुकूल

श्री गोकुलनाथ प्रभृति कवीश्वरोंने संस्कृतका सारांश यथावस्थितसे अतिपरिश्रमसे भाषा, वर्ण, मात्रा वृत्तमें अतिरुचिर रचना किया और उक्त काशिनरेश ने कलकत्ता महानगरके शास्त्रप्रकाश मुद्रायन्त्रमें श्री पण्डित लक्ष्मीनारायण से शुद्धकराय संवत् १८८६ में मुद्रित कराया था

सम्पूर्ण विद्यानुरागियोंके अनुरागार्थ और पौराणिक ऐतिहासाकांक्षियों के पठन पाठनार्थ

बाजपेयि पण्डित रामरत्न के प्रबन्ध से

तीसरीबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखानेमें छपा
अगस्त सन् १८९१ ई०

महाभारत बार्त्तिक की भिन्न २ पर्वें ॥

आदिपर्व ॥

इसपर्वमें महाभारतकी प्रशंसा व कथा श्रवणफल व अक्षौहिणी संख्या व सृष्टिविस्तार और पौरववंशके राजाओं की कथा सविस्तर वर्णित है ॥

सभापर्व ॥

मयदानवकरके पाण्डवोंकेहित अद्भुतसभा की रचना व नारदकृत पाण्डव प्रतिसभावर्णन श्रीकृष्णके उपदेश से युधिष्ठिर को राजसूय यज्ञकरने के लिये जरासन्धवध व पाण्डवोंप्रति चारों दिशाओंकी विजय व युधिष्ठिर और शकुनी से जुआंहोना और द्रौपदी सहित सब धनहारना और दुश्शासन करके द्रौपदी बस्त्राकर्षणादि कथायें वर्णित हैं ॥

बनपर्व ॥

पाण्डवों का बनबास सूर्यार्चन से ताम्रपात्र युधिष्ठिर को प्राप्तहोना अर्जुन को स्वर्गजाकर इन्द्रसे मिलापकरना भीमसेनकरके किर्मीर राक्षस बध राजा नलकीकथा, लोपामुद्रासे अगस्त्यजी का बिवाह राजाभगीरथ को गंगाजीके दर्शनार्थ तपकरना व गंगाजीसे व शिवजीसे बरप्राप्तहोना किरातरूप महादेव व अर्जुनकायुद्ध व रामायणकी कथा वर्णित है ॥

बिराटपर्व ॥

इसपर्व में युधिष्ठिरादि पाण्डवों का दुर्योधनसे जुयेमेंहारके राजाबिराटके यहांगुप्तवास और वहांहीं द्रौपदीमेंआसक्त कीचकका भाइयोंसहित भीमसेन के हाथसे मरण पुनिदुर्योधनादि कौरवों को राजाविराटकी गौवें हरना वहां गुप्तवेष अर्जुनसेयुद्ध पश्चात् बिराटको अपनीपुत्री उत्तरा को अर्जुनकेपुत्र अभिमन्यु को बिवाहिदेना ॥

उद्योगपर्व ॥

राजा नहुषकी कथा, संजय, बिदुर, धृतराष्ट्र और श्रीकृष्णजीका अनेक

सूचीपत्र ॥

———000———

बिराटपर्व ॥

इति ॥

उद्योगपर्वसूचीपत्र ।

इति ॥

महाभारतदर्पण ॥

बिराटपर्वदर्पणः ॥

दोहा ॥ चिन्तामणिगणनाथके चरणकमल अभिराम । जिन में श्रीसुखदा बसति सकल सिद्धिकी धाम ॥ सोरठा ॥ चौरे उर बनमाल लकुट मुकुट पट पीतधर । लखै यशोमति लाल यह हियहर घन बनकबर ॥ जगत मूल जगदम्ब जग जनपालनि जगतमय । करै बिन्ध्य अवलम्ब कृष्ण सहोदरि नन्दजा ॥ मम गुरु श्रीबलभद्र पंथ पयोनिधि शास्त्रके । देत अनेकन भद्र जासु चरण बारिज बरण ॥ श्लोकः ॥ नारायणंनमस्कृत्य नरंचैवनरोत्तमं । देवींसरस्वतींव्यासन्ततोजयमुदीरयेत् ॥ जनमेजयउवाच ॥ दोहा ॥ मेरे प्रपितामह सकल बसिबिराटपुर माह । रहेगुप्तकेहि भांति सो महाबीर नरनाह ॥ पतिब्रत धारिनि भागबर ब्रह्म बादिनी जौन । रहीगुप्त केहिभांतिसो द्रुपदसुता छबिभौन ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ ज्यों बिराट पुरमें रहे प्रपितामह तवभूप । वर्ष तेरहें कहत त्यों सुनहु गूढ़ धरिरूप ॥ आश्रमसों चलिधर्म नृप आसनसों इमिबैन । कहोतेरहों वर्षयह गुप्त बसैंमतिऐन ॥ कहूं एक बसिये बरषहे अर्जुन बरबीर । गुप्त होयकै धारि कछु गूढ़वेषगम्भीर ॥ अर्जुनउवाच ॥ धर्मराजवरदानजो तुमको दयो अनूप । ताते फिरिये जगतमों कोउन लखिहै भूप ॥ कहतराष्ट्र

हम बासतहँ सुखसों करिये जाय । गुप्तहोय रमणीय अतिजहँ जनगणसुखदाय ॥ चेदिमत्स्य पांचाल शुभदेश दशारणजौन । मल्ल शाल्वके नगर बर कुन्तिभोज पुरतौन ॥ और राष्ट्रबहु बासके योग्यरुचै जहँ भूप । तहां बितावहु बर्ष यह धरिकै गूढ़ स्वरूप ॥ बसिबेकहो बिराटपुर धर्मराज भगवान । धर्मवान सो भूपहै नगर रम्य सुखदान ॥ मत्स्यबंश शुभशीलहै नृपबिराट बलवान । वृद्ध बदान्य सुवृत्त है प्रियबादी सुखदान ॥ बसि बिराटपुरमें कछू कारिभूपतिको कार्य । गुप्तबितावैं बर्षयह गूढ़वेष धरि आर्य ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ जौन कार्यकोकरोगे हमहिं कहो सब तौन । मत्स्याधिपके नगरमें हे अर्जुन करिगौन ॥ अरजुनउवाच ॥ हेभूपति हमकरैंगे कौनभांतिसों कर्म । कौन कर्मकरिरहैंगे भली भांति नृपधर्म ॥ मृदुबदान्य ह्रीमानहै धार्मिक बिज्ञनरेश । आपु आपदा कष्टमें करिहौ कहा बिशेश ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सुनहु करैंगे जौनहम नृपबिराट पहँजाय । ताकेह्वैहैं सभासद बिद्याबुद्धि दे-खाय ॥ कंकनाम द्विजहोहिंगे अक्षनिपुण प्रियद्यूत । करिबश करिहैं भूपको सहित अमात्य अकूत ॥ हमैं जानिबे बूझिहै जो बिराट मतिमान । हम कहिहैं नृपधर्मके हम हैं सखा सुजान ॥ कहावृकोदर करहुगे तुम बिराटकोकार्य । सो बिचारिकै कहहुतुम महाबीर मतिआर्य ॥ भीमउवाच ॥ करताकहिहैं पाकके हम बिराट सों भूप । हम ब्यंजन जानतबिरचि यथा स्वाद अतिरूप ॥ दारु ल्याइहैं पाकहित हम बहुबिधि अतिमान । हम सुयुधिष्ठिर भूपकेहैं औदनिक सुजान ॥ कर्म अमानुषकरैंगे हम बिराटको सर्ब । अरिप्रमत्त हम हनैंगे गहिहैं नाग अखर्ब ॥ युधि०उवाच ॥ जासों ब्राह्मणहोयकै पावक मांगोआय । खाण्डव बनके दहनको लखि सकृष्ण सुखदाय ॥ तौनधनंजय अन्यको कैसेकरिहैकर्म । जीतो जेहिराक्षस उरग एक सुरथते पर्म ॥ बासुकिपन्नगराजकी हरी स्वसा अभिराम । तौन धनंजय अन्यको करी कौनबिधि काम ॥

सूर्य तापकरमें अधिक बिप्र मनुजमें श्रेष्ठ। आशीबिष बिषधरणमें अग्नि तेजमें जेष्ठ॥ उदधि दहन मधि श्रेष्ठहै बरषाकर परजन्य। नागनमें धृतराष्ट्र है ऐरावत गजगन्य॥ पुत्र प्रियन में अधिकहै भार्या सुहृद सुनाहु। तथा धनुर्द्धरमें अधिक जिष्णु महाबर बाहु॥ इन्द्र सदृश श्रीकृष्ण को सखा धनंजय जौन। कैसे धनुगांडीवधर परकृत करिहै तौन॥ पांचबर्ष रहि इन्द्रके सदन माहँबरबीर। दिब्य अस्त्रसिगरेलहे अरिबनदहनगँभीर॥ रुद्रनमें द्वादशसदृश रबिसु तेरहौंजौन। बसुमें ग्रहमें दशमसम शूरबीरबलभौन॥ महाबाहुज्याघाततें जासुकठिनबलपूर। ज्ञान सब्यशाची बिदितजिष्णु महाबल शूर॥ भटमृगगणको सिंह सो सुहृदप्रिया अतिआर्य। सो अर्जुनकेहिभांतिसो परकोकरिहै कार्य॥ अर्जुनउवाच॥ खण्डहोय हम रहैंगे करत प्रतिज्ञा भूप। ज्याघर्षणको गुप्तकर सुनहु उपायअनूप॥ बलयबाहु भरि पहिरिकै मूंदिलेहिंगे तौन। कुण्डलधरिहैं कादिहम ज्वलित अर्क समजौन॥ कम्बु बलयते गुप्तकै धरिहैं प्रकृति तृतीय। शिरोरुहणकी रचितकरि बेणीअति रमणीय॥ कहिहैंनाम बिहन्नलाधरेखण्डको भाव। नृपको अन्तःपुर सकल हमकरिहैं सह चाव॥ गीतनृत्यबादित्रके बिबिध बिचित्रबिधान। करिहैंशिक्षा नृपतिकी कन्याको सुखदान॥ बहु बदान्यता भावके कहिकै बचनललाम। रंजनकरिहैं प्रजनको धारिवेष छलधाम॥ कृष्णाकी हम सखीहैं रही युधिष्ठिर धाम। पूछे नृपति बिराटसों हम कहिहैं अभिराम॥ कपटवेष यहिभांति धरि हमबसिहैं नृपधर्म। मत्स्यराजके धाममें सुख समेत अतिपर्म॥ वैशम्पायनउवाच॥ अर्जुनकेइमि सुनिबचन धर्मनृपति सबिधान। पूछनलागेनकुल सों जानि सुमति सुखदान॥ युधि०उवाच॥ कहहु कहा करिहौ नकुलतहां जायकैकर्म। शूरसुखीसुकुमारतुम दर्शनीयअतिपर्म॥ नकुलउवाच॥ अश्वनके हमहोहिंगे रक्षक तहँचलिभूप। शालिहो-

श्वको ज्ञानहै हमको सुनहु अनूप ॥ ग्रन्थिक अपनो नामकहि अश्वचिकित्सा मान । करिहैं हयरक्षणतहां कर्म पर्मसुखदान ॥ भूप युधिष्ठिर नकुलके सुनिकै वचन प्रमान । लगे कहन सह-देव सों जानि महा मतिमान ॥ युधि० उवाच ॥ तुम करिहौ सह-देव तहँ जाय कौनसोंकार्य । नृपबिराटको करिसुखी बिहरहु ऐसे आर्य ॥ सहदेवउवाच ॥ गोरक्षक हम होहिंगे जानत तौन वि-धान । तंत्रिपाल हम कहेंगे अपनो नाम सुजान ॥ हम जानत गोगुण अगुण रोगाचिकित्सा सर्व । हमतव गोगणमेंरहें भूपति काल अखर्व ॥ हम चीन्हतहैं वृषभसो मूत्रजासकरिघ्रान । बंध्या नारी गर्भधरि जनमैं पुत्रसुजान ॥ ऐसेहम रहिहैं तहां सुनहु भूपवरधर्म । हमैंनकोऊ जानिहै गुप्ततथा बिधिमर्म ॥ युधि० उ-वाच ॥ प्रिया हमारीभार्या प्राणहुँ ते गुरुआर्य । तौन द्रौपदी औरको कैसे करिहै कार्य ॥ कछू न करिजानतप्रिया बनिता जनको काम । पतिब्रता भूपतिसुता सुकुमारी अभिराम ॥ मा-ल्यगन्ध भूषणवसन इनको जोपरिधान । जानतिहै सोसुन्दरी कर्म न जानति आन ॥ द्रौपद्युवाच ॥ सैरंध्री हमहोहिंगी तासों कहि-हैं भूप । भूषणवसन सुमाल्यकी रचना करति अनूप ॥ भूप यु-धिष्ठिर केभवन द्रुपद सुताकेपास । रहतरही परिचारिका हम ताकी मतिरास ॥ ऐसे हमकै गुप्तकहि नृपबिराटसोंबैन । महिषी सुदेष्णानिकट हमरहिहैं मतिऐन ॥ सो यशस्विनीकरैगी मेरी रक्षणभूप । तुमको कछू न होयगो फेरिदुःखकोरूप ॥ युधि० उवाच ॥ कहति बचन कल्याणिके तुम कुलजाता पर्म्म । जानति पाप न साधमति थिरब्रतधारे धर्म्म ॥ दुहद हमारो पायसुधि यथा सुखी नहिंहोय । कल्याणी तुम तथाकरु रूपआपनो गोय ॥ युधि० उवाच ॥ जौन जौन तुमकहोहै करहु कर्म तुमतौन । समा-धान करिबुद्धिको हो तुमसब मतिभौन ॥ अग्निहोत्र रक्षणकरौ पुरोहित मतिमान । जाय द्रुपदके नगरमें बासकरौ सुखदान ॥

इन्द्रसेन सूतन सहित रथलैके मतिराम । जाय द्वारका पुरीमें
करौ वर्ष भरिवास ॥ द्रुपदसुताकी सखीसब सुहृद भृत्यगण जौ-
न । जाय द्रुपदके नगरमें बासकरौ सबतौन ॥ कहैंसबै तहँहम
नहीं जानत पांडवभूप । गयेबसे कहँजायकै कौनधारिकै रूप ॥
वैशम्पायन उवाच ॥ मंत्रसुकरि अन्योन्ययों भिन्नाभिन्न काहिकर्म । कहो
धर्मसों धौम्यतब शिक्षा कीन्हों पर्म ॥ धौम्य उवाच ॥ रक्षितकी जो द्रौ-
पदिहि तुम फाल्गुनसह भूप । विदित तुम्हैं वृत्तान्त है यथा लोक
अनुरूप ॥ बहुतभांतिके नीतिके धौम्यकहे वरबैन । सावधानसो
रहुगे धर्मनृपतिभातिऐन ॥ बहुतभांतिके धौम्यके सुनिशिक्षा
के बैन । धर्मनृपतिलागेकहन नीतिनिपुणमतिऐन ॥ युधि० उवाच ॥
शीक्षितहम मुनिवर भये तुमसों वक्ता कौन । कुन्ती बिदुर समान
हितहो ममतुम मतिभौन ॥ अबकरिबे जोकार्यसो करहु धौम्यतप
धाम । दुःखहरण अरिपैसदन जयकारण अभिराम ॥ वैशम्पायन-
उवाच ॥ ऐसेसुनि नृपधर्मके धौम्य महामुनि बैन । विधिवतवि-
चित्र रथानकी किया सुमंगल ऐन ॥ अग्निसमृद्ध सुकरि कियो
होममंत्र पढ़िपर्म । जाते आचिर मिलै मही ऋद्धिविजय यश
धर्म ॥ प्रदक्षिणा करि अग्निको विप्रनको नृपधर्म । चले सभ्रा-
तन द्रौपदी को आगेकरिकर्म ॥ गयेतहांते धर्मनृप तब मुनि
धौम्य विशाल । विप्रन सह कीन्हों गमन गयेदेश पांचाल ॥
इन्द्रसेन आदिक गये जहँ यदुपतिको ग्राम । शतसुऔदनिक
भृत्य सब रथलीन्हे अभिराम ॥ युधि० उवाच ॥ धर्मराज हम-
को दयो जेहिविधि को बखान । सुनहु जिष्णु तुम सों कहत
करिये तथा विधान ॥ शास्त्र वचन धारण किये ते पांडववर-
वीर । सहित द्रौपदी गये चलि कालिन्दी के तीर ॥ कूलगहे
दक्षिण चले यमुनाको लेवीर । देखन लागे देश गिरि दुर्ग
बिपिन गंभीर ॥ बास करत घनगहनमें लखिगिरि दुर्गउदार ॥
मारिमृगान को धनुर्द्धर निशिमें करत अहार ॥ करि उत्तर सुव-

शारणहि दक्षिणदिशि पांचाल। सूरसेनके देशमें चले सुगुप्त नृपाल॥ लुब्धक बोलत आपुको मत्स्यदेश केपास। धरेशस्त्र पांडवगये बनेअधिक बलराश॥ जनपदलखि कृष्णोकहो धर्मनृपति सोंबैन। छोममार्ग लखिपरत है निकट मत्स्यपुर हैन॥ आजुराति बासिये इहां हमको श्रमबलवान। यहसुनि अर्जुन सों कहो धर्मराज सुखदान॥ युधि॰उवाच॥ बीरधनंजय द्रौपदी को तुमलेहुउठाय। राजपुरीढिगवसैंगे बनके बाहरजाय॥ वैश-म्पायनउवाच॥ अर्जुन कृष्णाको लियो मृदुल अंकमें धारि। चलि बिराटपुरके निकट क्षितिपरदियो उतारि॥ पुरप्रवेश धरिशस्त्र कहँकीजे जिष्णुउदार। लखिसशस्त्र पुरजनहमें करिहैं व्यग्रबि-चार॥ अद्भुत अतिगाण्डीव धनु जोहिजानतसबदेश। सहित शस्त्रजोकरैंगे हमपुरमाहँ प्रवेश॥ क्षिप्रहमैंसबजानिहैंपांडवमनु-जनरेश। करिबेपरिहैफिरिबरषबारहबिपिनप्रवेश॥ अर्जुनउवाच॥ नदीकूलपरशमीयह बनसमीपअतिमान। दुरारोहघनशाख अ-तिनीरेनगरमशान॥ इहांदेखिसहिंपरतहै कहूंमनुजकोरूप। धर तशस्त्रयापैचढ़तजोनदेखिहैभूप॥ यापैधरिकैशस्त्रसबकीजैनगर प्रवेश। ऐसेकरिकैमंत्रतेलहिभूपालनिदेश॥ जिष्णुधरोगांडीव चढ़िअक्षयजौननिषंग। जासोंजीतोअसुरजेवज्रसारसमअंग॥ भीम नकुलसहदेवनृप सकलशस्त्रसमुदाय। अपनेअपनेशमी पर चढ़िकैराखेजाय॥ वैशम्पायनउवाच॥ शमीमाहँ अवकाशहोतहाँ धनुषधरिबीरा। तृणसोंआच्छादितकियोशस्त्रसकलगम्भीर॥ घन बर्षेभीजैनहीं शस्त्रादियोंछाय। बांधेतरुसोंएकशवअसमशान सोंल्याय॥ जातेचढ़ेनमनुजकोउशमीवृक्षपरआय। सबशरीरबी-भत्सलखिपूतिगन्धकोपाय॥ जयजयन्तअरुजयतबलजयत्सेन जयजौन। गुह्यनाम येधरतभे पांडवनृपबलभौन॥ यथाप्रतिज्ञा नगरको चलोचलोजबभूप। वर्षतेरहेंबासको धरिकैगुप्तस्वरूप॥

इतिबिराटपर्बणिबिराटपुरनिकटपांडवप्राप्तिवर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः १॥

छप्पय ॥ चलत बिराट पुरीको भूप । धर्मनृपति धरिध्यान अनूप ॥ सुस्तवकरनलगे मतिरास । दुर्गा त्रिभुवनेश्वरीतास ॥ श्रीयशुदानन्दनि अभिराम । नारायणकी प्रिय ललाम ॥ नन्द गोप कुलजाता जौन । बिंध्यवासिनी त्रिभुवनभौन ॥ सुररक्षणि करकंस विनाश । शिला परत जो गई अकाश ॥ भारावतरण को इतआय । धर्मोद्धार कीन्हों सुखदाय ॥ सुस्तव करन लगे तबभूप । दर्शन कांक्षाधरे अनूप ॥ अथस्तोत्रम् ॥ नमोऽस्तुवरदेकृष्णकुमारीब्रह्मचारिणि । बालार्कसदृशाकारेपूर्णचन्द्रनिभानने ॥ चतुर्भुजेचतुर्वक्त्रे पीनश्रोणीपयोधरे । मयूरपिच्छवलयेकेयूराङ्गदधारिणे ॥ भासिदेवीयथापद्मानारायणपरिग्रहे । स्वरूपंब्रह्मचर्यञ्चविमलन्तवखेचरी ॥ कृष्णच्छविसमाकृष्णासङ्कर्षणसमानना । विभ्रतीविपुलौबाहूशक्रध्वजसमुच्छ्रयौ ॥ पात्रीचपङ्कजीघण्टीस्त्रीविशुद्धाचयाभुवि । पाशन्धनुर्महाचक्रविविधान्यायुधानिच ॥ कुण्डलाभ्यांसुपूर्णाभ्यांकर्णाभ्यांचविभूषिता । चन्द्रविस्पर्धिनादेविमुखेनत्वंविराजसे ॥ मुकुटेनविचित्रेणकेशबन्धनशोभिना । भुजगाभोगवासेनश्रोणिसूत्रेणराजता ॥ विभ्राजसेचाबद्धेनभोगेनेवेह मन्दरः । ध्वजेनाशिखिपिच्छानामूच्छ्रितेनविराजसे ॥ कौमारव्रतमास्थायत्रिदिवम्पावितन्त्वया । तेनत्वंस्तूयसेदेवित्रिदशैःपूज्यसेपिच ॥ त्रैलोक्यरक्षणार्थायमहिषासुरनाशिनि । प्रसन्नामेपुरश्रेष्ठेदयांकुरुशिवाभव ॥ जयात्वंविजयाचैवसंग्रामेचजयप्रदा । ममापिविजयन्देहिवरदात्वंचसांप्रतं ॥ विंध्येचैवनगश्रेष्ठेतपस्थामहिशाश्वतं । कालिकालिमहाकालि सीधुमांसपशुप्रिये ॥ कृतानुयात्राभूतैस्त्वंवरदाकामचारिणि । भारावतरणेयेत्वांसंस्मरिष्यन्तिमानवाः ॥ प्रणमन्तिचयेत्वांहिप्रभातेचनराभुवि । नतेषांदुर्लभंकिञ्चित् पुत्रतोधनतोपिवा ॥ दुर्गात्तारयसेदुर्गेयत्वंदुर्गास्मृताजनैः । कान्तारेष्ववसन्नानांमग्नानांचमहार्णवे ॥ दस्युभिर्वानिरुद्धानांत्वंगतिः परमानृणां । जलप्रतरणेचैवकान्तारे

श्चटवीषु च ॥ ये स्मरन्ति महादेवीं न च सीदन्ति ते नराः ॥ त्वं कीर्तिः
श्रीधृतिः सिद्धिर्ह्रीर्विद्या सन्ततिर्मतिः ॥ संध्या रात्रिः प्रभा निद्रा
ज्योत्स्ना कान्तिः क्षमा दया ॥ नृणां च बन्धनं मोहं पुत्रनाशं धनक्षयं ॥
व्याधिं मृत्युभयं चैव पूजिता नाशयिष्यसि ॥ सोऽहं राज्यात्परिभ्रष्टः
शरणं त्वां प्रपन्नवान् ॥ प्रणतश्च यथा मूर्ध्ना तव देवि सुरेश्वरि ॥
त्राहि मां पद्मपत्राक्षि सत्ये सत्या भवस्व नः ॥ शरणं भव मे दुर्गे
शरण्ये भक्तवत्सले ॥ एवं स्तुता हि सा देवी दर्शयामास पाण्ड
वं ॥ उपगम्य तु राजानमिदं वचनमब्रवीत् ॥ देव्युवाच ॥ शृणु
राजन्महाबाहो मदीयं वचनं प्रभो ॥ भविष्यत्यचिरादेव संग्रामे
विजयस्तव ॥ मम प्रसादान्निर्जित्य हत्वा कौरववाहिनीं ॥ राज्यं
निष्कंटकं कृत्वा भोक्ष्यसे मेदिनीं पुनः ॥ भ्रातृभिः सहितो राजन्प्री
तिं प्राप्स्यसि पुष्कलां ॥ मत्प्रसादाच्च ते सौख्यमारोग्यं च भविष्य
ति ॥ ये च संकीर्तयिष्यन्ति लोके विगतकल्मषाः ॥ तेषां तुष्टा प्रदा
स्यामि राज्यमायुर्वपुः सुतं ॥ प्रवासे नगरे वापि संग्रामे शत्रुसंकटे ॥
अटव्यां दुर्गकान्तारे सागरे गहने गिरौ ॥ ये स्मरिष्यन्ति मां राजन्य
थाहं भवता स्मृता ॥ न तेषां दुर्लभं किंचिदस्मिंल्लोके भविष्यति ॥
इदं स्तोत्रवरं भक्त्या शृणुयाद्वा पठेत वा ॥ तस्य सर्वाणि कार्याणि
सिद्धिं यास्यन्ति पाण्डव ॥ मत्प्रसादाच्च वः सर्वान्विराटनगरे स्थि
तान् ॥ न प्रज्ञास्यन्ति कुरवो नरा वा तन्निवासिनः ॥ इत्युक्त्वा वरदा
देवी युधिष्ठिरमरिन्दमं ॥ रक्षां कृत्वा च पाण्डूनां तत्रैवान्तरधीयत ॥
इति दुर्गास्तवः समाप्तः ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ टीका ॥ गये प्रथम विराट भूमि-
तिपास राजाधर्म । वैडूर्यरूप सुकनक मंडित अक्ष लीन्हें कर्म ॥
कहा भूप विराट आवत देखि अद्भुत रूप । महानुभाव विचारि
मन में भरो तेज अनूप ॥ अभ्रमाण्डत यथा दिनमणि अग्नि
भस्म पिधान । लखो ऐसे धर्मनृप को मत्स्यपति मतिमान ॥ लखि
मंत्रिन पास पूछत नृप विराट सुजान । कौन है यह प्रथम आवत जासु
नहिं उपमान ॥ नहीं रथ नाहिं दास कुंजर सुभट संग बलवान ।

मूर्धाभिषेकित भूपहैं को शक्रसम अतिमान॥ चलते आवत पास मेरे महा निरुपमरूप। यथा सरसिज पास तारण मंदोत्कट अतिरूप॥ जाय भूप बिराटपै नृपधर्म बोलेबैन। सर्वस्व रहित सु हमहिं जानहु विप्रहैं मतिऐन॥ रहोचाहत पास तव नृपयथा कामउदार। कुरुनाथके सुनि बचनभूप बिराटकिय स्वीकार॥ प्रीतिकरि नृपधर्मपास बिराट बोलेबैन। कहांसों तुमइहां आये कहहु सो मतिऐन॥ गोत्रकहिये नाम अपनो सुगुण शीक्षित जौन॥ युधि०उवाच॥ धर्मनृपके सखाहैं हम बिप्र हैं मतिभौन॥ बैयाघ्रपाद्य सुगोत्र जानत अक्षविद्या मर्म। कंकनामक विप्र विद्या द्यूतमें अतिपर्म॥ राजाउवाच॥ ब्याघ्रलों यमगिरे ताते ब्याघ्रपाद सुनाम। तासुकुलमें भयेते बैयाघ्रपद्य सधाम॥ नाम अपनो नृपबतायो धर्मधुरन्धर दक्ष। विप्रसे सुविशेष करिकै करै सूरणस्वक्ष॥ कियेपूर्ण विशेष करिकै द्विजनको भूपाल। विप्रयाते कह्यो आपुहि बीरविज्ञ विशाल॥ कङ्कयमको नाम याते कह्यो निज अभिधान। धर्मभूप सुधर्म धर्मी महा मेधावान॥ बिराटउवाच॥ देतहैं हमतुम्हैं बरजोहोय इच्छितबिप्र। द्यूतप्रिय हमबश्य तवतुम करहु शीक्षित क्षिप्र॥ युधि०उवाच॥ हीनके सँगहोय कबहूं प्राप्त वाद न भूप। देहुबर मम जितनधन को सकैराखि अनूप॥ बिराटउवाच॥ करैअप्रिय जौनतवसो बध्य हमसों क्षिप्र। जानपद जनजानिहैं सममोहि तुमको बिप्र॥ होहुगे तुम सखा मेरे ममसमान समृद्ध। कहहुगे तुमजाहिताको करहिंगे हम ऋद्ध॥ वैशम्पायनउवाच॥ पाय भूप बिराटको यहि भांति बर नृपधर्म। बसेताके पासतासों भयेपूजित पर्म॥

इतिश्रीविराटपर्वणियुधिष्ठिरप्रवेशवर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २॥

वैशम्पायनउवाच॥ रोला॥ भीमसेनसुपायअवसरगयेसिंहसमान। रहैभूप बिराटजहँ सहसचिव सुमतिप्रधान॥ लयेमन्थनदण्ड करमें सहित दर्वीमाम। ओदनिकको रूपधारि समसूर तेजस

धाम ॥ बसनपहिरे श्यामगिरिसम अंगअति बलरास । देखि आवतभूपलागेकहन सचिवनपास ॥ सिंहसमअतिरूप आवतकौनयह बरबीर । पूर्व्वकबहूंलखो नहिंहम भरोतेज गँभीर ॥ करत यामेंतर्क हम कछु ठीकठहरत हैन । गन्धर्व पतिकैहै पुरन्दर महाबलको ऐन ॥ कौनयह मम दर्शनार्थ सुचलो आवत बीर । जाय इनसों बूझिआवहु यथातत्व गँभीर ॥ सुनतबचन बिराटके उठि गये दूत सुजान । लगेबूझन भीमसों वृत्तान्त सुमतिप्रमान ॥ जायभीम बिराटके ढिगदीनबोलेबैन । बिरचि ब्यंजन सकल जानत सूदहम मतिऐन ॥ बिराटउवाच ॥ सूदजानि न परतमोको सुनोतुमबरबीर । रूपश्रीसों भूपसे तुम बिक्रमालयधीर ॥ भीमउवाच ॥ नामबल्लव धर्म नृपके सूदहैं हमभूप । बिरचि जानत पाकषटरस भरेस्वाद अनूप ॥ नहींबलमें तुल्य ममकोउ युद्धकर्म सुजान । सिंहराज गहिलेत हमतव होहिंगे सुखदान ॥ बिराटउवाच ॥ पाककोअधिकारतुमकोदेतबल्लवसर्व । नहींतुमसों सदृशहै कोउ भूमिमाहँ अखर्व ॥ महानसकोपायके अधिकार बल्लव नाम । भये गुप्त बिराट के कै सुहृद अति अभिराम ॥

इतिश्रीविराटपर्वणिभीमसेनप्रवेशवर्णनोनामतृतीयोऽध्याय: ३ ॥

दोहा ॥ चिकुरकुञ्चित करि सुग्रन्थित रचित बेणीपर्म । धरे दक्षिण पार्श्वपर अति असितलाँबे नर्म ॥ एकपहिरे बसनकृष्णामलिन सूक्ष्म अनूप । धारि सैरंध्री समान सुआर्त अपनो रूप ॥ देखिदौरे मनुज नारी लगीं बूझन आय । कौनहौकर्त्तव्य तुमको कहाहै शुभदाय ॥ सैरंध्रिहैं हमकह्यो कृष्णापास तिनके बैन । कियो चाहत कार्य्य सौंपै हमें जो सहचैन ॥ गिरा सुनि अभिराम ताको रूप अद्भुत चाहि । कहत कोउनसुमति दासीअन्नबांछित ताहि ॥ बिराटपत्नी केकयीही जौनसुमतिललाम । द्रुपदजाको लखो तोदिसिथतरही ऊपर धाम ॥ भरी रूप

अनाथ लखिकै बसनधारे एक। बोलिबूझ्यो कौनतुमकाकरहुगी सबिवेक॥ द्रौपद्युवाच ॥ सैरंध्रिहैं हमयहांआईजानिभूपसधर्म्म। कार्य्यताको करें सोंपै हमें योग्य जो पर्म्म॥ सुदेष्णाउवाच ॥ तथा रूप न रावरो तुमयथा बोलति बैन। दासदासी लखे हम बहु- भांतिके गुणऐन॥ निम्नगुल्फ सुसंहतोरू त्रीणिजासुगँभीर। पञ्चरक्त षडंग उन्नत हंससर समधीर॥ नाभिशब्द सुमनीषा गंभीर अति अभिराम। अधरकरपद जीभरक्तचषान्त सुखमा धाम॥ नासिकाचषश्रवणनखअरुवरपयोधरग्रीव। परमउन्नत अंगतेरे ये सुपरमासीव॥ पीनतौसुनितंब उरसित कचसचि- क्कनश्याम। सघनवरुणी बीम्बओष्ठी सुकटिहै नवक्षाम॥ गुप्त नाड़ी कम्बुग्रीवा बदन इन्दुसमान। पुण्डरीक समान लोचन गन्धतनसुखदान॥ श्रीसदृशतवरूप राजितकहौहौतुमकौन। भरी ऐसेरूपसों सतिदिब्य दासीहोन॥ किन्नरीगन्धर्बि यक्षी अप्सरा सुरबाम। शचीकैतुमरोहिणी कै पन्नगी अभिराम॥ बारुणीकै दनुजजाकै ग्रामदेवी पर्म। कहहुइनमें कौन हौ तुम रूपराशि सुधर्म॥ द्रौपद्युवाच ॥ मानुषी सैरंध्रि हमहैं द्रुपदजाके पास। रहतहींशृङ्गारताको रचतही सुखरास॥ अंगरागविधान जानति माल्यरचना जौन। केशपास बिचित्र बिरचति बसन भूषणतौन॥ सत्यभामा द्रौपदीके रहतही हमपास। पायआ- दर बसनभोजन भरी आनँदरास॥ मालिनी यहनाम मेरोधरो तिन अभिराम। तौन तुम्हरे बसोचाहत हम सुदेष्णाधाम॥ सुदेष्णाउवाच ॥ राखि हैं हम शीशऊपर तुम्हैं अपने पास। भूप मोहित होयगोपै लखितुम्हैं अभिरास॥ येइमोहित राजबनिता तुम्हैं लखिकै सर्ब। पुरुषको नहिं मोहिहै लखि रूपराशि अ- खर्ब॥ वृक्षनिष्कुटके हमारे देखिकै तवरूप। नमितशाखा भये हैंते लखहु चरित अनूप॥ लखि अमानुष रूप भूपबिराटलौ अभिराम। मोहितजि बशहोहिंगे तव सर्वथा बधकाम॥ इहां

आवहु तरल आयत लोचना बरबाम। तुमहिं लखि आसक्त को नहिं होयगो यहिधाम॥ गर्भधारत कर्कटी ज्यों आत्मकारण नास। तथा हमको होयगो यहिधाममें तवबास॥ द्रौपद्युवाच॥ लभ्यहम न बिराटको नहिं अन्यके सहप्रान। गन्धर्बमेरे पांचहैं पतिसदा कारक्त्रान॥ औरकोउ चहैमोको पुरुषकामी चण्ड। आइकै ते देत ताको प्राणहारक दण्ड॥ उच्छिष्टभोजन करैंगी नाहिं धोइहैं हमपाव। अन्नब्रसन बिशुद्ध सों पति लहतमेरे चाव॥ सहति हैं हमदुःख ऐसो कछुपाय निमित्त। रहतते पति पञ्चमेरे क्लेशपूरित चित्त॥ गुप्तमेरी करत रक्षा सुपति मेरेतौन॥ सुदेष्णाउवाच॥ राखिहौं इमिरख्यो जैसे चहति तू छबिभौन॥ वैशम्पायनउवाच॥ सहि सुदेष्णासों सुऐसे द्रौपदी बिश्वास। गुप्तहोय बिराटपुरमें बसीताके पास॥

इतिमहाभारतदर्पणेबिराटपर्वणिद्रौपदीप्रवेशबर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः ४॥

रोला॥ गोपके धरिबेषको सहदेव अति अभिराम। गयेभूप बिराटहैं तहँ महामतिके धाम॥ जाय ठाढ़ेभये जहां रहोगोधन ठाट। देखि अद्भुतरूप पठयो चारभूप बिराट॥ देखि आवत सिंहसो चलि मत्स्यपति भूपाल। लगेबूझन कौनहौ काकियो चहत बिशाल॥ नहीं देखो पूर्ब तुमको कहहु सत्य अबाद। लगे कहन बिराटसों सहदेव तब घन नाद॥ सहदेवउवाच॥ अरिष्ट नेमि सुबैश्य हैं हम धर्म नृपके पास। रहत हे तहँ गोष्ठ रक्षण करत हे मतिरास॥ बसौ चाहत रावरे के पासहम सुनुभूप। नहीं जानतगये पांडवकौन देशअनूप॥ बिनाकीन्हें कर्म लहतन जीवजन आहार। तुम्हें छोड़िन औरहमको रुचत भूप उदार॥ बिराटउवाच॥ बिप्रकैतुम क्षत्र सम्भव भूप क्षितिके सर्ब। कहहु सत्य न योग्यहै तवबैश्यता अतिखर्ब॥ कौनजानत कर्मकरि तुमसहित शीक्षामर्म। कहा लेहौ कर्म्मकरि धन कहहु सोतुमधर्म॥ सहदेवउवाच॥ पांचपांडुसुपुत्र तामें ज्येष्ठधर्म सुरूप।

आठशत सुसहस्र गोधनरहो ताकेभूप॥ तन्तिपाल सुनामताके रहे हम गोपाल। भूत भव्य भविष्य गोधनरहे लखतबिशाल॥ संख्या सुगण अरुदोष जानत मउनको हमसर्व। क्षिप्र गोधन कियो हम कुरुराजकोसु अखर्ब॥ दोहा॥ जानतवृषभनको नृपति पूजित लक्षणजौन। बंध्या मुत्रघ्राणकरि जाकोलहै पुत्रकोतौन॥ बिराटउवाच॥ शतसहस्रसुवरण तुम्हैंदेहैंहमगोपाल। हमजानत तुम करहुगे मम गोगण सुबिशाल॥ वैशम्पायनउवाच॥ राखो तहँ सह देवको देवर भूषण भूप। दये सौंपि गोपाल सब रहेजे पूर्व अनूप॥

इतिमहाभारतदर्पणेबिराटपर्वणिसहदेवप्रवेशबर्णनोनामपञ्चमोऽध्यायः५

वैशम्पायनउवाच॥ रोला॥ लखो कछुक बिलम्बमें नृपधरे बनिता रूप। बसन भूषण कुण्डलादिक बलय पाणिअनूप॥ छुटेबार प्रलम्ब भुजपर मत्तनाग समान। करत गतिते भूमि कम्पित दिव्यरूप महान॥ देखि आवत चलो भूपबिराट मानि अनूप। लगे बूझन सचिव सों यह कौन अद्भुत रूप॥ नहीं देखो पूर्व कबहूंपुरुषयहबलधाम। युवाबारणयूथनायकयथाउन्मदश्याम॥ छुटी बेणी लसै कुण्डल धरे भाल सुवेश। अंगजाके धनुषशार वर चर्म कैसेदेश॥ चलो आवत बेगितासों जाय बूझो मर्म। जोहि चष मुदलहत सुतसम मोहि दायक शर्म॥ सुनहु ऐसे रूपकोनहिं होतक्लीव पुमान। बूझिल्याये सभासद नृप पास बीरमहान॥ अर्जुनउवाच॥ गानमें अरुनाच्यमें हमबाद्यमें सरबज्ञ। सदशनारद महामुनिके भूपजानहु तज्ञ॥ कथनकीन्हें रूप मेरो शोकबर्द्धन भूप। दियो चाहत उत्तराको तौर्यत्रिक अतिरूप॥ देहु आज्ञा करत मोहि बृहन्नलामतिमान। रूपयह मोहिं प्राप्त भो जिहि हेतुतें दुखदान॥ सोनकहिबे योग्य मेरे है न माता तात। पुत्रजानो केसुपुत्री मोहिं भूपतिख्यात॥ बिराटउवाच॥ देत हम बरदान तुमको बृहन्नला गुणधाम। करहु शिक्षातौर्यत्रिक

की सुतामम अभिराम ॥ नहीं तुमसम कर्मयह सुनु वृहन्नला मतिमान । आसमुद्र सुभूमि शासन योग्य तुमहिं महान ॥ वैश-म्पायनउवाच ॥ दियो भूप बिराट आज्ञा वृहन्नलाकोचाहि । नृत्य गीत सिखाइबेमें करि परीक्षित ताहि ॥ युवतिजूह पठायताकी क्लीबता अजमाय । गुणिनपुंस कुमारिकाके दियोधाम पठाय ॥ कियो शीक्षित जिष्णु ताको तौर्यत्रिक अभिराम । सखीसह परिचारिका नृप सुताके बसिधाम ॥ बसे ऐसोभेषधरितहँ जाय अर्जुनबीर । नहींजानो तहांकाहू तासुरूप गँभीर ॥

इतिमहाभारतदर्पणेबिराटपर्वणिअर्जुनप्रवेशबर्णनोनामषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

वैशंपायनउवाच ॥ रोला ॥ वेषकैतवधरेआये नकुलतहँ नरनाह । जायलागे अश्वदेखन अश्वशाला माह ॥ अश्व देखत देखि भूप बिराटपठयोचार । अश्वदेखत कौनहैयहदिव्यपुरुषउदार ॥ कोऊहै अश्वज्ञ ल्यावहु बेगिमेरेपास । लेगयेते नकुल बोलेबि-जयमतिके रास ॥ देहिंगे धनधामहूजै सूतमम मतिभौन । कहा हेहोकौन कहिये कर्मजानतजौन ॥ नकुलउवाच ॥ हैंयुधिष्ठिर भूपके हम अश्वशीक्षकभूप । अश्वकेगुण दोषशीक्षा निपुण हमअनु-रूप ॥ हयचिकित्साकरतहैं बहुभांतिकीहमसर्व । होतकातरनहीं मोतेभयो शीक्षितअर्व ॥ कहतग्रन्थिकनाममेरोहैयुधिष्ठिरभूप ॥ बिराटउवाच ॥ अश्वबाहककरहैंगेमम बश्यतोअनुरूप ॥ होइबांछित तुम्हैं धनसोकहहु हेगुणधाम । तुरँगशीक्षायोग्य नहिंतुमभूपसे अभिराम ॥ हमैंदर्शननृपयुधिष्ठिर सदृशतो अतिपर्म । सहित भ्रातन्ह बसतकैसे बिपिनमें नृपधर्म ॥ नकुलउवाच ॥ जानिपरत न रहतकिमितेबसतकिहिबनमाहिं । होयतिनबिनबिकलआयोभूप हमतवपाहिं ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ रहेऐसेनकुलतहँगन्धर्वरूपसमान । हृदयचोरीकियोताहि बिराटभूपसुजान ॥ बसे ऐसे सकलपांडव मत्स्यपतिके पास । गुप्तह्वै प्रण पालिबे को धर्मधुर बलरास ॥

इतिमहाभारतदर्पणेबिराटपर्वणिनकुलप्रवेशबर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ७॥

जनमेजयउवाच ॥ रोला ॥ छन्नह्वै यहि भांति सो बसि सकल पांडवबीर । मत्स्यपुरमें कियो आगे कौनकर्मगँभीर ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ मत्स्यपति केपासबसि यहि भांति कारय जौन। कियो पांडव कहतहैं सो सुनहु भूपति तौन ॥ सभासद ह्वैनृप युधिष्ठिर मत्स्यपतिको अक्ष। भलीभांति खेलाय अति प्रियभयेभूपतिदक्ष॥ जीति भूप बिराट सों बसुदेत भ्रातन तौन। भीमि भक्ष्यसु बचत अधिकी मास आदिक जौन ॥ धर्मनृपके पास बेचत लेत सोधन भूप । गुप्तह्वै यहिभांतिकरत मिलापमिसि अनुरूप ॥ बसन जीरण लहत अर्जुन कन्यकन सो जौन। जायके सब पांडवनके हाथ बेचत तौन ॥ गोपकेधरि वेषको सहदेव दधिपय पर्म । आयके देजात हैं चलि पास भूपति धर्म ॥ नकुलको धनदेत जौनबिराट होयप्रसन्न। आयकैसो देतपांडव राजको सम्पन्न ॥ चरति कृष्णापास तिनके गुप्तह्वै अभिराम । यहिभांति सो सब बसे नगर बिराट के मतिधाम॥ रहत हैं धृतराष्ट्र सुत के भरे शङ्कासर्व। रहत देखत द्रौपदीको भये गुप्त अखर्व ॥ भयोचौथे मास तहां ब्रह्मनाम समाज । मल्ल आयें चहूंदिशि के द्विरद कैसेराज॥ तण्डुलादिक शरदऋतुमें अन्ननूतन होत। कहूं ब्रह्माको सुउत्सव करत भूमें घोत ॥ भयोचौथे मास तहां तौन उत्सव भूप । मल्लआये तत्रचहुं के भयानक सुकुरूप ॥ तिन्हैं भूप बिराट पूजो सहित बिहित बिधान। बीर्यसों उनमत्त अति बलसुमतिसिंहसमान ॥ लहो ब्रहुतनसों बिजयते मल्लभूपति पास । आइकै सब जुरे अति बल महा मतिके रास ॥ मल्लहो एक महाबल तेहि कियो तहँ मदनाद। नहींतासों सके करि कोउ मल्लयुद्ध बिवाद ॥ भये बिमनस मल्ल सिगरे गयेमनमें हारि। तेहि लरायो भीम सो नृप महाबल निरधारि ॥ भीमनहिं उत्साह कीन्हों युद्ध को बलवान। प्रगटताको मानिकै भयशिथिल सिंहसमान ॥ बांधिक-

क्षा भीम कीन्हींमल्लको आह्वान । जीमूतजाकोनामचहुँदिशि ख्यात अतिबलवान ॥ दोऊअतिबलभरेदोऊ उतसाह सों गभीर। मल्लविद्या निपुणदोऊयुद्धमें बरबीर ॥ दांवनानाभांतिके दोउकरतजीति बिचारि । जानुजंघा भुजनसोंदोउलरेंबर बलधारि ॥ भरेअति उत्साह सो मदमत्तगजसेबीर। कृतप्रति कृत करत दोऊ भुजनसों गम्भीर ॥ मुष्टिसोंअरु तलनसोंहनि बज्र घातसमान। तुमुल दारुण युद्ध तिनसों भयो युद्धमहान ॥ वृत्र बासव सेलरेदोउबीर अतिबलभौन। परसपरदोउकरतभर्त्सन गराजिकै अतितौन ॥ भुजनसोंतहँभीमलीन्हों पकरिताहि उठाय। डारिदीन्हीं भूमिपैशतबारउर्द्धफिराय ॥ मरदिमारोभीमताको भरोभीम अमर्ष । मरोलखि जीमूत मल्ल बिराट पूरेहर्ष ॥ दियो भूप बिराट बहुधन भीमको सुखदान । और मल्लन को दियो बसु भूप धनदसमान ॥ भीमतुल्यन पुरुषकोऊ औरपावत उद्ध । सिंह ब्याघ्रनसों करावत लखै महिषीयुद्ध ॥ महाबलते भीम अर्जुन तौर्यत्रिकसोंपर्म । सहित महिषी कियोभूप बिराट कोसहशर्म ॥ तुरग शीक्षानकुल भूपहि बिबिध भांति देखाय । तुष्ट करि कै मत्स्यपतिको लियोधन समुदाय ॥ देखि वृषभ बिनीत सिगरो पुष्ट गोधन भूप। मत्स्यपति सहदेव को धन दियो बहुत अनूप ॥ द्रौपदी यहिभांति तिनको देखिक्लेश महान । होति है न प्रसन्न श्वासा लेति रहति सुजान ॥ यहि भांति गुप्त बिराटपुरमें बसे पांडवपर्म । करत भूप बिराटकेसब यथा नियमित कर्म ॥

इतिमहाभारतदर्पणेबिराटपर्वणिजीमूतबधबर्णनोनामअष्टमोऽध्यायः ८॥

बैशम्पायनउवाच ॥ रोला ॥ बसत ऐसेमत्स्यपुरमें गुप्तपांडवसर्ब । बीतिगे दश मास बाकीबर्ष रहिगो खर्ब ॥ द्रौपदी करिकै सुदोष्णाको शुश्रूषणकर्म । रहतिताकोकरत सेवनकरै दुःखितमर्म ॥ बसै अंतःपुरीमें बरबाम जौन सुजान । द्रौपदीको करैंते सब

भांति सों सनमान ॥ भूपको सैनेश कीचक महाबलको धाम। द्रौपदी को देखिकै सोभयो मोहित काम ॥ चित्तमें धरि द्रौपदी को गोसुदेष्णापास। कहनऐसे लगोतासोंबचन लीन्हेंहास ॥ पूर्व कबहूं लखी नहिं यह रूप कैसी धाम। करति है उनमादि मेरेचित्तको बशकाम ॥ कहुसुदेष्णा कौनहै इत कियो कहँते गौन। करति बशमथि चित्तमेरो तास औषध तौन ॥ यहसुदेष्णा रावरी परिचारिका अभिराम। योग्य भूषित करण के यहअहै मेरोधाम ॥ लेसुदेष्णाकी सुआज्ञा नीचकीचकतौन। जायसिंहिनि पासजम्बुक तथातहँ कियगौन ॥ लगोकृष्णासों कहन यहिभांति सस्मित बैन। इहांआई कहांते तुम कौनहौ छबिऐन ॥ चन्द्रबदनी कहहु हमसों सत्यसो अभिराम। भरी परमा कांतिसो सुकुमार ताकोधाम ॥ कमलनयने अंगतो सब बशीकरके यन्त्र। चारुहासिनि सुधासे तवबचन मोहनमंत्र ॥ नहीं तुमसी लखी भूपर भरी सुखमाबाम। देवियक्षी किन्नरी कै श्रीशची अभिराम ॥ कांतिसों अतिभरा तुम्हरो लखतबदन अनूप। करैगोनाहिं स्वबशकाको महामन्मथ भूप ॥ हार योग्य सुसद्यउन्नत कनककुम्भ समान। करत उरसिज रावरे अतिव्यथित कठिन महान ॥ लसति त्रिबली भंगसी दबिधरे उरसिज भार। उदरक्षाम गँभीरनाभी लांकतनु सुकुमार ॥ सरित पुलिन समान जंघा सघनपीन अलोम। मदनरोग अमोघ कारणअंगतो छबितोम ॥ बढ़ीहै मदनाग्निमेरे अंगमेंअति रूप। शांति संगमहै तिहारो सुन्दरीसुअनूप ॥ आत्मदान सुवृष्टिकारक जलद संगम जौन। रावरो मदनाग्नि सामककरो शीतलतौन ॥ करहुमेरेसंग सुन्दरि सौख्यको अभिराम। जान पान बिधान भूषण बसनसों छबिधाम ॥ प्रथम बनितन तजैंगे हम संगमेरे जौन। दाससे हमबसैंगे तवपास हे छबिभौन ॥ द्रौपद्युवाच ॥ नहींतुमहिं समानहैं हमसुनहु कीचकपर्म। सैरंध्रि

हैहम करतिहैं नित भृत्यकारक कर्म ॥ नहीं तुमको योग्यहम परदारहैं सुनुबीर । प्रिया प्राणिनकों सुदारा धरहुधर्म गँभीर॥ करहुमति परदारमें तुम कबहुंबुद्धि अनीति । कामबश नरलहतहैं ध्रुवप्राण अन्तिकभीति ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ द्रौपदीके बचन सुनि यहिभांति कीचकपर्म । जानिमातन दोषको नहिंलोकनिन्दितकर्म ॥ द्रौपदीसों कह्योऐसे कहहुतुम नहिंबैन। बाणबिद्ध त्वदर्थमोको कियोस्मर छबिऐन ॥ भयोबश प्रियबचन बादी छोड़ि ऐसोमोहि । नियत पश्चात्ताप सुन्दरि होयगोफिरितोहि॥ सुनहुहम यहिराज्यके प्रभुत्राण कारकबीर। नहींमोसम भूमिपै कोउ भरोसुबल गँभीर॥ रूपयौवन भाग्यभूषितभोगकर अभिराम । करहु ममसँग भोगतजिदासित्वहे छबिधाम ॥ राज्ययह ममदत्त याकी होहु स्वामिनि पर्म। भोग नानाभांति के करुमोहिं भजुसह शर्म ॥ द्रौपदी यहिभांति के सुनि सूत सुतके बैन। करत निन्दित ताहि बोली बचन शत मति ऐन ॥ द्रौपद्युवाच ॥ सूतसुत नहिं मोहि करिकै तजहु जीवन सर्ब । करत रक्षणपञ्च पतिमम महाबल गन्धर्ब ॥ नहीं कीचक लभ्यहैं हम तुम्हैंछोड़हुमोह । हनैंगेगन्धर्ब तुमको महाबलकरिद्रोह ॥ गगनमें पातालमें तुम गयहु सागरपार । नहीं तिनसों बचहुगे सो महाबल खेचार ॥ कालरात्री सदृशकीचक करत बांछितमोहि । गहो चाहत चन्द्रमाको यथाबालक जोहि ॥ चहत अप्रियकियो तिनको मूढ़ तुमसों जौन। गगनगत पातालमें नाहिं बचतातिन सों तौन ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ बचनऐसेद्रौपदीके सुनिसो कीचक बीर । चलि सुदोष्णापै गयोअति मोहमग्न गँभीर॥ कहो सैरंध्री भजैजेहि भांति मोको तौन । कहहुसो सोउपाय भगिनी चतुर तुम मतिभौन ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ सुनिसुदोष्णा बचन ताके भरे बहुत बिलाप । दियो महिषी मंत्रताके कृपासहित अमाप ॥ कोऊ उत्सवमें सुरासह अन्नकोसमुदाय । देतममकरि

तात राखहु सदनमाहँ बनाय ॥ सुरालीबे पठैदेहैं ताहि तुम्हरे पास । मधुर कहिकैबचनकीजो ताहि बश मतिरास ॥ बैशंपायनउबाच ॥ इवसाके सुनि बचन कीचक जाय अपनेधाम । सुरा सह बनवाय ब्यंजन धरेअति अभिराम ॥ कार्यको करिमंत्ररा-खोदोजौनकीचकपास । राखिमनमें द्रौपदीसों कहो तौनप्रकास॥ सुदोष्णोवाच ॥ जाहु सैरंध्री उठहु तुम बेगि कीचक भौन । पान इच्छा मोहिं ल्यावहु सुराउत्तम जौन ॥ सैरंध्र्युउबाच ॥ जाहिंगी हमनहीं महिषी सुनहु कीचक भौन । तुम्हैंहै सब बिदित जोसो निलज कामीतौन ॥ करैंगी तव धामके जेकाम हैं अभिराम । तुम सुजानति जौन कीचक करैहै मम काम ॥ रावरे के भौनमें तेहिं कहो हमसोंजौन । कामबश सो होयगो लखिमोहिं दुर्मति भौन ॥ हैं सुदोष्णारावरेके बहुत दासीदास । तिन्हैंपठवहु जाहि लीबे सुरा कीचक पास ॥ सुदोष्णोबाच ॥ नहीं कीचक कहैगो कछु निलजताके बैन । मम पठाई जानितुमको सो महामति ऐन ॥ दियोयह कहिकैसुदोष्णाकनक भाजन आनि । चलीशङ्काभरी कृष्णाकुमति ताकीजानि ॥ सैरंध्र्यबाच ॥ पतिन्हताजि ममऔरनर मेंजाय मानसजौन।सत्यसातिहिमम न बशकर होयकामीतौन॥ बैशम्पायनउवाच ॥ भानुको तबकियो राधन द्रौपदी मनलाय । जानि दिनमणि दुखित कृष्णहिं कृपाकर सुखदाय ॥ दियेराक्षस दोय रक्षण हेतगुप्त अखर्ब । रहत कृष्णासाथ राक्षस समयमेंतेसर्ब ॥ त्रस्ति आवति मृगीसी लखिभरो कीचकचाव । उठोपुलकित होय ज्योंलहि पारगामी नाव ॥ कीचकउवाच ॥ भयो सुन्दर आगमन तो मोहिं दायकशर्म । स्वामिनी ह्वै रहहु ममकरि भवन भूषित पर्म ॥ बसन भूषण दिव्यमणिमय धारिकै अभिराम । बसहुमेरी सेजपर यह रचित जौन ललाम ॥ पिवहु मदिरा माधवी ममसंग रूप निकेत ॥ द्रौपद्युवाच ॥ मोहिं पठयो राजमहिषी सुरा आननहेत ॥ पानकीन्हों चहति आतुरह्वै पिपासामान ।

कीचकउवाच ॥ रहहुसुन्दरि और जैहैं सुरालै सुखदान ॥ द्रौपद्युवाच ॥
होय पातिब्रत सत्यमेरो कृष्णदेव यशस्य । तौन कीचक महा
पापी करैमोकोबस्य ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ बोलिकै यहिभांति कीचक
गहो दुपटातास । रहीक्षणक बिसूरि कृष्णा ऊर्द्धलैकै श्वास ॥
दियो ताहि ढकेलि कृष्णै कटो तरुसो तौन । गिरो कीचकभूमि
ऊपर महाबलको भौन ॥ कम्पपूरित द्रौपदी तेहिभूमि ऊपर
डारि । धर्म नृप जहँ हेगई तहँ भाजि शरण बिचारि ॥ भजी
कृष्णाहिं जातकीचक केश पकरोजाय । लखत भूपति धर्मकेकिय
चरण घात गिराय ॥ दोय राक्षस रक्षणारथ दियेहे जेमान ।
बेगसों तिन आइमारो कीचकहि बलवान ॥ कटो तरुसो गिरो
कीचक दुष्टक्षितिपर तौन । घूमिकैहत चेत पापी महाबलको
भौन ॥ लखो खैंचत द्रौपदीको चिकुर सूतकदुष्ट । धर्म नृपसह
भीमको अतिक्रोध बाढ़ो पुष्ट ॥ कियो कीचकको चहोबध देखि
ताको कर्म । क्रोधज्वालाते कढ़ीतन धूमधारा पर्म ॥ दाबिचरण
अँगुष्ठसों नृपधर्म अँगुठातास । कियो वारणसमयको लखिमहा
मतिके रास ॥ बैठि कृष्णालगी रोवन सभाके रहिद्वार । दहो
चाहति चषनसों लखिभरी क्रोध उदार ॥ द्रौपद्युवाच ॥ नहीं सो-
वत शत्रु जाके भीति भारे सर्ब । तासुमहिषी चरणसों यह हनै
कीचक खर्ब ॥ सुनत जाके धनुष की धुनि तजत हे अरि गर्ब ।
तास महिषी चरण सों यह हनै कीचक खर्ब ॥ डरत जिनसों
मनुज राक्षस दनुज अरु गन्धर्ब । तास महिषी चरणसों
यह हनै कीचक खर्ब ॥ शरणअर्थी जननको हे शरण दायक
जौन । लोकमें अप्रगट अतिरथ करत हैं ते गौन ॥ सूतसुतते
सतीभार्या बध्यमान निहारि । क्लीबसे ते छोड़ि अमरष रहेका
निरधारि ॥ गयो तिनको तेज अमरष कहँ प्रबलता तौन । दुष्ट
धर्षित प्रिया भार्य्या लखत नाहिं बलभौन ॥ कहा मेरो शक्यभूप
बिराट दूषित धर्म । कछू कीचकसोंकहैं नाहिं देखि तासुकुकर्म ॥

सभामें तब लखत भूपति मोहिं कीचक आय। तुम्हैं योग्य न कियो मोको लातघात गिराय॥ द्रौपदीके बचनसुनि यहिभांति के बहुभूप॥ बिराटउवाच॥ बिदितहै तिय दुहुनको नाहिं हमैं बिग्रह रूप॥ बैशम्पायनउवाच॥ जानि बिग्रह हेतुतहँ जेरहे सभ्यसुजान। सूतकोकरि निंद्यपूजो द्रुपदजहि सनमान॥ सभ्याऊचुः॥ कमल नैना उत्तमांगी प्रियाहै यह जास। लाभताको और का यह देवताया पास॥ बैशम्पायनउवाच॥ देखि पूजत सभाजन लखिद्रौपदी के खेद। क्रोधसों नृपधर्मके भोभाल भूषित स्वेद॥ द्रौपदीसों कह्यो तब इमिबचन भूपति धर्म। जाहु सैरन्ध्री सुदोष्णा सदन है जहँ पर्म॥ तोहिं रोदन करत पावत क्लेशते पतिबीर। क्रोध को नाहिं समय याते रहतधारे धीर॥ नहीं धावत महाबल पति जौनतौ गन्धर्ब। नहीं जानति कालको तुम करति रुदन अखर्ब॥ करैंगे गन्धर्ब तेरो जौन प्रिय है तौन। दूरिकरि हैं दुःख तो सैरन्ध्रिते बलभौन॥ सैरंध्र्युवाच॥ महा दायावान जिनकेअर्थ धर्म्माचर्ण। करतिहैं मैं होय ताके हाथअप्रिय मर्ण॥ गईकहि यहिभांति कृष्णा जहँ सुदोष्णा भौन। केशछूटे अरुणलोचन सजलबिह्वल गौन॥ सुदोष्णोवाच॥ कहो सैरन्ध्री तिहारो कौन अप्रिय कर्म। करतिहो तुम रुदनजाते व्यथित कीन्हें मर्म॥ द्रौपद्युवाच॥ सुरालीबे आपु पठई मोहिं कीचक धाम। भूपसोंहैं सभामें मोहिं हनो तेहि गहि बाम॥ सुदोष्णोवाच॥ मारिहैं हम कीचकहि जेहिकियो तो अपमान॥ सैरंध्र्युवाच॥ बधैंगे अपराध जिनको कियोसूत महान॥ बैशम्पायनउवाच॥ द्रौपदीहत सूतसोंबध चाहिताको भूप। बसतही तहँगई कृष्णाधरे दुःखितरूप॥स्नान करि प्रक्षाल्यके पट सलिलसों अतिआर्य्य। लगीचिंतनजाउँकहँ किमिहोय मेरोकार्य्य॥ चिंतियों मनदियो कृष्णै भीममाहँ गँभीर। कार्य्यमेरोकरैंगे प्रियभीम अतिबलबीर॥ चिंतिऐसे छोड़िशय्या निशा बीते याम। चाहिनाथसोंगई कृष्णाभीमके छबिधाम॥

सैरंध्र्युवाच ॥ तौन पापी जियत निद्रा लहतकैसे बीर ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ यहि भांति कहिकै भीमके गइभवनमाहँ गँभीर ॥ लखो सोवत भीमकोमृगराजसो अभिराम। लसतताके तेजसों अति भरो सिगरोधाम ॥ दोहा ॥ गईद्रौपदीपाकगृह जहांभीम बरकाय। यथासिंहिनी सिंहढिग जंबुककोडरपाय ॥ आलिंगनकरि भीमको कृष्णैद्यो जगाय । यथामत्त गजराजको करिणी शंकितकाय ॥ कहे मधुरस्वरसों भरे श्रवण सुधासे बैन। उठहु उठहु सोवत कहा भीमसेन बलऐन ॥ उठिबैठेगजराजसे भीमसेन बलबीर। कहन द्रौपदीसों लगे बचन सनेह गँभीर ॥ कौनहेत आईइहां कहहुसुन्दरी तौन। देखिपरतिहौ कृशकछू भरी दुःखछबिभौन ॥ कहहु सकल सुख दुःखतुम हित अनहित कृतमर्म। यथायोग्य हम जानिकै तैसो कीजैकर्म ॥ है मोमें बिश्वासतव कृष्णा परम उदार। मोचन हमतुम्हरो कियो आपतमेंबहुबार ॥ शीघ्रकहहु कारज कहा कहा बांछित तौन। जाहुसख्यनको नहिंजगै जब लौं कोउ छबिभौन ॥ द्रौपद्युवाच ॥ भूप युधिष्ठिर जासुपति कहँ अशोचतातास। जानत तुम सब मोहिंका बूझतहौ मतिरास॥ दासी मेरोनाम कहि तास भृत्यगण जौन। सभासदन में कहत हैं जारत मोकोतौन ॥ पार्थिवदुहिता ममसदृश कौन जियैगी धीर। करि अनुभव यहिभांतिको दुखपरिभव गंभीर ॥ दियो दुःख बनबासमें मोहिं जयद्रथ जौन। ऐसोपरिभव सहैगो और मोहिं बिन कौन ॥ नृप बिराटकी सभामें कीचक दुष्ट सुभाय। लखत युधिष्ठिर भूपके खैंचो मोको आय ॥ कीचकनाम बिराट को सेनानी है जौन । सैरंध्रीमोहिं लखिकहत भार्य्याहूबेतौन ॥ बचन तासु बधयोग्य सुनि हृदय बिदारत मर्म। श्याला तौन बिराटको महानीच करकर्म ॥ भ्राता ज्येष्ठ जो द्यूतरत भर्त्सन कीजे तास। प्रगटो जाके कर्मते यहअनंत दुखरास ॥ नष्टकरो ऐश्वर्य सो तुम्हें बिदितहै तौन। द्यूतकर्म जाकेप्रबल भीमसेन

बल भौन ॥ जाको अति ऐश्वर्यसो इन्द्र कुबेर समान । कहत
दानधारा लखो वहतुम जासमहान ॥ नृपबिराटके अनुगतेभये
धर्म नृपआय । द्यूतखेलावत सभामें बिप्र कंककहवाय ॥ इन्द्र-
प्रस्थमें जासुलहिं समय सभामें भूप । देतरहे करआयतेहिधरो
भृत्यको रूप ॥ हेप्रिय पृथिवीपाल सब बसतरहे बशजास । ब-
सत सोबिबश बिराटढिग सार्ब भौम बलरास ॥ तापित करिपृ-
थिवीसकल रश्मिवान समरूप । सो बिराटको सभासद भयो
युधिष्ठिर भूप ॥ जिहिं सेवत हेभूपगण बिप्रबृन्दतप भौन । सो
बिराटको प्रियंबद नृपति युधिष्ठिर तौन ॥ यहि बिधि नानादुःख
सों पीड़ित बिकल अधीर । शोकार्णव में मग्नमोहिं देखतकहा
न बीर ॥ करत असूया मनैमन सुनि दुःखित ये बैन । सूदकर्म
असमय लहे भयेहीन बलऐन ॥ बल्लभ कहत स्वजाति जन
शोक होतसुनि मोहिं । कारक भूप बिराटके जानतहैं सबतोहिं ॥
सिद्धपाक सुनि भोजनाहिं नृपबिराट जबजात । बल्लभ तुमको
कहततब मोमें दुखन समात ॥ महिष सिंह गजसों तुम्हें जब
लरवावतभूप । लखै सुदोष्णातब चढ़ैममहियमें दुखयूप ॥ तुम्हें
लखति यहिभांति दुख निधिमहँमग्न गँभीर । करति नहीं उ-
त्साह तब जीवनमें हमबीर ॥ देव सुदानव मनुजको जेता जो
बलभौन । नृपबिराटकीकन्यकहि नृत्यसिखावत तौन ॥ तृप्तकरो
जेहि पावकहि खांडव बनकरि दाह । सोअंतःपुरमेंबसतबलसों
भरो अथाह ॥ ज्याघर्षणते कठिन अति करिकरते अतिचण्ड ।
शंखबलय भूषित करें सोअर्जुन भुजदण्ड ॥ जाके धनु टंकार
को सहत न हे अरिभाम । गीतनादताको सुनै अंतःपुरमेंबाम ॥
भानुसमान किरीटसोंभूषित मूर्द्धाजास । ताअर्जुनकेशीशपरबेणी
करति बिलास ॥ रोला ॥ जोसमस्त दिब्यास्त्र बेत्तायुद्धजेतावंक ।
जिष्णुबिद्या भवन धारण किये सोताटंक ॥ दोहा ॥ जाकेरथ के
घोषते सहगिरिकानन सर्ब । स्थावर जंगमभरी भूकांपत रही

अखर्ब ॥ जाके जनमतही भयो कुन्ती शोक बिमोच । भीमसेन तुवअनुज सो हमैं बढ़ावत शोच ॥ जासम उर्वीपैनहीं और धनुर्धर धीर । कन्यन मधिसो करत है गान धनंजय बीर ॥ तथा देखिसहदेव को गोगणमध्य गँभीर । पांडुवेष सूरजभरो बली बर्दसों बीर ॥ पुनः पुनः सहदेवको समुझि समुझिबिरतान्त । भीमसेन नहिं निशामें निद्रालहति नितान्त ॥ नहिंजानतिसहदेवकोदुष्कृतकीन्हों जौन। जातेयहिबिधिको लहतदुःखमहामति भौन॥ भीमसेनअतिदुख लहति लखितवभ्राताबीर। वृषसोंकियो बिराटनृप गोगणमाहि गँभीर ॥ मधुरबाकलज्जाभरो ममप्रियधार्मिक जौन । भूपभक्तसुकुमारअति शूरसत्यमतिभौन ॥ यहकहि कुन्तीपुत्रप्रिय अंकमाहँ लेजाहि । सौंपिमोहिं घरको गई चलत बिपिनकोत्याहि ॥ गोगणमें सोकरतहै बत्सचर्मपरसैन। ऐसेलखि सहदेवको जीवनहमैंरु चैन ॥ रूपशास्त्र अरुसुमतिसों जौननकुल सम्पन्न। सोबिराटके हयनके रक्षकता आसन्न ॥ छोरत बांधनहयनकी करत चिकित्सा जौन। चढ़िकैफेरि बिराटको तुरग देखावत तौन ॥ सुखिनी हैं हमकौनाबिधि जासुब्यथित अतिमर्म। तुमजानत यहिदुःखके बारण राजाधर्म ॥ तुम्हैं जियत हम सहतिहैं येदुख बिबिध बिधान । शोषण करति शरीरको कादुख और महान ॥ सैरंध्रीको वेषधरिहौं बिराटके भौन। कार्यसुदोष्णा कोकरति द्यूतकर्म फलतौन ॥ देखुव्यवस्था मम सकल राजपुत्र बरबीर । दुःखकाल के अन्तको देखति धारेधीर ॥ अर्थ सिद्धि अरु जयाजय करिअनित्य अनुमान । जानति ह्वैहै पतिनको पुनःउदय सुखदान ॥ प्राप्तहोतहै समयलहि जनकोजय आनन्द । समयहि लहिके होतहैप्राप्त अजयकोदन्द ॥ प्राप्तसुयोधन कोभयो समय सुजयको पर्म । अजयहु ह्वैहै धीर्यमें धारति यह गुणि मर्म ॥ कथितहमारे बचनको भीम प्रयोजन जौन । पूछहु तुम हमकहैंगी पूछेते सबतौन ॥ रोला ॥ पांडुपुत्रनकी सुमाहिषी

द्रुपदकन्या जौन। पाय ऐसीदशा जीवति और हमसीकौन॥ भीमजानत जौन मोको रह्योसुख अतिमान। भईदासी तौनहम किमिलहैं शांति सुजान॥ दैवकृत हमक्यों नमानति जहँ धनं-जय बीर। छन्नपावक सो महाबल रहत धारे धीर॥ जौनमेरो लखतहे मुख इन्द्रसे तुमसर्ब। तौनहम अबलखतिहैं मुख और को अतिखर्ब॥ जास सागर मेखलाक्षिति रहीबश्य महान। सो सुदेष्णा भीतिबश अब बसति हैं मतिमान॥ बैशम्पायनउवाच॥ सुनतऐसे द्रौपदीके बचन भीम अधीर। लायहियसों लगेरोदन करन अतिबलबीर॥ पाणिकृष्णाके पकरि इमि भीमबोले बैन। भरे दारुण क्रोधसों अति महाबलके ऐन॥भीमउवाच॥ धिगहमारो बाहुबलहै जिष्णुको धनुजौन। लखत बलय बिहीनतव करकंज सुखमाभौन॥ सभामाहँ बिराटको हमकरै कदनमहान। तहां कारण धर्मनृपहै तासुरक्षक प्रान॥ मथन कीचकको करैकैजौन दुष्टमहान। भरोमद ऐश्वर्य्य आपुहि गणतजो बलवान॥ लखो हम जबकियो कीचक तुम्हैं पादाघात। कियोतबहीं चह्योहमसब मत्स्यबंश निपात॥ कियोनेत्र कटाक्षसों तबहमैं बारणधर्म। रहे स्थिर हमजानिताको मानसिक का मर्म॥ कियोहम नहिं राज्य लूटत कुरुन को बधजौन। दहत मेरे गात्रको समशल्य अर्पित तौन॥ क्रोधछोड़हु धर्मको नहिं तजहु हे मतिऐन। कहहु कछु नहिं धर्म नृपप्रति तुमजुगुप्सित बैन॥ पतिब्रत रतभई नारी जनकजादिकजौन। सह्योक्लेश न धर्मछोड़ो तथातुम छबिभौन॥ त्रयोदश जोबर्षतामें रह्यो आधोमास। क्षमाकुरु फिरि राजपत्नी होहुगी छबिरास॥ द्रौपद्युवाच॥ आर्त्तह्वै हमकियो मोचन भीम लोचन बार। नहीं निन्दति भूपको दुखसिंधु जानिअपार॥ रूप सोमम जानिआविभव आपनोनृप बाम। लहतिहै उदबेग मनमें लखिसुदेष्णा माम॥ जानिताको भाव मनको दुष्टकीचक तौन। रोकिमोसों कहतबिरिबे महापातक भौन॥ कोपको करिनियम

तासा कहतिहैं हमबैन। पंचपतिमम यक्षरक्षक महाबलके ऐन॥ कहहुमोसों नहींअनुचित करहुरक्षण प्रान। तुम्हैं कीचक मारिहैं ते साहसी बलवान॥ कहत कीचक डरत हम नहिं तिन्हैं ते कारवर्ब। पंचकाहम हनैंसहसन युद्धमें गन्धर्ब॥ कहति हम हैं सुकुलशीला धरेंपतिब्रत धर्म। नहींतुम्हरो मरणचाहेंति सुनहु कीचकमर्म॥ दुष्टसो सुनिबचन मेरोकरतहै अतिहास। प्रणय करि पठवैं सुदोष्णा मोहिंताके पास॥ आत्म प्रियसो प्रथमतासों कियेमंत्र निदेश। सुराआनन हेतुपठयो मोहिंतास निवेश॥ सूतसुतमोहिं देखिलागो कहन अनुचित बैन। नहींमानो क्रोधकरि तब चलोपातक ऐन॥ जानिकै संकल्प कीचकको महादुखदाय। लईशरण बिराटकी हम बेगसों तबधाय॥ लखत मोहिं बिराटके तहँआय कीचक रुष्ट। मोहिंमारो लातसों गहिडारि क्षितिपर दुष्ट॥ रहेलखत बिराटकेतहँ सभासद जनसर्ब। कियोनिन्दित कंकफिरिफिरि जानिताको खर्ब॥ भूप बारणकियो नहिंकहि ताहिनिष्ठुरबैन। युद्धमाहँ सहायकरता जानितेहि बलऐन॥ त्यक्त धर्म नृशंस सोप्रियहै सुदोष्णा तास। पापआत्मा पापकर्मा बँधो मन्मथपास॥ करैरक्षा भार्य्याकी प्रजारक्षित होत। प्रजारक्षित करैरक्षित होतआत्मा गोत॥ जन्मजामें लेतआत्मा सुनहुजाया तौन। शत्रुमारण धर्मक्षत्रिनको कहैंमतिभौन॥ धर्मनृपके लखत कीचककियो पादाघात। बर्त्तमान सुभीमतुमको हमैंयह उत्पात॥ जटासुरसों कियो रक्षितहमैं तुम बरबीर। जयद्रथको मथनकीन्हों सहितसैन गँभीर॥ दोहा॥ हनिये पापीकीचकहि देतमोहिं दुखजौन। फेरिनयाते जाउँ मैं तौनअधमके भौन॥ कारणजानि अनर्थको बहुतनको ममबीर। सूर्य्य उदयलौंजियैगो तौ मम मरण गँभीर॥ भीमश्रेय हमको मरण जो तवआगे होय। यह कहिलागी भीमहिय आतुर कृष्णारोय॥ भीमलाय हियसोंकहे बहुत शान्तिकरबैन। हेतु और तत्त्वार्थके नीति रीतिके ऐन॥

भरो अश्रुकृष्णा बदन पोंछिपाणिसों भीम। कीचकबधमनमेंध-
रो चाबिओठ बलसीम ॥ भीमउवाच ॥ यथाकहहु तुमद्रौपदी तथा
करैं अनुरूप। आजुहनैंगे कीचकहि सहित बंधुगणभूप॥ कहहु
द्रौपदी आजुतुम लहिप्रदोषता पास। दुःख शोक गोपनकिये
नियमबचन प्रियतास॥ नर्त्तनशाला जौनयह भूपरची अभिरा-
म। दिनमें कन्यानृत्यकरि निशिलहि जाहिंस्वधाम॥ तहँशय्या
है दारुमय सुदृढ़दिव्य अभिराम। मिलिबेको संकेततहँ कहौ
ताहिहेबाम॥ सोरठा॥ सोथलहै एकान्त तहांताहि हममारिहैं।
करि हैं तवदुखशान्त शोचचित्तते दूरिकरु॥ दोहा॥ यथा न
जानैतुम्हैंवह सम्मत कारणजौन। होययथा सन्नद्धसोयथाकर-
हु मतिभौन॥ बैशम्पायनउवाच॥ यहिबिधिकृष्णाभीमकरि सम्मत
दुखितमहान। रात्रिशेष लखिकरि बिदा धरेक्रोध अतिमान॥
भोरभये कीचकअधम राजभौनमें जाय। कहन द्रौपदीसोंलगो
ऐसे अवसरपाय॥ हतो चरणसों नृप लखत डारि भूमिपर
तोहिं। तबसैरंध्री त्राणकरकाहुन बारोमोहिं॥ कहिबेकोमत्स्या-
धिपतिहै राजाको नाम। हमहैंराजा बाहिनी के पति अतिबल
धाम॥ सुखसों हमको भजहु तबहमकेहैं प्रियदास। शतदासी
रहिहैं सदा सेवनको तवपास॥ दास सहस्रन अश्वरथ जटित
मणिनसों जौन। ममसंगमसों सुन्दरीतोहिं भजैंगेतौन॥ द्रौप-
द्युवाच॥ यह सम्मत मोसों करहु हे कीचकबलधाम। सखाबंधु
जानै नतुव ममसंगमअभिराम॥ हमप्रवादसोंभयधरतिगंधर्बन
सों बीर। ऐसे जानहु होहिं हम तब तुवबश गम्भीर॥ कीचकउ-
वाच॥ ऐसेही हम करैंगे यथा कहतितुमबैन। हमएकाकी आइ-
हैं जहँ तुवसूनो ऐन॥ संगमार्थ रंभोरु तवलहिबे मन्मथशर्म।
जानहिंगेगन्धर्ब नहिं ममतवसंगमपर्म॥ द्रौपद्युवाच॥ रचोनर्त्त
नागार जो मत्स्यराज अभिराम। नाचिदिवसमें कन्यका जाहिं
आपने धाम॥ चलहु निशामें तहां तुमजानैनहिंगन्धर्ब। रहत

भौनसो निशामें तमसों पूर्ण अखर्ब ॥ कृष्णा कीचक कहत सो गयो दिवस हैयाम । भयो दिनार्द्धसो माससम कीचकको बश काम ॥ कीचक अपने गृहगयो भरो हर्ष अतिमान । नहिं सैरंध्रीरूपकी जानत मृत्युअथान ॥ गन्धमाल्य आभरणसो भूषित कीन्होंकाय । चिन्तन कृष्णाको करत काम मोह मदपाय ॥ नाना बिधि शृङ्गारते सुखमा बाढ़ीतासु । बाती ज्योंबढ़िकै बरतिदीपक पावतनाश ॥ तासों प्रत्यय संगकोकरि कीचक बशकाम । जानत जानो दिन समुझि संगम तास ललाम ॥ गई द्रौपदी भीमजहँ रहे पाकगृहमांह । कीचकसों निश्चयभयो तौनकहो गहिबांह ॥ शून्य नर्त्तनागारमें अधम जायगोतौन । जायताहि यमधामको बेगिकरावहु गौन ॥ आंशु हमारे पोंछिये दुःखितको बरबीर । भद्र आपनो कीजिये कुलकोमानगँभीर ॥ भीमउवाच ॥ प्रिय यह जो हमसों कहो आगमतौ अभिराम । चाहत और सहायनहिं बध कीचकको छाम ॥ सत्य पुरस्कृतकरि कहत बधकीचकको जौन । कियो इन्द्रज्यों वृत्रबध हम हिडम्बबलभौन ॥ गुप्तप्रकाश न बचैगो कीचक हमसों अद्य । करिहैं मत्स्य सहाय तौ तिनहूं हनिहैं सद्य ॥ द्रौपद्युवाच ॥ यथा त्यजत नहिं सत्य तुम भीमसेन ममहेतु । तथा गुप्त हनु कीचकहि हे कुरुकुल के केतु ॥ भीमउवाच ॥ यथा कहति तुम करहिंगे हम तैसो सुखदान । आजु कीचकहि बन्धुसह हनि करिहौं गतप्रान ॥ अदृश्य तमिस्रा माहँकै बिल्व हरतजोनाग । भग्नकरैंगे तासशिर हम तैसे बड़भाग ॥ बैशंपायनउवाच ॥ भीम प्रथमहीं जायतहँ छपिकै बैठेभूप । लायघात मृगको लखतयथा सिंह अतिरूप ॥ नर्त्तनशालाकोगयो कीचक करि शृङ्गार । सैरंध्रीसों सुरतिकी आशाधरे उदार ॥ तहां पूर्वगत भीमकेगयो दुर्मती पास । हँसिबोलो लखि शयनपर भरो काम रस आस ॥ नानाबिधिके देहिंगे हम तुमको धनधाम । सैरंध्री भाजिहैं तुम्हैं दासीशत अभिराम ॥ मोहिं प्रशंसतिहै

सदा जो युवती मतिमान। दर्शनीय नहिं जगतमें हमसे और पुमान॥ भीमउवाच॥ दर्शनीय तुमजगतमें है तुमऐसोकौन। दर्श अपूर्ब सु आपुको कौनलहै छबिभौन॥ चहै बिदग्ध स्पर्शतव क्रीड़ा पटु बरबीर। युवतिनके तुम प्रीतिकर तुम छबिभरे गँभीर॥ बैशम्पायनउवाच॥ रोला॥ यहिभांति यहकहिभीमतासों महाबल रणधीर। जाय सहसा ताहि पकरो भरे क्रोध गँभीर॥ सैरंध्रिमारे तोहिं फिरिहै भई निभ्रम दुष्ट। बोलि ऐसे केश ताके आय पकरे पुष्ट॥ केश गहिकै लगे खैंचनभीम अतिबलवान। भुजनसों तबगहो कीचकभीमको अतिमान॥ मल्लयुद्ध सुकरन लागे सिंहसे दोउक्रुद्ध। यथा करिणीहेत दोय सुद्दिरद अतिबल उद्ध॥ दुहुनके दोर्दण्ड राजत पञ्चफणसे सर्प। नख दशनसों अन्योन्य करतप्रहार सबिष सदर्प॥ बेगसों अतिहनो कीचक भीमको बलवान। नहीं पदभरि चलोसत्य प्रतिज्ञ मेरुसमान॥ भुजनसोंअन्योन्य गहि दोउलरनलागे क्रुद्ध। बली बर्द्धसमान दोऊलसे अतिबल उद्ध॥ तुमुल दारुण भयो तिनसों युद्धउद्ध महान। नख दंष्ट्रयोधी लरतजैसे सिंहद्वै बलवान॥ भीमकीचक कोगहो तब भुजनसों अतिघोर। भुजनसों गहि लियो कीचक खैंचि अपनी ओर॥ दुहुन के भुज घातसों अति भयोशब्दप्रकाश। लगे पावक प्रबल जैसे सघन फूटत बांश॥ कियो कम्पित भीम तब तेहि पकरिकै बलवान। खैंचिकै तेहि भीममर्दत भयो निबल समान॥ होय कम्पित फेरि गहिकै भीमको अतिकाय। पांडुसुतको जांघके भरदियो सूत गिराय॥ दोहा॥ छोड़ि क्षिप्र क्षिति भीमतब गहो क्रोध करि उद्ध। करनलगे दोऊ प्रबल महा भयानक युद्ध॥ चाहत जय दोउ प्रबल सूत पुत्र अरु भीम। शून्य सदनमें निशामधि लरत महाबल सीम॥ कीचकके हियपै करो भीम महातल घात। भरो रोषसों सूतसुत लहो न भूमि प्रपात॥ भीम मुहूर्त्त भरिसहो

ताको बेग महान । मर्दित करिकैभूमिपर दियो डारिबलवान ॥ हनो जानिकै भीम तब ताहि महाबलबीर । चढ़िकै ताके हृदय पर मर्दनलगे गँभीर ॥ फेरि क्रोधबश केशगहि कीचकको अ-तिमान । भीमसेन खैंचनलगे शालामें बलवान ॥ पिसिताकां-क्षीसिंहज्यों मारि द्विरद अतिकाय । लगेकढ़ोरन भूमिपरउन्न-त क्रुद्धसुभाय ॥ भीमसेन ताकी पकरि ग्रीवा तोरीबीर । शान्त करनको द्रौपदी को अति क्रोध गँभीर ॥ भग्नतास सर्बांग करि कटि गहि डारी तोरि । डारो ताहि घुमायके दोऊ लोचन फो-रि ॥ हाथ पांवशिर मरदिकै कीन्होंपिण्ड समान । डारि सलिल ज्यों जानिकै राखत मनुज पिसान ॥ भीम देखायो द्रौपदिहि कीचक कोसोरूप । निकट बोलाय प्रकाश करि बारि अग्नितहँ भूप ॥ पाञ्चालीसों कह्यो इमि निकट बोलिबलभौन । सोकी-चक माशेगयो तुम्हैं चहतहौ जौन ॥ कृष्णाको प्रियकर्म्म यह करि दुष्कर गम्भीर । मारि कीचकहि क्रोधकी लही शान्तिबर बीर ॥ कीचक को बधकरि गये भीम पाकगृहमाह । कहो द्रौप-दीजाय इमि सभामाहँ नरनाह ॥ जौन परस्त्री को चहतकाम निरत मतिखर्ब । तौन नर्त्तनगृहमें मरो सुनहु सभाजन सर्ब ॥ सुनत नर्त्तनागारके रक्षक हे तहँजौन । बारिमशाल अनेकतहँ गये सहस्रन तौन ॥ देखो मरोपरो कीचक को तिनसब तहां जाय । बिना प्राणको भूमिपर रुधिर भरो सब काय ॥ पाणिपाद अव्यक्तशिर लखिकै पिण्डसमान । कर्म अमानुष जानिकै बि-स्मयभरे महान ॥ कहँमुख ग्रीवाचरण शिर कहँगये पाणिअ-खर्ब । यह बिचारि मनमेंधरे नियतहने गन्धर्ब ॥

इतिमहाभारतदर्पणेबिराटपर्बणिकीचकबधवर्णनोनामनवमोऽध्यायः ९ ॥

बैशम्पायनउवाच ॥ जयकरी ॥ कीचकबन्धु सकल तेहि काल । सु-नि आये लखिकर्म कराल ॥ घेरि कीचकहि चारों ओर । रोदन करनलगे अतिघोर ॥ देखिकूर्मसम कीचककाय । जानि परत

शिर हाथ अ पाय ॥ करिबेको ताको संस्कार। लेचलिबेकोकियो बिचार ॥ तहँ देखी कृष्णहि तिनसर्ब। खड़ीस्तम्ब गहिरूपअखर्ब ॥ निकट जायते बोलेबैन। हनहु याहि यह अधरम ऐन। कीचक कामी लहिहै शर्म। मरेहु तासकीजै प्रियकर्म ॥ कीचक हनो गयो जेहि अर्थ। दाहहुतेहि सँगयाहि समर्थ ॥ तेबिराट सों बोलेजाय। कीचक मरो हेतु यहपाय ॥ आज्ञादेहु हमैं तुम नाथ। दाहैंयहि कीचकके साथ ॥ जानि पराक्रम तिनको भूप। आज्ञादियो तिन्हैं अनुरूप ॥ तिन कृष्णहिपकरी बरजोर। बिह्वल भरीत्रास सों घोर ॥ बांधि रथीपर कृष्णहि नाय। तेश्मशान को चले उठाय ॥ रोदन करति पुकारतिनाथ। कृष्णामग्न शोकनिधिपाथ ॥ द्रौपद्युवाच ॥ जयजयन्त जैबिजय महान। जयद्वल जयसेन बलवान ॥ सुनो बचनते मेरो सर्ब। ज्याधर्षित भुजजास अखर्ब ॥ जाके धनुज्याको टंकार। बज्रध्वनिसमान उदार ॥ तेमेरी यहसुनै पुकार। हरेजात मोहिंसूत कुमार ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ सुनत भरे करुणासों बैन। कृष्णाके अति आरति ऐन ॥ शयन बिहाय भीम बरबीर। आतुर उठो महारणधीर ॥ भीमसेनउवाच ॥ हम सैरंध्री बचन तुम्हार। सुनो भरो दुखदुसह उदार ॥ सूत सुतन ते भयनाहिं तोहिं। कैं है सुन्दरि जीवत मोहिं ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ धारि क्रोध अतिशय बलवान। तिन्हैं हननको करि अनुमान ॥ समगन्धर्ब बेषधरि बीर। नांघोपुर प्रकार रणधीर ॥ जायसो पुर बाहर बलवान। लियो उखारिवृक्ष अतिमान ॥ सो श्मशान दिशिचलो उदार। गये जहांते सूतकुमार ॥ जहां रहो अति बिपिन गँभीर। क्षिप्रगयो पहिले तहँबीर ॥ चितासमीप रहेतहँ जाय ॥ हनिबेचाहि तिन्हैं अतिकाय ॥ दशव्यायाम वृक्षको मूल। धरे स्कन्धपर बीर अतूल ॥ चलोसूत पुत्रनकी ओर। दण्डधरे अन्तक जिमिघोर ॥ जाको लागै जंघ प्रहार। गिरेभूमिपर वृक्षउदार ॥ सिंह समान

क्रोध गन्धर्व। आवत जानिभजे तेसर्व ॥ तेसबभरे भीतिसों माम। लगेधरन कीचक कहिनाम॥ लागे कहन परस्परतौन। यहगन्धर्व क्रुद्ध बलभौन॥ वृक्षायुध आवत सम काल। छोड़ि देहु सैरंध्रिहि हाल॥ छोड़ि द्रौपदिहि भाजे सर्व। नगर ओर भयभरे अखर्व॥ बज्रीहनो दनुज समुदाय। हने भीम त्यों तिनको धाय॥ पांच अधिकशत कीचक भ्रात। तिनका कीन्हों भीम निपात॥ आश्वासन कृष्णाको पर्म। कीन्हों तिनसों मोचि सशर्म॥ अश्रुमुखी कृष्णाकेपास। ऐसे भीमकहोबलरास॥ दियोक्लेश तुमको जिन बाम। तिनको हमपठये यमधाम॥ जाहु नगरको तुम छबिभौन। अन्यमार्ग हम करिहैं गौन॥ गई नगरको कृष्णा बाम। गयेभीम जहँ भोजन धाम॥ महादाऊचर्य्य देखियह कर्म। बोलत कोऊ न भारेमर्म॥ बैशम्पायनउवाच ॥ तिनको हनत लखतहै जौन। डरिकै करि अति आतुर गौन॥ तिन सूतनको जाय बिनास। किय गन्धर्व कहो नृपपास॥ बज्राहत ज्यों पर्बतसान। तथासूत सबमरे महान॥ कै बिमुक्त सैरंध्रीतौन। आई भूप तिहारेभौन॥ दोहा॥ अतिही संशयसों भरो भयो नगरसब भूप। महाबलीगन्धर्बते सैरंध्री अतिरूप॥ पुरुषनको है इष्टतम मैथुन विषय उदार। सैरंध्रीके देखते यह पुर नृपन तुम्हार॥ तातेसो कीजे नृपति नीति निपुणता पर्म। बसैंप्रजा ते कुशलगहि पुरजनमाहँ सशर्म॥ सूतन्हकी करिबे क्रिया कहो नृपति मतिऐन। सुनिसो इनके दाहकी भिन्नभिन्न बिधिहैन। रचिकै काष्ठ सुगन्ध की चिताएकही भूरि। जारे सब सूतजनको महाशोकसों पूरि॥ जानि सुदोष्णा चित्तकी वृत्ति कहो योंभूप। सैरंध्रीको रुचैजहँ तहांजाय अनुरूप॥ कहो सुदोष्णै भूपके सुनिकै ऐसे बैन। सैरंध्रीतुम जाहुइत बास योग्य सबहैन॥ अबिभवको मनमें धरत गन्धर्वनसों भूप। आपुन तुमसों कहत हम कहति नृपति अनुरूप॥ बैशम्पायनउवाच ॥ सू-

सपुत्रके त्रास ते ह्वैकै कृष्णामुक्त। चली बाहिरे निकलिकै तजि गृह भूपति युक्त॥ आसित यथा मृगेन्द्रसों मुक्तमृगी सुखदाने। बसन सहित शुचिसलिलसों करिकै शुद्धस्नान॥ ताहिदेखि भाजे पुरुष भयभरि चारों ओर। गन्धर्वन की भीतिसों त्रस्त भये अतिघोर॥ रहे महान सद्वारपै बैठे भीमउदार। पाञ्चाली देखो यथा भरोनाग मदभार॥ बोली बिस्मित करत तेहि सं-ज्ञा ज्ञापक बैन। नमस्कार गन्धर्वको जेहि मोची बलऐन॥ भीम उवाच॥ पुरुषरहे बिहरत इहां नृपबशवर्त्ती जौन। अनृण होयकै भोयकैसुखसों बिहरोतौन॥ वैशम्पायनउवाच॥ रक्षाकरनोकृष्णाको अरुगुप्तवर्षको बास। हुतेपाण्डवनपै ऋणहै भूपति बलरास॥ तदनु द्रौपदी जिष्णुको लखो नर्त्तनागार। जौन नचावन नृप सुता बलसोंभरो उदार। निकसि उत्तरा जिष्णुसह नृत्य भव-नते भूप। कृष्णाको आवतलखो भरीक्लेश अरूप॥ बृहन्नलोवाच॥ सैरंध्रीतुम भाग्यते भई मुक्तछबि सौन। मरेकौनाबिधि अधम सो कहहु सकल तुमतौन॥ सैरंध्र्युवाच॥ कहा वृहन्नल रावरो सैरंध्री सों कार्य। तुम कन्यापुरमें बसत बीरमोदसों आर्य॥ सै-रंध्री जो सहतदुख तुमनाहिं जानत तौन। याते बूझतहँसतसो जानिमोहिं दुखभौन॥ बृहन्नलोवाच॥ वृहन्नला अतिसहत दुख क्लीवदेहकोधारि। सुन्दरिसो तुमसों कहतजानिलेहुनिरधारि॥ बसेतुम्हारे साथ ते तुम तिनके सँग बास। तुम्हें दुखित लखि लहतहैं ते दुख अति बलरास॥ वैशम्पायनउवाच॥ तबकन्यनके सँगगई कृष्णा भूपतिधाम। कहोसुदेष्णै द्रौपदीसों नृपआज्ञा आम॥ सैरंध्री तुमको रुचै जाहु तहां सुखरूप। गन्धर्वनसों डरतहैं जानिपराभवभूप॥ तुम तरुणी अतिरूपमय तरुणरूप बशसर्व। हनतकोप करिकै प्रबल तो पतिजे गन्धर्व॥ सैरंध्र्यु-वाच॥ करै क्षमा मोपै सुनहु तेरह दिनलों भूप। सुदेष्णा सुख लहैंगे ते गन्धर्व अनूप॥ तब मोको ले जाहिंगे करिलो

प्रिय गंधर्व । बन्धुनसह भूपति लही ध्रुवश्री शर्म अखर्व ॥
इतिबिराटपर्वणिभाषायांकीचकबधोपाख्यानवर्णनोनामदशमोऽध्यायः १०

जयकरा ॥ सहभ्राता कीचक को मर्ण । महा भीतकर करिकै स्मर्ण ॥ जनजन प्रति चर्चा अतिमान । रहति बढ़ी भयभरी महान ॥ कचिक अरिसेना जेतार । दारा लम्पटमरो उदार ॥ चार सुयोधन पठये जौन । यह सुनि खबरि गयेसुनि तौन ॥ देखिदेश पुरपत्तन ग्राम । हास्तिननगर गयेनृपधाम ॥ भीषम द्रोणकर्ण कुरुबीर । सहित सुयोधन जहँ रणधीर ॥ कहनलगे ऐसेते चार । भूप सुयोधन पास उदार ॥ चाराऊचुः ॥ चारोंओर नगरपुरजौन । बनपहारसरितासर तौन ॥ हमढूंढ़े करिअनिश प्रचार । पाण्डवमिले न कहूं उदार ॥ गये कहां धरिकौनस्वरूप । पांडव लक्षितभये न भूप ॥ जानिपरत तिनलहोबिनाश । तो कल्याणभयो मतिराश ॥ सूततास पांडवबिन सर्ब । गयेद्वारकापुरी अखर्व ॥ नष्ट अवश्य भयेते भूप । भावी तवकल्याण अनूप ॥ सुनहु एक प्रियबार्त्ता और । भूप सुयोधन कुरुकुल मौर ॥ हने त्रिगर्त्त बीर अतिमान । कीचक सूतपुत्र बलवान ॥ जो बिराट भूपति को तौन । होसेनानी अतिबल भौन ॥ गन्धर्बन मारो निशिमाह । भ्रातनसहित सुनो नरनाह ॥ क्षितिपर परे लखे हमसर्ब । काहू नहिं देखे गन्धर्ब ॥ यह सुनिकै प्रिय कुरुकुल भूप । हूजै कृतकृत आनँद रूप ॥
इतिश्रीबिराटपर्बणिचारप्रत्यागमनवर्णनोनामएकादशोऽध्यायः ११ ॥

बैशम्पायनउवाच ॥ जयकरी ॥ चारन्हके सुनि भूपति बैन । चुपकै चिन्ति रहो मति ऐन ॥ सभासदनसों एसेभूप । बोलोभरोदुःखसों रूप ॥ कारज गतिको अन्त उदार । ताको तुमसब करहु बिचार ॥ पांडवगये कहां ते सर्ब । बाकीरहो कालअबखर्ब ॥ वर्ष त्रयोदश चहतसिरान । तिनकोशोधन लगोप्रमान । बीते सकल त्रयोदशबर्ष । अतिबल पांडव भरेअमर्ष ॥ बसत महा

विषसे समसर्प। ते प्रगटैंगे भरेअदर्प ॥ सकलकालबेत्ता बल-
वान। ज्यों बनको फिरि जाहिं महान ॥ ताते तैसोकरहु नरेश।
होय अकंटक राज्य सुदेश ॥ कहो कर्ण तबऐसे बैन। पठवहु
चारधूर्त मति ऐन ॥ ढूंढैंबन पुरदेश पहार। नानारूप धारिते
चार ॥ तब दुःशासन बोलेबैन। दुर्योधन सों दुर्मति ऐन ॥ जा-
को भूप तुम्हैं बिश्वास। पठवहु तौन चार मतिरास ॥ कहो क-
र्णसों सम्मत बैन। चहुँदिशि चारफिरैं मति ऐन ॥ लहैंनातिन
की गतिस्थितिचार। तौजानहुगे सागरपार ॥ कैखाये गहिका-
हू नाग। कैमरिगये क्षुधित दुर्भाग ॥ समाधान मनकोकरि भू-
प। करहु राज्यको कार्यअनूप ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ तबबोले इमि
द्रोणाचार्य। नहिंबिनशत ऐसे मतिआर्य ॥ पांडवशूर अस्त्रविद
सर्ब। नीति निपुणधर्मज्ञ अखर्ब ॥ सकल जितेन्द्रीबीर कृतज्ञ।
हैंपांडव सिगरे सर्बज्ञ ॥ ते सब भरेपरस्पर राग। सेवतधर्मनृ-
पहि बड़भाग ॥ तातेनीति निपुण जैसर्ब। किमिनभजै श्री ति-
न्हैंअखर्ब ॥ बलतेउदै कालकी जौन। पांडवसब देखतहैंतौन ॥
नाशकियो चाहत तेबीर। जानिपरतयह हमैंगँभीर ॥ अबजो
करिबे तुम्हैं बिचार। क्षिप्रकरहु सो भूप उदार ॥ मिलतन जो
पांडवगुण धाम। बीरधीर धुरधर्म ललाम ॥ जैसे जानिपरैंते
बीर। तौन करहुधरि धीरजधीर ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ बोले सत्य
धर्मधुर धाम। भीष्म पितामह नीति ललाम ॥ कहे द्रोण जे
बचन प्रमान। भरतबंशबर्द्धक सुखदान ॥ भूप युधिष्ठिरके नि-
तपास। रहतसत्यकीन्हें ध्रुवबास ॥ पांडवदेखत समयप्रमान।
सत्यप्रतिज्ञ बीर बलवान ॥ क्षत्रधर्मरत शतब्रतमान। कृष्ण
अनुग प्रियपरम सुजान ॥ तेक्लैहैं नहिं दुःखित भूप। शतब्रत
धर्म धुरंधर रूप ॥ भये गुप्तते बचन प्रमान। पांडवबीर महा
बलवान ॥ नहीं नाश पायो तिनबीर। कहति सुमति मम ऐसे
धीर ॥ कहत यथामति हमयहबैन। तुम्हैं ढूंढिबो नीतिसुहैन ॥

न्चित्य पांडवनहमको जौन । कहिबे योग्य कहतहैं तौन ॥ कहत सुहृद ताके अनुरूप । नहीं द्रोहते भाषतभूप ॥ बर्ष तेरहें भूपति धर्म । बसिहैं जहँ सह भ्रातन पर्म ॥ तौन भूपको अनु कल्यान । ह्वैहै नहीं भूपमतिमान ॥ सत्य प्रियंबददाताशूर । जहँ बसिहैं पांडवबल पूर ॥ हृष्ट पुष्ट तहँके जन सर्व । भरे होहिंगे मोद अखर्व ॥ मानीमत्सर पापीतत्र । नाहिं जनबसत धर्मनृप यत्र ॥ भूरि दक्षिणा तेपरजन्य । वर्षीनित्यदेशसोधन्य ॥ निरातंक भूशस्यमहान । स्वादु अन्न फलसुरससमान ॥ निर्भैदेश सो ह्वै है पर्म । बहुगो जहँ बसिहैं नृपधर्म ॥ ह्वैहै सबगुण भरो सो देश । बासकरत जहँ धर्मनरेश ॥ चहत बिचारि कृत करिबे जौन । क्षिप्रकीजिये भूपति तौन ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ बोले कृपाचार्य्यतबबैन । युक्तकाल लखिकै मतिऐन ॥ भीष्मकहे ते बचन प्रमान । सुनहु कहत हम जौन सुजान ॥ तिनको तीर्थ निकट कहुंबास । चिन्तित करहुभूप मतिरास ॥ नीति बिधान करहु तुमतौन । तुम्हें होयहित भूपतिजौन ॥ निदरीरिपु नहिं अबल सुजान । येपांडव अतिरथ बलवान ॥ गुप्तवेष पांडवन बिचारि । तिनको उदय कालनिरधारि ॥ मित्रस्वराष्ट्र माहिंनृप जौन । स्वबल जानि लीजैनृपतौन ॥ उदय पांडवनको जो भूप । प्राप्तभयो अब निकट अनूप ॥ समयनिवृत्तभयेतेबीर । अमित ओजह्वैहैं रणधीर ॥ तातेधनबल नीतिबिचार । प्रथमकीजिये भूप उदार ॥ पांडव उदैकालमें उद्ध । तिनसँग करहुयथा तुम युद्ध ॥ स्वबल स्वपक्षिनको बलजौन । न्यूनाधिक्य बिचारहु तौन ॥ बिग्रह सन्धिकीजियो जानि । स्वबल शत्रुबलकोअनुमानि ॥ कोशस्वबल बर्द्धित नृप जौन । लहत सिद्धिको भूपति तौन ॥ पांडवबलबाहन तेहीन । करिहैंयुद्ध क्रोधबशपीन ॥ गुणि कै करिहौ जो करतव्य । तौसुख लहिहौ भूपतिभव्य ॥ बैशम्पायन उवाच ॥ तबत्रिगर्त्त रथयूथपपास । बूझोसमय बचनमतिरास ॥

सुशर्मोवाच॥ कीचकमत्स्यसूतबरबीर। तेहिबाँधोमम देशगँभीर॥
देखि कर्णदिशिऐसेबैन। कहोत्रिगर्त्तराज मतिऐन॥ क्रूरअमर्षी
सो बिख्यात। गन्धर्बनकिय तासुनिपात॥ कीचकमरे दर्पहत
भूप। भयो बिराट अबल अनुरूप॥ तहँ यात्राकरिबो मतपर्म।
रुचै भूप सो करहु सशर्म॥ कर्ण कौरवनको यह कार्य्य। करिबे
योग्य अवश्यकआर्य्य॥ चलिये तौन राज्यको भूप। तासोंलीजै
रत्न अनूप॥ ग्रामदेश मत्स्यनको जौन। यथाभाग लीजै हरि
तौन॥ नृप बिराटको गोधनजौन। प्रथम हरणकीजै सबतौन॥
नगर घेरि सह कौरवभीर। भटत्रिगर्त्त जे अतिरणधीर॥ यथा
भागताको धनसर्ब। हरण कीजियेदेश अखर्ब॥ मारि चमूताकी
बलवान। बश बिराटको करैं सुजान॥ वशकरि तौन मत्स्यपति
भूप। तब हमबसैं तहां सुखरूप॥ तुवबलवृद्धि महाबलधाम।
कैहैं येमोबचनललाम॥ सुनिभूपतिसोंबोलोबैन। कहत सुशर्म्मा
जो मतिऐन॥ तातेक्षिप्र चलहु कुरुभूप। लेचतुरंग चमू अनु-
रूप॥ पृथकपृथक लै अपनीसैन। सुभटाधीश चलैंमतिऐन॥
कृपभीषम अरुद्रोणाचार्य्य। यथाकहैं त्योंकरियेआर्य्य॥ करिकै
मंत्र चमूको ठाट। चलिये जीतन भूपबिराट॥ कहा पाण्डवन
ते है कार्य्य। ते बल पौरुषहीन अनार्य्य॥ पांडव नष्टभये सुख
रूप। चलहु बिराटपुरीको भूप॥ तासों धन गोधन अतिमान।
देशसहित लीजै सुखदान॥ वैशम्पायनउवाच॥ कर्ण बचन करिकै
स्वीकार। आज्ञादीन्हों भूपउदार॥ दुःशासनसों साजहु सैन।
करि बृद्धनसों मत मतिऐन॥ हम जेहि दिशिकोकियो बिचार।
कुरुनसहिततहँ चलैं उदार॥ कियोसुशर्मै जोउद्देश। तेहिदिशि
जाहि सहित बलवेश॥ करै सुशर्मा प्रथमपयान। सहित त्रि-
गर्त्त सुभट बलवान॥ हम दिवसान्तर लहि सहसैन। मत्स्य-
पुरी को गहिहैं ऐन॥ जायसुशर्मा तहांउताल। प्रथम हरा गो-
वृन्द बिशाल॥ हम सहसैन दूसरी ओर। चलिगोधन हरिहैं

बरजोर॥ भूप सुशर्मा सेनासंग। गोहरिबेको भरोउमंग॥ कृष्ण सप्तमी तिथि अभिराम। गयो मत्स्यपुरको बलधाम॥ कुरुकुल सहित सुयोधन भूप। गयो अष्टमीपाय अनूप॥

इतिबिराटपर्बणिगोग्रहणोपाख्यानेबिराटपुरगमनबर्णनोद्वादशोऽध्यायः॥

बैशम्पायनउवाच॥ रोला॥ पांडवनको बसततेहां कपटधारे वेष। करत कार्य्य बिराटको गतभयो वर्षअशेष॥ मरेकीचककेकियो यह मत्स्यपति बिश्वास। अरिनकोलहि समैकरिहैं अवशिबीर बिनास॥ तेरहें बरषांतमें तहँ नृप सुशर्मा आय। हरण कीन्हीं मत्स्यपतिकी अमित उत्तमगाय॥ देखिगोधन हरणआये गोप जबसों सर्ब। रहेभूप बिराट जेहां सहित सुभट अखर्ब॥ कूदिकै रथतेकहो तिनजाय भूपतिपास। हरोभूप त्रिगर्त्त गोधनरावरो बलरास॥ जीतिहमको युद्धमें सहबन्धुसहितसहाय। जातगोधनलये भूप त्रिगर्त्त अतिबलआय॥ चलहु बेगिनरेन्द्र गोधन करहु रक्षितबीर। सुनतभूप सुसज्जसेनाकियो अतिरणधीर॥ सैनसाजि चतुरंगिनी मत्स्याधिपति अतिमान। धरोबर्मबिचित्र मत्स्यन सारमें बलवान॥ सहित पुत्रन भूप पहिरो कनक भूषित बर्म। शतानीक बिराटको प्रियजौन भ्राता पर्म॥ धरो तेहि दृढ़ चर्म बेधै जाहि शस्त्रन स्वक्ष। बलीताको बन्ध अवरज बीर जो मदिरक्ष॥ धरो तेहि शतबिन्दु कवच अभेद्य जौन अनूप। धरो कवच अभेद्यमणिमय भानुदत्त सुभूप॥ शङ्खपुत्र बिराटको तेहि धरो कवचमहान। बर्मधारी रथीसिगरे भये अति बलवान॥ युद्धको ते भयेसज्जित सकल अतिबल बीर। अश्व मनगति जोरि रथमें धरेबर्म गँभीर॥ बजनलागे पटहशोभित भयेध्वज छबि ऐन। शतानीक स्वअनुजसों इमि कहे भूपति बैन॥ कंकबल्लव तन्तिपाल सुजौन ग्रन्थिकबीर। युद्धकर्त्ता हैं सकल ये महाबल रणधीर॥ देहु इनको सुरथ उत्तमध्वज पताकावान। बर्मदेहु अभेद्यतिनको शस्त्रसंघमहान॥

भूपके सुनि बचनऐसे शतानीक सुजान। दिये कुन्ती सुतनको रथबर्म शस्त्र महान॥ पहिरिबर्ण सुधनुषधरि सनिषंग रथचढ़ि बीर। पुरःसर ह्वैचले पाण्डव युद्धको रणधीर॥ चलेसंगबिराट के सहबन्धु भूपति धर्म। मत्तनाग समान चाहत कियोकर्म स-कर्म॥ चले भूप बिराट के सँग सज्ज पाण्डवबीर। मनहुजात सपक्ष पर्बत धरे रत्नगँभीर॥ हृष्टपुष्ट सुयुद्धमें पटुभूपके प्रिय जौन। रथी आठहजार ऐसे सहस गजमद भौन॥ साठिसहस सुअश्व सादी मत्स्य पतिके साथ। लसीभूप बिराटकीसो सै-न अतिकुरुनाथ॥ चले गाइनके बिलोकत चरण चिह्नितऐन। लसीसो चतुरंगसेना बीरधीर सचैन॥

इतिश्रीबिराटपर्बणिदक्षिणगोग्रहबर्णनोनामत्रयोदशोऽध्यायः १३॥

बैशम्पायनउवाच॥ रोला॥ नगरते कढ़ि सहित पांडवमत्स्यपति बलधाम। भिरीमत्स्य त्रिगर्त्तसेना दिवसबीतत याम॥ मत्स्य सुभट त्रिगर्त्त दोऊ युद्धदुर्मद धीर। लगे लरन प्रचारिकै अ-न्योन्य अति बलबीर॥ गजाश्वबाहन बीर बिरचो तुमुलभो संग्राम। लगेबेधन भानुमंडल शूर भट अभिराम॥ अन्योन्य धावत अश्वरथ गज बाहभट बलवान। धूरि धुक्कितभयोनभ सम निशामुक्कत भान॥ गिरनपक्षीलगे क्षितिपर रजावृत ह्वै भूप। चलतबाण समान घनलखि परतनाहिं रबिरूप॥ बाण पुंख सुकनकके खद्योतसे चहुँओर। देखिलागे परन तेहि तम तुंगमें अतिघोर॥ रथी सादीपत्तिजन्ता पाय सुभटसमान। शक्तितोमर परशु पट्टिश सों लरे बलवान॥ लगेमारनक्रोधक-रिकरि परस्पर भटभीर। युद्ध ते नहिं सकत कोऊ बिमुखकरि रणधीर॥ परेमस्तक कटे क्षितिपर कनक कुण्डलमान। कटे शरसों भटनके बहु परे अंगमहान॥ सालतरुसे परे क्षत्री मरे क्षितिपर भूप। भईमणिमय भूषणनसों भूमि भूषितरूप॥ ह्वै गई रजशान्तसो बहु बहे शोणितधार। भये मुर्छित बाणपीड़ित

बीरधीर उदार ॥ शतानीक सुहने योधा एकशत बलवान । चारिशत मदिराक्ष मारे रथीबीर महान ॥ दोऊ पैठेमहासेनामाहँते बरबीर । केशगहिगहि लगे पटकन मथनसैन गँभीर ॥ जानि तिनहिं त्रिगर्त्त लीन्हें देखि ध्वजअतिमान । हनेरथिन बिराट रणसे पञ्चशतबलवान ॥ तुरगमारे आठशत अरुमहारथ हनिबान । लगेमर्दन भटनको रथहांकि बिबिध बिधान ॥ त्रिगर्त्तराज बिराट दोऊ हांकि कै रथउद्ध । अन्योन्य मर्दनलगे सेना गरजिगरजि सक्रुद्ध ॥ तबसुशर्मा मत्स्यपति दोउ भिरे बीर महान । लगे बर्षन बाणदोऊ बारिधार समान ॥ अस्त्र बितशर गदा शक्तिनसों लरे दोउबीर । हनि सुशर्महिं बाणदशसो मत्स्यपति रणधीर ॥ हने चारों तुरग अतिबर शरनसों बलवान । तब सुशर्मा अस्त्रबिदकरि क्रोधको अतिमान ॥ हनो पंचाशत शरनसों मत्स्यपतिको भूप । महारजसों मग्नतिनको लखत कोउन रूप ॥ भई सन्ध्या तिमिररजसों अन्ध तमस महान । रहे शशिके उदयलों रणसों निवृत्तसुजान ॥ उयोतम हरशीतकर लखि युद्धकर भटजौन । पाय बिमलप्रकाशकोफिरिलरनलागे तौन ॥ तबसुशर्मा सहितभ्राता लियेरथसमुदाय । क्रोध करिकै मत्स्यपति सों लरनलागो आय ॥ सहित भ्राता कूदिरथते मत्स्यपति बरबीर । चलेरथते क्रुद्ध आगे गदागहि रणधीर ॥ तथा तिनके सुभटदौरे परस्पर ह्वैक्रुद्ध । शस्त्रनानाभांति के गहिकरन लागे युद्ध ॥ मत्स्यपति के मथित करि बल को सुशर्माबीर । बिरथकरिकै नृपबिराटहिलियो गहिरणधीर ॥ मत्स्यपति को पकरिरथपर राखि अपने पास । चलीभाजी मत्स्य सेना देखि पूरितत्रास ॥ देखितिनको त्रासित भाजनकृपा करि नृपधर्म । कहन लागे भीमसों यहि भांति करिबे कर्म ॥ नृप सुशर्मा लयो पकरि बिराटको बलवान । करहु मोचन शत्रुबश सों होयनहिं सुखदान ॥ रहे ताके पास सबबिधि होयपूजितप-

र्म। भूप मोचन तास निष्कृति भीम तुमको धर्म॥ भीमोवाच॥ करहिंगेहमत्राण भूपबिराटको नृपधर्म। पायआज्ञा रावरीअरिहनत करि अतिकर्म॥ लखहु भ्रातन सहितरहि एकांत में तुमभूप। शुष्कयहतरु महासो ममगदाकेअनुरूप॥ याहिलेत उखारियाते हनत अरिगणसर्ब॥ वैशम्पायनउवाच॥ देखि मत्त मतंग सोतरु लखत तौनअखर्ब॥ बीरभ्राता भीमसों नृपधर्म बोलेबैन। महत तरु यहनाहिं उखारहु सुनहु हेबलऐन॥ तुंग तरुसोंहनहुगेअरिसैनतुमरणधीर। भीमतुमकोजानिहैंसबदेखि अतिबलबीर॥ अन्यगहिके शस्त्रमारहु शत्रुसैनउदार। शक्ति धनुषनिषंगलीजे परशुकैसितधार॥ लेहुमानुषशस्त्रजाते लखै तुमहिंनअन्य। करहु मोचित मत्स्यपतिको कर्मकरिकैधन्य॥ नकुल अरु सहदेवको करिचक्र रक्षकधीर। समरमें तिनसहित मोचहु मत्स्यपतिको बीर॥ वैशम्पायनउवाच॥ धनुष लीन्हीं भीमनिष्ठुर भूपके सुनिबैन। लगेबर्षन निशित शायक क्रोधकरि बलऐन॥ भीमकरिकै क्रोधदौरे जहँसुशर्मा बीर। तिष्ठ तिष्ठ बिराटको लखि कहेबचन गँभीर॥ भयो चिन्तित लखि सुशर्मा कालक्रुद्ध समान। कहतआवत तिष्ठतिष्ठ सुपृष्ठ दिशि बलवान॥ करत आवत महतकर्मसो कौनहै यहबीर। फिरो ऐसे बोलि धनुधरिकै सुशर्माधीर॥ निमेषांतर मात्रमें रथवृन्द शतसहजौन। भीमसेन बिराटके ढिगमारि डारेतौन॥ नागरथ हयपत्तिमारे गदागहिकै भीम। लखिसुशर्मा युद्ध दुर्मद क्रोधकरि बलसीम॥ लगोचिन्तन सहितभ्राता देखि सेना शेष। कानलों धनुखैंचिलागो बाणबर्षणबेष॥ बेगसोंरथहांकि आयेमत्स्य अतिबल बीर। दिव्यलागे अस्त्र डारन भरे क्रोध गँभीर॥ पांडवनको भिरेदेखत फेरिरथ बलवान। पुत्रभूपबिराटको तेहिकियो युद्ध महान॥ सहसमारे रथीभट करिक्रोध भूपतिधर्म। भीमसप्त सहस्रमारे सुभट मथिकेमर्म॥ नकुल

मारे सातशत भटबीरजे बलवान। शूरमारे तीनिशत सहदेव देवसमान॥ मारिसैन त्रिगर्त्तकीसब महा पांडवबीर। अत्युग्र आये जहँसुशर्मा भरेक्रोध गँभीर॥ हांकिकैरथ क्रोधकरि अतिआय भूपतिधर्म। हनोनिशित त्रिगर्त्त पतिको बाण बेधक मर्म॥ तबसुशर्मा तानिकै धनुक्रोधकरिअतिमान। धर्मनृपको कियोबेधित मारिकै नवबान॥ चारिशरसों हनेचारौ धर्मनृपके अर्ब। देखिआये भीमतेहां करेक्रोध अखर्ब॥ मारिताकेअश्व मारे पृष्ठ रक्षकजौन। सारथी हानिकै सुशर्मा कोगिरायोतौन॥ लगोतब मदिराक्ष मारन बिरथ ताहिनिहारि। तब सुशर्मा के सुरथते नृपबिराट बिचारि॥ कूदिदौरे गदाकरमें लये तापर बीर। भजिसुशर्मा चलोआवत देखिसोरणधीर॥ भजोजात बिलोकिकै त्रैगर्त्तपतिकोभीम। नहिंसुशर्मा भाजिबोहै युक्तोहिंअसीम॥ लियोगोधन चहोयाहीबलभरोसेआय। छोड़िकै अनुचरन भाजत जीवको डरपाय॥ भीमको सुनिबचनधारि त्रिगर्त्त लाजगँभीर। तिष्ठतिष्ठपुकारिकै सोफिरो अतिबलबीर॥ कूदिस्यन्दनसों सुधाये भीमकाल स्वरूप। भजोदेखि त्रिगर्त्त गहिकै जीविताशाभूप॥ भजोजात बिलोकिपकरो दौरिताको भीम। केशगहि क्षितिपै पछारो महाबलको सीम॥ मींजिक्षितिपर लगेमारन करन मुष्टिकघात। लगोकरन बिलाप सो लखिप्राणके उतपात॥ भयोमूर्च्छित सोसुशर्मा घात पीड़ित भूप। भजीताकी चमूसिगरी भरीभीति कुरूप॥ नृप सुशर्महिं जीतिकै तबफिरे पांडवसर्ब। सहित गोधन जयश्री धनलियो तासुअखर्ब॥ हरोदुःखबिराटकोकरि सत्यसेवाधर्म। भीमऐसे कहनलागेबचन सबसोंपर्म॥ नहींजीवनयोग्यहैयहमहापापाचार। नहींहमरोशक्यहै कछुघृणीभूपउदार॥ बांधिग्रीवापकरिल्याये बिबशतेहां बीर। नृपसुशर्महिं डारिरथपर भरोपांशु गँभीर॥ रहेरणके मध्यठाढ़े जहांधर्मनरेश। दियेभीमदेखाय

तौन त्रिगर्त्त पतिकोबेश ॥ देखिबोले भीमसों नृपधर्मऐसेबैन। देहुअधमहि छोड़ियाको योग्य बन्धन हैन ॥ भीमउवाच ॥ मूढ़ जीवन चहसि तौ यहहेतु सुनु ममपास । सभामें सत जनन सोंहे भयेबोलहुदास ॥ चहहुजीवनगहहुहारो युद्धको व्यवधान । नतरुहमसों छूटिहै न त्रिगर्त्त तुम्हरोप्रान ॥ भीमसों यहि भांतिबोले नीतिबिदनृपधर्म। छोड़ियाको देहुभो यहदास अधमअपर्म ॥ मत्स्यपतिकी दासताको लहित्रिगर्त्तनरेश । फेरि ऐसो कीजियो मतिजाहु अपनेदेश ॥

इतिश्रीबिराटपर्वणिसुशर्मापराजयबर्णनोनामचतुर्द्दशोऽध्यायः ।१४॥

वैशम्पायनउवाच ॥ जयकरी ॥ भूपसुशर्मालहिकैलाज । भयोअधोमुख मध्यसमाज॥ नृपबिराटकेपायनिदेश। बंदिचरणगोअपनेदेश ॥ बिदासुशर्माकोकरिभूप।भुजबलसोंलहिबिजयअनूप ॥ समरभूमिमेंकीन्होंबास। तेहिनिशिमाहँनृपतिबलरास ॥ जानिपांडवन कोबलधाम। नृपबिराटपूजोअभिराम ॥ बहुधनसोंकरि अतिसनमान। जानिमहारथ बीरमहान ॥ बिराटउवाच ॥ रत्नहमारेहैं धन जौन। सकल जानिये अपने तौन ॥ जेहैं मेरे सेवकसर्ब। तेसेवैंगे तुम्हैं अखर्ब ॥ अलङ्कार सहकन्या पर्म। हम तुमको देहैं सह धर्म ॥ तव भुजबलते अरिबलजौन। बिन प्रयास जीतो हम तौन ॥ तव भुजबलते ह्वैकै मुक्त। भये मत्स्यपति आनँद युक्त॥ तुम मत्स्यन के ईश्वरबीर। भये अघबलभरेगँभीर ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ सुनिबिराटकेऐसेबैन। पृथक्पृथक्पांडवमतिऐन ॥ कहन लगेप्रांजलिबरबीर। नृपबिराटसोंबचनगँभीर ॥ हमआनँदसों अतिशययुक्त। देखत तुम्हैं शत्रुसों मुक्त ॥ तबबिराट लहि मोद महान। कहो कंकसों करि सनमान ॥ करत तुम्हैं अभिषेक अनूप। मत्स्य बंशके हूजैभूप ॥ होय अभीष्ट जो तुम्हैं ललाम। सोहम सबदेहैं अभिराम ॥ व्याघ्रपाद तुम बिप्र अखर्ब। तुम्हें प्रणाम करत हमसर्ब ॥ तवप्रसादते फिरिहमबीर। लखत स्व-

बंश राज्य गम्भीर ॥ तवप्रसादको पाय गँभीर । अरिके बशह्वै गये न बीर ॥ फिरि बिराटसों भूपतिधर्म । कहो कहतिसो तुम अतिपर्म ॥ पठवहुदूत नगरको जाय । तवजयकहैं सुहृद सुख-दाय ॥ सुनत कंकके भूपतिबैन । पठयोक्षिप्र दूतमतिऐन ॥ ऐसे कह्यो दूतसों भूप । कहियो ममजयजाय अनूप ॥ पहिरिबिचित्र कुमारी बास । ठाढ़ीहोहिं आयपुर पास ॥ गावत नाचत बाद्य बजाय । बारबधूपुर बाहर आय ॥ शिरधरि भूपति शासन चार । भीरह्नोतगे नगरउदार ॥ चारबिराट नगरमें जाय । कहो टेरि नृपजय सुखदाय ॥

इतिश्रीबिराटपर्वणिसुशर्मापराजयबर्णनोनामपंचदशोऽध्याय: १५ ॥

बैशम्पायनउबाच॥दोहा ॥भाजिसुशर्मा भूपगोगोधनलह्योबिराट । आये दुर्योधनालिये पुरढिगसेनाठाट ॥ भीष्मद्रोण संकर्ण कृप अश्वत्थामाबीर । शकुनि बिबिशति चित्रसेन अरु दुःशासन रणधीर ॥ दुर्मुख सहित बिकर्णशल और महारथजौन । चलि बिराटके पुर निकट घेरो गोधन तौन ॥ गायनदिये भजाय तिन गोधन लीन्होंआय । साठिहजार बिराटको रहोजो गोसमुदाय ॥ रथ समूहसों घेरितिन लीन्होंचारों ओर । हनहु हनहु गोपाल गण बढ़ोशोर अतिघोर ॥ रथपर चढ़ि भाजेसकल गोपाध्यक्ष उदार । पुरमें पैठे आयते आरत करत पुकार ॥ रथतजिगोपा-ध्यक्षतेभूप भौनमें जाय । भूमिंजय नामक नृपति सुतको दियो सुनाय ॥ गोधन सिगरे देशको हरो सुयोधनभूप । साठिहजार बिराटकी रहींजे गाय अनूप ॥ ताकेजीतनको उठहु गोधन लेहु छड़ाय । राजपुत्र हितकीजिये अपनो आतुरजाय ॥ तुमपाल-कहो राष्ट्रके बिनामत्स्यपति भूप । करत सभामें रावरी श्लाघा भूप अनूप ॥ पुत्रहमारो ममसदृश महाशस्त्रबिदबीर । सत्यकरहु ताकेबचन शून्यपालरणधीर ॥ गोधन ल्यावहु फेरिसब सेना जीतहु सर्ब । दहहु कुरुनके गर्बकोडारि शरालि अखर्ब ॥ श्वेत

रजतसे लायहय रथमेंअति अभिराम। हरिभूषित ध्वजस्वर्ण-
मय भूषित करहु ललाम॥ रुक्म पुंख शरछूटिकै तब करते बर
बीर। रविमण्डल छादितकरैं अरिपथ हरणगँभीर॥ जीतिसमर
में कुरुनको ज्यों असुरनमघवान। गोधनलै फिरिआइये अप-
ने पुर बलवान॥ नृपबिराटके राज्यके तुमहीं गतिबरबीर। यथा
पांडुकेसुतनकेगतिअर्जुनरणधीर॥ बैशम्पायनउवाच॥ तियनमध्यगो
पालकेसुनिकैऐसेबैन। अन्तःपुरमेंकहतभोइमिसुबचनबलऐन॥
इतिमहाभारतदर्पणेबिराटपर्बणिउत्तरगोग्रहणवर्णनोनामषोडशोऽध्यायः॥

उत्तरउवाच॥ रोला॥ जाहिंहम दृढ़ धनुषधरिकै फेरिबे गोसर्ब।
होयगन्ताजोकोऊ अतिनिपुण बाहकअर्ब॥ ताहि देखहु क्षिप्र
मेरे योग्ययन्ता जौन। मासभो रणमाहँ मेरोमरो यन्तातौन॥
लहौंजोमैं सारथी रथजौन कोबिदधीर। बेगिहौं चढ़िजाउँ रथ
पर धारिध्वजगम्भीर॥ जीतिअरि चतुरंगिणी बर बर्षिशस्त्र
महान। फेरि गोधन ल्याइहौं कुरुबंश ते बलवान॥ भीष्म
द्रोणसपुत्र कृप अरु कर्णजो बरबीर। साहितभ्रातन जीतिलेउँ
सुयोधनहि गंभीर॥ हारिरीते जाहिं कौरव जौन आये सर्ब।
जीति तिनको अद्यगोधन फेरि लेउँ अखर्ब॥ कहाहम नहिंकरैं
जोइस्थित होयगोधन माह। लखै मेरो पराक्रम अब सकल
कुरुकुल नाह॥ बैशम्पायनउवाच॥ सुने अर्जुन कहे उत्तर भूपसुत
जे बैन। कहोऐसे द्रौपदीसों समयलहि मति ऐन॥ देहुसुन्दरि
याहि उत्तर कहतहैं हम जौन। पांडवनको करतहो सारथ्य यह
बलभौन॥महारणमेंजिष्णुकोयहसारथीहोधीर॥ बैशम्पायनउवाच॥
कहत बनितन माहँउत्तर होजहांगंभीर॥ जायसुत्रिनमाहँता-
के पास कृष्णाबैन। कहनऐसे लगीलज्जा भरीअति मतिऐन॥
बृहद्वारण सदृशहै यह युवाप्रिय रुचिजौन। शस्त्रवेत्ता परम है
सुबृहन्नला मतिभौन॥ सारथीयहजिष्णुकोहै युद्धमेंबलवान।
धनुर्द्धर यह युद्धमेंहै बलीपार्थ समान॥ पांडवनके पास देखो

पूर्वहै सुतभूप । कियोखाण्डवदाहमें इन सार्थिकर्म अनूप ॥ इन्हें अर्जुन सारथी लहि के महा बलसाथ । जारि खण्डवजीति लीन्हों युद्धमें सुरनाथ ॥ उत्तरउवाच ॥ नहिं नपुंसक कर्म जो तुम कहति हो मति ऐन । नहिं बृहन्नल पासहमयह सकतकहि है बैन ॥ द्रौपद्युवाच ॥ जोकुमारी कुंवरहै तव स्वसाअति अभिराम । बचनताको मानि है सो बृहन्नल बलधाम ॥ जो बृहन्नल होयगो सारथीलव रणधीर । जीति कुरुन समेत गोधन आइहौबरबीर ॥ द्रौपदीके बचन सुनि तेहि उत्तरा सोबैन । कहो ल्याउ बृहन्नलहि इतस्वसा सुखमा ऐन ॥ सुनत आता बचनसोचलिगई नर्त्तनधाम । धरेवेषबृहन्नलाको जिष्णु जहँअभिराम ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ गईदौरति बीजुरीसी चन्द्रबदनीतौन । रहे बैठे बृहन्नलजहँ चारु नर्त्तन भौन ॥ भरीरूप अनूप भूषण धरे अति अभिराम । पद्मपत्र समान लोचन कामकैसी धाम ॥ देखि अर्जुन लगेबूझन आगमनको मर्म । कौन आई हेतु आतुर उत्तरा कहुपर्म ॥ नहींबदन प्रसन्नतव कहु हेतु सुन्दरि तौन । सुनि बृहन्नल के बचन सह प्रणयसो छबिभौन ॥ कहनलागी सखिनके मधि उत्तरा इमिबैन । जातकुरुनृप लये गोधन बृहन्नल बलऐन ॥ तिन्हैं जीतन गयोचाहत धनुर्द्धर ममभ्रात । नहींताके सारथीहै है बृहन्नलतात ॥ करहुतुरसारथ्य तुमकोबिद बृहन्नलभर्ग । कहो सैरंध्री तुम्हैं अति सारथिनमें पर्म ॥ सारथी तुम पार्थके हे पूर्वरणमें धीर । तुम्हैं पायसहाय अर्जुन कियो दिग्जयबीर ॥ करहुअब सारथ्यमेरेबन्धुको तुम तौन । करहिं जबलों दूरिनाहिं तेलये गोधन गौन ॥ करहुतुम सारथ्य तबलों जोरि आतुर अर्व । जीतिके सबलेहु अपनो फेरि गोधन सर्व ॥ उत्तराके बचन ऐसे सुनत अर्जुन बीर । गयेउत्तर कुँवरके ढिग भरेमोद गँभीर ॥ उत्तरा अनु गई अर्जुनबीर के अभिराम । यथागज पीछे सु शिशुगज बधूजाति सुक्षाम ॥ उ-

त्तरै लखि जिष्णुसों इमि कहे बचन गँभीर । बहोखरडम जि-
ष्णु तुमको सारथीलहिबीर ॥ तुम्हें सह सबजीति अर्जुन लई
भूमि अखर्ब । कहो सैरंध्री सोजानति पाण्डवनको सर्ब ॥ तथा
मेरे अश्व शीक्षित कुरुबृहन्नलबीर । चहतजीतो कुरुन गोधन
लियो चहत गँभीर ॥ बृहन्नल यहिभांति के सुनि राजसुत के
बैन । बिहँसिकै इमि कहनलागे भरे मनमेंचैन ॥ तौर्यत्रिकहम
करनजानत बिबिधबिधिगंभीर । युद्धमेंसारथ्यकीसामर्थ्यहैनहिं
बीर ॥ उत्तरउवाच ॥ बृहन्नलतुम गानन्रत्तन करहुगे फिरि आय ।
होहु मेरे सारथी अबयुद्धमें सुखदाय ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ कहेपा-
ण्डव बचन बहुबिधि कुँवरसों तहँ नर्म । उत्तराके सामुहे सब
गुप्त कीन्हें मर्म ॥ कवच ऊपर देहके धरि धरो फिरिउतारि । ल-
गीहँसन कुमारिका ले जिष्णु ओर निहारि ॥ दियो उत्तरकवच
अपने हाथसों पहिराय । पहिरि उत्तम कवच रबिसों लसोसो
अतिकाय ॥ सिंह चिह्नित ध्वजा रथपर धारिकै अतिमान ।
धनुष रथपर धरे उत्तम निशित अगिनित बान ॥ धारिरथपर
उत्तरहि कै सारथी बरबीर । चलत बोली उत्तराइमि बचनम-
धुरगँभीर ॥ हे बृहन्नल ल्याइयो बहुरंग बसन ललाम । पुत्त-
लिन के हेतु मृदु अतिसूक्ष्म बहुअभिराम ॥ जीतिभीषम द्रोण
आदिक कुरुनको बरबीर । बृहन्नल इमि दियो उत्तर बिहँसि
कै गंभीर ॥ बृहन्नलोवाच ॥ कुंवर उत्तरजीतिहैं जीते महारथसर्ब ।
हरेंगे हम बसन बहुरँगके अमोल अखर्ब ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ बो-
लिकै यहि भांति अर्जुनतुरग हांके भूप । सामुहें कुरु चमूके रथ
कियो आतुर रूप ॥ देखिरथपर उत्तरहि तब सहबृहन्नलबीर ।
बिप्र बनितन करि प्रदक्षिण कहे बचन गँभीर ॥ करतखांडव
दाहमंगल जिष्णु के भो जौन । जीति रणमें कुरुनको तुमलह
हु मङ्गल तौन ॥

इतिमहाभारतदर्पणेविराटपर्बणिउत्तरानिर्याननिर्वणनोनामसप्तदशोऽध्यायः

बैशम्पायनउवाच ॥ रोला ॥ राजधानीते निकसि इमिकहो उत्तर बैन । सूत रथलै चलहु तितजित कुरुनकीहै सैन ॥ युद्धमेंहम कुरुनको सब जीतिकै समुदाय । क्षिप्रआवैं नगरको सब लेइँ अपनीगाय ॥ कियेप्रेरित तुरग अर्जुनताड़िकै अतिमान । जिष्णुप्रेरित अर्बक्षितितजि चले उड़तमहान ॥ जायकै कछुदूरि देखो जिष्णु उत्तरसैन । महासिन्धु समान जाको पारदेखि परैन ॥ इमशानके ढिगजाय अर्जुन शमीदेखीतौन । लखीसेना कौरवनकी भीरु भयकीभौन ॥ गगन सों तरुलगे जाकेसचल गहनसमान । धूरि धूधुरिभरी दशदिशि देखिपरत न भान ॥ तौनदेखत चमूगजरथअश्वपूरितभीम । जाहिरक्षतभीष्मद्रोण सुकर्णकृप बलसीम ॥ भरोभयसों देखि उत्तरचमूसोबलतोम॥ उत्तरउवाच ॥ कुरुनसों लरिहैं न देखहुउठेमेरेरोम ॥ बीरवृन्दअनेक जामें कुरुनकी यहसैन । युद्धइच्छा कौरवनसोंसूत हमको हैन ॥ देखिकै चतुरंगिणीकुरुसेनयहअतिमान । सूतमेरोहोतहै अति व्यथित मानसप्रान ॥ द्रोणभीषमकर्णकृप जहँद्रोणसुत बरबीर । शकुनि दुःशासन बिबिंशति अरुबिकर्णगँभीर ॥ नृप सुयोधनमहारथ बाह्लीकसह द्युतिमन्त । महारथ अति धनुर्द्धर बरबीरपृथिवीकन्त ॥ सैनसह कुरुबीर सिगरेमहाबलकेतोम । मोहिंमूर्च्छाहोति देखतउठेभरिभयरोम ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ असामान्यप्रगलभधारे कपटवेष सुजौन । लगो ऐसे सव्यशाचीपास रोवनतौन ॥ गये तात त्रिगर्त्तपै सँगलये सुभट अनेक । रहे सैनिक नहीं कोऊ छोंड़िकै मोहिंएक ॥ एक बालक हम अशीक्षित सैन अरिकी उद्ध । बहु कृतास्त्रन सों न सकिहैं करिबृहन्नलयुद्ध ॥ चलहु ताते धामको अबबेगि फिरहु सुजान । राखि लीजै कृपाकरिकै सुनहु मेरोप्रान ॥ बृहन्नलउवाच ॥ भयो भयते दीन तौ अरिहर्ष बर्द्धनरूप । रणाजिर नाहिं अरिन कीन्होंकर्म कछु अतिरूप ॥ कहोतुम मोसों चलो लै मोहिं अरिजहँसैन ।

हम ले आये तुम्हैं तहँ जहँ बाहिनी ध्वजएैन ॥ गोधनामिष चहत ये कुरु गृद्धसे बरबीर। तहां हमलै चलत तुमको करहु युद्ध गँभीर ॥ कहो इस्त्रिन माहँ पौरुष स्वजनमें अतिउद्ध। नगरते कढ़ि आयके इत करत क्योंनहिं युद्ध ॥ जीतिकै बिन लये गोधन जाहुगे जो धाम। सुनहु उत्तर तुमहिं हँसिहैं नगर की सबबाम ॥ करनको सैरंध्रि हमसोंकहो सारथि कर्म। सकल फिरि नहिं जीतिकै बिनलिये गोधन पर्म ॥ स्तोत्र सैरंध्री कियो तुम कहे बचनअरुद्ध। रहत थिर अब करहि क्योंनहिंकोरवनसोंयुद्ध ॥ उत्तरउवाच ॥ मत्स्यकुलको हरो कौरव ससुख बित्त अखर्ब। सुनु बृहन्नल हँसौ प्रमदा पुरुषहमको सर्ब ॥ युद्धसे नहिं काम मेरो बेढ़ि गोधन जाय। नगर सूना कँपतहैं हमपिताको डरपाय ॥ बैशंपायनउवाच ॥ कूदि रथते भजोपुरको बोलि ऐसेबैन। दर्पमान बिहाय शरधनु भरोभी अतिचैन ॥ बृहन्नलउवाच ॥ नहीं शूरनकहो क्षत्रीको पलायन धर्म। मरण क्षत्रीको समरमें श्रेयकारक पर्म ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ बोलिऐसे कूदि रथते जिष्णु अतिबलवान। ता ओर आंवत लगी बेणी पीठिपै लहरान ॥ कँपत बेणी देखि अर्जुन नहीं जानतजौन। हँसनलागे रूप अद्भुत चाहि सैनिक तौन ॥ शीघ्र धावत देखिलागेकहन यों कुरुबीर। भस्ममें ज्यों अग्निको यह गुप्तवेष गँभीर ॥ लसत प्रमदाको कछू कछु पुरुषकैसो रूप। सारूप्य अर्जुनको धरत यह क्लीवरूप अनूप ॥ शीश ग्रीवा तैसियैहै बाहु परिघ समान। तैसोई बिक्रांतहै यह धनंजय नहिं आन ॥ अमरमेंअमरेश अर्जुन मनुजमें त्योंबीर। एक हमपै आवतो बिनजिष्णु को रणधीर ॥ एकपुत्र बिराटको हो नगरमें चढ़ि जान। बिना पौरुष वाल्यतेसो चलो निकासि अयान ॥ सारथी करिगुप्तधारेरूप अर्जुन जौन। कढ़ो बाहर नगरके नृपपुत्र उत्तर तौन ॥ देखिहमको भीतिसों सो भजोजात अयान। ताहि धरिबे हेत

धावत जिष्णु सो बलवान ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ देखिऐसे लगेकौरवसकल करनबिचार । सक्तकोउनदेइउत्तर भरेबुद्धिउदार ॥ गयोशतपदधायउत्तरदौरिअर्जुनबीर । जायताको पकरिलीन्हों केशपाश गँभीर ॥ कहाबिहुसमुझाय अर्जुन बहुल बिधिकेबैन । भयो दीन बिराटको सुत भरो भीति अचैन ॥ उत्तरउबाच ॥ सुनु बृहन्नल कहत हैं हम मानिलीजै तौन । फेरि रथकाचलहु जीवत भद्र देखत तौन ॥ देहिंगे हम हेमके शत निष्क अति अभिराम । आठमणि बैदूर्य्यदेहैं कनक जटित ललाम ॥ कनकमय रथदेहिंगे दशमत्त बारण तोहिं । हे बृहन्नल मानिकै यह बिनय छोड़हु मोहिं ॥ भांति के यहि बचन बोलत करतभूरि बिलाप । ताहि गाहि रथपास ल्याये जिष्णु पूर प्रताप ॥ कहन ऐसे जिष्णु लागे बिहँसि उत्तरपास । देखिकै भयभरो कम्पित बिगत चेतनतास ॥ होत नाहिं संग्रामको उत्साह तोसों उद्ध । करहु तुम सारथ्य अरिसों करत हैं हम युद्ध ॥ हांकि कै रथ चलहु यहि रथ बाहिनीको बीर । महारथ जेहि करत रक्षित धरे धनुष गँभीर ॥ राजपुत्र न डरहु क्षत्रीबंश संभवपर्म । समर मध्य कुखेद करब न क्षत्रकुलको धर्म ॥ कौरवनको जीतिलेहैं हम सुगोधन सर्ब । रथानीक बिदारिकै यह जो अदृश्य अखर्ब ॥ सारथी तुमहोहु लरिहैं कुरुनसों हमवीर । कुँवर उत्तरको सुऐसे बोधकरि रणधीर ॥ महाभयसों बिकल उत्तरकुंवरको समुझाय । बांह गहिकैलियो रथपर जिष्णु ताहि चढ़ाय ॥

इतिमहाभारतदर्पणेबिराटपर्बणिउत्तरभंगवर्णनोनामअष्टादशोऽध्यायः ॥

बैशम्पायनउबाच ॥ रोला ॥ बेषधारे क्लीवको रथचढ़ो लखिअतिकाय । शमीसोंहैं जात उत्तरको सुसाथ चढ़ाय ॥ भीष्म द्रोणहिं आदि जेतिकरहेकुरुबरबीर । जिष्णुसंभवभीतिसों मनभरोतास गँभीर ॥ देखिकै उतपात बिस्मयभरे कौरव भूप । कहनद्रोणाचार्य्य लागे बचन समय स्वरूप ॥ कहत कर्कश अनिलभो नभ

भस्मबर्ण समान । गगन तमसों भरोधाये जलदरुक्ष महान ॥ शिवारोदन करनलागी उदित रबिकी ओर । ध्वजा कम्पनलगी गुंजत अश्व हाथी घोर ॥ होतहैं चहुँओरते अतिशकुन कठिन कराल । सज्जह्नै सबरहो आयो महाभयको काल ॥ करहु रक्षा आपनी करि बाहिनी को ब्यूह । लखहु युद्ध समीप रक्षहु सकल गोधन जूह ॥ महाधनु यहपार्थ आयो क्लीवको धरिवेष । श्रेष्ठ है सब शस्त्र भृतमें शत्रुसम न अशेष ॥ श्लोक ॥ नदीजलक्लेश बनारिकेतुः नगाह्वयोनामनगारिसूनुः । एषोङ्गनावेषधरः किरीटी जित्वावयंनेष्यतिचाद्यगावः ॥ रोला ॥ महाबलविख्यातहै यह बीरअर्जुन तौन । होतहै न निवर्त्त रणमें सुरासुरसोंजौन ॥ लहो बनमें क्लेशशीक्षितकियो जे मघवान । भरोमहत अमर्षसों यह जिष्णु जिष्णु महान ॥ नहीं प्रतियोद्धारताको यहां कौरवबीर । शंभुको जेहिकियो तोषित युद्धमाहँ गँभीर ॥ करणउवाच ॥ कहत अर्जुन को सुगुण तुम नित्य धरि अनुराग । ममसुयोधनके न अर्जुन सोरहहँ भाग ॥ दुर्योधनउवाच ॥ पार्थजोयह होय तौ मम भयोपूरणकार्य । करनपांडवजाहिंतौ बनबर्षद्वादशआर्य ॥ अन्य कोऊ होयगो जो क्लीवको धरिवेष । शरन सों हनिताहि करिहैं प्राणसों निःशेष ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ करण के धृतराष्ट्र सुतकेसुनत ऐसेबैन । भीष्मद्रोण सराहिबोले जिष्णुअति बलऐन ॥ शमी के ढिगजाय अर्जुनकहो ऐसोबैन । बेगिउत्तर चढ़हुयापै धारि के चितचैन ॥ जायल्यावहु धनुष तातेसह निषंग महान । सुनहु मेरे बाहुबल के धनुष ये नसमान ॥ बेगितातें चढ़हु उत्तरशमी पैअतिमाम । धरेयापैपांडवनधनु आपनेअभिराम ॥ बर्महैंअति पर्म जौन निषंगदिब्य उदार । धनुषहै गांडीवगुरु लरुभरो अतिशयभार ॥ सहतअतिब्यायामकोदृढतालतुङ्गसमान । सकल अस्त्रसमेत अरिदल दहन सदृश महान ॥ कनक बनक समान सुन्दर रहित ब्रणसों जौन । शमीपर चढ़िधनुष ल्यावहु तूण

उत्तरतौन ॥ पांडवनकेधनुषहैंसबसुनहुएकसमान । चीन्हिलीजो चिह्न तुमसों कहतजौन सुजान ॥ उत्तरउवाच ॥ सुनोहमयहिवृक्ष सोंहै बँधोमृतक शरीर । राजसुत हमछुवैं कैसेताहिकैबरबीर ॥ करतिहै क्यों अशुचिहैसब बाहलौं तूमोहि । ब्यवहारकेर अ-योग्यमोको करतिहै क्यों जोहि ॥ बृहन्नलोवाच ॥ ब्यवहारकेन अ-योग्यकैहौ सुनोतुम बैराटि । होहिंगेनाहिं अशुचि संशय देहुसर्ब उचाटि ॥ धनुषमें भय करहु मतितहँनहीं मृतकशरीर । पुत्रहौ तुममत्स्यपतिके सुकुल जालकबीर ॥ नहीं तुमसों करन कहिहैं कर्मनिंदित जौन ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ पार्थके सुनिबचन उत्तरकूदि रथते तौन ॥ शमीपै चढ़िगयो हेजहँधरे धनुष महान । डारिवेष्टन धनुष बन्धन भंगकरि मतिमान ॥ चारिधनुमधिलखो तहँगां-डीव अद्भुतरूप । डारिधनुते लखोसो गांडीव अनुपम भूप ॥ दिव्यतातेप्रभानिकसी उदितसूरसमान । परोरूपबिलोकिताको सर्पसदृश महान ॥ क्षणक भरिभय धनुषपरसोतौन अतिमति ऐन । कह्योउत्तरटेरिकै फिरिजिष्णुसोंइमिबैन ॥ उत्तरउवाच ॥ स्वर्ण केकृतबिंदुजामेंकनककोटिसुठान । लिखेवारणपृष्ठिपैशुचिपार्श्व मुष्टिमहान॥ कहुबृहन्नलकौनकोयहधनुषअतिअभिराम।कनक केहैं इन्द्रगोपक पृष्ठिपैछबिधाम ॥ कौनकोहैबृहन्नल यहधनुष पुरणकास । सूर्यजापैकनककेहैंलिखेतीनप्रकास ॥ कहुबृहन्नल कौनको यह धनुष है अतिमान । सलभजापै कनकके हैं लिखे भूषितमान ॥ कनकमयमणिजटितहै धनुकौनकोअभिराम। कौन के नाराच हैंये कनकपुंखललाम ॥ भरेचारु निषंगमें अति नि-सितबेधकदक्ष । लोहमय सबलगेजिनमें गृध्रके हैंपक्ष ॥ साईल जामेंपञ्च लिखित बराहकर्ण समान । सातशात शरसहनिषंग सो कौनको सुमहान ॥ यहिभांति उत्तर कहे सबके वरण शस्त्र स्वरूप । शमीऊपर बैठिकै लखिजिष्णुसों हे भूप ॥ बृहन्नलवाच ॥ जौन हमसों पूर्वपूछो धनुष इषुधि महान । गांडीवसोई लोकमें

है चाप विदित सुजान॥ आयुधनमें श्रेष्ठसबसों धनुष है यह जौन। पार्थकोसो धनुष है गांडीव उत्तम तौन॥ देवमानुषपार्थ जीते धारिकै जेहिबीर। परम सुन्दरबर्ण अर्णव भरोभार गँभीर॥ धरो बर्षसहस्र जाको पितामह अतिमान। फेरिताको कियो धारण प्रजापति बलवान॥ सुनो तिरपनबर्षधारी बरुण अरु फिरिताहि। बज्रकेबर अंगसों जो बनोताको चाहि॥ धरो पैंसठिबर्ष अर्जुन श्वेतबाहन जौन। बरुणले सो लहोपारथ धनुष उत्तमतौन॥ भीमकेधनु है सुपार्श्व सुहेमथह अभिराम। लिखेवारण पृष्ठिपैहैं जास सुखमाधाम॥ धर्मनृपको अनुजबीर अधर्मअति अभिराम। जीतिजासों लियो प्राची दिशाको बलधाम॥ इन्द्रगोपकके लिखे हैं चित्रजापै पर्म। तौन उत्तम धनुष उत्तर धरतहै नृपधर्म॥ सूर्यजापै कनककेहैं नकुलकोधनु तौन। सलभजापै कनकके सहदेव को धनुजौन॥ लोमवाही जौनहै क्षुरसदृश तीक्षणवान। तौनउत्तर पार्थके बिषभरे सर्प समान॥ तेजसों अतिज्वलित रणमें करत आतुर गौन। गहनसे अरिवृन्दके हैं दहनसे शरतौन॥ जानहै पृथुदण्ड तीक्षण अर्द्धचन्द्र समान। भीमसेन सुमहाबलके तौन उत्तर बान॥ हेमपुंख हरिद्रकैसे बर्णकेशर जौन। सुनहुउत्तर नकुलके हैं निसित शायक तौन॥ निसित हैं अतिधरे उत्तर जौन भास्कर रूप। तौनहैं सहदेवकेशर भरे तूण अनूप॥ निसित पीरे हेम पुंख सुतीनिधारे पर्ब। धर्मनृपके पृथुलहैं शरभरे तूणअखर्ब॥ जौन है यह महत शायक उग्र परम कठोर। जिष्णुकोसो सहत है संग्राम में बरजोर॥

इतिश्रीबिराटपर्बणिउत्तरगोग्रहणेआयुधबर्णनोनामऊनबिंशोऽध्यायः १९॥

उत्तरउवाच॥ रोला॥ कनकमयहैं शस्त्र सिगरे पाण्डवनकेसर्ब। कहांहैंते पांडुनन्दन महाबीर अखर्ब॥ द्यूतमें सबराज्यअपनो हारिकै बरबीर। सुनोहम कहँद्रौपदी है भरीरूप गँभीर॥ अरजुन

उवाच ॥ जिष्णु हैं हमसभास्तार जो कंकसो नृपधर्म। जौन ब-
ल्लभ भीमसेन सुपाक कारक पर्म ॥ अश्वरक्षक नकुल हैं सह-
देव गोधनपास । सैरंध्रि कृष्णा हेतुजाके लह्यो कीचकनास ॥
उत्तरउवाच ॥ नाम अर्जुनके सुनेहम जौनदश अभिराम। कहहु
तौन प्रतीति तुममें होयसुनि बलधाम ॥ अरजुनउवाच ॥ कहत हैं
दशनाम अपने सुनहु उत्तरतौन। जगतमें हैं बिदित प्रथमहिं
सुने हैं तुमजौन ॥ अर्जुन किरीटी जिष्णु फाल्गुन श्वेतबाहन
बीर। कृष्ण धनंजय सब्यशाची विजय बिभत्सुगँभीर ॥ उतर
उवाच ॥ भयेकैसे नामयेतव कौनकारणपाय । अर्थ हेतु समेत
हमसों कहहु तौन बुझाय ॥ तौन सुनिके होय तुममें हमेंअ-
ति बिश्वास ॥ अरजुनउवाच ॥ जीतिजनपद बित्तले बहुकियो अ-
पने पास ॥ रहेतेहि धनमध्यताते भो धनंजयनाम। जीत्ति अरि
गण लियोताते बिजय नाम ललाम ॥ श्वेतरथके अश्वयाते
श्वेतबाहननाम। जन्मउत्तर फाल्गुनीमें नाम फाल्गुनआम ॥
है किरीटी नाममोहिं किरीटदिय मघवान । युद्धमें न बिभत्स
करत बिभत्सु कहत सुजान ॥ दुहुंपाणिते धनुगहत ताते स-
व्यशाची नाम। शुक्लहम कृतकरत याते कहत अर्जुन आम ॥
कृष्णधारो नाममेरो प्रीतिकरिकै तात । देहवर्ण बिलोकिमेरो
असित अरु अवदात ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ कियोबन्दन जिष्णुको
तब निकट उत्तर आय। कह्यो आगम रावरोभो हमेंअति सुख-
दाय ॥ कह्योहमअज्ञानताते क्षमाकीजैतौन। कियोकर्मबिचित्रजो
तुम पूर्व हेबलभौन ॥ चढ़हु सुरथ बिचित्रपर मोहिंसारथीसह
बीर। चलैंकौन अनीकपर हम कहहुसो रणधीर ॥ अरजुनउवाच ॥
पुरुषव्याघ्र प्रसन्नहैं हमतुम्हैं भीति न खर्ब । मारिकै हम दूरि
करिहैं शत्रुसेनासर्ब ॥ स्वस्थ ह्वै तुम लखहुमोको करतअरिसों
युद्ध। समरमें हम करतहैंयहि महाभैरवउद्ध ॥ बांधिकै सबशस्त्र
राखहु यथास्थितगम्भीर ॥ अस्त्रमेरेबेगि ल्यावहुपासमेरेबीर ॥

बैशम्पायनउवाच ॥ जिष्णुके सुनि बचन उत्तर उतरि तरुते धाय। शस्त्र सिगरेधनंजयके दिये रथपरआय ॥ अर्जुनउवाच ॥ जीतिहैं हम कुरुनको पशुलेहिंगे तुवसर्ब ॥ नागहयरथमयीसेना सहित ध्वजन अखर्ब ॥ फलित मेरोवचनहै गांडीवधर हमबीर। शत्रु सेन अजेय हम तव भीतिहर गम्भीर ॥ उत्तरउवाच ॥ डरत हम नहिं तिन्हैं तुमको युद्धजेता ज्ञान। इन्द्र केशवसदृशरणमें आपुको अनुमान ॥ मोह मोको होत मनमें चिन्ति चरित अनूप। कौन कर्मबिपाकसों तुम धरो क्लीवस्वरूप ॥ शूलपाणि समान तुम गन्धर्बपति मघवान। फिरत धारे क्लीवको तुम रूप अति बलवान ॥ अर्जुनउवाच ॥ धरो सांवत्सरिक ब्रत यह ब्रह्मचर्य्य महान। ज्येष्ठभ्राता की सुआज्ञापाय सुनहु सुजान ॥ नहींहैं हम क्लीव करत स्वधर्मबश परकर्म। भयो तौन समाप्त ब्रत हम हैं नृपात्मज पर्म ॥ उत्तरउवाच ॥ तुम्हैं पाय सहाय करिहैं सुरनसों हमयुद्ध। भये निर्भय करहिंसो हम कहहु जोतुम उद्ध ॥ गहैंगे रथ अश्व तुव हम शत्रु रथकर नास। सारथ्यमें हम परमशीक्षित गुरूके रहिपास ॥ यथा दारुक यथा मातलि सारथी अभिराम। तथा जानहु मोहिं सारथि कर्ममें बलधाम ॥ चरण जाके परत देखि न भूमि परशत खर्ब। लगो दक्षिण ओरसो सुग्रीवके सम अर्ब ॥ बामओर जो लगोहै हयमेघपुष्पसमान। कनकको सन्नाह पहिरे जौन है बलवान ॥ सैब्य समहै तौन जानहु भरो बेग अखर्ब। जौन दक्षिणओर पीछे बहत है यह अर्ब ॥ सो बलाहकसदृश है अतिबेगमें बलधान। तुम्हैं बहिबेयोग्ययहरथयुद्धमें अतिमान ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ बलय बाहुनते उतारे तब धनंजयबीर। कनकवर्ण सु सुपर्म मणिमय लियो पहिरि गँभीर ॥ कृष्णकुंचित केशबांधे बसनसों अतिमान। दिब्य अस्त्रनकोकियो शुचिहोय पारथध्यान ॥ अस्त्रसांजलि आयऐसे कहनलागे बैन। कहहुसोहमकरैं किङ्कर कार्य्यतौ बल

ऐन ॥ पार्थ तिनको पाणिसों गहिकहे बचन अनूप । रहहुमेरे मनोगत तुम सर्ब स्मरण स्वरूप ॥ जिष्णुशस्त्रनको ग्रहणकरि कै प्रसन्न उदार । गांडीवपै ज्याराखि उत्तमकियो धनुटङ्कार ॥ धनुषके टङ्कारते भो भूमिकम्प अखर्ब । भयो उल्कापात मन्द प्रकाश आशासर्ब ॥ हलनलागी ध्वजाजानो कुरुन अशनिप्र- पात । भयो जो गांडीव धनुते महत शब्दाघात ॥ उत्तरउवाच ॥ एक पांडवश्रेष्ठ तुमये महारथबहुबीर । इन्हैं कैसे जीतिहौ तुम युद्धमें रणधीर ॥ कौरवनको देखिकै ससहाय तुमकोएक । होत है सन्देह मेरे चित्तमेंसबिवेक ॥ अरजुनउवाच ॥ घोषयात्रामेंभयो गन्धर्बगणसों युद्ध । रहो कौन सहाय मेरे धरहु भय न बिरुद्ध ॥ कियो खांडवदहन तब ममरहो कौन सहाय । निवात कवच पुलोम मारे एक हम असहाय ॥ स्वयम्बरमें द्रौपदीके रहे भू- पतिसर्ब । तिन्हैं सबस सहायजीते एक हम बिनअर्ब ॥ देवदा- नवशक्रसह दिगपाल रणमेंआय । युद्ध करिकै बिनाजीतो कौन मोसोंजाय ॥

इतिबिराटपर्बणिउत्तरगोग्रहणेउत्तरार्जुनसंवादबर्णनोनामाविंशोध्याय: २०

बैशम्पायनउवाच ॥ गीता ॥ उत्तरहि करि सारथी करि शमी द- क्षिण ओर । चढ़े रथपर चले अर्जुन शस्त्रलीन्हे घोर ॥ ध्वजा रथते काढ़ि दीन्हों सिंह चिह्नित जौन । शमीके धरि मूलऊ- पर गयो उत्तर तौन ॥ बिश्वकर्मा रचित अद्भुत ध्वजा जौन महान । महाबल जिहिमें बिराजत बीरबर हनुमान ॥ ध्यान मानस कियोताको पार्थ मनमेंपर्म । तिमिहिं अग्नि प्रसन्नता को कियो ध्यान सशर्म ॥ तत्र चिन्तन करत ताको कपिध्वज अभिराम । सुरथ उतरो गगनते तबसह उपांग ललाम ॥ सुरथ उतरे देखिताकोकरि प्रदक्षिणबीर । जायतापै चढ़े अर्जुन श्वेत बाहनधीर । बांधि अंगुलि त्राण पारथधनुषलीन्हे तौन । चढ़ो रथपरचलो उत्तरदिशाकोबलभौन ॥ धमितकीन्हों शङ्खकोअरि

दमनअतिबलवान । बेगिदौरो हांकिकै रथशत्रुशमन समान ॥ जानुके भरगिरे क्षितिपर देखिकैतेअर्ब । चढ़ोरथपर देखिउत्तर भरो भीतिअखर्ब ॥ देखि अर्जुन बागगहि किय यथावत सह-चाय । समाश्वाशित उत्तरहि करि हृदयमांह लगाय ॥ अरजुनउ-बाच ॥ राजपुत्र न डरहु तुमहौ क्षत्रसम्भवबीर । लहत कैसेशत्रु गणके मध्यखेदगँभीर ॥ शङ्खभेरीशब्द सुनिकै नागगर्जमहान । लहतहौ तुम भीति प्राकृत पुरुषसे सुसमान ॥ उत्तरउबाच ॥ शङ्ख की अरु गजनकी यहिभांति धनुधुनिओर । आजुलौंनहिं सुनों कबहूं सुनोंकुरुकुलमौर ॥ ध्वजा ऐसीलखी नहिं रथघोष ऐसो आन । सुनोंनहिं यातेभयो अतिमोहमोहिं सुजान ॥ दिशाछा-दित ध्वजनसों सबभई जलदसमान । जानिपरहि न धनुषध्वनि ते बधिरभे ममकान ॥ अजुरनउबाच ॥ करहुरथ एकान्तमेंदृढ़धरहु रस्मि सुजान । शङ्खकरत सशब्दहमफिरि अशनिपातसमान ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ धमित कीन्हों शंखको फिरि प्रबल अर्जुनबीर । गांडीवकी धुनिते भयो क्षितिकम्पभूरि गँभीर । द्रोणउबाच ॥ यथा है रथघोषयाको धनुष धुनि अतिमान । जिष्णु ते नहिं अन्य कोऊबीरहैबलवान ॥ शस्त्रकरत प्रकाश नहिं हय हर्षि करत न गौन । अग्निहोत्रन ज्वलित कीन्हों साज्यसमिध सुहौन ॥ मृगा दौरतसूर्यकी दिशि घोर रोर सुनाय । ध्वजन ऊपर कागबैठत अशुभ शूचक आय ॥ फिरत रोदन करत सेना मध्यजम्बु-कघोर । भानु करत प्रकाश को नहिं सतम चारों ओर ॥ भ-ये सबके रोम ठाढ़े बढ़ो मानस त्राश । नियत जानो परत हूबे क्षत्रिगण को नाश ॥ परत देखि निमित्त कारण नाशकेरो जौन । बाहिनी में घोर उल्का भूरिभयदा तौन ॥ हर्ष बाहन करत हैं नहिं करतरोदन अर्ब । गृद्ध देखहु किये आवृत भूप सेना सर्ब ॥ पार्थ के शर बिद्धसेना देखि तपिहौ भूप । युद्धरक्षा रहित सेना भजैगी अतिरूप ॥ भये सकल बिवर्ण

योधा किये कातरनैन । गायठाढ़ी किये ठाढ़े सैनमें तहँ चैन ॥
इतिबिराटपर्वणिउत्तरगोग्रहणेअशांतिकोनामएकविंशोऽध्यायः २१ ॥
वैशम्पायनउवाच ॥ रोला ॥ भीष्म कृप अरु द्रोणसों ऐसे सुयोधन बैन । कहे वृद्ध बिचारिकै मनमांह अति मति ऐन ॥ कर्ण हम पहिले कहो अब कहतहैं फिरि तोन । करो बारहबर्ष बन में प्रगट पाण्डव गौन ॥ गुप्त ह्वै कै रहैं तेरहबर्ष द्वादशमास । भये अर्जुन प्रगट बाकी बर्ष गुप्त निवास ॥ बसौ बारहबर्ष बन में फेरि पांडव जाय । कहौ भुक्त अभुक्त याको भीष्मसत्यसुभाय ॥ गुप्तबर्ष व्यतीत भोनहिं अबाहिं मरेजान । मोहिंको अज्ञान है की पार्थको अज्ञान ॥ द्विधाभावज अर्थसों नहिं होतसंशयनाश । करे चाहत कछू कारज कछू होत प्रकाश ॥ लियोगोधन घेरि हमगुणि मत्स्यपतिको बाध । मिलोआय बिभत्सु जोतौ कौनको अपराध ॥ त्रिगर्त्तकारण मत्स्यसों इतकरनआयेयुद्ध । कियोहमसब मत्स्यकोबहुभांतिकार्य बिरुद्ध ॥ कहोहोत्रिगर्त्तपति सोंप्रथमहमससुझाय।हरहुगोधनमत्स्यपतिकोसप्तमीकोजाय ॥ अष्टमीको आइहैं हमउदै होतेभान । हरणकरिहैं मत्स्यगोधन उदक ओरमहान ॥ गयेगोधन लैत्रिगर्त्तकि भजो लरिकैभूप । बंचिहमको मत्स्यपतिसों मिलोके हितरूप ॥ तिन्हैंगोधन सहित तजिकै निशामें फिरिआय । लरोचाहत मत्स्यपति कढ़ि जोरि सेनसहाय ॥ किधौंआवत एकआपुहि युद्धको बलवान । किधौंकोऊ सुभटताको एकबीर महान ॥ मत्स्यपतिहै एककै यह जिष्णुहैबरबीर । युद्धतासों करैंहमसब सुनहुसम्मतधीर ॥ रहेरथपर होय जड़से रथिकजे बलवान । भीष्मकृप सहद्रोण द्रौणिक अरुबिकर्ण सुजान ॥ बिनायुद्ध न श्रेययाते रहहु होय सचेत । उद्ध युद्ध बिना न हमसों इन्द्रगोधनलेत ॥ कौन हास्तिननगरको भजिजाय गोरणधीर । अश्वसादी जायकोऊ नहिंपदातीबीर ॥ सुनिसुयोधन बचनबोले कर्णअतिबलमौन ।

द्रोणकोकरि पृष्ठपीछे नीतिकरु नृपतौन ॥ पांडवनको जानिकै मतकरत त्रासितसैन। भरेअर्जुन प्रीतिसों सबद्रोण बोलत बैन ॥ देखिआवत जिष्णुकेभाषत प्रशंसितबैन। नीतिभूपति रचहुसो जाते न भाजैसैन ॥ द्रोणको प्रियसदा पांडव प्रीतिके अनुरूप। कहतसुनिकै अश्वही सुनितासु बरणअनूप ॥ द्रोण है कारुणिक हिंसा कोनजानतरूप। महाभयमें मंत्रइमिसो बूझिये नहिंभूप ॥ सभाउपबन साधुजनमें सौधमाहँ ललाम। कथावार्त्ताबीजपण्डित होतहैंअभिराम ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ कर्ण ऐसेबचन कुत्सितकहे फिरिफिरिभूरि। कछूनहिं आचार्यबोले रहिभविष्यबिसूरि ॥ कर्णउवाच ॥ करहुगोधन सकल रक्षितव्यूह बांधहुउद्ध। रहहुसबसन्नद्धठाढ़े करतहैं हमयुद्ध ॥ मत्स्यपति बीभत्स्यकेयह चलोआवत जौन। ताहिबारण करतबेला बारिको जिमिगौन ॥ चापतेमम मुक्तशायक सर्पसे शितधार। लक्ष्यतेजे नहींचूकत भरेबेग उदार ॥ रुक्मपुंख सुतीक्ष्ण शायकमुक्त मोतेजौन। पार्थको तेछायलेहैं शलभलरु समतौन ॥ शरनकोसन्धानज्योंसुनितलन्हकोआघात। सुनहुगेतुमसदृश भेरीबज्रकैसोपात ॥ बर्षतेरहरहोअर्जुनबसतबनकेमाह। युद्धसों करिस्नेहसोऊलैरगोनरनाह ॥ पात्रअर्जुनपायगुणसों भरोबिप्र समान। करैंगेबसुभूरिसोहम ताहिशायकदान ॥ अग्निकेसम जिष्णुआयुध धरेइन्धनजौन। सहितबनको भस्मकारकमहाबलकोभौन ॥ अश्वबेगप्रबातगर्जनिसुरथघोषउदार। मेघसमहम शमन करिहैं बर्षिके शरधार ॥ कर्णके सुनि बचन ऐसेभरेगर्व महान। कृपाचारयदियेउत्तर महाबुद्धि निधान ॥ कृपउवाच ॥ क्रूर तर तव रहति मतिनिति युद्धमें राधेय। नहींजानत प्राप्तिकारण तासुफल अनुमेय ॥ शास्त्रमतते शकुनको फलजानिकै हमसर्ब। कहतहैं हम युद्धहैयह नाश हेतुअखर्ब ॥ देशकाल बिहीन युद्धन बिजय देत अखण्ड। प्रबल बीरप्रचंडहूको नष्टहोत घमण्ड ॥

देशकाल बिचारि नीको युद्धकीजे बीर । काललहि अनुकूल रणफल प्राप्तहोत गँभीर ॥ बचनसों रथकारके व्यवसाय करत न बुद्ध । भूपयाहि बिचारि करिये पार्थसोंफिरियुद्ध ॥ एकआवत कुरुनपै कियएकखांडवदाह । कृष्णकीजेहिंहरीभगिनी एकसह उतसाह ॥ एकरूपकिरातहरकोयुद्धमेंसंतुष्ट । कियोबांधोजयद्र-थजेहिंहरीकृष्णहिंदुष्ट ॥ पंचबर्षसुरेशसों जेहिअस्त्र सीखेसर्ब । एकसोंअबकुरुनजीततलेतसुयशअखर्ब ॥एकजीतोचित्रसेनहिं महाबलगन्धर्ब । कालखंजनिवातकवच अजेयजीतेसर्ब ॥ एक रथसोसूतसुततुमकियोकहियेतौन । पार्थसोंनहिंयोग्यकरिबेयुद्ध सुरपतिजौन ॥ पार्थसोंनहिंएकलरिबे कहतबुद्धिसमान । कीलि अहि मुख अंगुलीदे कहाभेषजप्रान ॥ बरंयकुंजर मत्तपै चढ़ि बिना अंकुशपाश । नगरको तुम चलो चाहतभूलि कारण ना-श ॥ ज्वलित पावकमाहँ पैठो चहतहो सहचीर । तरो चाहत सिंधु गलसों शिलाबांधिगँभीर ॥ कृतास्त्रके अकृतास्त्र दुर्बल बलीके अति जौन । लरो चाहत पार्थसों हा महा दुर्मतितौन ॥ बर्ष तेरह लह्यो दुख जिहि महाबीर अधर्ष । सिंहसोंको भिरैगो नहिं भरो भूरि अमर्ष ॥ दोहा ॥ बज्रपाणिसम पार्थकोहै व्यव-साय गँभीर । हम षटरथ मिलिलरैंगे सुनहु कर्ण रणधीर ॥ रहैं सु सैन्यक सजग ह्वै बांधिब्यूह बलवान । करौ युद्ध सब जिष्णु सों बासव दनुज समान ॥

इतिबिराटपर्वणिउत्तरगोग्रहणेकृपवाक्यबर्णनोनामद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

अश्वत्थामोवाच ॥ दोहा ॥ नहिंगोधन जीतेगये नाहिं सीमांतर पार । नहिंहस्तिनपुर गयेका कहत निलज्जउदार ॥ जीतिमहा संग्रामकोपायबिपुलधनतौन । अपनोपुरुषारथ कहतनहींमहत जनजौन ॥ दाहत अग्नि अवाक रबिभौन प्रकाशक नाक । धरे धराजो जगतको नित्यसो रहति अवाक ॥ ब्राह्मणजेते कुशल हैं भोजनादि केमाहिं । कहतआपु उत्तर सुनोपासहमारे पाहिं ॥

कियो स्वयंभू बिहित जो चारिबर्णको धर्म। अपने अपने वर्ण को बहत धर्मजनपर्म॥ कहौ कुशल कैसेभये तुमरणमें गंभीर। देखत अपनी जातिको नहिं बोलतहौ बीर॥ यथान्याय क्षिति जीतिकै सज्जनवीर उदार। निर्गुणहू गुरुको करत महाभाग सत्कार॥ होतप्रशंसित भूपकोजीति द्यूतमें राज। क्रूरकर्म धृत-राष्ट्र सुततो सहहौ हतलाज॥ ऐसेधनलहि करैगो अपनो कौन बखान। पापपुंजकरिकै कपटहौकै व्याध समान॥ द्वन्द्वयुद्ध करि जिष्णुको केहिजीतो बलवान। धर्मभीम माद्रीतनयके को बीर समान॥ इन्द्रप्रस्थमें युद्धकरि काकोजीतेकर्ण। कृष्णाकोजीतो यथा तथा करहुसो स्मर्ण॥ एकवस्त्रा रजभरी सो ल्याय सभा के भौन। कौरव कुलको मूल तुम काढ़ो दुर्मति भौन॥ स्मर-ण करहु तहँ बिदुरजे कहे महामति बैन। करतद्यूत प्रारंभको कुरुकुल नाशनऐन॥ क्लेश न कृष्णाकोसकतसहि तेपांडवधीर। कौरव कुलके नाशकोप्रगटो अर्जुनबीर॥ तुमफिरिपण्डितहोय के कहनचहतहौबैन। बरअंतरनिःशेषसो कियोचहतबलऐन॥ देवासुर गन्धर्वसों जिष्णु अभयकरयुद्ध। तुमसों सब बिधिसों अधिक बीरधनुर्द्धरउद्ध॥ अस्त्रनसों जोअस्त्रको करतनाश रण धीर। अर्जुनसोंको जगतमेंकरतायुद्धगँभीर॥ पुत्रशिष्यकोसम कहत जेमतिमान सुनीति। यातेकुन्ती सुतन पर द्रोण करत है प्रीति॥ यथा द्यूतकरिसभामें कृष्णाहिं गहिकैहाथ। ल्याये अब तैसे करहु युद्धजिष्णुकेसाथ॥ यह तव मातुलि शकुनिहै दुष्ट द्यूतकर जौन। अर्जुनके कैसामुहेकरै युद्ध अबतौन॥ फेंकत अक्ष न धनंजयप्ज्वलितअग्निसम बान। महाधनुष गांडीवते निशित करतसन्धान॥ मातुलिके सँगसभामेंकियो यथातुमद्यूत। ताते रक्षित होय अबकरहुयुद्ध सुतसूत॥ करौ युद्ध जोधानहम करत जिष्णुसोंयुद्ध। तब हम लरिहैं मत्स्यसों जब कै फिरिहै क्रुद्ध॥
इतिश्रीबिराटपर्बणिअश्वत्थामावाक्यबर्णनोनामत्रयोविंशोऽध्यायः २३॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ अश्वत्थामा कृप कहत साधु नीति मय बैन। क्षात्र धर्मसों चहत हैं रणहिं कर्ण बलऐन ॥ कहत कोउ आचार्यको ऐसे बचन बिरुद्ध। देश कालको देखिकै सम्मत हमको युद्ध ॥ जाके रबिसे पंचहैं बैरीबीर महान। उदय देखि तिनकीन क्यों पावै मोहसुजान ॥ लहत स्वार्थमें मोह सब जे विद्धर्म स्वरूप। ताते हम तुमसों कहत बचन रुचैजो भूप॥ कर्ण कहे आचार्यको द्वेषतेन ये बैन। कहे तेज उत्पन्नकोक्षमा करहुबुधि ऐन ॥ रहो न काल बिरोधको आये अर्जुनबीर। कृप आचार्य्यादिक सकल क्षमाकरहु रणधीर ॥ तुममेंअस्त्राभ्यास ज्यों रविमें प्रभाअमान। बसति चन्द्रमामें यथा लक्ष्मी सुनहु सुजान ॥ तुममेंहै ब्राह्मण्यता सह ब्रह्मास्त्रमहान। वेदचारितुम में बसत क्षात्रधर्म अतिमान ॥ क्षात्रधर्म ब्राह्मण्यसँग सुनो न काहू साश। ससुत द्रोणमें बसत हैं पूरणकिये प्रकाश ॥ जामदग्नि बिनजगत में अधिक द्रोणसों कौन। सर्बवेद ब्रह्मास्त्रको मनु बिधि बिरचो भौन ॥ कीजै क्षमा अचार्य्य सुत समयभेद को हैन। युद्धकरहु मिलिकै सकल अर्जुनसोंबलऐन ॥ अश्वत्थामोवाच ॥ न्याय न हम सों बचन यह है कहिबे कुरुबीर। लहैंरोष गुणसिद्ध्यको भाषो गुरु गम्भीर ॥ शत्रुहुकोगुणबाच्य है मित्र दोष मतिमान। पुत्र शिष्यको दोषगुण कहत सयत्न सुजान ॥ दुर्योधनउवाच ॥ करुआचार्य अब क्षमातुम समय शान्तिकोप्राप्त। भेद न तुममें है कछू तुम ममगुरुअति आप्त ॥ तब दुर्योधनकर्ण कृप भीष्म सहित कहिबैन। कियो द्रोणिके क्रोधको शान्त महामति ऐन ॥ द्रोणउवाच ॥ प्रथमबचन जो पितामह कहो महामतिधाम। हम प्रसन्न ताते करहु अबजो नीति ललाम ॥ लखै सुयोधनको नहीं जैसे पारथबीर। सहसा नीतिसो कीजिये तजिकै मोह गँभीर ॥ भौनिवृत्त बनबासते भरो क्रोधबलभौन। बिनालिये गोधन नहीं क्षमा धरैगोतौन ॥ कहोसुयोधन प्रथम-

हीभीषम तुम सोंजौन। समुझि कहहु बीतेकि नहिं बर्ष त्रयोदशतौन॥ भीष्मउबाच॥ कछू ब्यास अधिकी गयेबर्ष त्रयोदशबीति। ज्योतिष पंचप्रकारके कहत अब्द तेहिरीति॥ सावनशशधर नाक्षत्रिक बार्हस्पत्य सुसौर। होतबर्षहैं पांच बिधि बदत बिज्ञ शिर मौर॥ विजयादशमीमें गये हारिपाय दुखरूप। पांडव ग्रीषममें भये प्रगटजानि यह भूप॥ पंचमास बाकीगुणत ह्वैकै परम सचैन। बर्षहोत बिधिपांचके जानत तौन तिन्हैंन॥ तेरहबत्सर अरु नवबासर पांडव बिज्ञबिताय। सुभट शिरोमणि प्रगट भयो है महाक्रोधसों छाय॥ सावन बत्सर जौन जो दिन गणनासों होत। अमा पूर्णिमा पायकै शशधर करत उदोत॥ नक्षत्रनसोंहोतहै नाक्षत्रिकजो बर्ष। सौरहोत संक्रान्तिसों सुमतिउक्त जो बर्ष॥ एकराशिको भोगिजब करत दुतिय पै गौन। बार्हस्पत्य सुहोतसो मास त्रिदशको तौन॥ चांद्रमान बत्सरत्रिदश पांडव बिज्ञ बिताय। युद्धहेत अतिक्रुद्ध ह्वै प्रगट भयोहै आय॥ अर्जुन जानतहै सकल भेदबर्षके जौन। रथ चढ़ि आयो ह्वै प्रगट याते सो बलभौन॥ सर्बमहात्मा धर्मबिद पांडवकोबिद पर्म। धर्मबिमुखते होहिंकिमि जासपरस्परधर्म॥ ते बिक्रम चाहत कियो पांडवसुनु कुरुभूप। धर्मपाशसों बद्ध नहिं तजो क्षात्रब्रतरूप॥ लरो समरमें कीजिये शस्त्र धरणको धर्म। भयोप्राप्त अब आयसो करहु यथोचित कर्म॥ कौरवहम संग्राममें सिद्धि न लखतगँभीर। महाक्रोधकरि प्राप्तभो प्रबल धनंजयबीर॥ होतजयाजय एकको भये युद्ध अतिमान। करहु युद्धकैदीजिये तिन्हैंराज्य सुखदान॥ एकक्षिप्र कीजैनृपति आयो अर्जुनबीर॥ दुर्योधनउबाच॥ नहींपितामह देहिंगे बांटिराज गम्भीर॥ करहुपितामहयुद्धकोजोउपचारिककर्म॥ भीष्मउबाच॥ होयसर्बथा श्रेयसो सुनहु कहतहमपर्म॥ चतुर्भागबलसहित तुम जाहु स्वपुरको भूप। चतुर्थांश सेनाचलो गोधनलिये अनूप॥

अर्द्धसैनसोंकराहिंगे हम पांडवसोंयुद्ध । द्रोणकर्ण कृपसुत सहित बीरमहाबलउद्ध ॥ सुनहु तात हम जिष्णुसों करिहैं युद्धमहान । आवै यदपि सहायको मत्स्यसहित मघवान ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ रुच्यो सुयोधनको बचन कह्यो पितामहजौन । यथाभागकरि सैन को कियगोधन सहगौन ॥ भीष्म बिदाकरि भूपको गोधनसहित सहाय । सेनामुख्यन सहरहे आपु सुव्यूह बनाय ॥ भीष्मउवाच ॥ रहो मध्यमें द्रोणतुम अश्वत्थामा बाम । दक्षिण दिशि रक्षण करो कृपाचार्य्य बलधाम ॥ अग्रभागमें कर्णतुम रहहु सज्जकै बीर । पृष्ठभागपर रहतहम पालत सैनगँभीर ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ रोला ॥ देखिऐसे सज्जसेनाकौरवनकीबीर । बेगिआयो जिष्णुरथ कोभरतघोषगँभीर॥लखीकर्णादिकनताकीध्वजा अतिरथघोष । सुनीध्वनिगांडीवधनुकीभरीदारुणरोष॥कहनलागेद्रोणऐसेदेखि सबकीओर । भयोप्राप्तसोमहारथलखुजिष्णुकोअतिघोर ॥द्रोण-उवाच ॥ ध्वजा लक्षित होतिहै यहबानरीअतिमान । गर्जतकपी वर होतरथको चक्रजन्यमहान ॥ चढ़ोरथपर चलोआवतधनु-षखैंचत घोर । गांडीव धनुज्या घात धुनि सों भरत चारों ओ-र ॥ बाण ये द्वै चरणऊपर परेमेरे आय । छुवत मेरे कर्णकोशर गये द्वै अनुभाय ॥ बहुतदिनमें लखो हमयह बंधुप्रिय मतिमा-न । ज्वलित जाकी लसित लक्ष्मी पांडुपुत्रसुजान ॥ अर्जुनउवा-च ॥ मत्स्यपतिसुत हांकिकैरथ जाहुसेनापास । जहांते लखिपरैं कुरुकुल अधम दुर्मति रास ॥ जायनीरे छोड़ि सबको लखो अर्जुनबीर । नहीं देखो तहँ सुयोधन भरोक्रोध गँभीर ॥ लखो दक्षिणओरगोधनलयेसेनासाथ । कर्णभीषमद्रोणको तजिजात हैकुरुनाथ ॥ रथानीकविहायकै यहचलहुउत्तरतत्र । लयेगोधन जातभाजो है सुयोधन यत्र ॥ तहां करिहैं युद्ध लाभ न यहां के संग्राम । जीति ताको फिरैं अपने लेय गोधन माम ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ यहिभांतिसुनिकैकिये उत्तरअर्व आतुररूप । हांकिकै रथ

चलोजेहां रहो कौरवभूप ॥ छोड़ि भीष्मादिकनको तहँ रहे जे रणधीर। जानि आशय कृपाचार्य लगे कहन गँभीर ॥ बिना राजानहीं हमसों लरैगो वलवान। छोड़ि पीछे जाततांके भरो क्रोध महान ॥ जिष्णुसो को एक लरिहै पायरणमें क्रुद्ध। कृष्ण बिन मघवान यासों सकैकोकरियुद्ध ॥ कितौबारणकरै द्रोणसपुत्रताको जाय। नावसो नृपलखो बूड़त जिष्णु बारिधिपाय ॥ हांक दै कहि नाम अपनो जाय अर्जुनबीर। शरनसों भरि दियो शलभ समानसैन गँभीर ॥ भूमि नभ नहिं लखत सैनिक सघन बर्षत बान। शंखधुनि तब्र कियो अर्जुन अशनि पात समान ॥ तानिकैधनु शरन्हसों तब ध्वजाकाटी सर्व। शंखधनु रथघोषसोंभो भूमिकम्प अखर्व ॥ बोलि हंभा शब्द ग्रीवा पुच्छउर्द्ध उठाय। शंखधुनिसुनि नगरकी दिशिभजीं सिगरीगाय॥ गाय सकल छुड़ाय दीन्हीं मथित करिकै सैन। चलो सोहैं नृप सुयोधनके महाबल ऐन ॥ सैनव्यूहबिलोकि अर्जुन गाढ़ अति बलऐन। कहोउत्तर कुंवरसों यहिभांतिसों बरबैन ॥ बेगसों ये हांकि उत्तरश्वेतमेरेअर्व। चलहुसेनामध्यजहँ कुरुबीरवृन्द अखर्व ॥ कर्ण मोसों लरन चाहत नागसों ज्यों नाग। देहु मोहिं मिराय तासों मत्स्यपुत्र सुभाग ॥ बातजवरथ हांकि उत्तरभेदि व्यूहमहान। लगो सेनामध्य बिहरण जिष्णु अति बलवान ॥ शत्रुसह संग्राम जित जय चित्रसेन सुबीर। लरनलागे चाहि जीवन कर्णको रणधीर ॥ तिन्हैं तब धनुषाग्नि सों तकिबाण ज्वाल समान। गहन सों रथवृन्द तिनकोकियो भस्म महान ॥ तुमुलयुद्ध प्रवृत्तभो तब कै बिकर्ण सक्रुद्ध। लरनलागो जिष्णु सों शरबर्षिकै अति उद्ध ॥ क्रोध करि ध्वजकाटि डारोतास अर्जुनबीर। ध्वजाकटत बिकर्ण भाजो भरोभीति गँभीर ॥ बीर शत्रुंजय भिरो बीभत्ससों अतिमान। जगतजेता जिष्णुऊपर लगोबर्षन बान ॥ पंचशरसों हनो ताको धनंजय बलवान। गि-

रो शत्रुंजय स्वरथते वृक्षसों गतप्रान ॥ भूप भटयोधार अग-
णित हनेअर्जुनबीर । कम्पसेनालगीज्यों बशबायुबनगम्भीर ॥
हने अर्जुन सुभट तिनते भरी भू अभिराम । जिष्णु के भयभरे
भाजे बीरजे बलधाम ॥ धरेबर्म उदार अर्जुन मत्तबारणरूप ।
करन सेना नाशलागो क्रोधसों भरिभूप ॥ फिरत सेनामाहँअ-
र्जुन अग्निसों चहुंओर । दहत बनसों बर्षिकै समज्वालशरब-
रघोर ॥ शोणाश्व रथके प्रथम चारो शरनसों संहारि । काटि
शिर संग्राम जितकोदियो भूपरडारि ॥ हतो भ्रातहि देखि दौरो
कर्ण क्रुद्ध महान । आय अर्जुनको हनेतेहि निशितबारहबान ॥
हनेचारो हयनको शरसहित उत्तर सूत । देखि आवत कर्णको
अति बेगधारे धूत ॥ चलो आतुरहांकिकै रथ बीरअर्जुनउद्ध ।
दोउ अतिरथ धनुर्द्धर अरि वृन्द दमन सक्रुद्ध ॥ लगे कौरव
लखन तिनको युद्धआय अमान । मूंदि लीन्हों कर्णकोरथबर्षि
अर्जुनबान ॥ बाणबिद्धसनाग रथभट करनलागेशोर । छन्नभी-
ष्मादिकनकोकियबर्षिकै शरघोर ॥ कर्णकाटे शरनसोंसबजिष्णु
प्रेरित बान । रहो ठाढ़ो तहां सहितफुलिंग अग्निसमान ॥ भयो
तहँ तबशब्द भेरीशंख ज्यातल ताल । कर्णकोकौरवप्रशंसालगे
करन बिशाल ॥ लांगूल अंकित ध्वजाजाकी महाभयकर घोर ।
गांडीव ज्याधुनिशब्द सों अतिभरत चारोंओर ॥ देखिगर्जत
कर्णऊपर बर्षिकै बरबान । साश्वरथसहसूत अर्दितकियो जिष्णु
महान ॥ पितामह कृपद्रोणपर बहुजिष्णु बर्षेबान । कर्णसहतिन
जिष्णुपर किय बाणबृष्टि महान ॥ तथालीन्हों छायशरसों कर्ण
को कुरुबीर । चन्द्रार्कसे घनमध्य ते शरबृष्टिमाहँगँभीर ॥ शरन
सों तब कर्णबेधे जिष्णुके रथअर्ब । तीनितीनि सुशरन बेधे
सूतकेतु अखर्ब ॥ देखिकै शरबिद्ध यहरथ सूतको बरबीर । सु-
प्तसिंहसमानजागो भरो क्रोधगँभीर ॥ शरास्त्रबर्षोकर्णऊपरकारि
अमानुषकर्म । निशितभल्लन डारिबेधो सूतसुतकोमर्म ॥ बाहु

शीशललाट ग्रीवा हृदयतासु महान। मुक्तकरि गांडीव सों शर अशनिसे अतिमान॥ जिष्णुके शरबिद्धह्वैकैभयो व्याकुलबर्ण। छोड़िकै रणभूमिभागो सूतको सुतकर्ण॥

इतिमहाभारतदर्पणेबिराटपर्बणिकर्णपराजयबर्णनोनामचतुरबिंशोऽध्यायः

बैशम्पायनउवाच॥ टीका॥ कर्णभाजेतबसुयोधनकेपुरोगमजौन। सैन अपनी आपनीलैतहांआये तौन॥ बहुतभांतिनलगेबर्षन कोप करिते बान। सिंधुबेला सदृशयाभे तिन्हैं जिष्णुमहान॥ दिव्य अस्त्रनसों लिये तबतिन्हैं अर्जुनछाय। किरणिसों जिमि दिशनको सब उदितदिनकरआय॥ शरनसों दशदिशाअर्जुन मूंदिलीन्हींसर्ब। देखिपरत न कहूंकोऊ सुभट गजरथ अर्ब॥ रहेनहिं बिनबिद्ध तिनके अंगअंगुलमान। जिष्णुप्रेरित धनुष ते छुटि निशित लागेबान॥ हस्तलाघव जिष्णुको लखिकै प्र-शंसतबीर। कालाग्निके समजरत बिभत्सु भस्मभटनगँभीर॥ सकतसहि नहिंशत्रुताको ज्वलित अग्निसमान। सघनअर्जुन शरनसों सोलसीसैन महान॥ भानुरश्मि समेत गिरिपर यथा जलदअखर्ब। सैनकिंशुक बिपिनसी भइकौरवनकी सर्ब॥ परे रथन समेत अगणित मरेमारेअर्ब। परे क्षितिपर मरेगज मनु गिरे अभ्रअखर्ब॥ प्रलयमें ज्यों जगत दाहत महापावकभूप। अरिनको त्योंनाशकीन्हों जिष्णुकालस्वरूप॥ भजी सेनाचहूं-दिशिको कौरवनकी सर्ब। महाभयसों भरी देखत नाशकाल अखर्ब॥ तेजसों अत्यस्त्र गणके धनुष ध्वनिमें चण्ड। महा-बानर शब्दसों भरि भूरिगो ब्रह्मण्ड॥ देवारि हन्ता जिष्णु भयसों भरी कौरव सैन। दैतशक्ति जोरही लखतहिं हरीसो बल ऐन॥ शोणि ताशन शरनसों भरिलयो गगन महान। तिग्मते जनु भानुकर जिमि दिशनको अभिमान॥ अहि-त तेहिक्षण जिष्णुको रथसके रोंकिन भूप। बायुबेगी अर्बजा-में लगे अतिबल रूप॥ शत्रुतनमें जिष्णुके शर लगत ज्यों

कटिजात। तथा अरिदल भेदिकै रथजातकटिसम ब्रात ॥ करी क्षोभित शत्रुसेना बेगसों बरबीर। सहस फणसों सर्पजैसे मथ-तसिन्धुगँभीर ॥ तजतशर अत्यन्त चहुँदिशि हांकिरथ अति मान। धनुषधुनि रथघोष अद्भुत सुनत अरिहर प्रान ॥ भ्रमत दक्षिणबाम सबदिशि जिष्णु बर्षतबान । धनु निरन्तर सदृश कुण्डल देखिपरत महान ॥ परतहै न कुरूपमें जिमि चतुरके चषजाय। तथा लगत अलक्षमें नहिं जिष्णुकेशर धाय ॥ च-लत ज्यों गजवृन्द बनमें होतपथ नरनाह। मार्गतैसे लहतरथ को जिष्णुपर दलमाह ॥ हनत रणमें कहत ऐसेशत्रु सुभट उ-दार । काल अर्जुन रूप है यह नाशको करतार ॥ सेनभागी कुरुनकी करिशोर बिकल महान । शरनसों बिनु शीश कीन्हों जिष्णुखेत समान ॥ करी शोणित धारसों सब भूमि लोहित रंग। भानुकेकर भये लोहित पाय शोणित संग ॥ भयो सन्ध्या सदृश नभ सहसूर शोणित रूप । भयो जिष्णु निबर्त नहिं गो अस्तको रबि भूप ॥ रहे ठाढ़े समर में जे महारथ रणधीर । दिब्यास्त्र तिन पर लगो बर्षन महा अर्जुनबीर ॥ हने सत्तर द्रोणको शर दुःसहै दशबान। आठशर बरद्रोणसुतको हने बीर महान॥ शर दुशासनको हने अरु तीनि कृपहि समान । भीष्म कोषटाशिली मुखसो भूपको शतबान ॥ कर्ण बेधित शरन सों कियकर्णके बरबीर । महाधनुधर कर्णको लखिबिद्ध बिरथअधी-र॥ भजीसेना कुरुनकी चहुँओरकी गहिऐन । बिष्णुको लखि युद्ध उहित कहो उत्तर बैन ॥ चलैंकौन अनीकपै हमहांकिरथ अतिगौन । कहहुसोहम कीजिये अब जिष्णु अतिबलभौन॥ अरजुनउवाच ॥ व्याघ्रचर्म सो रचित रथहै लगे लोहित अर्ब। स-हकमण्डल चिह्नजाकी ध्वजानील अखर्ब ॥ द्रोणसा आचार्य्य हमको मान्यहै अतिमान । धनुर्वेद बिधानवेत्ता जास समको आन ॥ शीघ्रताके निकटह्वैकै हे धनुर्द्धरबीर । हांकिरथ कीजे

प्रदक्षिण ताहि उत्तरधीर ॥ द्रोण मोपै डारिहै जो प्रथमआयु-
धउद्ध। सज्जह्वैकै चलहु हम सों होयगो फिरियुद्ध ॥ निकट
ताके धनुष चिह्नित ध्वजाजाकी माम। द्रोणको सुत महारथहै
सोई अश्वत्थाम ॥ सर्वथा है मान्य हमको महा धनुधरबीर।
खड़ोयह रथव्यूहमें जो धरेबर्म गँभीर ॥ तीसरी सेनाग्र आगे
सो सुयोधनभूप। नागचिह्नित ध्वजाजाकीकनकमय अतिरूप ॥
तासु सम्मुख चलहुमेरो हांकिकैरथबीर। द्रोणकोयह शिष्यआ-
तुर शस्त्रशीक्षितधीर ॥ याहिमोहिं देखाइबे शीघ्रास्त्र बिपुल अ-
मान। नागकक्षा चिह्नध्वजकेकरणबिदित सुजान ॥ नीलजाकी
ध्वजाधारे छत्रपाण्डुर जौन। धरेसुबरण बर्मरथ परभानुसे बल
भौन ॥ हैं सुयोधन सहअनुग येपितामह अतिबीर। पश्चात
इनपै चलौगे येबिघनकरन गँभीर ॥ चलहु तातेबेगि इनपै हां-
किकै रथआर्य्य। खरे आगे द्रोणकेरण चहतकृप आचार्य्य ॥
बैशम्पायनउवाच ॥ कौरवनकी लखत सेनाचली ऐसेभूप। ग्रीष्मा-
न्तमें ज्यों उग्रमारुत लगेजलद अनूप ॥ तुरगनानाभांति गति
सो चढ़ेसादीबीर। द्विरद प्रेरित करेयोद्धा धरेकवँच गँभीर ॥
इन्द्रचढ़ि गजराजपै सँगलये सुरगणसर्व। यक्षकिन्नर प्रजापति
बसुरुद्र सहगन्धर्ब ॥ भयो शोभित गगनगणग्रह यथामण्डल-
वान। लखोचाहत अस्त्रकोबलमनुजमें अतिमान ॥ भयोचाहत
युद्ध भैरव जिष्णु कृप सों जौन। चढ़ि बिमानन देवआये तहां
देखन तौन ॥ पितर राक्षस महाऋषि नृप स्वर्ग बासी जौन।
नहुष और ययाति आदिक तहां आये तौन ॥ अग्नि ईश स-
धर्म्म पासी सोमाबिधि सधनेश। लखनआये युद्ध कौरव जि-
ष्णु को नभदेश ॥ दिब्य माल सुगन्धसों भरि भई सैनासर्ब।
यथापाय बसन्त सुरभित होत बिपिन अखर्ब ॥ देव भूप न-
क्षत्रमणिसों पायकै सहबास। रही नभगत धूरि धुन्धुरि भई
तौन प्रकास ॥ धरेमाला पङ्कजनकी चढ़े बिमल बिमान। सहित

सुरगण मध्ये शोभित गगनमें मघवान ॥ बँधो सेनाव्यूह दृढ़ लखि कह्यो अर्जुनबीर। सहित आदरमत्स्यपतिके पुत्रसों रणधीर ॥ लसति काञ्चनमयी देवी मध्यध्वजके जास । चलहु दक्षिण देयताको कृपाचारय पास ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ जिष्णुके सुनिबचन उत्तर रजतसे रथअर्ब । चलोहांके महागतिसोयथा पवनअखर्ब ॥ जाय कौरव सैननीरे हांकि रथ अतिमान । दे प्रदक्षिण तहांद्रोणाचार्यको बलवान ॥ कृपाचारयको प्रदक्षिण देयरथ गंभीर। कियोआगे तासुठाढ़ो सहित अर्जुनबीर ॥ बीर अर्जुन देवदत्त उठाय शंख महान। धमित कीन्हों नामअपनो पूरिकै बलवान ॥ सुनतशब्द महान ताको बज्रपात समान । लगे कौरव करन बिस्मय भरेभूरि बखान ॥ जिष्णुकेसुनि शंख की धुनि महाघोर गँभीर । शंख अपनो धमित कीन्हों महा गौतमबीर ॥ शंखधुनि सों कृपाचारय पूरि चारो ओर। धनुष लैकैकियो ज्याकोशब्द अतिशयघोर ॥ युद्धकांक्षी दुहुनके रथ लसे सूर्य्यसमान। शरदऋतुके धराधावलबातबशजलदान ॥ कृपाचारय मर्मबेधी तानिधनु दशबान। बिद्धकीन्हों बिष्णुको करिक्षिप्रता अतिमान ॥ पार्थशर समुदायसो कृपकोदियोरथ पाटि। कृपाचारयशरनसों तेसकल डारेकाटि ॥ कोपकरिकैशरन सोंकृपको महारथजौन। छायलीन्हों शरनसों बीभत्सुअतिबल भौन॥ शरन सों कृपहोय अर्दित क्रोधकरि अतिमान। गर्जिकै दशसहस डारेजिष्णु ऊपरबान ॥ चारिशर सो हनेकृपके जिष्णु चारो अर्ब। गिरत तुरगन गिरेरथते कृपाचार्य्य अखर्ब ॥ क्रोध करि उठिहने कृप दशबानकरि सन्धान। निशितशरसों काटि कृपकोदियो धनुष महान ॥ शरनसो फिरि कवच ताको काटि अर्जुनबीर। कियो तिलतिल मानशरन न छुयोतास शरीर ॥ मुक्तकंचुक सर्पसो तबलसो कृप आचार्य्य। और हय धनुसज्ज कीन्हें झटितगौतमआर्य्य॥ यहिभांति काटेबहुतधनुजबाजिष्णु

धनुधरबीर। लियोकृप तबशक्तिकरमें भरेक्रोध गँभीर॥ शक्ति फेंकी पार्थपै सो अशनिसी मतिमान। कियो दशधा जिष्णुसो हनिशरन सो बलवान॥ फेरिकीन्हों सज्जधनु कृपजिष्णुकाटो तौन। पार्थडारे निशित शरदश तीनि तेजसभौन॥ युवाकाटो एकते हनिचारि चारोंअर्ब। एकशरतेंसारथीको हरोशीशअखर्ब॥ तीनितेरथबेणुकाटे अक्षकै ते बीर। एक शरते दईकृपकी ध्वजाकाटि गँभीर॥ कृपाचारयके हृदयमें एकमारोबान। धनुष सारथि हनित लखिकरि कोप कृपअतिमान॥ कूदिरथते गदा फेंकी जिष्णु पै अतिभार। मारि अर्जुन शरन सो दइगदा फेरि उदार॥ लगेयोधा लखन कृपको बाणजालमझार। सब्यमंडल कियोतब रथहांकि मत्स्यकुमार॥ बिरथ लखिकै कृपाचार्य्यहि सुभटजे बलवान। कियोरक्षितआयकै तिन बेगसोंअतिमान॥

इतिबिराटपर्बणिउत्तरगोग्रहणेकृपाअर्जुनयुद्धबर्णनोनामपंचविंशोऽध्यायः

बैशम्पायनउवाच॥गीता॥ द्रोणकृपकोलखिपराजयक्रोधकरिगंभीर। सशरधनुधरि हांकि रथको चलो जहँ कुरुबीर॥ रुक्मरथ पर चढ़ो आवत द्रोणगुरु बलऐन। देखि उत्तर कुंवरसो इमि जिष्णु बोले बैन॥ अरजुनउवाच॥ लसति काञ्चनमयी देवी ध्वजा ऊपर जास। द्रोणसो रथहांकि उत्तर चलहु ताके पास॥ अक्षशानित वृहतजाकी बाहिनी बलधाम। स्निग्ध बिद्रुम सदृश रथके जासुअर्ब ललाम॥ दीर्घबाहु प्रताप परसुद्रोण ये रणधीर। सदृश उषनस्न वृहस्पतिके बुद्धि में गंभीर॥ अस्त्रशस्त्र समस्तवेत्ता धनुर्वेद बिधान। बसत जामें क्षमादिक गुणसत्य शील समान॥ द्रोणसो हमकियो चाहत युद्ध उत्तरबीर। हांकि कै रथ करहुताके सामुहे रणधीर॥ बैशम्पायनउवाच॥ सुनत अर्जुन वचन उत्तर भरेबेग अखर्ब। द्रोणके रथकियो सोंहें हांकि आतुर अर्ब॥ बेगिआवत जिष्णु को लखिद्रोण अतिरथबीर। झटित आये सामुहें रथहांकिकै रणधीर॥ शंखकीन्हों धमित

तिनशत भेरिशब्द समान। भई क्षोभित सकल सेना सुनत सिं-धुसमान ॥ अरुणहंस समान तिनके देखिमिश्रित अर्ब। महा-बिस्मय भरे रणमें सुभट सैनिक सर्ब ॥ महाबीर अजेय दोऊ शिष्यगुरु बलधाम। जोरिकै रथकरिअलिंगनभरेमोद ललाम॥ पार्थद्रोणहि मिलत लखिकै कौरवनकी सैन। भई शंकित हनैंगे ये मिलेदोउ बलऐन ॥ बिहँसिकै भरि मोद अर्जुन बन्दि गुरुके पाय। कहनलागे द्रोणके रथपास स्वरथ लगाय॥ करहुप्रथम प्रहार तुम यह उचित बिहित बिधान। यथा बिधि हम करहिं गे फिरि धनुष योजित बान ॥ एक बिंशति बाणको तबद्रोणकि-य सन्धान। बीचहीमें जिष्णु काटे शरनसों ले बान॥ द्रोणबाण सहस्त्रसों रथ जिष्णु को लिय छाय। हस्तलाघवसो दियो तब कोप तासु बढ़ाय ॥ बढ़ोद्रोण बिभत्सुसों यहिभांति युद्धमहान। लगे बाणसमान बर्षनबीरदोउबलवान॥ बर्षिकै शरवृष्टिकाटत शरनसों शरबीर। देखिकै नृपवृन्द बिस्मयसों भरे गंभीर॥ क-हनलागे द्रोणसों बिनजिष्णु लरिहै कौन। रौद्रक्षत्री धर्मधरगुरु महाबलको भौन ॥ छायलीन्हें दुहुन रथदोउ बर्षि बाणगँभीर। द्रोण मूंदो जिष्णु को रथकोपकरि रणधीर ॥ धनुषलै गांडीव अर्जुन भरोकोप महान। द्रोणको शरजालकाटो तिमिरसो सम भान ॥ फेरि नाना भांति सों रथ जिष्णु अति बल बीर। पूरि दीन्हें दिशन को बहु छोड़ि अस्त्र गँभीर ॥ छाय लीन्हों गगन को शर सघन सों अति मान। देखि द्रोण न परत ज्यों नी-हार मुद्रितभान ॥ द्रोण तब धनुधारिकै करि क्रोध अतिरण-धीर। अग्निचक्र समान बर्षन लगेअस्त्रगँभीर ॥ लगेकाटन जिष्णु बिरचित अस्त्रजाल बिशाल। बांसको बनजरत जैसे भयोशब्द कराल॥ स्वर्णपुंख सुशरनसों सबलई दशदिशि छाय। द्रोणके शरमिलित सिगरे परतएकलखाय ॥ द्रोणअ-र्जुन बीरऐसे बर्षिबाण महान। महत उल्कनसोंभरो करिदियो

गगनअमान ॥ बाणअर्जुन द्रोणके नभमें लसेयहि भांति । श-
रदऋतुके हंसमानो जातबांधे पांति ॥ द्रोणअर्जुन वृत्रबासव
सेलरे बलवान । मत्तगजज्यों क्रोध कैकरि दशनघात महान ॥
शरनसों दोउ लरनलागे परस्पर रणधीर । युद्धको व्यवहार
ऐसो लगेकरन गँभीर ॥ पटत हैं दिव्यास्त्र दोऊ परस्पर मति
मान । जिष्णुवारत द्रोणकेशर शरनसों बलवान ॥ उग्रअस्त्रन
को पराक्रम दोउदेखावत बीर । गगनको भरिलेत पुनि दोउ
इषुनसोंगँभीर ॥ अस्त्रक्रीड़ाकरनलागे बीरदोउबलवान । दिव्य
अस्त्रनलगेबर्षन शिष्यगुरु अतिमान ॥ भरे अमरषलरनलागे
द्रोण अर्जुनबीर । देवदानव सदृशभो संग्राम तुमुल गँभीर ॥
द्रोणके दिव्यास्त्र रोके अस्त्रसों प्रतिकार । इन्द्रअरु बायव्य अरु
आग्नेय सों सु उदार ॥ तहां अर्जुन अरिनके गणकवचकाटत
गात । शब्द होत अघात गिरिपर बज्रकैसो पात ॥ द्रोणसेना
भरीशोणित लसी ऐसे सर्ब । भरो सुमन समूह किंशुक बिपिन
मनहु अखर्ब ॥ बाहुशाशि कबन्ध ध्वज धनु कवचते मतिमान ।
काटि अर्जुन भूकरी मणि खानिसी अतिमान ॥ काटिसेना दई
अर्जुन द्रोणकी अति उद्ध । धुनतधनु दोउचाहि जयरवभरे आ-
तुर क्रुद्ध ॥ अन्योन्य छावत दुहुनको दोउशरनसों अतिमान ।
लरे दोउ बलिइन्द्र ऐसे धनुर्द्धर बलवान ॥ भईबाणी गगनते
इमिद्रोण को अतिउद्ध । करत दुष्कर कर्म अर्जुनसों करत अ-
तियुद्ध ॥ जेतार दानव देवको दृढ़मुष्टि अतिरथबीर । दूरपाती
है प्रमाथी पार्थ धनुधर धीर ॥ गांडीव धनुते मुक्तकरिअतिमान
अर्जुन बान । छाय लीन्हों द्रोणको रथ सघन शलभ समान ॥
देखिते लागे सराहन जिष्णु को बरबीर । बायु पैठिन सकत है
शरजाल माहँ गँभीर ॥ जिष्णु के शरजालमें लखिमुंदोद्रोण उ-
दार । चहूंदिशिते लगेसैनिक करैहाहाकार ॥ देखिकैशीघ्रास्त्रअ-
र्जुनकेमहानअखर्ब ।गगनगतलागेसराहनदेवगणगन्धर्ब॥रथन

को समुदाय लीन्हें द्रोणसुत तबधाय । तातको शरसंकुलित लखि कियो आय सहाय ॥ हृदयमाहँ सराहि अर्जुनकोपराक्रम बीर । बेगसों रथ हांकि आयो भरो क्रोध गँभीर ॥ कोपकरि अतिआय अर्जुनपै सो अश्वत्थाम । मेघसों शरवृष्टि लागो करन अतिबलधाम ॥ द्रोणको तजिफेरिकै रथमहाअर्जुनबीर । चलेअश्वत्थाम सोहैं भरेकोप गँभीर ॥ पायअन्तर बेगसोंरथ हांकि द्रोणाचार्य । छिन्नध्वजबर बर्मभाजे युद्धसोंअतिआर्य ॥

इतिश्रीबिराटपर्वणिद्रोणपराजयबर्णनोनामषड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

बैशम्पायनउवाच ॥ रोला ॥ देखि आवत बेगसों सुतद्रोणकोरणधीर । बाण बर्षत मेघसों अति भरो कोपगँभीर ॥ हांकिकै रथ भिरे अर्जुन सघन बर्षत बान । वृत्रबासव सदृश दोऊबीर अतिबलवान ॥ सूर देखि न परो बायु न सञ्चरोतेहिकाल । दुहुन बांधो दशौदिशिमें भांतियों शरजाल ॥ द्रौणिलहि कछु सन्धि सूक्षम दृष्टिसों निरधारि । जिष्णुधनुकी ज्या निपाती शुरक्षुरप्रहिडारि ॥ किय प्रशंसन सुरनसों लखिकै अमानुष कर्म । द्रोण भीषम कर्ण कृप साबास बोले पर्म ॥ जिष्णुके हियमाहिं मारो द्रौणि फिरि शतबान । बिहँसि अर्जुन सज्यकरि धनुभरे क्रोध महान ॥ अर्द्धचन्द्राकार भृकुटी करे अर्जुनबीर । द्रोणसुत सों भिरो ज्यों गजदोय मत्तगँभीर ॥ करनलागे बीरदोऊ लोमहर्षण युद्ध । देखितिनको सकल कौरवभरे बिस्मयउद्ध ॥ महाबिषसों भरे पन्नग सदृश बर्षतबान । द्रौणि अर्जुन करनलागे युद्धउद्ध महान ॥ तूण अर्जुनके अमोघन बाण जास सिरात । अचल याते रहतरणमें करत शर अतिपात ॥ शीघ्रबर्षतबाण अश्वत्थामकेहैं जौन । तूण सिगरेभये खालीगयेचुकिसबतौन ॥ तानिकै धनुचलो तब राधेय करिबे युद्ध । भयो हाहाकार सेना माहँ तब अतिउद्ध ॥ चक्षु दीन्हों तहां अर्जुनजहां धनुटङ्कार । तहां देखो कर्णको तब बढ़ो क्रोध उदार ॥ मारिबेको कर्णके करि

कामना बरबीर। निहतकरिकै लखनलागो चखन कौरणधीर॥ देखिअभिमुखपार्थकोसुतद्रोणकोबिनबान।त्वरितसहसनपुरुष आये लैगये बलवान॥ छोड़िकै तब द्रोणसुतको धनंजय बर बीर। बेगसों रथहांकि धायो कर्ण पै रणधीर॥ क्रोधसोंकरि अरुण लोचन महाबलको ऐन। द्वन्दयुद्ध बिचारि बोले सूत सुतसों बैन॥

इतिबिराटपर्बणिउत्तरगोग्रहणेअश्वत्थामपराजयबर्णनोसप्तबिंशोऽध्यायः॥

रोला॥ कर्ण हमसों सभामें तुम बचन बोले जौन। युद्ध अवसर तब न हो अब समय आयो तौन॥ सभामें जो द्रौपदी को कियो तुम अपमान। तास फल हम देतहैं अब तोहिं सूत महान॥ धर्म पाशनिबद्ध हमको कियो कोपित जौन। तास फल लखु सूतसुत रणछोड़ि करहु न गौन॥ सहोद्वादशबर्षहम बनमाहँक्लेश महान। प्राप्त ताको होयगो फल अद्य तुमहिं अमान॥ सूतसुतकरु युद्ध हमसों द्वन्द आय अखर्ब। जाहिदेखो सहित सैनिक सुहृद कौरवसर्ब॥ कर्णउवाच॥ कहत अर्जुनजान कीजै कर्मसो प्रारम्भ। ब्यर्थबोले बचनकेका बहुतधारे दम्भ॥ लहो पूर्ब अमर्ष जो तुमतौन शक्ति बिहीन। सो देखावहु अब पराक्रम जौनतुममेंपीन॥ इन्द्रमोसोंलरैजोसँगलये अर्जुनतोहिं। करैगोकछुब्यथाकोनाहिं युद्धकरतेमोहिं॥ अरजुनउवाच॥ भाजिअबहीं गयेमोसोंयुद्धकरिलेप्रान। अनुजतवहमहतोतबतुमरहेनहिं बलवान॥ अनुजबध करवाय भाजे युद्धको तजिऐन। तोहिं बिनको और ऐसेआय बोलैबैन॥ बैशम्पायनउवाच॥ भांतियोंकहि कर्णसों बीभत्सु बीरमहान। वर्मभेदी कर्ण ऊपर निशित बर्षे बान॥ कर्णतेशरकिये वारण शरनसों शितधार। शरनकेरोजाल कीन्हों चहूंओर उदार॥ अश्वबेधित किये भुजबर जिष्णु के बरबीर। कर्णके करिक्रोध काटे जिष्णुतन गँभीर॥ रहे अल्प तुणीर तिनसों कर्णलीन्हें बान। जिष्णुके करिमाहँ मारेक्रोधकरि

सन्धान ॥ कर्णकोधनु जिष्णुकाटो क्रोधकरिगम्भीर । कर्णफेंको शक्तिकाटोशरनसोंकुरुबीर ॥ कर्णकेलखिचलेसैनिकयुद्धकोकरि काम । शरनसों हनि जिष्णु दीन्हों तिन्हैं अन्तकधाम ॥ शरन सों फिरि मारिदीन्हे डारि रथके अर्ब । अशनि सो शरफेरि मारो हृदय मध्य अखर्ब ॥ बेधिसो शर वर्मबेधो हृदय तास कठोर । भईमूर्च्छाकर्णको हियबढ़ोवेदनघोर ॥ छोड़ि रणभू गयो उत्तर दिशाको गहिऐन । फेरिउत्तरसों कहो बीभत्सु ऐसेबैन ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ चलहु उत्तरतहांलै रथ हिरण्मय ध्वजयत्र । वृद्धअतिरथ भीष्ममेरे पितामहहैं तत्र ॥ युद्धमोसों कियो चाहत महाबलके ऐन । सैनलखि चतुरंगिणी बहुकहो उत्तरबैन ॥ नहींहम करिसकत नियमित तुरँग रथकेबीर । प्राणगो भरि खेद बिकल भयो मम गंभीर ॥ दिब्यास्त्रके सुप्रभावते परिपूर्ण करि अतिघोर । करतद्रावित दिशनको तुम कुरुनसह शरजोर ॥ रुधिर मज्जागन्धते हमहोत मूर्च्छितबीर । नहीं अबलों लखो ऐसोयुद्धउद्धगँभीर ॥ गदापातजशंखध्वनिभटसिंहनादमहान । गाण्डीवधनुज्या जन्यशब्दसोबज्रपातसमान ॥ सुनतमेरेश्रुति स्मृति सह नष्टह्वैगेबीर । मूढ़ मेरो भयो चेतस सकत धारि न धीर ॥ आलात चक्र समान मण्डल रावरो अतिमान । धुनत धनु गाण्डीवको दशओर बर्षतबान ॥ दृष्टिमेरी भई प्रचलित हृदय कम्पितबीर । देखि तुमहिं पिनाकधर सम करत युद्धगँभीर ॥ लखत अर्जुन रावरेभुज होत भीम महान । देखिपरत न लेत छोड़त करत शरसन्धान ॥ अरजुनउवाच ॥ करहुआत्माको सुनियमित तजहु खेद गँभीर । कियो अद्भुत कर्म तुमरणभूमि में रणधीर ॥ मत्स्यकुल अरि दमन संभव राजसुतअभिराम । तुम्हैं योग्य न खेद उत्तर धरहुधैर्य ललाम ॥ युद्धकांक्षी सुरथ के मम करहुनियमित अर्ब ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ जिष्णुयों सुबिराट सुतसों बोलि बचन अखर्ब ॥ झटिति उत्तर भीष्मसोहैं मोहिं

दे पहुंचाय। चहत काटो पितामह के धनुषकी ज्याजाय॥ दिव्य अस्त्र बिचित्र छोड़त लखहु मेरेबीर। सदृशशम्पाचापचंचल चाहिहौ रणधीर॥ कनक पृष्ठि जोधनुष मम गांडीवअरि कुलकाल। लखत चारों ओरते कुरु भूप ताहि बिशाल॥ सलिल शोणित पादसे गजरथावर्त्त महान। चहतहौं परलोक बाहिनि कियो सरित अमान॥ पाणिपाद कवन्धशाखा सदृश काटि उदार। करत कौरव सैनबंशी शरनसों शितधार॥ जीति सेनाकौरवनकी एकहम रणधीर। सैकरनपथ कियोचाहतशरनसों गँभीर॥ बिद्धमोसों चक्रसी यह भ्रमत सैनअखर्ब। चहत तुमहिं देखाइबे हम अस्त्रको बलसर्ब॥ छोड़ि कै भ्रमकरहु शीक्षित तुरगरथके बीर। इन्द्रआज्ञा सों हने हम दनुज वृन्द गँभीर॥ कालखंज पुलोममारे हमअसंख्यउदार। हिरण्यपुरबासी सुमारे दनुज साठिहजार॥ वृक्षसे ध्वज तृणपदातीरथी सिंहसमान। अस्त्राग्निसों कुरुसैनबंशी करतभस्ममहान॥ रुद्र पावक बरुण मारुत धनदसह मघवान। बज्रआदिक अस्त्रहम कोदिये सहित बिधान॥ कौरवनकी सैन बन नरसिंह रक्षित जौन। तजहु उत्तर भीतिको हम चहत काटोतौन॥ बैशम्पायनउवाच॥ जिष्णु केसुनि बचन येरथ हांकि उत्तरबीर। जाय पैठो भीष्म रक्षित सैन माहँ गँभीर॥ देखिआवत कुरुन जीतन महा अर्जुनबीर। चलेआगे दुचित ह्वै कै भीष्म अतिरणधीर॥ भीष्मको ध्वजकाटि डारो शरनसों बलवान। कर्म अर्जुन को बिलोकत भरे क्रोध महान॥ बिकर्ण दुःसह अरु बिबिंशति सह दुशासनबीर। चले सुत धृतराष्ट्रके ये चारि अति रणधीर॥ कियो वारण जिष्णुको तब ह्वै दुशासन क्रुद्ध। हनोउत्तर कुंवर को अति निशित भल्लअरुद्ध॥ फेरि अर्जुनके हृदयमें निशित मारोबान। जिष्णु काटो धनुषताको क्रोध करि अति मान॥ फिरि दुशासनको हनोहिय पांचशरसों बीर। भजोरणको तजि

दुशासन बाण बिद्ध अधीर ॥ तबबिकर्ण सक्रोध धनु धरिमुक्त करशितबान । कियो बेधित जिष्णु को धृतराष्ट्र सुतबलवान ॥ भालताको बेधि अर्जुन दियो रथतेडारि । देखिदुःसह अरुबिबिंशति क्रोधको अति धारि ॥ तीक्ष्ण बर्षन बाण लागे देखि बन्धु बिहाल । जिष्णु तिनके अबेरथके हनेशरनबिशाल ॥ कूदिरथते बिद्धशर तजियुद्ध भाजे तौन । पुत्रनृप धृतराष्ट्र दुःसह अरु बिबिंशति जौन ॥ हनतसैनिक वृन्द धावत जिष्णु चारों ओर । शरनसों अति प्रलयकाल मचाय दीन्होंघोर ॥ कौरवन के महारथजे रहे धनुधर बीर । एकसँग ह्वै लरनलागे जिष्णु सों रणधीर ॥ शरनकोरचिजाल अर्जुनचहूं दिशि अतिमान । परे ज्यों पनिहार घनगिरि होत मरनमहान ॥ तथा तिनको मूंदि दीन्हें सहित सेना सर्ब । गजनको अरु हयनको सुनिपरत शब्द अखर्ब ॥ बजेभेरी पटहघनसम भटनको ललकार । मचोसेना माहँचारों ओर शोर अपार ॥ नरनके गजहयनके तन करत खंडअमान । बांधि कै शरजाल अर्जुनलगे बर्षनबान ॥ जिष्णु बर्षत बाणकुंडल सदृशाकरि को दंड । लसो ज्योंदिनमध्य गतरबि शरदको अतिचंड ॥ गिरत रथते रथी सादीहयन ते अतिमान । नचत फिरत कबंध लीन्हें करनमें धनुबान ॥ बर्म चर्म सधनुष काटत शरनते कुरुबीर । भई भट तन खंड खण्डित समर भूमि गँभीर ॥ एक नृत्यत फिरत अर्जुन निशित बर्षतबान । होतधुनिगांडीवधनुतेबज्रपातसमान ॥ सुनत सोरण छोंड़िभागे शेषसैनिक सर्ब । धरेकुंडल शीश तहवां परेदेखिअखर्ब ॥ शरनतेकटि गिरतमस्तक होतिशब्द महान । गरजिकैघन करत मानहुं उपलवृष्टि अमान ॥ बर्षबीते तेरहों धरि जिष्णुरौद्र स्वरूप । धार्त्तराष्ट्रनको देखायोभरोबिक्रमभूप ॥ त्रासगहन समानसेना क्रोधअग्निलगाय । लपटसे शरसंगसों सबदियो मनहुँ जराय ॥ महारथन भगायकै सबत्रासित करिकै

सैन। बीरअर्जुनभये ठाढ़े महाबलके ऐन॥ शोणितोदक भरी अतिगंभीर सरित बहाय। करत निर्मित कालजैसे युगक्षयको पाय॥यादसेशरपांचआयुधवृन्दसकलमहान। मुंडबुद्बुदसदृश कच्छपसदृश रुण्ड महान॥ बाल सुभगसे वालसम शिरपाग नागसमान। गृद्ध जम्बुक भूतभैरव सिद्ध करत स्नान॥ करी निर्मितभांतिकी यहिसरित अर्जुनबीर। करतिभू संग्राम भूषित भरी रुधिरगँभीर॥ बैशम्पायनउवाच॥ नृप सुयोधन कर्णद्रोण सपुत्र कृप बलवान। सहदुशासन अरुबिबिंशति भरेक्रोधमहान॥ युद्ध को सन्नद्ध ह्वैकै धारि धनुष कठोर। घेरिलीन्हों जिष्णुको रथ आयचारों ओर॥ जिष्णु ऊपरलगे बर्षनतेमहास्त्रगँभीर। शरन सों रथमूंदि दीन्हों जिष्णुको रणधीर॥बिहँसिकै बीभत्सु लीन्हों महत सो कोदंड। अस्त्रवर्षनलगे अर्जुन भानु करसेचंड॥ मूंदि लीन्हों कुरुनको शरडारि जालमहान। मेघते ज्यों गिरत बिद्युत तथाधनुतेबान॥ इन्द्रधनुसों धनुषभो गांडीव तेजसराश। यथा बर्षत मेघबिद्युतकिये परमप्रकाश॥ रथीजंताभये ब्याकुलतजे धीरज देत। लहोयोधन शांतिको अतिभयें बिह्वलचेत॥ संग्रामसोंह्वै बिमुखभाजे युद्धकर्त्ता सर्ब। जो सुयोधन संगआये महारथगहिगर्ब॥ भीष्मशांतनु पुत्र सबके पितामह रणधीर। बध्यमान बिलोकि सेनाचलो धनुधरिबीर॥ जिष्णुपै सन्धान कीन्हों मर्मबेधीबान। शङ्खधुनि करिकिये हर्षित अन्धसुतन महान॥ देप्रदक्षिण आयरोको जिष्णुकोरथबीर। चलोआवत पितामहको देखि अर्जुनधीर॥ जाय आगेलैय ठाढ़ेभये अचल समान। जिष्णुके ध्वजमाहँ मारे पितामह बसुबान॥ भल्लले शितधार अर्जुन पितामह कोछत्र। काटिकै क्षितिमाहँ डारोभयो अद्भुततत्र॥ शरनसों फिरिध्वजा काटी हने रथके अर्ब। पृष्ठि पालक सारथी फिरिहने शरन्हअखर्ब॥ क्रोधकरि तबपितामह करि जिष्णुको अनुमान। डारि दीन्हों धनंजयपर दिब्यअस्त्र

महान ॥ तथाडारो भीष्मपर दिब्यास्त्र अर्जुनबीर । दुहुनसों तब लोमहर्षणभयो युद्धगँभीर ॥ भीष्मअर्जुनसोंभयो तबयुद्धतुमुल महान । लखत कौरव तिन्हैं बलि अरुइन्द्रसे बलवान ॥ भल्ल सोंलगि भल्लहोत फुलिंगके उद्योत । सघन पावसनिशामें घन उड़तसे खद्योत ॥ सब्य दक्षिण फिरत दोउसम अग्निके आ-लात । तजतशर गांडीव राजत धनुष अति अवदात ॥ शरन सों बीभत्सु लीन्हों भीष्मको इमिछाय । तोयधारासों यथाघन धराधरको आय ॥ सिन्धुबेला सदृश भीषम बरषिकै बहुबान । कियोबारण जिष्णुको शरजाल काटि महान ॥ फेरिअर्जुनलगे बर्षन निशित बाणसमूह । भीष्म ऊपर महातरुपै शलभकैसो जूह ॥ पितामहशित शरनसों शरतौन काटेसर्व । देखिकै तब कुरुन कीन्हों साधुवाद अखर्व ॥ करत दुष्करकर्म भीषम जिष्णु सों करियुद्ध । महाबलहै तरुण सो अतिक्षिप्रकारी उद्ध ॥ पार्थ को अतिबेगथांभै औरकोरणधीर । बिनाभीषम कृपाचारयद्रोण के यदुबीर ॥ दिब्यअस्त्र समस्त इनपै त्यागसहसंहार । करत याते समरभूमें अभयबीर बिहार ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ अस्त्रयुद्धनि-वर्त्त कीन्हों भीष्म जिष्णुमहान । मनुजयोग्य न जानिदोऊलगे बर्षनबान ॥ हस्तलाघव जिष्णुकरिकै भीष्मको धनुजौन । दियो काटि क्षुरप्रशरसोंमहाबलकेभौन ॥ दूसरोधनुभीष्मलीन्हेंसज्ज करिअतिमान । क्रोधकरिकैजिष्णुऊपरलगेबर्षनबान ॥ अर्जुनो शर निशितलागे करनवृष्टिगँभीर । अस्त्रबिददोउनिशित बर्षन लगेशर बरबीर ॥ दुहुँनमें न बिशेषजानो परोबीरसमान । दुहुँन दशादिशि करी पूरित बर्षिअति घनबान ॥ भीष्मरथकेरहे रक्षक शूरजे बलभौन । सामुहें रथ आपने हनिजिष्णु डारेतौन ॥ हंस पंक्तिसमानशर गांडीवमुक्तअमान । परत रथपर भीष्मके कल-धौतपुङ्खमहान ॥ भीष्मके दिब्यास्त्र अगणितनाशकरताजौन । परत रथपर जिष्णुके सबदेव देखततौन ॥ चित्रसेन बिलोकि

अर्जुनको सुशरसन्धान । कहनसुरपतिसोंलगेयहिभांति सहित बखान ॥ नहींऐसो मनुज क्षितिपर अस्त्रवेत्ता आन । करत है सन्धान जैसो जिष्णु अस्त्रपुरान ॥ लेत जोरत धनुष खैंचत तजत बाण अशेश । जिष्णु को नहिं हस्तलाघव परतजानि सुरेश ॥ मध्यदिन गत सूरसे हैं दोऊ बीर महान । परतदेखि अजेय दोऊ सुरनको बलवान ॥ बोलि इमि सुरराजबर्षे दुहुँन ऊपर फूल । कियेपूजित हर्षसों भरिबीर दोऊतूल ॥ बामपार्श्व बिभत्सुके तब भीष्म मारेबान । बिहँसि कै तबजिष्णु कीन्हों निशित शरसन्धान ॥ काटिकै धनु भीष्मको दशबाणसों हिय मध्य । मारिदीन्हों डारिरथपर जानिबीर अबध्य ॥ पकरि कूबर स्वरथको रहिगये ब्यथित गँभीर । हांकिरथ लैगयोसूत बिलोकि मुर्च्छितबीर ॥

इतिश्रीबिराटपर्बणिभीष्मपराजयबर्णनोनामअष्टबिंशोऽध्यायः २८ ॥

बैशम्पायनउबाच ॥ रोला ॥ छोड़िकै संग्राम भागे भीष्म जब तब भूप । नृप सुयोधन सहितसेना लरेआय अनूप ॥ जिष्णुकेमधि भालमारो तानिकै धनुबान । एकशृङ्ग सुमेरु सों तबलसो बीर अमान ॥ क्रोधकरितब अग्निसे शरछोड़ि अर्जुनबीर । कियो बेधित नृप सुयोधनको महा रणधीर ॥ लरनलागे सदृशकै दोउ भरे क्रोधमहान । महामत्त गजेंद्र पै चढ़ि तब बिकर्ण अमान ॥ द्विरदरक्षक चारिरथ सँगलिये धायोबीर । देखि आवत ताहि अर्जुन क्रोधकरि गंभीर ॥ कानलों शरतानि मारो कुम्भ में बलवान । बूड़िगो गजभालमें शर निशित पुङ्ख प्रमान ॥ कांपिकैसो गिरो क्षितिपर लहतशायकघात । महागिरिको शृङ्ग जैसे बज्रको लहिपात ॥ दयो छोड़ि बिकर्ण मृतगज भाजि शत पदजाय । लहि बिबिंशति बन्धुको रथ चढ़ो तापरधाय ॥ यथा बिधिको हनोगजके भालमें बलवान । नृप सुयोधनके हनोहिय सथाबिधिको बान ॥ भूप द्विरद बिकर्णको लखि भजी सेना

सर्ब। तालदे तब कह्यो ऐसेबीर जिष्णु सगर्ब॥ अर्जुनउबाच॥
छोड़ि कीरति सुयशभाजे युद्धते तजिधर्म। नहीं इतजयपटहजो
बजवायदीजै पर्म॥ नाम दुर्योधन तिहारो वृथा राखोतात।
नामको नहिं धर्म तुममें बिमुखरणतेजात॥ नहींआगे नहींपीछे
तुम्हें रक्षत जौन। भजेमेरीभांतिसों प्रियप्राणले सबतौन॥
इतिश्रीबिराटपर्बणिउत्तरगोग्रहणेदुर्योधनपराजयबर्णनोऊनत्रिंशोऽध्यायः॥

बैशम्पायनउबाच॥ रोला॥ जिष्णुको आह्वान अंकुश लगे कौ-
रवबीर। मत्तगजलौं फिरेरणको भरे क्रोधगँभीर॥ भूपकेदिशि
चले उत्तर कर्णगहि धनु घोर। नृपसुयोधन सेनरक्षत भीष्म
पश्चिम ओर॥ द्रोणकृप धृतराष्ट्रके जे पुत्रहे रणधीर। चले
आगे भूपके लेभरे क्रोधगँभीर॥ सिन्धुकैसो उलटआवतदेखि
सैन महान। जिष्णुको तिनकियो बारित बर्षिअस्त्र अमान॥
जिष्णुअस्त्र निवारि अस्त्रनसों महा रणधीर। फेरिमोहन अस्त्र
छोड़ो भरोमोह गँभीर॥ अस्त्रतेकढ़ि निशितशर करिदिशाव्या-
पित सर्ब। गांडीवके श्वनशब्द कीन्हों ब्यथित सैन अखर्ब॥
ध्वनित कीन्हों शङ्खको गहिपाणिसों अतिमान। कियो पूरित
दशोदिशिमें शब्दघोर महान॥ शङ्खधुनिसुनि भयेमोहितबीर
कौरव सर्ब। होय मोहित परे रथपर डारि धनुष अखर्ब॥ देखि
मोहित सैन समुझो उत्तराको बैन। कह्यो उत्तर पासऐसे जिष्णु
अतिबलऐन॥ जायइनके बसन ल्यावहु होयकुंवर अभीत।
द्रोण कृप के श्वेतअम्बर कर्णके पटपीत॥ द्रौणिके अरुभूपके
अति नील रँगकेबास। जानि संज्ञा सहित जाहु न पितामह
के पास॥ देहु दक्षिण ताहि जानत अस्त्रको प्रतिकार। जिष्णु
के सुनि बचन रथते परो कूदि उदार॥ बसनलै अति रथनके
फिरि चढ़ो रथपरआय। उत्तराके हेत रंगनसों भरे सुखदाय॥
हांकि अश्वनको चलो रथलेय उत्तर धीर। नांघि ध्वजनी कौ-
रवनकी सहित अर्जुन बीर॥ जिष्णुको लखिजात भीषम

निशित मारोबान । तासअर्जुनहने रथके अश्वअतिबलवान ॥ मारि दशशर कियो बेधित भीष्मको कुरुबीर । भीष्मको तजि गयो सेना बाहिरे रणधीर ॥ भयो ठाढ़ो जाय सेना बाहिरे बलवान । मेघवृन्द बिदारि ज्यों मध्याह्न कैसो भान ॥ लहे संज्ञा लखि सुयोधन जिष्णुको बलऐन । एक ठाढ़ो जीतिकै इमि कहनलागो बैन ॥ कौनबिधियह छुटोतुमसों युद्धकरि अतिमान । फेरि यासों लरहु जाते नहीं पावै जान ॥ बिहँसिकै तब कह्यो भीषम गई तोकर बुद्धि । छोंड़िकै धनुबाण जब तुम परेहे बेसुद्धि ॥ नहीं मारो जिष्णुहै न नृशंश करताकर्म । प्राप्तिको त्रैलोक की नहिंतजै अर्जुन धर्म ॥ चलहु हास्तिन नगरकी गहिडगर जोसुखदाय । लेय गोधन फिरोअर्जुन मत्स्यपुरकोजाय ॥ पितामहके बचनसुनत सुनीति हितकेभौन । रह्यो सुतधृतराष्ट्रको निश्वासलैकैमौन ॥ भीष्मकोहितबैनसुनितजिजिष्णुअग्निसमान । धरो मनमें सैनिकन सब चाहि करन पयान ॥ कुरुनको लखि जात अर्जुन चिन्ति श्रेष्ठाचार । गुरुनके पदकिये बन्दित पठै शरन उदार ॥ देवदत्तबजाय कै फिरि शङ्खअतिगम्भीर । हृदय द्रावितअरिनको सबकियोअर्जुनबीर ॥ मुकुटकाटोनृपसुयोधनकोनिशिततजिबान । रत्नमण्डितप्रभापूरित रहीभानुसमान ॥ कुरुनको लखिजात अर्जुन बिहँसि बोले बैन । जीतिधनलैचलहु उत्तर नगरकी गहिऐन ॥ युद्ध अर्जुन कुरुन को लखिअमर सहित सुरेश । करत संशित पार्थपौरुष गये अपनेदेश ॥

इतिबिराटपर्वणिउत्तरगोग्रहणेसमस्तकौरवपराजयबर्णनोत्रिंशोऽध्यायः ॥

बैशम्पायनउवाच ॥ जयकरी ॥ जीति कुरुनको पांडव बीर । ल्यायोगोधन सकल गँभीर ॥ सैनिक भीति भरे जे घोर । गयेगिरिनमें भजिचहुँ ओर ॥ पथमें मिलैं जिष्णुको जौन । प्रांजलि बिनय करैं तहँ तौन ॥ अर्जुनउवाच ॥ डरहुन जाहुआपने धाम । हम न पराजित आरत क्षाम ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ ते सुनि अभय

बचन अभिराम। दे आशिष गे अपने धाम॥ तब उत्तरसों अर्जुन बीर। कहे बचन हियलाय गँभीर॥ पांडव बसत बिराट समीप। तुमको बिदित सधर्म महीप॥ तुमन प्रशंसितकीजो चाहि। तिनको तात निकट अवगाहि॥ हम जीती जो सेना सर्व। ल्याये गोधन फेरि अखर्व॥ सोकहियो तुम अपनोकर्म। प्रगट कीजियो नहिं ममम्म॥ उत्तरउवाच॥ जो तुम कीन्हों कर्म अपार। मोमें तौन न शक्तिउदार॥ तबलोंतुव कहिहैं नहिंकर्म। जबलों तात न बूझहिं मर्म॥ गये श्मशान शमीकेपास॥ वैशम्पायनउवाच॥ शरब्रणभरे जिष्णुबलरास॥ तब तजिकै सोध्वजा गँभीर। गयोगगनको कपि बरबीर॥ सिंह चिह्नहो ध्वजपर-जौन। योजित कीन्हों फिरितहँ तौन॥ राखिशमीपर आयुध सर्व। आये उत्तर कुंवर अखर्व॥ वेष बृहन्नलको धरिधीर। होय सारथी अर्जुन बीर॥ रथपर उत्तरको बैठाय। चले नगर को जयश्री पाय॥ सूतबृहन्नल बनो अनूप। चलिकै गये न-गरलों भूप॥ वैशम्पायनउवाच॥ भग्न होयकै कौरव भूप। हास्तिन नगर गये कृशरूप॥ राजपुत्र यह गोधन सर्व। आवत लीन्हें गोप अखर्व॥ ऐसे जिष्णु बोलिकै बैन। फिरि उत्तरसों कहो सचैन॥ लहिपराह्न पुरमाहँ प्रवेश। करिहैउत्तर सुनहुनिदेश॥ अश्वनको जलसे नहवाय। शस्त्र बिगत करि पानी प्याय॥ प्रथम गोपपुरमेंबृत्तांत। जायकहो बिधिबिहितनितांत॥ अर्जुन के सुनि बचन बिशाल। लीन्हें दूत बुलाय उताल॥ उत्तरकहो नगरमें जाय। बिजय देहु सबिधान सुनाय॥ ऐसे जीति कौर-वन सर्व। लीन्हों गोधन सकल अखर्व॥ सह सारथी बृहन्नल वेश। उत्तर कीन्हों नगरप्रवेश॥ गोधन जीति मत्स्यपतिभूप। गये नगरको आनँदरूप॥ चारि पांडवनसह बलधाम। शो-भित सभामाहँ अभिराम॥ सेवत मंत्री सुभट सुजान। कहत बिजय बन्दी गुणवान॥ द्विजवर पौर प्रजा सबभूप। कियो

बिदा कहिबचन अनूप ॥ जायभूप रानीके धाम । बूझा उत्तर कहँ अभिराम ॥ बनितन कहो भूपसों बैन । आय सुयोधननृप सहसैन ॥ गोधन हरो सुनो अतिमान । तिन्हैं जीतिबेगो बल-वान ॥ एक बृहन्नल सारथिसाथ । तिन्हें जीतिबेगो सुनुनाथ ॥ आये जे षट अति रथबीर । भीष्म द्रोण कृप अति रणधीर ॥ कर्ण सुयोधन अश्वत्थाम । सेनासंग महाबलधाम ॥ बैशम्पायनउ-वाच ॥ दोहा ॥ सुनिबिराट चिंतितभये जानि शत्रु बलवान । सं-ग बृहन्नल सारथी पुत्रएक प्रियप्रान ॥ मंत्रिनसों लागो कहन आय सभामें भूप । संग बृहन्नल युद्धको गो उत्तर शिशुरूप ॥ ताते योधा जाउ मम अब्रण जे बलधाम । करौसहाय ससैनते उत्तरकी अभिराम ॥ पठैसेन चतुरंगिनी रहेबिराट बिचारि । पुत्रनजीवत जियत करि महारथिनसोंहारि ॥ जाकोजंता षंढहै महारथिन सों युद्ध । ताके जीवनकी कहाआशा करहु बिरुद्ध ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ दुःखितदेखि बिराटको कहोकंक करिप्रीति । जो सारथी बृहन्नला तो ल्यावतगो जीति ॥ सहित सहायक कु-रुनको देव यक्ष गन्धर्ब । जासु सारथी बृहन्नल सो रण जीतै सर्ब ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ उत्तर पठये दूतजे तेतुर पुरमें आय । बिजय सबिधि लागे कहन मंत्रिनसों सुखदाय ॥ बोले मंत्री भूपसों उत्तरबिजय ललाम । कहोभाजि कौरव गये हारियुद्ध बलधाम ॥ गोधन लीन्हों जीतिरण कुशल सूतसहबीर । उत्तर आवत रथचढ़ो पुरपथमें रणधीर ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ तव सुतजीतो कुरुनको अद्भुत कहा नरेश । जासु बृहन्नल सारथी जीतैतौन सुरेश ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ पुलकित भये बिराट नृप सुनिसुतको जययुद्ध । दूतनको बकसीसदिय पटभूषण मणिशुद्ध ॥ मंत्रिन सों भूपति कहो ऐसे बचन समान । बाद्य चतुर्बिधके बजैंपुरमें कहो महान ॥ सहित कुमारिन उत्तरा धरि भूषण सुखदाय । आवत उत्तर जौनपथ तहँ आगे चलिजाय ॥ बैशम्पायनउवाच ॥

सुनि भूपति को बचनभो पुरमें मंगलचार । पटहचहूं दिशिनगरमें लागे बजनउदार ॥ कन्याचारु पठायकै गणिकागण अति रूप । ह्वै प्रसन्न लागो कहन ऐसे मत्स्यप भूप ॥ सैरंध्री तुम जायकै ल्यावहु अक्षअनूप । द्यूतकंकसों करैंगे हम प्रवृत्त अति रूप ॥ कंकउबाच ॥ द्यूत न कीजै मुदित सँग हैयह नीति अनूप । तातै करहु न द्यूतको चलन आजुतुमभूप ॥ बिराटउबाच ॥ सुस्त्रीगाय हिरण्यबसु और हमारेजौन । तुमते खेलत द्यूत हैं हमैं रक्ष्य नहिं तौन ॥ कंकउबाच ॥ सकल दोषमय द्यूतमें कहा तुम्हैं फलभूप । तातै हम बर्जित तुम्हैं द्यूत दोषको रूप ॥ सुनो युधिष्ठिर द्यूतकरि लहिजो बिपति महान । अरुराजहारो सकल भ्राता अमर समान ॥ द्यूत अवश्यक जो तुम्हैं करिबे आपतधाम । नृपकीजै प्रारम्भतौ पूर्णकरहुमनकाम ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ मत्स्यप द्यूतप्ररम्भ करि बोले बचन सगर्ब । पुत्रहमारेयुद्ध में जीते कौरवसर्ब ॥ सुनि बिराट के बचन इमि बोले भूपति धर्म । यंताजासु बृहन्नला सोपावैजयपर्म ॥ सुनत युधिष्ठिर के बचन कहो बिराटसक्रोध । कहत पुत्र मम के सदृशषंढहिअरे अबोध ॥ बाच्य अबाच्य न बचनको बिप्राधम तोहिं ज्ञान । क्यों नहिं जीतै कौरवन मेरो सुतबलवान ॥ सखाजानिकै करत हौं क्षमातोर अपराध । फिरि नाहिं ऐसो बोलियो जीवन चाहि अबाध ॥ युधिष्ठिरउबाच ॥ भीष्मद्रोण कृपकर्ण जहँ द्रोणपुत्र बलवान । भूप सुयोधन महारथ भ्रातन सहितअमान ॥ देवन सहित सुरेश लरि तिनसों सकैन क्रुद्ध । बिना बृहन्नल करैको तासेना सों युद्ध ॥ जासुबाहुबल के सदृशभूत भबिष्य न आन । महायुद्ध लखिकै बढ़त जाकोहर्ष महान ॥ सुरासुरनको युद्धमें जो जीतै अनिकाय । कौन लेयगो बिजयको ताको पाय सहाय ॥ बिराटउबाच ॥ बहुतमने कीन्हों तुम्हैं रहत चुपाय न कंक । चलत न कोऊ धर्मपथ बिना नियंता शंक ॥

बैशम्पायनउवाच ॥ भूपक्रोध करि कंकको मारो अक्षचलाय । भर्त्स-न करिकै कंकके लगो नाक ढिग जाय ॥ बलवत लागेनाकते चली रुधिर की धार । लियो कंक सोपाणिमें क्षिति नहिं छुई उदार ॥ पास खड़ीही द्रौपदी लखो धर्म नृप ताहि । रुधिरलि-यो तेहि पात्रमें अभिप्राय अवगाहि ॥ सजल कनकके पात्रमें शोणित कृष्णाधारि । कोपभरी मुखभूपके अनमिषरही निहा-रि ॥ गन्धमाल्य धारण किये पौर पूज्यअभिराम । आयो तब-हीं पौरिपर उत्तर कुंवर ललाम ॥ द्वारपालकन भूप सों कहो बेगसों जाय । सहित बृहन्नल पौरिपै खड़े कुंवर सुखदाय ॥ छत्तासों भूपति कहो बेगि लयावहु जाय । सहित बृहन्नल पुत्र मम उत्तरको सुखदाय ॥ छत्तासों कुरुपति कहो बचन मन्दक-रिपास । ल्यावहु उत्तरकोनहीं साथ बृहन्नल तास ॥ ब्रत यह धरेबृहन्नला निश्चय अतिबल भौन । बचत न मेरे अंगमें शोणित काढ़त जौन ॥ देखिहमैं शोणित सहित करिकै क्रोध महान । मंत्रिन सहित बिराटको सो हनिहै बलवान ॥

इतिबिराटपर्बणिउत्तरगोग्रहणेसमाप्तिबर्णनोनामएकत्रिंशोऽध्यायः ३१ ॥

बैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ तब आयो उत्तर तहां जहँ बिराटभू-पाल । बन्दि तातपद कंक जहँ तहँ चलिगयो उताल ॥ व्यग्र रुधिर संयुक्त लखि बैठे क्षितिपर भूप । पासखड़ी कृष्णाभजत कीन्हों शोभित रूप ॥ आतुरपूछो पितासों उत्तर शोणितमर्म । ताड़ित कीन्हों कंकको केहि कीन्हों यह कर्म ॥ बिराटउवाच ॥ हम ताड़ो यहि कुटिल को जानि कुमति गम्भीर । करै प्रशंसन ष-एढको तुम्हैं छांड़ि नरधीर ॥ उत्तरउवाच ॥ कियो अकारज भूप तुम बेगिकरहु अनुकूल । ब्रह्म बिषानलमैं नतरु तुमजरिहौसह मूल ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ सुनतपुत्रके बचननृपपकरि कंकके पाँय । भस्म छन्न पावक सदृश क्षमाकरायो जाय ॥ क्षमाकरावत म-त्स्य सो कहो धर्मनृप बैन । हम चिरक्षान्त बिराटनृप क्रोध ह-

मारे हैन ॥ परत हमारो रुधिर जो क्षितिपर सुनहु नरेश। पावत नाश बिराट यह तुम्हैं सहित सब देश ॥ बिगतभये शोणितगयो बीर वृहन्नल तत्र। बंध मत्स्यको तहँ गये धर्मनृपति हे यत्र ॥ करत प्रशंसन पुत्रको समुद बिराटगँभीर। धर्म नृपतिके पाससो सुनत वृहन्नलबीर ॥ पुत्रवान तुमसों भये मत्स्यबंश अवतंश। तुमसो पुत्र न औरके भूतभविष्य प्रशंश ॥ जीतत सहसनको नहीं जीतोजात सक्रुद्ध। कियोपुत्र तेहि कर्णसों कौन भांति तुम युद्ध ॥ नहिं मनुष्यके लोकमें जेहि समान रणधीर। कियोयुद्ध तेहि भीष्मसों कौनभांति तुमबीर ॥ ससुतद्रोण आचार्यसों कैसेभो संग्राम। कृपाचार्य्य सह जगत के ये जेता बलधाम ॥ दुर्योधन भ्रातन सहित महाबीर बलवान। कौनभांति जीतो तिन्हैं सेना सहित अमान ॥ सुनत पराजय परनकी ताते पुत्र उदार। भरेसुधा बर्षतमनो घन आनँदके धार ॥ गोधन ल्याये जीतितुम कौरवसैन महान। मत्स्यबंश भूषणभयो कोसुत तोहिंसमान ॥ उत्तरउवाच ॥ हमगोधन जीतोनहीं हेबरबीर उदार। कियोकार्य यहसकलकोउ रथचढ़ि देवकुमार ॥ भयते भाजत तेहि कियो मोहिं निवारण भूप। बज्रसार समअंगको अतिबल युवास्वरूप ॥ कियो पराजित कौरवन जीतो गोधन सर्ब। हमनाहिं कीन्हों तातयह ताकोकर्म अखर्ब ॥ भीष्म द्रोण कृप कर्णनृप अतिबल अश्वत्थाम। दुर्योधन भ्रातनसहित अरुबिकर्ण बलधाम ॥ मारिशरन तिनसों कहो तेहिंइमि बचन भजाय। हास्तिनपुर तजिबचहुगे और देशमें जाय ॥ भाजि न बचिहौ करहुतुम ताते हमसों युद्ध। जीते पृथिवी भोगिहौ मरे स्वर्ग अनिरुद्ध ॥ सुनत सुयोधन फिरोसो भरोक्रोध गम्भीर। सचिवसैन षटरथनसह महाबीर रणधीर ॥ हमैं रोमहर्षण भयो तिन्हैं देखि अतिमान। मारि शरनसों तेहिकियो तिनको ब्यथित महान ॥ तिनको फेरि

भजायकै कियो हास तेहिबीर। बसन हरण तिनकोकियो रँग सों भरो गँभीर॥ एकबीर षटरथनको दीन्हेंजीति भजाय। महामत्त मृगराज ज्यों बनमृगघन समुदाय॥ बिराटउबाच॥ महाबाहु बरबीरसोंहै कहँ देवकुमार। कुरुन जीतिजेहिं युद्धमेंगोधन लियो उदार॥ देखन पूजन चहत हम ताकोअति अभिराम। जेहि रक्षित कीन्हें तुम्हें देवपुत्र बलधाम॥ उत्तरउबाच॥ अन्तर्द्धान भयोतहां तातदेव सुतजौन। दोयतीनि दिनमें इतै प्रगट होयगो तौन॥ बैशम्पायनउबाच॥ ऐसेसुनत बिराटनृप कपटवेष धरि पास। बसत पाण्डवनको नहीं जाने तिहिंमतिरास॥ आज्ञापाय बिराटकी बीर वृहन्नल तौन। बसन उत्तराको दियो जीतिले आये जौन॥ उत्तरसह नृपधर्मसों मंत्रपाण्डवनसर्ब। कियो कार्य्य कर्त्तव्यहै आगेजौन अखर्ब॥ कियो तौन नृपधर्म को करिबोहो जो कार्य। ह्वै प्रसन्न पाण्डव सकल सहबिराट सुत आर्य॥ तदनन्तर तिसरे दिवस पञ्च पांडुसुतबीर। स्नानकियो करिनित्यकृत धरे सुधासमचीर॥ भूषित ह्वै नृपधर्मको करिआगे अभिराम। पायसमयशुभ गये जहँ मत्स्य सभाको धाम॥ सिंहासनपर धर्मनृप बैठेभानु समान। यथास्थानभ्राता सकल तेजसभरे महान॥ तदनन्तर आयोतहां मत्स्यबंशको भूप। राजकाज करिबेसकल मंत्रिनसह अनुरूप॥ तहँ देखे बैठसकल पांडव अग्निसमान। रहेबिराट मुहूर्त्त भरि खड़े धारिकै ध्यान॥ कहो कङ्कसों मत्स्यपति लखि सुरराज समान। अक्षहेतु किय सभासद तुमको जानि सुजान॥ राजासन आसीनतुम भयेबिभूषण धारि। कियोकङ्क यहकर्मतुम का परिहास बिचारि॥ मत्स्यबचन सुनिजिष्णुतब बोले मधुर मनोग्य॥ अरजुनउबाच॥ अर्द्धासनपर इन्द्रके ये बैठनके योग्य॥ ब्रह्मण्य बदान्यवेद बिद सत्यदृढ़ ब्रतपर्म। भरे पराक्रमसोंमहा मूर्त्तिमान येधर्म॥ अधिक बुद्धिते लोकमें तप ब्रत धीरजधाम। सकै

बरणिको जगतमें इनके गुण अभिराम ॥ दीरघ दरशी तेजमय पांडव अतिरथबीर। तुल्य महर्षिनके यशी ये राजर्षि गँभीर ॥ धनसञ्चयमें इन्द्रसे हैं बैश्रवण समान। मनुसे रक्षक लोकके तेजसभरे महान ॥ कुरुबंशिनके मुकुटये धर्म युधिष्ठिर भूप । यश प्रताप शशिसूरसो जाको लसत अनूप ॥ गजारोह दश सहसहे चलतजात अनुबीर । सहस तीस रथअनुगहे कंचन घटित गँभीर ॥ सूतरहेबसु सहस धरिमणि कुंडल गुणमान । सहित मागधन पढ़तयश ऋषि सुरराज समान ॥ किङ्कर से कौरव रहे इनको भजत बिशाल । इन्द्र प्रस्थमें अमरज्यों सेवतहैं धनपाल ॥ करद करे क्षितिपाल इन सिगरे बैश्यसमान। सहसअठासी लहतहे स्नातकभोजनदान ॥ पंगुवृद्धअति अन्धकृशरोगी दुखित महान। प्रतिपालत हेप्रजनको येप्रभु पुत्र समान ॥ इनकेतपत प्रतापतेरहे सुयोधनबीर। सहितकर्ण सौबल सहित भरे कुमंत्र गँभीर॥ इनके गुणगण गननको कोऊ शक्यन भूप। नहिं प्रशंस ये सत्यहैं केवल धर्मस्वरूप ॥ ये पांडव पृथ्वीशहैं भूप युधिष्ठिर धर्म । क्यों बिराट नहिं योग्य हैं राज्यासनके पर्म ॥ बिराटउवाच ॥ धर्म युधिष्ठिर भूप जो ये कौन्तेय महान । भीमार्जुनकहँ नकुलहैं कहँसहदेव सुजान ॥ हैमहिषीकहँ द्रौपदी भरी पतिब्रतरूप। हारिद्यूतमें राज्यकहँ अबलौं बसेअनूप ॥ अर्जुनउवाच॥ बल्लवकरत जोपाकसोभीमपराक्रम भीम । इनहींमारो कीचकहि सह भ्रातन बलसीम ॥ उत्तरगिरि पर इन हने महाबली गंधर्ब । जिन्हैं लरावत तुमरहे गजगण साथअखर्ब ॥ अश्वबंधजो रावरो तौननकुलये बीर। गो रक्षकसहदेव ये हैं अतिबल रणधीर ॥ कमल लोचनासुंदरी चारुहासिनी भूप। कुरुपतिकी महिषीप्रिया यह सैरंध्रीरूप ॥ अर्जुन हमहैं भीमते अवरज पारथनाम। नकुल और सहदेवहैं हमसों लघुबलधाम ॥ गुप्तबसे हम मोदसों भूप तिहारे पास। रहति

उपद्रव करतिज्यों प्रजागर्भमेंबास ॥ _{बैशंपायनउवाच} ॥ अर्जुनदये ब-
तायजब नृपसोंपांडवसर्ब । तब अर्जुनको पराक्रम उत्तर कहो
अखर्ब ॥ जांबूनद सो गौरतनुजो यह सिंहसमान । दीर्घनासि-
का नेत्रको यह कुरुराज महान ॥ मत्तगजेन्द्र समानजो चामी-
करसो शुद्ध । भीमसेन बरबाहुयह अतिबल जेता युद्ध ॥ श्याम
महा धारेधनुष युवा मतंगसमान । कमलनयन नृपके निकट सो
अर्जुन बलवान ॥ धर्मनृपतिके निकटये रूपवान नरजौन । न-
कुल औरसहदेव येमाद्री सुतबलभौन ॥ इन्द्रीबरभा निकटजो
श्रीसम मूरतिमान । सोहै महिषी द्रौपदी कुरुपतिकी सुखदान ॥
यह कहि उत्तरफिरि कहोजिष्णु पराक्रमसर्ब । जोदेखो रणभूमिमें
करतेयुद्ध अखर्ब ॥ बैशंपायनउवाच ॥ सुनिबिराट उत्तरबचन भरेम-
हाहिय चैन । निस्कृतार्थ अपराधके ऐसेबोलेबैन ॥ पांडुसुतनके
करनको है प्रसन्न यहकर्म । तुम्हें रुचै तौ जिष्णु कोदेहुउत्तरा
पर्म ॥ उत्तरउवाच ॥ आर्य्यपूज्य अतिमान्यये पांडव कुरुकुलपर्म ।
इन्हेंदीजिये उत्तरा ब्याहि बिहितबिधि धर्म ॥ बिराटउवाच ॥ भये
रहे हमशत्रुवश करित्रिगर्त्त सोंयुद्ध । गोधन सहमोचन कियोहमें
भीमरणउद्ध ॥ इनके भुजबलसों लहोहम जययुद्ध महान । करैंप्रस
न्न युधिष्ठिरहि करिअतिप्रिय सनमान ॥ हम अज्ञानता बश कछू
अनुचित कीन्हों जौन । क्षमाकरन केयोग्य नृपधर्मधर्ममतिभौन ॥
इतिमहाभारतेविराटपर्बणिपांडवप्रगटताबर्णनोनामद्वात्रिंशोऽध्यायः ३२
दोहा ॥ चलिबिराटनृप धर्मढिग आनँदभरे अखर्ब । राज्य
कोषपुरआपनो कियोसमर्पणसर्ब ॥ आगेकरिकै जिष्णुकोसकल
पांडवनपास । मिलेमत्स्यपति बोलिकै भाग्यभान्य मतिरास ॥
तृप्तनहोत बिराटलखि पांडुसुतनकोरूप । लगेयुधिष्ठिरसोंकहन
ऐसे मत्स्यपभूप ॥ आयेकुशल बिपीनिते तुमबलभाग्य नरेश ।
रहेभाग्य सोगुप्ततुम अरिसोंधरि बहुवेश ॥ देतराज्य यहपार्थ
को और कछूजोबित्त । ग्रहणकरो पांडवसकल करिमम सफल

निमिस ॥ ग्रहण उत्तराकोकरो जिष्णुबीर बलवान । पुरुषनब-
रिबेयोग्यहै ताके और समान ॥ यहसुनिलागे जिष्णुको देखन
राजाधर्म । भ्राताको देखतचितै अर्जुनबीरसशर्म ॥ अर्जुनउवाच ॥
मत्स्य तिहारीसुता हम स्नुषाकरेंगेभूप । पुत्रहमारो तवसुताहैं
दोऊअनुरूप ॥ बिराटउवाच ॥ ममदत्ता दुहिता न ममग्रहण करत
तुमबीर ॥ अर्जुनउवाच ॥ मोहिं पितासम लखतही सोकरिप्रीति
गँभीर ॥ ग्रहणकरतनहिं तवसुता यातेभूपसुजान । नृत्यगानमें
लखतही मोहिंआचार्य्य समान ॥ स्नुषाकरत यातेरहीबर्षदिवस
ममपास । शङ्कलोक अपवादकी शुद्धिहेतु मतिरास ॥ भागिनेय
श्रीकृष्णको प्रियसुरसुत समबीर । हैसुतसम अभिमन्यु सोमहा
धनुर्द्धरधीर ॥ जामाता तवसुताके योग्यबिहित भर्त्तार ॥ बिराट-
उवाच ॥ करहु जिष्णुजो योग्यहो तुमधर्मज्ञ उदार ॥ कारजभये
समृद्धमम तुमसम्बन्धी जास । ऐसोकह्यो बिराटनृप सुधनंजय
केपास ॥बैशम्पायनउवाच॥ ऐसेकहत बिराटके कुन्तीसुत नृपधर्म ।
करिबेको सम्बन्धको शासन दीन्होंपर्म ॥ मित्रनको श्रीकृष्णको
लिखोपत्र सुखदाय । निमंत्रणार्थ कुरुमत्स्यपति दीन्हेंदूत प-
ठाय ॥ बीतेबर्ष त्रयोदशो सहभ्रातन कुरुभूप । मत्स्यपुरी के
निकटपुर तामेंबसे अनूप ॥ जिष्णुसहित अभिमन्युसह बासु-
देव बलराम । सहितदशार्ण महीपसब लयेबुलाय ललाम ॥
काशिराज अरुसैब्यनृप प्रीतिमानजे भूप । आयेलै अक्षौहिणी
एकएक अनुरूप ॥ लयेएक अक्षौहिणी सैनद्रुपद मतिमान ।
पंचद्रौपदीके तनय शीखण्डी बलवान ॥ धृष्टद्युम्न दुर्धर्षजे सबै
शस्त्र बिदबीर । एकएक अक्षौहिणी लीन्हेंसैन गँभीर ॥ आये
तिनको देखिबे मत्स्यनृपति बलवान । पुत्रनसह पूजन कियो
तिनकोसहित बिधान ॥ बासुदेव आयेतहां बनमालीबलराम ।
कृतबर्मा युयुधानअरु सहसात्यकि बलधाम ॥ अनाधृष्टिअक्रूर
अरुशाम्ब निशठ बरबीर । मातासह अभिमन्युको लैआये रण-

धीर ॥ सूतइन्द्र सेनादिसब मणिमय रथन चढ़ाय । ल्यायेतहँ बिधुबर्षकोसबिधियोग सुखदाय॥ दशहजार गजमत्त दशअयुत अनूपम अर्ब। अर्बुद अनुपम संगरथ पदग सुवीर निखर्ब ॥ वृष्न्यंधक अरु भोजनृप लीन्हे संगसहाय । बासुदेवके साथते आये अतिसुखदाय ॥सोरठा॥ मणि भूषण बर बाम रत्नबसन रंग रंगभरे । दिये कृष्ण अभिराम पृथक पृथक सब पांडवन॥ हूवेलगो बिवाह पार्थतनय अभिमन्युको । बजेभरे उत्साह बाद्यअनेकन भांतिके ॥ दईमत्स्य जेवनार अन्नमांस पकवान बहु । उत्तमसुरा उदार पानदिये सुखदान अति ॥ गायन नर्त्तकजौन नाचन गावन लगेते । नृपबिराट के भौन मागध मधुर पढ़ैंसुयश ॥ महिषी अति अभिराम जौनबिराट महीपकी । सूदोष्णा छबिधाम बामवृन्द भूषितलिये ॥ जयकरी ॥ आईसो कृष्णाके पास । लये उत्तरा को छबिरास ॥ देवसुता समधारे रूप । नृपविराट की सुता अनूप॥ जिष्णुकियो सोअंगीकार । स्नुषापुत्र के अर्थ उदार ॥ तहँ सुरेश समभूपति धर्म । स्नुषाकियो स्वीकार सुपर्म ॥ जिष्णु कृष्ण सहभरिउत्साह । बिधिवतकिय अभिमन्यु बिवाह ॥ सातसहस्र बातसम अर्ब । द्वैशतगज मदमत्त अखर्ब ॥ दाइजदियो बिराट नरेश । धनमणि भूषण बसन बिशेश ॥ करिसमृद्ध पावक में होम । पूजेबिप्र सकल तपतोम ॥ दोहा ॥ करिबिवाह अभिमन्युको नृपति युधिष्ठिर मोद । दयेबित्त द्विजबरणजो दीन्हेकृष्ण बिनोद ॥ गो सहसन भूषण बसन रतन अमोलिक बेश । बहुरथ शय्यादै दये भोजन सबिधि बिशेश ॥ अतिशै मोदित जननसह अति उत्सवके भेद । नगर मत्स्यपति भूपको शोभितभयो अखेद ॥

इतिमहाभारतेबिराटपर्बणिअभिमन्युबिवाहबर्णनस्त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥

बिराटपर्ब समाप्तः ॥

महाभारतदर्पण ।

उद्योगपर्वदर्पणः ॥

सोरठा ॥ भरो भाल सिन्दूर एकदन्त गजबदनबर । लम्बोदर छबिपूर चिन्तामणि गणनाथ को ॥ जगत जननि सुखदानि भुवनेश्वरि भवभय हरनि । जाके चारौपानि देत चारिफल भजतही ॥ चरण सरोजसमान मद्गुरु श्रीबलभद्रके । मोमन मधुप सुजान करत पान जहँ ज्ञान मधु ॥ लकुट मुकुट बनमाल धरे पीतपट श्यामघन । राधासँग नँदलाल रमतकलिन्दी कूलपै ॥ श्लोक ॥ नारायणंनमस्कृत्य नरञ्चैवनरोत्तमं । देवींसरस्वतींव्यासन्ततोजयमुदीरयेत्॥ वैशम्पायनउवाच ॥दोहा ॥ करिबिवाहअभिमन्यु को मुदितभये कुरुभूप । नृपबिराटकी सभाको चले भोर सुखरूप ॥ मणिमय सभा सुगंधसों पूरित भूरि समृद्ध । भूपवृन्द बैठे जहां धर्मधुरन्धर वृद्ध ॥ बैठेनृपति बिराट अरु द्रुपद प्रथम हेजाय । और नृपति बहुसंगलै रामकृष्ण सुखदाय ॥ सहसात्यकि पाञ्चालके ढिग बैठे बलराम । कृष्ण युधिष्ठिर मत्स्यपति पास लसत अभिराम ॥ भीमार्जुन माद्रीतनय द्रुपदपुत्र सबजौन । प्रद्युम्न शाम्ब अभिमन्यु सहमत्स्यपुत्र सँग तौन ॥ शूर सबैसम पिताके रूप बीर्य्य बलभौन । बैठे कृष्णाके तनय चित्रासनपर

तौन ॥ महाबीर अतिरथ नृपति बैठे तेजस धाम । लसीसभा ज्यों ग्रहन सों शोभित गगन विराम ॥ कहन कथालागे कछू तेसब समय समान । रहे चिन्ति चुपह्वै चितै कृष्ण ओर सुख दान ॥ माधवते संघटित नृप जेपाण्डव कार्यार्थ । सुनोंचहत श्रीकृष्णके मुखते बचन यथार्थ ॥ कृष्णउवाच ॥ हैसब तुमको बिदित जो करि सौबल छल द्यूत । इन्हैं पठाये बिपिनको जीति राज्यधन धूत ॥ बलते जीतन योग्यजे मही महारथ बीर । बर्ष त्रयोदश कियो तिन करि बनबास गँभीर ॥ गुप्तबास अति दुःखमय बर्षतेरहें तौन । वेष कपट धरि निकट तव जे अतिरथ बलभौन ॥ चहत युधिष्ठिर स्वकुल ते प्राप्त राज्य भो जौन । तुम सब चिन्तहु धर्मसुत दुर्योधन हिततौन ॥ धर्म सुयशकर कुरुन को होय जो सहित समाज । नहिं अधर्मते सुरनको चहत युधिष्ठिरराज ॥ धर्म रहित भूपत्व नहिं चहत धर्म मतिभौन । हरो सुयोधन राज्य ज्यों तुमसब जानत तौन ॥ कष्ट असह्यदियोइन्हैं करि मिथ्या उपचार । रणमें जीतेपार्थको नहिं धृतराष्ट्रकुमार ॥ तऊ कुशल तिनकी चहत पांडव अति बलभौन । जीति भूमि धन नृपनसों लईसो चाहत तौन ॥ हनो सु बिबिध उपायते इन्हैं चहोतेहि दुष्ट । हरो राज्य ज्यहि भांतिसों तुम सब जानत पुष्ट ॥ लोभ सुयोधनको चितै इनको स्वधरम ज्ञान । सम्बन्धित्व बिचारि तुम सम्मत करहु सुजान ॥ ये पांडवहैं धर्मरत पालोसमय समान । कियो अन्यथा अन्यते सबल सबन्धु अमान ॥ इनकी बाधा कौरवन कीन्ही सछल अखर्ब । ताते कौरव बध्यहैं पांडु सुतन सों सर्ब ॥ तिन्हैं जीतिबेयोग्य ये बल बिनपांडवबीर । सबहीको हितसों करहु चिन्तन बुद्धिगँभीर ॥ तुम सब मिलिकीजै यतन जाते होय न नाश । दुर्योधन को मतनहींजानि परत मतिराश ॥ परको मत जानेबिना सम्मत कियोन जात । याते पठवहुदूत जो सुकुल सुमति अवदात ॥ दूतपठावहु सोमहित

दुर्योधनके पास। देहिंअर्द्धनृप धर्म्मकोराज्य पुरातनतास ॥ सुनत जनार्द्दनकेबचन धर्म्मउक्तसहसाम। द्रुपदादिक भूपन कियोग्रहण जानि अभिराम ॥ बलदेवउवाच ॥ सुनो जनार्द्दन को बचन तुमसब भूपति पर्म । दुर्योधन नृपधर्मके हितसों भरो सधर्म ॥ अर्द्धराज्य तजिके करत यत्न तासुनृपधर्म । अर्द्धराज्यधृतराष्ट्र सुत सुखपावैं दे पर्म ॥ अर्द्धराज्यको पायके पांडवपुत्र सधर्म । शान्त होयके रहैंगे तौन हमैं प्रियपर्म ॥ दुर्योधन मत जानिबे कहत युधिष्ठिर बैन । दूत पठावहु सामहित प्रिय हमको मतिऐन ॥ भीष्म द्रोण कृप द्रोणसुत कर्ण पौरजन जौन। दुर्योधन सह बन्धु सब जे मति बलके भौन ॥ सभामाहँ कुरुभूपको लखि सुखस्थ मति ऐन । प्रणयसहित नृपधर्म के कहै साम सहबैन ॥ अर्थ सहित बलवान ते कोपित करहि तिन्हैन । साम सहित करि बारतालोहिं राज्य सह चैन ॥ द्यूतशक्त नृपधर्मको राज्यद्यूतमें जीति। लीन्हों दुर्योधन नृपति यामें कहा अनीति ॥ सुहृदन बरजो इन्हैं बहुद्यूत अबिद अनुमानि । सौबलको अति अक्षपटु बिबिध भांतिसों जानि ॥ सौबलको आह्वानकरि कियोद्यूत नृपधर्म। कर्ण सुयोधन आदि सब छोंड़िद्यूत बिद मर्म ॥ हठकरि हारे धर्मनृप राज्य सुबित्त अगाध । यामें सौबल को कछूहैन सुनहु अपराध ॥ तातें नृप धृतराष्ट्रसों सहित प्रणययुत साम । दूतस्वार्थ इनको कहै करिकै प्रथम प्रणाम ॥ करो धर्मके राज्यहित तबलगही उद्योग। युद्धा-कांक्षी होहिं नहिं जबलगि कौरवलोग ॥ सामसहित मीठे कहै बचन सुयोधन पास। करैअर्थ साधन प्रथम दूतधर्मनृप तास ॥ अर्थ जो जीतै सामसों होत अर्थकर तौन । नहीं अर्थकर अर्थ सो होत युद्धभव जौन ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ यह सुनिकै बल-भद्र के बचन सात्युकी बीर । तासु गिरा दूषणलगो पूरित क्रोध गँभीर ॥ सात्यकिरुवाच ॥ जाकी जैसी आतमा तैसे भाषतबैन । पाप पुण्य मय बचनतें जानिपरत हिय ऐन ॥ कादर शूर

छीय औउपजत येही बंश । जैसे रहत तड़ागमें बकमंडुक अरुहंस ॥ नहिंदूषत हम बचन तव हे हलधर मति ऐन । दूषण तिनको देतजे सुनत तिहारेबैन ॥ सभामध्य निर्भयकहत धर्मनृपतिको दोस । ताकोकहत सधर्मजिहि जीत्यो सछल सहोस ॥ रहीधर्मताहै कहांजो कुन्तीगृहजाय । दुर्योधनजीतत इन्हें तबहो धर्म उपाय ॥ शरणागत अबहोहिं क्यों पूर्णकियो बनबास । पदपैतामहको चहत काटिबिपिन पनपास ॥ धर्म्मयुक्तये राज्यको कैसेचहै न बीर । पारभये बनबासके पनते पाण्डवधीर ॥ भीष्मद्रोण अरु बिदुरको कहै बहुत समुझाय । बांटिराज्य दीबेन जोचाहैंजे कुरुराय ॥ तौ हम तीक्षण शरनतें देहैंतिन्हैं मनाय । धर्मराजके पायँपर तिन्हेंडारिहैं ल्याय ॥ जौन शरन नृपधर्मको लहै ते अभिराम । तौ हम तिनको देहिंगे अन्तकपुरमेंधाम ॥ तेनवेदयुयुधानको सहिहैंशस्त्राघात । सहि न सके ज्योंमहीधर महतबज्रको पात ॥ कोसहिसकिहै पार्थको अतिही दारुणउद्ध । कौनहोयगोसामुहे भयेभीमकोक्रुद्ध ॥ द्रुपद बिराट महीपये दोऊकालसमान ॥ पार्षत धृष्टद्युम्नसों कोलरिहै बलवान ॥ पांचपुत्र येद्रौपदीके अतिरथरणधीर । अपनेअपने तातके हैंसमान बरबीर ॥ लरिहैको अभिमन्युसों दारुणजाको युद्ध । गदप्रद्युम्न अरुशाम्बसों हैकोदुर्मद उद्ध ॥ मारिपुत्र धृतराष्ट्रके शकुनिकर्ण सहगर्ब । अभिषेकित नृपधर्म को हमफिरि करिहैंसर्ब ॥ आततायिके हनेमें लागत कछुन अधर्म । हनिबो शत्रु समाजको है क्षत्रीकोपर्म ॥ अग्निलगावैगेह में भोजन में बिषदेय । हरैक्षेत्र दारा सछल छीनिद्रब्य जो लेय ॥ जाके करमें शस्त्रनहिं हनैशस्त्रकरलाहि । आततायि येपटइन्हैं हनियेशीघ्रहि चाहि ॥ बांटिदियो धृतराष्ट्रजो धर्मनृपतिको राज । तौसुयुधिष्ठिर भूपसों लहि हैं कुशल समाज ॥ अबदीन्हे बिनुराज्यके ते लहिहैं यमधाम । ये सत्यकि के बचन सुनि बोले द्रुपद ललाम ॥

द्रुपदउवाच ॥ महाबाहुतुम कहोजोसो भविष्यहैकाज। नहिंदुर्योधन देहिंगेबांटिसामतेराज ॥ सुतप्रियनृपधृतराष्ट्रसों सुतमतमानत तौन। भीष्मद्रोणहै तासबश मूर्खसूतसुतजौन ॥ रुचोहमैं बल-भद्रको इतनो बचनसुजान। प्रथम पठाउब दूतको है यहनीति प्रमान ॥ मृदुताते तेसाध्यनहिं पापबुद्धिखलसर्ब। खरसोंमृदुता गायसों तीक्ष्ण करेकृतखर्ब ॥ पठैशत्रुपहँदीजिये प्रथम चतुर अतिचार। बलसंग्रहकोकीजियेहमइतबिधिबिस्तार ॥ धृष्टकेतु अरुशल्य अरुजयत्सेननृपजौन। भूपसकलकैकेयजेशीघ्रबोला-वहुतौन ॥ दुर्य्योधन करिहैं नियत सहायार्थ आह्वान। ताते प्रथम पठाइये तिनपैदूत सुजान ॥ भजतप्रथम आह्वानको जे हैं सन्त समर्थ। त्वराकरहु ताते प्रथम तिन्हैं बोलावनअर्थ ॥ महतकार्य करतव्यहै याते हेनृपधीर। प्रथम बोलावहु शल्यको सहित सहायगँभीर ॥ जायदूत भगदत्तपै बसैजोसागर पास। अमितौजस हार्दिक्यनृप अन्तक जो बलरास ॥ दीर्घप्रज्ञ अरु रोचमानको पठवहु दूतउताल। सेनाबिन्दु बृहन्तनृप सेनाजित समकाल ॥ चौपाई ॥ बिंध्यनृपति अरु बस्तुक भूप। नृपतिचि-त्रधर्मा अति रूप ॥ बाह्लिक मुंजकेश नृपजौन। चेद्यनृपति है जो बलभौन ॥ नृपति सुपश्वं सुबाहु सुजान। पौर्वभूपजो सक बलवान ॥ दुरद नृपति जे और सुरारि। कर्ण बेष्ठ भूपति बल भारि ॥ नील बीरधर्मा नृपजौन। दन्तबक्रजो नृप बलभौन ॥ रुक्मी नृपजे हैं बलवान। वायुबेग आषाढ़ सुजान ॥ देवकभूरि सुतेजा जौन। एकलव्य पुत्रनसह तौन ॥ कारुष क्षेमधूर्त्ति जो भूप। सह कांबोज तृषिक अनुरूप ॥ पश्चिम-सिंधुतीरनृपजौ-न। जयत्सेन भूपति बलभौन ॥ काश्यपंचनद जो भूपाल। क्राथ पुत्र दुर्धर्ष बिशाल ॥ और पार्बती हैं जेभूप। जनक देशबासी अनुरूप ॥ सुशर्मा मणिमान्य नरेश। सक सुपांसु राष्ट्राधिपबं-श ॥ धृष्टकेतु जो है बलवान। तुण्डदण्ड धारक अति मान ॥

वृहत्सेन भूपति रणधीर । श्रेणी मन निषाद सुबीर ॥ वृहद्वल सुमहोजा भूप । समुद्र सेनभूपति अतिरूप ॥ उद्धव क्षेमक अति बलवान । बाढ़धान सुश्रुतायु सुजान ॥ दृढ़ायु श्रुतायु शाल्वसुत जौन । कालिङ्ग कुमार महाबलभौन ॥ इनको पठवहुदूतउताल । आवहिंबेगि सकलभूपाल ॥ ममपूरोहित बिद्यावान । दूतकर्म करिहै सुखदान ॥ नृपधृतराष्ट्र पास ये जाय । कहिहैं सामबचन समुझाय ॥ भीष्म द्रोण दुर्योधन पास । यथावाच्य करिहैं मतिरास ॥ बासुदेवउबाच ॥ ये पाञ्चाल नृपति केबैन । कार्य सिद्धिकर है मति ऐन ॥ पूर्ब कार्य करिबे यहभूप । करैंअन्यथा बालस्वरूप ॥ कुरु पाण्डव सों नातसमान । हमैं दुहुनको हित कल्यान ॥ हम करिबे अभिमन्यु बिवाह । आयभयेसोसह उत्साह ॥ हमचाहत अबघरको जान । तुम दोऊहौ वृद्धसुजान ॥ तुम्हैं बहुत मानत कुरु भूप । तुम अरु द्रोण सखा अनुरूप ॥ पठवहु दूत युधिष्ठिर अर्थ । जोसाधै मतिमानसमर्थ ॥ सबही को सम्मत हैतौन । दूत पठावहुगे तुम जौन ॥ प्रथम सामकरिये युतन्याय । बंशक्षयबारण सुखदाय ॥ जौनसुयोधन दर्पाधीन । मानै साम न मति ते हीन ॥ औरदूत पठवहु मतिमान । तब हमार कीन्हेंउ आह्वान ॥ तब दुर्योधन लहिहैबोध । जब अर्जुन अरिहै अति क्रोध ॥ बैशम्पायनउबाच॥ सहबिराट करिकै सनमान । यथा योग्य सबको सुखदान ॥ लहि श्रीकृष्ण बिराट निदेश । गये द्वारका सुकुल अशेश ॥

इतिउद्योगपर्बणिअभिमन्युबिवाहश्रीकृष्णस्यद्वारकागमनप्रथमोऽध्यायः ॥

बैशम्पायनउबाच ॥ रोला ॥ द्वारकाको गये जब श्रीकृष्ण यदुकुल राट । लगे करन बिराट बिधिवत युद्धको सबठाट ॥ यथायोग्य पठाय दीन्हें दूत भूपन पास । मंत्रकरि नृप धर्म अरु पांचाल अतिमति रास ॥ धर्म नृपति बिराट द्रौपद महिपको संदेश । सुनत प्रमुदित चले सिगरे छोड़िकै निजदेश ॥ सुनि सुयोधन

पांडवन के जुरति सैन सहाय । बोलिबे सब भूमिके पति दिये दूत पठाय ॥ हेतु पाण्डव कुरुनके सबचले भूप अखर्ब । महत लहि दलभारको भूभई व्याकुल सर्ब ॥ हलन लागी भूमिभूधर मथित सागरनीर । भये गजरथ संघटनसों भग्नबन गम्भीर ॥ द्रुपदनृप युवबृद्ध प्राज्ञ जो हो पुरोहित बिप्र । धर्मनृपसों बूझि पठवो कुरुन पै अतिक्षिप्र ॥ कहन तासों लगे ऐसे द्रुपद भूप सुजान । नम्र ह्वैकै लियेताकी प्रशंसाहि महान ॥ द्रुपदउवाच ॥ हैं जड़नसों श्रेष्ठ जीवी जीवमें मतिमान । श्रेष्ठहैं मतिमानमें नर नरनमें द्विजजान ॥ जयकरी ॥ श्रेष्ठ द्विजनमें बिद्यामान । ताते जेहि सिद्धांतज्ञान ॥ ताते अधिक जोकरैसुकर्म । तातेब्रह्मज्ञान बिदपर्म ॥ कृत बुद्धिनमहँ तुम्हें समान । मो मतिमें नहिंऔर सुजान ॥ कुलबय बुद्धि श्रेष्ठसब सर्ब । जीवशुक्रते बुद्धिन खर्ब ॥ बिदित कुरुनको तुम्हें चरित्र । धर्म नृपति कृत जौन पबित्र ॥ बिदितभूप धृतराष्ट्रहितौन । कियोद्यूतछल सौबलजौन ॥ कहो बिदुरन कृत्यअनीति । मानो नहिं कारिसुत परप्रीति ॥ शकुनि द्यूतछलकोठहराय । धर्मनृपतिकोफेरिबुलाय ॥ कपटद्यूतकीन्हों तेहिधूत । इनको अक्ष अपटुलाहिधूत ॥ छलकरि जीतो इन्हें सधर्म । देतराज्यनतुकैसेपर्म ॥ नृपधृतराष्ट्रपासतुमजाय । कहियोधर्मबचनसमुझाय ॥ योधनसहिततासमनजौन । करिबोहोय बूझिबो तौन ॥ जोतुमकहिहौ हे मतिऐन । बिदुरसाधिहैंतुम्हरो बैन ॥ भीष्म द्रोण कृपादिकबीर । तिनमें साधहु भेद गँभीर ॥ भटअमात्यको बिमुख कराय । फिरि मिलापको सुलभउपाय ॥ कीजो बिलँब बुद्धि बिस्तार । तुम तबलों हे बिप्र उदार ॥ जब लों पांडवसहित उपाय । जोरैंधन सेनासमुदाय ॥ मुख्यप्रयोजन यामेंबिप्र । सेनाधन संग्रहकोक्षिप्र ॥ तुम्हें मिलतधृतराष्ट्र सधर्म । कहै बचन जो तुमसों पर्म ॥ तौतुमहूं सह धर्माचार । तासों कहियो बचन उदार ॥ क्लेशपांडवनको सब जौन । तेहि

दयाइ तहि कहियो तौन ॥ पूर्बबंशको पालितधर्म । सो सुनाइ दीजो सब पर्म ॥ होइहि सभय सुनत मन तास । होतहमैं यह नियत बिश्वास ॥ तुम्हैं न भयतुम ब्राह्मणवृद्ध । वेद शास्त्रतप तेज समृद्ध ॥ पुष्य योग जय युक्त मुहूर्त्त । सिध्यकर्मकर आनँदपूर्त ॥ जाहु हस्तिनापुरकोबिप्र । करहुयुधिष्ठिरकारजक्षिप्र ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ पाय द्रुपद आज्ञा सुख रूप । चलो पुरोहित जहँ कुरुभूप ॥ नीति शास्त्रवेत्तासो बिप्र । चलो हस्तिनापुरको क्षिप्र ॥ पठै पुरोहितनृप पांचाल । दूतबुलाये सुमति बिशाल ॥ पठयेचहुंदिशि भूपलपास । जिष्णु द्वारकाकोबलरास ॥ जहां वृष्णि अन्धक यदुभूप । सहित कृष्णप्रद आनँदरूप ॥ गुप्त पठाय सुयोधन चार । पाण्डवनको सुनि चरित उदार ॥ गये द्वारका को यदुबीर । सुनत सहित सेना रणधीर ॥ रथमें जोरि अनिलसम अर्ब । चलो द्वारका सबलअखर्ब ॥ ताही दिन अर्जुन बरबीर । जायद्वारका पहुंचे धीर ॥ दोऊबीर द्वारका जाय । सूतत सुनो कृष्णसुखदाय ॥ दोऊगये तहां बलऐन । यदुपतिरहे करत जहँसैन ॥ शीश ओर धृतराष्ट्र कुमार । बैठे पददिशि जिष्णुउदार ॥ तजिनिद्रा जागे भगवान । सांजलि देखि जिष्णुबलवान ॥ बूझिकुशल चितये यदुबीर । दुर्योधन को गर्वगँभीर ॥ स्वागतबूझि आगमनहेतु । पूछो फेरि वृष्णि कुलकेतु ॥ कहो सुयोधन करहुसहाय । यहि बिग्रहमें मो यदुराय ॥ हमअर्जुनसों सख्यसमान । समसम्बन्धतुम्हैंसुखदान ॥ हम आये प्रथमहिं तवपास । भजत सन्त प्रथमागम जास ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ तुमआये पहिले ममपास । हे दुर्योधन अतिमतिरास ॥ लखोप्रथमपार्थहिहमभूप । दुहुंदिशिहमैं सहायअनूप ॥ प्रथमहिलघुको बांछितकार्य । बिहितनीति भाषत सबआर्य । तातेप्रथम पार्थ सन्तोष । करत सुनहु भूपति तजिरोष ॥ तुल्य शास्त्रधारकहैं सर्ब । गोपवृन्दजे मेरअर्ब ॥ नारायण नामक अ-

भिराम। रण दुर्मद जे अतिबलधाम॥ एकओरतेसैनिकघोर। बिना शस्त्र हमहैं यकओर॥ करिहैं युद्ध न हम रणधीर। चहहु लेहु तेहि अर्जुनबीर॥ बैशम्पायनउवाच॥ अर्जुन कहो तुम्हैं हम लेत। यदुपति धर्मानन्द निकेत॥ गहहु न शस्त्रहोहुममनाथ। बिजय पराजय है तव हाथ॥ लई सुयोधन सेनातौन। दुर्मद गोपवृन्दहो जौन॥ गहिहैं शस्त्र न करिहैंयुद्ध। जानि कृष्णको प्रमुदितउद्ध॥ दुर्योधन सहसेना तौन। गयेजहां हलधरबलभौन॥ सकलकहो आगमन बिधान। सुनि बोले बलभद्र सुजान॥ बलदेवउवाच॥ तुमको विदितकहो हम जौन। नृपविराट सों हे मतिभौन॥ हृषीकेशसों बचनप्रमान। सम्बन्धी दोउ हमें समान॥ केशव ग्रहणकियो नहिं तौन। हमकह हरिबिनु करत न गौन॥ हम कुरु पांडवकीन सहाय। करिहैं सुनहुँ कहतसतभाय॥ जनमें भरतबंशमें शुद्ध। क्षात्रधर्म करि करिये युद्ध॥ बैशम्पायनउवाच॥ हलधरको भरिअंक उदार। चले सुयोधनकरत बिचार॥ हम पाईयह सेना उद्ध। कृष्ण अशस्त्र न करिहैंयुद्ध॥ ऐसी जितिहैं हम संग्राम। आये कृतबर्माके धाम॥ एक दई अक्षौहिणिसेन। कृतबर्मासहबिधि बलऐन॥ सोसबसेन सुयोधनभूप। लयेगये घरको सुखरूप॥ गये सुयोधनहरि सुखरास। बोले मुदित जिष्णुके पास॥ करिहैं युद्ध न हमकोजानि। अर्जुन कियोकहा अनुमानि॥ अरजुनउवाच॥ अरिसमूह करिबे को नाश। तुम समर्थ यदुपति बलराश॥ सबको हनिहैं हम तवसाथ। कृपारावरी लहि यदुनाथ॥ तुमहो कीरतिमान स्वरूप। हमयश चाहत लहो अनूप॥ याते लयोतुम्हैं यदुबीर। कीजो मम सारथ्य गँभीर॥ बासुदेवउवाच॥ बांछिततवकै है यह सार्थ। सारथ्य करैंगे हम तव पार्थ॥ बैशम्पायनउवाच॥ मुदित होय अर्जुनसों पर्म। गये कृष्ण त्वर जहँ नृपधर्म॥

इतिश्रीउद्योगपर्वणिदूतगमनबर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २॥

वैशम्पायनउवाच॥दोहा॥ शल्यसुनो नृपधर्मको दूतनसोंसंदेश । चलो महारथ पुत्रसह साजि चमूअति बेश ॥ सैनएक अक्षौहिणी लये महाबलबीर । कवचबिचित्र धरेसुभट रथध्वजधनुष गँभीर ॥ धराधराधरको करत कम्पित झम्पित शूर । चलो जहां पांडव नृपति शल्य महाबलपूर ॥ आवत सुनिकै शल्यको सेनासहित गँभीर । दुर्योधन पथमेंरचे बासस्थानसमीर ॥ ठौरहिठौर रचीसभामणिमय रम्य उदार । पूजन द्रव्य धरे तहां भोजनबिधि बिस्तार ॥ बापीकूपतड़ागतहँ रचे बिचित्रबनाय । तहँ तहँ पूजेशल्यको कुरुकुल सचिवन आय ॥ शल्य अमानुष पायकै पूजन प्रमुदित पर्म । सचिवनसो बोलो तुम्हैं पठयो का नृपधर्म ॥ सचिवनकहो सुयोधनहिं यहत्वदर्थ बिश्राम । करिबे को बिरची सभा ठौर ठौर अभिराम ॥ मिले सुयोधन आइतब मातुल जानि प्रसन्न । मुदितशल्य देखतभये जानि कृत्य सम्पन्न ॥ शल्य अङ्कभरिकै कह्यो मांगहु बांछित जौन ॥ दुर्योधन उवाच ॥ जामें मम कल्याण है दीजै बांछित तौन ॥ मेरे सेनापाल तुम होहु महाबल भौन ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ कह्यो सुयोधन बचन सुनि शल्य तथास्तु सुतौन ॥ शल्यउवाच ॥ जाहुहास्तिननगरको दुर्योधन रणधीर । जातदेखिबे हेतुहम जहां युधिष्ठिरबीर ॥ देखि युधिष्ठिरको यहां क्षिप्र आइहैं भूप । बचन आपनो पालिहैं दयो जो तुम्हैं अनूप ॥ दुर्योधनउवाच ॥ देखियुधिष्ठिरको इहां आवहु बेगि सुजान । स्मरण करत हम रहैंगे दयो जो तुम बरदान ॥ शल्यउवाच ॥ युधिष्ठिरको देखिहम क्षिप्र तिहारे पास । भागिनेय सुनुआइहैं कीजो नियत बिश्वास ॥ बिदा सुयोधनको कियो लिये अंक बलऐन । गयेसुयोधनआपने नगरभरे चित चैन ॥ गये शल्य सेनासहित रहेजहां नृप धर्म । कहिबे को वृत्तांतजो कियो सुयोधन कर्म ॥ पुरबिराट के निकट जहँ सेना बासस्थान । तहँ डेरा करिकै गये जहँ पांडव

बलवान॥ पांडव मिलिनृपशल्यसों अर्घ्यपाद्य अभिराम। करि-
कै बूझ्यो कुशल फिरि धर्मनृपति बलधाम॥ भीमार्जुन श्रीकृष्ण
सों माद्री तनयन पास। बूझि कुशल लागे कहन शल्य भूप
मतिरास॥ कृष्णा सह बनबास करि सह्यो दुःख अतिमान।
तुम्हैं दुःख कारण भयो दुर्योधन अज्ञान॥ फिरि तुम सुखको
पाइहौ हनि शत्रुनको बीर। राज्य करहुगे आपनो आनँदभरो
गँभीर॥ तुम जानतहौ धर्मनृप जौन जगत सिद्धांत। यातेतुम
में लाभके लेश न लखत नितांत॥ राजर्षिनको देखिपथभली
भांति नृपधर्म। दान तपस्या धर्ममें रहत निरन्तर पर्म॥ क्षमा
अहिंसा सुमति सो तुममें बसति नरेश। मृदु बदान्य ब्रह्मण्य
तुम धर्म परायण बेश॥ बैशम्पायनउवाच॥ शल्य युधिष्ठिर सों
कह्यो दुर्योधन सनमान। फेरि आपनो कहि दियो दियो जौन
बरदान॥ युधिष्ठिरउवाच॥ सुकृतकियो तुम दियोनृपबर सुयोधन-
हि जौन। एकन मातुल कीजियो सुनहु कहत हम तौन॥ क-
र्णार्जुन के युद्धमें देहु बचन यह मोहिं। तुम सारथ्य न कीजियो
पाल्य धनंजय तोहिं॥ शल्यउवाच॥ सुनु हे पांडव कहत तुमकहत
सो हम तवपास। होय सारथी तासहम तेज करैंगेनास॥ क-
हिहैं बचन प्रतीप हम भर्त्सन भरे बिरुद्ध। सूतपुत्र सँग जि-
ष्णु के चली करन जबयुद्ध॥ तेज दर्पहत होयगो कर्ण महा
रणधीर। सुखसों ताको मारिहैं तब अर्जुन बरबीर॥ कृष्णा
सह तुम द्यूतमें लह्यो दुःख नृपधर्म। परुषबचन राधेय के सहे
जे भेदी मर्म॥ दयो जटासुर दुःख जो कीचक अधमअयान।
सह्यो द्रौपदी संग तुम भैमी नलहि समान॥ दुःख तुम्हैं यह
होयगो सुखकारण अति मान। खेद न यामें करहुतुम धीरबी-
र बलवान॥ दुःख महात्मा लहत हैं महत युधिष्ठिर भूप। शा-
ची सहित अमरेश ज्यों लह्यो दुःख अति रूप॥ युधिष्ठिरउवाच॥
कैसे इन्द्र सभार्य दुखपायो अति बलवान। सो मातुल हमसों

कहो विस्तार सहित सुजान ॥ शल्यउवाच ॥ इन्द्र द्रोहते प्रजापति त्वष्टासुत बलवान। तपबलते कीन्हों प्रगट ज्वलित अग्नि सम भान ॥ बिश्वरूप से तीनि शिर अनल अर्क शशिरूप। करनलगो तप इन्द्रपद लीबे चाहि अनूप ॥ तास देखि तप बल महा भेरे खेद मघवान। तप भंगारथ अपसरा पठईकरि सनमान ॥ जाइ अप्सरन कियोबहु कौतुक कला महान। बिश्वरूप मन नाहिं चलो पूरणसिन्धु समान ॥ जाय इन्द्रसों अप्सरन कहो बचन सबिबेक। बिश्वरूप मन चलत नाहिं कौतुक कियो अनेक ॥ सुनत अप्सरन के बचन शत्रुप्रबल निरधारि। विश्वरूप के नाशको रहोउपाय बिचारि ॥ कियेउपेक्षा शत्रुलघु सोऊबड़ो ह्वैजात। बढ़ननपावै प्रथमही करी शत्रुकोघात ॥ यह बिचारि अति क्रोध करि लीन्होंबज्रउदार। त्रिशिराके शिरपर कियो इन्द्र अमोघ प्रहार ॥ लगतबज्र क्षितिपर गिरोगिरित्रय शिखरसमान। बैश्वानरसम तेजमय भयकर घोरमहान ॥ तक्षाआयो तेहि समय लीन्हों परशु महान। त्रिशिराको शिरकाटिबे आज्ञाकिय मघवान ॥ तक्षाउबाच ॥ महास्कन्धयाको कठिन कटै परशुसों जौन। तौमोको सतपुरुष सब हँसिहैं हे मतिभौन ॥ इंद्रउबाच ॥ डरहुन तक्षा चित्तमें लहि ममकृपा महान। काटहु ह्वैहै परशु तव मेरे बज्र समान ॥ तक्षाउबाच ॥ को होतुम बूझत तुम्हैं कियोघोर यहकर्म। हमसुन बे चाहतकहहु यह कृत कारक कर्म ॥ इंद्रउबाच ॥ देवराज हम इन्द्र हैं तुम जानतहो मोहिं। जौन कहत हम करहु तुम नाहिं बिचारिबे तोहिं ॥ तक्षाउबाच ॥ महाक्रूरयहि कर्मते तुमलजात नाहिं शक्र। मारोऋषि सुत ह्वै अभय ब्रह्महत्या सो बक्र ॥ इंद्रउबाव ॥ तक्ष सुनहु कीजो बहुरिधर्माधर्म बिचारि। बज्रहनोयाशत्रुको काटहुशीश उदार ॥ सुयश होयगो यज्ञमें तक्षलहौगोभाग। हलहु शत्रु शिर बेगि तुम करि मोपै अनुराग ॥ शल्यउबाच ॥ सुनत

इन्द्रको बचन लै तक्षा कठिन कुठार। त्रिशिराके शिर काटिकै कीन्हें भिन्न उदार॥ त्रिशिराके शिरकटेते ज्वलनअंकसमपीन। कपिंजल सुतित्तिर चटक निकसे पक्षीतीन॥ ताहिमारि बिज्वर भये इन्द्र गये निजधाम। तक्षा अपने भौनगो करि सुरपति को काम॥ प्राजापति त्वाष्टे सुनो हनेपुत्र मघवान। ऐसे बोले बचनको करिकै क्रोध महान॥

इतिश्रीउद्योगपर्वणित्रिशिराबधबर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ३॥

त्वष्टाउवाच॥ दोहा॥ नित्यतपस्वी शान्तअति दान्त जितेन्द्री जौन। इन्द्रहनो अपराध बिनु पुत्र हमारो तौन॥ ताते शक्र बिनाशको वृत्रकरत उत्पन्न। त्वष्टातपस प्रतापको लोकलखो सम्पन्न॥ त्वष्टा करि आचमनको देइअग्निमें होम। प्रगट कियो अरिइन्द्रको वृत्तमहाबल तोम॥ इन्द्रशत्रु बाढ़ो कहो ममतपकोबलपाय। वृत्रबढ़ो समअग्निके लगोगगनलोंजाय॥ त्वष्टासो वृत्रासुर बूझो करें कहा हमकर्म। त्वष्टेकहो नाशमघ-वाको करहुपुत्रकृतपर्म॥ यह सुनिकै सुरलोकगो वृत्रमहाबल बीर। शक्रवृत्रसो युद्धतब होनलगो गंभीर॥ वृत्र पकरिकै इ-न्द्रको लियो बदन में डारि। बिस्मित इन्द्रकरी प्रगट जृम्भा तब निरधारि॥ वृत्रजँभानो बायमुख अतिगिरि गुहा समान। गये जृम्भिकासाथ काढ़ि मुखते तब मघवान॥ लखिसुर सब हर्षितभये होनलगोतबयुद्ध। लरेवृत्र बासव दोऊ चिरलौं दारु-ण क्रुद्ध॥ वृत्रप्रबलभो युद्धमेंत्वष्टातपबलपाय। इन्द्रगयेतजि युद्धतब रणते सहित सहाय॥ ऋषि सुरगणसह शक्रतब क-रिकै मंत्रबिचार। ध्यानधारि तबबिष्णुको लीन्हों शरणउदार॥ इन्द्रकहो सुर ऋषिनसों चलहु बिष्णुकेधाम। आज्ञा करैं जो जगतपति सो हमको अभिराम॥ इंद्रउवाच॥ भरोभूरि ब्रह्मांडमें वृत्रमहाबलवान। यहअजेय तपबललहें त्वष्टाकोअतिमान॥ अब असमर्थ भयेसुहम सोसमर्थ बलवान। चलो बूझियहि

बिष्णुलग वाकोबध सुखदान ॥ शल्यउबाच ॥ इन्द्र बचन सुनि महाऋषिरहेजे सुर गण गण्य । गयेबिष्णुके धामको आतुर जानि शरण्य ॥ कहो बिष्णुसों वृत्रकृत भै बिह्वल मघवान । अमृत हरी बलिबांधि तुम दयोजो मोको स्थान ॥ तुम सबके प्रभु जगन्मय जगन्मूल जगदीश । देवदेव पालकप्रजा बिश्व बिश्वपति ईश ॥ होहुसुगति सब सुरनके शक्र सहायकतुष्ट । भोवृत्रासुर जगतमें बढ़ि परिपूरणदुष्ट ॥ बिष्णुरुवाच ॥ शक्रहमैं करतव्यहै तवहित है मतिराश । वृत्रासुरको होइगो जाते निय-मित नाश ॥ ऋषि गन्धर्व सुअमरतुम वृत्रासुर पहँजाय । साम करहु फिरि करहिंगे हमबध तासउपाय ॥ तब बज्रायुध माहँ हम करिप्रवेश मघवान । नाश करैंगे वृत्रको सन्धि करहु मति-मान ॥ शल्यउबाच ॥ ऋषिसुरगण करिइन्द्रको आगे तापहँजाय । ज्वलित अग्निसम सूरसो वृत्रासुरकोपाय ॥ ऋषिन जायढिग वृत्रके कहनलगे प्रियबैन । ब्याप्तभये तव तेजते त्रिभुवन है बल ऐन ॥ जीतिसके नहिं इन्द्रको बीतिगयो बहुकाल । सुर नर नागादिक प्रजापीड़ितभई बिशाल ॥ यातेतुम अब इन्द्रते संधि करहु बरबीर । शक्रलोकसों लेहुसुख ह्वै निवृत्त रणधीर ॥ वृत्रऋषिनके बाक्यसुनि शिरसों कियो प्रणाम । फेरिबिहँसि लागो कहन वृत्रमहाबलधाम ॥ वृत्रउबाच ॥ गन्धर्बन सह ऋ-षिनतुम हमसों कहेजेबैन । उत्तर ताको देतहम सुनहुमहामति ऐन ॥ तेजस्वी द्वैसो नहीं सख्यहोत मतिमान ॥ ऋषिरुबाच ॥ एक बार मिलि सख्यको मानत सन्तसुजान ॥ उल्लंघत सतसंग नहिं जासों करतमिलाप । मिलत सन्त तजिकै दपट जे सत पुरुष अपाप ॥ ताते कीजै शक्रसों सख्य वृत्रबरबीर । सख्य योग्य तुमहोदोऊ मतिसों भरे गँभीर ॥ शल्यउबाच ॥ सुनत ऋ-षिनके बचनयों बोलो वृत्र बदान्य । है अवश्य हमको सदा संत तपस्वी मान्य ॥ जौन कहत हम देवपति देहिंहमैंबरदान ।

तब हमतुम जो कहतसो करिहैं सुनहु सुजान ॥ आर्द्र शुष्क नहिंशिलाकाष्ठते अस्त्रशस्त्र दिनरात। इनतेहोहिं अबध्य हम सुरनहिंसकै निपात॥ ऐसे होयतौ करैंहम सख्यसाथ मघवान। ऋषिन तथास्तु कह्यो सुनत हर्षो वृत्रमहान ॥ वृत्रासुरको देय कै ऐसोबरसुरनाथ । समय वृत्रबधको लखत रहन लगे नित साथ॥ लख्योवृत्रको सिंधुतट संध्यासमय कराल। शक्र समुझि बरदानको आयोकाल बिशाल॥ देख्योफेण समुद्रको गिरि सो लागोतीर । नहींशुष्क नाहिं आर्द्र यह अस्त्र न शस्त्र गँभीर॥ बज्रडारिकै फेणमें कियोबिष्णुको ध्यान । डारोफेणसों वृत्रपर सहहरिअंश महान॥ बिष्णुअंशते फेणसो भयोवृत्रको नाश। मिटोजगत उत्पात सब पूरेलोक प्रकाश ॥ जयकरी ॥ बह्योसुखद तब बायु अनूप। लह्योप्रजन अति आनँदरूप ॥ देवयक्ष ऋषिगण गंधर्ब। सुस्तुति करन इन्द्रकी सर्ब॥ लागे करनप्रणाम ललाम। हनि अरि शक्र गये हरिधाम ॥ सुरन सहित पूजित भगवान। करि अतिमोद लह्यो मघवान ॥ त्रिशिरा ब्राह्मण मारो जौन। हत्यालगी इन्द्रकोतौन ॥ तातेइन्द्र महाभयपाय। बसे सलिलमें जाय छपाय॥ नष्टस्वर्गते भोमघवान। भईभूमि तबध्वस्त समान ॥ सूखेकानन तृण तरुक्षीन। भये सरित सर जलते हीन ॥ क्षोभित भये जीवजन सर्ब । अनावृष्टि उत्पात अखर्ब॥ भयेत्रस्तऋषिदेवमहान। जानिअराजकजरतसमान॥

इतिमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्वणिवृत्रबधबर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

शल्यउवाच ॥ रोला ॥ देवगण गंधर्बऋषि सबभरे भीति महान। करैंराजा स्वर्गकोअब काहिलहि बलवान ॥ देव ऋषिन बिचार करके कियो यह सिद्धान्त । करैंराजा स्वर्गको यह नहुष नृप अतिकान्त॥ तेजमय बलवान सुयशी नित्य धार्मिकधीर। गये सुरऋषि नहुष नृपपहँ करि बिचारि गँभीर॥ कहनलागे स्वर्गके तुम होहु राजाभूप॥ नहुषउवाच ॥ तुम्हैं पालन योग्यसो-

में है न शक्ति अनूप ॥ देवाऊचुः ॥ देततपबल तुम्हहम सह ऋ-
षिन बसुगंधर्व। स्वर्गको अभिषेक तुमको करत भूपअखर्व ॥
देव दानव यक्ष ऋषिनर पितृबसु गंधर्व। होत सन्मुख लेहुगे
हरितेज सबकोसर्व ॥ धर्मसो सबलोकको तुम करहु पालन
भूप। सुरनको लहि राजदुर्लभ करहु भोग अनूप ॥ नंदनादि-
क बिपिनमें सबगिरिनके उतमंग। नहुष लागो करनक्रीड़ाअ-
प्सरनकेसंग॥ गंधर्बनारद किन्नरनको सुनत गीत अनूप। रहै
षटऋतु मूर्त्तिमान सुजाहि सेवतभूप ॥ नहुषदेखो एक दिनते
शचीको छबिरास। कहनलागो सभासदजे रहेसुरगणपास ॥
इन्द्र महिषी शची मोहिं न भजति क्यों छबिधाम। इंद्रहमसब
लोकके पति महाबल अभिराम ॥ अद्यआवे इंद्रपत्नी क्षिप्र
मेरे भौन। सुनतभय बश सुरनको किय शचीगुरु गृह गौन ॥
शच्युवाच ॥ देहुमोको शरणगुरु करि नहुष भयतेमुक्त। कहत हे
तुममोहिं प्रभुसबसुभग लक्षणयुक्त ॥ गिरा कीजै सत्यसो प्रभु
कहतहे तुमजौन ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ कहतहे हमशची तुमसोंसत्य
है ध्रुवतौन॥ इन्द्रकोध्रुव इहांलखिहौ क्षिप्रहे छबिऐन। नहुषते
मतिभीति मानहु सत्य मेरबैन॥ बृहस्पतिके शरण को सुनि
शची कीन्हों गौन । देवऋषि लखिक्रोधसों परिपूर्ण दुर्मति
भौन ॥ कहनलागे नहुषसों नहिंतुम्हैं क्रोधसमान। क्रोधतेतब
कँपतसुर गन्धर्ब उरग महान ॥ परस्त्रीहै शचीताते करहुचित्त
निवृत्त। पापकीनाहिंवृत्तिमें कोउ होत साधुप्रवृत्त॥ कियो ग्रहण
न नहुष तिनको बचन करिके क्रोध। गो अहल्या पासइन्द्र न
कियो तुम तबरोध॥ मोहिं बरिबो शचीकोहै परमहित सुखदा-
न। शचीमोको बरैहैहै सुरनको कल्यान॥ देवाऊचुः॥ शचीको
हम ल्याइहैं तुमतजहुक्रोध सुरेश॥ शल्यउवाच॥ यहिभांतिकहि
सुर गये गुरुगृह पायनहुष निदेश॥ देवाऊचुः॥ शरणआईशची
तवहै बिदित हमकोबिप्र। देहुताको नहुषको गुरुकृपा करिकै

क्षिप्र ॥ सुनतयह भरिबारिलोचन शची बोली बैन । हौंनचाह-
ति नहुषको पति कियेगुरु गुणऐन ॥ शरणआई भरीभयसों
जानि तुमहिं शरण्य ॥ वृहस्पतिरुवाच ॥ तजतनहिं शरणागतहि
यह प्रण हमारोगण्य ॥ धर्म शीलाइन्द्रपत्नी तजौंगो नहिंतो-
हिं । नहिंअकारज करत बिप्रसो धर्मरक्षणमोहिं ॥ शचीकोनहिं
देहिंगे हमजाहु सुरनिजभौन । शरणागतको तजतबसतसोनर्क
में करि गौन ॥ जानिकै यह देहिंगे नहिं शची सुरपति बाम ।
होयगोहित जौन इनको हमैंसो अभिराम ॥ शल्यउवाच ॥ लगेते
सुर कहन ऐसे नहुषकी भरिभीति । करु वृहस्पति मंत्रजासों
होय कार्य सुनीति ॥ वृहस्पतिरुवाच ॥ नहुषसों यह जायदेवीकछू
मांगै काल । होयगो हित परम पीछे हमहिं सुनहु बिशाल ॥
शल्यउवाच ॥ सुनि वृहस्पति बचन बोले देव ऐसे सर्ब । हित ति-
हारो होत याते सुरन सहित अखर्ब ॥ वृहस्पति तुम शचीसों
कहि वचन करहु प्रसन्न । अन्यादि लागे कहन सुरसब बिनय
सो सम्पन्न ॥ देवाऊचुः ॥ जगतकी आधारहौतुम इन्द्रपत्नीपर्म ।
तुम्हैं चाहत नष्टकैहै क्षिप्र नहुषअधर्म ॥ इन्द्रपदको पाय भो
मदअन्ध दुर्मतिरास । कार्य्य सिद्धिबिचारि याते चलहु ताके
पास ॥ शची लज्जित सुरनके सुनि बचनगुणकर तौन । नहुष
के ढिगगई लखिभो खुशी दुर्मतिभौन ॥ शल्यउवाच ॥ शची सों
इमि कहनलागो नहुष कुमति अगार । इन्द्रहों तिहुँलोकको
पति तेजपुंजउदार ॥ शचीयाते बरहुमोको उचितहै छबिऐन ।
लहहुगी त्रैलोक्यको ऐश्वर्य बसि ममसैन ॥ नहुषके सुनि ब-
चन कंपित भई यौंछबिधाम । मानसिककरि पितामहका शची
शुभद प्रणाम ॥ काल चाहति कछू तुमसों सुनहु इन्द्रप्रमान ।
सोधहौ करिलेहु कछुदिन भये का मघवान ॥ सोधजो मघवान
के प्रभु नहीं मिलिहैं मोहिं । अवशि बरिहैं आयतो हम शक्र
सुखसों तोहिं ॥ सुनत पुलकित नहुषसो मृदुशची भाषोजौन ।

नहुषउवाच ॥ सत्य करियो दीर्घ लोचनि कहति है तू तौन ॥ नहुषसों कै बिदा आई शची गुरुके धाम । सारिन सुरसब शचीकेसुनि तौन बचन ललाम ॥ शक्रको सब करन चिन्तन लगे ते मतिरास । जगतपति श्री बिष्णु प्रभुके गये ते चलि पास ॥ ब्रह्महत्या भीतिसों भजिगये सुरपुर ईश । आपुहौ गति हमैं प्रभु जगदादि त्रिभुवनईश ॥ सुरनके सुनि बचन बोले बिष्णु अव्ययरूप । इन्द्रको करि पूत करिहैं फेरित्रिभुवन भूप ॥ फेरिकरि हयमेध लहिहैं इन्द्र पदको शक्र । नहुषलहिहैं नाशको यह कर्म करिकै बक्र ॥ बासकरिकछुद्योस सुरगण बिमल बाणी तौन । श्रवण करिकै चले तहँते सत्यशुभदाजौन ॥ उपाध्याय समेत सुर ऋषि गये चलि त्यहि देश । रह्यो जहँ हो गुप्त कैकै भीति बिकल सुरेश ॥ अश्वमेध सुयज्ञतेहांरच्यो सहित बिधान । ब्रह्महत्याते छुटै जेहि पुण्यते मघवान ॥ नदी तरु गिरि युवति भूमें ब्रह्महत्या भाग । राखि दीन्हों सुरनसह ऋषि पूर्ण करिकै जाग ॥ पापते छुटि भये बिज्वर इन्द्र आत्मावान । स्थानते भो नहुष कम्पित देखिकै मघवान ॥ भये फेरि अदृश्य सुरपति काल कांक्षावान । शची देखि अदृश्य पतिको भरो शोक महान ॥ कियो होम जो दानदीन्हों गुरुनको संतोष । पतिव्रत शुचिसत्य मोमें होय जो निर्दोष ॥ तौ हमारो निशा देवी करौबांछित सिद्ध । शक्र है जिहिदेश तौन देखाइदेहु समृद्ध ॥ प्रार्थना इमि निशासों करि कियो शकुन बिचार । उपश्रुति तहँ शकुन देवी भई प्रगट सुढार ॥ शल्यउवाच ॥ उपश्रुति देवी स्वरूप सुधारिदिव्य महालि । शचीके ढिग आय ठाढ़ी भई अति शुचि जानि ॥ उपश्रुतिको देखिकै इमि शची बोली बैन । कौनहौतुम दिव्यरूपिणि कहहु हे छबिऐन ॥ उपश्रुतिरुवाच ॥ उपश्रुति हम देवि आई शची तुम्हरे पास । देखिहौ तुम क्षिप्र सुरपति को महा सुखरास ॥ शचीको लै संग उपश्रुति चली

उत्तरओर। उल्लाङ्घि देवारण्य बहुगिरि सिन्धुकेपरओर ॥ लखो सरशत योजनायत महाद्वीप मझार। कमल कानन सघनजामें मत्तमधुप उदार ॥उपश्रुतिसहशाची लखि तहँ पद्मएक बिशाल । पैठि देखो इन्द्रको तहँ भेदि ताको नाल ॥ धरे तनु तन इन्द्रको लखि पूर्वकर्म बखानि । शची वर्णन करन लागी पाय पति सुखदानि ॥ सुनत सुस्तुति इन्द्रबोले शचीसों इमिबैन । जानि कैसे इहांआई कौनबिधि छबिऐन ॥ इन्द्रसों वृत्तांत सिगरो नहुषको हो जौन। शची सकरुण कहो सिगरो आदिहीते तौन ॥ कालको हम नियम कीन्हों तास दुर्मति जोहि । जौन रक्षण करहुगे प्रभु बश्य करिहै मोहि ॥ यहि हेतुआई शक्रतुम पहँ कहत तुमसों तौन। बेगिमारहु क्रूरकर्म्मा नहुष पातकभौन ॥ आपु आत्मा प्रगटकीजै दैत्यहा मघवान। तेजको फिरि धरहु कीजै अमरराज्य महान ॥ शल्यउवाच ॥ शचीसों यहिभांति सुनिकै इन्द्र बोले बैन। नहीं बिक्रम समय अबहीं नहुष अति बलऐन ॥ ऋषिन ताको कियो बर्द्धित हव्यको करिदान । नीति तुमसों कहत हमसो करहु तुम सबिधान ॥ गुप्त ताको राखिहो नहिं प्रगट कीजो तौन ॥ नहुषसो यहिभांति कहिहो रहसमें करिगौन ॥ जगत्पति ऋषियान पै चढ़ि आइये ममपास । बचन यह सुनि मानिहै तब महा दुर्मति रास ॥ शची सुनि मघवान सों यहिभांतिके बर बैन । अस्तु कहिकै बेगि आई नहुष जहँ बलऐन ॥ शचीको लखि नहुषबोलो कहहु सुन्दरिजौन । सत्यभाषत शचीतो प्रिय करैंगे हम तौन ॥ इंद्राण्युवाच ॥ नियम कीन्हों कालको सो निकट पहुंचो आय। कहौंमो प्रभु कीजिये तुम होहुपति सुखदाय ॥ अश्व गजरथ रहो बाहन इन्द्रके बलवान। तुम्हें देखो चहति आवत चढ़ि अपूरब यान ॥ है न बाहन सुरासुरके यह सुनो सुरराय। बहै शिविका रावरी सब ऋषिनके समुदाय ॥ तुम्हें देखोचहति ऐसो यानपै हम बीर।

होत सन्मुख हरत सबको तेज तुम गंभीर ॥ शल्यउवाच ॥ शची को सुनि बचन बोले नहुष कुमति महान ॥ नहुषउवाच ॥ यह अपूरब जानि हमको रुचो सुनि सुखदान ॥ करैंगे हम कहति हौ तुम जौन सुंदरि बैन । सप्तऋषि ब्रह्मर्षि मोको बहैंगे तप ऐन ॥ लखहु मम माहात्म्यको यह बिभव तुम सुखदान ॥ शल्यउवाच ॥ नहुष यहिबिधि शचीसोंकहि बिदाकरि सनमान ॥ चढ़ो आपु बिमान पै करि युक्त ऋषि तपधाम । दुष्ट आत्मा भरोमद ऐश्वर्य के बशकाम ॥ नहुषसों ह्वै बिदाआई शची सुर गुरुभौन । कहो रहिगो समय तनुकिय नहुषसों हमजौन ॥ बेगि ढूंढ़हु शक्रको करिकृपा मोपर नाथ । कियो सो स्वीकार सुरगुरु कृपाकर नरनाथ ॥ करौ भयनाहिं नहुषसों तुमशची आयेकाल । कियो बाहनऋषिनको यह नष्टहोतउताल ॥ नहुष नाशक इष्टिको हम करतहैं छबिधाम । इन्द्रको हमक्षिप्रल्यावत लखहुगी अभिराम ॥ अग्निको प्रज्वलितकरि गुरुसबिधि हव्यअनूप । होमकरि कै कहो ढूंढ़हु हैं कहां सुरभूप ॥ कुण्डते कढ़ि स्त्री स्वरूपी अग्नि श्रीभगवान । प्रगट देखत बृहस्पति के भये अन्तर्द्धान ॥ दशौदिशि बनअद्रि नभ भू नागलोकगंभीर । ढूंढ़ि आये कहो गुरुसों अग्नि एक न नीर ॥ अग्निरुवाच ॥ नहिं बृहस्पति इन्द्रको हम कहूंदेखो रूप । सकै पैठि न सलिल में हम ढूंढ़िबे सुरभूप ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ सुरनके मुखअग्निहौतुम सर्ब ब्यापक गूढ़ । एकहौ तुम त्रिबिध तुमको कहत जे मति रूढ़ ॥ तुम्हैं छांड़त जगतको सबहोत हुतभुक नाश । तुम्हैंभजिकै ब्रह्मगतिको लहतद्विज मतिराश ॥ आत्मयोनि बिचारि अपको तजो शंका जौन । करैंगे हम तुम्हैं बर्द्धित करहुअपमें गौन ॥ अग्नि संस्तुत बृहस्पति सों कहे ऐसे बैन । देहिंगे हम तुम्हैं शक्र देखाय हे तपऐन ॥ शल्यउवाच ॥ अग्नि पैठे अब्धि आदिकजहांलोंजलरास । जायपैठेतौनसरमेंइन्द्र जहँहतत्रास॥

कमलनालन मध्य पैठे हव्यभुक भगवान। लखो तहँ बिसमध्य-
स्थित सूक्ष्म तनु मघवान ॥ वृहस्पतिसों कह्यो हुतभुक तूर्ण
तहँते आय । ब्रह्मर्षि सुर गन्धर्ब्ब सह गुरुतहां देखो जाय ॥
पूर्बकृत कहि इन्द्रको सब दनुजनाशक जौन । शक्रसों इमिक-
हन लागे सुऋषि सुरगण तौन ॥ उठहु रक्षणकरहु त्रिभुवन
जगतपति मघवान । प्रजापावतिमहतपीड़ा धरहुरूप महान॥
सुरन के मुख सुमत सुस्तव शक्रपायो वृद्धि। धरोपूरुबरूपअपनो
सबलसिद्धि समृद्धि ॥ दोहा ॥ इन्द्र वृहस्पतिसों कह्यो कहा शेष
तवकाम। हम त्रिशिरावृत्रहि हनो रणदुर्मद बलधाम ॥ वृहस्प-
तिरुवाच ॥ मनुज नहुषसुर ऋषिनको कियो ग्रहण तपतेज । तव
पद लहि हमको करत बाधाभरोमजेज ॥ इन्दउवाच ॥ रोला ॥ न-
हुष मानुष लहो कैसे देवतनको राज ॥ वृहस्पतिरुवाच ॥ तुम्हैं बि-
न भयभरे सुरऋषि सकल पितृसमाज ॥ नहुषसों चलिकह्यो
रक्षहु स्वर्गलोकअनूप ॥ नहुषउवाच ॥ तुम्हैं रक्षण योग्य शक्तिन
हमैंहैहमभूप ॥ देहुजो तपशक्ति हमको सकल सुरऋषिवृन्द ।
सुनतदे तपतेज ताको कियो सुरऋषि इन्द्र ॥ लोकयको लहि
राज्य कीन्हों ऋषिन बाहक जान । तेजहर चष तासताहि न
लखोतुम मघवान ॥ रहतसुरगण गूढ़तासों तेजहर अनुमानि ॥
शल्यउवाच ॥ तहां तबदिगपाल आये प्रगट सुरपतिजानि ॥ देखि
सब दिगपाल सुरपति भरे आनँद चेत । कुशल कहिफिरिति-
न्हैं पठयो भेद करिबे हेत ॥ शक्रसों दिगपाल बोलेघोर नहुष
महान । तेजहर है दृष्टि ताकी चोरसदृश अमान ॥ डरतहैंहम
जात तापै सुनहु हे मघवान । सकत करि न सहाय याते रावरी
सुखदान ॥ इन्द्र सों तब कहन लागे अग्नि ऐसे बैन । देहुहम
को भाग करिहैं हम सहाय सचैन ॥ इन्द्र बोले अग्निसों मम
तुल्य तुमकोभाग। देहिंगे सुर मनुज तुमकोकरहिंगे जोयाग ॥
शल्यउवाच ॥ इन्द्र कहि यहिभांति मनमें कियो फेरि बिचार । ब-

रुण यम धनपालको दिय यथा स्थित अधिकार ॥ इन्द्र करत बिचार हे जहँ लोक पालन पास । नहुष दुर्मति घोरको केहि भांति कीजै नास ॥ तहां आवत लखो कुम्भज महामुनि तप धाम । होय अर्चित इन्द्रसों मुनि कहे बचन ललाम ॥ भाग्य ते तुमहनो त्रिशिरा बृत्रको मघवान । भाग्यते सुरलोकते भो नष्ट नहुषमहान ॥ पाय पूजित महामुनि सों लगे बूझनशक्र । स्वर्गते भोनष्ट कैसे नहुष दुर्मति बक्र ॥ अगस्त्युवाच ॥ नहुष जैसे स्वर्गते भोभ्रष्ट दुर्मति भौन । इन्द्र तुमसों कहतहें हम सबिधि सुनियेतौन ॥ बहतहे ब्रह्मर्षि अरु देवर्षि नहुषहि जौन । धर्म्म तिन कछुताहि बूझो भरे अतिश्रम गौन ॥ नहुषकछु दै तिन्हैं उत्तर भरो दुर्मति दर्प । परसिमूर्द्धा चरणसों मम कहन लागो सर्प ॥ छुवत मूर्द्धा चरणसों मम तेजहत भो दुष्ट । शापताको दियो हमयह क्रोधको करिपुष्ट ॥ चरण सों मम छुयोमूर्द्धा ऋषिनको करिजान । सर्प ह्वै कै रहोक्षितिपर अयुत वर्ष प्रमान ॥ अयुत बर्ष ब्यतीत करिकै स्वर्गमें फिरि बास । करहुगे तुमलहहुगे जब धर्म नृपको पास ॥ नहुष ऐसे स्वर्गतेभो नष्ट दुर्मति धाम । भये तुम मघवान बर्द्धित भाग्यसों अभिराम ॥ देवगण गन्धर्ब्ब किन्नर यक्ष ऋषिनर नाग । आय सुरुतव करनलागे इन्द्रको भरि भाग ॥

इतिश्रीउद्योगपर्बणिइन्द्रबिजयनहुषभ्रंशबर्णनोनामपंचमोऽध्यायः५ ॥

शल्यउवाच ॥ दोहा ॥ गन्धर्बनते स्तुति सुनि अप्सरानसोंगान । चढ़ि ऐरावतपर चले सुरपुरको मघवान ॥ अग्नि बृहस्पति देवऋषि सकल ब्रह्मऋषि साथ । भरे मोद सुरगणसकल हर्षित सब दिगनाथ ॥ तहां बृहस्पति जायकै सुरपति को सबिबेक । आथर्बणके मंत्रसों फेरि कियो अभिषेक ॥ सुरगुरुको सुरराज यह दीन्हों बर अभिराम । तुम्हैं अथर्बण अंगिरससब कहिहैं तपधाम ॥ हे गुरु अबमिलिहहिं तुम्हैं सर्ब यज्ञमें भाग ।

बिदा कियो दिगपाल तब इन्द्र सहित अनुराग ॥ शचीसहित पालनलगे आनँद भरे त्रिलोक । मनुजनाग किन्नरअमरसिगरे भये बिशोक ॥ इन्द्राणी सह इन्द्रज्यों लहो कष्ट अतिरूप । त्यों कृष्णासह गुप्त अब तुमहूं पायो भूप ॥ राज्यहि ऐसे लहोगे तुमहूं शत्रु सँहारि । ज्यों त्रिभुवन सुरपति लियो बृत्रासुरको मारि ॥ नष्ट होहिंगे दुष्ट तव नहुषयथा नृपधर्म । उपाख्यान याते कहो यह हम तुमसों पर्म ॥ उपाख्यान यह धर्मनृप इन्द्र बिजय फलचारि । देतसुनायो तुम्हैं हमयह निश्चय निरधारि ॥ कुरुनृपके अपराधते जे क्षत्री नृपउद्ध । नाश लहैंगे सकलकरि भीमार्जुन सों युद्ध ॥ इन्द्र बिजयो पाख्यान यह पाठकरै नर जौन । मुक्त पापते होयके स्वर्ग लहैगोतौन ॥ मिटै बिपत्ति सपुत्र ह्वै लहै न शत्रुज भीति । दीर्घ आयु ह्वै कै लहै अरिसों रण में जीति ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ उपाख्यान यहशल्यसों सुनिकै भूपति धर्म । पूजनकीन्हों शल्यको बिबिध भांति सों पर्म ॥ पूजन करिकै धर्मनृप बोले बचन स्पष्ट । होय सारथी कर्णको तेजकीजियो नष्ट ॥ शल्यउवाच ॥ करिहैं हम नृपधर्म सो आपु कहत हौ जौन । और जो बांछित होय तव नियत करैंगेतौन ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ बिदा होय नृपधर्म सों सबल शल्य मतिरास । गये सुहास्तिननगर को दुर्योधन के पास ॥

इतिश्रीउद्योगपर्वणिइन्द्रबिजयोपाख्यानबर्णनोनामषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

बैशम्पायनउवाच ॥ जयकरी ॥ सात्वतबंशभूपयुयुधान । चतुरंगिनि सेना अतिमान ॥ नाना आयुध धारीबीर । सुभट धीर बलधरे गँभीर ॥ एक लये अक्षौहिणि साथ । आयोजहां धर्म्म नृपनाथ ॥ कियो प्रवेश सैनमें आय । जैसे नदी सिन्धुमेंजाय ॥ चेदिराज अक्षौहिणि एक । सैन लये बलभरो बिबेक ॥ धृष्टकेतु भूपति बलरास । गयो युधिष्ठिर भूपतिपास ॥ जयत्सेनमगधाधिपभूप । जरासिन्धुको सुत अनुरूप ॥ एकलये अक्षौहिणि

साथ । आयो जहँ पांडव कुरुनाथ ॥ पांड्यनृपति लीन्हेबहुसैन । सागर तटबासी बलऐन ॥ आई द्रुपदसैन अतिमान । चतुरंगिनि भटबीरमहान ॥ आयेद्रुपदपुत्र अतिशूर । भरेहर्षअतिरथबल पूर ॥ भूपबिराट मत्स्यपति जौन । लये पार्बती नृपबहु तौन ॥ आये धर्म्मनृपति के पास । सैन समूहलये बलरास ॥ यतने भूप धर्मनृप संग । शोभित भये भरे रणरंग ॥ सप्ताक्षौहिणिसेना सर्ब । धर्म नृपति के जुरीअखर्ब ॥ आये भूप सुयोधन पास । ते अब कहत सुनहु मतिरास ॥ एकलये अक्षौहिणि सैन । नृप भगदत्त महाबलऐन ॥ भूरिश्रवा शल्य क्षितिपाल । महाबीर सँग सैन बिशाल ॥ एकएक अक्षौहिणिसैन । चतुरंगिनि भटबर बलऐन ॥ कृत बर्माभोजादिक साथ । आयोजहँ कौरवकुल नाथ ॥ सैनएक अक्षौहिणिसंग । सुभट समूह भरे रणरंग ॥ नृप सौबीर सिंधुपकजौन । जयद्रथके सँगआयेतौन ॥ सैनएक अक्षौहिणि सर्ब । भूमि कँपावत गिरिन अखर्ब ॥ नृप काम्बोजदक्षिणी जौन । यवन भूप के जेबल भौन ॥ सैन एक अक्षौहिणि तास । आई दुर्योधन के पास ॥ माहिष्मतीपुरीको भूप। नीलनामआयुधअनुरूप ॥ सैनएकअक्षौहिणिसंग।आयो सोधारेरणरंग॥ दक्षिणपथके भूपअनेक। आयेबीरएकतेएक॥ पुरीअवन्तीके भूपाल । अक्षौहिणि द्वैलये बिशाल ॥ आयेतौन सुयोधन पास । ध्वजिनी महाभयङ्कर जास ॥ भूपबिन्दु अनुबिन्दु सुनाम । तिनके यश भूमें अतिमाम ॥ केकय नृपसोदार्य्य सुपंच । अक्षौहिणि एक लिये ससंच ॥ आयेभूप सुयोधन पास । हर्षितभये देखिभटजास ॥ और रहे लघुबर नृपजौन । दुर्योधन पहँ आये तौन ॥ एकादश अक्षौहिणि सैन । भई सुयोधन के बलऐन ॥ चहैं पांडवनसों तेयुद्ध । रहे किये हास्तिन पुररुद्ध॥ कुरुजांगलपंजाबसुदेश। मरुरोहितकारण्यसुवेश॥कालकूट अहिक्षत्रस्थान। गंगायमुनातीर अमान ॥ गिरिबनभूमि

जहांबिस्तार। तहँतहँसेनापरीउदार ॥ बहुधनधान्यभरीसबसैन। सुभट समूहमहाबलऐन ॥ द्रुपदपुरोहितदेखततौन। कियोसुयो-धन नृपपहँ गौन ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ रोला ॥ सपुरोहित गयेजहँ धृतराष्ट्रहे भूपाल। विदुर भीषम भूपसों सत्कार पायविशाल ॥ बूझिकुशल सुप्रश्न पाहिले परस्पर मतिऐन । सभासदन म-झार प्रोहित कहनलागो बैन ॥ पुरोहितउवाच ॥ राजधर्म सोबिदित तुमको है सनातनजौन । लहो उत्तर चहत याते तुम्हैं बूझत तौन ॥ धृतराष्ट्र पांडुसुपुत्र दोऊ एकके मतिमान। पिताकोधन पाइबेको दोऊ योग्य समान ॥ पिताकोधन लहोसुत धृतराष्ट्र के हैं जौन। पांडुकेसुत नहींपावत कहोकारणकौन ॥ लियो जो कृतपूर्बकरि सो बिदित तुमको सर्ब। देतहैं धृतराष्ट्रकेसुत पितृ धन न अखर्ब ॥ प्राणहारक नृपसुयोधन किये बहुत उपाय। पांडुके सुत मरेनहिं आयुष्यको बलपाय॥ पांडवन फिरि कियो बर्द्धित राज्य बलते जौन। छल सुकरिकै लिये सुयोधन सहित सौबल तौन ॥ नियम करिकै दियसुयोधन जौनबनकोबास । बर्षतेरहसो बितायो पांडवन दुखरास ॥ क्लेशपायो सभामें तिन बिपिनमें बसिजौन। लहो दारुण कष्टबास बिराटके करिभौन ॥ तौन पीछे राखिकिल्विष पूर्बकृत गम्भीर। सामतुमसोंकियोचा-हत पांडुसुत बरबीर॥ पांडवनके अरुसुयोधनके चरित्रसमान। सुहृदशिक्षा करौनृप धृतराष्ट्रको सुखदान॥ पांडवनको करि न बिग्रह सकैंगे तवबीर। लोककेर बिनाशचाहत पार्थस्वधन गँ-भीर॥ हेतुबिग्रह कोसुयोधन कियोकारजजौन। नहींते बलवान मानत हेत बिग्रहतौन ॥ सप्तअक्षौहिणि जुरीहै धर्मनृपकेसैन। युद्धचाहत कुरुनसो ते महाबलके ऐन॥ नकुलअरुसहदेव सा-त्वकि भीमसेन अमान। एक दिशि सबचमू अर्जुन एक दिशि बलवान ॥ यथाअर्जुन तथाहैं श्रीकृष्ण बुद्धिगँभीर। बुद्धि बि-क्रमजानि तिनसों लरैगोको बीर॥ बुद्धिसमय बिचारि तुमको

होय दीबेजौन। नहींकाल बिताइये अबबेगि दीजै तौन ॥ बैश-म्पायनउवाच ॥ सुनि पुरोहितके बचन ते बहुतभांति सराहि। भी-ष्मलागे कहनतासों सुमतिको अवगाहि ॥ भाग्यतेते कुशलहैं श्रीकृष्ण सहितउदार। भाग्यते सहसैनक्कैके चहत धर्माचार॥ भाग्यबशते सन्धिचाहत भाग्य बशते युद्ध। कहतहौ तुमसत्य है सोबिप्रबर मतिउद्ध॥ ब्रह्मतेजस भरेबोलत बिप्रतीक्षणबैन। इहांबनमें भये क्केशित सत्यतेबलऐन॥ लहैं पांडव पिताकोधन धर्मते सतशुद्ध। जिष्णु अतिरथ महाबलसों सकैको करियुद्ध॥ है कृतास्त्र सुबज्रधरसो और धनुधर कौन। करे अर्जुन साथ रणमें द्वन्दयुद्धहि जौन॥ भीष्मके सुनि बचन ऐसे लखि सुयो-धन ओर। कर्णबोले बचनदुर्मति क्रोधकरिकै घोर॥ बिदितहै सब जगतजनको कहत तुम द्विज जौन। कहेका पुनरुक्ति फिरि फिरिप्रगट बार्त्तातौन॥ शकुनिजीतोद्यूतमें दुर्योधनार्थक सर्ब। कृपा करिकै काढ़िदीन्हें जानि बनकोखर्ब॥ सोनिबन्ध बिताय मांगत राज्य पैतृकजौन। द्रुपदमत्स्यसहायलहि बशमूर्खताके तौन॥ चतुर्थांश न देहिंगे भयते सुयोधन भूप। कौरवाधिपधर्म बिधिसब देय भूमि अनूप॥ चहत पैतृक भागपांडव बर्षतेरह जाय। बासकरिबन दीनक्कैके फेरि मांगोआय॥ छोड़िदेहिं अ-धर्मकी मतिमूर्खताबशजौन। युद्ध करिकै समुझिहैं यह कहतहैं हमतौन॥ भीष्मउवाच॥ पार्थके रणकर्मकोगो भूलिका अस्मर्ण। एकरथसों हारिआये षटरथी तुमकर्ण॥ बहुतजियबे चहततुम तबकर्म देखौसर्ब। मानिहौ नहिंबिप्रको जोवचन पथ्यअखर्ब। युद्धमें बधहोयतौ तुम मरहुगे मुखधूरि॥ बैशम्पायनउवाच॥ भीष्मके सुनिबचन करि धृतराष्ट्र आदर भूरि॥ भीष्मके ये बचनहम को परमहित सुखदान। जगतहितहित पांडवनको नीति मय अतिमान॥ बहुत भर्त्सन कर्णको करि कहें ऐसे बैन। मंत्रकरि संजय पठावहु पार्थपै मतिऐन॥ सभामें बोलवाय संजयको

लयोतब भूप। बहुत आदर सहितबोले बचनउचित अनूप॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ जाहुसंजय सभाजेता पांडवनके पास। शान्तिजैसे लहे पांडव कहेहुसो मतिरास॥ क्षुत् पिपासा क्लेश बर्द्धित क्रोध तिनको जौन। धैर्य्यते अरु बुद्धिते सब शमितकीजो तौन॥ क्षुद्रकर्णहिमिलि सुयोधन पापकरि सम्पन्न। प्रियमहात्मा पांडवनको क्रोधकिय उत्पन्न॥ आरंभ बीर्य्य प्रसंग में हतबीर्य्य ममसुत जौन। मूर्खताते धर्मको धन्नलियोहि जानततौन॥ भाग ताको हरोचाहत कृष्णजासु सहाय। जिष्णु माद्रीतनय सात्वकि भीमअतिबलकाय॥ भागताको साधु देनो युद्ध पूर्वसुजाम। जिष्णुकेशर सहैक्षितिपर कौनहै बलधाम॥ जिष्णुके सब साथदोऊ लोकपति बलभौन। रहैतिनके सामुहे रणभूमिमें नृपकौन॥ मेघलांशरवृन्द बरषत शलभसंग समान। जिष्णु चारों दिशनके नृपजीतिहै बलवान॥ सुरनसह सुरराजजीतो कियो खांडवदाह। कियो पावकतृप्ततासों लरैको नरनाह॥ गदाधरको भीमके सम युद्धमें बलवान। महा रव सम जिष्णु केहैं समर सिंहसमान॥ अस्त्रशीक्षित बैरकृत अति तेज पुंज उदार। दहैंगे ममसुतनको सुतपांडुके बलभार॥ जयकरी॥ सदा अमर्षीअतिबलवान। जिन्हैं न जीतिसकै मघवान॥ शीघ्रहस्त अतिशूर अखेद। पढ़े जिष्णुसों सब धनुवेद॥ माद्रीसुतअरि बिहग शचान। जीतिनयोग्य समर अतिमान॥ तिनकेमध्य महारणधीर। धृष्टद्युम्न अतिरथ बरबीर॥ सोमक श्रेष्ठद्रुपद नृपजौन। आत्मा तिन्हैं समर्पेतौन॥ रणकोबिद प्रद्युम्नसमान। तिनसँगसो सात्वकि बलवान॥ जीतै धर्मनृपतिकोकौन। जासु सहाय कृष्ण बलभौन॥ नृप बिराट मत्स्याधिप बीर। जासु सहाय महा रणधीर॥ पुत्रन सहित सबल धनमान। भक्त धर्म नृपको सुखदान॥ नृपकैकेय बंधुशरसंग। तासु सहाय चहत रणरंग॥ भूपसहायक तिनके जौन। भरेभक्तिसों सुनियततौन॥

गिरि दुर्गाश्रयकेनृपसर्व । आयेधारियुद्धकोगर्व ॥ म्लेच्छजाति नानायुधधारि । आयेतास सहायकिचारि ॥ पांड्यभूप रणशक्र समान । सुभटवृन्दलीन्हेंबलवान ॥ धर्मनृपतिकी चाहिसहाय । सुनियेतमिलो सबलसोआय ॥ चेदिनृपतिकारुषकोसंग।आयो लियेभरोरणरंग ॥ तपतसूरसो चेदिनरेश । संगलिये भटवृन्द अशेश ॥ महाबलीभूपतिशिशुपाल । ताहिहनेजोक्रुद्धितकाल॥ जिष्णुसारथी सुनियततौन । भयोकृष्णकेशवबलभौन ॥ एक रथस्थभयेदोउबीर । सुनिकांपतममहृदयगँभीर ॥ रणनचहति ममसति तिनसंग । ममसुतकुमति चहतकृतभंग ॥ हमअर्जुन को शक्रसमान । जानत कृष्णबिष्णु नाहिं आन ॥ छलकरिठगो सुयोधन ताहि । शान्त सुभाव पाण्डवहि चाहि ॥ क्रोधकरैं जो पाण्डवसर्ब । कुरुकुल जारैंलो सुअखर्ब ॥ मेटिक्रोधको कारण सर्ब । संजय सम्मतमोहिं अखर्ब ॥ संजय बेगमान रथजौन । तापहँ चढ़िके कीजे गौन ॥ द्रुपद सैनमहँ किहेहुनिदेश । कहहु सुजोहम करत निनेश ॥ बूझेहुकुशल धर्मनृप पास । ममदि-शिते फिरि फिरि मतिरास ॥ महा भाग बलबीरजधाम । बासु-देवको लहि अभिराम ॥ कुशल प्रश्नबूझेहु मतिरास । आज्ञा कारक पाण्डव जास ॥ मम दिशिते लहियो मतिधाम । पाण्डु सुतनते चाहत साम ॥ पाण्डव कृष्ण सहितयुयुधान । पुत्रद्रौ-पदी के बलवान ॥ संजय पायतिन्हैं एकठौर । कुशलप्रश्नकी-जोमतिभौर ॥ बचनसोइ कहियोमतिउद्ध । हरैक्रोधजो कारण युद्ध ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ सुनिधृतराष्ट्रभूपकेबैन । संजयचलोमहा-मतिऐन॥ कृष्णसहितपाण्डवनृपधर्म । तिन्हैंचाहिवैचाहतपर्म॥ भ्रातन्हसहितयुधिष्ठिरभूप । जहँहेंगयोतहांसुखरूप॥ धर्मनृपति सों सहित प्रणाम । बोलो सूतपुत्र मतिधाम ॥ भूप अम्बिका को सुतवृद्ध । बोलो तब कुशलाति समृद्ध ॥ कुशलभीम अर्जुन बलधाम । माद्रीतनय कुशल अभिराम ॥ राजसुता पतिव्रतकी

ऐन। भूप कुशल कृष्णा सहचैन॥ कृष्णाके सुतपञ्च सुजान। ते हैं कुशल भूपबलवान॥ युधिष्ठिरउवाच॥ संजयभो आगम तव पर्म। देखि तुम्हैंभो पुलकित मर्म॥ संजय कुशल सहित परि-वार। हैंहम बन्धुन सहितउदार॥ भारतबंश कुशलबहुकाल। बीतेतुम सो सुनो बिशाल॥ तुमसो कुशल वृद्धसुनि भूप। भयो हमें दर्शन अनुरूप॥ स्थविर पितामह भीष्म सुजान। कुशल यथास्थित हैं मतिमान॥ हैं बाह्लीक कुशलसोपर्म। सोमदत्त सहपुत्र सधर्म॥ भूरिश्रवा ससुत गुरुद्रोन। कुशल कृपाचारय मतिभौन॥ हैं कुरुकुल सब कुशल उदार। तिन्हैं कहत धनुधर संसार॥ कुशल युयुत्सुकर्ण कृतदन्त। कुशल सुयोधन हैं मतिमन्द॥ वृद्धराज पत्नीहैं जौन। ऋषिन सहित कुशली हैं तौन॥ बधूपुत्र भगिनी सुतसर्ब। हैं द्रौहित्र कुशल सोसर्ब॥ बिप्र जीविका पूरव जौन। देत यथा स्थित भूपति तौन॥ जे ममदत्त द्विजनको ग्राम। लेत नतौ ताको नृपदाम॥ ब्रह्मवृत्ति परलोक प्रकाश। करति भूमिपर यश मतिराश॥ ब्रह्मवृत्तिमें कीन्हें लोभ। होतनाश दुहुँदेशिते क्षोभ॥ आमात्यन्हको पालत भूप। पुत्रनसह संजय अनुरूप॥ सबकौरव मिलिके भरि रोष। कहत नहीं तौ पाण्डव दोष॥ ससुतद्रोण गौतम कृप बीर। कहत नतौ मम दोष गँभीर॥ धुनि गाण्डीव धनुषकी जौन। करत न तौ सुधिकै तब तौन॥ अर्जुनसम धनुधररण-धीर। हमन धरापर देखतबीर॥ गदापाणि नहिंभीमसमान। हमधरणी परदेखो आन॥ माद्रीसुत सहदेव सुजान। जेहि कलिंग जीतोबलवान॥ नकुल प्रतीची दिशिकेभूप। संजय जेहिजीतेअतिरूप॥ तेइनकीसुधि करतनधूत। महाबलीमाद्री केपूत॥ द्वैतविपिनमें यात्राघोष। कियोसुयोधन जोकरिरोष॥ पायोतहांपराभवजौन। संजयकहोकरत सुधितौन॥ संजयउवाच॥ जौनकहौ तुम भूपतिधर्म। हमसोतौनसत्य सबपर्म॥ हैंधृतराष्ट्र

साधुमति भूप। कुमति सुयोधन पापस्वरूप ॥ करतशोच धृतराष्ट्र नरेश । तुमप्रति भूपति धर्म हमेश ॥ हे नरदेव तिहारो युद्ध । समरसिंह अर्जुनको क्रुद्ध ॥ भीमसेनको गदा प्रहार । स्मरण करत धृतराष्ट्र उदार ॥ माद्रीसुत रणमें चहुँओर । बर्षत बाणमहाबलघोर ॥ स्मरण करत तिनको कुरुभूप । सुनहु धर्म भूपति अनुरूप ॥ भोग्य भविष्य अदृश्य सुतौन । ताहि न कोउ जानत मतिभौन ॥ तुम सबभांतिन धर्मासन्न । तिनको क्लेशमहत उपपन्न ॥ जेधृतराष्ट्र कहेहैं बैन । तुमसों कहिबेको मतिऐन ॥ संजय पांडव और सुभूप । आयेहैं तुमपहँ अतिरूप ॥ तिनसह बैठहु भूपति धर्म । सभामाहँ थिरमति करिपर्म ॥ नृपधृतराष्ट्र कहो है जौन । हमसों कहिबे कहिहैं तौन ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ संजय पाण्डवसह यदुबीर । नृपति बिराट महारणधीर ॥ सभामाहँ बैठे सब आय । संजय कहहु तौन सतभाय ॥ जेधृतराष्ट्र कहे हैं बैन । तुमसों नीति निपुण मतिऐन ॥ संजयउवाच ॥ सहित कृष्ण पाण्डव रणधीर । द्रुपद बिराट सपुत्र गँभीर ॥ चेकितान युयुधान समेत । कृष्णासह सबसुनो सचेत ॥ सुनहु कहे धृतराष्ट्र जेबैन । तेहम कहत कुशलके ऐन ॥ चहत साम कुरु कुलपति वृद्ध । पठयो यातेमोहिं समृद्ध ॥ नृपधृतराष्ट्र कहे जेबैन । तुम्हें रुचौसह सामसचैन ॥ भरेसबगुण पाण्डवबीर । दायाधर्म समुद्र गँभीर ॥ हिंसामति नहिं तुममें पर्म । सेनाको भयकर नृपधर्म ॥ दोहा ॥ तुममें किल्विष होततौ होत प्रगट न छपात । परेशुभ्रपटमें यथाअंजनबिन्दु लखात ॥ सर्वक्षयजामें उदय पापनिरामयजौन । कौन करत है कर्मसो अजयतुल्यजय तौन ॥ ज्ञाति प्रजापालन करत बन्धुबर्ग सहमित्र । धन्य पुत्र सो जगतमें दुहुँदिशि करत पवित्र ॥ निन्दित कैकै जियतजन सोहै मृतकसमान । गन्धर्बनते राखितुम लियो सुयोधन प्रान ॥ कोतुमको केशव सहित जीतिसकै नृपधर्म । चेकितान मत्स्यप

द्रुपद सात्वकि रक्षकपर्म ॥ सुरन सहित सुरराज नहिं तुमसों जीतैंयुद्ध। भीमार्जुन माद्रीतनय भयेसमरमें क्रुद्ध॥ भीष्म द्रोण कृप शल्यनृप द्रोणतनय बलभौन। कर्णजासु रक्षकप्रबल ताको जेताकौन॥ महाचमू धृतराष्ट्रकी कौन मारिहै भूप। चहुँदिशिके आये नृपति महाबली रणरूप॥ हमैं जयाजयमें नियत अश्रेयस अतिआधि। नीचकरत हैं कर्मको धर्म अर्थको बाधि॥ बासुदेव पाञ्चालको करिहम बिनय प्रणाम। बूझत संजय कुरुनको कैसे कुशल ललाम। आंबिकेय ऐसेकह्यो कृष्णपार्थ मतिमान। कह्यो न मानैसो नहीं कहौं देहि तौ प्रान॥ भीष्म भूप धृतराष्ट्रको सम्मत शान्तिन और। तातेकीजे शान्तिको धर्मनृपति शिरमौर॥ युधिष्ठिरउवाच॥ युद्धाकांक्षी कौनसो संजय यह तुमबैन। कहत हमैं जो सुनहु सो तुमहौ मतिकेऐन॥ बिना युद्धलहि अर्थको युद्ध चहैगो कौन। बिना कियेही सिद्धितौ करिये कर्म न तौन॥ बिदित करत हम कर्म नहिं जैसे लघु जनजौन। पार्थ करत हैं कर्मको जगतपथ्य मतिभौन॥ जिहि सुखमें है उदयधर्मको चहतपार्थ सब ताहि। यहसुनि कह्योयुद्ध क्यों चाहत तुम ऐसे अवगाहि॥ तौसुनु दुखके नाशको सुख पावनके हेत। कर्मकरत हैं सबही गहि निजधर्म सचेत॥ बिषयध्यान बहुपाप करतजे बिषयको ध्यान। सुख पावत सब भांतिसो जेनरबर मतिमान॥ विषय बासना घटति नहिं लहि बहु बिषय बिकार। यथापाइइन्धन बहुत पावक बढ़तउदार॥ काम अर्थलहि बहुलहुन तृप्तभये कुरुभूप। हमैं राज्य बाहर कियो चहिसर्बस्व अनूप॥ महाबिपिनके बीचमें लहिनिदाघ मध्यान। चहत कुशल दावाग्निसो निद्रावश्य अयान॥ संजय नृप धृतराष्ट्र लहि कैऐश्वर्य महान। सुतमंत्री दुर्मतिलहे भाषत दीन समान॥ निदरि बिदुरके परम हित कहेजे नीति निदेश। सुताप्रिय किय धृतराष्ट्रनृप अधरम माहँ प्रवेश॥ मूढ़ अनीति

अधर्ममय कामी कुमति कुकर्म । तासुतको प्रियकरि कियो नृप धृतराष्ट्र अधर्म ॥ बिदुर बचन मानोनजब भोकुरुकष्टअपार । जबलों मानो बढ़तगो तबलों राज्य उदार ॥ लोभी दुर्योधन नृपति मंत्री दुर्मति भौन । सूत सुवनअरु शकुनि अरु खल दुःशासन तौन ॥ देखिपरत हमको नहीं कुरु संजय कल्यान । पराधीन धृतराष्ट्रनृप बिदुर अमान्य सुजान ॥ जबहम बनको गये तब जान्यो तिन निजसर्ब । सो गुणिकै किहिभांति हम धारैंशांति अखर्ब ॥ जानत रणमें जीतिहैं अर्जुनको सुतसूत । अबहीं लरिगो ग्रहणमें बचो भागिकै धूत ॥ भीष्मद्रोण अरु कर्ण सुयोधनअरुकुरुबंशी और । जानतयह अर्जुनसम दूजोहै न सुभटशिरमौर ॥ जानत कौरव नृपतिजे आये सहितसमाज । बिद्यमानअर्जुनलहो यथासुयोधनराज ॥ जबलोंनहिं गांडीवको सुनत सुयोधनराव । भीमयुद्ध नहिं लखतहैं तबलों राज सु-च्चाव ॥ इन्द्धन मम ऐश्वर्यहर जियत वृकोदरबीर । जिष्णु न-कुल सहदेव सह महाबली रणधीर ॥ जौनबुद्धि यह धरैंगेसु-तन सहित कुरुभूप । तौ बाणानल दग्धह्वै धरिहैंनाशस्वरूप ॥ पूर्ब हमारो क्लेश तुम जानत संजय सर्ब । कीन्हों लाक्षासदनमें तिनजो कर्म अखर्ब ॥ भूलि तौनकृत सबगहैं अबहूंशांतिअ-नूप । इन्द्रप्रस्थको राज्यजो देय सुयोधन भूप ॥ संजयउवाच ॥ धर्मनृपति पांडवसुतव सुनियत लखियततौन । महाकीर्त्तिनिः-पाप तव जीवन पांडवजौन ॥ भाग न कौरव देहिंगे किये युद्ध बिन उद्ध । राज्य न तुमको श्रेयहै लीबो करिकै युद्ध ॥ जीवन अल्पमनुष्य को महादुःखको रूप । गोत्रनाश कृतपापहै तुमको उचित न भूप ॥ धर्म कर्म करिकै लहत रबिसो सुजन प्रताप । धर्महीन लहिकै मही दुखित होत गतिपाप ॥ ब्रह्मचर्य्य करि यज्ञ तुम दियो द्विजनकोदान । बहुत बर्ष सुखलहौगे लहिपर-लोक स्थान ॥ भोगभजो बहुकाल जेहि कियो न योगाभ्यास ।

बित्तहीन बशकामके दुःख बसततेहि पास ॥ छोड़ि ब्रह्मचर्य्या प्रथम जोजन करत अधर्म । तजिश्रद्धा परलोकसो तपतमूढ़ बशकर्म ॥ मन न लगायो ब्रह्ममें ह्वैके बिमल सुजान । ताहि ब्रह्मचर्यहत जेहैं प्रज्ञमहान ॥ होत कर्मको नाशनहिं लहतपुण्यफल जन्य । करत पाप सो पापफल करता लेतन अन्य ॥ भोजन दीन्हों द्विजनको तुम सदक्षिणादान । तथा तुम्हारोजगतमें सुनियत सुयश महान ॥ प्रथम गये तजिराज्यकिमि तजिबल आत्माधीन । नित्य स्वबश हे सचिव सबजे अतिबल मतिपीन ॥ बासुदेव युयुधान अरु मत्स्य सपुत्र नरेश । बिदित भूपतव पासते आये अतिबल बेश ॥ महा सहाय बलस्थलहि कृष्णार्जुन के संग । अवलोका गुणिनहिकियो कुरुपतिको मद भंग ॥ बलबढ़ायकै शत्रु को अपनी जोरिसहाय । अबन लरहु बीते समय बनबसि कालबिताय ॥ सुमति लरत नहिं सर्बथा शत्रुक्षीण लहिपीन । होतिजयाजय युद्धमें सुनियतदैवाधीन ॥ धरति अधर्मन बुद्धि तव नहिं बशक्रोध अपर्म । पार्थकरतकेहि हेत यह स्वमति बिरोधी कर्म ॥ भीष्मादिक गुरुजननको बध अति पातक रूप । जानिपरतहै होयगो तुमसों हेकुरुभूप ॥ सोमदत्तकृप भीष्मगुरु शल्य सुयोधनबीर । इन्हें मारिकै लहौगे कलपसों मोदगँभीर ॥ जानिपरै सो कहहु अब यामेंभूपतिधर्म । कुरु संजय दोऊरहैं कुशलपायसुखपर्म ॥ सागरान्त क्षितिलहेहुहै जरामृत्यु अनिरुद्ध । सुख दुख प्रिय अप्रिय समुभिकरहु न भूपति युद्ध ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ संजय कहौ सुसत्यतुम श्रेष्ठधर्म कृतकर्म । धर्माधर्म बिचार करि निन्दाहमैंसोपर्म ॥ जहांअधर्म धर्मसोदर्शत धर्माधर्मस्वरूप । बुधजनतहांबिचारिकै धारतधर्म अनूप ॥ धर्माधर्मचिह्नकोधारतनरबिपत्तिमेंजौन । आद्यचिह्नहै जौनसो नित्यधर्म ह्वैतौन ॥ जीवनार्थआपदपरे करत पुरुषजो कर्म । सो बिपत्यकृत जानिये नित्यबर्णकोधर्म ॥ त्रिभुवनकेसब

राज्यको सहित बित्त सुखदाय । संजय लियो न चहतहमकरि अधर्म अन्याय ॥ धर्मेश्वर श्रुतिनीति रत बिप्रोपासित जौन। भोजबंश शिक्षा करत कृष्ण महाबलभौन ॥ सामयुद्ध दोऊरुचत हमको सुनो सुकर्म । कृष्ण महायश कहो सो जोदुहुमें हित पर्म ॥ भोजान्धक बार्ष्णेयहैं सैनिक भूपति जौन । बासुदेवकी बुद्धिको भजत महामति तौन ॥ तिनपर बर्षत कामसब महा मोद रसजन्य । प्रतिपालक सबजगतको बासुदेव परजन्य ॥ निश्चयज्ञ सबकर्मके केशवअतिमति ऐन । मम प्रियहमअतिक्रमणनहिं करिहैं तिनकेबैन ॥ बासुदेवउवाच ॥ हमचाहतसबभांति सों हे संजय मतिराश । पांडुसुतनको परम प्रिय भूतिसहित अबिनाश ॥ तैसे नृप धृतराष्ट्रको सुतन सहित प्रियजौन । हम चाहतहैं सर्बथा कियो सूत सुततौन ॥ पाण्डु सुतनसँग साम सो दुस्तर जानोजाय । राज्यलुब्ध धृतराष्ट्र नृप क्यों न कलह सरसाय ॥ संजय रहित अधर्मते पांडवमत सहधर्म । उत्साही पांडवन बलिको पालैंगे निजकर्म ॥ कहत कोऊ परलोकको सिद्धि कर्मते होति । हैमत काहूको नियत बिद्यासिद्धितनोति ॥ धर्मभोज्य भोजनबिना लहततृप्तनहिंपर्म । बिद्यामान महानजे देहधरेको धर्म ॥ बिद्याजनको मिलतिहै सत्यश्रमहूमांहिं । कर्म मिलै नहिं चहै क्यों याते राज्यहि नाहिं ॥ सिद्धि मिलीतौफेरि है कहाकर्म सोकाम । जो संजयऐसे कहौप्रज्ञातनि अभिराम ॥ तौ सुनुजो करतव्यहै होयनहीं सो पूर्ण । संन्यासाश्रम कैसेकरैं तौगृहको तजितूर्ण ॥ अतिथिनको भोजन मिलत गृहआश्रमही बीच । यह गुणिअरु बैगुणिचहतपारथ राज्यनिभीच ॥ जेहिबिद्यासो मिलतफलतासहि सुफल अहीन । कर्मदृष्टिफलपियतजलमिटततृषाजोपीन ॥ विहितज्ञानबिधिकर्मसहकहतसकल मतिमान । मानतसाधुजे कर्मबिन ज्ञानमहतअज्ञान ॥ लखो कर्मबशदेवता बहत कर्मरतपौन । सूर्य्यचन्द्रमा कर्मबश करत

दिवस निशिगौन ॥ दहत हुताशन कर्म वश पायसमिध हुत पर्म। धरतिभार चरअचरको भईभूमिबशकर्म ॥ बहैंनदी सब कर्मबश हरैभूत भवप्यास। भरतकर्म बशशब्दको दिशन सहितआकास ॥ ब्रह्मचर्य्य बशकर्मके श्रेष्ठधरत मघवान। तजि सुख मानस प्रियभये सूरश्रेष्ठ सुखदान ॥ ब्रह्मचर्यधरि वृहस्पति तजिइन्द्रिनको शर्म। याहीते सुरगुरुभये ह्वै बश कर्म सुपर्म ॥ धर्मराज धनपालसब यक्षाप्सरगन्धर्व। ब्रह्मचर्यकरि कर्मबश पायोलोक अखर्व ॥ जानतहौ सबधर्मतुम चारिबर्णकोसूत। काहेते तुमकरतहौ कौरवार्थ हठसूत ॥ राजसूय हयमेधकरि पढ़ैबेद बिदधर्म। क्षत्रिन पूजोधनुषबल देहयगजरथ पर्म ॥ कौरवबध बिनराज्यकी प्राप्तिउपाय न आन। भीमार्जुन के हाथसों संजयसुनो सुजान ॥ क्षात्रधर्म पालन करत पांडव शक्तिप्रमान। क्षत्रिहिमरण स्वधर्ममें हैप्रशस्तमतिमान ॥ जो तुमजानत युद्धमें भूपधर्म अभिराम। अथवाधर्म अयुद्धमें तौ यहसुनु मतिधाम ॥ देखहु चारोंबर्णको धर्म बिभाग बिधान। कर्मपांडवनकोचितै कहहु सुमति अनुमान ॥ पढ़ै पढ़ावै यज्ञ सब करैकरावैजौन। देयलेयशुचिदानको बिप्रधर्ममतिभौन ॥ पालैप्रजाबिधानसों देयपात्रकोदान। द्विजनसंगपढ़िवेदबिधि करैयज्ञसुखदान ॥ धर्मात्मासों धर्मकृत लहिकै पुण्य महान। क्षात्रधर्म रतजातनृप ब्रह्मलोकमतिमान ॥ गोरक्षण करिकैकृपा संचितबिद अभिराम। द्विजनृप सेवनकरिगृही बसैबैश्य निज धाम ॥ वेदपढ़ै नहिं मखकरै भजैबिप्रपदपर्म। सेवा क्षत्रीकी करै नित्यशूद्रको धर्म ॥ पालनसबको नृपकरै बर्णधर्ममेंराखि। भूपतिसबमें वृत्तिसम धरैव्यतिक्रमनाखि ॥ चहत युधिष्ठिर पालिबे क्षात्रधर्म निजजौन। लियोचहत परभूतिजो बिधिबिरोधबशजौन ॥ तासोंसंगरहोतहै संजयसुनोअभर्म। दुष्टनाशको प्रगटकिय अस्त्रअमोघ सुधर्म ॥ सुनोदुष्ट बधकरि लहत

पुण्यसुधर्माभूप । दुष्टभाव कुरुबंशमें संजयबढ़ो कुरूप ॥ मूले
धर्म अधर्मको जानत कौरवसर्ब । निश्चयतातेहोयगो तिनको
नाशअखर्ब ॥ अनयस सुतधृतराष्ट्रकरि हरिपांडवनको बित्त ।
धर्मपुरातननृपनको तामेंधरतनचित्त॥ छलकरिलीन्हींराज्यजो
रहोजोन्याससमान । लयोचहतबनबासके ऊर्द्धतौनबलवान ॥
दियोचहत धृतराष्ट्रनहिं बस्योलोभकेभौन । उचित भागसो
पांडवनको पहुँचतहै तौन ॥ इहांपांडवहि श्लाघ्यहैं मरणयुद्ध
करिजौन । औरराज्यते श्रेष्ठहैं राज्यबंशके तौन ॥ आये जौन
सहायको भूप मृत्युबशसर्ब । गुणहु सभाये पापमय कियोकर्म
कोखर्ब ॥ पांडवमहिषी द्रौपदी ताहिसभाकेभौन । ल्यायनिरा-
दर कौरवन भीष्मादिक कियजौन ॥ नहिंरोको दुःशासनहि
काहूबालक वृद्ध । सबहीते देखतरहे भरेअधर्म समृद्ध ॥ श्व-
शुर सभामें लेगयो गहिदुःशासन दुष्ट । कृष्णाके रक्षक भये
एक बिदुर मतिपुष्ट ॥ रहेभूपजे सभामें ते सब दीन स्वभाय ।
नीतिबचनबोलेनहीं उचितजौन सुखदाय ॥ संजयकरत कुबु-
द्धिते सभामाहँ उपदेश । धर्मशील पांडव सकल सत्य सुमति
के देश ॥ दुष्करकारज सभामहँ यह कीन्हों कृष्णै शुद्ध । तारे
पांडव तरनिह्वै दुखसमुद्रतेउद्ध ॥ कहो सूतसुत सभामें अति
अनुचितयेबैन । कृष्णासों जहँश्वशुरहे भीष्मादिक बलऐन ॥
कृष्णा तुम्हें न औरगति ह्वैदासी अभिराम । जाहु सुयोधन
सदनमें करहु यथोचितकाम ॥ भयेपराजित सुपतितव बरहु
और भर्त्तार । जिष्णुहृदयमेंबचनते हैंसमशल्यउदार ॥कृष्णा-
जिन पहिरतकहे बचन दुशासनदुष्ट । भये पांडुसुत खंडतिल
नर्कबासको पुष्ट ॥ कपटद्यूत करिके शकुनि कहोसुनो नृपधर्म।
हारेभ्रातन कोकरहु पणकृष्णाको पर्म ॥ द्यूतकालमें इनहिंजे
कहे अनेककुबैन। तुमसंजय जानत सकल रहेतहां मतिऐन॥
हम संजय जाबेचहत वृद्ध नृपतिकेपास । भयोनष्टयहकार्यजो

समाधानको तास॥ पुण्य यशस्कर चरितकहि मेटन कुरुकुल नाश। सुनत नीतिमय बचन मम भरे अर्थ सुखराश॥ जो गुणिके धृतराष्ट्रनृप मानैंगे तौ सर्ब। मिटिहै हेतु बिरोधको मिलिहै मोद अखर्ब॥ न तरु भीम अरु जिष्णुको पायसमरमें क्रुद्ध। पराभूत रणभूमितजि ह्वैहै पापारुद्ध॥ जीतिद्यूतमें निन्द्यजेकहे सुयोधन बैन। समयपाय समुझायहैं भीमसेन बलऐन॥ लता रूप धृतराष्ट्रनृप पांडव वृक्षसमान। लता न बाढ़ति वृक्षबिन हे संजय मतिमान॥ बनको राखत व्याघ्र है रक्षकव्याघ्र अरण्य। बन बिनु व्याघ्र न व्याघ्र बिन यह भाषत बुधगण्य॥ दुर्योधनके कर्मते पांडव चाहत युद्ध। नृप धृतराष्ट्रहि कृत्यजो करै सो बेगि अरुद्ध॥ युद्ध साम को हैं खड़े पांडव अतिबलवान। चहैं नृपतिधृतराष्ट्र सो करैं समुझि मतिमान॥ संजय उवाच॥ जयकरी॥ बिदा होत हम तुमसों भूप। बंधरावरे चरण अनूप॥ बासुदेव अर्जुन अरु भीम। माद्रीसुत सात्यकि बल सीम॥ सबसों बिदाहोयहम गौन। कियाचहत कुरुपतिके भौन॥ शिव सुखकियै रहेगो साम। कौरव शंशमाहिं अभिराम॥ युधिष्ठिरउवाच॥ आज्ञालहि मेरी सुखदान। संजयजाहु होयकल्यान॥ नमस्तुम्हैं सुनु बुद्धिउदार। स्मरण किहेहु प्रिय जायहमार॥ शुद्धात्मा तुमको हमसर्ब। जानतहैं करि प्रीति अखर्ब॥ आप्त दूत तुमहौ मतिमान। हौ कल्याणरूप मतिमान॥ बिप्र हस्तिना पुरमें जौन। तपारूढ़ श्रुतिविद मतिभौन॥ तिनसों मेरो कुशल प्रणाम। कहियो संजय मतिके धाम॥ आर्य पुरोहित ऋत्विजजौन। कहेहु प्रणाम तिन्हैं मतिभौन॥ द्रोणाचार्यसुतकेपास। कहेहु प्रणाम सबिनय प्रकास॥ कृपाचार्यके पद गहि पर्म। कहेहु हमार प्रणाम सशर्म॥ कुरुसत्तम भीषमके पाय। बन्दि प्रणाम कहेहु सुखदाय॥ नृपधृतराष्ट्र वृद्ध कुरुनाथ। बन्देहुचरण तास धरिमाथ॥ तासुतनय जेठाहै जौन। पापी

मूढ़ मन्दमतिभौन ॥ कहियो कुशल हमारी ताहि । संजयनीति नियमश्रवगाहि ॥ बन्धुतासुहैजोमतिमन्द । दुःशासनदुर्मतिको कन्द ॥ जासुकृत्य कुलनाश उपाय । दीजोमेरी कुशलसुनाय ॥ सोमदत्त बाह्लीकसुजान । धर्म्म शील शुचिमति बलवान ॥ बंदन ताको कीजोजाय । संजय मेरी कुशल सुनाय ॥ सोमदत्त सुनु सखाहमार । महा धनुर्द्धर बीरउदार ॥ संजय तासों सहित बिधान । कहेहु हमारी कुशल सुजान ॥ बालक वृद्ध युवा कुरु जौन । तिनसों कहेहु यथोचित तौन ॥ आयेजे हैं भूप सहाय । चहूं दिशनके शुद्धसुभाय ॥ संजय तिनसों कुशल हमारि । कहेहु यथाबिधि साधु विचारि ॥ राजकाजकारी नर जौन । तिनसों कहेहु कुशल मतिभौन ॥ बैश्यापुत्र जौन युयुधान । तासों बूझेहु कुशलसुजान ॥ कहेहु शकुनिसों कुशल हमारि । हे संजय बिधिवत निरधारि ॥ संजयकुशल कर्णके पास । धरे सुयोधन आशा जास ॥ कहेहु यथाबिधि कुशलहमारि । होहिं दुष्ट मनमाहँबिचारि ॥ वृद्धस्त्री जेजननिसमान । तिनसोंकुशल कहेहु मतिमान ॥ धृतराष्ट्रकी भार्याजौन । तिनसों कुशलकहेहु मतिभौन ॥ स्नुषासुता जेहैं गुणमान । तिनसों कहेहु कुशल मतिमान ॥ राजसुता तहँ संजय जौन । तिनसों कहेहु कुशल मतिभौन ॥ दासी दास जे सुमति उदार । तिनसों कहियोकुशलहमार ॥ अन्धकुब्जममवृत्ताधीन । तिनसोंकहियो कुशल प्रवीन ॥ फेरिकहेहु तुमसंजयजाय । नृपति सुयोधनसों समुझाय ॥ रहित शत्रुगणसों हम होय । करैंराज्य भूको सुखभोय ॥ काम यह सुतवहृदयशरीर । कम्पितकरत बिचार गँभीर ॥ युक्ति न और बिनाशनतास । प्रियआपनो चिन्ति मतिरास ॥ शक्रपुरीको दीजै राज । करहु युद्ध कै सहित समाज ॥ साधु असाधु बालअरु वृद्ध । बली अबल दारिद्री ऋद्ध ॥ बशईश्वरके जानहुसर्ब । ईश्वरकर्त्ताखर्बाखर्ब ॥ संजय वृद्ध भूप पहँजाय । कहेहु

अरोग्य हमैं सुखदाय ॥ तवप्रसादते पाण्डव भूप । लहिहैं अपनो राज्यअनूप ॥ प्रथमराज्यमें थापोताहि । करुननिरादर मतिअवगाहि ॥ भीष्मपितामहसों ममनाम । कहेहुबंदि फिरि बचनललाम ॥ जैसेजीवैंपौत्रतुम्हार । बरैंपरस्परप्रीतिउदार ॥ भग्नहोत शंतनु को बंश । तुम उद्धार कहेहु प्रशंश ॥ तथा बिदुरसों कहेहु स्वतन्त्र । कुरुकुलरहै सो दीजै मंत्र ॥ युद्धन चाहत चाहतसाम । मंत्र युधिष्ठिर को अभिराम ॥ फेरि सुयोधनसों यह बैन । अनुनय सहित कहेहु मतिऐन ॥ निरापराध सभामें ल्याय । कृष्णाहि जोतुम किय अन्याय ॥ सहो सकल हमसो दुखराश । अब न करहु कुरुकुलको नाश ॥ कियोपराध पूर्बापर जौन । जानत हैं कुरुकुलसब तौन ॥ देमृग चर्म हमैं बनबास । दयोजोबांधिद्यूतछलपास ॥ सोहमसब दुखसहो तुरन्त । अब न करहु कुरुकुलको अन्त ॥ अतिक्रम करि कुन्तीकोजौन । गह्योकेश कृष्णाको तौन ॥ दुःशासन तवमतते बाध । कियोसो हमभूलत अपराध ॥ उचित भाग भूहमकोदेहु । लोभग्रसतमतितेतजिनेहु ॥ शांतिमानह्वैकेकुरुभूप । करैंपरस्परप्रीति अनूप ॥ देहुराज्यको देशसुएक । हमजोकहैंसो सहितबिबेक ॥ अबिस्थल सुवृकस्थल जौन । मांकदीहै शुभथलतौन ॥ और बारुणावतअभिराम । औरएकजोचहहुललाम ॥ एकएकभ्रातनप्रतिएक । देहुग्रामतुमसहितबिबेक ॥ ज्ञातिनसहिततुम्हैंमतिमान । शांति होयगी सहितबिधान ॥ भ्राताभ्राताको सुखदान । पितापुत्रकोपालकप्रान ॥ होयसुखी सबसभाबिशाल । कुरुबंशी अरुजे पांचाल ॥ सुमत सहोहिं सामते सर्ब । कुरु पांचाल न मरैं अखर्ब ॥ चाहत हैं हम साम अवश्य । नतरु युद्ध तजिकै आलस्य ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ धर्म नृपतिसों आज्ञापाय । बिदा भये संजय सुखदाय ॥ कहिधृतराष्ट्र भूपसंदेश । संजय चले आपने देश ॥ शीघ्रहांकिरथ हास्तिन नगर । संजय गये भूप

के बगर ॥ द्वारपालसों बोले बैन । कहुद्वारस्थ हमैं मतिऐन ॥ गोद्वारस्थ भूपकेपास । सबिनय कहन लगो मतिरास ॥ संजय खरेद्वारपरभूप । तवपद देखन चहत अनूप ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ आवनदेहु हमारेपास । मतिरोकहु संजय मतिरास ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ संजय आज्ञा पाय अनूप । गयेजहां कौरव कुलभूप ॥

इतिश्रीउद्योगपर्वणिसंजयदूतगमनवर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

जयकरी ॥ सिंहासन मणिमय अतिरूप । बैठो थबिर जहां कुरुभूप ॥ जायतहां संजय सुप्रणाम । कियो बोलि जयशब्द ललाम ॥ संजयउवाच ॥ होसंजयहौं कुरुपतिभूप । करत प्रणाम तुम्हैं अनुरूप ॥ हेनरदेव पांडवन पास । गये रहे हम सुमति निवास ॥ आय चरणतव लखे ललाम । कहो पांडवन तुम्हैं प्रणाम ॥ पुत्रपौत्रन सहपरिवार । बूझो है तवकुशल उदार ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ बूझत संजय सुमतिनिकेत । पांडव नृपवरसचिव समेत ॥ कहहु कुशल हैं भ्राता सर्व । भूभूषण बलभरे अखर्व ॥ संजयउवाच ॥ तुमदेखो तवयथा अनूप । हैंहर्षिततें तथा स्वरूप ॥ जीति द्यूतमें लीन्हींजौन । धनभूचाहतहैं तेतौन ॥ धर्म शीलते रहित बिकार । चहत आपनो भागउदार ॥ बित्य साध्य जानतते धर्म । जातेधन चाहत हैं पर्म ॥ करत पुरुषपर प्रेरितकाम । ज्योंबश सूत्रदारुकी बाम ॥ यातेपांडवको मतपीन । जानतहैं सोदैवाधीन ॥ पापदोषमय कर्मतुम्हार । यह देखतहैं घोरअपार ॥ जबलों शत्रु न करत बिचार । लीबेको धनभूमि उदार ॥ तबलोंलहहु प्रशंसाभूप । जानो करत भविष्यकुरूप ॥ अजातशत्रु कै पायो तीर्ण । यथासर्प तजि कंचुक जीर्ण ॥ लसत स्वभाविक वृत्तिपसारि । पापपुरातन तुममें धारि ॥ कर्म आपनो चिन्तहु भूप । आर्यवृत्ति तजिधर्म अनूप ॥ निन्दाप्राप्त भये भूपाल । हनोपाप परलोकबिशाल ॥ बिना तिन्हैं एकाकी भूप । लहोजुगुप्सा अधरमरूप ॥ अर्थकाम पावनके हेत । भये

पुत्रबश मोचितचेत ॥ हीनबुद्धि दुष्कल उत्पन्न । जो नृसंशतामें सम्पन्न ॥ बैरी जासु धनुर्द्धरबीर । सो बिपत्तिको लहत गँभीर ॥ सुकुल यशस्वी बरबलवान । स्ववशात्मा बहुश्रुत मतिमान ॥ धर्मसत्यधारेहैं जौन। लहत भाग्यबश बांछिततौन ॥ मंत्रयुक्त भूपति मतिमान । क्रूरकार्य्य करिकै दुखदान ॥ तजि धर्मार्थ बिपतिकोलेत । सुनुये नृपति अमूढ़सचेत ॥ अकस्मात कौरवकुल नष्ट । होत भूमिपति सुनु अस्पष्ट ॥ अर्जुनबर सुरकर्मा जौन । जीतन योग्य सबहि बलभौन ॥ जानत सो सब दैवाधीन। मानत कबहुँ नहीं स्वाधीन ॥ सत्यराज्य लेहैंतेभूप । सुनहु असंशय बचन अनूप ॥ सुख दुख प्रिय अप्रियमें भूप । निन्दा स्तुति लहत अनूप ॥ किये पराध निंद्य जनहोय । साधु सराहत नहिं सबकोय ॥ किये पांडवनको अपराध । निन्दत तुम्हें जे सुमतिअगाध ॥ हौं न प्रजनको चाहत अन्त । देहु भाग तिनको क्षितिकन्त ॥ नतरुजिष्णु पावक बलवान । दहिहै कुरुकुल वृक्षसमान ॥ दुष्टनको करि संग्रह भूप। भये हितनको शत्रु स्वरूप ॥ याते भूमिअनन्तां जौन। रक्षणशक्यन तुमते तौन ॥ हमरथबेग अमितहैं भूप। शयनाज्ञा अब करहु अनूप ॥ भोर सभामें सहकुरुबंश। सुनेहु युधिष्ठिर बचनप्रशंश ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ भोरसभामेंपांडवबैन । सुनिहैंकुरुकुलसहमतिऐन ॥

इतिश्रीउद्योगपर्बणिसंजयागमनबर्णनोनामाष्टमोऽध्यायः ८॥

बैशम्पायनउवाच ॥ रोला ॥ द्वारपाल बोलाय नृप धृतराष्ट्र बोले बैन। जाय बिदुरहि बेगिल्यावहु महामतिके ऐन ॥ भूप आज्ञा पाय क्षत्तापै गयो प्रतिहार । बिदुरतुमको नृप बोलायो चलहु बेगि उदार ॥ भूपआज्ञा सुनतआये बिदुर कुरुपतिद्वार । बिदुर आज्ञासों गयो नृपपाससो प्रतिहार ॥ द्वारपालउवाच ॥ बिदुर आज्ञासो तिहारी पौरिके ढिग भूप। खरे चाहत रावरेकोलखन चहतअनूप ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ देहुआवन बिदुरको प्रियमोहिं अति

मतिधाम ॥ द्वारपालउवाच ॥ जाहुकत्ताभूपकेपद लखहु अति अभि-
राम ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ जायबोलेबिदुरनृपको देखिचिन्तितरूप ।
बिदुरहमतवपायआयेपरमआज्ञाभूप ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ बिदुरसंजय
आयमोसोंकहेनिन्दितबैन । बचनकहिहैंसभामें नृपधर्मसोमति
ऐन ॥ जानिपरतनधर्मनृपकेबचनकहिहैंजौन । दहतमेरेगात्रको
नहिं देत निद्रा तौन ॥ जानि परत न श्रेय अपनो हीन निन्दा
मोहिं । कहहुमो धर्मार्थमें हौ कुशल बूझततोहिं ॥ बिदुरउवाच ॥
हीन साधन बलीसों जन करत जौनबिरोध । चोर कामी वित्त
हरकी लहत निद्रा रोध ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ धर्म श्रेयस बचनतुम
सों सुनो चाहतपर्म । तात तुम कुरुबंशमें राजर्षिहौमतिमर्म ॥
बिदुरउवाच ॥ पुण्यवानहि भजतहैं नर तजतनिन्दितजौन । नहीं
श्रद्धा नास्तिकनमें सुनहुपंडिततौन ॥ जासुनहिंप्रारम्भप्रगटत
मंत्र मंत्रित तौन । कियो कारजही सुप्रगटै सुनो नृपबलभौन ॥
होत जाकी कृत्यको नहिं बिघ्न कारणपाय । क्रुद्धके असमृद्ध
पण्डित मनुजसो सुखदाय ॥ जासुबुद्धि स्वभावकी धर्मार्थ में
रतहोय । कामको तजिकहत बुधजन भूप पण्डितसोय ॥ कि-
यो चाहत करत अपनी शक्तिकेपरमान । करत नहिं अपमान
काहूको सुबुद्धि निधान ॥ ज्ञानवान बिचारि पूंछेकहै परमितबै-
न ॥ करै परउपकारकी सबकृत्यसत मति ऐन ॥ प्राप्तकी नहिं
करतकांक्षा नष्टको नहिं शोच । बिपतिमेंनहिं मोहपावतसुमत
पण्डित रोच ॥ स्वबल साधि बिचारिकै नर कर्मकारज जौन ।
नित्य करत निहारिपण्डित सह प्रयोजन तौन ॥ कर्मआर्यन के
करतसबभूति के कृत चाहि । करत हितकी नहिं असूया कहत
पंडित ताहि ॥ खेदनहिं अपमान ते नहिं मानते कछुहर्ष । क्षो-
भबिनु सुरसरित कैसे पूरमति उत्कर्ष ॥ सर्बभूतनको बिनाशी
सुनो जानत जौन । अरु जौनजानै सर्ब कर्मनकी सुरचना तौ-
न ॥ औसर्ब सामग्रीहि जानै जानु पंडितताहि । शास्त्रकी अरु

लोककी सबरीतिको अवगाहि ॥ है अकुंठित बाकजानै लोक को ब्यवहार । समयजानैतर्क जानै शास्त्रबिद सुउदार ॥ शास्त्र बुद्ध्यनुसार जाकी बुद्धि श्रुति अनुसार । बचनबोलत अर्थयुक्त सुबुद्धि बुधआचार ॥ उन्नध्वअश्रुत दीन अति मन अर्थचहन अकर्म। सुमति ताको कहतहैं सबमूढ़ कुमति अपर्म ॥ छोड़ि स्वासामर्थ्य औरनकी भजैसामर्थ । कहै मिथ्यामित्र सों सोमूढ़ हेतु अनर्थ ॥ करैकाम अप्राप्यको तजिकामना के योग । बली सों जोबैरबांधै मूढ़तेमतिरोग ॥ मित्रकरतअमित्रको रचिमित्र सों अति बैर । दुष्ट कर्महि करत जड़मति मूढ़ सों मय मैर ॥ क्षिप्र करिबे कार्य माहीं करतजो चिरकाल । सुनो श्रीवलभौन भूपति तौन मूढ़ बिशाल ॥ जातबिन आहूत बूझबिनाबोलत बैन । अविश्वसित को बिश्वास जोकोउ करै दुर्मति ऐन ॥ अशिष्यको जेकरहिं शिक्षाशून्यमें नितबास । संगकरत कदर्यको ते मूढ़ दुर्मति रास ॥ पायकै ऐश्वर्य विद्या गर्वधरत न जौन । रहतसाम स्वभावसो मतिमान पण्डित तौन ॥ आपु भोजन करत पहिरत बसनअति सुखदान । भृत्यको नहिं देत तातै है नृसंश न आन ॥ हनत शरबिष एकको कीन्हें प्रयोग स्वतंत्र । देश प्रजन समेत मारत भूपको दुर्मंत्र ॥ एक खाय न स्वाद बस्तुनमंत्रकीजै एक । चलैपथनहिं करैनिद्रा एकसहित बिबेक ॥ क्षमामें इकदोष कहत अशक्त सकल अयान । सो न दोषहि मानिये हैं क्षमी अति बलवान ॥ भूमिग्रासति दोयको बिलशायनको ज्यों सर्प । अप्रवासी बिप्रको नृप रहित जोरण दर्प ॥ दोय कण्टक तीक्ष्ण शोषक देहके अतिमान । कामना निर्द्धनहि अबलहि दहतक्रोध कृशान ॥ दोयकरि बिपरीत कर्म न होत शोभिततौन । बिना उद्यमगृहीभिक्षुक करत उद्यमजौन ॥ दोय ये नरब्याघ्र पावत स्वर्गपर शुभथान । क्षमावान जेप्रभुदरिद्री दानशील सुजान ॥ बांधि गरमें शिलाबोरी सलिलमें जन

दोय । धनिक जौन अदत्त निर्द्धन रहित तपतेहोय ॥ द्रव्यदा-
राहरतजत परकीय सुहृदहि जौन । दोषयाते होतआतुर नाश
कारक तौन ॥ तीनि कारण नाशकेहैं मनुजके अतिमान । काम
क्रोध सुलोभयाते तजतइनहिं सुजान ॥ भक्तको भजमान को
जो कहत हमजे बैन । शरणगत ये तीनि तजतन बीरजे मति-
ऐन ॥ राजअरु बरदान सुतको जन्मसों सुखदान । तीनहूंसम
शत्रुसों कुलराखिबो मतिमान ॥ अल्पमति अरु दीर्घसूत्री अ-
लस कपटी जौन । मंत्रइनसों करत हैं नहिं भूपजे मतिभौन ॥
वृद्धज्ञाति अशक्तसकुल सुसखा धनते हीन । बिना सुतकी ब-
हिनि चारिन त्याज्यहै मतिपीन ॥ पांचपूज्य सुमनुजको हैं अ-
ग्नि माता तात । गुरूआत्मा सहशहैं ये सुनहु मतिअवदात ॥
पांचपूजेहोतयशसुरपितरमानुषजेष्ठ । भिक्षुअतिथिसमानसिग-
रेकहतहैंमतिश्रेष्ठ ॥ तजतहैंयेदोष चाहतभूतिकोनरजौन ॥ क्रो-
धभयआलस्य निद्रा दीर्घसूत्रहितौन ॥ छोड़िइनको दीजियेजो
नहीं रक्षकभूप । मूर्ख ब्राह्मण अप्रिय ब्राह्मिनि भार्य्याहतरूप ॥
दानसत्य सुअनालस्य सक्षमा धृतिहै जौन । तजतनहिं अन-
सूयता सह सुगुण षटमति ऐन ॥ अर्थ आगम निरुजता औ
मधुर भाषिणिबाम । पुत्रभक्त सुकरी विद्याअर्थसुखदललाम ॥
जियत षटमें जीव षटलहि चोर मत्त महान । बैद्यरोगीपासका-
मी बामद्विज यजमान ॥ बाद जोलघुकरै तासों जियतहैभूपाल ।
सुखी जनमें जियत पण्डित सुनो बिज्ञ विशाल ॥ षटाबिनश्यत
बिना देखे कृषीभार्य्या गाय । भूपसेवा पढ़ी बिद्या शूद्रसंग न-
शाय ॥ बाम मृगया पान मदिरा वचन कलुषकठोर । दण्डदा-
रुण परुषतायें नाथ दूषणघोर ॥ बित्त हरिबो सछल अरु बध
बिप्रको रचि बैर । करत तिनको भरतभूमें सहत निन्दा मैर ॥
बुद्धि कौशलता पराक्रम बचन रचन सुधर्म । यथाशक्ति सुदान
जनको करत रंजित पर्म ॥ काम क्रोधहि छोड़ि देत जो पात्रमें

नृपदान। क्षिप्र करि श्रुतवान ताको करत सुमतिप्रमान॥ मनुजमें बिश्वास जौन कराय जानत भूप। दोष सम जोदण्डकरत सोलहत श्रीअतिरूप॥ सावधान जोरहत रिपुसोनहींनिदरत दीन। बलीसों नहिं करत बिग्रह कालबिदसो पीन॥ पाय आपद व्यथित होत न लखत नित उद्योग। धूरधरसों जीति बैरिन करत भूकोभोग॥ नहीं दुर्बलकी असूया करतआदरदेत। क्षमाकर अतिबाद सों ते सुयश सबसों लेत॥ नहींउद्धतवेष धरत न कहत पौरुषजौन। कहत कटुक न लहतहै अतिप्रीति सबसों तौन॥ बैरशान्तहि करत दीप्तन होत दर्पारुढ़। नहीं दुर्गतिजानि आपुहि करत कार्य्य अमूढ़॥ नहींहर्ष स्वश्रेय ते परदुःखते नाहिं हर्ष। परत पायन आर्य तिनको कहत मतिउत्कर्ष॥ समयदेश बिचारि जो ऐश्वर्य चहतसधर्म। जात जहँ तहँ लहतसो अधिपत्यको जनपर्म॥ दम्भ मत्सर पापकृत्य न बैर सबसों जौन। बाद दुर्जनमत्त सों नहिं करतहैं मतिभौन॥ दानहोम सुदैव उत्सव लोकको व्यवहार। करतनित्य सुताहि चाहत देववृन्दउदार॥ देय आश्रितको जो भोजन करतनित्य समर्थ। देतमांगे अहितहूको लहतसोधन अर्थ॥ सामकरसब भूत सों मृदुसत्यशुद्ध स्वभाव। ज्ञाति आकर माहँमणिसे लसितसो सहचाव॥ शापदग्ध सुपांडुके सुतभये बनमें जौन। तुमहिं बर्द्धित किये शीक्षित देश पालक तौन॥ राज्य दीजैउचिततिनको आपुलहि आनन्द। देवमानुष फेरि शक्यन तुम्हैं दीबे दन्द॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ दहत चिन्ता अग्निसो हमको जो करिबेकार्य। पथ्यकहहु बिचारिकै सो बिदुर कुरुकुल आर्य॥ पापको अब डरत पहिले पापके करि कार्य। कहहुसो जोहैं मनीषित धर्मनृपकोआर्य॥ बिदुरउवाच॥ होयशुभकै अशुभअप्रिय होय प्रियकैजौन। कहत पूछे सत्यडरत न पराभवसोंतौन॥ कहत तुमसों तौन हमहित कुरुनको है जौन। श्रेयकरि सह

धर्म भूपति बचन सुनिये तौन ॥ कियो मिथ्याकर्मते जो कार्य्य सिद्धि कुरूप । नहीं फिरि तेहिपापमें मनदीजिये सुनुभूप ॥नहीं जानत को सजनपद दुर्गक्षय अरुवृद्धि । नहींसेना समुझि राखत भूपसोहत ऋद्धि ॥ राज्यको लहि भूपदुर्मति चलत जौन कुचाल । अनयसो श्रीको हनतज्यों जरारूप विशाल ॥भक्षमें ज्यों गुप्तबड़िसहि मत्स्यलीलत पाय । लोभपाती नहीं बन्धन लखतत्यों भ्रमछाय ॥ खातकाचे फलहि रसहि न लहत बीज नशाय । लहतरस फल पक्कभोजी बीज फिरि फलखाय ॥ लेत मालाकारसोंनृप फूलफलकोजौन । काष्ठहरलौं मूलछेदनकरत नहिं मतिमौन ॥ कृपाजाकीव्यर्थहोति निरर्थजाकोक्रोध । ताहि नहिं भर्त्तारकीजे शंठसों रतिरोध ॥ ऋजुबिलोकत प्रजहिइमि मनुकरत चषसोंपान । होति है तेहि भूपको सबप्रजा अतिसुखदान ॥ दियो चाहत देवजिनको पराभव हरिऋद्धि । लेत तिनकी पुण्यगामी प्रथमही हरि बुद्धि ॥ रावरेके सुतनकी भइ बुद्धिनृप बिपरीति । पांडवनके बैरतेनहिं तिनाहिंसूझतिनीति ॥ राज्यलक्षणसों लसत सम्पन्न भूपतिधर्म । बहतआज्ञारावरेकी भूमिपालकपर्म ॥ भाग्ययाते राज्यको है योग्य तिनको भूप । रावरेके पुत्रहैंनहिं राज्ययोग्य अनूप ॥ यहिभांति के सबनीतिमय सुनि बिदुरके बरबैन । कह्योतब धृतराष्ट्र ऐसेवचन अति मतिऐन ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ सुनतहोति न तृप्तितुम्हरे बचन बिदुर सुजान । कहहुयाते बैनफेरि बिचित्रहे सुखदान ॥ बिदुरउवाच ॥ सर्बभूतन माहिं जोहै कुटिल ताकोत्याग । सर्बतीर्थ स्नानतेसों अधिकहैबड़भाग ॥ सामशीक्षासुतनमें तुमकरहुयातेभूप । इहां कीरति होतिजाते स्वर्गप्राप्ति अनूप ॥ रहति जबलों कीर्त्ति क्षितिपरमनुजकीअभिराम । भूपतबलोंजीवपावत स्वर्गमें ध्रुव धाम ॥ अत्रतुमकोमें पुरातनकहतहौंइतिहास । तुमबिचारोताहि करिकै बुद्धिको सुप्रकास ॥ भो बिरोचन अरु सुधन्वा बिप्रसों

संबाद। केशिनी कन्यार्थ सुनिये पुण्यपूरण नाद॥ हो स्वयम्बर केशिनी को बिप्रकन्या तौन। ही सुधन्वाकी गयो तहँ दनुज पति बलभौन॥ दनुजपतिसों बरोचाहत रूपमय लखिताहि। कहन लागी केशिनी इमि क्रोधको अवगाहि॥ केशिन्युवाच॥ हे सुधन्वाबिप्र मम पर्य्यंक योग्य सुजान। दैत्य तुम ममयोग्य हौ नहिं लहु नीचताको ज्ञान॥ बिरोचनउवाच॥ दैत्यपति हम हैं बिरोचन लोकपति बलवान। केशिनीका बिप्र हमसों देवता न समान॥ केशिन्युवाच॥ भोरऐहै द्विज सुधन्वा महातपकोधाम। तब समागम भये तुमको देखिहै अभिराम॥ बिरोचनउवाच॥ कहति हौ तुम यथा सुन्दरि करहिंगे हमतौन। देखिहो हमको सुधन्वा सहित जब मतिभौन॥ बिदुरउवाच॥ निशा बीती सूर्य्य मण्डल उयो जब अभिराम। तहँ सुधन्वाबिप्र आयो महातप को धाम॥ जहँ बिरोचन दैत्यहो सह केशिनी छबिधाम। केशिनी उठि दियो आसन अर्घ्यपाद्य ललाम॥ बिरोचनउवाच॥ सुधन्वासों तदनु बोलो यों बिरोचन बैन। आव मेरे साथबैठो पीठपै मतिऐन॥ सुधन्वोवाच॥ सुनु बिरोचन बैठिहैं हम नहीं तेरे साथ। तबहि सम हम होहिं बैठे संग दिति सुतनाथ॥ बिरोचनउवाच॥ काष्ठको कै दर्भ आसन होत बिप्रसमान। हेम आसन योग्य तेरे नहीं बिप्र सुजान॥ दोहा॥ कह्यो बिरोचन बिप्र सुनु हैं हम सबसों श्रेष्ठ। जो तू आपुहि श्रेष्ठगुणि बोलत गरब यथेष्ठ॥ तौ गज हय मणि धेनु धन कंचन दाव लगाय। चलि कोई मतिमान ढिग भाषिलेहुनिबराय॥ चौपाई॥ यहसुनि कह्योसुधन्वाआरज। हमें न हयगणमणिसोंकारज॥ प्राणद्रब्य प्रणहमसों करिकै। निजपितुपासचलोप्रणधरिकै॥ हैप्रह्लादधरम्प्रतिपालक। तजी न धर्मजानि निजबालक॥ जाकोश्रेष्ठ कहै दनुजेशा। सोईश्रेष्ठ सुजानसुभेशा॥ यह निबन्ध दोऊ करि तेहां। गेप्रह्लादअसुरपतिजेहां॥ तिन्हैंदेखिप्रह्लादसुजाना। पूजि

सुधन्वहि सहित बिधाना ॥ दोउन क्रोधितलखि मतिमाना । कहत भयो करिकै अनुमाना ॥ हौ न समान शील तुम दोऊ । सङ्गमहेत कहा कहु सोऊ ॥ यह सुनि बीर बिरोचन बोलो । मम अरु इनकी गरिमा तोलो ॥ दोउनमेंको श्रेष्ठ स्वभावन । सो गुणि कहौ सत्य मनभावन ॥ हैं हम दोऊ अमरष छाये । प्राणद्रब्य प्रणकरि इत आये ॥ यहिबिधिकह्यो सुधन्वाज्ञानी । तब दनुजाधिप कही सुबानी ॥ एक पुत्र यह आनँद भारण । प्राणद्रब्यपर द्विज यहिकारण ॥ नहिं कछु भाषि सकत यह सुनिकै । उचित होय सो बोलो गुनिकै ॥ सुधन्वोवाच ॥ बन्धुपुत्र हित अनहित कोई । होहु न्यायहै कीजै सोई ॥ जगमें निकट जायकै बूझै । सुकृती कहत सत्यही सूझै ॥ प्रह्लादउवाच ॥ दोहा ॥ जोजन बूझे कहतहैं बचन अन्यथा जौन । देह त्यागकरि मूढ़ सो लहत गूढ़गति कौन ॥ सुधन्वोवाच ॥ सुनो भूपसो लहत दुख लहिकै बहु अपमान । हित गुणिकै जो न्यायमें अनृतहि कहत सुजान ॥ गोहय मानव हेम महि हित जो मिथ्यावैन । बोलत दशशत जन्मसो रौरव लसत अचैन ॥ सुत सनेह तजिकै कहौ सत्य बचन धर्मज्ञ । सो सुनिकै बोलत भयो दनुज नाथ सर्बज्ञ ॥ तोमर ॥ सुनि दनुजनायक दक्ष । इमि कहतभो परतक्ष ॥ मुनि अंगिरा तपधाम । हैं श्रेष्ठ मोसों आम ॥ अरु जननि द्विजकी जौनि । तो जननिसों बरतौनि ॥ यह बिप्र तुमसोंज्येष्ठ । सुत तजो बैर अश्रेष्ठ ॥ तो प्राण जीतो बिप्र । द्विज कहै सो करु क्षिप्र ॥ निज पुत्रसों प्रह्लाद । इमि कहे गहि अहलाद ॥ तब द्विज सुधन्वा मोद । इमिकहे बचन बिनोद ॥ तो महा सुधरमजोहि । तो सुतहि दीन्हों तोहि ॥ दोहा ॥ तासुत मूढ़ बिरोचनहि जीति देत हम तोहि । चलिकेशिनिढिग मम चरण धोवै श्रेयद जोहि ॥ बिदुरउवाच ॥ छन्द ॥ तबहि बिरोचन । डगरि सकोचन ॥ करि ऋण मोचन । लिय बिधि शोचन ॥ दोहा ॥

यहिविधि सुतपितु बंधु हित धर्म्म न तजत प्रवीन। धर्म राखि पांडवन कहँ देहू भूमि मलीन॥ देवन मारत दण्डगहि नाहिं रक्षत मतिमान। मतिहि बिगारि सुधारिकै सुख दुख देत महान॥ कवित्त॥ राग द्वेष बैर औ कलह मद्यपान युवा पति तिय सुत पितु अन्तर औ ज्ञातिभेद। कुत्सित पथ येतेआठ बरजित सदा अब सुनो जिन्हैं नहिं साक्षी देनकहै वेद। सामुद्रिकी औ अरि मित्र वैद धूरत जो शतधा कुशील जौन देत सबहि को खेद। चोर हो प्रथम फेरि बानिज करत ताहि साक्षि जो बदै सो मतिराखै जीतिकी उमेद॥ अपरं॥ रूपहि बिनाशै जरा धीरजै अनाशा नाशै प्राणहि हरत मृत्यु क्रोध श्री हरत है। शीलहि कुसंग कोमलजहि असूयाधर्म्म अभिमान एक ये ते अवगुणधरत है। मंगल सुभावगहै राजसी बढ़ति सुनो मंगलकी दृढ़ताते वृद्धिता भरत हैं। दक्षताते धनबरधत गोपीनाथ तापै संयम गँभीर ताते धीरता धरत हैं॥ अपरं॥ आठ गुण पुरुषहि दीपित करत सुनो प्रज्ञाकुलता ऐमोष इन्द्रिन को करिबो। बहुश्रुतिता औ बाकपटुता कृतज्ञताऔ दान शक्तिसबमें पराक्रम को धरिबो। निन्दितसो सभावृद्ध जामेंनहीं गोपीनाथ निन्दितसो वृद्ध जो न कहै धर्म धरिबो। निन्दितधर्म बिनु सत्य कहै मतिमान सत्य निन्द्जामें छल औशानाश करिबो॥ दोहा॥ सत्यसुयश बिद्यासुधन कुलबल शीलस्वरूप। बचनशुद्धता शूरता येदशस्वर्ग अनूप॥ पापकर्म कृतनरनकहँ हैंदुरलभ येसबै। पुण्यकर्मकृत नरनकहँ सुलभ सुसिद्धि अखर्वै॥ नष्ट सुमति ह्वै पापकृतसदाकरत हैं पाप। शुद्धसुमति लहि पुण्यकृत करत पुण्यकोथाप॥ सुमति मान धर्मार्थचारि सदालहत सुखएव। सदापूर्ण सुखमिलतहै शुद्धपुण्यकोभेव॥ कवित्त॥ दिनमें करै सो कर्म जाते निशि सुखसोवै निशिमेंकरै सो जाते दिनमें न अरसै। आठमासकरै जाते चारि मास सुखबसैचारि

मास करैजाते आठमासहरसै । याबिधितरुणपन सुकृतबटोरि जोरि वृद्धपनभोगैस्वई अकृत न परसै । निशिदिन सबमासचरै तैसेगोपीनाथजाते जौलौंशोचनहींबुद्धिमाहँसरसै ॥ दोहा ॥ युवतिवृद्धकै सुरबर समरजीति फिरिआय । होतप्रशंसन योगजप तपकृत जनम बिताय ॥ ऋषिसरिता तियचरितको अरु महान कुलजौन । प्रभवतासु नहिं हेरिये हेरेहेरत कौन ॥ द्विजपूजारत दानरत ज्ञातिपोष रतभूप । भोगतबहुदिन मेदिनी पावतसुयश अनूप ॥ उरबीको सुबरण पुहुपलुनत नीतिगुणवान । सुर और कृत विद्यअरु ज्ञातानीति बिधान ॥ करत बुद्धिबल कर्म जो श्रेष्ठ कर्म हैतौन । बिनाबुद्धिको बाहुबल करि जयपावतकौन ॥ कहिआये जितने सुगुण पाण्डव मेंते सर्व । श्रेष्ठपिता मानत तुम्हैं तुम सुत गुणो अखर्ब ॥ सोरठा ॥ दुर्योधन मतिमन्द शकुनि दुशासन करणसह । अति ऐश्वर्य्य सुछन्द इनको मत लगिमाति चहौ ॥

इतिश्रीउद्योगपर्वणिबिदुरधृतराष्ट्रसम्बादेबर्णनोनामनवमोऽध्यायः ९ ॥

बिदुरउवाच ॥ जयकरी ॥ भूप सुनो पूरब इतिहास । अत्रि शिष्य मुनि आनँद रास ॥ हंसरूप विहरत सरमान । तहांजाइ सब साध्य सुजान ॥ करि सुप्रशंसा कहे सुभेश । सुमुनि कहो कछु वार्त्ताबेश ॥ सुनिप्रशंस बंशज मुनिहंस । बोलेनीति धर्मकोअंस ॥ जो हमसुने परम सिद्धान्त । सोअब तुमसों कहिअतुदान्त ॥ उचित न कहिबो बचनकठोर । परुषबचन शायक सम घोर ॥ बेधत मरम मरण विधिठानि ।प्रगटितकरत बिथाहिमहानि ॥ बरजित करत धर्मको हेत । हितनमहा अनहित करि देत ॥ रुक्षबचन बोलतनरजौन । रमान निवसति ताकेभौन ॥ परुष बचनको कहे जोनाथ । कबहुं न रहिये ताकेसाथ ॥ जो ऋजु बचन कहत मतिमान । परको अनति सुखकारमहान ॥ श्रीयश सुधरम कारज सिद्धि । सदा लहतसो बिजय समृद्धि ॥

जोअपकारिहु को उपकार । करत तौनसुर सरिस उदार ॥ प्रथम मौनहैं मौन बिधान । द्वितिय मौनहैं सत्यमहान ॥ तृतिय मौनप्रिय बाणी जौनि । चउथमौन सुधरमयुत तौनि ॥ एकएकते सरस प्रभाव । जो शरधत तेहि बरधत चाव ॥ उत्तमपुरुष कहावत तौन । चारिउ मौन सुधारतजौन ॥ बिदुरउवाच ॥ दोहा ॥ सुनि सुबचन मुनिहंसके मोदिसाध्य समुदाय । करिसु प्रशंसाकै बिदा गेनिजलोकसचाय ॥ शकुनि दुशासन करणसहतोसुतभूपसगर्ब । जलपत पाण्डवके बिषे परुष बारताखर्ब ॥ कवित्त ॥ अपकारकीन्हेहूकरत उपकारमानैपरउपकारते वैउत्तममहतहैं । अपकारीहीको करै अपकार मध्यमते और सबहीको उपकारते गहतहैं । करैनहींउपकारमानैनहींउपकारअधमपुरुषतेनकीरति लहतहैं । उपकारकीन्हेंहूकरतअपकारतेहैंअधमाधिराजदोषदेखतेंरहतहैं ॥ दोहा ॥ पहिलेतो सुतनृपकियोपाण्डवकोअपकार । तऊघोषयात्राबिषे उनकीन्होंउपकार ॥ सोउपकारबिसारिफिरिकियोचहत अपकार । भूपतिबरजो निजसुतहि यहबिनाशको चार ॥ उत्तमपदसाधनकरततेउत्तमकुलजात । अतिबिभूति ते लहतहैंअधगिरिअधमनशात ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ प्रीतिलहतजाते सुमनअरुबहु श्रुतिसरबज्ञ । तेहिउत्तम कुलजातकोलक्षणकहो अदज्ञ ॥ बिदुरउवाच ॥ तपब्रतदममखसत्यरतशीलमानशुचिगात । शूरधीरदानीसुबुधि सोमहानकुलजात ॥ उपकारीधरमीयशीशरमीपालकगोत । सोमहान कुलजातनिति शुद्धसुभावतनोत ॥ बिमुखभये इनगुणनते कीन्हें कुत्सितकर्म । महाकुलीनो होतहैजिमि अकुलीनअधर्म ॥ सोरठा ॥ अबनृप सुनोबिबेक भेदभेदके ग्रहणको । ज्ञातभेदकोटेक भेदवेदके वचनको ॥ कवित्त ॥ भेदबुद्धिजाके सो न गहत धरमगैल भेदबुद्धिजाके सो न पावै सुखनेकहे । भेदबुद्धिजाके सो न गौरव लहतनेक योगक्षेम कुशल न ताकेभाग एकहे । भेदबुद्धिजाके सो सिखापन न मानत है

भेदबुद्धि जाके सोनत्यागै निजटेकहै । भेदबुद्धिजाके सो लहत खेद अन्तभेदमासतौ अभेदपै रहतिबितरेकहै ॥ दोहा ॥ गोधन ते सम्पन्नता तरुणिचपलताछाव । ज्ञातिभेद ते भयसदा यह सम्भावितभाव ॥ गोब्राह्मण तियज्ञाति पहँ शूरबीर नरजौन । पाकेफल जिमिवृक्षते गिरत भूपतिमितौन ॥ ज्ञातिबर्गते भिन्न पहँपरति आपदाभूरि । प्रबलबायुडारतयथा एकवृक्षकहँतूरि ॥ तरुसमूह मधिवातजिमि करि न सकत उतपात । तथा ज्ञाति जहँ एकमत तहँ आपद फिरिजात ॥ गोब्राह्मण तियज्ञाति शिशु अरुसुअन्नदातार । शरणागत इनसातमधि सदाअवध्य बिचार ॥ नहींसुधनताते अधिक गुणमनुष्यमें और । धनबि-भूति जाते बढ़ै भूपगहौ सोडौर ॥ रोला ॥ सुवन जो क्षितिपाल तासों क्रोध छल तजवाय । बोलिकै पाण्डवनमंगल दुन्दुभीब-जवाय ॥ भूमि सब युगभागकरि गुरुपुत्र भूपनदेहु । एक मतते भूमि भोगहिं परमआनँद लेहु ॥ मित्रतागहि बन्धुते अन्योन्य पाय सहाय । होहिं बर्द्धित भूमिपै युग शक्र सरिससचाय ॥ र-हौ युगमधि सींव समतुम यथा मेटी दंड । नेहपथ नहिं तजन पावै बंधुदोऊचंड ॥ कहपूरबमनु स्वयम्भुवमूर्खसत्रहहोत । जो अशिष्यहिकरत शीक्षातौनपहिलोशोत ॥ जोनसेवतदारिद्रिहि धनहेतदूजोतौन । तौनतीजो रक्षिशत्रुहि कुशलचाहतजौन ॥ तौन चौथो कथत निजमुख करमकार जो पूर्ष । बैरठानतप्रबल तैसो निबलपंचम मूर्ष ॥ मूर्खछठवौं करत कुत्सितकर्म गुरुकुल जात । कहत सरधाहीनतें सो मूर्ख सतवों ख्यात ॥ गोत तिय सों करत निन्दित कर्म अठवों तौन । पुत्रतिय गामिमान चाहत तौन मूरुखजौन ॥ बीजजो परक्षेत्र डारत मूर्ख दशमसखेद । सोएकादश मूर्खतियसों कहत जो निजभेद ॥ देनकहि नहिं दे-त जो सो मूर्खद्वादश गन्य । भेदजाने बिना जलपततौन तेरहों अन्य ॥ सो चतुर्दशमूर्खगुणत न कर्मको फलपाय । पंचदशवों

याचकन सों कहत कटु रिसि छाय ॥ दान भोग न करत सो-
रहों मूर्खसोधनमान । बन्धुभागहि हरणचाहत सप्तदशमनदा-
न ॥ किरिणिनभ नभ धनुष चाहत गहनपन करिजौन । श्रेष्ठ
सबसों एक औरो मूर्ख जगमें तौन ॥ कइकाबिधिको मूर्खहै तो
पुत्र भूपतिएक । ताहि सबिधि बुझाइके अबकरहुलोपितटेक॥
उचित जो जिमिचरै तासों चरब तेहि अनुसार। धर्मचारीपां-
डवनसों धरमको अधिकार॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ दोहा ॥ मानीगरवी
सुवनमम बरजो मानतनाहिं। कहो पुरुषकहँ मृत्युसमकोमारत
जगमाहिं ॥ बिदुरउवाच ॥ अति आशा अभिमान अति अति
बिवाद अतिकोह । अरु आतमसुख और जो अतिहि मित्रसों
द्रोह ॥ येषट अवगुण मृत्युसम लगिमारतजिमिरोग। इन्हेंजी-
तिबो सुखदहै कहत भूपबुध लोग॥ ठकुरसोहाती बचनकेश्रो-
ता बकताभूरि। दुर्लभ अप्रिय पथ्यके श्रोता बकतादूरि ॥ हम
तुमसों पहिले कह्यो जूवा अनरथमूरि । तुमको लाग्यो अप्रिय
अतिगहे न पथ्य बिसूरि ॥ करणदुशासन शकुनि के ठकुर सो-
हाती बैन । प्रियलागे ते पथ्य सम अबबढ़ि करत अचैन ॥
भृत्यभक्त हित रतनपहँ जे न करत हैं कोप । आपदमें सेवत
तिन्हें ते सिगरेगहिचोप ॥ जो भृत्यन पीड़िलकरतकरत पूर्वधन
गोप । मिथ्याबादीतीनि बिधिके अमात्यकृतलोप ॥ अभिप्राय
गुणि करत जो कारज हितलखिनित्य। हितबकता पटुशुद्धमति
कृपापात्र सो भृत्य ॥ हुकुम न मानै दुष्टमति उत्तरदायकजौन।
अभिमानीनिन्दक असाति त्याज्य भृत्यषटतौन॥ कवित्त ॥ अम-
रषहीन अरिधरष बिहीन राखैरणको हरष उतकरष उभरता।
धरमी पराकरमी सु परमै अभरमी औ शुद्धसाधुकरमी त्यों वाक
तत्त्वधरता। लालसी हुकुमको अनालसी अरोगदक्ष गोपीना-
थ स्वक्षमति रक्षक अक्षरता। लाजके जहाज औदराज काज
करऐसे भृत्यको समाज राखे राजा राजकरता॥ दोहा ॥ होइ

सगुणके अगुणनर भूपति मानत ताहि । सब गुणियनते सर-ससो जगत सराहत ताहि ॥ दुष्ट अकरमी अदयअरि निष्ठुर शापनहार । उन्मादी अरु बानरहि बसन न दीजैद्वार ॥ अर्थ निबन्धसहायहै अर्थ सहाय निबन्ध । बिनुअन्योन्य न सिद्धये यथा पंगुअरुअन्ध ॥ औरनको चाहत बुरो निजभल चाहतजो-न । ईश्वरकरत न तासुफल भ्रष्टजातनरतौन ॥ सुमतिसत्यव्यव-सायगुण जामें धीरजधर्म । परहितरतको भलसदा गहै न कोऊ भर्म ॥ पांडवतेबिग्रहभये निरखो दोष अनेय । व्यथितहोतजाते सुमनहरषत शत्रुअजेय ॥ भीष्म करण कृप द्रोणसुतसहतो सुत शतभाय । प्रीतिकरैं पांडवनसों तो बिभूति अधिकाय ॥ व्याघ्र बिपिनसम परस्पर रक्षितह्वै युगभूप । जीति भूमिसागर प्रभृत लहैबिभूतिअनूप ॥ अर्थसिद्धिजो चहतसोपालतसुधरम कर्म । बिना धर्म्म नहिं होतहै अर्थसिद्धि यह मर्म ॥ राजपुत्र तिय स्वामि अरि अरु आयुर्बलभोग । इनकोकछु बिश्वासनहिं है प्रारब्ध सँयोग ॥ दारुअगिनि धर्षपालहैं काढ़िजारत बनसर्ब । प्रबल बन्धुपीड़ित भये नाशत तथा सगर्ब ॥ यथा गृहीको ध-र्महै अतिथिनको व्यवहार । तथा नृपनको धर्म है बन्धुनको सतकार ॥ लवण तेल तिल मास मधु अरुन रंगको चीर । सिद्ध अन्न गुणगन्धसब गाय दही घृत क्षीर ॥ फलाशाकको बेचिबो द्विज क्षत्रिहि अघमूल । तेहिप्रकार परधन हरब दुहुँ दिशि दायक शूल ॥ बुद्धिमानसों बैरकरि दूरहुबसै अँदेश । बु-द्धि बाहुसों पकरिते वधत न राखत लेश ॥ तासुकरै बिश्वास नहिं जासों कछु उसवास । जासों नहिं उसवास तहँ उचित न अतिबिश्वास ॥ बसत काठमें अगिनि तिमि क्षमावान मति-मान । मंत्रतत्त्व राखतहिये लखन न पावत आन ॥ चारिचक्षु करि लखत जग कहत न करिबो जौन । कार्य सिद्धि जाकी प्रगट प्रबल भूमिपति तौन ॥ हीन प्रकृतिको मित्रहू सुनन न

पावै मंत्र। करै सुमंत्र एकान्तमें तिमि गोपै जिमियंत्र॥ कैईर्षा सुरोषबश करै न अनुचित कर्म। सुमतिनको मतसुनिकरै जौन अनाशक मर्म॥ देशकाल तत्त्वज्ञ अरु हानि लाभ ज्ञातार। प्रिय बचनी धरमी नृपति बरधत रहतउदार॥ पद्धकली॥ नहिं क्रोध क्रियाबल बिरथ जासु। सोभूपभूमिकृत भूबिलासु॥ ऋषिकृपा जुजाकर बिरथरूप। जिमि लियहि खंड तिमि प्रजन भूप॥ अरिल॥ धन गुणतप वय वृद्ध सुबरणित। अरु कुलीनजे धर्मकरत नित॥ इनकरसुबचन दायकशुभगति। तिनकर करत निरादर निरमति॥ दोहा॥ धृति शम दम शुचिता दया सति प्रिय सुबचननेम। आनँद बर्द्धन शमनअघ दुहुँ दिशि दायक क्षेम॥ बिनादोष कोपत रहत तासुकोपअरितासु। दोषौ लखि सुबचन कहत जगत तासुहित आसु॥ हीनबुद्धि राजा जहां मंत्री धूर्त्त अजान। कुशलनहींतिहि राज्यमधि आपदभरत महान॥ मौक्तिकमाला॥ पण्डित सो जो अरथहि साधै। मूरखसो टेकहि अवराधै॥ हानि न सूझै बिरधि उमाहै। मू चखदै धो निरखनचाहै॥ सोरठा॥ चाहत अति ऐश्वर्य दुरयोधन अमरष भरो। बढ़ो कौन नृपवर्य प्रबल बन्धु सों बैरकरि॥ अमरबिलासिता॥ याको भोजा क्षणमधि जनमें। रोये जम्बुकगण तेहि क्षणमें॥ मैं भाषो जू तुमसन तबहीं। याके नाशे जन सुख सबहीं॥ दोहा॥ याके मारे बचहिंगे सुतनिनानघे जौन। याहि जियाये यहि सहित मरिहैंसब बलभौन॥ स्रग्वी॥ सो नहिंमानो तुम समबानी। तासुदशा सो अब नियरानी॥ है अबहीं सो आनँददानी। जो हठ छोड़ै नृप अभिमानी॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ सोरठा॥ तुम सिखवत हित पर्म तुम समानमतिमानको। गहि कठोरहठ कर्ममोसुत नहिंचाहत तजन॥ बिदुरउवाच॥ बिद्याधर॥ मैंजानेहौं आगेते सो राजा जैसो। सोमैं भाष्यो मान्यो नाहीं भोगो तैसो॥ कालैपाये वाके कैहै कालैवैसो। कालैबोलै कालै

छोड़े कालैऐसो ॥ दोहा ॥ तऊहमैं काहिबोउचित तुमकहँ करि-
बोतौन । जाते दुर्योधन तजै ज्ञातिभेद हठजौन ॥ गौरीचर ॥ जो
बन्धुन पालेबरधै सोहितराचो । जो बन्धुन नाशै नहिं बाढ़ै
वहकाचो ॥ ज्योंतन्दुल रैहैनहिं जो कंचुकहीनो । जो बन्धुन
पालै नृपसोई परवीनो ॥ दोहा ॥ दुर्योधन पूरबकियो हठगहि
जो अपराध । सोअबतुम लौपितकरो करिसुनीति अवराध॥
हौ प्रवीण कुलवृद्धतुम गहौकुशल यशगैल । बरिआई बरजौ
सुतहि तजैबैर बदफैल ॥ लघुदीपक ॥ नौनिहरै अयशक्षमा क्रो-
धहि मेटै । बिक्रममेटै अनर्थकारज मेटै ॥ सताचार साधुता
कुलक्षण खोवै । गोतसोत पालिबो सुआनँदभोवै ॥ दोहा ॥
हिये कपट ऊपर अमल जिमितृण छादितकूप । तिनकहँ मि-
त्रनकीजिये ते दुखदायकरूप ॥ कटुबचनी मूरख छली क्षुद्र
अधर्मीजौन । सहसाकरमी पापरत हैं दुखदायक तौन ॥ नेमी
पण्डित धर्मरत प्रेमीशूर सुजान । मित्रकीजिये तिनाहिंजे शुद्ध
सुभावमहान ॥ गन्धान ॥ सालसदीन प्रकृतिजो कटुबाणीबोलै ।
बिनु उत्साही नास्तिकी जोरमानता घरओलै ॥ दयावान ध-
रमी शुचि जो ब्रत पाल अलोलै । ताकेगेह रमा निवासितहै
नहिं कबहूं डोलै ॥ दोहा ॥ अग्निहोत्रफल वेदको तियको पुत्र
सुजान । बहुश्रुति ताको धर्मफल है धन को फलदान ॥ जो
अधर्मकरि जोरिधन करतदान मख कर्म । होत नहीं परलोक
के अर्थतौन यह मर्म ॥ नीर क्षीर फलमूल अरु औषध हविष
अनूप । द्विजगुरु आज्ञाकृत करम नहिंनाशत ब्रतरूप ॥ चोर
कृतघ्नी धूर्त्तको नहिंकबहूं बिश्वास । करतजौन बिश्वास सो पा-
वत नहीं सुपास ॥ प्लवंगम ॥ शोचनीय निर्गुण नर जौन हैं । शो-
चनीय मैथुन बिनु भौनहैं ॥ शोचनीय परजा धन क्षीण हैं ।
शोच्यदेश नरपाल बिहीनहैं ॥ दोहा ॥ देहिनको ज्वर पथ गमन
तियको ज्वर बिनुभोग । हियको ज्वरहै कटुबचन पठुज्वर मूर्ख

सँयोग ॥ हैजितनो सबजगतमें मणिधन तियसमुदाय । बिनु संतोष न एक कहँ तृप्तिहोत सबपाय ॥ सिंहावलोकन ॥ फिरिफिरि तुमसनकहिय्रतु भिरिभिरि । भिरिभिरिबलसबलरिहैथिरिथिरि ॥ थिरिथिरि लरिजब परिहैं गिरिगिरि । गिरिगिरि करिहैं रोदन फिरिफिरि ॥ दोहा ॥ जातेहोत अधर्म तेहिधनहितजत हितला- गि । तेसुख निवसत उरगजिमि जीर्ण कंचुकहित्यागि ॥ जोधन जोरत धर्मगहिचरचनीति पथचाहि । सोधन बरधन थिर रहत सुमति सराहततााहि ॥ सुखअरथिहि विद्यानहीं बिद्यार्थिहिं सु- खनाहिं । बंधुबिरोधिहि कुशलनहिं कुशलबंधुहितमाहिं ॥ कान्ता ॥ आत्मा येह । सरित अछेह ॥ पुण्यसुघाट । गुणजलपाट ॥ दोहा ॥ सत्यदया जहँकूलहै काम क्रोध जलग्राह । करि धीरज नौका नृपति तरौ सहित उत्साह ॥ दशाक्षाकलिका ॥ लिङ्गउदरतौ धीरज ते । करपद कहँचख नीरजते ॥ चखश्रुति रक्षैमानसते । मन- हिकरम शुचि दानसते ॥ दोहा ॥ ब्राह्मण क्षत्रीबैश्यअरु शूद्र नहीको धर्म । भूपतिसब तुमसोंकहे जोभूपनको कर्म ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ छक्का ॥ बिदुर कहततुम सांच । दुर्योधन मतिकांच ॥ नहिंजा- नत हित नेक । शठठानत हठटेक ॥ हमसब जानततौन । अस करि बरधत कौन ॥ दोहा ॥ पैहम सांची कहतहैं अपनेजियकी बात । दुर्योधनके निकटमम सुमन बदलि शिथिलात ॥ कहत गहतकछु बनतनहिं रहत बनतहै मौन । रहत हियो सुखबहत लखि सहत लहत दुखजौन ॥ सोरठा ॥ मेटैमिटैन तौनजो बेधा निरमित किये । भाविहि टारैकौन हरि इच्छा बलवान अति ॥

इतिमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्वणिबिदुरधृतराष्ट्रसंबादेदशमोऽध्यायः १० ॥

धृतराष्ट्रउवाच ॥ दोहा ॥ बिदुर सुनाये आपुजू तुमसहा अनूपम नीति । और कहोजो नहिंकहे वार्त्तापरम पुनीति ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ जयकरी ॥ यह सुनिकहे बिदुर मतिमान । सुनोभूप धृतराष्ट्र म- हान ॥ हमहैं शूद्रयोनि तेहिचार । हमैं न वेदतत्त्व अधिकार ॥

सनतसुजात मुनीश महान । कहिहैं तुमसों सहित बिधान ॥ इमिकहि कीन्होध्यान बिभात । तबतहँ आये सनत सुजात । उठिपूजे धृतराष्ट्र नरेश । कुशल प्रश्नकीन्हें सबिशेश ॥ तब क्षत्ताकरि बिनय प्रणाम । मुनिसों बोले बचन ललाम ॥ शुभ वार्त्ता हिय घरकोदीप । सुनोचहत धृतराष्ट्र महीप ॥ सोकरि कृपाकहो समुभाय । तुम अमृत्यु मङ्गलमय काय ॥ यह सुनिकै धृतराष्ट्र नरेश । बोले मुनिसों बचन शुभेश ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ सोरठा ॥ हे मुनि सनतसुजात तुमेकहँ कहत अमृत्युसब । गुनि अमृत्यु हित तात मुनिजन साधत योग विधि ॥ दोहा ॥ इनमें एक असत्य तो कत तेहिहित उपचार । तातें कहिये प्रगट करिमृत्यु अमृत्यु बिचार ॥ सनत्सुजातउवाच ॥ सुनोभूप ये उभयहैं सत्य न मिथ्याएक । मृत्यु प्रमाद अमृत्युहै जहँ मति ज्ञान बिवेक ॥ काम क्रोध मदलोभ ये आसुरि वृत्ति उदोत । तिनसों मोहित भ्रान्ति गहिजीव मृत्युबशहोत ॥ शम दम साधन करत जे ते सुरवृत्ती दच्छ । तन तजिकै ब्रह्मत्व लहि बिलसत अव्यय अच्छ ॥ मृत्युजीव कहँ करति है स्थूल देहतेभिन्न । बाघ सरिस गहि खात लखि परत न खिन्न अखिन्न ॥ जिमि अज्ञानते रज्जु में होत उरग कोभान । तिमि प्रमाद अज्ञान कहँ मानत मृत्यु अयान ॥ जनम मरणतो तासुहै कारण एक अज्ञान । ताहीते अज्ञान कहँ मानत मृत्यु सुजान ॥ कितै अन्य अज्ञानते यमहि मृत्यु गुणिलेत । पितृलोकमें यमबसत कर्म देखि फल देत ॥ यमआज्ञावरती प्रबल कामलोभ मदक्रोध । मृत्युरूप ये जनन कहँ अनंत न कीजै सोध ॥ कै ममत्व बश चरतगहि बरजित कुत्सित गैल । आतमयोग नहिं लहतते भ्रमत भूमि नभ शैल ॥ स्वर्गादिककी कामगहि करब मखादिक कर्म । सोतन तजिदिव लहतनाहिं लहतमोद पदपर्म ॥ शब्दस्परशरूप रस गन्ध बिषय व्यवहार । हैमोहन इन्द्रियनके भयेप्रीति अधिकार ॥ बि-

षयीकहँ दुखदेतहै कामक्रोध अतिकाय। याते बिषयनकोतजै ध्रुव धीरज सरसाय॥ दुखदजानि बिषयानकहँ निदरि तियाग-तजौन। मृत्युहि तरिफिरि मृत्युबश नहीं होतहैतौन॥ कामीजन लहिकामना श्रौसिनशत जिमि मीन। रजहि धोइत्यागी पुरुष लहतशुद्धपणपीन॥ कामनिबिड़तमनरकहँसोईनरकनआन। क्षण सुखलगिधावत अपटु भरे प्रमाद महान॥ मृत्युन ज्ञानिहि देतदुखतृणमयबाघसमान। बिनारागजन मध्यरहिमोहितरहत सुजान॥ कबित॥ चेतन सुभायजीव चेतन सुभायत्यागि बन्धन बिनाही भूलिबन्धित सो गहिजात। गतिकरि मरकट कीटकी है परगट कामक्रोध बिषय बिआध साथ बहिजात। जन्ममृत्यु इनहींते जायमान जानि ज्ञानी सोईहौं सुप्राणी रटि मृत्युतानि-बहिजात। मृत्युहै अज्ञान ते अमृत्युज्ञान गिरमात ज्ञानऔ अज्ञान ये अमृत्यु मृत्युकहिजात॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ दोहा॥ मृत्युअ-मृत्यु बिधान मधि सुमुनि कहोजो मर्म। बन्धनकर्म मखादिको ज्ञान मोक्षपद पर्म॥ वेदकहत मखकर्मकरि ब्रह्मलोकपर्यन्त। लहि लहि मोदत जीव रहि बरस हजार अनन्त॥ ब्रह्मलोक पर्यन्तको बासकर्म जोदेत। तौकत दुर्घट ज्ञानहित तपत मोक्ष के हेत॥ सनतसुजानउवाच॥ कबित॥ इन्द्रलोक आदिलोक गापति समुभिश्रेय करि मखकर्म उतजाय ते बिभात हैं। सिगरे अपटु ते रजोगुणी सकाम महा कामबन्ध बँधेफिरि आवत औ जात हैं। इन्द्रलोक आदिलोक पतिहूबो जानैतुच्छ ज्ञानी सतोगुणी जे अकाम अवदातहैं। ब्रह्मकोदरशते सरसजानि योगसाधि जायपरमातमाको आतमा है जातहैं॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ दोहा॥ ज्ञान योगरचि होतहै जीव ब्रह्ममें लीन। जीव ब्रह्मते भिन्नके जीव ब्रह्महै ईन॥ ब्रह्मआपु जौजीव है चरत चराचर देह। कौन काजहित कौनको लहिशासन केहिनेह॥ सनतसुजातउवाच॥ जीव ब्रह्मके भेदको मन सब दोष महान। जल तरंग घट मृत्तिका

सरिस उपाधि निदान ॥ अगणित शशि लखि परतहैं जिमि अगणित घटमांह । घटफूटे फिरि एक शशि तिमिसमुझो न-रनाह ॥ जिमितेहि शशिते सकलशशि भाषतभिन्न अभिन्न । तथाब्रह्म जगजीवकी है गति खिन्न अखिन्न ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ सुमुनि परोयह मोहिं गुणि सुनि तो बचन अनूप । ब्रह्मजीव ये उभयहैं कारण कारजरूप ॥ कारज मिटे उपाधिके होत का-रणै आम । भूषणलहे बिनाशके लहत कंचनै नाम ॥ यहि प्रकारहै सत्यजो कहे अमृत्यु प्रभाव । अबहै संशय एकमुनि करिये तासु दुराव ॥ दान मखादिक कर्मकछु कछु रागादिकपाप । करत तास वृत्तान्तसो कहोप्रगट करिआप ॥ तेहि पापहि बि-नाशत धर्मके तेहि धर्महि पाप । जानिपरत नहिं मोहिंहै अ-धिक कौनको दाप ॥ सनत्सुजातउवाच ॥ सुनोभूप दोऊ अमिट किये बनतहै भोग । हैनाशक इन दुहुंनको शुद्धसुज्ञानसुयोग ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ जानो बन्धन पापअरु कामक कर्म अशोक । अब कहिये द्विजवरणको जौन सनातन लोक ॥ सनत्सुजातउवाच ॥ यमदम आदिक योगजे साधनकरत अभंग । तेतनतजि बिधि लोक लहि पूज्य होत बिधिसंग ॥ ज्ञानईक्ष उत्कर्षमख करत जौनमनलाय । देवलोकसो लहत फिरि मोदत ज्ञानहिपाय ॥ बर्ण आश्रम धर्मगुणि चरत सुकर्म यथेष्ट । ईक्षत स्वर्ग न ज्ञान ते साधारण नहिं श्रेष्ठ ॥ जयकरी ॥ कितेमनस्वी योगीदक्ष । करत सुब्रह्मचिन्तवन स्वक्ष ॥ शुचि सम्पन्न गृहीघर जात । सिद्ध अन्न पावैं सो खात ॥ मृगवत रमत बिपिनमें मोदि । नहिंग्राम मधि रहत बिनोदि ॥ गुणत न कर्म अकर्म बिधान । योगी तौन प्रशस्त महान ॥ भिक्षाहेत गृहीघर जात । निजपांडित्य प्रगट करिखात ॥ नहिं प्रशस्त संन्यासीतौन । अबसुनिये ब्राह्मण गति जौन ॥ सताचार रत रहत सदैव । तत्त्वचिन्तवन भूलत नैव ॥ ज्ञातिमध्य यहि बिधि करि बास । शुचि कर तव नहिं

करत प्रकास॥ गहत न ईर्षा गरबनिदान। ब्राह्मणसों ब्रह्मेष्ठ महान॥ दोहा॥ अन्यदेहते आत्मा करता जानत ताहि। कौन पापनहिं करतसो तस्कर कहिये जाहि॥ सताचार रत शुद्ध कवि शुचि असंग्रही जौन। श्रम बिहीन दृढ़निश्चई आत्मा ज्ञानी तौन॥ रहित सब्बै बिषयानसो शुद्ध जासुहिय गेहु। आतम दरशी तौनजेहि श्रवणादिक सों नेहु॥ अश्वमेध आदिक सुमख करता आनँद चाहि। ब्रह्मज्ञानी सुपटु जो ताहि सदृश सो नाहि॥ साम आरयव सत्यदम ब्राह्मी श्रीशुभदाय। श्रीबिद्या अरु शौचये मोहहि देत दुराय॥

इतिश्रीउद्योगपर्बणिसनत्सुजातीयेएकादशोऽध्यायः ११॥

धृतराष्ट्रउबाच॥ दोहा॥ कहौ मौनकेहि हेत अरुहैका मौनसचेत। का लक्षण है मौनको मौन मौनता देत॥ मौन आचरत कौन बिधिकहो सुमुनि समुझाय। पांचप्रश्न गुणमौन मधिनहींमौन रहिजाय॥ सनत्सुजातउबाच॥ जोअप्राप्त मन बचनकरि तासुप्राप्त हितहेत। बचन आदि इन्द्रियनको निग्रहमौनसचेत॥ अन्तर बाह्य प्रपञ्चकोकरिबो जौनअभान। सोलक्षणहै मौनको सुनो भूप मतिमान॥ भयेअभान प्रपञ्चको मिलत पदारथ तौन। जोअप्राप्तम न बचनकरिमौन देतइमि मौन॥ जो अप्राप्तमन बचनकरि ताको करिबो भान। प्रणवद्वार कै मौनको गुणिये तौनबिधान॥ धृतराष्ट्रउबाच॥ पापकरत इन्द्रियनबश जानत वेद न मौन। वेदतासुपापहि हनत कैनाहिं कहियेतौन॥ सनत्सुजात उबाच॥ सुनोभूमिपति कहतहैं पूछततासो भेद। मौनशक्ति साधनबिना ताहि न रक्षतवेद॥ अन्तकालमें वेदतेहि त्यागत है तेहिभाव। जिमिसपक्ष पक्षीतजत खोथहि लागेदाव॥ धृतराष्ट्र उबाच॥ बिना धर्मपालनकिये जो नहिं रक्षतवेद। तौद्विज रटि रटिवेदश्रुति नाहकपावत खेद॥ वेदपाठकरि पुण्यकै द्विजपावत बिधिलोक। यह सुबचन तौ ब्यर्थकाकहिये आनँदओक॥

सनत्सुजातउवाच ॥ वेद्पढ़तनहिं चरतहैं वेदउक्त अनुसार ॥ व्यर्थ तासुपढ़िबो सकल बिनामान उपचार ॥ वेदनको अभ्यासकरि ब्रत मख आदिककर्म । चरतपुण्यलहि तरतसो चित्तशुद्धकरि पर्म ॥ ब्रतमखकरिजो नहिंलहत चित्तशुद्ध सहज्ञान । तऊस्वर्गमधि भोगकरि फिरिमहिंलहत निदान ॥ जोजानौ अध्येन अरु अध्यापन तपरूप । कतनहिं रक्षत पापसों तौयह सुनिये भूप ॥ अबिद्वानबिद्वानसब तपकृत दोयबिधान । अबिद्वानदिवलहतहैं ज्ञानलहत बिद्वान ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ एकतपहि द्वैबिधि कहत गुरुतालघुताराखि । दूरिकरोसंदेहममतासु भेदमुनिभाखि ॥ सनत्सुजातउवाच ॥ हैअसमृद्ध सकामतपअबिद्वानकृततौन । तपनिष्कामसमृद्धहै पण्डितसाधतजौन ॥ सुनोभूपतपमूलसब वेदबचनसिद्धांत । कलमषसहकलमषरहितइमिद्वैबिधिहैदांत ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ तपकलमषमयकौनसोमुनि कहिये समुझाय । जेहिबिहीन तपसाधिद्विज लहैस्वर्ग सुखपाय ॥ सनत्सुजातउवाच ॥ छप्पै ॥ द्वादश कलमष होतभूपसो मनदै सुनिये । काम क्रोध अरु लोभमोह अतृप्तीगुणिये ॥ अदय असूयामान शोकईहा इर्षापुनि । परनिन्दाकी बाणिदोष द्वादशलखिये सुनि ॥ येएक एकअनरथ करण जेहिबिधि ब्याधा मृगणकहँ । जेइन्हैंत्यागि साधत सुतपतौन अकलमष सुतपतहँ ॥ अबद्वादशब्रतसुगुण कहतसो सुनुनरनायक । धर्मसत्य दमसुतप अनिरषा लज्जा चायक ॥ अनसूयाधृति क्षमादान मखवेदश्रवणरति । येद्वादश ब्रत परम सरुचि साधत जे शुचिमति ॥ तेअति प्रवीण द्विजबरण महँ सबजगशीक्षण योगगुर । सोदेहधरे सानँद लखत मानवगणमें परमसुर ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ दोहा ॥ चारिवेदपढ़ि गुणि कितेअरु पुराणइतिहास । नामआदि परपंचतेतासअधिकपरकास ॥ ऐसोजोहै ब्रह्मतिहि जंगमथावररूप । कहतमहासिद्धान्तकरिसुनुऋषिबर मतिरूप ॥ देहपुरुषमानतकिते वेदहिपुरुष

अभेद। महापुरुष छन्दोपुरुष मानतचारि अखेद ॥ क्षरअक्षर उत्तमहिजन मानतकितेप्रधान। तेत्रिवेदहैं जगतमेंतापससंहिताविधान ॥ मायाकारज देहसो क्षरअक्षरसो जीव। इनदोउनते अन्यसो उत्तमगुणमतिसीव ॥ कितनेमायाब्रह्मकहँ मानततौन द्विवेद। एकब्रह्मकहँ गुणलसो एक बेद तजिखेद ॥ उतपादन और समाधिपे उभय अवस्था बीच। मानतहैं अद्वैतमत अन्नच तौनअमीच ॥ येसब तिनकेबीचहम गुणैब्रह्मबिदकाहि। कहिये सनतसुजातमुनि संशयमेटब चाहि ॥ सनतसुजातउवाच ॥ सत्यस्वरूपी ब्रह्मके बिनुजाने बहुवेद। एकब्रह्म गुणिपरत तब सिगरे भेदअभेद ॥ परअनन्दके ज्ञानबिनु लघु अनन्द अभिलाखि। दान यज्ञ अध्येननर करत लोभ अति राखि ॥ करत यज्ञ दानादि नर करिसुजौन संकल्प। थिरततौन संकल्पमधि जेहिबिधि अल्पअनल्प ॥ सत्यानन्द स्वरूपते भिन्नहोत नहिं जौन। सोई ब्राह्मण ब्रह्मबिद सुनो भूप मतिभौन ॥ ब्रह्मतत्त्व जाने बिना नहीं तत्त्वबिद वेश। ताते सतगुरु आसरे गहिबो उचितनरेश ॥ स्वच्छ बिचक्षणतत्त्व बिद शुभलक्षणसों युक्त। संशयछेता शुद्धमति सो पटुसतगुरु उक्त ॥ पढ़ेपढ़ाये बनबसे मुनिमतिजानोभूप। ज्ञातापरमानन्दको ज्ञानी सुमुनि अनूप ॥ देहादिकमें आत्समति कोनहिं राखतलेश। सोईब्राह्मण ब्रह्मबिद यह सिद्धान्तनरेश ॥ लितिमम अनुभव सिद्धशुचि शुभदायकमतयेहु। सोहम तुमसों कहतकरि तुमपै अधिकसनेहु ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्वणिसनत्सुजातीयेद्वादशोऽध्यायः १२ ॥

धृतराष्ट्रउवाच ॥ दोहा ॥ ब्राह्मी सुबचन शुभद जो तुम भाषत मुनिराज। ताहि जानिनहिं जानिबेको कछु औरसमाज ॥ सनत्सुजातउवाच ॥ बारबार बूझत सुनतमुदितहोतक्षितिकन्त। ब्राह्मी बिद्यागुह्ययह है अति महादुरन्त ॥ ब्रह्मचर्य ब्रतधारिके साधन कियेअनूप। सुनेमहियमेंबसातिनहिं सिद्धदेतिअनुरूप ॥ धृतरा-

उवाच ॥ बिद्या शुद्धसनातनी बसहि आत्मासंग । दुर्लभ ताकी प्राप्ति कत मुनि कहिये सो ढंग ॥ सनत्सुजातउवाच ॥ सत्यब्रह्म आत्मत्व ते है देहस्थ सदैव । शुद्धज्ञानके उदय बिनु प्राप्तहोत है नैव ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ बिद्या शुद्धसनातनी प्रगटति साधे जाहि । ब्रह्मचर्यब्रत तौनअब कहिये सुमुनि सराहि ॥ सनत्सुजातउवाच ॥ बसिआचार्य्य योनि में अकपटसो वागर्ब । करै आपनो दूसरो जन्मपूर्ब तजिसर्ब ॥ यथा मूंजते करतहै सीकिहि जुदे निहारि । तथा देहते आत्महि न्यारोकरै बिचारि ॥ देह जन्म को देतहै मातापिता सकर्म । अजर अमरता देतहै बिद्यागुरू सधर्म ॥ द्वैतबुद्धि भयतेकरत रक्षा गुरूमहान । हैसबते उतकृष्ट गुरु सेवत शिष्य सुजान ॥ सबिधि सरुचि आचार्य्य कहँ सेवै शिष्य सुजान । ब्रह्मचर्य्यको तौनहै प्रथम चरण सुखदान ॥ गुरुपत्नी गुरुपुत्र कहँ जानै गुरूसमान । ब्रह्मचर्य्य को तौन है द्वुतियचरण सुखदान ॥ सेइ सुबिद्या पाइकै सेवै गुरुहि प्रशंसि । ब्रह्मचर्य्यको तौनहै तृतिय चरण शुभअंसि ॥ गुरु आश्रम ते अनत नहिं आश्रम करै कदापि । अहङ्कार आनै नहीं सो चौथो पद थापि ॥ चतुःपदी बिद्या मिलत सेये चारोंपाद । जानन को उत्साह यक स्वाध्याई सम्बाद ॥ बुद्धि बिभव है एक अरु एक बुद्धि परिपाक । बिद्या के ये चारि पद जानत सुबुध निशोक ॥ धर्म आदि द्वादश सुगुण आसन प्राणायाम । जप आदिक शुभरूपहैं ब्रह्मचर्यको आम ॥ ब्रह्मचर्य्य इमि साधिकै लहि देवत्वमहान । बिलसतहैं ब्रह्मर्षि लहिऊर्द्ध लोक सुखदान ॥ ब्रह्मचर्य्य ब्रत साधि करि ज्ञानउदय अभिराम । नित्य लोक मधि बसति जो शाश्वतआनँद धाम ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ निरखै नाड़ी मार्गमधि निरखि परत बहुरूप । लखो करत सुब्रह्मको कैसो रूप अनूप ॥ सनत्सुजातउवाच ॥ ब्रह्ममार्ग मधि लखिपरत जो शुक्लादिक बर्ण । ब्रह्मप्राप्तको चिह्न सो है

हियको आभर्ण॥ नहीं ब्रह्मको रूपसो ब्रह्मअगोचर पर्म। अ-
ति सूक्षम अस्थूल अतिअनवगाह अतिमर्म॥ तासों प्रगटत
जगत सब होत ताहिमें लीन। ब्रह्मादिक ब्रह्माण्ड वश माया
के आधीन॥

इतिमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्वणिसनत्सुजातीयेत्रयोदशोऽध्यायः १३॥

सनत्सुजातउवाच॥ दोहा॥ भूपति जो गुण दोषहमतुमसों भा-
षे पूर्व। ज्ञानसहां परधान है योग गउणहै गूर्व॥ अबसाईगुण
दोष फिरि तुमसों कहियततात। करिकैयोग प्रधानअरु ज्ञान-
हिंगउण बिभात॥ चित्त वृत्ति अनुरोधते त्वंपदार्थ कहँ जा-
नि। तदनु बेद श्रवणादिते ब्रह्महि निश्चित मानि॥ पावैपर-
मानन्द तेहि कहिये ज्ञानप्रधान। कहियत योगप्रधान अब सु-
नो भूप मति मान॥ श्रवणमनन करिकै करै निश्चयब्रह्म अनूप।
तदनुनिदिध्यासनहिकरि प्रगटितकरै स्वरूप॥ द्वादशदोषोयथा॥
छप्पै॥ द्वादशकल्मषकहौं भूपसोमनदै सुनिये। कामक्रोधअरुलो-
भअतृप्तिमोहयेगुनिये॥ अदयअसूयामानिशोकइहाइरषापुनि।
परनिन्दाकी बानिदोष द्वादश लखिये सुनि॥ एकएक अनरथ
करण जेहिबिधि व्याधा मृगनकहँ। जे इन्हें त्यागि साधत सु-
तप तौन अकल्मष सुतप तहँ॥ अथद्वादशगुणाः॥ अब द्वादश
ब्रत सुगुण कहत सो सुनु नरनायक। सत्यधर्म दमसुतप अ-
निरषालज्जा चायक॥ अनसूया धृतिक्षमा दानमख वेद श्र-
वण रति। ये द्वादशब्रत परम सरुचि जे साधत शुचिमति॥
ते अतिप्रवीण द्विजबरण मधि सबजगशीक्षण योगगुरु। इत
देहधरे सानँद लसत मानवगण मधि परमसुर॥ तपस्वरूप॥
श्रुति चख नासा जिह्वा त्वचा इन पंचेन्द्रिन कहँ। शब्दरूप
रस परम गन्ध ये पांच विषय पहँ॥ कबहुं न लागनदेइ रहै
शम आदिक साधत। तौन सुतप कैवल्ययोग परधान अरा-
धत॥ ऊर्द्धगतिहि दायकइहौ पैन योगसम अधिक अति। पर-

ब्रह्मलोक भोगवनकी सङ्कल्पित कछु तासुमति ॥ दोहा ॥ होत सुनो सङ्कल्पते तीनि यज्ञते तात। मानस बाचिक कर्म्म करि गुरु मध्यमलघु ख्यात॥ ध्यानवेद जप अरु हवन लीजो क्रमते जानि। तीनी योग प्रधानये ज्ञानऊन शुभदानि॥ पुरुष सिद्ध संकल्प कहँ होत चिदात्मा प्राप्त। जैसे राजा भृत्यपहँ कृपा करत गुणि आप्त॥ ब्रह्मप्राप्तके हेतुको हित यह योग प्रधान। ग्रहण करावै शिष्य कहँ शुचि आचार्य मतिमान॥ सबअधीन यहि योगके अमृतज्ञाता तास। अन्यशास्त्रजे तेहि सुबुधि मानत बचन बिलास॥ सत्यब्रह्म कहँ प्राप्त नहिं होत कर्मते भूप। होम यज्ञते बालनाहिं पावत मोक्ष अनूप॥ रहै मौन एकान्तमें होय निचेष्ट अपार। निन्दा अस्तुति उभय सम गहै योग आचार॥ यहिप्रकारतें ब्रह्मकहँ देखत करत प्रवेश। घटाकाश आकाश मधि जैसे मिलत सुभेश॥ है अनन्तफल जासुसो बिद्या परम अनूप। नाशमान फल कर्मते श्रेष्ठ सुनो हे भूप॥ सो बिचारि शुचि ज्ञान हित यत्न करत मतिमान। तुमसों यह सिद्धांत हम कहियत आनँद दान॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्बणिसनत्सुजातीयेचतुर्दशोऽध्यायः १४॥

सनत्सुजातउवाच॥ दोहा॥ जो निश्चेष्टा होबहम पूर्ब कहहिंहैंभूप। सो श्रुतिमति निश्चेष्ट कहँ जानेहु शून्य सरूप॥ जासु हेतु निश्चेष्टको होय कहत हे तात। करत प्रकाशित शून्य कहँ चित्त सरूप बिख्यात॥ बीजरूप सो जगतको चेष्टा बर्त्तनहार। सूर्य्य प्रकाशित जगत कहँ जासु प्रकाश अधार॥ तेहि भगवान सनातनहि परखत योगीदक्ष। नहिं अयोगबिद लहत हैं सुनोभूप परतक्ष॥ यथा पुरुष संगम सुखहि सुनि प्रौढ़नके पास। नहिं कुमारिकहि गुणिपरत सो आनन्द बिलास॥ जेहि सुबीजते होतहै ब्योम परमअभिराम। जासों क्रमते होतहै जगउतपत्य अक्षाम॥ कारण पांचो भूतको सब भौतिक माधि तौन। जीवा-

त्मा परमात्मा रूप बसत मुद्‌भौन ॥ छप्पै ॥ बीजरूप प्रभु जौन रचत ब्रह्मांड चराचर । सिन्धु सरित शशि सूर सुमन नरभूमि सरासर ॥ कर्म्म चक्र अनुसार चक्रसम भौतिन चालत । बिषय देशगत अज्ञ तिन्हैं दण्डतनहिं लालत ॥ ते इन्द्रीयश्वन सुबश करि देह सुरथ लावत सुभग । प्रभु तिन जीवन कहँ करत हैं परमात्म मुद लाइलग ॥ दोहा ॥ मन विग्रह करि निरखि जेहि अमृत होत नर अक्ष । तेहि भगवान सनातनहिं परखत योगी दक्ष ॥ छप्पै ॥ चित्त स्मरण श्रुति श्रवण बचन रागादि उजागर । शब्द अकाश अनूप श्वसन रागादिक आगर ॥ संस्कार सुकृतादि समूह द्वादश पूरित । नाम अबिद्यानदी ताहि मधि चरत अदूरित ॥ चरितहां पुत्र पशु आदि हित सुफल चहत नहिं तृप्तगहि । ते भ्रमत रहत इंद्रियनके देवनके रक्षित सदहि ॥ करिसुकर्म दिवभोग करत तेहिकर्मधर्म मिति । करि सुकर्म समभोग लहत फिरि भूमि ऊनगति ॥ यह बिचारि जो गुणौ कर्मको नाश भये सति । जीव मोक्ष कतहोत नहीं सोसुनो भाव सति ॥ शुभकर्म तौनकरि भोगतहँ शेष कर्म बश पतत फिरि । बिनु ज्ञान भूपसब करमको नाशहोत नहिं रहत थिरि ॥ दोहा ॥ सर्ब भूतमधि बसत है सोईजीव प्रभुस्वक्ष । तेहि भगवान सनातनहि परखत योगीदक्ष ॥ छप्पै ॥ जो जानो चितरूप जीवता लहतकौनबिधि । तौ सुनिये नरनाथ अबिद्या वृक्ष परमरिधि ॥ गुणसुपक्ष बिनुईश बिहँग गुणपक्षचाहि जब । निवसत तापैआइ होतगुण पक्षप्रगटतब ॥ यथा बासना भ्रमत निति नृप जीवत्वउपाधिइमि । बरज्ञान कर्म करि होतहै मोक्षबंधश्रुति कहततिमि ॥ दोहा ॥ सर्बभूतमधि बसतहै सोई जीवप्रभु अक्ष । तेहि भगवानसनातनहिं परखत योगीदक्ष ॥ जैसेमहदाकाशते घटाकाशकोभेद । तैसेमिटै उपाधिकेजीवब्रह्म निरभेद ॥ यथारज्जु में उरगको होतभ्रमात्मकज्ञान । भ्रमछूटे

ते रज्जुध्रुव जीवब्रह्म तेहिमान ॥ क्रमतेजासों जगतसबअकथ अगोचर अक्ष । तेहिभगवान सनातनहिं परखतयोगी दक्ष ॥ जयकरी ॥ करै अपानप्राणमेंलीन । प्राणैकरैसुमनआधीन ॥ मन हिंबुद्धिबशकरिसुखदाय । बुद्धिहि रहै ब्रह्ममधिलाय ॥ यहिविधि साधियोगअतिस्वक्ष । ब्रह्महिलखै योगबिददक्ष ॥ दोहा ॥ निति देहस्थसुब्रह्म प्रभु तौकततौहित योग । जोयहमानो भूपतौताको सुनोप्रयोग ॥ जाग्रतस्वप्नसुषुप्ति येअरुतुरीयअभिराम । चारि अवस्था कथित ते चारिचरण गुणग्राम ॥ प्रकट रहतिहैं तीनि ये चौथीप्रगट न होत । ताके प्रगटित करनहित करतयोग उ-होत ॥ सो ब्यापित तिन तीनिमधि नाशक मृत्यु समक्ष । ताहि अराधि सनातनहिं परखत योगीदक्ष ॥ जयकरी ॥ पुरुष अंगुष्ठ मात्र अतिरूप । हृदिअकाश मधिबिलसत भूप ॥ सूक्षमदेहहिं कीन्हेंओक । कछूतमधिअधऊरधलोक ॥ जाग्रतआदिअवस्थ न माह । प्रापत होतसुनो नरनाह ॥ ताहिननिरखत मूढ़अल-क्ष । परखतहरषतयोगीदक्ष ॥ अपरं ॥ अंगुष्ठमात्रजोपुरुषमहान । हृदि अकाशमधि बसत सुजान ॥ ताहिबियापत हृदिको ताप । नृपजो ऐसो जानै आप ॥ तौ यह सुनो तासु सिद्धान्त । इन इमि मानत योगीदान्त ॥ जीवअसाधन साधनवान । लहैउभै मधि ब्रह्मसमान ॥ जौनअसाधन सोहैबध्य । जौसमाधन जो-न अवध्य ॥ लहतअवध्य ब्रह्मरसपूर । सो सुख लहतनवध्य अधूर ॥ यहि बिधि दुःख प्राप्त तेहिबीर । जवा कुसुम जिमि स्फटिक शरीर ॥ जो यहि अति आनँदकोपक्ष । तेहिपरखत सो योगीदक्ष ॥ दोहा ॥ इमिदुख ब्यापत जीवको लगेदेहकोलिम्ब । जलके हीले हिलत है जिमिरबिको प्रति बिम्ब ॥ अपरं ॥ लहत ब्रह्मरसपरम सो परखत आत्मअनात्म । ताहि अहुत सबहुत सरिस निजहि गुणतपर मात्म ॥ सब शुभकर्मन को मिलत ज्ञानमाहिं फलभूप । कछूशेष नहिं रहतहैंजानत प्रज्ञअनूप ॥

अहंब्रह्मइमिकहतमति आपुहि जानोहीन। ब्रह्महोतहै ब्रह्मबिद वेदवचनपरवीन॥ यहप्रज्ञाप्रगटित करतजेहिंमधिधीरप्रतक्ष। तेहि भगवानसनातनहि परखत योगीदक्ष॥ छप्पै॥ जोअतीत मनबचनकरिजगजनमादिकहेत। नरबिकारनितियोगसों गम्य पुज्यतादेत॥ कर्मतजेकोदेवकानाशकन्यामकईन। योगाभ्यासी जीवकहँ करत आपुमें लीन॥ जेहि ध्याये नाहिं होतिहै हनिमोक्षगति अक्ष। तेहि भगवान सनातनहि परखत योगीदक्ष॥ केवल मोक्षहि देतहै ज्ञानगुणो मतिभूप। जगप्रपंच दूरस्थसब करत हृदिस्थ अनूप॥ ग्रहण करत संन्यासको शुद्धज्ञानाहित जौन। बंचकसह सो नहिं बसै निजमन रोपत तौन॥ मद्यमांस परतियहितै उपदेशतसो धूर्त। अति भयदायक कर्ममधि लावत कहि कहि पूत॥ न मम अमृत्यु लखातजो मरणमृत्युकहि जात। बन्धन मोक्ष हमैं न कछु यह बिचार अवदात॥ निश्चय जान घटादिमें भ्रम जुरज्जु उरगादि। एकब्रह्म आधीन सबकहत वेद बिद नादि॥ सोइ ब्रह्महम और नहिं इमि जेहि बिषे प्रतक्ष। तेहि भगवान सनातनहि परखत योगीदक्ष॥ ग्रन्थ भारके बहनहित ब्यर्थ करतहैखेद। गुरुसुवाक्यते तत्त्वकोजानत सिगरो वेद॥ यथा सरितते लेत है जल निजकाजप्रमान। चित्तशुद्ध मति शास्त्र तिमि पढ़ै गुणै मतिमान॥ जयकरी॥ पुरुषअँगुष्ठमात्र बिन रूप। हृदि अकाश मधि बसत अनूप॥ अचरज न्यामक शुचिचैतन्य। निति अनन्दमय ईशअनन्य॥ सो हम जगत जगत करतार। माता पिता पुत्र भरतार॥ बर्तमान हम भूत भविष्य। दर्शनीय हम जौन अदृश्य॥ जग पटमें हम तानाबान। हमहीं आतमा हम अस्थान॥ सबमो बपुमाधि करत बिनोद। मोहिं ध्याय पदपावत मोद॥ दोहा॥ सूक्षमते सूक्षम महँ अति दुरलक्ष्य अखर्ब। सर्व प्रकाशक सर्ब गत जानत ज्ञाताप्रर्ब॥ यहिप्रकारके गुणनयुत परमात्मा

अवदात । ताहि चिन्ति हृदिकमल मधि कृत्य कृत्यके जात ॥
इतिश्रीउद्योगपर्वणिसनत्सुजातियवेदान्तसम्पूर्णपंचदशोऽध्यायः १५॥
दोहा ॥ सनत्सुजातहि आदि मुनि जेहि ध्यावत गहिनेम । तेहि जगपति जगनायकहि जपे लहत सबक्षेम ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ कहि सुनीति निजआश्रम गे मुनि सनतसुजात । रजनी भई व्यतीत तब भयो भोर अवदात ॥ प्रात कृत्यकरि तबगयो सभासदनमें भूप । भीष्म द्रोण कृप आदि तहँ आये सुभट अनूप ॥ शल्य जयद्रथ शकुनि सह कृतबर्मा भगदत्त । जयत्सेन आदिक सकल बैठे भूपति मत्त ॥ भूरि श्रवादिक बंधु अरु करणादिक सब मित्र । सोदर दुःशासन प्रभृत लैसँग भूप बिचित्र ॥ दुर्योधन बैठो तहां बैठे बिदुर उदार । द्वारपाल तहँकहत भो संजय आयोद्वार ॥ जयकरी ॥ तब भूपतिकीआज्ञापाय । कियो प्रणाम सूतसुतजाय ॥ कहत भयो फिरि बचनललाम । सब वृद्धनकहँ बिनय प्रणाम ॥ पांडव कहे जोरियुगपानि । यथा उचित वय बिधिक्रम जानि ॥ बेर बेर सब कहँ सहप्रेम । धर्म शील पालक नयनेम ॥ सुनि बोले धृतराष्ट्र नरेश । संजय अब सो कहौ बिशेश ॥ सुनि तो बचनकह्यो जो पार्थ । संजय सोसब कहौयथार्थ ॥ सुनिऐसे भूपतिके बैन । कहतभये संजय मतिऐन ॥ धर्मभूपकेमतिअनुसार । कह्योपार्थरणधीरउदार ॥ लखिकेशवहि नृपनतनहेरि । सगरबकहतभयउद्दमिटेरि ॥ धर्म भूपकेसन्मुखआय । नहिंबचिहैदुर्योधनपाय॥ बन्धुनसहितधर्म क्षितिपाल । असह धृष्टद्युम्नबढ़भाल ॥ इन्द्रहुजीतनयोगसमर्थ । दुर्योधनको गौरव ब्यर्थ ॥ तातेगुणि निजकृतअपराध । देहिभूमि करिमतअवराध ॥ नातरुगदापाणिभटभीम । अयुत नागबल बीरअधीम ॥ सुधिकरि उनको करतबपूर्ब । निजपण समुझि गर्ब गहिगूर्ब ॥ गरजि गजनको यूथ सँहारि । मानव दलमधि धसिहि प्रचारि ॥ तबदुर्योधन तजि निजटेक । नहिं

थिरिहै रणमाहिमें नेक ॥ जबपरबत बेधक ममबान । बरषन लगिहैं बज्रसमान ॥ जबगाण्डीव धनुषकोघोर । दुसह शब्द पूरिहि सबओर ॥ मोहितह्वैहैं भट तजिटेक । तवकुरुपतिनहिं थिरिहैनेक ॥ द्रुपदसुताके सुवनसुभेव । अरुअभिमन्यु नकुल सहदेव ॥ बरषणलगिहैं बाणसटेक । तबकुरुपति नहिं थिरिहै नेक ॥ द्रुपद बिराटसेन रणधीर । सात्यकि और घटोत्कच बीर ॥ गरजिगरजि शायक झरिलाय । लगिहैं बधन सुभट समुदाय ॥ तबदुर्योधन तजिरणटेक । नहिं थिरिहै रण महिमें नेक ॥ मत्स प्रभद्रक भट पांचाल । अरुसंजय रणधीर करा-ल ॥ जबभिरि करषि कठिनकोदण्ड । बरषण लगिहै शायक चण्ड ॥ तबदुर्योधन तजि निजटेक । नहिं थिरिहै रणमहिमें नेक ॥ सुभट शिखण्डी अमरषपूरि । जेहिक्षण बरषत शायक भूरि ॥ अगणित हय गज भटबधि डारि । भिरिहि भीष्मसों ब्यूहबिदारि ॥ तिहिक्षणदुर्योधनतजिटेक । नहिंथिरिहैरणमहि में नेक ॥ धृष्टद्युम्न जबशायकछाय । महारथिनसुरलोकपठाय ॥ द्रुपद लह्यो वरसों अनुमानि । भिरिहि द्रोणसों गौरव आनि ॥ तब दुर्योधन तजिरण टेक । नहिं थिरिहै रण माहिमेंनेक ॥ इमि कहि भाष्यो बचन उदण्ड । कृष्णकृपा जय लहब अखण्ड ॥

दोहा ॥ सभामध्य बनमध्यके समुझिकर्म दुखजूमि । बन्धुनसह दुर्योधनहि मारिलेब सबभूमि ॥ यहिप्रकार अनरथ करन अ-रथ नगर थितबैन । अरुण नैनकरि कहतभो पारथ बिक्रमऐ-न ॥ संजयके ऐसे बचन सुनेभीष्म मतिमान । दुर्योधन सों कहतभे सुबचन सहित बिधान ॥ नारायण प्रभु ह्वै द्विधा नर नारायण नाम । कहवाये अतिउग्रतप करता बरचस धाम ॥ लहि असुरनसों महत दुख सुनि बिधि बचन अनूप । जाहि ध्याय आनँदलहे शक्र सुनो कुरुभूप ॥ नारायण हैं कृष्णप्रभु नर अर्जुनअभिराम । इनसोंजय लहिबोअगमअनरथ आगम

आम ॥ रोला ॥ बीरपार्थहिरण्यपुर चढ़िजायसागरपार । बिदित बीर निवात कवची बांधेसाठि हजार ॥ जीतिशक्रहि कियो जेहिखाण्डवहिबनकोदाह । कियोसोईपार्थतव सहबन्धु बधको चाह ॥ तहँहु जो प्रभु कृष्णमारे असुरके समुदाय । शङ्खचक्र सुगदाधारी तासुसंगसहाय ॥ मंत्रमेरोमानि अबतुमकरोसानँद तौन । होयजाते नाशनाहिं कुरुबंश बर्द्धित जौन ॥ बंशपति तुमभये अबकुरुबंश तोआधीन । करोतौन प्रशंस बिधिजेहि बंशहोइनक्षीन ॥ शकुनि दुःशासन कर्णको मंत्रअनहितजानि । मेहोसम्मतपाण्डवनसोंकह्योमेरोमानि ॥ भीष्मकेयेबचनसुनिकै रह्योभूपतिमौन । कर्णबोलो भूपकोहम अनहित कीन्हों कौन ॥ स्वामिकारय क्षत्रियनको परमधर्म बिख्यात । करतहित कुरुनाथकोहम आपकत अनखात ॥ कियोप्रथम बिरुद्ध तब उन कियेकाव्यवसाय । आपुइमिडरपायनाहक कहतओजिवढ़ाय ॥ बधब हमसब पाण्डवनकहँ कहत हौंनाहिंगोपि । करणके सुनि बचन भीषमकहे मनमेंकोपि ॥ सुनोन्टप धृतराष्ट्र सूतज करत जौन प्रलाप । तौनतो सुत नाश करता मंत्रताको जाप ॥ पाण्डवन कहँ बधै ऐसो तीनिपुरमें कौन । बधै कत नहिं कियो जबहिं बिराट पुरमेंगौन ॥ कहाहो तब करण भूपहि गह्यो जब गन्धर्ब । औरके घरखोइबेको गहतहै अबगर्ब ॥ भीष्मके ये बचन सुनिकै कह्यो कृप आचार्य । सुनोभूपति करिहि सो जो कह्यो पारथ आर्य ॥ भीष्मके अरु कृपाचारयके बचनसुनिभूप । मौनरहि नहिं दियोउत्तर कपटके अनुरूप ॥ फेरिसंजयसों कह्यो इमि सूततौन बताव । धर्मकाके बाहुबलसों गहत रणको चाव ॥ दोहा ॥ वृद्धन्टपतिके बचनसुनि संजयकह्यो सचेत । सुनिये जिनके बाहुबल भूपति आनँदलेत ॥ भीमअर्जुन नकुल अरु बिशदबीर सहदेव । सबजग जेता जासुहै जाहिर बिक्रम भेव ॥ धर्म धुरन्धर धर्मन्टप बिशद बीररसपागि । इनसुभटन

के बाहुबल मुदित रहत भयत्यागि ॥ सदलद्रुपद क्षितिपाल अरु नृपबिराट सहसैन । श्वेतशिखण्डी शङ्ख अरु धृष्टद्युम्न बल ऐन ॥ पांचभाय केकय नृपति अरु सात्यकि रणधीर । इरावाण अभिमन्यु अरु द्रौपदीय बरबीर ॥ धरम धुरन्धर धर्मनृप बिशद वीररसपागि । इन सुभटनके बाहुबल मुदित रहत भयत्यागि ॥ धृष्टकेतु शिशुपालसुत अक्षौहिणिपतितौन । सरभनाम ताकोअनुज धनुधर बिक्रमभौन ॥ जरासन्धको सुवननृपभटसहदेव अमान । असुर आसुरी सैनसह भीमतनय बलवान ॥ इन्हेंआदि अगणितनृपति सदल सबन्धु समस्त । अरु यदुकुलपति नृपतिमणि श्रीयदुनाथ प्रशस्त ॥ धरम धुरंधर धर्मनृप बिशदबीर रसपागि । इनसुभटनके बाहुबल लरन चहत भयत्यागि ॥ सोरठा ॥ यहसुनि वृद्धमहीप ऊबि उससि बोलतभयो । सुनु गाबलि कुलदीप मोहिं न संशय औरको ॥ चौपाई ॥ भीमकठिन दुर्मदरणचारी । गदापाणि करि कुम्भ बिदारी ॥ शूलपाणि सम बिदित अमाना । बज्रपाणि सम अति बलवाना ॥ दण्डपाणिसम अरिदलदरता । कुम्भकरण सम संगरकरता ॥ तेहिआड़न लायक ममदलमें । नहिं कोऊ ताके समबलमें ॥ समुझि तासुप्रण ममहिय सूखत । दुर्योधनके मंत्रहि दूषत ॥ गदाबाहि ममसैन सँहारत । मैं भीमहि देखत भयभारत ॥ संजयसुनो भीमको लरिबो । है ऊपर गिरिवरको परिबो ॥ अवशिभीम मम पुत्रनमारिहि । दुसहशोक शिखिमोहियभारिहि ॥ कोऐसो जोबिक्रमकरिकै । बांचिहिभीमसेनसोंलरिकै ॥ जाकोअधबबिचारिहिसोई । ताहिबचाइसकिहिनहिंकोई ॥ नदकीउलद बायुकीरेला । भीमपराक्रमकोनहिंबेला ॥ भीमसमान और मजबूतन । संजयभीम वधिहि ममपूतन ॥ यहगुणि मोहिं नींद नहिंआवति । दिनदश बादिसो शोच बढ़ावति ॥ तथाफाल्गुण अति धनुधारी । परशुरामके समरणचारी ॥ जो

रणकरि शम्भुहि मुददीन्ही । पशुपति अस्त्रकृपालहिलीन्ही ॥ सिगरे लोकपाल हितधरिकै । दीन्हेंजाहि अस्त्र मुदभरिकै ॥ बिद्यासकल द्रोणसों लहिकै । अति अभ्यासकरि करतब गहिकै ॥ जोजयलेत भयो सुरपतिसों । कोबाचिहि तेहि धनुधर अतिसों ॥ पारथ सबजग जीतनलायक । तापहँ तासुरथी यदुनायक ॥ दिव्यधनुष गांडीव सोहायो । अक्षयतुणीर बिजय प्रदगायो ॥ दिव्यअवध्य तुरग मनगामी । शीक्षक केशवत्रिभुवनस्वामी ॥ प्रबलसब्य साचीसो योधा । कौनकरिहिताको अवरोधा ॥ यहगुणिमम हियपूरणदरजन । मूढ़पुत्रनहिंमानत बरजन ॥ कृष्णचन्द्रसों धनुर्बिधिसीखो । जोप्रद्युम्नसम धनुधर लीखो ॥ तेहिअभिमन्युहि गुणिमन लरजत । परेमोहबश बनत न बरजत ॥ संजय सब नृप भटको मरिबो । सब नद नदी रुधिरसों भरिबो ॥ अमरष बश मम सुत नहिं टरि हैं । सदल प्रबल अरिसों लरिमरि हैं ॥ बंश नाश अनरथ अवरेखो । संजय मोहिं परतहै देखो ॥ संजय मोहिं रुचतहै सोई । जाते यह अनरथनाहिं होई ॥ दोहा ॥ यह बिरुद्ध बढ़ि युद्धके भये परत लखि मोहिं । महाप्रलय कलपांत सम सूत सुनावत तोहिं ॥ यह सुनिकै संजय कहे आपुकहे सो शुद्ध । कुशलहेत करिबो उचित जाते मिटै बिरुद्ध ॥ सोरठा ॥ यह सुनिकै अनखाय दुर्योधन क्षितिपालमणि । गरबी गरब बढ़ाय कहतभयो निज जनकसों ॥ जयकरी ॥ तातगहौ मति संशय नेक । क्षात्रधर्मको गुणो बिबेक ॥ गहि बहु श्रम करि सेवाशुद्ध । अनुपम जौन गदाको युद्ध ॥ सीखे हमहलधरसों तौन । भीम न कबहूंनिरख्यो जौन ॥ गदायुद्धकरि भीमहि मारि । हम जयलेब देहदुखटारि ॥ परशुरामकोशिष्यअमान । धनुधरकर्णबिदितबलवान ॥परखत बेधक सकतिप्रहारि । अर्जुनको बधकरिहिप्रचारि ॥ इनके मरे प्रबलअसकौन ।लरिहिआयममसन्मुखजौन ॥यकइसदिनभृगु-

पतिसोंयुद्ध। करिसमरहो जौनंभटउद्ध ॥ जिहिजीते अगणित क्षितिपाल। सोभीषम ममपक्षबिशाल ॥ कृपधनुधरअरुद्रोणाचार्य। दिव्य प्रभाव अयो निज आर्य ॥ तेहि जीतन कहँ कौन समर्थ। तात बिषाद करतहौ ब्यर्थ॥ अश्वत्थामहि जीतन योग। को जगमें करि अस्त्र प्रयोग ॥ शल्य जयद्रथ शकुनि नरेश। अरु बाह्लीक आदि भट वेश ॥ दुःशासन आदिक मम भाय। तिनसों अधिक कौन दृढ़वाय ॥ असुर अलंबुष अरु भगदत्त। जीतै तिन्हें कौन भट मत्त ॥ इन्हें आदि अगणित क्षितिराज। पाण्डव गणसों अधिक दराज ॥ भटनसहित मम जयके चाह। गहेमहारणको उतसाह ॥ एकादश अक्षौहिणि सैन। है मम संग जगतके जैन ॥ सातक्षौहिणीसेना अंग। है पाण्डवभूपतिके संग ॥ काहे उन्हें अधिकगुणि तात। कहतसभामधि शोचित बात ॥ हम बहुदिनसों भोगत भूमि। द्विजसम दिन ये बितये घूमि ॥ वे निर्द्धन हम धनी अमान। सबबिधि सों सँग बिजय समान ॥ पोचशोच त्यागहु क्षितिनाथ। शतधा गुणो बिजय ममहाथ ॥ दुर्योधन केऐसे बैन। सुनि धृतराष्ट्रभूप लहिचैन ॥ कहतभये कहुसंजय तौन। उतै कितैदल आये कौन॥ सो सुनिकै संजय मतिमान। कहत भयो सुनु भूप सुजान ॥ सात्यकि चेकितानरणधीर। अरु केकयपति अति रणधीर ॥ द्रुपद विराट सुतनसह भूप। जरासन्धको सुवनअनूप ॥ अरु नृपधृष्ट केतु बलऐन। एक एक अक्षौहिणिसैन ॥ लैलै उतैआइ सउमंग। चाहत कियो घोर रणरंग ॥ कपिबर श्रीहनुमानहिं ल्याय। पारथाकियो ध्वजरथ सचाय ॥ दोहा ॥ सिगरे क्षत्री युद्ध को गहे उमंग अधर्ष। शीघ्र युद्ध करिकै चहत लीबो विजय सहर्ष ॥ यहसुनिकै धृतराष्ट्र नृप कहत भयोकरिशोच। नाहक लरिचाहतमरो दुर्योधनमतिपोच ॥भीष्मद्रोण बाह्लीक कृपअरु जे कौरव सर्ब। युद्धकियो चाहत नहीं अनरथ जानि अखर्ब ॥

चौपाई ॥ दुर्योधन भूपति यह सुनिकै। वृद्ध नृपतिसों बोलोगुनिकै॥ भीष्म द्रोण बाह्लीकहि आदिक। हैं जितने मम अरिहित बादिक॥ सुनो तातनाहिं तासु भरोसे। हम इमि संगर करिबो हौंसे॥ हम अरु कर्ण दुशासन लरिकै। बध अरिबिजय लेब प्रणधरिकै॥ नहिं मम जीवत पृथ्वी लहिकै। करिहैं भोगपांडुसुत रहिकै॥ कै हम उन्हें बधब रणमाहीं। कैवे हमकहँ संशय नाहीं॥ वे महि लहिहैं हम कहँ बधिकै। हम बधि उनकहँरहब बराधिकै॥ अब मत और कहै मति कोई। होइहि सो जो होनी होई॥ यह सुनि नृप अति दुखसों नहिकै। बोले क्रोधानलसों दहिकै॥ मत्त गजनके कुम्भ बिदारत। गणे गणेमम सुभटसँहारत॥ शोणित भरी गदा फरकावत। असुर सरिस भीमहि लखि आवत॥ अर्जुन सात्यकिके शरझरमें। परिलहि अगणित शायकधरमें॥ तबमम बचनतातसुधिकरिहौ। नहिंअबहीं निजमनमें धरिहौ॥ इमि कहिकै धृतराष्ट्र महीपति। कही सूतसों बाणी दीपति॥ संजय तौन भाषु अब मोसों। अर्जुन कृष्ण कहै जो तोसों॥ सो सुनिकै संजय बरज्ञानी। कहतभयो केशवकी बानी॥ सामदण्ड अरथनमै राखे। केशव यहिबिधि मोसों भाखे॥ दोहा ॥ संजय वृद्धमहीपसों कहियोमम सन्देश। है सम्मत कीन्हे बिना अनरथको अन्देश॥ यज्ञ करैं परिवार को लखैं कुशल आनन्द। गहि सुनीत गोपित करैं पूर्ब कर्म जे मन्द॥ जगजेता सुर असुरको अर्जुन बीर अमान। रथचढ़िकै गांडीवधनु को करिहै सन्धान॥ तब मिरिकै तासों करै निज रक्षण बिधि जोहि। नहिं धनुधर भट प्रबल अस देखिपरतहै मोहि॥ सोरठा ॥ धरै बाहुपर भूमि क्षणमें दाहै जगत सब। तिहि पारथसों भूमि लहै जीति मानुष कहा॥ एक पार्थ रणधीर करि बिराटपुरमें समर। सब कौरवनसुबीर जीत्योसो जानत जगत॥ ताते कह्यो बुझाय भीष्म द्रोण कृपके सुनत। गुणि

मंत्र मंत्रित शरछाय ॥ हम पांडवन बधव सहसैन । युद्धकरौ कछुसंशय हैन ॥ भीष्म द्रोण आदिक सबवृद्ध । खरे लखैंमम युद्धप्रवृद्ध ॥ जयलीबे को भार उदार । हैमम ऊपरभूभरतार ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ सुनि सूतजके बचन अहीन । भीषम बोलेजानि मलीन ॥ कत ह्वै काल बिबश हत चेत । बोलतकुरुकुल नाशन हेत ॥ तीनिलोकमें ऐसोकौन । रणचाढ़ि जीतैपार्थहिजौन ॥ जासु सहायक श्री यदुनाथ । ह्वै सु सारथी बिलसत साथ ॥ हैतौ पास सर्प मुखबान । छिधाकरी तेहि पार्थ अमान ॥ तोहिं समान अनेकनबीर । क्षणमें बधे पार्थ रणधीर ॥ दोहा ॥ भीषम के येबचन सुनि कर्ण कह्यो करिगौर । बिक्रम लखिबेको कहा सभासदनमें डौर ॥ तुमह्वैहौ जब शांलतब मम बिक्रमउद्दण्ड । लखिहैं सब नृप भटनसह बरषत शायक चण्ड ॥ इमि कहिकै उठि सभाते कर्णगयो निजगेह । तब दुर्योधन नृपति सों भीषम कह्यो सनेह ॥ भीषमउवाच ॥ चौपाई ॥ सत्यप्रतिज्ञाकर्ण लखान्यो । प्रथम युद्धधुर निजपर आन्यो ॥ फिरि ममबध उपरांतलरणको । प्रण कीन्हो अरिसैन दरणको ॥ हमप्रण करतलहु सुनि सोऊ । सोमति जानै अनुचितकोऊ ॥ दशहजार योधानोस्वारथ । हम नितमारब कहत यथारथ ॥ औरो एक कहतसोसुनिये । जयको लहिबो दुस्तर गुनिये ॥ यह सुनिकै दुर्योधन भाखे । कत मम जयमें संशय राखे ॥ हम उनसों काहेमें कम हैं । हम अरिदल मानवके यमहैं ॥ हम अरु कर्ण दुशासनलरिकै । शत्रुन मारि लेब जय अरिकै ॥ बरु फिरि मखदानादिक करिकै । होब अदोष शास्त्रमत चरिकै ॥ यहसुनि बिदुरकहे सुनुराजा । नहिं यहमत आनँदको साजा ॥ सुबुधि करत शम दमको साधन । रागद्वेषको तजि अवराधन ॥ कामक्रोधलोभादिक जीते । दान्त कहत सब ताहि सुनीते ॥ उत्तमलोकदान्त लहि मोदै । सुरन संग बहुकाल बिनोदै ॥ ताते तात दुखद

हठतजिकै । सम्मतकरो शुद्धमतकरिकै ॥ सम्मत किये न आ-
पद आवै । सम्मत करता आनँद पावै ॥ अबहम कहत पूर्व
इतिहासा । सुनौ तौन करि यशकी आसा ॥ दोहा ॥ जालपसा-
स्यो डारिकन ब्याधा बनमें जाय । दोय बिहँग लखिमोह बश
परे जाल मधि आय ॥ तबकरि सम्मत जाल सह ते उड़िचले
सडोर । लखि ब्याधा धावत चलो गहि गहिबे को गोर ॥ तिहि
लखि कोऊ द्विजकहो ब्याधा मूढ़ लखात । नभचारीके गहन
हित दौरो महिपर जात ॥ चौपाई ॥ यहसुनि ब्याधकहो बिधि
अच्छी । तात जालमधि हैं द्वै पच्छी ॥ जब आपुस महँ बिग्रह
करिहैं । तब ये आइ भूमिपर परिहैं ॥ तब ममबश ह्वैहैं यहगु-
निकै । हमसँग चले जात गुणि सुनिकै ॥ इमिकहि ब्याधचलो
प्रणधरिकै । इतनेमें ते गिरे झगरिकै ॥ तब ब्याधा तिनकोगहि
लीन्हों । जो बिधि मनमान्यो सो कीन्हों ॥ ताते कहत सुबुधि
सबकोई । बन्धु बिरोध न नीको होई ॥ बन्धु बिरोध कहतसब
कोऊ । अरिबश परतनिबल ह्वै दोऊ ॥ ताते सुनो सुबुधि पटु
सोई । बन्धुनहित करि राखैजोई ॥ सिंहसमान बन्धु बनराखै ।
तौ तिमि बिलसै जिमि अभिलाखै ॥ यहसुनि वृद्धभूप हित
गाहिकै । पांडुसुतनकी गरिमा कहिकै ॥ सुत हठगहि दुखगहो
अतोलो । आदर करि संजयसों बोलो ॥ केशव कहनकहोजब
तैसो । तदनु कह्यो पारथ भट कैसो ॥ सो सुनि कह्यो सूतसुत
ज्ञानी । भूपति सुनु अर्जुनकी बानी ॥ पारथधनु गाण्डीवहि
फेरत । कहतभयो केशव तन हेरत ॥ भीषम आदि वृद्ध कुरु
कुलके । और भूपजे सुमति अतुल के ॥ कहियो नृपसों तिनके
आगे । कुशल न राज्य लोभसों पागे ॥ दोहा ॥ गुणिमम धनु
धरता बिशद केशव को परभाव । धर्मनृपहि सनमानिकै सादर
करै बनाव ॥ नातरु धनु गांडीवगतबाण श्रवणपै राखि । सब
दल करि देहौं हवन युद्धयज्ञ अभिलाखि ॥ संजयके ऐसे बचन

सुनि न सको अनखाय। सभासदनते उठि गयो दुर्योधन क्षि-तिराय॥ तेहिक्षण गान्धारी कही दुर्योधनहि बुझाय। धर्मभूप तेहि देहु महि सब अनरथ मिटिजाय॥ तिहि अवसर आये तहां व्यासदेव मुनिराय। तब फिरि संजयसों कहे भूपति शोच बढ़ाय॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ पाण्डुपुत्र ममपुत्रको तुम देखे सहसैन। इनमें अधिक प्रभावको कहो कौनमतिऐन॥ संजयउवाच॥ भूप-ति सुनि बहुबार फिरि बूझत बारंबार। सुनो तौन फिरि कहत हम कासुप्रभाव उदार॥ रोला॥ एक दिशिसबलोक माधवएक दिशिगुणिलेहु। तऊइतनो भेदसोतुम समुझिउत्तर देहु॥ सकें नहिंकरिभस्म कृष्णहिसकल जगजनकोपि। सकैंकरिसबजगत भस्मितकृष्ण अनरथचोपि॥ तौनकृष्णसहाय उनकेश्रेष्ठवैजग-जैन।बैरकीन्हेंतौसुतनकहँकुशलकबहूँहैन॥ बचनयहसुनिबोलि पुत्रहि कहो वृद्धनरेश। सुवनसम्मत करौउनसों चाहि कुशल सुभेश॥ कृष्णउग्र प्रभाव प्रभु हैं जगतकृत अवदात। जाहु ताके शरण सादर बचनहित गुणितात॥ दुर्योधनउवाच॥ कृष्ण प्रभु भगवान हैं पैफाल्गुनके साथ। जाब नहिं हमशरण उन-के कहौमति क्षितिनाथ॥ भूपतब गान्धार जासों कहतभो अ-नखाय। मूढ़मानी निज सुतहितुम देहु सबिधि बुझाय॥ गान्धा-र्युवाच॥ पुत्रहठतजि गुरुजननको बचननिजहितजानि। लोभ अति ऐश्वर्यकोतजि धर्मगति अनुमानि॥ करो रक्षण बंशको अरुदेहु अनरथ टारि। लहैं हमसुत शोकनहिं जेहिकरो तौन बिचारि॥ कहे तब धृतराष्ट्र सुतसों व्यास करि अनुमान। करो जननी जनकको अब महत भयसों त्रान॥ गहौपन्था तौन जाते मृत्यु निवसै दूरि। अन्धसुत तुमहोहुमति अतिअन्ध अमरषपूरि॥ व्यासके सुनिबचन नृपसुत रहतभो ह्वै मौन। भयो संजयसों कहत तब वृद्ध उरबीरौन॥ दोहा॥ अबउदार प्रभु कृष्णको नामभेद परभाव। कहोतौन संजय कहे पूरित

अनुपम चाव ॥ सुनि प्रभाव प्रभुकृष्णको वृद्धभूप मतिधाम। शरणागत करि निज मनहिं कीन्हे शुभद प्रणाम ॥
इतिश्रीउद्योगपर्वणिसंजयसम्बादसम्पूर्णोनामसप्तदशोऽध्यायः १७॥
दोहा॥ जब संजय हास्तिन नगर आये कहन सँदेश। तब उत केशवसों कहे चिन्तित धर्मनरेश ॥ जयकरी ॥ मित्र मित्र बत्सल तुम तात। आनँद दायक प्रभुअवदात ॥ जेहिकुसमय में रक्षत मित्र। प्राप्तभयो सोदिन अपवित्र ॥ तुमसम आन न मोहित और। मो उपकार करै यहि ठौर ॥ यह सुनि बोले रुक्मिणिरौन। जो तुम कहौ करैं हमतौन ॥ सुनि बोलो पांडव नृपमौर। सुनो वृद्ध भूपतिको डौर॥ दुर्योधनके मतिअनुसार। करन चहतजो अनरथ चार॥ नहिं कुलधर्म न शास्त्र बिचार। नहिं वृद्धनको बचन अचार ॥ गुणत न करत लोभवशकर्म। लोभी करत न कौन अधर्म ॥ लोभी त्यागि लोककी लाज। करत मोहवश अधरम काज॥ राज्य लोभवश सुमति गवांय। वै कीन्हे बहुबिधि अनिआय॥ हम सो सबसहि तेरहबर्ष। रहे बिपिन महँ त्यागि अमर्ष ॥ तब जो कीन्हे रहे न बन्ध। अब नहिं करत तौन मतिअन्ध॥ हम सब भांति लहो दुख पीन। अब नहिं रहो जात ह्वै दीन॥ महापापको फल दुखदान। नहिं दरिद्रते रौरव आन ॥ अवशि परो अब करिबो युद्ध। दुष्टभोगते मरिबो शुद्ध॥ पै दुहुँदिशिते हितबध देखि। मोहिं होत निरवेद बिशेखि॥ ताते इतो कहत सविधान। राजापिता महा मतिमान॥ ये सब भांति आदरन योग। यदपि करैं अनुचित उपयोग ॥ नृप पितृव्य वृद्ध मतिमान। पुत्र नेहवश भयो अयान॥ अबकर्त्तव्य कौनउपचार। कहौतौन सरबज्ञउदार ॥ यहसुनि कहे कृष्ण अवदात। कुशलहेत दुहुँदिशिके तात ॥ हमहूं वृद्धभूपपहँजाय। नीति धर्म सब कहब बुझाय ॥ मृत्यु पाशते मोचन होय। सबसों कहब तौनाबिधि जोय॥ सुनि नृप

धर्म कहे बिधि जोहिं । जाब आपु कहँ रुचत न मोहिं ॥ दुर्यो-
धनहै महामलीन । नहिंमानी तौबचनअहीन ॥ तबफिरि बढ़ी
अधिक उत्पात । महा कुआगम मोहिं लखात ॥ यहसुनि कहे
कृष्ण अनुमानि । उचित बुझाय कहब हितमानि ॥ जो नहिं
मनिहै गहि हठरोष । तौहम जगमें होब अदोष ॥ सब उन
कहँ निन्दी सबकाल । तुम लहिहौ यश बिजय बिशाल ॥ किये
सभामें अनुचित जौन । ताते उन्हें न निन्दत कौन ॥ तुम स-
न्तोष किये जो भूप । ताते पसरो सुयश अनूप ॥ निन्दित
जीवत मरो समान । मरेहु जियत सम यशी सुजान ॥ दोहा ॥
कृष्णचन्द्रके बचनसुनि कहे युधिष्ठिरभूप । करौ जु मम कल्या-
णहित भावै मंत्र अनूप ॥ भीमसेन यह सुनि कहे कृष्ण कहो
तिमि जाय । जेहिप्रकार कुरुबंशको नाशहेतु मिटि जाय ॥ पै
न चेति सम्मत करी दुर्योधन मतिमन्द । गरबी दोषी पापरत
कुलघालक निरदन्द ॥ जो हठगहि तौबचनको नहिं करिहै
स्वीकार । तौ बधिहौं करि गदाको दारुण दुसहप्रहार ॥ चौपाई ॥
इमिकहि निजबिक्रमकी गुरता । कह्यो भीमकरि गौरवपुरता ॥
सो सुनि कृष्णमुदितह्वैसिधिसों । कीन्हींतासुप्रशंसा बिधिसों ॥
कहे युद्धको भार अमाना । है तौ भुजन भीम बलवाना ॥ अ-
र्जुन नहिं रण करिबो चाहत । जऊअकिञ्चन दानव गाहत ॥
यहसुनि कह्यो पार्थ अनुमानी । सत्यकह्यो तुम केशव ज्ञानी ॥
ताको हेत कहत सो सुनिये । नहिं मरिबेमें कादर गुनिये ॥
नहिं अरिबिक्रम कोभयआने । नहिं निजसम औरहि अनुमा-
नै ॥ अनरथ लखत युद्धके कीन्हें । नृपबंशन परबिपदा चीन्हें ॥
अन्तबिषाद ग्लानिको करिबो । अरुबिषमाद सिन्धुमधि प-
रिबो ॥ मोहिंपरत लखिप्रभु हम ताते । नहिंचाहत रण निजहि
अराते ॥ प्रथम फलोदय गुणिलखि लीजै । तबकारजको रम्भ-
न कीजै ॥ जाकोअन्त जाहि नहिंसूझै । उचित ताहिसो वृद्धन

बूझै ॥ सुबुधि अरम्भैकारजसोई। जाकरअन्त सोहावनहोई ॥ प्रगट अनर्थ परतलखि जामें। कैसे तौन काजहमकामें ॥ है अनित्य जगजानत सोऊ। निधनीधनी मरत सबकोऊ ॥ नहिं हित बन्धुन बधिबोचाहैं। कुलरक्षण को हेतु उमाहैं ॥ दोहा ॥ देव चहतजो होत है पुरुष पराक्रम ब्यर्थ। मूढ़भावना करि मरत हाथ न आवतस्वर्थ ॥ दुरमति दुर्योधन कियो जितने कुत्सित कर्म। ते सब तीक्षण भल्लसम हैं बेधनमम मर्म ॥ ताहूपर अनरथ समुझि चाहत सम ब्यवहार। रुचिहि आपुकहँ करबसो तुम ममसुहित उदार ॥ चौपाई ॥ यहसुनि कह्यो कृष्णहितकारी। सांचकह्यो पारथरणचारी ॥ चाहत दैवहोतहैसोई। तदपिकहत पंडितसबकोई ॥ सुयतनकरबपुरुषकहँचाहत। पटुकरिसुयतन काम उमाहत ॥ निजकर अरथ न देत बिधाता। हैराम्भितका-रजको त्राता ॥ सुयतन किये अरथनहिं पावै। जबतबभारदै-वपरलावै ॥ क्षत्रिहि उचित न गुणिबो एतो। क्षात्रधर्मकी पद्-वीहेतो ॥ वर्णआश्रम धर्म सोहायो। करिबो उचित बड़ेनको गायो॥ तुमदुर्योधन कोमल जानत। नहिंवहराज्य देनअनुमा-नत ॥ चाहतलेन धर्म क्षिति नायक। नहिं यह अनरथ बरिबे लायक ॥ शकुनि दुशासन कर्णकुमंत्री। हैं अनरथ बिधिसाध-कतंत्री ॥ इनहीं मंत्रजुवाकोकीन्हों। छलकरिकै सरबसहरिली-न्हों ॥ जैसो मंत्री तैसो राजा। है सबबिधि अनरथकोसाजा ॥ नहिं येजियत सामबिधिधरि हैं। लरितौ बाणानलसों जरिहैं ॥ जानत इतो तदपि उनपाहीं। जाय बुझाइब अनुचित नाहीं॥ अनरथमूल युद्धनहिं होई। पारथमोहिं रुचत बिधि सोई ॥ पै उनकी कुत्सित मतिजोहीं। सामहोब गुणिपरत न मोहीं ॥ नकु-लउवाच॥ दोहा ॥ धर्मभीमअरुफाल्गुनकहे सुनेसोबैन। देशकाल अनुमानकरि उचितकरोमतिऐन ॥ तैसोमतकरतव्यगुणि जैसो कारजलेश। काजकाजपरमंत्रहैतोषअतोषबिशेश ॥ श्रीमतनृप

धरमज्ञको गुणि सम्मत अनुमान। आपु कहब कुरुसभा मधि शांत बचनसुखदान॥ चौपाई॥ जो तो मत नाहिं निजहित गुनिहैं। तौ गाण्डीव धनुष धुनि सुनिहैं॥ जब अस आय रहहमबनमें। तब जय लेबगुणत है मनमें॥ अब तोकृपा बसत ममगोहन। भूप समूह सैन सहसोहन॥ अबको असजो संमुख थिरिकै। सकै युद्धकरि बलसों भिरिकै॥ यह सुनिकै सहदेव अमाना। बोलोबीर बिदित बलवाना॥ मम मतसुनोवृष्णि कुलनायक। अबनहिं सम्मत करिबे लायक॥ सम्मत करिबो चाहै ओई। तौ तुम करियो बातैं सोई॥ जाते होय युद्ध मनभायो। मिटै शोच जो हियमें छायो॥ उनकोनाश लखब नाहिं जबलों। हिय दाहत क्रोधानल तबलों॥ द्रुपद सुतहि जोदेखो तैसे। यदुपति मिटहि क्रोध अब कैसे॥ यह सुनिकै सात्वकि रणचारी। बोलो बचन बीररस भारी॥ सत्य कहत सहदेव सुबीरा। बनदुख समुझि होत अतिपीरा॥ द्रुपदसुता के कचगहिबेको। गरबित कटुबाणी कहिबेको॥ बिनु दुर्योधनके बधदेखे। नाहिं पाण्डवन शांति ममलेखे॥ बचन कह्यो माद्रीसुत जोई। सब सुभटनको सम्मत सोई॥ यह सुनिकै सबसुभट उछाहे। बहुप्रकार सात्वकिहि सराहे॥ दोहा॥ तहँ सराहिकै सात्वकिहि द्रुपदसुता दुखधारि। कहत भई इमि कृष्णसों भरे बिलोचन बारि॥ जो कीन्हीमम दुर्दशा सभामध्यगहि ल्याय। सोसब जानत कृष्ण तुम का अब कहौं बुझाय॥ जो अबाच्य पाण्डवन कहँ कहे सुने तुम तौन। यथा निकासे जिमि निकासि लहे बिपिन दुख जौन॥ सोसब जानत कृष्ण तुम अब मम बिनती मानि। मति दुर्योधनपर कृपाकरो धर्म अनुमानि॥ हठि अबध्यको बध किये दोषहोत जिहि रीति। तथा बध्यकहँ बिनुबधे दोष होय यह नीति॥ चौपाई॥ पांचगांव ये मांगत जोऊ। दुर्योधन नाहिं देइहि सोऊ॥ ऐसे शठसों सम्मत करिबो। है कादरतापन अनु-

सरिबो ॥ क्षत्रीबधत क्षत्रियहि रणमें। आपन तोषअक्षत्रीमन में॥ उभयबंशमम भूमि बिलासी। ताकोकह्यो केशगहिदासी॥ मम भरतार दाससम ह्वैकै। लखत रहे निज बिक्रम ग्वैकै॥ ऐंचत चीर बिपुलता सुनिकै। नृपधृतराष्ट्र हिये में गुनिकै॥ बरमांगन भाष्यो संकोचन। तब हम कियो दासपन मोचन॥ करि निबन्ध तबगे बन माहीं। अजहुं तौन मत छूटत नाहीं॥ चषजल मोचति यहि बिधि कहिकै। बामपाणिसों शुचि कच गहिकै॥ जाय कृष्णके निकटसयानी। कहतभई अति आरत बानी॥ मरदित दुःशासनके करसों। ममकच कृष्ण लखोचष बरसों॥ इन्हैं पेखि तब सम्मत कीबो। भूपहिकहो धर्म्म पथ लीबो॥ भीम आरजुन सम्मत चाहैं। जोनाहिं करिबो युद्धउमाहैं॥ तौ ममपिता सहितसुतसेना। अरुमम पांचपुत्रजगजेना॥ अरु अभिमन्युबीरबर भिरिकै। लरिहैं क्षात्रधर्म्मपथ थिरिकै॥ लरि सुयोधनहिं बधिजयलैहैं। ममहिय दुख लोपित करिदैहैं॥ दोहा॥ दुःशासनको भुजकटो लखो बिना महिबीच। नहिंकल पावत ममहियो कलपावत दुखनीच॥ कहे भीमकहँ दुर्बचन ममहिय बेधत तौन। गह्यो चहत अब धर्मपथ जौनभीमबल भौन॥ इमि कहिकै गदगद गरेरुदति भई सोबाम। तबतासों इमि कहत भे केशव आनँद धाम॥ तजो शोचकछु दिवसमें लखिहौ चाहति जौन। है अमोघयह बचनमम बारिसकैतिहि कौन॥ सिगरे सुत धृतराष्ट्रके महिपर परे अप्राण। लखिहौपरे शृगालबश कौनसकैकरित्राण॥ सोरठा॥ मुदमंगलकेऐनकृष्णचन्द्रके बचनसुनि। द्रुपदसुता लहि चैन मौनरहीप्रभुध्यानधरि॥

इतिश्रीउद्योगपर्बणिभगवद्दूतगमननामाष्टादशोऽध्यायः १८॥

बैशम्पायन उवाच॥ दोहा॥ द्रुपदसुता अरुकृष्णके सुनिकै बचन सनेम। कृष्णचन्द्रसों कहतभे अर्जुन चाहत क्षेम॥ कुरुपांडव ये दुहुँनके तुम सम्बन्धी तात। अरु सब नृपके सहिततुम आ-

नँद दायक ख्यात ॥ शांति बचनबिधिवत कहेहु जगतकुशल के हेत। प्रीतिनीति जातेगहै दुर्योधन करिचेत॥ जयकरी॥ यह करि सुनि केशव अनुमान। कहेकहब हम उचित बिधान॥ जाते होइहि सम्मत अक्ष। सोई कहब करब परतक्ष॥ जो मम कहो न करिहैं कान। तौजानो भावी बलवान॥ इमिकहिकृष्ण करत परभात। करिकै प्रातकृत्य अवदात॥ पूजि भूसुरनसुनि स्वस्त्यैन। सात्वकिसों इमिकहे सुबैन॥ शंखचक्र अरुगदाउदण्ड। असिलूपरि कठिनकोदण्ड॥ सुयतन धरोसुरथपरल्याय। शत्रुहि साधुनजानब न्याय॥ निज अरिमित्र शत्रुजोहोय। तहाँ निरायुध जात न कोय॥ यह सुनिकै सात्वकि मतिमान। सायुधकिये सुरथ सुखदान॥ मणिकंचनसों रचित अनूप। मेरु शिखरसम अनुपम रूप॥ परम सोहावन खगपति केतु। मानहुँ नभसागरको सेतु॥ शैव्यबलाहक अतिअभिराम। मेघपुष्प सुग्रीव सुनाम॥ वाहकजासु तुरँग ये चारि। तेहि रथ चढ़े कृष्ण मुदधारि॥ सात्वकि सहित सुआनँद पूरि। चलेपसारत परभाभूरि॥ धर्म भूपसब नृपन समेत। चले पठावनआनँद लेत॥ प्रभुहि प्रशंसिधर्म्म क्षितिपाल। यहि बिधि कहत भये तेहिकाल॥ सकल धर्म्म ज्ञातातुम तात। परमसुहितमम हौ बिख्यात॥ तुमसों कहौं सिखापन कौन। कहेहु कुशलहित भावै जौन॥ सब वृद्धन सों सुबचन साम। कहि कहियो मम बिनय प्रणाम॥ पुत्रदरश बिनुदुखी अपार। मम मातहि देखेहु करि प्यार॥ मम दिशिते करिबन्दन चाहि। प्रभुकरियोआश्वासितताहि॥ यहि प्रकार कहि धर्म्म नरेश। फिरे कृष्णको पाइ निदेश॥ नृप तेहिक्षण अर्जुन रणधीर। कहे कृष्ण सोंबचन गँभीर॥ प्रभु उनसों कहियो समुझाय। मोह लोभ बल गर्व बिहाय॥ कुशल बिचारि देहिं अब तौन। आधो राज्यहमारो जौन॥ नाहिं देहैं तबकी बिधि भन्त। करिहौं सब क्षत्रिन्त

को अन्त ॥ यह सुनि मोदि भीमबलवान। गरवी गरजो मेघ समान ॥ करि केशवहि प्रदक्षिण सर्व। फिरि आवतभे पूरित गर्व ॥ दशहजार पैदर रणधीर। दशहजारहय सादीवीर ॥ शासतसारथी अनगिने चार। संगगये मुदभरे उदार ॥ सुनतलखत शुचिसगुण सभेव। चले कृष्ण देवनके देव ॥ नारद मरुत शुक्र सुखदाय। भृगुबशिष्ठ क्रथकुशिक सचाय ॥ वामदेव वाह्लीक सुक्षेम। प्रभुहि प्रदक्षिण किये सप्रेम ॥ परशुरामविप्रन सह आय। मिले कृष्ण सों आनँद छाय ॥ दोहा ॥ पूजितिन्हैं करि वारता रथचढ़ि बरचस धाम। चले कृष्ण निरखतसुखद बन गिरि सरिता ग्राम ॥ दिनविताइ सन्ध्या निरखिजायतृकस्थलग्राम। कृष्णचन्द्र सेनासहित करत भये विश्राम ॥ सन्ध्यावन्दन आदितहँ करि करतब्य समस्त। सविधि अहार बिहार करि बितई निशा प्रशस्त ॥ चौपाई ॥ उत धृतराष्ट्रभूपमन भावत। सुने चारमुख केशव आवत ॥ भीषमद्रोणआदि सब जनसों। यहिबिधि कहतभयेगुणिमनसों ॥ सुनिअतिकृष्ण नीति मगचारी। आवतपाण्डव हित निधिधारी ॥ केशवहमहिं मान्य सब विधिसों। पूजनयोग सदा सब रिधिसों ॥ आनँद दानि कृष्णको पूजन। दुखदायक नहिं पूजब कूजन ॥ ताते बिधिवत पूजन करिकै। सादर आनहु आनँद धरिकै ॥ यह सुनि दुर्योधन क्षितिनायक। पिता वचन गुणि करिबे लायक ॥ देश देशमें हुकुम पठाये। थरथर बसनवास बनवाये ॥ यथा उचित सब सौंज धराये। इस्त्री दासी दास सोहाये ॥ अतर गुलाब सुमन सनमाने। शय्या बसन सुसौरभ साने ॥ सुखद स्वाद सबबिधिके भोजन। योजितकीन्हे योजनयोजन ॥ यहि बिधि सब थरनिरमित सुनिकै। नृप धृतराष्ट्र कहतभो गुनिकै ॥ केशव तीनिलोकके स्वामी। प्रभु न्यामक नागान्तकगामी ॥ इत आवत पूजन हित ताके। पुरमें निरमित करो पताके ॥ पुर

बीथिनकी रचना कीजै। प्रतिद्वारन तोरण रचि दीजै ॥ तरुणी यूथ कुम्भ भरि भरिकै। रहैं बिचित्रबसन धरि धरिकै ॥ दोहा ॥ बिनु दुर्योधन पुत्र सब अरु पउत्र मम सर्ब । आगे बढ़िकै कृष्णकहँ ल्यावहिं जानि सुपर्ब ॥ चारिचारि तुरँगन सहित रत्न हेम अरु अक्ष। देहु सुरथषोड़श द्विरद बसुसह अनुचरदक्ष ॥ आबिक दीजै परबतो सहस अठारह ताहि। सहसबाह दीजै समुद चीन देश भवचाहि ॥ रत्नन भूषित दीजिये शतदासी शतदास। दुःशासनके गेहमें देहु कृष्णकहँ बास ॥ हय गज अरु सब पुरुषप्रति अठगुण भोजन देहु । मणि भूषण दै पद कमल सेवहु सहितसनेहु ॥ रोला ॥ बचनयह सुनि बिदुर बोले भूप तुम मतिमान। उचित जो करतब्यसो बिधि कहत सहित बिधान ॥ जानि तौ वृत्तांत अबहम कहतहैं यहटेरि। कृष्ण नहिंतौ सुबश ह्वैहैं दान सेवाहेरि ॥ प्राण सम प्रिय पार्थ उनकहँ तथा पांडवसर्ब। त्यागिनिजहित मिलतऔरहि छली पापी खर्ब ॥ जानि महिमा कृष्णकी अरु उचित बिधि अनुमानि। कहैं केशव जौन सोई करौनिजहित जानि ॥ नगर भूषितकिये आगे गये दीन्हें रत्न । त्यागिहैं नाहिं पाण्डवनको संग कृष्ण सयत्न ॥ दुर्योधनउवाच ॥ भूप भाषत बिदुर जो सो सांच मिथ्या एक। जौन उनको कहो करिबो कहत तजिकै टेक ॥ पूज्यजगमें कृष्ण सतिपै बसत अरिके संग। पूजि गजरथ रत्नदीबो न्यायको नहिं अंग ॥ भीष्मउवाच ॥ करौ अति सत्कारकै मति करौ कछु सत्कार। नेकु अनुचित मानिहैं नहिं कृष्ण सुबुधि उदार ॥ पांडवनसों तौ सुतनसों चाहि सम्मत रीति । कृष्ण आवत कहन जगकी कुशल कारक नीति ॥ कृष्णप्रभु धर्मात्माको कहो करिबेयोग । बंशरक्षण हेतुनृपयह परम सुहित प्रयोग ॥ दुर्योधनउवाच ॥ पितामह जो कहतसो नाहिं भूपतिन को धर्म। कहत हमलहि समयऐसो नृपनको जो कर्म ॥ पकरि कृष्णहि

बांधि कारागेहमें करिदेहु। सुनत पांडव भागिजैं हैं बिजय सहजहि लेहु॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ पुत्र ऐसो कहो मति नहिं उचित ऐसो तात। कृष्ण सम्बन्धी तदपि ह्वै दूत आवत ख्यात॥ भीष्मउवाच॥ भूप तो सुत महा दुरमति कहत कुत्सित बैन। कहो बांधै कृष्णकहँ अस कौन है जगजैन॥ दुसह याके वचननहिं सहिसकत हैं ममकान। भाषिइमि उठिगये भीषम जीवसम मतिमान॥ उतै रजनि बिताइ प्रभुकरि प्रातकृत्य सनेम। नौमि बिप्रनसुनत आशिष सुरथचढ़िगुणिक्षेम॥ चलेसेवित वृकस्थलपति नृपतिसों सहसैन। इतैकौरव चलेआगे जानिप्रभुता ऐन॥ बिनादुर्योधन नृपनके सुतनके समुदाय। द्रोणकृप बाह्लीक भीषम आदि आनँदछाय॥ जायपथमें कृष्णसों मिलि किये नगरप्रवेश। परमशोभित भयो तेहिक्षण नगरबीथी देश॥ नारिनर सब उमँगि ठाढ़े भये परमापूरि। देखिलोचनसफल करिकरि लहत आनँदभूरि॥ युवति कितनी लखतिठाढ़ीं जालरन्ध्रन लागि। लगि गवाक्षन रहीं कितिक मृगाक्षिणी मुद पागि॥ लखतपुरछबि देत आनँद राज गृहमधि जाय। जाय तिसरे चौक उतरे सुरथते सुखदाय॥ वृद्धनृप बढ़िजायआगे कियो पूजन पर्म। यथा वय प्रभु मिले सबसों भाषि सुबचन मर्म॥ पूजि कृष्णहिं सबिधि भूपति सभा गृहमधि ल्याय। हेम मणिमय रचित आसन तासुपर बैठाय॥ किये मधुपरकादिको सतकार चाहत जौन। कुशल परशन भये बूझत कहे रुक्मिणिरौन॥ कछू क्षण रहि तहां नृपसों बिदा ह्वै यदुराय। बिदुर के गृहजाय निवसत भये सुख सरसाय॥ भरे आनँद बिदुर बिधिवत पूजि प्रभुके पाय। भये बूझत पांडवनको कुशल प्रीति बढ़ाय॥ कृष्ण चेष्टा पांडवनकी सबिधि तासों भाषि। रहे कछुदिन पृथाकेढिगगयेअति अभिलाषि॥ देखिकृष्णहिं मिली कुन्ती करतरोदनभूरि। कृष्णइवासितकिये कहिकैबचनअंजुता।

पूरि ॥ भरेचपहिय गरोकुन्तीभई बूझतश्रासु । रहेसेवत तुमहिं तुमहौ करत पालन जासु ॥ गयेकाढ़ राज्यलेतेरुदत मोकहँत्या-गि । जायनिरजन बिपिन मधिकिमि रहेश्रतिदुखपागि ॥ भेरि शंख मृदंग धुनिसुनि बन्दिजनकेबैन । रहेजागत सुनेजम्बुक नादते बलऐन ॥ दोहा ॥ बहुप्रकार दुखसहिरहे द्वादशबर्ष अ-चैन । बर्षएक अज्ञातबसि भयेप्रगट जगजैन ॥ जे जेता सुर असुरके प्रगट पराक्रम जासु । वरुण शक्रयम रुद्रसम करता संगरश्रासु ॥ केशव तेसब सुवन मम हैं कैसे यहिकाल । अब का करिबो चहतहैं जेठोसुत क्षितिपाल ॥ चौपाई ॥ अयुतनाग बल भीम अमाना । अबका कियो चहत बलवाना ॥ तिमि धनुधर जिमि बिदित पिनाकी । सुरपति लहत न समताजा-की ॥ सोअर्जुनचाहतकाकीबो । गुणतनगुणत भूमिकोलीबो ॥ माद्रीसुत दुर्मद भटनायक । सकल जगतके जीतन लायक ॥ हैंकैसे किमि दिवस बितावत । बिनुदेखे दुखमोहिं सतावत ॥ पुत्रनते मोहिं अधिक पियारी । कहाँ कुशलहै द्रुपद दुलारी ॥ नहिंधन हरिबेको दुखमोहीं । नहिंबनगमन सुतनको जोहीं ॥ जितनो दुख कटुबचन कहनको । द्रुपदसुताके केशगहनको ॥ युवतिधर्मयुत बैठीजोही । धारे एक बसन अति सोही ॥ कच गहि तासु सभामधि ल्यायो । सोदुख तात न दुरत दुरायो ॥ पराधीन परि हम दिन खोवति । निजपूरब अघफल गुणि रोवति ॥ तुमसेजासु हितू प्रभुत्राता । तिहिऐसे दुखदेतबिधा-ता ॥ जेहिप्रकार याहदुखसों मोचन । होयकरौसो राजिवलो-चन ॥ केशवजाय मौनमति रहियो । भीमार्जुनसों इमि सब कहियो ॥ क्षत्री जेहिहित प्रगटत जगमें । प्राप्तभयो अब सो दिन अगमें ॥ अतिविक्रम करि महिधर लीन्हों । बुधनतजत तेहि बिनुश्रम कीन्हों ॥ दोहा ॥ कुन्तीके येबचनसुनि कहेकृष्ण भगवान । कोतुमसी सीमन्तिनी भाग्यवान मतिमान ॥ अति

उत्तम कुलजाततुम उत्तम कुलमेंप्राप्त। उत्तम पुत्रनकी जननि जेमत अतिप्रियआप्त॥ अतिसम्पति अरुअतिबिपतिलहत महत जनजौन। घटतबढ़त निशिनाथहैं नहिंताराागणतौन॥ अतिसुख अतिदुख सहतहैं जेतुम सरिस महान। नहिं लघु-जन गहिसकतहैं सुख दुखभोगबिधान॥ धनलहिकरतप्रमाद लघु दुख लहि हाहाकार। साधुरहत जिमि बहतवृष गुरखा-रीकोभार॥ चौपाई॥ दुर्योधनकी छलमतिरजनी। तामधिसोय पाण्डुसुत परनी॥ बहुदिन कुत्सित सपनसमाना। भोगकिये दुखदुसह अमाना॥ अबलौं पाइसुदिन दिनजागे। मिलि सु-हितन सों आनँदपागे॥ रणमहिसभा सदनमधि धसिकै। अतिबिक्रम पटुताकरि लसिकै॥ बिजयगुणी गुणगरिमालहि कै। लेहैंराज्य सुखहि मुदगहिकै॥ तजौशोच अबधीरज ध-रिकै। लखिहौ सुतनमोदसोंभरिकै॥ द्रुपदसुताअरु सुवनति-हारे। कहप्रणाम सुबिनय बिहारे॥ सुनिकुन्ती बोलीलहि आ-नँद। हौतुमकृष्णअभयबरदानद॥ धर्मपाहि सबसुखकेदायक। ममपुत्रनके परम सहायक॥ हौतुम केशव करिहौ रोचित। करौशीघ्र जोगुणो यथोचित॥ सुनिकै बिदाकृष्ण छबिछाये। दुर्योधन नृपके घरआये॥ हयगजरथ सुभटनसों राजित। छरीदार गणसों छाबिछाजित॥ द्वायकक्ष चलिपरम सुखारी। गेप्रसादचढ़ि गिरिवर धारी॥ भरोओज जहँबाहर अन्दर। तहँदुर्योधन यथा पुरन्दर॥ सिंहासन परबैठो राजा। बैठे अ-गणित भूपसमाजा॥ शकुनि दुशासन करण यशीले। भूपति के ढिगलसे लसीले॥ दोहा॥ दुर्योधन कृष्णहिं निरखि उठि चलि नृपनसमेत। पूजिल्याय पर्य्यंकपर बैठायोमुदलेत॥ विप्र सविधि मधुपर्कसो अर्पण कियेसप्रेम। भोजनार्थ फिरि कहत भे हियेचाहिनिजक्षेम॥ सोनहिंमान्यो कृष्णप्रभु तबदुर्योधन भूप। हियेकपट ऋजुता प्रगट बोलो बचन अनूप॥ चौपाई॥

जिमि तुमपांडव के अनुबन्धी । तेहिप्रकार हौमम सम्बन्धी ॥ हौदोउनके हिताहित करता । सबबिधि ज्ञातासतपथचरता ॥ नहिंमम अन्न गहतकेहिकारण । सोकहि करिये शोच निवारण ॥ कृष्णकहे तुम भेदनपाये । हमगहि दूतभाव इतआये ॥ दूतजात जाको हितचालन । सुधरम तासुअर्थ प्रतिपालन ॥ दूतहि उचित अरथ सिधिकरिबो । नहिंभरिउदर मोदहिय भरिबो ॥ यहसुनिबोलो कुरुकुलनायक । ऐसोतुम्हैं न कहिबे लायक ॥ तुमचाहो आवोतेहि भावन । हौदोउनके हित मन भावन ॥ अर्थ सिद्धकीन्हें बिनुकीन्हें । भोजनकरव उचितबिधि चीन्हें ॥ हमहिं तुमहिं हैबैरनकबहूं । भयोनहीं कछुबिग्रहअबहूं ॥ यथाउचित हमतुमकहँपूजे । सम्बन्धीगुणि सुबचनकूजे ॥ तुम कहँउचितनइबिधि जुदाई । एकहि मानब प्रीति बड़ाई ॥ यह सुनि सब नृप तिनतन देखी । बोलेकेशव बिधि अवरेखी ॥ बैर लोभ ईर्षावशह्वैकै । नहिं हम तजत धर्म हित ज्वैकै ॥ पाण्डव सबादिनते ममसंगी । तिनसों हमसोंप्रीति अभंगी ॥ तासुअहितमम अहित यथारथ । तासुहितू ममहित जिमिपारथ ॥ दोहा ॥ हैं सबपाण्डव धर्मरत अधर मरत तोचाल । गोतबंश पालन करै सो धर्मी सबकाल ॥ अधर्मताको अन्नहमग्रहणकरत नहिं तात । जायबिदुरघर खावअब शुचिसुअन्न अवदात ॥ इमि कहिकै उठि कृष्ण प्रभुगये बिदुर केगेह । द्रोण भीष्म बाह्लीक कृत गये तहां गहिनेह ॥ कृष्ण तिन्हैं कीन्हेंबिदातब छत्तासुख पाय । भोजन करवाये प्रभुहि प्रेमभक्ति अधिकाय ॥ सोरठा ॥ बिप्रन अरचि सनेम भोजन कीन्हें कृष्णप्रभु । भक्तिभावअरु प्रेमके गाहक करुणा यतन ॥

इतिउद्योगपर्बणिभगवतोदूतरूपहस्तिनापुरागमनोनामोनबिंशोऽध्यायः ॥

दोहा ॥ कृष्णचन्द्र कहँ स्वस्थलखि निशिलहि बिदुर प्रवीन । बिनय पूर्बक कहतभो बचन यथार्थ अहीन ॥ नयकरी ॥

लो आगमन बिश्व भरतार। मोहिंपरत गुणि अनुचित चार॥ मानी मान हरण अतिमूढ़। है दुर्योधन गर्वारूढ़॥ कपटी कठिन हियो अकृतज्ञ। आत्मसुखी कामात्मा अज्ञ॥ वृद्धनको मत लम्बनहार। धर्मशास्त्र परडारत छार॥ यहिबिधि पूरित अगनित दोष। नहिंमानो ताबचन अदोष॥ भीष्मद्रोण कृप द्रोणकुमार। कर्णपराक्रम सिन्धुअपार॥ ताकोगहे गरब अभिमान। चाहतकियो युद्धनहिं आन॥ जानत भीष्म कर्णसों नेक। नहिंलरिसकिहैं पांडव एक॥ सकल पांडवन जीतन अर्थ। एककर्ण कहँ गुणत समर्थ॥ यहिबिधि पूरित कुमति अबुद्ध। कियो चहतनहिं सम्मत शुद्ध॥ तेहि शठढिग तोबचन प्रमान। होइहियथाबधिर ढिगगान॥ तुमतासों मतिकहो सुतंत्र। द्विज चांडालहि देत न मंत्र॥ तासुसभा मधि जाबतुम्हार। मोहिंनरुचत जानिब्यवहार॥ महाबाहुतुमयदपि अमान। तदपि प्रेमबश कहत बिधान॥ सहसाकर्मी कुटिल कठोर। हैदुर्योधन छली अथोर॥ समुझि न मोमन गहत उछाह। प्रभुमति तासुभटन मधिजाह॥ दोहा॥ यह सुनिकै केशव कह्यो सांचकहत तुमतोन। शुचि सुधर्म रतममहितू तुमसम दूजोकौन॥ दुष्टदुरात्मादुर्मती दुराचारमेंदक्ष। दारुण दुर्योधन छली हमजानत प्रत्यक्ष॥ पैजब कुरु पांडवनको ह्वैहै युद्ध अमान। तब सब क्षत्री बंशको ह्वैहै नाशमहान॥ ताको जो बारणकरै तौ न लहैअतिधर्म। यह गुणिहमवारण चहत द्रोणयुद्ध हठकर्म॥ सोरठा॥ सबबिधि कहब बुझाय हितगुणि है तौ अतिभलो। नातरु नीति सुनाय होबअदोषी जगतमें॥ यहिबिधि कहत सुबैन निशि निशीथ बेलानिरखि। केशवकीन्हों शैन क्षीरसिंधु समशेयमधि॥ चौपाई॥ निशि बिताय बाजि दुंदुभि धुनि। बंदीजनसों स्तुतिपदसुनि॥ जागिशैनतजि आनँदपागे। प्रात सुकृत्य करन प्रभुलागे॥ तेहिक्षण भीष्म

द्रोण मनभाये । दुर्योधन आदिकतहँआये ॥ करिसबकोसत्कार सुभावन । बैठाये माधव मनभावन ॥ प्रात कृत्यकरि आनँद लीन्हे । बिधिवत दान द्विजन कहँदीन्हे ॥ सुबसनधारि सुरथ परचढ़िकै । चलेसकल दिशिसुखमा मढ़िकै ॥ सहित कौरवन कौरवनायक । यदुबंशिन सहसात्वकि चायक ॥ रथचढ़िचले सकल दिशिरहिकै । कृष्णहि निरखतआनँदगहिकै ॥ गजरथ पैदर भटहय सादी । अगणित चले कृष्ण गुणगादी ॥ अगणित छीरदार छबिधारत । चले यथोचित बचन उचारत ॥ दुन्दुभि शंख सुखदधुनि बाजे । अगणितचारु पताके राजे ॥ भूपनिरखि तेहि क्षणकी शोभा । भयो सुरेशहुके मनक्षोभा ॥ धुरिधारा सबदिशिमें छाई । हयहींसनि रथकी धुनिधाई ॥ नर नारीतजि काज उमहिकै । लखतभये अतिआनँद लहिकै ॥ सौधन बालबदनइमिराजे । मनुनभअगणित विधुछबिछाजे ॥ अगणितरंग बसनलखिजाने । मनुतनुतन घनभ्फुकेलोभाने ॥
दोहा ॥ जायसभागृहद्वारपर रथतजि लखिभटकोद । करगहि सात्वकिबीरको चलतभयेसहमोद ॥ सहभीषम द्रोणादिद्विज प्रभुसँगचले सहर्ष । कृतबर्मादिकवृष्णिसब पीछेचलेअधर्ष ॥ प्रभुआगम लखि वृद्धनृप उठिसबनृपन समेत । चलि आगे लैकै सबहि बैठाये करिहेत ॥ रोला ॥ हेममणिमय चारुआसन कृष्ण तापैराजि । नारदादिक मुनिन नभपर लखे सुखमा साजि ॥ भीष्मसों इमिकहे आवत सुमुनिनारदआदि । बिरचि आसन अगरिआनो बिनय सुबचन नादि ॥ भीष्म आज्ञादेइ भृत्यन बिरचि आसन वेष । द्वारलों चलिपूजि ल्याये जानि मंगल वेष ॥ नौमिबिधिवत मुनिन करिकै आसनस्थअमन्द । सहित नृपगण भये बैठत कृष्ण यदुकुल चन्द ॥ बैठि सिगरे मौन रहि तहँ रहे कृष्णहि देखि । कृष्ण तब इमि वृद्धनृप सों कहतभेअवरेखि ॥ होइजोहिकुरुपांडवनको सुखदसम्मतअक्ष ।

करो सोहम इतोयाचन इतै आयेदक्ष ॥ नाशबीरनको भयेबि-
नु करोसम्मत तात । नहीं हमकछु और मांगत कहत इतनी
बात ॥ परम उत्तम अति प्रशंसित बिदितजो कुरुबंश । भाग्य-
वान प्रसिद्धताके भूप तुम अवतंश ॥ तुम्हें सम शुचिपिताजि-
नके तौन सबतौ पुत्र । धर्मपीछे डारि बिचरत राखि अधरम
सुत्र ॥ लोभबश हतचेत ह्वै मर्यादत्यागि अशिष्ट । परमसुहृद
सुबन्धु सों अरिभावकीन्हें इष्ट ॥ बिना बूझे होनचाहत महा
अनरथ ब्यर्थ । तासुकरिबो शमनतुमकहँ उचित आपुसमर्थ ॥
इतै तो आधीन सम्मत उतै मम आधीन । सुतनदेहु बुझाय
तुम हम पांडवनकहँ ईन ॥ भयेसम्मत दुहूंदिशिको होत हित
सहसैन । नतरु निरमित होत जगको नाशबिधि सतिबैन ॥
भटनसह अतिप्रबलतो सुततथा पाण्डव सर्ब । जीति दुर्लभ
उभयदिशिहै नाशगति अतिखर्ब ॥ मानि कै ममबचननृपकर-
वाइसम्मतवेष । बन्धुसुताहित पौत्रगणको लखो सुखशुभभेष ॥
भ्रातृ सुत अरुसुतनसों जितवाइ अरिन सरीति । लेहुमहिध-
न करोपालन नृपनकी यह नीति ॥ दोहा ॥ निज धनहित युग
बन्धुलरि मरे लाभ तहँ कौन । जीतेहु हारेहु हानि जेहि समित
करो बिधितौन ॥ रणकांक्षी तो सुवनसब तिमि पाण्डवभटमौर ।
अमरषबशदोऊगहे बंशनाशको डौर ॥ नृपयह गुणिवारनकरो
अनरथकठिन कराल । कुशलजाहिं निजनिज थलनसदलसक-
लक्षितिपाल ॥ सोरठा ॥ शिशुपन ते पितुहीन पालेजिनकहँ पुत्र
सम । सुनु क्षितिपाल प्रवीन तिनको नितपालब उचित ॥ चौ-
पाई ॥ शिशुपनमें निज सुतसम पालब । पुष्टबिलोकि दुवनग-
ति चालब ॥ है बायस शठ जनकी करणी । ऐसो करत न सु-
बुधि सुपरणी ॥ धर्म भूप सम्मत अभिलाषे । करिप्रणाम इमि
भाषणभाषे ॥ हमतो शासनलहि मनकरिकै । बहुदुख सहेबिपि-
नमें बसिकै ॥ द्वादशबरष रहे बनचारी । रहे बरषदिन गुप्तदुखा-

री ॥ तब निबन्ध तुम जो करि दीन्हों । सोकरि अब महिचाहत लीन्हों ॥ तुम मम पिताशुरू प्रतिपालक । हमतो सेवकशिष्य सुबालक ॥ करिये सुबचन सुधरमपालन । तुमकहँ उचित करबमम लालन ॥ नृप प्रमादि जो सुधरम त्यागत । तौ सब जन ताही मग लागत ॥ बढ़े सरितजिमि तटतरु गिरिकै । बहत धारपरि रहत न थिरिकै ॥ तुम सरबज्ञ सुबुधिकुलनायक । बूझि करौ जो करिबे लायक ॥ यहि बिधिकहो युधिष्ठिर हमसों । सोहम बिधिवत भाष्यो तुमसों ॥ नृप ममबचन सुहित गुणि लेहू । उचितअंश सो उनकहँ देहू ॥ इन्द्रप्रस्थ तुम दीन्होंउन को । तहँवैवर्द्धित कियेअपुनको ॥तोसुत छलकरिसोसबहरिकै । द्रुपद सुतहि ल्याये कचधरिकै ॥ और कहे कटु कुबचन जेते । सुधरम समुझि सहे वै तेते ॥ दोहा ॥ तो आज्ञा लहि बनगये सहो दीनसमपीर । धर्म जानि नहिं निबल हैं पाण्डव बिदित सुबीर ॥ रहिबनमें द्वादश बरष बरष गुप्त रहि आय । लेहिंभूमि यह कौलहो करो तौन गुणिन्याय ॥ मृत्युपाशते भटनको रक्षणकरो नरेश । सुतहित सम्बन्धी बिना रहिका करिहौदेश ॥ सोरठा ॥ हम सम्बन्ध बिचारि दुहुँदिशिको चाहतभलो । ताते कहत पुकारि बैरत्यागि सम्मतकरो ॥ केशबके ये बैन धर्मनीति हित बिधिभरे । सुनिपाये अति चैन सकलभूप सब सभासद ॥ चौपाई ॥ तेहि थरजामदग्नि मुनिबोले । कृष्णकहे तुमबचनअतोले ॥ यह तो बचनसुहित गुणिगहिकै । तौरहि कुशलसम्पदा लहिकै ॥ सुनोएक इतिहास अनूपा । होदंभोद्भव नामकभूपा ॥ सार्व भौमसो नृप अभिमानी । बोले द्विज क्षत्रिन सों बानी ॥ मम समान दूजो रणचारी । हैकोऊ भटआयुधधारी ॥ यहि बिधि नितिबूझै पणधरिकै । भोगै भूमि नीतिपथ चरिकै ॥ इमि बूझत तेहि सगरबजाने । तब सब ब्राह्मण अमरषआने ॥ नृपसों कहो उभयभट भारी । हौतिन सरिस न तुम रणचारी ॥

सोसुनि भूपकह्यो तेकोहैं । काहै नाम कहा बसिसोहैं ॥ सोसुनि कहे बिप्र मनभाये । नरनारायण तापस गाये ॥ सुने गन्धमादन गिरिपाहीं । हैं तपकर तृतीय तसनाहीं ॥ यह सुनिकै भूपति जगजेना । चलोसाजि चतुरंगीसेना ॥ क्रमसों कछु दिनचलिकै भूपर । गयोगन्धमादन गिरिऊपर ॥ देखिभूपकहँ तापसदोऊ । जानिमहानपुरुषहैकोऊ ॥ आसनबारिमूलफलदीन्हे । शुचि सत्कारउचित गुणिकीन्हे ॥ फिरिकीन्होंनृपसोंसम्भाषन । चाहो तौनकरोअनुशासन ॥ दोहा ॥ यहसुनिदम्भोद्भवकह्यो हमजीत्यो यह लोक । अब तुमकहँ जीतन चहत लरो जानि बलओक ॥ सुनिते बोले रणकरो लहि क्षत्री बलवान । हम तपरत नहिं रण चहत मम ढिग धनुष न बान ॥ चौपाई ॥ सुनि बोलो भूपति धनुधारी । को मम सम क्षत्री रणचारी ॥ जोनलरै मम सन्मुख थिरिकै । तुम भयत्यागि करौ रण भिरिकै ॥ फिरि तेहि बरजो नरनारायण । नहिंमान्यो रणरस पारायण ॥ तबनर भूपहि गरबित चीन्हें । सींक एक मूठीभरि लीन्हें ॥ कहे भूपसों आयुध लीजै । सुभटन सहित पराक्रम कीजै ॥ इतो इषीक डारि तौ ऊपर । रणश्रद्धा बिनु करिहौं भूपर ॥ यहसुनि दम्भोद्भव क्षिति नायक । तिनपर बरषनलागो शायक ॥ तब इषीक शर मंत्रित करिकरि । नर प्रभुतजे बीरगति धरिधरि ॥ नृपके श्रवण नयन मुख नाशा । शस्त्रनभरे छायसब आशा ॥ तबदम्भोद्भव मोहित ह्वैकै । चरणगह्यो अद्भुतगति ज्वैकै ॥ तब नरईश क्रोधपरि हरिकै । कहतभये अनुकम्पा करिकै ॥ होहु सुधरमी शुचिमति लहिकै । इमिमति कीन्हेहुलघुगति गहिकै ॥ निबल सबलके तुल बल होई । जो अपराध करै नहिं सोई ॥ हठि सगरबह्वै तासों लरिबो । है अति अधरम अनुचित करिबो ॥ दान्त शान्त मृदुसौम्य सुभावन । पालतप्रजा निपुण नृपचावन ॥ बूझि बलाबल करै अखेदा । साम दाम अरुदण्ड बिभेदा ॥ दोहा ॥

सुबचन भाषै हितुनसों मानै सुबचन अक्ष । जीतिधर्म आनँद लहै सोक्षितिपालक दक्ष ॥ यह सुनि नरनारायणहिं बन्दि बिदाह्वैभूप । निजपुर आयोसैनसह आनँदगहे अनूप ॥ सोरठा ॥ नरके ऐसेकर्म्म नारायणकी कृपाते । सो अर्जुन यह मर्म्म बूझिउचित सम्मतकरब ॥ चौपाई ॥ परशुरामकी सुनि यहबानी । बोलत भये कण्वमुनि ज्ञानी ॥ दुर्योधननृप सुधरम धारो । राम कहतसो सुखद बिचारो ॥ अर्जुनकी गरिमा सब जानत । सम्मत करब उचित अनुमानत ॥ उतपति प्रलय नाशके कर्ता । जासु सारथी हरि जगभरता ॥ कपिहैं नरनारायणसंगी । सिगरे लोकप जिनके अंगी ॥ तासोंलरो न शठमति अतिसों । सम्मत करोधर्म नरपतिसों ॥ कुरु पांडवसम बसुधा लहिकै । भोगकरो सम्मतकरि रहिकै ॥ बलगुणि बली रहतहैं ऐंठे । नहिं बलरहत बलिन मधिपैठे ॥ देव पराक्रम पांडव सिगरे । हैं धरणीपर प्रबल अदिगरे ॥ है इतिहास पुरातन भावत । सुनो तौन हमतुम्हैं सुनावत ॥ मातलिकी दुहिता अभिरामा । रही एक गुणकेशीनामा ॥ मातलिसुर गन्धर्बन पेखे । तासु सदृश बरनहिं अवरेखे ॥ तब अनुमानि नागपुर डगरे । तहांमिले नारद गुणअगरे ॥ बूझे कहां जातहौ धाये । निज कारज कै शक्र पठाये ॥ सो सुनि मातलि आनँद छाये । नारदसों वृत्तांत सुनाये ॥ सुनि नारदमुनि आनँद राखे । प्रेम सहित मातलिसों भाखे ॥ दोहा ॥ चलो बरुणके पासतुम लखो तासु परिवार । निज दुहिताके सरिसवर देखिकरो ब्यवहार ॥ तब मातलि मुनिसँग चलि गयेबरुणके पास । पूजितह्वै नारदसहित पाये सकल सुपास ॥ सोरठा ॥ बरुणहि अर्थसुनाय अनुशासन लहिमुनि सहित । देखनलगे सचाय हेतहँ पुरुष प्रधानजे ॥ तोमर ॥ तहँ देवमुनि तपधाम । कहिकहि सोबिक्रम नाम ॥ सलिलेशके सुतपर्म । अरुपौत्रजे अतिधर्म ॥ चलिचलि लखा-

वत ताहि । तहँ अग्निअनुपम चाहि ॥ इमि कहे लघुमतिमान । शिखि बिष्णुचक्र समान ॥ निलिरहत रक्षत देश । इतभीति को नहिं लेश ॥ फिरि अगरि आनँद भेखि । गांडीव धन्वहि देखि ॥ इमि कह्योदेखहुतात । गांडीवधनु अवदात ॥ यहकृत्य युगमें पूर्व । भो बिशद निरमित गूर्व ॥ यह बज्रसार अभेद । है असुर नाशन भेद ॥ यह पाइकाज उदोत । अति अधिक बलप्रदहोत ॥ इमिभाषि चालि अन्यत्र । दरशाइ दीन्हें क्षत्र ॥ सलिलेशको अभिराम । बरधाम ताकोधाम ॥ जो अग्नि भक्षत बारि । दरशायसो मुदधारि ॥ इमिकह्यो यहसो देश । तहँ अमरसह अमरेश ॥ करिअमृतपान अमन्द । राख्यो सुधरि सानन्द ॥ शशि घटत बढ़तइतैहि । तिहिको न रहतचितैहि ॥ ते तदनु अति हरषाय । दिग द्विरद सब दरशाय ॥ सब कहे गरिमा गौर । बिधितनय मुनि शिरमौर ॥ जेहिगुणौसुगुण निकेत । तेहिबरौ तनयाहेत ॥ नहिंहोत अति मनमान । तौचलो अनत सुजान ॥ दोहा ॥ तब मातलि मुनिसोंकह्यो अनतचलो मुनिराज । तब हिरण्यपुर जातभे मुनिमातलि गुणिकाज ॥

इतिश्रीउद्योगपर्वणिभगवद्दूतेमातलिवरान्वेषणोनामविंशोऽध्यायः २० ॥

दोहा ॥ श्रीनारद हरिगुण कथत चलि हिरण्यपुर जाय । तहँ निवात कवची भटन दरशाये गुणगाय ॥ ये निवात कवचीप्रबल इन्हें न जीतन शक्र । तुम सुसारथी युद्धमधि देखे बिक्रम बक्र ॥ जयकरी ॥ इनमें जोश्रीमन्तअमान । रुचैतुम्हें तेहि बरौ सुजान ॥ यहसुनि बोलो मातलि दक्ष । ये सुरपतिके शत्रु प्रतक्ष ॥ इनसबसों करिबो सम्बन्ध । उचित न हमकहँ जानि निबन्ध ॥ सो सुनिकै नारद मतिओक । गे मातलिसह खगपतिलोक ॥ तहँजेखगपतिके भटबार । दरशाये तिनकेपरिवार ॥ तिन्हैं देखिमातलि मतिमान । नहिंरोचितकीन्हें मनमान ॥ तब तेहिसह नारद अवदात । गये पतालमाहिं अतिभात ॥

कहत भयेसो ताहि दिखात । यह सप्तम महितल बिख्यात ॥ इहांबसतिगो जननि सुछन्द । अमृतसम्भवा सुरभिअमन्द ॥ एक समयमें बिधि भगवान । कीन्हों अमृत अधिक अति पान ॥ गिरतो भयो अमृतको सार । मुखते अतिबर अमल सुढार ॥ ताते सुखमामय शुभरूप । भई गिरति उतपन्न अनूप ॥ जाकी पयधारासों स्वक्ष । भयो महान क्षीरनिधि अक्ष ॥ पीवत तासु फेन मुनि जौन । महा तपस्वीते जगभौन ॥ तेसिगरे मुनिफेनप नाम । तेहि ह्रदकूल बसत तपधाम ॥ ताकीचारिधेनु दिशिचारि । पालतसुनो नाम निरधारि ॥ बसतिसुरूपा पूरुब आश । याम्यहंसिकाकरत प्रकाश ॥ तिमिहिं सुभद्रा पश्चिम देश । उत्तर कामदुधा शुभभेश ॥ दोहा ॥ यहिप्रकारकी बार्त्ता कहत मुनीश उदार । समुदजात भोगावती बोलेसुबचन च्चार ॥ मातलि यह भोगावती बासुकि पालत जाहि । बसत सिंहिकाके सुवननाग असंख्यन चाहि ॥ दश पचाशशतपांच शत त्रशत सहसमुख ब्याल । बासुकि तक्षक आदिहैं सबमहान छबिजाल ॥ चौपाई ॥ तहां सभा नागनकी देखी । सबदिशि लखि मातलि अवरेखी ॥ ऐरावतकुल जात सोहावन । सुमुख नाम अहि अति मन भावन ॥ पुत्रचिकुरको चारुमहाना । पौत्रआरजक को बलवाना ॥ वामनको दुहिता सुलआरज । मुनि सों कहे तासु गुणिकारज ॥ सो सुनिकै नारदसुखपाये । समाचार आरजाहि सुनाये ॥ सुनि मुनिवचन नाग अनुमानी । सादर कहत भयो मृदुबानी ॥ सखाशक्रको सुबुधि सुबन्धी । मिलत भाग्यते अस सनबन्धी ॥ पैमम हिये एक दुखधावत । सुनो तौन हमतुम्हैं सुनावत ॥ ममसुत चिकुरगरुड तेहि गहि कै । खायोतदनुगयो इमिकाहिकै ॥ कछु दिनमें सुमुखहि गहिखैहौं । सो सुनिकै अतिदोचित सैहों ॥ अरजककी यहबाणीसुनि कै । मातलिकहत भये इमि गुनिकै ॥ शक्र पाससम संगसुभा-

वन। सुमुख चलैं भयत्यागि सुचावन ॥ तहां जायहम कहिसुर पतिसों । अभय कराइब निजहित अतिसों ॥ मातलि नारद सुमुखहिलैकै। शक्रपासगे निरभय कैकै ॥ सबवृत्तान्त सुनाइ सुरेशहि। कहे देहु अमृत अहि वेषहि ॥ हे तेहिठौर बिष्णु तेहि क्षनमें। तासों कहे शक्रगुणि मनमें ॥ दोहा ॥ देहु अमी तुम विष्णुतब कहे कहत कतबंक। तुम सुरपति सबलोकपति देहु अमी तजिशंक ॥ तब सुमुखहि बरदानदै अमरकिये सुरराज। लहि सुदारनिजपुर गये सुमुख सनाग समाज ॥ रोला ॥ गरुड़यह सुधि पाय रिसकरि शक्रके ढिगजाय। कहे कत तुम किये सुमुखहि अमरप्रीति बढ़ाय ॥ बिहित भोजन सर्पमम तुम किये निरभय ताहि। गुणेनहिं मम बिशद बिक्रम बार अगणित चाहि ॥ सुरराज्य ह्वैबे योग्य हमहैं बली जानतसर्ब। पिता मम तौ एककाहे गुणत हमको खर्ब ॥ प्रबल प्रबलअनेक असुरन बधेहमकरि युद्ध। बिष्णुके हमभये बाहन तासु कारण शुद्ध ॥ और दूजो रहो नहिंजो सहैताकोभार। एक हमतेहि योग्य ताते कियो अंगीकार ॥ प्रबल सबआदित्य में हैं बिष्णु अति बलवान। एक देश सुपक्षके तेहिवहत हममघवान ॥ महागरबित बचन यह सुनि कहतभे भगवान। गरुड़ आपुहि बहत हमनित तुम्हैं सहित बिधान ॥ नहीं तुम मम भार सहिबे योग्यप्रबल अखर्ब। जानिकै बलवान आपुहि गहत नाहक गर्ब ॥ सहो दक्षिण बाहु ममको भार तुम यहिकाल। सांचतौ हमकहैं जोतुम गहत गर्व बिशाल ॥ भाषिताके कांध पर प्रभुधरी दक्षिणबाहु। भार नहिं सहिसको बलकरि गिरत भो खगनाहु ॥ कांपिबिकल बिकलह्वै गतचेत क्षणमें चेत। गर्व तजिकै गहे प्रभुके चरण जीवनहेत ॥ बिनय सुनि तब कृपाकरिकै कहे प्रभुहितजानि। फेरिकरियो गर्वमति परभाव ममअनुमानि ॥ कण्वमुनिइतिहासयह कहिकहतभेसमुझाय।

गरुड़कोलहिं गर्वराख्यो विष्णुअमरषछाय॥ गर्वगहि धृतराष्ट्र सुतमतिकरोरणदुखदाय। करोसम्मत पाण्डवनसों कृष्णजासु सहाय॥ कण्वमुनिके बचन सुनिकै कर्णकी दिशिहेरि। कहत भो धृतराष्ट्र सुतनृप बचन सुगरब मेरि॥ जौन ईश्वर कियेनिरमित गहत हमगति तौन। सुमुनि करत प्रलापनाहक लहत संशयकौन॥ जनमेजयउवाच ॥ दोहा ॥ ऐसेकुहठी नृपतिकहँ फिरि समुझायो कौन। सुनि वैशम्पायन कह्यो भूपति सुनियेतौन॥ तिहिक्षण नारदमुनिकह्यो सुनु दुर्योधनभूप। सुहित बचनकरतब्य निति नहीं उलंघनरूप॥ रोला ॥ शिष्य बिश्वामित्रमुनि को रहो गालवनाम। कृपाकरि तेहि सुमुनिभाषो जाहु अपने धाम॥ कहे गालव कहो सो गुरु दक्षिणा मुनिराय। देइ तुम कहँ बसैंहम घरसुमिरि पङ्कजपाय॥ कहे कौशिक बहुत दिन मम कियो सेवाजौन। तौनलहि परसन्न हम अति दक्षिणा है तौन॥ फेरिहठगहि कहे गालव दक्षिणाके काज। नहीं मानो कोपि तब इमि कहतभो ऋषिराज॥ देनचाहत हमहिंजो गुरुदक्षिणामनमान। आठशत श्रुति श्यामबाजी देहुतौ नहिंआन॥ बचन यहसुनि चलोगालव महोदुखसों पूरि। मयेमिथ्या बचन जगमें होत अपयशभूरि॥ कहतमिथ्या बचनताकोथाप राखतकौन। करत प्रतिउपकार नहिं जो वृथाजीवत तौन॥ करत इविधि बिषाद मनमें सुब्रत निरशनठानि। चलोगालव बिप्र शोचित मरण निश्चय मानि॥ जानिकामद विष्णुकेढिग चलो द्विजअनुमानि। सखा ताको गरुड़ आये तहां प्रभुप्रण जानि॥ बूझिसुनि बृत्तान्त निज पर द्विजहि गरुड़ चढ़ाय। प्रथम पूरुब उदयगिरिलों गये आनँद छाय॥ तहां उत्तमठौर क्रमसों गालवहि दरशाय। गये दक्षिण ओर क्रमसों कहत थल समुदाय॥ पितृ बिश्वेदेव यम अमराजको अस्थान। बिशद बैतरणीनदी दरशायके मतिमान॥ सूर्य जहँलों जात जहँ

तप कियो रावण रक्ष। और थल दरशाय पश्चिम गयो दक्ष सुपक्ष॥ बरुणलोक लखाय सबफिरि जहांछितिको गर्ब। किये खण्डन शक्रजाते भये मारुत सर्ब॥ आदि अस्ताचल सुथल दरशाय पश्चिमओर। चलो उत्तर ओर आनँद भरो खगसहजोर॥ जहां नारायण सुप्रभुनर तपततप अभिराम। बदरिकाश्रम तौन तहँ दरशाय आनँदधाम॥ दोहा॥ उमा शंभुजहँ तपततप सो दरशाय सप्रेम। मेरुहि दरशाये बहुरि सुरसरि दायक क्षेम॥ ऋषभ शैलके शृंगपर उतरे सद्विज द्विजेश। जहां शाण्डिली ब्राह्मणी तपतरही तपवेश॥ बन्दिताहि करिवार्त्ता अन्नदयो सो खाय। सानँदकरि बिश्रामतहँ जागे निशा बिताय॥ भोरगरुड़कहँ पक्षबिनु मांस पिण्डसम देखि। गालव पूछो गरुड़सों अति अचरज अवरेखि॥ चौपाई॥ प्रगटोकारण कौन इहांते। पक्ष बिहीन भये तुम ताते॥ सो सुनि गरुड़कहे तेहि क्षनमें। हम निशिमें मन सो यह मनमें॥ जहां बसतहर हरिसुखदाई। तहां बसति यहमानवआई॥ हमयहगुण्योतासु परभावन। पक्ष बिहीन भये सुनुभावन॥ करैंकृपा जब सुमुखि भवानी। तब सुपक्ष हम होब सुज्ञानी॥ इमिकहिकहो बिनय अधिकाई। मम अपराध क्षमाकरुमाई॥ यह सुनि कृपाकरी सोदेवी। तब सपक्षभो खगहरिसेवी॥ तब ब्राह्मणिहिं नौमिते आरज। चलत भये चिन्तित निजकारज॥ बिश्वामित्र मिलत भे मगमें। कहे बिप्रसों दानी अगमें॥ जेहि हितहम तुम सों यह मांगो। आइ तौन अब कारज लागो॥ शीघ्रदेहु सो द्विज यह सुनिकै। अति चिन्तित भो मनमें गुनिकै॥ खगपतिबिप्रहि चिन्तितदेखी। सादर कहतभये अवरेखी॥ अनतनमिलिहैं ऐसे घोरे। चलो ययाति भूपके घोरे॥ इमि कहिकै खगपति मनभायो। सद्विजययाति भूप पहँ आयो॥ तिन्हैं भूप अति बिधिवत पूजे। आगम हेत कहौ इमिकूजे॥ गरुड़ कहेये मम

हित आरज । कौशिक मुनिके शिष्य अचारज ॥ दोहा ॥ इन कौशिक सों हठिकहे गुरु दक्षिणाकेकाज । श्यामकरण हयआठशत तब मांगे मुनिराज ॥ सो हयमांगत बिप्र यह नृप आयो तो पास । तुम कामदाक्षितिपाल मणि पूरणकीजैआस॥ चौपाई॥ यह ययाति अवनीपति सुनिकै । खगपति सों इमि बोले गुनिकै ॥ खगपति मोहिं कृतारथ कीन्हें । दरशन दै अति आनँद दीन्हें ॥ तपनिधि ऐसो अरथी आरज । मिलत भाग्यबलकिये सुकारज ॥ आजु देशममभो अतिपावन । आयो ऐसोअतिथि सुभावन ॥ पैहमकियो यज्ञसुगतियमें । अरथी करिबो बिमुख अनियमें ॥ नहिं करि सकत अरथ द्विजवरको । सकैं कहाकरि खाली घरको ॥ मंगन बिमुख होतहै जाको । सब करतब है निहफल ताको ॥ तासों और न पापी जगमें । तातेकहत पाणि धरि पगमें ॥ हमजो कहैं तौन बिधिकरिकै । करो अरथ साधन ब्रत धरिकै ॥ सुता हमारि माधवीनामा । सब लक्षणयुत अति अभिरामा ॥ सोहमदेत लेहुतुमताही । देहुजायबरभूपतिचाही॥ निक्रय तुरँगआठशत लीजो । कन्यारत्न ताहितुम दीजो ॥ मम दुहिताके उत्तम लक्षण । लखि हय देहै भूप बिचक्षण ॥ सुनि द्विजभूपहि अकपट चीन्हे । ह्वैप्रसन्न सो दुहिता लीन्हे ॥ तब तिनसों कै बिदा खगेशा । सानँद जातभये निजदेशा ॥ दोहा ॥ गालव नृपसों ह्वै बिदा लैकन्या कुलदीप । गयो अयोध्या नगरमें जहँहरयश्व महीप ॥ दै आशिष हरयश्वकहँ कह्यो बिप्र तपधाम । यह मम दुहिता माधवी नामा अति अभिराम ॥ उत्तम सुत उत्पत्तिकर लक्षण देखि सनेहु । निजपत्नी हित लेहु नृप हम मांगें सो देहु ॥ श्यामकरण हय आठशत हम चाहत हैं भूप । देहु हमैं सो लेहु यह कन्या अनुपमरूप ॥ चौपाई ॥ यह सुनि भूप कन्यकहि देखी । सब उत्तम लक्षण अवरेखी ॥ कहे बिप्र तुम अधिक न मांगे । हमैं आठशत हय लघु लागे ॥

हैं ममगेह दोयशत घोरे। श्यामकरण नाहिं बसुशत मोरे॥ करि अनुमान कहो तुम जैसो। सुतहित लागि करैं हमतैसो॥ यह सुनि सो कन्या अनुमानी। गालवसों इमि कही सुबानी॥ पूर्व एक ब्राह्मण ब्रतधारी। मोहिं सुआशिष दियोबिचारी॥ पति संयोग प्रसव दिन पैहै। तबहूं तो कन्यत्व न जैहै॥ ताते हमैं नृपति कहँ देहू। हैं द्वै शत बाजी सो लेहू॥ एक पुत्र उत्पति करिलेहैं। तब फिरि हमैं तुम्हैं नृप देहैं॥ फिरि मोहिं और भूपतिहिदेकै। मोदेहु श्यामकरण हय लेकै॥ गालव यह सतमत हिय राखे। इमि हरयश्व भूपसों भाखे॥ एकपुत्र उत्पति करि लीजो। फिरि ममसुता हमैं नृप दीजो॥ इमिकहि सुता भूपतिहि दीन्हें। आपु निवास अनत कहुँ कीन्हें॥ कछु दिनमें नृप सुत उपजाये। बसुमन सों सुनि गालव आये॥ बिधिवत करि बातैं नरपतिसों। सुतालई अतिबकता अतिसों॥ कहि भूपति हयराखो मितसों। हम लैजाब फिरब जबइतसों॥ दोहा॥ इमिकहि नृपके दोयशत बाजी नृपपहँ राखि। कन्याले काशीशपहँ गयो तुरग अभिलाखि॥ दिवोदास काशीशसों गालव लहि सतकार। सबिधि सुनायो निजअरथ सो सुनिभूप उदार॥ कहे पूर्व हमसब सुने द्वैशत हय ममगेह। एक पुत्र उतपति किये हम चाहत गहिनेह॥ जयकरी॥ सुनि गालव करि बातैं आम। कन्या देयगयो तपधाम॥ तासों रमो कछूदिन भूप। प्रगटभयो तब पुत्र अनूप॥ जाको भयो प्रतर्दन नाम। तब आये गालव गुणिकाम॥ निज निबन्ध नरपतिसों भाखि। तुरग दोयशत नृपपहँ राखि॥ लैकन्या सुख सुखमा रास। गये उशीनर नृपके पास॥ ओऊ द्वैशत बाजी देन। एकपुत्र उतपति करिलेन॥ कहे तौन सुनि द्विज मतिमान। कन्या दे गो बन अस्थान॥ तासों रमो भूप मनमान। तब प्रगटो शिविपुत्र अमान॥ सो सुनिकै गालव तहँजाय। करिसुबारताप्रीतिबढ़ाय॥

तुरग भूपपहँराखि सडौर। चले सुताले तकि नृपश्रोर॥ मगमें आय मिले खगराज। कहेजातकहँद्विज केहिकाज॥ सो सुनिकै गालवमुनि दान्त। कहतभये सिगरोबिरतान्त॥ सोसुनिकहे गरुड़अनुमानि। अबमम बचन करो हितजानि॥ लैषटशतबाजी श्रुतिश्याम। अरुयहकन्यासुखमाधाम॥ कौशिकमुनिपहँचलिमुदलेहु। षटशतहय यहतनया देहु॥ कहोसकलबिरतांतसचार। मुनितनया करिहै स्वीकार॥ दोहा॥ सो सुनि गालव मानिहित षटशत तुरगमँगाय। सहित सुकन्या जातभे जहँकौशिकमुनि राय॥ बन्दि चरण मुनिराजके कहे सकल बिरतांत। सो सब सुनि निज शिष्यसों भाषे कौशिकदांत॥ प्रथमें हमें सुकन्यका कत नहिं दीन्हें आय। उत्रिण तुमकहँ करत हम चारिपुत्र उपजाय॥ इमिकहि मुनिगुणि राखिरमि नृप दुहिताके संग। एक पुत्र उतपति किये अष्टकनाम सुअंग॥ पुत्रभयो चैतन्य तब निजपुर भेजे ताहि। नृपतनया दे गालवहि मुनि बनगे तप चाहि॥ चौपाई॥ गालव इमि गुरुदक्षिण दैकै। गे ययाति पहँ तनया लैकै॥ सब बिरतांत भूपसों कहिकै। तनयादे आये मुद लहिकै॥ नृप गुणि पुत्रनशासन दीन्हे। ते सुस्वयम्बर रम्भन कीन्हें॥ गहिजयमाल सुतासों फिरिकै। नहिं बर रोचित कीन्हों थिरिकै॥ रथते उतरि त्यागि जनदेशा। तपहितकीन्हे बिपिन प्रवेशा॥ तृणफल खाय बिशदब्रत गहिकै। बिचरतभई मृगिन सँग रहिकै॥ नृप ययाति तपकरि तन तजिकै। स्वर्ग गये सुरगणसम साजिकै॥ कछुदिन तहां भोगकरि राजा। गिरत भयो तजि स्वर्गसमाजा॥ सुर गन्धर्व ऋषिनके देखत। नृप तौ निजकरणी अवरेखत॥ नृप तेहि समय प्रतर्दन चायक। बसुमन शिवि अष्टक नरनायक॥ बाजपेय मख अतिशय पावन। नैमिषारमें सरस सुभावन॥ करतरहे तहँ तिनकेआगे। गिरे ययाति करमगतिलागे॥ महिगतभूप ययातिहि ज्वैकै।

ते नृप बोले बिसमित ह्वैके ॥ तुमगन्धर्बयक्ष सुरकोहो । आहत कहा कहो कहि जोहो ॥ ययातिरुवाच ॥ हम ययाति नृप तपफल भोगी । देवलोकसों भये बियोगी ॥ काहू पुण्यनको फलपाये । जो यहि ठौर तुम्हें मधिआये ॥ दोहा ॥ यहसुनि ते चारो नृपति निज मातामह जानि । कहे ययाति महीपसों छोह मोहहिय आनि ॥ दान यज्ञ तप धर्म ब्रत जो हम सबको सर्ब । तासुपुण्य करि ग्रहण तुम सुरपुर जाहुअखर्ब ॥ हमक्षत्री नहिं बिप्र हैं यह नहिं मम व्यवहार । औरनको तपधर्म फल किमिकरियेस्वीकार ॥ सोरठा ॥ तेहिक्षण तेहि थल आय बरब्रत चारिण माधवी । कहो पितहिसमुझाय ये तो तनयाके सुवन ॥ चौपाई ॥ तनया सुतप्रद पिण्ड सुनेते । ग्रहण करत सब अग्रज जेते ॥ ताते भ्रमतजि आनि उछाहू । तपमख फलले सुरपुर जाहू ॥ सो सुनि उचित जानि नृप माने । सुरपुर गमनहेतु उमदाने ॥ इतने महँ गालव तहँ आये । नृपहिं अशीश दिये मन भाये ॥ फिरि यहि कहे सुनो अवनीसा । ममतप ब्रतको अठवोंहीसा ॥ लहि फिरि जाहु शक्रपुर राजा । बिलसो जैसे सुमनसमाजा ॥ इतनेमें अभिषेकित मूरध । नृप महित्यागि गयोकछु ऊरध ॥ तबवसुमन आदिक नरनायक । क्रमसोंकहतभये गुणिलायक ॥ मम तपयज्ञ दानफल लहिके । सुरपुर जायबसो मुद गहिके ॥ तिनके उग्र पुण्य परभावन । लहे ययाति स्वर्ग मनभावन ॥ सेवित सुर अप्सर ऋषि गणसों । सानँद बिलसत भयेसुमनसों ॥ तहां पितामह आये ताही । पूजि ययातिकहे हितचाही ॥ नाथ बहुत दिन हम महिभोगे । तप मख दानबहुत उपजोगे ॥ सो व्यतीतभो थोरे दिनमें । ताको भेदकहो यहिक्षनमें ॥ सुनि कमलासन कहे नृपति सों । तुम इतपूरे आनँद अतिसों ॥ शक्र सरिस उत्तम पद पाये । सुरगणसों सेवित छवि छाये ॥ दोहा ॥ उत्तम सुर ऐश्वर्य्य लहि तुम कीन्हे अभिमान । ताते सुरपुरते

गिरे क्षीणमूल तरुमान ॥ कीन्हे अति अभिमानभो लोपितपु-
ण्य ललाम । इबिधि बुझाय ययाति कहँ बेधागे निजधाम ॥
बेशम्पायनउवाच ॥ नारद यह इतिहास कहि दुर्योधनहि बुझाय ।
कहे भूप अभिमान अति किये बिभूति नशाय ॥ पुण्यनशत
अभिमानते हित अनहित ह्वैजात । ताते नृप अभिमानतजि
करो मंत्र अवदात ॥ सोरठा ॥ नृपति ययाति महान भ्रष्टभये
अभिमानकरि । अभिमानहिदुखदान जानिकृष्णकोमतगहौ ॥
इतिउद्योगपर्वणिभगवतोदूतकर्मणिगालवचरित्रवर्णनोएकबिंशोऽध्यायः ॥

बेशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ नारदमुनिके बचन सुनि कह्यो वृद्ध
क्षितिनाह । सांचकहो मुनिराज तुम यहमत मम मनमांह ॥
इमि कहिके धृतराष्ट्रनृप कहे केशवहिनौमि । तुमबुझाय दुर्यो-
धनहि करोमूढ़मति सौमि ॥ हमगान्धारी बिदुर कृप संजय
भीषम आदि । समुझाये मानतनहीं यहमतिमन्द प्रमादि ॥
जयकरी ॥ वृद्धभूपके बचन अहीन । सुनिबोले यदुनाथप्रवीन ॥
दुर्योधन तुम भूपमहान । उत्तमकुलनायक मतिमान ॥ हौसब
भांति समर्थ प्रसिद्ध । करो तौन जो सिखवतवृद्ध ॥ हठ तजि
करौ सुकारज तौन । करत सधर्म नीतिरत जौन ॥ तात गहौ
मति अधरम चार । जो कुत्सित जनको ब्यवहार ॥ किये अ-
मर्ष अयशको सोत । बाढ़त नाश लहत हितगोत ॥ कारज
तौन करौ मतिइष्ट । जाते प्रगटै महा अनिष्ट ॥ माता पिता
कहत मत वेश । तौन ब्यर्थ मतिकरोनरेश ॥ निदरबमातुपिता
के बैन । अति दुखदायक नाशक चैन ॥ सताचार रत सुमति
अमेय । तिनको मंत्र सकल बिधिश्रेय ॥ भीषम आदिक जिते
प्रबुद्ध । तेसब चाहत सम्मत शुद्ध ॥ सबको मत सुखदायक
जानि । सम्मत करो धर्म अनुमानि ॥ हठशठता गहि कीन्हे
युद्ध । सबको मृत्युकालहै उद्ध ॥ पाक करत जरिमरै बराक ।
कौन मोद कीन्हे वह पाक ॥ सताचार मंत्री सुखदेत । असती

पूरबसुख हरिलेत ॥ शक्रसमान सुबंधु सप्रीति । तिनकहँ शत्रु करबनहिं नीति ॥ दोहा ॥ तुम बहुदिन पांडवन सों कीन्हें अनरथ भूरि । वै अनरथ चाहैं नहीं सुधरम नीति बिसूरि ॥ बनमें अतिदुख भोगकरि अब वै गहे अमर्ष । ताते चाहौ कुशल तौ सम्मतकरो सहर्ष ॥ शकुनि दुशासन कर्णको मंत्र गुणोदुखदानि । अंश देहु पांडवन कहँ वृद्धनको मतमानि ॥ पंकजवाटिका ॥ बैर बढ़ाइब भूपति नीकन । सम्मत आनँद सिन्धु अलीकन ॥ लोभहिये गहिधर्म नशाइब । जानहु आपदको पद आइब ॥ जाकर अंश सबै जग जानत । ताहि निरंशकियो कलमानत ॥ ज्यों तृणके बन पावक लागत । ज्यों परबित्त हरे अघपागत ॥ दोहा ॥ बन्धु बर्गकहँ मित्रकरि शत्रुहि जीतब नीति । बन्धु अहितभो तब लगत बन कुठारकी रीति ॥ सब पांडव हैं प्रबलअति उनसों बैरन नीक । को सन्मुखथिर लरिसकी धरी धनुषकी लीक ॥ कवित्त ॥ लाल करिलोचन बिशाल गोपीनाथ जब भीमसेन कालसों कराल ह्वैकै लसैगो । रथते उतरिबड़े गथकीगदालै रणपथ पै सबेगडाटि तोदलमें धसैगो । दीरघउदण्ड दोरदण्डन चपलकरि मण्डन मही को घनध्वनिकरि निकसैगो । थरथर धरा धराधर तबह्वै हैं घर कौनको नशैगो अब कौनकोधौं बसैगो ॥ दोहा ॥ खाण्डव बन जारो लखत ब्रह्माण्डनके जौन । ताण्डव निरतन हारसों लरयो सुपांडव तौन ॥ कपिध्वज सुरथ महान पर चढ़िकरि धनु सन्धान । लरीआइतब कौनभट करी घोर घमसान ॥ कवित्त ॥ पारथधनुष गांडीव करषतजब ऐहै बरषतशर आयस बिशाल के । ह्वैयगो दुसह दुरदिन तेहिक्षण निशिदिन गुणिसकि हैं न जेऊ बड़ेभालके । गोपीनाथ कहैसाथ कौनको रहैगोतब जरैंगे जवासे भट भूपनके नालके । मत्तनके छवासे सपक्षक्षितिपाल परिबाणनके जालमें परैगेगालकालके ॥ दोहा ॥ बिक्रम उनको

प्रगट है जानतसब क्षितिपाल । को अर्जुनसम जगतमें धनु-धर सुभट बिशाल ॥ भीष्मद्रोण कृप कर्णको गरबगहो मति भूप । सब जगजेता बिदित है पारथ शक्रस्वरूप ॥ कवित्त ॥ बांधिकै गन्धर्बपति तुम्हैं लै चलो हो तब करणादिभट तहँ रहे कै नहींरहे । जब तुमचढ़िकै बिराटपुरगये तबभीष्मद्रोण आदि धनुगहे कै नहींगहे । हमतौ नहीं हे तहां दूरसों सुनेसो कहे शोणित के धार भटबहे कै नहींबहे । बाणनसों छिन्नकरिगात सबहीको हेत गोधनके पारथ जय लहे कै नहींलहे ॥ दोहा ॥ तथा अमोघन शरनसों करिअवरोधनरूप । गोधनलेगो अर्जुन तिमिलेहै महिभूप ॥ क्षात्रबंशको नाश गुणि मोहिं होतनिरवेद । कहोमानि सम्मतकरो दूरिहोय सबखेद ॥ सोरठा ॥ कृष्णचन्द्रके बैनसुनि भीषमनृपसों कहो । कुशलचाहि मतिऐन कृष्णकहत जोसो करो ॥ चौपाई ॥ धरमअरथआनँदप्रद बानी । कहतबुझाइ कृष्णगुरुज्ञानी ॥ सुतहित सखाबन्धु सनबन्धी । युवावृद्धजीतन अनुबन्धी ॥ सबको जीवन सम्मत कीन्हें । नातरु मरणसुबुध सबचीन्हें ॥ तातेबारबार समुझावत । अनरथ कारण दूरि दुरावत ॥ सोहित जानि धरो हियमाहीं । बन्धु बिरोध मोदप्रद नाहीं ॥ द्रोणकहे तब अवसर पाई । ताततजो अमरष दुखदाई ॥ अर्थ धर्मसुख सम्पतिदायक । नीतिकहत भीषम यदुनायक ॥ भूपअवशि सो करिबेलायक । अर्जुन केहैं कृष्ण सहायक ॥ अर्जुनएक जगतको जेता । तासँग केशव रथगति नेता ॥ होइहि अवशि नाश सबजनको । तात देहुतजि हठ यहि प्रनको ॥ अबनहिं कहब कह्योहितयेतो । गयोधरमगहि अबहूं चेतो ॥ यहसुनि कह्यो बिदुर नयचारी । ताततजो हठ दुखद बिचारी ॥ हमनहिं शोच तिहारो आनत । इन दम्पति को दुख अनमानत ॥ बिनुसुत बंधु सखाहित ह्वैकै । पक्षहीन पक्षी गतिग्वैकै ॥ अन्ध वृद्ध सुतशोकनदहिहैं । ह्वैअनाथपर

आशागहिहैं ॥ कौनदशा लहिहैयहिप्रनमें । इतनोदुख बर्द्धित मम मनमें ॥ दोहा ॥ इनसबके येबचन सुनि वृद्धभूप गहिमोह। दुर्योधनसों कहतभो पुत्रत्यागि हठकोह ॥ क्षात्रबंशको कुशल कृत बचनमानि क्षितिनाथ। जाहु युधिष्ठिर भूपपहँ कृष्णचन्द्र के साथ ॥ सोरठा ॥ दुहुँदिशिको कल्यान चाहिकृष्ण सुधरम कहत। पुत्रकरोमतिश्रान जाहुधर्म क्षितिपालपहँ ॥ ऐसेबचन अनूपसुनि नहिंकछु उत्तरदियो । जबदुर्योधन भूप तब फिरि इमि भीषमकह्यो ॥ छप्पै ॥ जौलगि धर्म नरेश नरन हित सैन सजावत। रथचढ़िसदल सबन्धु नहीं दुंदुभीबजावत ॥ भीम-सेनगहि गदा न जौलगि ओजबढ़ावत। पारथकृष्णहि नौमि न जौलगि धनुष चढ़ावत ॥ सहदेव नकुल सात्वकि सुभटजौ लगि धनुष न गहत बनि। नृपमाणिकह्यो तौलगि चलौ जहां धर्म क्षितिपालमनि ॥ अपरं ॥ जौलगि द्रुपद बिराट महीप न दलसजि बलकत। धृष्टद्युम्न अभिमन्यु न जौलगि रणहित ललकत ॥ धृष्टकेतुसहदेवयुधामाणि आदिकनरपति। जौलगि सदल सबन्धु चलैं नहिंठानत रणगति ॥ सजि द्रौपदेय हिड-म्बभट जौलगि चढ़त न रोषसनि। नृप माणिकह्यो तौ लगि चलोजहांधर्म क्षितिपालमनि ॥ अपरं ॥ धर्मधुरन्धर यशीसुहृद गुरु बन्धु बिशारद। चलिसबन्धु ढिगतासु बचनकहिसबिनय आरद ॥ पदपङ्कजअस्पर्शकरोतजिअमरषदारुण। सम्मतकरो संप्रेम क्षेमहित हिय करि कारुण ॥ कबिनाथ कहत क्षितिनाथ सुनुजग अनित्यभोनित्य कब। इतनदी नावसंगम उतरि कि-तघै तुम हम और सब ॥ दोहा ॥ धर्म महीपति युद्धको गहन न पावै चाव। बीस बिसे चलिभूमि पद सादर करौ बनाव ॥ भी-षम के ये बचनसुनि दुर्योधन क्षितिपाल। कृष्णचन्द्रसों कहत भो सगरब बचन बिशाल ॥ दुर्योधनउवाच ॥ मनोरमा ॥ तुमकेशव पाण्डवको कहिकै यस। हमको तुम नाहक निन्दत हौकस ॥

हम कौन अनीति कियो उनसों अब । निजहाथ जुवामधिहारि दये सब ॥ अब मांगत तौ वह जातदयो किमि । उनको यह धर्म कहा करिबो इमि ॥ धन हारतसो नहिं लेत महाजन । सत छोड़त वे तजिनीति महापन ॥ दोहा ॥ आपुभीष्म द्रोणादि सब बहुत बुझावत मोहि । उन्हें बुझावत डरतसब यहप्रतक्षबिधि जोहि ॥ तुमसब निन्दत हमहिं नित करि उनकोअवराध । हम बिचार करि लखत तौ नेकु नममअपराध ॥ चौपाई ॥ नाहकपाण्डव दुरमति धरिकै । मम शत्रुन सों सम्मत करिकै ॥ हमसों लरो चहत बिनु कारज । हम न डरबनटवर सुनुआरज ॥ जौ कै बकशक्र चढ़ि आवै । तौ हमसों लरि नहिं जयपावै ॥ सदल पाण्डवन हम लघु जानत । नहिं रणमें निज सम अनुमानत ॥ भीष्म द्रोणकृप अश्वत्थामा । कर्णशल्यशल अति बलधामा ॥ शकुनि जयद्रथ धनुधर नायक । तिन्हें कौनभट जीतन लायक ॥ कै हमउन्हें बधब रणमाहीं । कैवेहम कहँ संशयनाहीं ॥ क्षत्रिनको यह धर्म कहावत । बधेगये बधि कीरति पावत ॥ जीते राज्य मरे सुर धामा । उभय प्रकारमोद की सामा ॥ और प्रकार नमो मनआवत । नाहक सबबकबाद बढ़ावत ॥ भये अज्ञान मोहबश ह्वैकै । कैधौं ममबालापन ज्वैकै ॥ उनकहँ इन्द्रप्रस्थ नृपदीन्हें । सोनहिं राज नीति बिधि कीन्हें ॥ हमसोंभूमि भाग्यबल जीते । पाण्डवसों फिरि लेबो चीते ॥ सूई अग्रभूमि नहिंपैहें । नाहक लरिमरि यमपुरजैहें ॥ कहो बुझाइ कुमति मतिधारैं । जायबिपिन बसिजनमसुधारैं ॥ हारिदयाधन मांगत कोऊ । पावत कौन सुनावहु सोऊ ॥ धरम छोड़ि मति अधरमसाधैं । कालललोकपथ मतिअवराधैं ॥ दोहा ॥ दुर्योधन क्षितिपालके ऐसे बचनअनीक । सुनि यदुनायककहतभे आयो कालनजीक ॥ अमरषबश मानत नहीं वृद्धगुरुन की बात । सूरसेनतौ करहुगे धूरिधूसरित गात ॥ सोरठा ॥ छल

के पासे डारिधन जीते नहिं धर्मगति। तबहूं धर्म बिचारिवैबि-
तये तेरहबरष ॥ दोधक ॥ जान निबन्ध कियो तुमराजा। जानत
सो सब सैनसमाजा ॥ तौन बितायमही अबचाहे। देन न चा-
हत हौ तुम काहे ॥ जे अघ बीज बोय तुम आगे। तेफलफूल-
न पूरनलागे ॥ सीख न मानत हौ तुम जाते। देशअमानुष हो
इहिताते ॥ दोहा ॥ महिषी पाण्डव नृपतिकी कियेदुर्दशातासु।
गुणे सिखापन कौनको ऐसी दुर्मति जासु ॥ इतनेमें नृपसोंक-
ह्यो दुःशासन अनुमानि। भूपदशा यहिसभाकी तुम्हें परत
नहिं जानि ॥ भीषमद्रोण कृप और सब पिताबुद्धि क्षितिनाथ।
हमें तुम्हें अरु कर्ण कहँ बांधि देत हरिहाथ ॥ निशिपालिका ॥ बैन
यह भूपसुनि शोचिगुणि कोपिके। बन्धुसब सैनिकन संगउठि
ओपिके ॥ जायनिज गेहभट वृन्दसह बैठिके। तेज अति तेज
करि सिंहसम ऐंठि कै ॥ दोहा ॥ दरपभरो बलकल लगो गरबी
गरबित बैन। उतै कहे द्रोणादि सों केशव करुणाऐन ॥ चरणाकु-
लक ॥ सबके बचन सर सहित साने। दुर्योधन नहिं हित करि
जाने ॥ सब कहँनिदरि जातभो उठिकै। यहि अभिमान पसा-
स्यो सुठिकै ॥ हठगहि करि मंत्री दुरमगके। नाशन चहतसकल
जनजगके ॥ ताते तुम सब सम्मत करिकै। जगत बचावहु बि-
धि अनुसारिकै ॥ यहि बिधि कंसराज मद माती। धर्म छोड़ि
अधरम रंगरातो ॥ ताको अधरम कर्म निरेखी। सब यदुबंशी
मत अवरेखी ॥ कीन्हे तासु त्याग गुणि मनसों। तबहमतासु
कियो बधप्रनसों ॥ तबलेभो यदुबंशसुखारी। जानतहौतुमसब
नयचारी ॥ बलिबढ़ि भयो गरबबिधि ठानत। तेहि बांध्योहम
सब जगजानत ॥ बिनशै जगत एकके रोषन। तौ तेहिगहि
बांधब कछु दोषन ॥ कुलके हेतु एकतजिदीजै। नगर हेतुकुल
तजिमुद लीजै ॥ तजिये नगर देशके कारण। आतमहेतदेश
के वारण ॥ कर्ण दुशासन शकुनि कुमंत्री। दुर्योधन कुलनाशक

तंत्री ॥ इन्हैं पकरि यह नीति बिचारी । सबिधि करो कारागृह चारी ॥ यह कीन्हें सबजग जन बांचत । अनरथ मिटत सुख-दमुद रांचत ॥ दोहा ॥ कृष्णचन्द्र के बचनसुनि वृद्धनृपति करि गौर । कहे नृपति गान्धारजहि लेआवो यहिठौर ॥ बिदुर जा-य गान्धारजहि भूपतिके ढिगल्याय । ब्रतधारिनको आगमन भूपहि दयो सुनाय ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेभाषायांउद्योगपर्वणिभगवद्दूतेद्वाविंशोऽध्यायः २२॥

बैशम्पायनउबाच ॥ दोहा ॥ घरिकशोचि धृतराष्ट्रनृप फिरि लैऊ-बिउसास । गान्धारी सों कहत भे सुबचन चाहि अनास ॥ जयकरी ॥ परोमोहबश तोसुत मूढ़ । भयो पापरत गरबारूढ़ ॥ मानतकहो न बचन उदार । सबसमुझायथके बहुबार ॥ गयो सभाते उठिकरिरोष । गहि अभिमान न जानतदोष ॥ कियो चहत अनरथ अतिमान । क्षत्रबंशकोनाशमहान ॥ तुमबोल-वाइ कहौ समुझाय । उचितकरब सम्मत सुखदाय ॥ यहसुनि गान्धारी अनुमानि । कहतभई हियसंशयआनि ॥ दुर्योधनम-तिमन्दअमान । सुहित सिखापन करत नकान ॥ होइहि सो विधि निरमित जौन । कैसेहु मेटे मिटतन तौन ॥ इमिकहिक-ही बिदुरसों बैन । तुम सबबिधि ज्ञाता मतिऐन ॥ जाहु सुयो-धन भूपतियत्र । ममशासन कहिल्यावहु अत्र ॥ यहसुनिबिदुर भूपपहँ जाय । लैआये विधिवतसमझाय ॥ क्रोधितपन्नगसम बलऐन । श्वासलेतकरि रातेनैन ॥ सभासदनमधि बैठोआय । बन्धुसखन सहओज बढ़ाय ॥ तबगान्धार सुतागहि प्रीति । सुतसों बोली बचनसुनीति ॥ दुर्योधनप्रिय पुत्रमहीप । हित ममबचन मानुकुल दीप ॥ भीष्मद्रोण कृप बिदुर प्रवीन । क-हतकरो सो बचन अहीन ॥ दोहा ॥ बचनकहत तो जनक सों नहीं उलंघन योग । बन्धुनसो सम्मत करब उचित कहतसब लोग ॥ छप्पै ॥ ईछे मिलतन राज्य रहतनहिं बनत न पालत ।

पूर्वकर्म प्रारब्धतौन भावीगति चालत ॥ कामक्रोध मदलोभ अहित करता दुखदायक। शमदम सुधरम नीति सुखद हित करिबेलायक ॥ सुत काम क्रोध मदलोभतजि शमदम सुधरम नीतिगहि। प्रभुकृष्ण कहत सो महतहित सम्मतकरु प्रिय बचनकहि ॥ अपरं ॥ तीनिलोक पति भयेलोभ नहिंमिटतकहत सब। लोभ मिटत गुणि धर्म हिये सन्तोष गहत जब ॥ बंधु अंश को हरबकरब अधरम सबभाषत। प्रबलबंधुकोअंशच-पत कहुहिय अभिलाषत ॥ सुतअसत पथिनको मंत्रसुनिहठ ठानहु मतिकुपथ गहि। प्रभुकृष्णकहत सो महतहित करुस-म्मतप्रिय बचनकहि ॥ अपरं ॥ तुरग अशीक्षित बली सूतनहिं जानत रथगति। कर्णधार भरअपटु नदीबर्द्धित बेगितअति ॥ गरबी भूप अमानहोत लघुमति मंत्रीतब। सुथर सुखद क-ल्याण मिलतनहिंभाषतबुधसब ॥ नृपमंत्रकरणकोसुहितगुणि युद्धकरो मतिअनयनहि। प्रभुकृष्ण कहत सो महत हित करुसम्मत प्रियबचनकहि ॥ दोहा ॥ गान्धारीके बचनये अन-रथ मेटनहार। सुनिचुपरहि फिरि उठिगयो गरबीभूभरतार ॥ शकुनि दुशासन कर्णसह बैठिकरतभो मंत्र। जानिपरत मम गहनको केशव तानेतंत्र ॥ सोरठा ॥ ममगहिबेकोडौर जौलगिये सिगरेकरैं। तौलगि हमकरि गौर बांधिलीजिये कृष्ण कहँ ॥ सुनिकै बन्धन तासु पांडव सब ह्वै हैं बिकल। तबजय पाइब आसु जौलरिहैं तौ सदलबधि ॥ चौपाई ॥ यहकुमंत्र उनजोअ-नुमाने। सोबुधिबलसों सात्वकि जाने ॥ कृतबर्मासों कहिकहि दीन्हें। रहाभटन कहँ सुयतनकीन्हें ॥ इमिकहि आपुसभागृह आयो। करिसुइशारा प्रभुहिजनायो ॥ इमिधृतराष्ट्र नृपतिसों भाष्यो। तोसुत मूढ़ अनय अभिलाष्यो ॥ गहनचहतमाधव कहँ तैसे। ज्वलित कृशानुहि बालकजैसे ॥ यहमुनिकहे बिदुर ब्रतधारी। तोसुतमूरुख अधरमचारी ॥ कृष्णप्रभाव न हिये

बिचारत । रबिपरशन कहहाथ पसारत ॥ इतनेमें केशवअनु-
मानी । वृद्धनृपतिसोंकहेसुबानी ॥ जौहम अनरथ आनैं मन-
में । तौतोसुतन बिनाशैं छनमें ॥ पैनाहिं अधरम करिबोइक्षत ।
अरथ धरम सुखदायकशीक्षत ॥ दुर्योधनसो हिये न आनत ।
शठमति हठगहि अनरथ ठानत ॥ पकरितहि कारागृहडारो ।
क्षात्रबंश क्षयअनरथ टारो ॥ नहिंसिखवन मानी यह राजा ।
मरीयुद्धकरि सहितसमाजा ॥ यहसुनिकै धृतराष्ट्र महीपति ।
कहोबिदुरसों बाणी दीपति ॥ जाय अधरमी सुतहि बुझायो ।
मंत्रीबन्धु सखासहल्यायो ॥ यहसुनिगयेबिदुरमनभाये । दुर्यो-
धनहिं बोलिलैआये ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ दोहा ॥ कर्ण दुशासन श-
कुनिको सुनि कुमंत्र हितजानि । पापकर्म चाहतकियो अधरम
सुधरममानि ॥ देखिबलाबल करतनहिं साध्यअसाध्यबिचार ।
कुलपासन चाहतकियो जगजनको संहार ॥ सोरठा ॥ जो प्रभु
प्रभुताऐनजेतासबसुरअसुरके । केशवसबजगजैन गहनचहत
तेहिमन्दमति ॥ बिदुरउवाच ॥ पावकशम्भु कुमार बाणासुर अरु
बरुणकहँ । जीत्योजौन उदार गहन चहततेहि मोहबश ॥ गो-
बर्द्धनहिं उठायजेहिराख्यो निजपाणिपर । असुरनके समुदाय
हन्योताहि चाहत गहन ॥ चामर ॥ कृष्ण भूपसों कहैंगहे महा
अयानता । मोहिं एक जानिमानि नीतिकी सयानता ॥ बांधि
लेन डारिदेन बन्दिगह में गुने । भूलिमो प्रभाव तौन जो न
श्रौनसों सुने ॥ दोहा ॥ हमन एक ममसंग इतहैं प्रद्युम्न बलि-
राम । सब पाण्डव यदुवंश सब सब आदित्य अछाम ॥ इमि
कहि माधव मुदित कै रूप बिराट अनूप । दरशाये दुर्यो-
धनहि और रहे जे भूप ॥ सबपांडवआदित्यसब सबयादवस-
मुदाय । सब देखे सबबिधि सजे यदुनायकके काय ॥ चौपाई ॥
लखि स्वरूप सो नृप सबडरिकै । मूँदिरहेचष बिस्मयधरिकै ॥
संजय बिदुर द्रोण अरु भीषम । देखत रहे रूपअहबीषम ॥

भूपति दिव्य चषनसों देखे । तब प्रत्यक्ष लखिबो अवरेखे ॥ कहेनाथ लहिचष अतिपावन । देखो चहतरूप मनभावन ॥ यह सुनि प्रभु अनुकम्पा कीन्हें । धृतराष्ट्रहि अनुपम चषदीन्हें ॥ सो लखि सुरगण बिसमित ह्वैकै । प्रभुहिप्रणाम किये बिधिज्वैकै ॥ फिरिपूर्ववत भये यदुनायक । भयो पूर्ववत भूपति चायक ॥ तब प्रभुसात्वकिको कर गहिकै । उठिकै चले मोद सों नहिकै ॥ उठिसबभूप चलेपहुँचावन । सुरथचढ़े माधवछबिछावन ॥ सुरथचढ़े सात्वकि कृतबरमा । और सुभटसब पूरित परमा ॥ तब धृतराष्ट्र भूप इमि भाखे । प्रभुहम पापबुद्धि नहिं राखे ॥ तुम परतक्ष सुनी ममबानी । नहिं मान्यो दुर्योधन मानी ॥ यहसुनिकहे कृष्ण जगस्वामी । तोसुतभावी बिधि अनुगामी ॥ बिनुमति फिरे गहे हठऐसे । भूपहोइ वहहोनीकैसे ॥ इमिकहि तुरित बिदा ह्वै सानँद । कुन्तीके ढिगगे प्रभुमानद ॥ बन्दि पृथाकेचरण सोहाये । बिधिवत सबवृत्तान्तसुनाये ॥ जेहि बिधि समुझाये सबकोई । नहिं मान्यो दुर्योधन सोई ॥ इमि कहिगहे शोच मतिगाहौ । कहौ सँदेश कहनजो चाहौ ॥ यह सुनि कही पृथाअनुमानी । कहेहु युधिष्ठिर सों प्रभुज्ञानी ॥ क्षात्र धर्म्मको त्यागन करिकै । लहे दुसह दुखअटवी चरिकै ॥

दोहा ॥ क्षात्रधर्म्म त्यागन करबनहिं भूपनकोकर्म्म । नृपकेसाधे सधत हैं बर्ण आश्रमधर्म्म ॥ पूर्वभूप मुचुकुन्द सों कहे वैश्रवण दक्ष । राजाचारो युगनको कारण नीति प्रतक्ष ॥ दण्डनीति बर्द्धित किये भूपति चरत सधर्म्म । तौ सतयुग बरतित रहत जगत करतसतकर्म्म ॥ तेहिविधि त्रेता द्वापरो कलियुगप्रगट लखात । भूपति जेहि बिधि चरतहै धर्म्म कर्म्म गहितात ॥

चौपाई ॥ नृपक्षत्री निजगुण परिहरिकै । जीवन उचित बिप्रब्रत धरिकै ॥ यज्ञ दानकै रणमाधिमरिकै । क्षत्री लहत स्वर्गब्रत चरिकै ॥ यहगुणि बिप्र वृत्तिकरि त्यागन । लेहि स्वअंश भूमि

अनुरागन ॥ सामदण्ड दानादिक करिकै । लेहिभूप निजगुण अनुसरिकै ॥ बिनशत पुण्यपापफल आवत । तबबढ़ि दुसह दरिद्र सतावत ॥ यहि दुखते लरिमरिबो नीको । सहिदरिद्रदुख जीवन फीको ॥ यह इतिहास पुरातन सुनिये । उचित होइ सो करिबो गुनिये ॥ बिदुलागत बिभूति अभिलाषी । जोनिजसुत भूपति सों भाषी ॥ संजय नाम तासुसुत राजा । सिन्धुनाथसों लरो रासाजा ॥ कटे संगके सुभट प्रमाथी । अगणितमरे तुरग अरु हाथी ॥ तहँ भूपति बलबिक्रम ज्वैकै । परो मोहबश व्याकुल ह्वैकै ॥ तब बिदुला भाषी निजसुतसों । कत तजियुद्धपरो भययुतसों ॥ अरिनन्दन कहँ आनँद दीन्हें । सुयश पिताको लोपितकीन्हें ॥ क्षत्रिहि लरिमरिपरे भलाई । इमिमोहितह्वैबो कदराई ॥ कततजि धीरज संडसमाना । परममोहवश भयोअयाना ॥ भयतजिउठि धीरज धरि मनमें । अरिहि नाशकै तन तजु रणमें ॥ दोहा ॥ बिनामरेसहिभोगको गहततोषतजिरोष । यह न उचित नृप पुत्रकहँ यहप्रसिद्ध अतिदोष ॥ दानखड्गबिद्या सुगुण करि नहिं होत प्रसिद्ध । जननि बिनाहक करत सो जननी जनकहि वृद्ध ॥ अपटु अरीझ अमौज अरुभीरुअक्रोध अधीर । नृपपतनीएसोसुवन वृथाजनैसहिपीर ॥ सेवकगणसो उचित है क्षमातोष हे तात । शत्रुन सों करिबो क्षमातोष दोष अधिकात ॥ ताते तजि सन्तोष सुत अमरष गहिकरु युद्ध । कै जीवतकै मरबहै क्षत्रिहि दूनोंशुद्ध ॥ जयकरी ॥ तो बालापनमें ममपास । आइकह्यो ब्राह्मण मतिरास ॥ यह कछु दिनमेंकृश गति पाय । फिरि अति वृद्धि लही सुखदाय ॥ सोगुणि बूझि शंकतजि तात । लेहु युद्धकरि बिजय बिभात ॥ यहि प्रकारके अगणित बैन । सुनि बोलो भूपति लहिचैन ॥ नहिं अब मम संग योधा उद्ध । किमि हम करें शत्रुसों युद्ध ॥ सुनि बिदुला बोली अनखाय । शूर न हेरत संगसहाय ॥ तेजवान भूपतिको

संग । लरत सुभट जुरिआनि उमंग ॥ ताते शोच त्यागिलहि चेत । करि उद्योग लरोजय हेत ॥ शोचवढ़ाये काजनशात । धीरजकरत काजअवदात ॥ जौनअवशि करिबेकोयोग । तहां न शोचब उचितप्रयोग ॥ तुमकहँ करवयुद्ध मतठीक । जीतिमरे उभय दिशि नीक ॥ यह क्षत्रिनको धर्म अनूप । क्षमातोषमति आनो भूप ॥ क्षमातोष गहि तजियह भूमि । कौनदशा लहि-हौ दिशि घूमि ॥ यह सुनि संजय नृप रिसि छाय । लरेशत्रुसों जोरिसहाय ॥ पाय बिजय लहि राज्य महान । किये पूर्वबतभो-ग बिधान ॥ हे यदुपति ममपुत्रन पास । बिधिवत कहियो यह इतिहास ॥ दोहा ॥ यहइतिहास सुनाइ के कहेहु कृष्ण मतिमा-न । भूमि लेहिं जेहि बिधि मिलै इहैधर्म नहिं आन ॥ इलनेमें तेहि थरभई नभबाणी अति शुद्ध । पृथा शोच तजु तो सुतन महिलेहें करि युद्ध ॥ चंचला ॥ जासुसंग बासुदेव प्रीतिसों सदा बिभात । बिश्वनाथ बिश्वपाल बिश्वरूप बिश्वगात ॥ यातुधान कैक कोटिकोसु जो करै बिनासु । शक्रलीनिलोक ईश होत पाय कृपाजासु ॥ दोहा ॥ भीम पार्थसम जगतमें को योधा रणधीर । कृष्णचन्द्रकी कृपाते लेहैं बिजय गँभीर ॥ नभबाणी सुनिमुदित ह्वै पृथा कही समुझाय । भीमपार्थसों कहेहु इमि ममसंदेश यदुराय ॥ सोरठा ॥ द्रुपदसुताके केशगहि ल्याये जो सभामधि । सो दुख मिटै अशेश करै तौन नृप नीतिगुनि ॥ सुनि कुन्ती के बैन आश्वासित करिकै सबिधि । केशव राजिव नैन बिदाभये मंगल अयन ॥

इतिउद्योगपर्वणिदूतकर्म्मणिकुन्तीकृष्णसंवादोनामत्रयोविंशोध्यायः २३ ॥

बैशम्पायनउवाच ॥ हरिकुन्ती सों ह्वै बिदा रथचढ़ि ओजबढ़ा-य । तेहि निजरथ पर करण कहँ सादर लये चढ़ाय ॥ दारुकि सों हँकवाइ रथ चलि पुरबाहर आय । थिरि सुमंत्र करिकरण सों बिदा किये सुखपाय ॥ जयकरी ॥ करणहि करिकै बिदासप्रे-

म । कृष्ण चले समुझत निजनेम ॥ उतै द्रोण भीषम अनखा-
य । दुर्योधन सों कहे बुझाय ॥ तात करो सम्मत अवदात ।
नातरु होन चहत उतपात ॥ क्षात्रबंशपर प्रलयमहान । होइहि
जानौ इतो निदान ॥ तौ बिक्रम रबि होइहि अस्त । पाण्डव
लहिहैं भूमि समस्त ॥ मो मनमें नहिं संशय और । इतो शोच
सो कहत सडौर ॥ प्राणसरिस पाण्डव प्रिय मोहि । तिन सों
लरन परी बिधि जोहि ॥ ताते शतधा सिखवत नीति । सम्मत
करो प्रगट करि प्रीति ॥ यह सुनिकै दुर्योधन भूप । नहिं दीन्हें
उत्तर अनुरूप ॥ तब धृतराष्ट्र नृपति मति ऐन । संजयसोंइमि
कहे सुबैन ॥ कहु संजय करणहिं लैजाय । कहे कहा माधवमन
लाय ॥ सुनिबोले संजयमतिभौन । महाराजमणिसुनियेतौन ॥
कहे करणसौं कृष्णसुजान । करण बिदित तू अति मतिमान ॥
बिधिवत सुने वेद वेदान्त । धर्म शास्त्रहौ सुने सुदान्त ॥ पांडु
नृपति के पुत्र सहोढ़ । हौ तुम जाहिर क्षत्री प्रौढ़ ॥ भोबिवाह
ते पीछे जौन । अरु पूर्वहु जोभो बलभौन ॥ होतसहोढ़ सुदा-
नो तात । है यह शास्त्र माहिं बिख्यात ॥ मात बिवाह जासुसँग
होय । पूर्ब्बजहूको पितुहैसोय ॥ पाण्डुनृपति तो पितुओढार ।
तुमहौ पाण्डव भूभरतार ॥ दोहा ॥ हौतुम धर्म महीपके सोदर
अग्रजभाय । मानि बचन ममसंग तुम चलो मोद सरसाय ॥
सबपाण्डवले अनुजसम मिलिहैं तुम्हें सप्रीति । बिप्रन सह
अभिषेक करिकरिहैं नृपति सनीति ॥ चौपाई ॥ धौम्यहि आदि
बिप्रसबचायक । सबयदुबंशी यदुकुलनायक ॥ हमअरुपांडव
सहित बिवेका । बिधिवत करब राज्य अभिषेका ॥ तोशासन
लहिजानि सुकाजू । करब युधिष्ठिर कहँयुवराजू ॥ सबपाञ्चा-
ल सकलयदुबंशी । सबपांडव सुत सुभटप्रशंशी ॥ सब पांडव
करिहैं तोसेवन । महाराज कैलसो सुभेवन ॥ उडुगण सह नि-
शिपति छबि छाजत । तिमिबंधुनसह होहुबिराजत ॥ कुन्तिहि

देहु मोद अतिभारी। होहुबिदित भूपति नयचारी॥ यहसुनि कर्ण कह्यो अनुमानी। सांचकहत तुम केशव ज्ञानी॥ है मम जननी कुन्तीमाई। पांडव हैं ममसोदर भाई॥ रबिप्रथमहिं यहमोहिं सुनाये। फिरि जिमिराधा केघरआये॥ कुन्ती करि दीन्हों ममत्यागन। सूतकियो पालन अनुरागन॥ राधा मुत्र पुरीष उठाई। पालो सुतकरि प्रीति बढ़ाई॥ जातककर्म सूत ममकीन्हों। बिप्रन भूरिदक्षिणादीन्हों॥ सूतजमोहिं जगतसब भाषत। तासुनत्याग बनत अभिलाषत॥ तिनकोपिण्डभाग कोछेदन। उचित न मोहिं लागि यहि भेदन॥ उनकेनेह दाम सों बन्धित। ममपरिवार होत नहिं सन्धित॥ दोहा॥ ताहूसों अतिकठिनहै दूजोकारणतात। दुर्योधनके मित्रहम सबनृप गणमें ख्यात॥ करिअभिषेक सुअंगपति भूप मोहिं करिभूप। दुःशासनसों अधिकप्रिय मानत निजअनुरूप॥ और सुनोइक बात यह होइहिसब जगमाहिं। अर्जुनसों डरि कर्णगो भूप युधिष्ठिर पाहिं॥ रोला॥ मोहिं भीषम द्रोण कृपसों अधिकयोधा जानि। पाण्डवनसों बैर कीन्हें मंत्र ममहित मानि॥ लहो अति ऐश्वर्य्यको सुख जासुसंग अथोर। भीष्मकोमत निदरि जोहित मंत्र मानत मोर॥ युद्धकरि जय लहनको अति मोर जाहि भरोस। तजब ऐसी समय ताहि बिश्वासघात कुदोस॥ होत सब अपराध सों बिश्वासघात गरिष्ट। परमधर्मी बिदित हम किमि करैं सो गति इष्ट॥ प्रथम धर्म महीप राजाभयोजोरिसमाज। तौन पद हम ग्रहणकै किमि करैं तेहि युवराज॥ जासु जत्विहित आपुयहि बिधि करत भेदउपाय। तासु जयमें कौन संशय आपुजासु सहाय॥ भीम अर्जुननकुल सात्वकि द्रुपद अरुसहदेव। धृष्टद्युम्नबिराटअरु अभिमन्यु शंखसुभेव॥ धृष्टकेतु महीप उतमौजा घटोत्कचबीर। चेकितानाहिं आदि जाके संग भूपतिभीर॥ तासुजयमें कौन संशय सुनहु यदुकुलचन्द।

आपु ज्ञाता सकल बिधि जो युद्धयज्ञअमन्द ॥ पार्थ होताधनु-
श्रुवाधृत्त बिषपद बिक्रमतासु । अस्त्रशस्त्र सुमंत्र स्वाहा शब्द
उच्चरनिआसु ॥ भीमअरु अभिमन्यु आदिकबीर ऋत्विजपर्म।
युद्धयज्ञ अनूप ताको करनहार सुकर्म ॥ कटे धनुध्वज अंगरथ
के पाणि पग शिर गात । सामिधरण महि कुण्ड शायकअग्गिनि
यत्र बिभात ॥ बिजय अद्भुत पुण्यलेहैं बिदितधर्मनरेश । कर्ण
के ये बचनसुनिकै कहे कृष्ण सुभेश ॥ राज्य तुमकहँ देतहमनहिं
लेत तुमप्रण धारि । अवश्य पारथ बिजयलेहै शत्रुसेनामारि॥
कृष्णके सुनि बचनबोलो करणधीरधुरीन । कृष्णभाषतआपुजो
सो सांच सुबचनपीन ॥ लखत हम दुःस्वप्न अगणित अपश
कुन अधिकार । महाभीषम युद्ध ह्वैकै भटनको संहार ॥ होतसू·
चित पाण्डवनको बिजय परम अनूप । हारिइतकी प्रगटजानी
जात भीषम रूप ॥ दोहा ॥ पितावृद्ध गुरु पितामह अरु तो ब-
चन अमन्द । नहिं मान्यो यहहारिको लक्षणदायकदन्द ॥ अ-
स्तिनिचय पर बैठिकै सुवरण भाजन राखि । पायस घृतभोज-
न करत धर्म बिजय अभिलाखि ॥ भीमगदा गति शैलपरचढ़ि
गरजत जयहेत । शुभ्रसौधपरचढ़ि लसत भूपति धर्मनिकेत॥
श्वेत द्विरद आरूढ़ ह्वै तुमसहअर्जुनबीर । टङ्कारत गाण्डीव
धनुहरत भटनको धीर ॥ नकुल बीरसहदेव अरु सात्वकि दि-
व्य स्वरूप । बरबाहनबर भटनसह बिरचत समुद अनूप ॥
भीष्म द्रोण बाह्लीक हम ऊटन चढ़े अचाय । दक्षिण दिशि
कहँ जातहैं महामलिनता छाय ॥ सोरठा ॥ केशवयहि बिधि जो-
हि सब निशिमें अगणित सपन । प्रगटपरत लखि मोहि हारि
सुयोधन नृपतिकी ॥ चौपाई ॥ पै यह जानि परतहै आरज । बि-
धि निरमें कछु अनरथ कारज ॥ जाते हित उपदेश न भावत ।
यदपिवृद्ध बहुभांतिबुझावत ॥ हमैंभूपकेमनकीकरिकै । उत्रिण
होब उचित रणचरिकै ॥ लखमख अति धरम सोहायो । है

क्षत्रिनके सब युगगायो ॥ भीष्मद्रोणको अरु मम मरिबो ।जा-
नो महा प्रलय दिन परिबो ॥ करता कीन्हें निरमित जोई । सिं-
टीन मेटे होइहि सोई ॥ इमि कहिकै है बिदा सचावन । रथचढ़ि
चलोकरण छबिछावन ॥ हमइतचले उतैप्रभुज्ञानी । बिदुरगये
जहँ कुन्तीरानी ॥ कुन्तीबचन बिदुरकेसुनिकै । शोचिकरणको
बिक्रमगुनिकै ॥ गईकरणकेढिगबरज्ञानी । करणबन्दिपगकह्यो
सुबानी ॥ आगमहेतु कहो ब्रतधारिणि । तबइमि कही पुत्रहित
चारिणि ॥ तुम मम सुत नहिं राधासुतहौ । सुत तुम यहवृत्तांत
अश्रुतहौ ॥ कुन्ति भोज भूपतिके घरमें । सुलसुनु ममकन्यापन
बरमें ॥ रबिसों भयो समागम मोसों । तबतुम भये कहत सति
तोसों ॥ कुण्डल कवच धरे अभिरामा । प्रगटभये तुमबर बल
धामा ॥ धर्मभूप तुम सोदर भाई । प्रीति करोहठ बैर बिहाई ॥
दोहा ॥ तुमहौ जेठे नृपालि ह्वै धर्महि करि युवराज । बन्धुनसों
सेवितलहौ अति आनँद सहसाज ॥ तुमअरुअर्जुन एकह्वैग-
हिहौभायसुप्रेम । तबकुरुपतिसम्मतिकरी तजिअधर्मकोनेम ॥
क्षत्रबंशको नाश बिधि लगोजाय मिटि तौन । पाण्डव होहुप्र-
सिद्ध तुम तजिसूतजपद जौन ॥ सुन्दरी ॥ सूरजके बरमण्डलते
तहँ । ई धुनि आनि परी सुनि है जहँ ॥ हे सुत जो तुवमातुसि-
खावति । सोदुखदायक नीतिनशावति ॥ जानिभलो हमहूँयह
भाषत।सम्मतआनँददैदुखनाशत॥हैयहसीखमहासुखदायक।
अवशि करो नहिं टारन लायक ॥ दोहा ॥ जनकजननिके बचन
सुनि कह्यो करण मतिधीर । सुनु जननी सुख राज्यहित धर्मन
तजतसुबीर ॥ मंत्री भाई भट सखा करि पाल्यो नृपमोहि । ता-
हित जब ऐसी समय परत महाअघजोहि ॥ मम बिक्रमबोहित
महा नृपताकेआधार । पाण्डवसेनाउदधिके जानचहतहैंपार ॥
ताहितजेकिरिति नशतहोत महाअपराध । तजिरणको प्रणमंत्र
यहहमनकरब अवराध ॥ पैतोहियगत शंकगुणिकहतइतोसति

बैन । चारिसुवनतोनहिंबधबतजिअर्जुनबलऐन ॥ पारथभटके बधनको हमप्रणकीन्हेपूर्ब । सोहमकहिकैतोहिंहमबधबयुद्धकरि गूर्ब ॥ तेरेपांचौ पुत्रते रहिहैंजानुयथार्थ । पार्थनहींतौ कर्णअरु कर्णनहीं तौपार्थ ॥ महिखरी ॥ सुनिकरणकेयेबचन कुन्तीसमुझि कछुक्षण चुपरही । रणसमय लहिमति भूलिजायहु बचन यह फिरि इमिकही ॥ गुणिप्रबल भावी मिटतनहिं प्रियबचनकहि निजघरगई । कुरुबंशकोगुणि नाशमनमें शोचि अतिचिन्तित भई ॥ दोहा ॥ नीरद रुचि नीरज नयन राम कृष्ण कहँध्याय । धर्मभूपको धर्मगुणि रहीधीर सरसाय ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्बणिभगवद्दूतेचतुर्बिंशोऽध्यायः २४ ॥

बैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ हास्तिनपुरते कृष्णप्रभु आययुधिष्ठिर पास । यथायोग मिलि बैठि तहँ कीन्ही सभाप्रकास ॥ तहँकरि बिधिवत बार्त्ता कहि उतके बिरतांत । जातभये निजसदन प्रति श्रीप्रभुयदुपतिदांत ॥ कछु क्षणमें बरखास्तकरि सभा युधिष्ठिर भूप । बन्धुनसह तहँजातभे जहँप्रभुकृष्णअनूप ॥ तहांयुधिष्ठिर भूप सों कहे कृष्णप्रभु तौन । आपु सुयोधन नृपति सों कहीबार्त्ता जौन ॥ भीष्म द्रोण संजय बिदुर कृप गांधारी भूप । समुझाये तिमि तौन सब कहे श्यामघनरूप ॥ फिरि प्रभु बिधिवत कहे जो कुन्ती कही सँदेश । भई बार्त्ता करणसों सोनहिं करत बिशेश ॥ पृथक पृथक सब बार्त्ता कहि यदुनायक दक्ष । कहे चले हम वहांते तब यह लखे प्रतक्ष ॥ दुर्योधन उठि सभाते अति राते करि नैन । कुरुक्षेत्रदल चलनको शासन दर्पसचैन॥ जयकरी ॥ बहुप्रकार समुझाय सनेम । जब सबथके चाहि तब क्षेम ॥ हम इमिकहे भूप हितलेहु । पांचग्राम इत उनकहँदेहु॥ आविस्थल सुवृकस्थल तौन । मार्कंदी है शुभथल जौन ॥ और बारणावत अभिराम । और एक जो चहो ललाम ॥ एकएक भ्रातन प्रति एक । देहु ग्राम तुम सहित बिबेक ॥ बाकीऔर

भूमिको भोग । करो मेटिकै युद्धकुरोग ॥ सोऊ नाहिं मान्योमति-मन्द । कहतभयो गहि गरबअमन्द ॥ सुईअग्रभारिभूमिन देब। घोरयुद्ध करि बधि जयलेब ॥ यहसुनि गुणिभावी बलवान । हम इतआये सुनो सुजान ॥ अब सबबन्धु समुझि यह तंत्र ।करो बिचारि उचित जोमंत्र ॥ यहसुनि धर्ममहीप बिचारि । बोले बन्धुन ओर निहारि ॥ सुनोउलेको सबवृत्तांत । अब करतव्य करो सोदान्त ॥ यहसुनिबोले बन्धु समस्त । ममदलके सब सुभट प्रशस्त ॥ रणकरि लेब बिजय अवदात । संगर करब मंत्र अवदात ॥ भीष्म द्रोण कृप करणसमान । ममदलमेंबहु भट बलवान ॥ सेनापति करि सुभट उदण्ड । करोयुद्ध गहि असिको दण्ड ॥ दोहा ॥ तब माधवसों कहतभो धर्ममहीपबि-चारि । आपुकहोकेहि सैनपतिकरैंयुद्ध प्रणधारि ॥ श्रीकृष्णउवाच॥ कृष्णकहेतो सैनके हैंसबभटजगजैन । रुचैताहि सेनाधिपति करो शोच कछुहैन ॥ बिदित अयोनिज दिव्यभट धृष्टद्युम्न क्षितिपाल । ताहिकरो सेनाधिपति मोहिं रुचत क्षितिपाल ॥ चोपाई॥कृष्णचन्द्रकेबचनसुहाये । सुनिसबपांडव अतिसुखपाये॥ सबनृप सुभट मोद हियसाने । युद्धहेतु अतिशय उमदाने ॥ धर्मनृपति तब सेन सजनको । दियेनिदेश निशान बजनको ॥ द्रुपद बिराट आदि सबराजा । दलसाजे बजवाय सुबाजा ॥ सातअक्षौहिणि सेना सजिके । धर्ममहीप शक्रसम रचिके ॥ हयगज धेनु हेममणिपावन । बिप्रनपूजि दानदै चावन ॥ गु-णतईश महिमा मनभावन । सुनतशुभद स्वस्त्ययन सुभावन ॥ कुरुक्षेत्र गे ओजबढ़ावत । धूरधार सब दिशिमें छावत ॥ बि-षज औषधी बूटी लीन्हें । सहसन संगचले हित चीन्हें ॥ ज्यो-तिष मंत्र तत्वकेज्ञाता । सहसनसंग लये महिज्ञाता ॥ शकट असंख्यन आयुधलादे । लये चले भटभृत्य प्रमादे ॥ चले असंख्यन शिलपी चातुर । सौज समाजन सहित अनातुर ॥

यहिबिधिकुरुक्षेत्र मधिजाई । कियेनिवास सुथल ठहराई ॥ जन्मेजय भूपति यह सुनिकै । ब्यास शिष्यसों बूझे गुनिकै ॥
जबप्रभु हास्तिनपुरसों आये । तब कुरुपति किमिसैनसजाये ॥
सोसुनि बैशम्पायन आरज । कहतभये कुरुपतिकेकारज ॥ दोहा ॥
आये हास्तिन नगरते कृष्ण धर्म नृपपास । तब दुर्योधन भूप करि शिथिल जीतिकीआस ॥ करण दुशासनशकुनिसों कहत भयो समुझाय । पाण्डवको कारजबिना किये गयो यदुराय ॥
रोला ॥ कृष्ण सोई मंत्रकरिहैं होइजाते युद्ध । युद्धकरि जयलेनको हम गहें गौरव शुद्ध ॥ साजिसंगी सैन सादर दुन्दुभी बजवाय । कुरुक्षेत्र सुक्षेत्रमधि चलि लरोओज बढ़ाय ॥ शस्त्र शिलपी भिषज मंत्री गणिकके समुदाय । चलैं सेनासंग ब्राह्मण कुशल आनँद छाय ॥ नृपतिको सुनि सरस शासन नृपति योधाभूरि । साजि निज निज सैन गरबित चले आनँद पूरि ॥ उदधिसम बढ़ि नांघि बेला मध्यमहिं कुरुसैन । भई निवसत जाइकै कुरुक्षेत्र मध्य सचैन ॥ नृपनकी करि सभा दोऊ भूप रैनि बिताय । भोर बिलसत भये बिधिवत सैनसौंज सचाय ॥ एकदश अक्षौहिणी कुरुनाथ नृपके संग । धर्मनृपके साथसात अक्षौहिणी सउमंग ॥ भूप दुर्योधनकियेतहँ पृथक् सेनाधीश । द्रोण करणहिं जयद्रथ अरु शल्यजो अवनीश ॥ द्रोण सुतहि सुदक्षिणहि अरु भूरिश्रवहि बिचारि । शकुनि अरु बाह्लीक कृतबरमहि सुबीर निहारि ॥ पृथक् सेनाधीश करिकै सौंपि रण को भार । बिनय पूर्बक भीष्मसों इमि कह्यो भूभरतार ॥ युद्ध हित सब बरणमें हैं श्रेष्ठक्षत्री बीर । आपुक्षत्री मुकुटमणि हौ जगतजित रणधीर ॥ तेज मतमें सूरजैसो बिहँगमें खगराज । धनद यक्षनमें यथा जिमि मेरुगिरि शिरताज ॥ तथातुम क्षत्रियन में हौ बिदित धीरधुरीन । सैनपति ह्वै युद्ध करिकै लेहु जय यशपीन ॥ स्वामिकार्त्तिक सैनपति ह्वै बिजय शक्रहि देत । तथा

मम सैनेश ह्वै तुमलेहु जय यशहेत ॥ भूपके सुनि बचन भीषम कहे बचन सनीति। यथातुममम तथापाण्डव उभयमधि सम प्रीति॥ सबिधि तुमहिं बुझाय हारे नहीं मानेनेक। सैनपति ह्वै गहब अबतौ बिजयहित रणटेक ॥ दोहा ॥ नहिं मम सम पर-सैनमें है कोऊ भटऔर। पारथमोसों अधिक है बिदित सुभट शिरमौर ॥ एकप्रतिज्ञा करत हम सुनो तौन क्षितिपाल। दश हजार भटरोज हम बधब बिरचि शरजाल॥ सोरठा॥ साफ क-हत हेभूप बधि न सकब हम पाण्डवन। करिकै युद्ध अनूप करण बधैकै और भट॥ चौपाई ॥ ऐसे बचन भीष्मके सुनिकै। करणबीर इमिबोलो गुनिकै॥ जीयत भीषम धनुधर जौलों। भूपति हम न करब रणतौलों॥ भीषमके बधपर धनु गहिकै। लरब फाल्गुनसों थिरु कहिकै॥ तदनन्तर दुर्योधन राजा। द्विजन सहितसह नृपति समाजा॥ सेनानायकको अभिषेका। भीष्महिं कीन्हें सहित बिवेका॥ सेनापति ह्वै भीषमराजे। अ-गणित शंख दुन्दुभी बाजे॥ तबजनमेजय भूपति भाषे। तब नृपधर्म कहा अभिलाषे॥ यह सुनि बोले बैशम्पायन। सुनि अभिषेक धर्म नृपचायन॥ कृष्णचन्द्रसों कही सुबानी। भीष्म-हिं भूप कियो सेनानी॥ अब निज दलकी रचनाकीजे। पृथक सैन नेताकरि दीजे॥ यहसुनि कृष्णकहे सति भाषत। करौ बि-भाग यथा अभिलाषत॥ धर्म भूप तब द्रुपद बिराटहि। धृष्ट-द्युम्न सात्वकिभटठाटहि॥ धृष्टकेतु क्षितिपाल सुभेवहि। जरा-सन्धके सुत सहदेवहि॥ सुभट शिखण्डी अरिदलजेता। कीन्हें साथ पृथक् दलनेता॥ धृष्टद्युम्न जोभट दृढ़घायक। कीन्होंता-हि सकल दलनायक॥ सब नृपतिनको सम्मतलीन्हे। सबको अधिप पारथहि कीन्हे॥ दोहा ॥ कीन्हें अर्जुन सुभटको शीक्ष करतनेतार। यदुनाथहि जो बिदित प्रभु असुरसैन जेतार॥ इतने में आये तहां सूत सहित बलराम। गयप्रद्युम्न अक्रूर

अरु ऊधो आदि अक्षाम ॥ संयुता ॥ यदुनाथ रामहिं देखिकै । उठि मोदसों हियमेखिकै ॥ अतिनेह ऊपर खोलिकै । सुखदान बाणिहिं बोलिकै ॥ दोहा ॥ लपटि प्रेमसों मिले फिरि मिलधेम क्षितिपाल । सब पाण्डव सब नृपमिले मिलेद्रुपद पाञ्चाल ॥ यथाउचित सबसोंमिले सबकोऊ करिप्रेम । नृपतियुधिष्ठिरपाणि गहि बैठाये गुणिक्षेम ॥ चौपाई ॥ तब हलधर माधवसों भाष्यो । काल जगतको क्षय अभिलाष्यो ॥ ह्वै है घोरयुद्ध अतिभारी । मरि हैं सब क्षत्री धनुधारी ॥ तुम चाहत पाण्डवन जितावन । पाण्डवले हैं जय मनभावन ॥ अबहीं नाहिं चेतत मति बिगरे । लरि मरि हैं धृतराष्ट्रज सिगरे ॥ मम सम्बन्धी एऊ वोऊ । मो-कहँ समप्रिय भूपति दोऊ ॥ गदायुद्धके शिष्य हमारे । भीम सुयोधन परम पियारे ॥ ताते इन रहि अनरथ ऐसो । हम न लखब यह कर्म अनैसो ॥ तीर्थ यात्रा कहँ यहि कारन । आजु जातहम और बिचारन ॥ इमि कहिकै ह्वैबिदा बिचक्षण । तीर्थ करनगे राम सुलक्षण ॥ जब अभिराम राम प्रभु आरज । गये बिदाह्वै तीरथकारज ॥ तबतहँ प्रबलसैन सहआयो । रुकम भूपको सुतभट गायो ॥ ताकहँ देखि युधिष्ठिरराजा । पूजियथा बिधि सहित समाजा ॥ सादर यथा उचित बैठाये । कुशल प्र-श्नबूझे मनभाये ॥ कुशलप्रश्न कहि नृपबलवाना । कहत भयो पूरित अभिमाना ॥ तुमपर भीर खबर हम पाये । करन सहाय सैनसह आये ॥ नृपति मोहिं लहि सबल सहाई । युद्ध करो सब शोच बिहाई ॥ दोहा ॥ यह सुनि अमरष सहित क-ह्यो पारथ धीर धुरीन । हमें शंकहै कौनकी शंकगहतहैं दीन ॥ हम जार्‌यो खाण्डीवबन जीति सुरेशहि यत्र । गन्धर्वन जीत्यो न हम चह्यो सहाई तत्र ॥ हम निवात कवचिन वध्यो साठि सहस भटयत्र । लरिजीते सब कुरुननाहिं चहे सहाई तत्र ॥ सब जगजीतन योग्य हम चाहत नहीं सहाय । चहौ रहौयहि

ओरकै उतै जाहु अनखाय ॥ यह सुनिकै सुत रुकमको उठि चलिसैन समेत। दुर्योधन क्षितिपाल पहँ गोबल गर्व निकेत॥ चौपाई ॥ पूजिताहि दुर्योधनराजा। किया निवासित सहितसमाजा। सुनि बोले जनमेजय चायक। तबका कीन्हें कुरुकुल नायक॥ यहसुनि भाषे मुनिवर आरज। तब कुरुपति जो कीन्हें कारज॥ शकुनि जयद्रथ करण दुशासन। सहितमंत्र करिनृप कुलनाशन॥ नामउलूक शकुनिकोभाई। तासों बोलो गर्वबढ़ाई॥ धर्म भूप सों कहो सँदेशो। युद्धकरै अब त्यागि अँदेशो॥ कहेहु युधिष्ठिर सों समुझाई। अबमति डरआनै कदराई॥ हारि महीधन चाहत सोई। ऐसो अधरम करत न कोई॥ ऊपर अति सुधरम दरशावत। हिय अधरमको पुंजबसावत॥ तथा बिलार भगतबनि आछे। खायो मूसनको गणपाछे॥ सो व्रत तुम प्रथमहिसों लीन्हें। धर्मबचन कहिअधरम कीन्हें॥ ताते चढ़िमम संमुख लरिकै। पातकनाशौ रणमधि मरिकै॥ममबिक्रम गुणिकै भयपागे। पांचग्राम केशव मुख मांगे॥ बिनायुद्धसूची मुख धरनी। देबन हम हम जाहिर परनी॥ इमि जेठे पांडव सों कहिकै। कहेहु भीमसों धीरजगहिकै॥ बहुतखाब क्षत्रीगुण नाहीं। नहिंअति गरबगहे मनमाहीं॥ दोहा ॥ खायमोटाने मत्स्य पति के घर पाक बनाय। करीप्रतिज्ञा तौन करि सकै करै तौ आय॥ कहेहु कृष्णसों करि सकै पांडवको हित जौन। समय पाय निज शक्यभरि करै आय अब तौन॥ इन्द्रजाल सिखि बिबिध बिधि रूप लखावत जौन। तासों नहिं कारजसधत हम न गुणत कछु तौन॥ कहेहु नकुलसहदेवसे जो कछु बिक्रम होय। समुझितरुणिको कचग्रहण आइकरैं अबसोय॥ सात्यकि द्रुपद बिराट अरु धृष्टद्युम्न उतजौन। श्वेतशिखंडीसोंकहेहु तुम्हैं गुणतभट कौन॥ परहित लगि तन त्यागिबो भलो मंत्र ठहराय। तुम आये तौ युद्धकरि शीघ्र मरो अब आय॥

तोटक ॥ इमि पारथ सों कहियो मनदै । शरलाघवमेंपणमें मनदै ॥ नहिं शंकहमैं लखिकूरपंता । तुम युद्धकरो गहिपूरषता ॥ अब संडपनो अपनो तजिकै । अनुमानि गलानि गहो लजिकै ॥ महि चाहत तौ चढ़िकै लरिकै । सहबन्धुन लेहु महीमरिकै ॥ तोमर ॥ ममसैन सिन्धुअथाह । भटभीष्म जासुप्रवाह ॥ भटद्रोण बेगअमन्द । कृप मौर दायक दुन्द ॥ नृपशल्य सूतजकूल । भगदत्त घोष अतूल ॥ कांबोज नृप बड़वागि । अरिबारिदाहक लागि ॥ मम बंधुझष समुदाय । जेतजत नहिं अरिकाय ॥ सब शकुनि आदिक भूप । अति ग्राह भीषमरूप ॥ भटजयद्रथ बरजोर । है दुसह मारुतघोर ॥ सकम्लेच्छ आदिक सर्व । हैं लहरि पूरितगर्ब ॥ दोहा ॥दृहरथलौ बड़वागिमुख सोमदत्तसह पुत्र । तिमिर तिमिङ्गल सरिसहैं गहे शत्रु बधसुत्र ॥ यहिमम सेना सिंधुमधि परिमति त्यागो प्रान । राज्य न मांगे मिलत है बिना भाग्य परमान ॥ संजयउबाच ॥ मानि निदेश उलूकगो जहँ नृप धर्म निकेत । भूपति आदर करि कहे कहो आगमन हेत ॥ चौपाई ॥तबउलूक भट त्यागिअँदेशा । दुर्योधन कोकहो सँदेशा ॥ पृथक् पृथक् सब भाष्यो सबसों । बीरधीर चातुरता फबसों ॥ सो सुनि भीम अर्जुन आदिक । उनके सिगरे सुभट प्रमादिक ॥ क्रोधानल सों भरि भरि इक्षन । भटउलूककहँ किये निरक्षन ॥ तब माधव उलूकसों भाषे । होइहिसो बिधि जो अभिलाषे ॥ जाहु सुयोधनके ढिगसादर । करिहैं युद्धन इतकोउ कादर ॥ इतनेमें उठिभीम अमाना । गहिउलूकको करबलवाना ॥ कहे कहो उनसों समुझाई । नहिं जानत ममबल प्रभुताई ॥ मैं उनके सेनामधि धसिकै । गदाप्रहारि रुद्रसम लसिकै ॥ सब बन्धुन बधियमपुर देहों । प्रणपूरण करि जययशलेहों ॥ मैंयहि जगमें बिदित बली हों । बधिदुशासनहिं शोणितपीहों ॥ बधि बधि घने भटन बलओकन । शीघ्रपठैहौं ऊरधलोकन ॥ दुर्यो-

धन मूरुखसम बोलत। नहिं मम बलअरु निजबल तोलत॥
कृष्णउभय दिशिको हिलगुनिकै। कहो न मान्योसो शठसुनिकै॥
लरिकै गिरि गुरु गदाके घातन। सुधि करिहै केशवके बातन॥
हम प्रण कियो सभामधिजेतो। रणकरि सांचकरब अबतेतो॥
दोहा॥तब उलूकसों कहतभो बिदितबीर सहदेव। पापपुरुषको
बचनइमि कहत भूलिममभेव॥ जो दुर्योधन होतनहिं धृत-
राष्ट्रकको पूत। तौ कुरुकुल में होतनहिं नाशकभेद अकूत॥
मैं ताके परिवारको करिहौं नाशससैन। यहकहि कहे उलूक
सों पारथ बिक्रमऐन॥ चौपाई॥ मोह बालबशह्वै दुर्योधन।
बोलतकुत्सित वचन अबोधन॥ धनुगांडिव करषि बरभाको।
कालिहदेबहम उत्तर याको॥ यहसुनि कह्यो धर्म क्षितिपालक।
दुर्योधन शठभो कुलघालक॥ क्रोध लोभवश अनरथ ठान-
त। वृद्धगुरुनको बचन न मानत॥ कहेहु बुझाइ तजैकुटि-
लाई। परबलशरि करब लघुताई॥ भीषम द्रोण आदि जे
आरज। मान्यहमैं करता हितकारज॥ तिनके बल रणकरिबो
चाहत। कुरुकुल सौध विनाके ढाहत॥ आपु दुसह बिक्रम
ते रीतो। चहत सहाइनके बलजीतो॥ बिनु भुजबल ज-
यपावतकोऊ। जानतभीष्म अचारय होऊ॥ जोकछु निज
भुजमें बलराखत। जासुभरोसे यहिबिधि भाखत॥ तौममभा-
न्य जिते धनुधारी। तिन्हैंबिना बढ़िलरैप्रचारी॥ तिनकोबचन
उलंघन करिकै। तिन्हैंबधावन चाहतलरिकै॥ हैयह कुत्सित
जनकी करणी। इमिहठगहत न सुबुधि सुबरणी॥ यह सुनि
कहे कृष्णअनखाई। ममसँदेश इमिकहेहुबुझाई॥ तुमजानत
केशव नहिंलरिहैं। सारथि प्रणकरि काममकरिहैं॥ हमक्रोधा-
नल जालपसारब। तृणबन समतौ सेनाजारब॥ दोहा॥ जौन
करणको प्रणकियो पारथ भीमअमान। निजभुजबलसों तौन
सब करिहैं करिघमसान॥ अर्जुनफिरि इमिकहतभे गुणत सुयो-

धनयेह । नहिंमारैंगे भीष्महि पांडवमानिसुनेह ॥ सोहमपहिले भीष्मकहँमारिभूमि परडारि।तबकरणादिकभटनकहँ बधबजीति प्रणधारि ॥ भीष्मद्रोण करणादि अरु सबबन्धुनकोनाश । लखी सुयोधन मूढ़तब तजीजीतिकीआश ॥ जो रणकोउत्साह तौभोर सैन सजिआय। सजीसैन ममदेखिहै शीघ्रकहायहजाय ॥ भीमउवाच ॥ कबित ॥ भीमसेन कहै धीममति दुर्योधनसों कहियोअधीम बाणी डोर मेरेप्रनको । भीष्म द्रोण करण औ शल्य भगदत्त आदि मलभट होहिंगे अहार गीधगनको ॥ कुमती कुधन्ध हैं मदान्ध सब तेरे बन्धु तिनको बधब मोहिं काम एक क्षनको । भूमिपै पछारि मारि फारि छाती शरदासी शोणित पिऔंगो मैं दुशासनके तनको ॥ सोरठा ॥ मारिभूमिपर डारि पदधरिहौं तौ शीशपर । सो नृपधर्म निहारि सुखलहि मोहिं प्रशंसिहैं ॥ कह्यो नकुल मतिमान जाय सुयोधनसों कहो । पारथ भीम अमान कहत तौन करिहैं अवशि ॥ छप्पै ॥ तब क्षितिनाथ विराट शिखण्डी द्रुपद महीपति । धृष्टकेतु सहदेव सुभट सात्वकि गहि भटगति ॥ धृष्टद्युम्न सैनेश प्रगट करि क्रोध दुसह अति । भरेबीररस बचन कहे याहीबिधि रणरति ॥ तबनृपति युधिष्ठिर इमि कहे हम कुलरक्षण हेतगुनि । प्रभु कृष्णहिंभेजे सामहित मूढ़ न मान्यो तौनसुनि ॥ दोहा ॥ पांचग्राम मांगे सबिधि सो नदयो मतिखर्ब । युद्धचहतहौ युद्धकरि हरब तासु बलगर्ब ॥ मद्दिखरी ॥ तुमजाय सादर कहोतासों जौन इतउत्तर सुने । वै जौन सम्मत चहत तौहममारि महिलीबो गुने ॥ यह सुनिउलूक महीपमणिसों बिदाह्वै नृपपहँगयो । इतसुने उत्तर जौन बिधिवत तौन नृपसों कहिदयो ॥ दोहा ॥ दुर्योधन क्षितिपाल मणि सुनि सँदेश उतकर्ष । सभामध्य राजत भयो पूरित महा अमर्ष ॥

इतिमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्वणिउलूकदूतगमनोनामपंचबिंशोऽध्यायः ॥

बैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ यह उलूकके दूतपन की वार्त्ता सुनि भूप। संजयसों धृतराष्ट्र नृप बोले बचन अनूप॥ सुनि भीमादिक भटनकी दुसह प्रतिज्ञापीन। कहाकह्यो भीषम सुभट कहुसो बचन नवीन॥ संजयउवाच ॥ जयकरी ॥ भीषम सेनापति बल ऐन। तहँ भूपति सों कहे सुबैन॥ कार्त्तिकेय के पद जलजात। ध्याय कहत सुबचन अवदात॥ सेना कर्म ब्यूहबिधि जौन। सुरगुरु सम हम जानत तौन॥ बिबिध भांतिके ब्यूह बनाय। बिधिवत युद्धकरब शरछाय॥ यथाशक्ति रक्षब तौ सैन। युद्ध करौ कछु संशय हैन॥ यह सुनिकै दुर्योधन भूप। कहत भयो बर बचन अनूप॥ आपु सैनपति भये बिभात। मोहिं कौन संशय अब तात॥ अब हम सुनोचहतहैं तौन। रथी अतिरथी इतउत जौन॥ यहसुनि भीषमकहे बिचारि। भूपति तौन सुनो निरधारि॥ कृतबरमा अरु शल्य नरेश। भूरिश्रवाजयद्रथ बेश॥ सोमदत्त बाह्लीक उदार। कृपाचार्य्य अतिरथी अपार॥ द्रोण द्रोण सुत बिदित सुबीर। महारथी हैं अति रणधीर॥ असुर अलम्बुष अति बलवान। महारथीहै बिदित अमान॥ निजमुख निज बिक्रम को गौर। हम न सकतकहि सुनुनृपमौर॥ अबसुनुजे पूरित गुणसर्ब। हैं तौ दलमें रथीअखर्ब॥ तुमसबसोदर रथीमहान। परदल जेतासहितबिधान॥ दोहा ॥ नील सुदक्षिण बिन्दनृप अरु अनुबिन्द नरेश। पांचौ बन्धु त्रिगर्त्त ये रथी भयानक भेश॥ लक्ष्मण कुंवर उदार अरु दुःशासनको पुत्र। दण्डधार नृप है रथी गहे जीतिको सुत्र॥ शकुनि वृहद्बलभूप अरु सत्यश्रवा नरनाह। अचल वृषकजलसन्ध ये सुरथी तौ दलमाह॥ इन्हैं आदि बहुसुभट हैं रथी सुनो क्षितिपाल। वृषसेनौ भगदत्त ये हैं अतिरथी बिशाल॥ मित्र तिहारो जासुतुम राखत महा भरोस। सोसूतज है अधरथी लहे शाप अतिदोस॥ रोला॥ भीष्म के सुनिबचन

सूतज कह्यो रिस बिस्तारि । भीष्म नाहक मोहिं बेधत वचन अञ्जन मारि ॥ सर्बथा हम चहतहैं कुरुनाथको हित पर्म । आपु तातें मोहिंनिन्दत जानि कुत्सित कर्म ॥ आपुको मत मानि हम नहिं करबनिज प्रणभंग । त्यागिकै दुर्योधनहि नहिंगहब उनको संग ॥ यथा तुम कुरुनाथ के घरखात सब परकार । चहत हित पांडवनको यह महा अनुचित चार ॥ जराग्रस्तप्रशस्त भट नहिं होत जैसो आप । युद्धमें नहिं वृद्धजनको करत कोऊ थाप ॥ बिक्रमी अरु तरुणक्षत्री बिप्र तपकृत श्रेष्ठ । बैश्यजो धनमान सो बरशूद्र बयक्रम ज्येष्ठ ॥ भूप सेनाधीशतुम कहँकियो तौन कुमंत्र । चहत तुम जय पाण्डवनको प्रगट हैसो तंत्र ॥ युद्धकरि जय लहतभटयश लहतहैं सैनेश । युद्धकरिजय लेब हम तुम सुयश लैहौ बेश ॥ सुनो ताते जियत तुम्हरे करब नहिं हम युद्ध । मरौगे तुम तदनु लरि हम लेबजय यश शुद्ध ॥ भीष्म यह सुनि कहे तू निज योग्यबोलत बैन । चहत है कुरुबंश को क्षयमूढ़ तू अघऐन ॥ तोहिं असपरघमंड तो तू युद्धकरु मनमान । खरो रहि हम लखबतेरो युद्धबिक्रमठान ॥ भीष्म के ये बचनसुनि धृतराष्ट्रको सुत भूप । कह्यो आपु न क्रोधकीजै आपु सुभट अनूप ॥ आपु सूतज एक मत ह्वै करो बिक्रम तौन । लहैं जाते बिजय हम मिटि जाय संशय जौन ॥ कहो अब परसैन के जे रथी अतिरथबीर । भीष्म तब इमिकहे भूपति सुनो सो धरि धीर ॥ प्रथम सुनिये रथीजे परसैनमेंबलवान । धर्म्म भूपति परमसुरथी शत्रु जीति अमान ॥ आठसुरथी सदृशहै भटभीमसेन उदण्ड । ताहि समनहिं उभय दलमें और भट अति चण्ड ॥ दोहा ॥ माद्रीके सुत प्रबलभट हैं सुरथी बलऐन । अर्जुन सम तिहुंलोकमें भयो न योद्धा हैन ॥ जासुसहायक कृष्णप्रभु धनु गाण्डीव गँभीर । कवचअभेद्य अबध्यहै अनुपम अक्षय तुणीर ॥ सर्ब शत्रु शीक्षक प्रबल पारथ

धीर धुरीन । सबदल बधिबे योग्यहै एक धनुषधर पीन ॥ अर्जुनसम अभिमन्यु भट अरि ऐनाको काल । जासु सदृश नाहिं जगतमें दूजो बीर बिशाल ॥ सुवन द्रौपदीके सकलहैं अतिरथी अमान । अज अरु भोज महीप हैं महारथी बलवान ॥ सहस एकादश धनुर्द्धरनसों जौन करतहै युद्ध । शस्त्र शास्त्र में जो प्रवीन अति तौन महारथ बुद्ध ॥ धृष्टद्युम्न सात्वकि द्रुपद श्वेत घटोत्कचबीर । पांड्यभूप ये सकलहैं महारथी रणधीर ॥ भूप बिराटहि आदिहैं जितने नृप वहि ओर । ते सिगरेसुरथी प्रबल करता संगर घोर ॥ धृष्टकेतु शिशुपाल सुत बार्धक्षेमि नरनाह । चेकितान अरु सत्यधृत महारथी बरबाह ॥ चौपाई ॥ युधामन्यु उतमौजा राजा । सब केकयनृप सरस समाजा ॥ जरासन्ध कोसुत सहदेवा । सूर्य्यदत्त अरु शंख सुभेवा ॥ चित्रसेन चित्रायुध नरपति । सेनाबिन्द सत्यजित रणमति ॥ व्याघ्रदत्त उत्तर धनुधारी । हैं सारथि अनुपम रणचारी ॥ पुरजित कुन्तिभोजनरनायक । हैंअतिरथीबिदित दृढ़घायक ॥ महारथी अतिरथी सुबीरा । अरुजे सुरथी अरि रणधीरा ॥ तिन्हैंबधब हमकरि अवरोधा । मोकहँ जीतन योग्य न योधा ॥ है उतजौन शिखण्डी सुरथी । तेहि न बधब हम हैजय अरथी ॥ दुर्योधन भूपति यह सुनिकै । गंगासुत सों बूझो गुनिकै ॥ तात न तेहि बधिहौ केहि कारण । सो कहि कीजै शोच निवारण ॥ भीषम कहे भूपसों सुनिये । जाते हम न तासुबध गुनिये ॥ सत्यवतिहि लखि मम पितु आरज । कह्यो सुआत्मस्वयम्बर कारज ॥ तहँ उन कह्यो होइतब ऐसो । हमजो कहैं करो तुम तैसो ॥ मम दुहिताके सुतसुत बंशज । भूपतिहोइ न जेठोअंशज ॥ सोसुनि कै हम पितु हितचीन्हों । हम न बिवाहकरबप्रण कीन्हों ॥ तब बिवाहकरि नृपमुदपाये । प्रगटभये द्वैसुतछबिछाये ॥ दोहा ॥ चित्राङ्गदजेठोसुवन भयो महाबलवान । फिरि बिचित्रबीरज भयो

कला कुशलमतिमान ॥ शान्त भये शान्तनु नृपतितब हम प्रण.
अनुरूप। भूपकिये चित्रांगदहि करि अभिषेकअनूप ॥ सोरठा ॥
गन्धर्बनसों युद्धकरि चित्रांगद हतभयो। तबहमगुणि मतशुद्ध
नृप बिचित्रबीर्य्यहिकियो ॥ तासुबिवाहबिचार हममनमेंमनसत
रह्यो। तहांआइममचार करिप्रणाम भाषतभयो ॥ रोला ॥ काशिरा-
ज महीपके हैं चारुदुहिता तीन। नाम अम्बा अम्बिका अम्बा-
लिका परवीन ॥ नृप स्वयम्बर चाहितिनको बोलिनृपसमुदा-
य। कियो चाहत शुचिस्वयम्बर सुनो सो सुखदाय ॥ बचनसो
सुनि एकरथ हम काशिपुर में जाय। जीति भूपन कन्यकनकहँ
सुरथपर बैठाय ॥ गहे आनँद आयनिजपुर सुनोभूपतिदान्त।
सौंपि सत्यवतीहि दीन्हें भाषि सब बिरतान्त ॥ देखि चित्रांगद
नृपतिको ब्याहकाल प्रतक्ष। इबिधि मोसोंकही अम्बा सुनो
भीषम दक्ष ॥ पूर्ब मनमें बरोहै हम शाल्व नृपहि सप्रेम। धर्म्म
बिद तुम तुम्हें उचित न भंगकीबो नेम ॥ बचनसो सुनि मंत्र
गुणि हम वृद्धब्राह्मण चाहि। वृद्ध दासीदास सँगदै बिदाकीन्हें
ताहि ॥ जाय शाल्व महीपके ढिग कहो अम्बा बैन। तुम्हैंपर
आसक्त ममबन बरो मोहिं सचैन ॥ कह्यो यह सुनि शाल्व
भूपति भीष्मलैगो तोहिं। और के ढिगगई तियनहिं उचित
राखब मोहिं ॥ जाहु अब तुम भीष्मके ढिगमोहिं नहिं स्वीका-
र। तदनु अम्बाकही इमि मतिकहो भूभरतार ॥ ब्रती भीषम
अनुजहित लैगयो मोकहँ जीति। तहां तासों कही हमइमिगु-
णो भीषम नीति ॥ प्रीतिममहै शाल्वनृपपहँ देहुताढिगजान।
बचन यह सुनि बिदा कीन्हों भीष्मअति मतिमान ॥ सुनोभू-
पति भयोनहिं सुकुमारपन ममभंग। तरुणिहमतो भक्त अब-
ला करोमम परसंग ॥ इबिधि बहुतबुझायनृपसों कहो आरत
बैन। नहीं मान्यो भूपतबसों तरुणि ह्वै गतचैन ॥ रुदति नृप
सों कही नृपमति करोमम परित्याग। एकगति तुम परम मम

हौकरो पूरणभाग ॥ नहींमान्यो भूप भाष्योगच्छ गच्छ सबार। रुदत तब नृपसुता तहँ सों फिरी करत बिचार ॥ मोहिं धिक धिक भीष्महि यहि नृपति अति धिक्कार। पूर्वकर्म्महिं धिकबिधिहि धिक रच्यो यह उपचार ॥ भीष्ममम अपकारअतिशय कियो नाहक ढूंढ़ि । बैर ताको लेउँकैसे कौनबिधि अवऊढ़ि ॥ गुणतऐसे जाइ आश्रम मुनिनके अनुमानि । नौमि बिधिवत भई निवसत कठिन करतव ठानि ॥ दुखित अति अवलोकि तापस भये बूझत ताहि । कहो तुम अति दुचित काहे हियेको-सतिकाहि ॥ बचनयहसुनि रुदतिअम्बाकह्यो निज बिरतान्त। समुझिसो बिरतान्त गुणिगुणिकहे मुनिवर दान्त ॥ जाहुतुम निज पिताके गृह सधिहि सिगरो काज। पिताके आधीनकन्या कहत सुबुधि समाज ॥ कही कन्या सकत नाहिं हम पिताकेघर जाय। उग्रतप हमकरब जेहि परलोक अब न नशाय ॥ बचन यहसुनि सुमुनि ताकीकरि प्रशंसा वेश। करो तप यहपरम उत्तम दये ताहि निदेश ॥ कछू दिनमें तासु मातामह नृपतिऋषिजाय । ताहि अंकलगाइ यहि विधि कहत भे समुझाय ॥ जाय तुम भृगुरामके ढिगकहो निजगति क्षाम। दूरिकरिहैं व्यथा सिगरी कृपाकरि श्रीराम ॥ राम मम प्रियसखातपत महेन्द्रगिरि पै तत्र । चलो अब मम संग तुम मुनिनिकर बिलसत यत्र ॥ होत्र बाहन राजऋषिके बचनसुनि हितजानि । कही तासँग चलन अम्बा हिये आनँद आनि ॥ सुनोनृप तेहि समय तेहिथर भयो आइ प्रतक्ष । रामको जो सखा अकृतव्रण सुनामक दक्ष ॥ ताहि लखि सबसुमुनि उठि बैठाय बिधिवत पूजि। राम प्रभुकहँ होत्रबाहन कहतसुबचन कूजि ॥ अकृतव्रण तब कह्यो यहि थल राम ऐहैं प्रात। लखन तुमकहँ जानि कै निजसखा अति अवदात ॥ दोहा ॥ कथा वारता करत तहँ रजनी भई व्यतीत। भोरहोत आये यहां परशुराम जगजीत ॥

लखि मुनिगण उठिकै सबिधि पूजि महासुख पाय । कुशलप्र-
श्नकरि रामसह बैठि लसे छबिछाय ॥ धनुष परशुतूणीर धर
बैठे श्रीभृगुराम । तब अम्बा पूजन कियो देमधुपर्क ललाम ॥
होत्र बाहु तबरामसों कहतभये मृदु बैन । यह ममदुहिताकी
सुता प्रभुहै महा अचैन ॥ प्रभुसुनिकै याकीव्यथा कृपाकरोकरि
छोह । रामकहे तब निजव्यथा कहुकन्या तजि मोह ॥ जयकरी ॥
तब अम्बाकरि रुदन अवाय । दई सकल वृत्तान्त सुनाय ॥
सोसुनि तासुरूप वयदेखिरामकहे हियकरुणा भेखि ॥ कहुअब
तो मति चाहै जाहि । तोकहँ सौंपिदेहिं हम ताहि ॥ कै भीषम
कै शाल्व बिचारि । मम अनुशासन सकतन टारि ॥ मम शा-
सन नहिं मानै जौन । मम शरघात मरैशठ तौन ॥ यहसुनिकै
अम्बा लहि चैन । कही ताततुम बल बुधिऐन ॥ युगमें जासु
गुणौ अपराध । तेहि जीतो करि क्रोध अगाध ॥ हम जानत
यहि दुखको मूल । है भीषम दायक अतिशूल ॥ मम मतप्रभु
तुम जीतौताहि । रुदति कहीपदपंकज चाहि ॥ यह सुनि राम
दया सों पूरि । मम जीतन को प्रणकरि भूरि ॥ कन्या सहित
बिप्र समुदाय । लैसँग चलेगर्व अतिकाय ॥ तीनि दिवसचलि
मुनि सुखदाय । कुरुक्षेत्रमें निवसेआय ॥ हमसुनितत्र आगमन
तासु । द्विजनसमेत जायतहँ आसु ॥ मुनिनसमेत यथाबिधि
पूजि । सम्मुखबैठे सुबचन कूजि ॥ तबभृगुराम मोहिंलनहेरि ।
कहेवचन अतिअमरष मेरि ॥ भीष्म कौनमति हिये बसाय ।
बिनु दीन्हें नृपतनया ल्याय ॥ कियेबिसर्जित अनुचित तौन ।
याको ग्रहण करै अबकौन ॥ ताते अब ममशासन मानि । स-
बिधि गहो तुम याकोपानि ॥ यह सुनिकै हमकहे सडौर । सो
बिरतान्त सुनो मुनिमौर ॥ यहनृप तनया कहीसुनीति । हैमम
शाल्वनृपति पहँप्रीति ॥ तबहम बिदाकरी बिधिजानि । आपु
कहत अनुचित अनुमानि ॥ गहिभय लोभ करत प्रणत्याग ।

सुनो लगत तेहि कुत्सित दाग ॥ ताते हम न करबस्वीकार। अबमति कहो मुनीश उदार ॥ यहसुनिकै करिरातेनैन। बोले परशुराम बलऐन ॥ दोहा ॥ जो न मानिहै बचनमम तौ सह सखासमान। आजु मारिहौं तोहिं मैं बरषि असंख्यन बान ॥ पाणिजोरि तब हमकहे तुम ममगुरू उदार। क्रोध करो मति शिष्यपहँ यह अति अनुचितचार ॥ यह सुनिकै भृगुपतिकहे जो गुरुजानत मोहि। तौहमभाषत तौनकरु कुलरक्षण बिधि जोहि ॥ चौपाई ॥ यहसुनि हम भृगुपति सों भाषे। नाहक तुम अनरथ अभिलाषे ॥ मुनि न तजब हमप्रण भयगहिकै। आपु न हलुक होहु इमिकहिकै ॥ नारिन को अवगुण हम जानत। नहीं ग्रहण करिबो अनुमानत ॥ गाथा इक मारुतको गायो। सोहम सुने कहत मनभायो ॥ काज अकाज बिचारन हीना। अरु उनमत्त कुपथअवलीना ॥ ऐसेगुरुहूको पटुत्यागत। ताके तजेदोष नहिंलागत ॥ क्षत्री पाणिजोरि ऋजुभाषत। बिप्र तऊजो रणअभिलाषत ॥ आयुधगहि बधहेतु प्रचारत। ता-हिबधे नहिंपातक चारत ॥ तुमद्विजकै क्षत्रीब्रतधारे। हम न होब सुधरमसों न्यारे ॥ तुमसों करब युद्धप्रणधरिकै। कुरुक्षेत्र मधि शरझरि करिकै ॥ कार्त्तवीर्य्य कहँबधि तुमपाछे। शोच पिताको कीन्हें आछे ॥ तेहिथर चलो तुम्हैं हमबधिकै। शोच करब लहि बिजय बरधिकै ॥ जोतुम गहत गरब अतिनोखो। सबथर कहत बचन अतिचोखो ॥ हमबहुबार क्षत्रियनमारे। करिदिग्बिजय प्रतापपसारे ॥ यहसुनि तजो गरबअघभारी। नाहिं तबरहो भीष्मधनुधारी ॥ नाहिंमम समहो धनुधरकोऊ। नातरु तुम्हैं बधत तबसोऊ ॥ दोहा ॥ मैंभीषम मोसोंपरो काम तजौ अबगर्ब। तुम्हैं मारि क्षत्रियनको लेहौं बैरअखर्ब ॥ भीष्म-उवाच ॥ सुनो भूप येबचन मम सुनि भृगुपति रणधीर। कहा भयो बोलत इबिधि काल बिबशह्वै वीर ॥ जोरणशरधा तोहिं

तौ तो बधलखि यहिकाल । गंगहि रोवति लखहिंगे ऋषिमुनि सुर सुरपाल ॥ तोमर ॥ मम संगरण उतसाह । गहि गहत जो जयचाह ॥ तौजाय हास्तिनग्राम । लैसंग भट बलधाम ॥ फिरि करोसंगरआय । तब बसो सुरपुर जाय ॥ यहबचनसुनि हम भूप । छुइ चरणतासु अनूप ॥ यह सत्यवतिहि सुनाय । आशीष तासोंपाय ॥ चढ़िगुरथ सैन सजाय । स्वस्त्ययन सुनत सचाय ॥ अरुदेत बिधिवतदान । अरु सुनत अस्तुति ध्यान ॥ अरुशंख दुन्दुभिभूरि । कीसुनत धुनि मुदपूरि ॥ तहँ चले ओज बढ़ाय । तेहिसमय सुनु क्षितिराय ॥ मम जननि शुचि तनधारि । मुनिपास जायबिचारि ॥ इमिकही मुनिहि बुझाय । ऋषितजो मुनि सुखदाय ॥ ममपुत्र भीषम ताहि । मतिबधो हठिजय चाहि ॥ तब हरषि बोलेराम । निज सुतहि बरजु अकाम ॥ ममकहो मानै तौन । तौबचै बिक्रम भौन ॥ नृप बचन यहसुनि तासु । फिरि आइ ममढिगआसु ॥ इमि कही गंगामाय । सुततजो हठदुखदाय ॥ दोहा ॥ राम धनुषधर रुद्रसम क्षत्रीकुलको काल । बिप्रगुरू शासन करत तौनकरो हेलाल ॥ तब हमसब वृत्तांतकहि नौमिबिदा करताहि । भृगुपति के सम्मुख भये बीसाबिसे जयचाहि ॥ सोरठा ॥ तब भृगुपति भटचण्ड धनुधर मण्डन बिदित भट । टंकारत कोदण्ड मोहिं प्रचारो गरजितकि ॥ चौपाई ॥ तब हम कहो सुनो धनुधारी । हमसुरथी तुमहौपदचारी ॥ तुमहूंचढ़ोसुरथपरआरज । तब हमकरब युद्ध जयकारज ॥ यहसुनि कहे रामभटनायक । ममरथभूमि बेद हयचायक ॥ इमिकहि राम धनुषरव करिकै । शायक बरषतभे प्रणधरिकै ॥ नृप तेहि क्षणहम रामहिं देखे । रथपर चढ़े कवचसों भेखे ॥ अकृतव्रण बर सारथि जीको । दिब्य प्रभाव मोदप्रदनीको ॥ बारबार भृगुराम पुकारत । टेरि जो अनत वृथातन डारत ॥ तब हमधनुष बाण धरिरथपै ।

रथते उतरि शीघ्रचलि पथपै॥ निकट जाइकै युग करजोरी। कहत भये करिबिनय अथोरी॥ धर्मशील ममगुरु गोसाईं। होप्रभु तुम रक्षक सबठाईं॥ तप प्रभाव मति प्रगटितकीजो। अनुकम्पा करिजय यशदीजो॥ यहसुनि परशुराम मुदगाहिकै। कहेलरो सुधरमपरगहिकै॥ शापन देबभूरि भयत्यागो। युद्धकरो ममनमनअनुरागो॥ यहसुनि ताहिनौमि हमफिरिकै। शंखबजाये रथपरथिरिकै॥ तबफिरि रामबाण झरिकीन्हें। तिमिहम शर छादित करिदीन्हें॥ उभयओर बाणनके जालन। पूरितभयो महाबिकरालन॥ उभयसुभट बाणनके घातन। रुधिरभरे सुखमा कहिजातन॥ हम करि अतिबिक्रम तेहिदिनमें। ताहिलखे मोहितकछुक्षनमें॥ घोरयुद्धभो तेहि दिनराजा। लखि बिसमितभे सुमुनि समाजा॥ संध्या निरखियुद्धप्रण तजिकै। संध्याकर्मकिये बिधि सजिकै॥ दोहा॥ प्रातकृत्य करि भोरफिरि कियेघोर रण रंग। दोऊ अरि मदभंगको गहे सुटंग उमंग॥ दिव्यअस्त्र प्रगटित किये परशुराम बलऐन। तेहिहम बारेप्रगटकरि दिव्य अस्त्रजगजैन॥ जब हम छांडे दिव्यशर तब भृगुपति भटचण्ड। बारणकीन्हें प्रगटकरि दिव्य सुअस्त्र उदण्ड॥ कइकबार मोहितकिये मोहिरामभट दक्ष। हमरामहिं मोहित किये कइक बार परतक्ष॥ महिहरी॥ यहि भांति तेइस दिवस तेहिथल युद्ध अति करकस भयो। भृगुराम तब ब्रह्मास्त्र दारुण तजेअति बरचसमयो॥ तब तजेहम ब्रह्मास्त्र दोऊ अस्त्र बढ़ि मगमें भिरे। अति दुसह आतप तेज तिनके पूरिमहि दिवमधि थिरे॥ सब देशप्रतपित भयो सिगरे लोक हाहाधुनि किये। जमदग्नि व्यास ऋचीक नारद आइतहँ करुणा लिये॥ समुझाय बहु बिधि हमहिं रामहि युद्धको बारण करे। तब रामअभ्यासोंकहे मम पितर यहिरण मधि परे॥ नहिं भीष्म हमसों बध्य अरु नहिं जेय अतिशय प्रबल है। तोहेतहम निजशक्ति बिक्रम कि-

योसो वहि दवल है ॥ नाहिं सुयश मम तो अरंथ अबहस क-
हत जसतुम तसकरो । चलिजाय भीषमके निकट कहिबिनय
वार्त्ता बशकरो ॥ यहबचन सुनिके कही अम्बा आपुममहित
अतिलरे । प्रभु जाहुतुम हम करबतप बसि जहां मुनिवर
ब्रतधरे ॥ करि उग्र तप निजपाणि भीष्महि बधब हम यह प्रण
सही । इमिभाषि अम्बागई फिरितपकरन अति अमरषनही ॥
दोहा ॥ मुनिन सहितभृगुराम तब गे महेन्द्र गिरि यत्र । हमरथ
चढ़ि अस्तुतिसुनत मोहितआयेअत्र ॥ रामकृष्णभगवानप्रभु
विश्वयोनि भगवान । तासुकृपाते जयलहे पालि सधर्ममहान ॥
इतिश्रीउद्योगपर्बणिअम्बोपाख्यानेनामषड्विंशोऽध्यायः २६ ॥
भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ परशुरामसों ह्वै बिदा अम्बा बनमेंजाय ।
यमुनातट बसिउग्रतप करतभई मनलाय ॥ जयकरी ॥ बरषदिना
करि बारि अहार । अरु षटमास बायु ब्रतचार ॥ एक बरष
तरु कोदल एक । भोजन कीन्हों सहित बिबेक ॥ बिधिसों चा-
न्द्रायन कृच्छ्रादि । ब्रतकरि शङ्कर को गुणनादि ॥ प्रति मुनि
आश्रम तीर्थन जाय । दुस्तर तप कीन्हों मनलाय ॥ द्वादश
बरष पालि ब्रतधर्म । ब्रत कीन्हों करि दुस्तर कर्म ॥ यहि बिधि
तपते देखिके ताहि । गंगा प्रगटकही का चाहि ॥ यहि बिधि
ब्रत चारित कहुतौन । तब बोली अम्बा मतिभौन ॥ भीषमके
बध करिबे हेत । हमतप करति नियम चितचेत ॥ सो सुनि
मम जननी अति क्रोधि । कहतभई तपफल अवरोधि ॥ सिद्धि
न जानि परत यहकाम । तू हो नदी बार्षकीनाम ॥ अम्बासुनि
यह शाप बिचारि । तव प्रभाव युगभाग सुधारि ॥ एक भाग
करि नदीनवीन । लगी तपन तप गहि ब्रत पीन ॥ देखि तासु
दुस्तर तपचार । प्रगट भयेतब शंभुउदार ॥ कह्यो मांगुबर
तब अनुमानि । अम्बा कही जोरि युगपानि ॥ हमकर निज
भीषमको नाश । कियो चहति सो देहु महाश ॥ यहसुनि बोले

गिरिजारौन । एवमस्तु तुमचाहति जौन ॥ दोहा ॥ सोमुनिकै अम्बा कही किमि होई यहकाज । हम युवती वह पुरुष नहिं युद्ध समागम साज ॥ उमा नाथ यह सुनि कहो नाहिं मिथ्या ममबैन । यहतनतजि तुम होहुगी द्रुपद सुतामतिऐन ॥ चौपाई ॥ कछु दिनमें तुमपूरुष ह्वैकै । ह्वैहौ महारथी मुद ग्वैकै ॥ तब भीष्महिं बधिहौ प्रणगहिकै । शंकर गुप्तभये इमि कहिकै ॥ वैश- म्पायनउवाच ॥ दुर्योधन भूपति यह सुनिकै । भीषमसों बूझत भो गुनिकै ॥ प्रथमसुता ह्वै पुरुष उजागर । भयो शिखण्डी किमि कहि नागर ॥ यह सुनि कहे भीष्म धनुधारी । सुनोतौन भूपति रणचारी ॥ द्रुपद पुत्रहित करि ब्रत साधन । शूलपाणिको कि- यो अराधन ॥ तब करि कृपा शम्भु बरदानद । कहेमांगु बर भूपति मानद ॥ भूपति कहे देहुसुत स्वामी । भीषम बधै जौन बलधामी ॥ सोसुनि शम्भुकहे सुनुमानी । होई प्रथम सुतासुख- दानी ॥ फिरि ह्वै पुरुषसिंह बलधामा । रणकरि लही बिजययश कामा ॥ इमि कहि गुप्त भये शिवयोगी । घरआयोनृप सुतउप- योगी ॥ अर्थसिद्ध गुणि आनँदछाये । पटरानिहिं वृत्तांतसुनाये ॥ क्रमसोंगरब धारिनृपपतनी । कन्याजनतिभईहितजतनी ॥ तब नृपशंभुबचन सतचीन्हें । पुत्रभयोयह प्रगटितकीन्हें ॥ जातक कर्मक्रिये सबिधाना । तौन भेदकाहू नहिंजाना ॥ भूषण बसन पुरुष समगहिकै । बर्द्धित भयो पुरुष समरहिकै ॥ बिप्रसुतन क सँगलिपिलीखो । आचारयसों धनुबिधिसीखो ॥ शंभुबचन गुणि त्यागि अँदेशा । पुत्रविचारत द्रुपदनरेशा ॥ सानँद नाम शिखण्डी भाख्यो । सुतसमप्रेमसहित सँगराख्यो ॥ तेहि तरु- णापन पूरतदेखि । द्रुपद सशोच भयेअवरेखि ॥ दोहा ॥ नृप पतनी नृपसों कही भूप करत कत शोच । सुने न कबहूं शंभुको बचन लहब गतिपोच ॥ अवशि पुरुष यह होगयो ब्याह करो करि यत्न । मत करिकाहू नृपति की ल्यायो कन्यारत्न ॥ रोला ॥

भूपभूपन बोलिकै तबपूरि परम उछाह । सुता ल्यायेदशार्ण पतिकी किये बिधिवत ब्याह ॥ कछू दिनमें लहि समागम सुता नृपकीतौन । पतिहियुवती जानि अतिशय दुखित ह्वै गज गौन ॥ मायकेकी सखीवाहि बुझायकै यहभेद । भईभेजति पितापास सँदेशपूरित खेद ॥ सुनत तौन दशार्ण नाथ हिरण्य बर्म नरेश । भयो भेजत द्रुपद के ढिग दूतभाषि सँदेश ॥ द्रुपद के ढिग जाइकै सो दूतलै एकन्त । कह्यो भाषण कह्यो मोहिं दशार्ण दिशिको कन्त ॥ कौनको दुरमंत्र सुनि ह्वै मोहवश हत चेत । भये यांचत सुताामम निजसुता ब्याहन हेत ॥ भयो ऐसो नहीं अबलौंनहीं ह्वैहै और । कियोजैसो कर्म तुमयह शठन को गहिडौर ॥ होहु अबसन्नद्ध तातेकह्यो नृपकरिक्रोध । सहित मंत्रिन मारि तुमको करी भूपति बोध ॥ भीष्मउवाच ॥ द्रुपद भूपति दूत को यह बचन सुनिश्रुति छोल । रहो औचक गहो तसकर सरिस घरिक अबोल ॥ आनि साहस कह्यो तुम यह सुने मिथ्याबैन । पुरुष है ममपुत्र नृपसों कहेहु युवती हैन ॥ भाषिइमि कहि बहुत आदर बिदा कीन्हों ताहि । जायनृपसों कह्यो सो जिमि गयो द्रुपदहि चाहिं ॥ भूपसो सुनि फेरि धात्रिहि बूझिकरि अनुमान । चलो सेनासाजि द्रुपदहि बधन हेत अमान ॥ चारके मुख द्रुपद सो सुनिहिये अति दुख आनि । जाय तनया की जननि ढिग कहे भूरि लगानि ॥ भूप देश दशार्णपतिमम सुतहि तनयाजानि । मोहिं जीतन चढो आवत छली दोषी मानि ॥ लाज बश हम सकबनहिं लरि सामने ह्वै जूठि । होइजो करतब्य अब सो कहो भामिनि ऊठि ॥ वचन यह सुनिकही महिषी पूजि देवी देव । भूप होहु अशोच शंकर बचन को गुणिभेव ॥ दोहा ॥ यहसुनि द्रुपद सुमंत्रकरि पूजन लागे देव । प्रिय सम्बन्धी सोकलह होइ नहीं जेहि भेव ॥ सुनिकै यह वृत्तान्त सब शोच शिखण्डिनि रोय । गोपित घरते

कढ़ि गई बिपिन मध्य दुखभोय ॥ देहत्यागको प्रणगहे गहन बिपिन मधिजाय । थूण करण शुभ यक्षको लखो गेह सुखदाय॥ चौपाई ॥ निरजन बनमधि घरमनभावन । देखि शिखण्डी प्रविशो चावन ॥ देखि शिखण्डिहि यक्षमहाशय । बूझतभो ऐबेको आशय ॥ मैं धनपतिको अनुचर आरय । जोतू कहै करोंसो कारय ॥ सो मुनि नृपतनया दुखनाशी । निज वृत्तान्त यक्षसों भाशी ॥ कहि वृत्तान्त कही ह्वै आरत । यह दुख तात हियो मम जारत ॥ ममदुख मेटन कहे गोसाईं । तौ करिदेहु पुरुष यहिठाईं ॥ यह सुनियक्ष धरिके अनुमानी । कही शिखण्डीसों बरबानी ॥ निज पुंसत्व तुम्हैं हमदैके । रहबतोर इस्त्रीपन लैके ॥ समुद्जाय तुम निजरजधानी । पूरुषप्रण करुप्रगट सयानी ॥ पैयह बचन कहत हमतोसों । यहनिबन्ध इतकरिले मोसों ॥ पुरुष प्रगट ह्वै कछुदिन रहिकै । फिरिममढिग आयो मुद लहिकै ॥ तब फिरिमम पूरुष पन दीजो । निज इस्त्री पन हमसों लीजो ॥ यहिनिबन्ध को करुअस्थापन । तौहम देब पुरुष पन आपन ॥ यह निबन्ध अतिदृढ़ करिलीन्हों । तब ह्वै युवति पुरुषपन दीन्हों ॥ पुरुष सिंह ह्वै आनँद गहिकै । नृप सुत नगरगयो रिजुकहिकै ॥ द्रुपदहि सब वृत्तान्त सुनायो । सुनिभूपति अतिआनँद छायो ॥ दोहा ॥ उतदशार्ण पतिसद्लचलि निकट आइअति क्रुद्ध । कहिपठवत भो दूतमुख कहो करै अबयुद्ध ॥ सोसुनिकै पांचालनृप भेज्योबिप्र प्रवीन । सो दशार्ण महीपसों बोलोबचन अहीन ॥ भूपकह्यो पांचालपति ममसुत पुरुष अमान । तनया तुमसोंकह्यो सो झूठो अहितनदान ॥ चौपाई ॥ नृपहिरण्यबर्मायहसुनिकै । युवतिएकभेजतभो गुनिकै ॥ सोनृपगेह आय मुदभरिकै । निशिमेंतासु परीक्षाकरिकै ॥ भोरजाय तहँभाषीसानँद । नृपसुतपुरुष सरसरति दानद ॥ सोसुनिभूपमोदसोंपागो । मिलोद्रुपदसों हितमगलागो॥

हयगज रतन शिखण्डिहि दैके। निजपुरगो अतिआनँद लैके॥ इतसोयक्ष युवतिपनधरिकै। बसतरहोनिज गधमाधि चरिकै॥ तहांएकदिनधनपतिआयो। यक्षनकहांराजसोंछायो॥ यक्षना-थलखिअनुचितजाने। यक्षनसोंबोलेरिसिसाने॥ पूथकरणहि-यगरब्रबसायो। तातेमूढ़ न मम ढिगआयो॥ देहौंयाहि दण्ड मन भाये। तब सुयक्षवृत्तान्त सुनाये॥ तब धनेश बुलवायो ताही। कहत भये तेहि युवती चाही॥ अरेमूढ़ तैं अनुचित कीन्हों। पूरुषपन देतियपन लीन्हों॥ तोमधिरहै युवति पन ऐसो। रहै पुरुषन्नृपसुतहैजैसो॥ बिनयकिये तबयक्षबिचक्षण। कहो शाप मेटनको लक्षण॥ सो सुनिकै धनपति सुखपाये। तेहि कुशापको अन्त बताये॥ रणमें मरी शिखण्डी जबहीं। होईपुरुष यक्ष यह तबहीं॥ दोहा॥ इमिकहिकै धनपति गयेसु-नो भूप मतिमान। भावी ऐसे होति है भावी अति बलवान॥ कछुदिनमें तेहि यक्षढिग आपु शिखण्डीजाय। कह्योतातअब लेहुनिज पूरुषपन सुखदाय॥ सोसुनि यक्षप्रशंसिकै नृपकुमार को धर्म। बिदा कियो कहि धनदके शापदाप कोमर्म॥ सोरठा॥ सोसुनि अति सुखपाय गयो शिखण्डी निजसदन। मातापि-तहि सुनाय मोदित करि बिलसत भयो॥ तोमर॥ सो सुनतद्रु-पद नरेश। भोकरत मंगलबेश॥ सबपूजि देवीदेव। अरु पू-जिबिप्र सुभेव॥ हय हेम गज महिदान। भोदेतसहित बिधा-न॥ तब द्रुपदसुत सुखदाय। द्विजद्रोण के ढिगजाय॥ सिखि धनुष बिधिअवदात। भोपरमसुरथीख्यात॥ यहिभांतिभीषम दक्ष। वृत्तान्तकहिपरतक्ष॥ फिरिकहतभोमतिमौन। यहिभांति युवतीतौन॥ होपूर्वयुवतीताहि। हमबधबनहिं जयचाहि॥ यहि मानि सोक्षितिरौन। तहँ कछुक्षण रहि मौन॥ गुणिगोपिहिय कोखेद। फिरि भयो बूझत भेद॥ सोकहो अबहे आर्य। करि युद्ध अद्भुत कार्य॥ तुम द्रोण करणसुबीर। कृप द्रोण सुतरण-

धीर ॥ अरि सैनमाझि कारिगौन । लरिकिते दिनमें कौन ॥ जय लहै बधि अरिसैन । सोकहो बिक्रम ऐन ॥ सुनि कह्यो भीषम ईन । दशसहस योद्धापीन ॥ अरुसहस रथसमुदाय । हमबध-ब रोजसचाय ॥ दोहा ॥ जोबिशेषबिक्रम करौंतौ करि संगरघो-र । एक मासमें मैंकरों अरि सेनाको ओर ॥ तब इमि बूझेद्रो-णसों सोसुनि कहेअचार्य । मासएक लरि शत्रुदल हमहूंमारब आर्य ॥ दोय मासमें शत्रुदल बधन कहे कृपबीर । दशदिनमें नाशन कहो द्रोण तनय रणधीर ॥ करण कहे लरिपांच दिनहम मारब अरिसैन । सोसुनिकै हँसिकहत भो भीषम बिक्रम ऐन ॥ सोरठा ॥ जो लगि भिरत न पार्थ टङ्कारत गाण्डीव धनु । इमि जल्पन अयथार्थ तौलगि मन मानो करो ॥ बपुकला ॥ यहखब-रिपाय । नृप धर्मराय ॥ भट बन्धुसर्व । अरुनृप सगर्व ॥ तिनसों सहास । कीन्हें प्रकास ॥ सबसुने तौन । उतभयो जौन ॥ तुम कहो पार्थ । बाणीयथार्थ ॥ जयहित सहोश । लरि कितेदोश ॥ बधिशत्रु सैन । बिलसौ सचैन ॥ सोकहोतात । बिक्रम बिभा-त ॥ दोहा ॥ भूपतिकेयेवचनसुनिमाधवकीदिशिहेरि । गुडाकेश बोलत भयो बचनबीर रसमेरि ॥ हम चाहें तो निमिष मेंजीतें तीनोंलोक । पशुपति अस्त्रप्रयोग करि दियो जौनतपओक ॥ सोरठा ॥ पैनचहत हमयेहु बिजय चहत करिसबिधिरण । सुजय असंशयलेहु तौसँगसबयोद्धाप्रबल ॥ महिखरी ॥ तबनृपसुयोधन भोरलहि निज सैन सजवावत भयो । बहुशंख दुन्दुभितूर आ-दिक बाद्य बजवावतभयो ॥ सबभूप निज निज सैन साजिसाजि घोररण चाहतभये । चढ़िबाहननि बरबीर रसको सिन्धु अव-गाहत भये ॥ बढ़ि जाय योजन कइक दुन्दुभि झेरि अति आ-नँद भयो । सब नृपन लायक बासगृह रचवाइ तहँ निवसतभ-यो ॥ नृप धर्म सुनियह खबरिसैनसजाइ दुन्दुभि झेरिकै । चलि अगरि निवसतभयो दुन्दुभि शब्ददश दिशि भेरिकै ॥ दोहा ॥

मधिमें योजन पांचमहि राखिउभय क्षितिपाल । युद्ध हेत नि-
वसत भये गहे अमर्ष बिशाल ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगा-
मिनाश्रीबंदीजनकाशीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेन
कविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्बणि
सप्तविंशोऽध्यायः २७॥

उद्योगपर्बसमाप्तः॥

———*———

मुन्शी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखानेमें छपी
फरवरी सन् १८९१ ई० ॥

महाभारतदर्पणे ॥

भीष्मपर्वदर्पणः ॥

दोहा ॥ ध्याय पद्मपद विष्णुके नर नरोत्तमहिं नौमि । बन्दि गिरा व्यासहि रचत भारतभाषा सौमि ॥ मन अलभ्य तेहि लहनको हौं जु करेउ यहकाम । महिमा सीता रामकी दृढ़बसाइ हियधाम ॥ सीताराम सुस्वामिप्रभु न्यामक बांछित दानि । अ-वशि करत सतकार्य्य सिधि सतपथ रत अनुमानि ॥ नीति निपुण प्रभुक्षमत नित शरणागत की खोरि । नाहिं निरखिहैं नेसुको लोलुपताई मोरि ॥ जासुनामलै तरत जन भव निधि अगम अपार । ते प्रभु करिहैं अवशिमोहिं अर्थार्णवके पार ॥ पारथके स्वारथभये सारथि परम अनूप । ते सारथि देहैं बिर-चि भारत भाषा रूप ॥ सोरठा ॥ बन्दौं कपिबरबीर रामपरमप्रिय पारषद । मंगल मूरति धीर भारत स्वरथ ध्वजस्थभट ॥ ध्याय उच्छलनि अच्छ उदधि उलंघन समयकी । भारत समुद प्रतक्ष भाषाकरि चाहत तस्यो ॥ दोहा ॥ बैशम्पायनसों कहो जनमेजय क्षितिकन्त । कौरव पाण्डव किमिलरे सो कहिये बुधिवन्त ॥ चौपाई ॥ जनमेजय नृपकी यहबानी । सुनि बोले मु-निवर बिज्ञानी ॥ कुरुक्षेत्रमें कौरव राजा । हे पूरब दिशि साहित

समाजा ॥ सहितसेन पश्चिमदिशि ताके । कियेबास पांडवशुभ शाके ॥ शुचिसम्मत पंचक उत्तमथर । युद्धहेतु मधिमेंतजि अन्तर ॥ पाण्डव नृपगण कर करिभाये । बासबेश्ममें बास कराये ॥ भोज्यबस्तु अरुशय्यानीके । दीन्हें यथायोग्य सबहीके ॥ दई भटनकहँ बिदित निशानी । जो निज परसूचक मनमानी ॥ भोरहिदुर्योधन दलसाजे । चढ़ि पांडवके सम्मुखगाजे ॥ लखि सरोषपांडव बलभारे । साजेदल बजवाइ नगारे ॥ सदल सुतन सह द्रुपद महीपा । युद्धहेतु पुलके कुलदीपा ॥ केशव अरु अर्जुन मुदलीन्हें । परत्रासन शंखध्वनिकीन्हें । ताक्षण सबआशा बरबरणी । धूरिधारसों भईबिबरणी ॥ घनगण मांसरुधिर तेहि क्षनमें । बरषतभे भविष्य गुणि मनमें ॥ मारुतशरकर कर्षत डोले । अति जवसों भ्रमि इत उत ओले ॥ महाराज तेहि समयामाहीं । रहे न सुभट अनत महिमाहीं ॥ बालवृद्ध तजि युवा सोहाये । महिमण्डलके सबतहँआये ॥ दोहा ॥ रथ कुंजर हय सुभट बिनु भयेहोत तेहिकाल । सर्बदेश तिनसर्बमें तोसों देश बिशाल ॥ युद्धहेतु सन्नद्धह्वै कौरव पाण्डवतत्र । धर्मयुद्ध सिद्धान्तसो नियमेंवे ह्वैएकत्र ॥ चौपाई ॥ युद्धनिवृत्तभये सब कोई । मिलैंसप्रेम मित्रसम होई ॥ समबल बय भिरि संगर करहीं । समबाहन बारे भिरिलरहीं ॥ बिधनुबिरथ भागतनत तिनपै । तजें न शस्त्रशस्त्रहें जिनपै ॥ जोजोभिरै लरैसो सोई । भिरैनदूजो भटहित जोई ॥ एक सुभटसों द्वैभट कितहूं । लरें न नीति निबाहैं नितहूं ॥ सूतशस्त्र पहुँचावन वारे । अरुजेबाद्य बजावनहारे ॥ अन्य कार्य्यरत गाफिल जनपैं । तजैंनआयुध गहिप्रणमनपैं ॥ यहनिबन्ध करिकैमनमाने । कौरवपांडव फिरि बिलगाने ॥ तेहिदिनमें बहुशकुन निरेखी । आय व्यास मुनिबर अवरेखी ॥ अति चिन्तित धृतराष्ट्रहि जानी । कहत भये सुबचन अनुमानी ॥ तजोशोचनृप धीरज आनो । निज

शत सुतन कालबशजानो ॥ नृपसमूह अरु सुभट घनेरे । जुरे काल भावीकेप्रेरे ॥ ते अन्योन्य युद्धकरि मरिहैं । इर्षाभरे नेकु नहिं टरिहैं ॥ यह भविष्य नृप टरिहिनटारे । अवशिहोतबिधि जौन सुधारे ॥ तातेकाल कर्म्मकृत शोचौ । बढ़ेशोचको त्याग न रोचौ ॥ जो यहयुद्ध लखन अवरेखौ । तौचख दिव्यदेउँ सबदेखौ ॥ दोहा ॥ महाराज यहसुनिकहे नृपलै ऊर्ध्व उसास । मुनिमैं नहिंचाहौं लखन पुत्रज्ञातिकोनास ॥ पृथक् पृथक् चाहतसुनो युद्धव्यवस्था सर्ब । करिदीजे ताकोयतन करिकै कृपा अखर्ब ॥ जयकरी ॥ यह सुनिकै मुनिवर मतिमान । संजय कहँ दीन्हों बरदान ॥ दिव्यचक्षु तुमहोहु महान । अश्रमअरु अबध्य गुणवान ॥ युद्धव्यवस्था लखि अनुमानि । कहोनृपतिसों आनँदखानि ॥ कौरवपांडव नृपतिसमूह । तासुकीर्त्ति हमकरब सऊह ॥ नृपहम कहत इतोसिद्धान्त । लहतसुजय धार्मिकअरु दान्त ॥ इमिकहिकैं श्रीब्यासउदार । कहत भये फिरि शकुन विचार ॥ शेनकंक गृद्ध अरुकाक । मोदैं चहुँदिशि जुरेनिशाक ॥ सैनमध्य ह्वै काक समूह । दक्षिण दिशाजात करिऊह ॥ लोहित कृष्ण श्याम परिवेष । शूरहि करत भयानक भेष ॥ कार्तिक की राकाको चन्द । रक्तवर्णभो करता दन्द ॥ गृह शूकरसो आखुभुक क्रुद्ध । झपटि उछलि फिरि बिरचत युद्ध ॥ प्रतिमा सहित कँपति सबठौर । पतति बमति है रुधिर सगौर ॥ बिना बजाये बाजति भेरि । चलै अहयरथ अनरथ हेरि ॥ कोकिल केकीशुक सबकाल । बोलैं भीषन कृत दुखजाल ॥ अरुणोदय में सलभ अनेक । उड़ैंपरम अशकुनके टेक ॥ उभैसन्धि मधि में दिगदाह । होत करन अनरथको चाह ॥ दोहा ॥ अरुन्धती पतिब्रतनकी सींवछोड़ि निजबानि । नभपैचलतिबशिष्ठके आगे अनरथजानि ॥ बिना बलाहक होत हैं शब्द गगनमें घोर । होत सकल बाहननिके आंशू पतनअथोर ॥ प्रगटहोतहै गउन

में युगखुर एकहि बार । फूलेफरे अकालमें तरुकृत अनर अपार ॥ पांच चरण त्रयशृङ्ग द्वै पूंछचारि चखवन्त । बत्स होत हैं पशुनके सूचक अशुभ अनन्त ॥ त्रिपद सदशन बिषाण युत होत खगनके बार । अवशि होयगो भूमिपै नृपगण को संहार ॥ जनमें दुहिता तियनके पांच चारियकसंग । जन्मतही निर्तहिं हँसहिं करहिं अनेकन रंग ॥ लोकबेद अरु शास्त्र अरु बिरञ्ची बिधिकी रीति । ताहि खण्डि इमि प्रलयकर होत बिबिध बिपरीति ॥ अर्क राहु अरु केतु ये हैं चित्रागत क्रूर । ताते भरिहै अवशि महि नर शोणितके पूर ॥ धूम्रकेतु है पुष्य पै भौम मघागत बक्र । लखि जीवहि श्रवणस्थ भो गहत कालबर चक्र ॥ उभै फालगुण पै करै अमल शनैश्चर देव । होय महत उतपात निज भूपति याको भेव ॥ पूर्बभाद्रपद पै बिहरि परहि लखत भृगुदक्ष । ताते लहिहैं खेदबहु नृपसमूह युतपक्ष ॥ धूम्रकेतु प्रज्वलित ह्वै बिलसहि ज्येष्ठामाहिं । नृपताते उतपात अति ह्वैहै पुहुमीपाहिं ॥ शशि सूरहि स्वातिस्थ कहँ पीड़ि राहुगत तत्र । भेदि चक्र तिमि रोहिणिहि पीड़त नाशक छत्र ॥ चक्र सर्वतोभद्रमें बिलसि मघा मधि भौम । पीड़त गुरुयुत श्रवनकहँ करता प्रलय असौम ॥ गुरु शनि साम्बत्सरिक गति गहि सुचक्र आसीन । बेधि बिशाखहि मुदित है करत असगुन पीन ॥ शशि सूरज यकबारही भये राहुसों ग्रस्त । लहि पक्षान्त त्रयोदशी माधिकृत प्रलय समस्त ॥ चित्रा स्वाती के सुमधि बसिके राहु अमन्द । पीड़त कृतकहि भूपसों दायक दुःसह दन्द ॥ चारु त्रिछत्र सुचक्रमें प्रबल क्रूरग्रह सर्ब । पाप ग्रह कलशस्थहैं करता प्रलय अखर्ब ॥ चन्द्र सूर्य्यको ग्रहण भो एक मास में भूप । अवशि भयो चाहै बिघन असगुन के अनुरूप ॥ सोरठा ॥ दीरघ उलकापात तड़ितपात सम होतहै । छारवृष्टि कृतबात भूरिभयद डोलत अमित ॥ इमि बहुबिधिके

घोर होत चण्ड असगुन सकल। ताते प्रलय अथोर होइहि महिपै सुनहु नृप ॥ चौपाई ॥ इमि द्वैपायन मुनिसों सुनिकै। नृप धृतराष्ट्र कहत भे गुनिकै ॥ तात कहे तुम शकुन निहारी। सो हम राखे प्रथम बिचारी ॥ बन्धुबिरोध नाशको कारण। है सब दिन सबर्ग संहारण ॥ पर इतनो गुणि साहस धरहीं। जेनर लरि आयुधसों मरहीं ॥ ते ध्रुववास स्वर्गको पावैं। कीर्त्तिलासु इत जगजन गावैं ॥ सुनि यह आत्मज नृपकी बानी। कहे बिचारि सो मुनि बिज्ञानी ॥ निजहित ज्ञाति वृन्दको मरिबो। है जगमें अपयशको भरिबो ॥ निजकर सम्बन्धिनको बधिबो। है अमोघपातकको वृधिबो ॥ भयो तुम्हैं अनरथको करता। नृप यह राज्य धर्मयश हरता ॥ कालरूप भे सुवन तिहारे। कुलनाशक अवगुणसों भारे ॥ ताते कुलको रक्षणईजौ। शुचि सुधर्म पुत्रन कहँ सीजौ ॥ राज्य युधिष्ठिर नृप कहँ देहु। जो वै दाहिं चाहिसो लेहु ॥ तासु अनुग ह्वै तुव सुतराजें। मिटै सर्व अनरथ सुखसाजें। नृपबाकज्ञ वाक्य सुनि ऐसा। कहो अनज्ञ कहत है जैसो ॥ मोहत लोक स्वार्थहित मानो। लोकात्मक हमहूं को जानो ॥ नहिं ममपुत्र कहो ममानें। धर्म अधर्म न कछु अनुमानें ॥ दोहा ॥ मोहिं आत्म कल्याण हित सदा आप की आस। अब शुभ सूचक सगुन मुनि कहौ कहोतबव्यास ॥ अग्नि दक्षिणावर्त्त ह्वै बिमल बिधूम अनूप। ऊर्जित ह्वै आहुति गहत सो जयदायक रूप ॥ और औरसों कछु कहैं तासु अशुभ शुभअर्थ। यात्रामें फल करत हैं निज अनुरूप समर्थ॥ सनमुख बोलत बाकसो वरजत करत पयान। बोलै पाछे काकसो शुभसूचक सुखदान ॥ रूपशब्द रसयुत रहै जासु सुभट गहिचाव। अवशि लहै हैं नृपति जय बुधि बलके अनुभाव ॥ होहिं अनुग घन वायु तौ सिद्ध होइ जयकार्य्य। इन्द्र धनुष पीछू उवै सो सुजयद है आर्य्य ॥ होय अलपकी दीर्घ अति

सेना है क्षितिपाल । रहैंहर्षयुत जासुभटसो जयलहै बिशाल ॥ भागे कादर एकके भागत सिगरी सैन । फिरिसो सरितप्रबाह सम रोके नेकु रुकैन ॥ कादरजन शतपांचसों पांचसुभटजय लेत । देव परायन नीतियुत नितजय लहै सचेत ॥ जो उपाय ते मिलत जय हैउत्तमजय तौन । मध्यम किये अधर्मछल बधे अधम जय जौन ॥ सोरठा ॥ इमिकहिकै मुनि ब्यास गये बिदा ह्वै कै स्वपद । नृपलै ऊबि उसांसघरी द्वैकलों गुणि रहे ॥

इतिमहाभारतेभीष्मपर्वणिव्यासधृतराष्ट्रसम्बादोनामप्रथमोऽध्यायः १ ॥

दोहा ॥ धीर साहसी भूपमणि नृपधृतराष्ट्र प्रवीन । संजय सों इमि कहतभे पावनबचन अदीन ॥ चौपाई ॥ संजय जिहिमहिं हितसबराजा । लरत मरत करि सदसद काजा ॥ तासु प्रमाण उदधिसह भाषो । सुनिबे को ममभन अभिलाषो ॥ खण्डद्वीप गिरिगण हैं जेते । तासु प्रमाण कहो हित हेते ॥ नदीनगर अरु देश सोहाये । यथा प्रमाण कहो मनभाये ॥ संजय कह्यो सुनो नृपज्ञानी । मति अनुरूप कहत अनुमानी ॥ द्विबिध भूत जंगम अरुथावर । जंगम त्रिबिधकहत बकतावर ॥ अण्डज स्वेदज और जरायुज । तिनमेंश्रेष्ठ जरायुजनर द्विज ॥ चौदहभेदजरायुज गणके । ग्राम्यसातअरुसातसुवनके ॥ सिंहव्याघ्रशूकरअरु बारण । ऋक्ष महिषकपि ये बनचारण ॥ नर हयगोखर खच्चर छागा । भेड़ि शान्तहै ग्राम्य बिभागा ॥ स्थावर पांचजाति नृप सुनिये । लतागुल्म बल्लीतरुगुनिये ॥ अरुत्वकसार सर्बतृणजानो । शीघ्र नाशगत बल्लीमानो ॥ इमिउनइस स्थावरजंगम । तिनमें पञ्चभूतकोसंगम ॥ चौबिसबरणसदृश इनसबसों । युत महिगायत्री सम तबसों ॥ महि महि प्रगटि बिहरि महिपाहीं । होहिंनाश सिगरमहिमाहीं ॥ ताते सर्बात्मकमहिपावनि । नृपगणके मन रुचिउपजावनि ॥ दोहा ॥ हैं सिगरे ऐश्वर्य्यसो गुरुमहि युत ऐश्वर्य्य । याहीते महिहेतु ये लरत सकल नृप बर्य्य ॥

पञ्चभूतमय भूमिपति हैंसिगरे जगतस्थ। नभ मारुतपावक सलिल महि ये प्रभुमें स्वस्थ ॥ महाराज क्षितिपालमणि क्रम सों ये सम्पूर्ण । शब्द स्पर्शरुरूप रस गन्धसुगुण सों पूर्ण। छप्पै ॥ शुद्ध शब्द में गगनवायु अरुपर्श शब्द मय । अग्निरूप अस्पर्श शब्द में है है धृतनय ॥ वारि शब्द अस्पर्शरूप रसमें पटु जानत । शब्द रूप रस परसगन्ध में महि मुनि मानत ॥ हैं ताते महि बहु गुणवती जग आधारवती महत । नृप अण्ड ब्रह्म पर्य्यन्त सब इनसबमें इमि सब कहत ॥ दोहा ॥ इन सब मधि सबमें लसत भूमिब्यक्त परधान । और चारि जाने परत नृप कीन्हेअनुमान ॥ पञ्चभूतमें सर्व अरु है सबमें प्रभु एक । यह बिनु बूझे करत सब बहु बिवेक अबिवेक ॥ कञ्चन अरु कटकादि सम नाम रूपको भेद । है नातरुसब ब्रह्ममें जानतशुद्ध अखेद ॥ कारणते प्रगटत सकल गगन आदि जिमि ईन । भूमि आदि सब होतहै तिमि कारणमें लीन ॥ कवित्त ॥ कारणते नभताते वायु ताते तेजहोत तासों होत जल तासों भूमि अवदातहै । भूमि जल मधिजलतेजजल तेजमें सो वायुमेंत्योंवायु नभमें सो कारणहीमें समातहै । ऐसो परपंच परमातमाको बिरचो मरीचिका समान बे प्रमाण जो बिभात है । रज्जुअहिस्वप्न की दशालों सांचो झूठो जौन महाराज ताकोई अताक्यों भाख्यो जात है ॥ दोहा ॥ भूप बेधिकाटिजाइ कोउ जो ब्रह्माण्ड महान । तौ तितहूं इमि लखिपरै किमिकहिये परमान ॥ परगुणि गणकसुजान जन करिकै तर्क प्रकर्ष । है कीन्हें सिद्धान्तध्रुव सुनिये नृपति सहर्ष ॥ नृप अचिन्त जो वस्तुहै सो न तर्कसों साध्य । बूझे निर्णयहार के है सो शतधा बाध्य ॥ मानव जिमि आदरसमय निरखत बदनअनूप ॥ तिमिहम निजमनमेंलखत सबप्रपंचको रूप ॥ ताते जम्बूद्वीपको कहियतु हैं ब्याख्यान । बेष्ठित जो लवणाब्धिसो सुनिये नृप सज्ञान ॥ द्वीप सुचक्राकार

यह तासु मध्यमेंभूप । मेरुशैल बसुकोण है कंचनमयो अनूप ॥ चरणादोहा ॥ चौरासी चौरासी योजन अधऊरधसो पर्म । बिहरत तापै बिधि सुर ऋषिगण करता सरस सुधर्म ॥ दोहा ॥ उत्तर दिशिहि सुमेरुके नील शैल फिरि श्वेत । सबके उत्तर दिशि शयल शृङ्गवान छबि देत ॥ दक्षिण दिशिताके निषध हेमकूट हिमवान । पूरब पाश्चिम समुद्रलों हैंते सकल महान ॥ बहुबहु योजन भूमिहै तिनके बीच सुजान । खण्ड सकलते चरत तहँ पुण्य पुरुषमतिमान ॥ दक्षिण दिशि हिमवान के भरत खण्ड बिख्यात । उत्तर दिशि हिमवानके खण्डहैमवत तात ॥ हेमकूट औ निषधके मध्यखण्ड हरिवर्ष । तीनिखण्डये निषधके इतहैं सुनोसहर्ष ॥ खण्डइलाबृत मध्यमें पाश्वमेरुके भूप । उत्तरादिशि हैं मेरुके श्वेतखण्ड शुभरूप ॥ चरणादोहा ॥ उतश्वेतागिरिके बैरभ्यकखण्डपरम रमणीय । शृङ्गवानके उतऐरावत खण्ड परम कमनीय ॥ खण्ड सुऐरावत अरुभारत नृपहैं धनुषाकार । चक्राकार भूमिके इत उत गिरिजा सदृश उदार ॥ पूरबादिशिहै मेरुके माल्यवानगिरिचारु । सैनगन्धमादन बिशद पश्चिमादिशा उदारु ॥ इनके बिचहैं मेरुये परसे लवण समुद्र । नील निषध के मध्यये अतिरमणीय अक्षुद्र ॥ माल्यवानके पूरबादिशिमें है भद्रास्वनरेश । गन्धमादन सुगिरि के पश्चिम केतुमाल शुभ देश ॥ उत्तरकुरु भद्रास्वअरु भरतखण्ड नृप मोर । केतुमाल अरु खण्डये चारों चारों ओर ॥ चौपाई ॥ उत्तरदिशा मेरु के पावन । कर्णिकारको बिपिन सोहावन ॥ बिलसैं तेहिबन शम्भुगुसाईं । शिवा सहित शुभदानि सदाईं ॥ तहांमेरुते अमलउदारा । गिरीचारु सुरसरिकी धारा ॥ जाथर धसीधार गिरिचारी । तहांचन्द्रमस ह्रदभोभारी ॥ निरखिधार सो आनँद कारी । शङ्कर जटाजूटमेंधारी ॥ जटाजूटमेंधरि मुदछाये । कइक हजार बर्षबिरमाये ॥ नृपति मेरुके दक्षिणआशा । हैकैलाश

प्रकर्ष प्रकाशा ॥ ताके उत्तरदिशि मनभावन । है मैनाकशैल छबिछावन ॥ शैलहिरण्यशृंग ढिग ताके । हैमणिमयहै नृपबर भाके ॥ ताकेनिकट बिन्दसरनामा । हैसुसरोवर बरअभिरामा ॥ हेमबालुका शुचिरुचिपूरी । जोचहुँदिशि बहुमणिमय रूरी ॥ तहां भगीरथ शिवहि अराधे । सुरसरिहेत उग्रव्रत साधे ॥ उत्तर दिशिह्वैगुप्त सुसरिता । प्रगटी दक्षिणओर सुचरिता ॥ ताथर यज्ञ अनेकन करिकै । लहीसिद्धि सुरपति व्रतधरिकै ॥ ह्वैकै सातधार बरबरणी । धसी तीनिपुरमें अघहरणी ॥ सीता नलिनी सिंधु सोहाई । जम्बूनदी पूतकर गाई ॥ दोहा ॥ अरु ब्रस्वोकसरा बिमल सरस्वती अभिराम । गङ्गासात प्रबाहये गङ्गासात सुनाम ॥ हैपश्चिम दिशि मेरुके केतुमाल शुभदेश । पुण्य पुरुषतहँ बसतहैं कंचनबर्ण सुभेश ॥ सदाचार रत नारि नर सुरगण सदृश अनूप । तिनको आयुर्बल बिशद अयुत बर्षको भूप ॥ शैल गन्धमादन उपरि बिलसत सदा धनेश । राक्षस गुह्यक अप्सरन सहभूषे सोदेश ॥ शैल गन्धमादनहि के बहुगिरि अवयव भूत । तिनपै बिलसत पुण्यजन पर्म धर्म कृत पूत ॥ सहस एकादशबर्षते जीवतहैं नरनारि । तेजपुंज बलबीर्य्य में चरत सुसमपथ धारि ॥ राक्षसगण हिमवानपै बिहरतसदा यथेष्ट । हेमकूटपर बिहरत सुगुह्यकगण गुणश्रेष्ट ॥ शैल निषध गोकर्णपै अहिगण करैं बिनोद । सदाश्वेतगिरिपै असुर सुर बिहरैं लहिमोद ॥ रमैंसदा गिरिनिषधपै मोदत सब गन्धर्ब । नील शैलपैरमतहैं बिदित ब्रह्मऋषि सर्ब ॥ शृंगवान गिरिअमलपै विलसैं अमर अखर्ब । भूप सप्तकुल शैलके कहे नाम गुणसर्ब ॥ उत्तरदिशिमें मेरुके उत्तर कुरुजो देश । अमृत तुल्य बरफल फरत तहँ बहुवृक्ष सुभेश ॥ इच्छित फलदायक बिटप हैंतहँ कितक अनूप । क्षीरस्रव क्षीरी सुतरु हैंतहँ अगणित भूप ॥ भूषणस्रव अरु बसनस्रव हैं तहँ बिटप अमन्द

मणिसुबर्ण समभूमितहँ है हे नृपतिस्वछन्द ॥ नरच्युतह्वै सुरलोकते जन्मलेततहँ आय । जनमत संगहि नारिनर धर्मशील शुचिकाय ॥ बरधहिं क्रमसों पानकरि क्षीरी तरुको क्षीर । तुल्य रूप बनशीलगुण सबक्षण सहचर धीर ॥ सहस इग्यारह बर्ष ते करि तहँ सुतप सप्रेम । तनतजि साथहि लहत हैं उत्तमपद कृतक्षेम ॥ भारुण्डा नामक बिहग तब निज चोंच पसारि । गहि तिनको तन देतहै गिरिकन्दरमें डारि ॥ पूरुबपार्श्व सुमेरु के देश अपूरबपर्म । अभिषेकिततहँ पूर्ण हो नृपभद्राश्व सुधर्म ॥ तहँ बिरचो भद्राश्वको भद्रशाल नवचारु । हैकालाम्र द्रुममयो सुनिये भूप उदारु ॥ उन्नत योजन एकको तरुकालाम्र सुनाम । सदापुष्प फलयुत रहत तहँ अति अमल ललाम ॥ तेज पुंज तहँनारिनर होतश्वेततनअक्ष । जीवतवर्ष हजारदश नादनृत्यमें दक्ष ॥ नित्य सुतरुकालाम्रको करिसुस्वादरसपान । सदातरुणते रहत हैं सुनिये नृपमतिमान ॥ है दक्षिण दिशि मेरुके जम्बूवृक्षमहान । सर्बकामप्रद जाहिनित सेवतसिद्ध सुजान ॥ एकसहस अरु एकशत योजन ऊंचो तौन । सहस अढ़ाई हाथसब ताकीशाखाजौन ॥ यागिक तासुप्रधानता सों यह जम्बूद्वीप । है बिख्यात त्रिलोकमें सुनिये नृपकुलदीप ॥ तासुसुफलके सुरसकी अनुपम नदी बिभाति । पश्चिम दिशि ह्वैमेरुके उत्तरकुरु मधिजाति ॥ जीवतासु जल पान करिहोत कनक रुचिगात । क्षुधापिपासा जराश्रम तिनकेनिकटनजात ॥ ताके जलके परसते कनकमयो सोदेश । जम्बूनद बिख्यातहै ताते कनक सुभेश ॥ पूरबादिशि जोमेरुके माल्यवान है शैल । तासु शृङ्ग पै दिपत शिखि सम्बर्त्तक बरफैल ॥ प्रलय कालमें करत सो भस्म चराचरसर्ब । सम्बर्त्तक सम और नहिं तेजस भरोअखर्ब ॥ माल्यवान के पार्श्वहैं शैलसुग्यारह और । माल्यवान ते सर्बहैं अवयव समकलगौर ॥ च्युतह्वैके बिधिलोक

ते जन्मत तहँ नरआय । पुण्यपुंज परसिद्धते चारु रजतरुचि काय ॥ ऊरधरेताते तहां तपि तपिउग्र अमन्द । सो तनतजि गहि अन्यतन पूरित परमानन्द ॥ ते सिगरे छाछठि सहस रबि के सन्मुख जाय । रहि आगे अरपत अरघ सुनिये नृपसुखदाथ ॥ रहि रहि तहँ छाछठि सहस वर्ष सर्व शुचिरूप । लीनहोतहैं ब्रह्ममें क्रमसों सुनियेभूप ॥ सोरठा ॥ रमणकहै परजाय श्वेत खण्डकोभूपमणि । शुद्धशुक्लशुचिकाय पुण्यपुरुषप्रगटत तहां ॥ एकसहस शतएक अरु शतार्द्ध नरअब्द मिति । जीवतते सबिबेक परममोदमें धर्मरत ॥ हंसा दोहा चरण ॥ नील शैल अरु गन्धमादन माल्यवान अरु नील । बर्षहिरण्मय तिनमधि राजन बर्जित शूद्रसुभील ॥ रोला ॥ नदीहैता वर्षमधि हैरण्वती अभिराम । तहां उत्तम खगनसह खगराज करतआराम ॥ परम उत्तम पुण्यकृतनर करतहैं तहँ बास । शतएकादश अर्द्धशत अर्दाय तत्र सुपास ॥ शैल उत्तमशृंगवत पै शृंगमणिमय तीनि । गुहापरम बिचित्रतामधिबसति देवीईनि ॥ शाण्डिली शुभनाम ताको सुनहु नृपति प्रवीन । जाहि सुमिरे रहति जन के सर्व सिद्धिअधीन ॥ वर्ष ऐरावत उतैहैं शृङ्गबनके भूप । लवणनिधि तटलोंन तहँ रबि तपत तेज स्वरूप ॥ बरमनोहरस्वच्छशीतल रहत नित सो देश । करतआवृत ताहि मानो सहनक्षत्रानिशेश ॥ जिताहार जितेंद्रिनर तहँ अमरपुरते आय । सहसतेरह बर्षबसि फिरि जात उततजिकाय ॥ क्षीरनिधिके तीर उत्तर बसत श्रीभगवान । जासुईहामेंजुमाया मयो सर्वमहान ॥ दोहा ॥ बिरचि बिनाशत रचत इमि लोकअनेकन जौन । सब में सबधर सर्व बिद है व्यापक प्रभु तौन ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिभूगोलवर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

दोहा ॥ संजयसो इमिसुनि कहे नृप धृतराष्ट्र सुजान । अब शुभ भारत बर्षको संजयकहोप्रमान ॥ संजयउवाच ॥ हैंनृपभार-

त बर्षमें शैलश्रेष्ठ शुचिसात । प्रथमनाम तिनके कहैं मनदैसु-
निये तात ॥ बिन्ध्यसु मलयमहिन्द्र अरुऋक्षवान अभिराम ।
पारिपात्र अरु सह्यगिरि शक्तिवान छबि धाम ॥ ढिगवर्ती तिन
के शयलहैं लघुदीर्घ अनेक । गुप्तप्रगट नामक अमलसुनिये
नृप सबिबेक ॥ अब कहियतुहैं नदिनके नामसुनो क्षितिकन्त ।
हैं जितनी यहि बर्षमें पानीभरी अनन्त ॥ कबित ॥ गंगा गोम-
ती औ नदी गोदावरी गौतमीहै गण्डकऔ गौरी महागौरी
अनुमानिये । त्रिदिवा औ दुर्गावती देशी देविका औदेवस्मृति
चुलका कपिंजला है जानिये । काबेरी सुकुंडली कुवीराकर्मना-
शा कहौ कोसा करणा औकरतोया उरआनिये । कृशधाराकौ-
शिकी करीषिणी औ कृमिकपी कपिला कुवारी कुशचीराकृत्या
मानिये ॥ अपरं ॥ चन्द्रभागा चंदनाऔ चित्रवाहा चित्रसेना
चन्द्रमा औ चर्मण्वती चित्ररथा सहिये । बेणातुंगबेणा कृष्ण-
बेणा बिदिसा बितस्ता बाणीबीरा बिनदी बरानन्नी है सहिये ।
बेत्रवती बृहती औ ब्राह्मनदी ब्रह्ममेध्या ब्राह्मणीऔ बिवृका
औ बैतरणी लहिये । बाहुदा दृषद्वती बिपापाऔ बिपाशानदी
बेदाश्वास वृषभा औवृषसाऊ कहिये ॥ अपरं ॥ शोणसुप्रयोगा
औसरस्वती सुधामासिंधु सरावली शतवल्ली शतकुम्भाकहैंगे
गुनि । सैव्यासरयूऔशीघ्रा सुनसात्रिसामा नदीताम्रा तमसा
औस्थूल बालुकासुमोदौ सुनि । पयस्वनि पूर्वापुरमालिनी औ
पासासिनी पिंजलापबित्रा अरु पालावती सुन्धुनि । पुरावती
अवराऔ पिच्छलाऔ चित्रपलाइच्छलाऔ इरावती भूपजा-
हिसवैमुनि ॥ अपरं ॥ नर्मदानिचिन्त्याऔनिबाराऔनिरामसूष्या
भरद्वाजीभीमा भीमरथीभारवों लहीहै । मकरी महेन्द्रासुक्तवती
मानवी मनुष्णा मन्दाकिनी मारिषा औ मनगा सुहदीहै । अं-
हिता अनंगा ओघवती अच्छिदा अशिक्री हेमाहस्ती सोमा
हरिस्रवा बरसदी है । ऋषिकुल्या रजनी रहस्या रोहो रथ-

चित्रा रिन्द लोहितारणी औ लोहितासानदीहै ॥ दोहा ॥ यो तीरथाजांबूनदी यमुनाजबल्लाभूप। और धूतपापानदीअरुधृत-वती अनूप॥ मित्रशिला बहुलानदी नदीशतद्रूस्वक्ष। कानय टेढ़ीधृतवती नदीरापती अक्ष ॥ बिश्वामित्री प्रभृतियेबरणी नदीनरेश। अबकहियतुहैं हैं जितक भरतखण्डमेंदेश॥ कवित्त ॥ कुरु कुन्त्य कान्तिकाहे कोशल कोसाध्य काश करुष कलिंगऔ करी तप सुभेशहै। कुक्करशल्प कालताप कुट्टकेकयहैं काश्मीर कन्यक औकुन्तलसुकेशहै। कारककुलिन्द कुरुबर्णक करीषहैं कुशबिम्ब कालवऔकरकाबिशेशहै। केरलकिरातकुकुरांगरऔ कोकणहैं काबिलकमायू औ कुशस्थ शुभदेशहै ॥ अपरं ॥ शाल्व सूरसेनसिंधुसउशल्य सोतरहैशिखर सुदेष्णसक सशिकसुथाने हैं। शैलऔसुकन्द औस्वराष्ट्राऔसकूललोमा सउविरासयरिन्ध सौहृदबखानेहैं। सिद्धऔसुमल्लिक औशाल्वसेनऔसमङ्गसुनय सिबाटऔ सकृद्ग्रह सुजानेहैं। जाङ्गलजठरअरु यामुनयमनद साजित्रहृत्वजकहतसब सुबिधिसयानेहैं ॥ अपरं ॥ परकाशप्रह्लाद पांचालऔपुलिंदप्रति मत्स्यपत्यकर परांतपरसीकहैं। मालाम-त्स्यमंदक मगधमद्र सुमाद्रेय मलवराष्ट्रमालव औमल्लज सुनी कहैं॥ मेरुभूत मेकल औमधमत्त मल्लअरु मल्लव औमहिष अलीकहैं। मूषक माहेयऔमसीर म्लेच्छदेश मंजु महाराज सुनिये मकारमेंअतिकहैं॥ अपरं ॥ बौधबक्रबकातपबंगऔबिदर्भ बभ्रु बाह्लीक बटधान बानव बिख्यातहैं। बहुबाध्य बातज बिदेह बाणा पर्ब देश बेदाह बर्बर बन बासिक बिभातहैं। बेगस बि-कल्प बिंध्य बुल्लिका औबल्कल हैं परतङ्ग पार्बतसुदेश अव-दातहैं। चेदि चर्ममण्डल औचीन महाचीन चोलाईजिका ये जामेंचारौ चाहे जातहैं ॥ अपरं ॥ द्रविण दशार्ण दुर्ग दर्शक औ द्रवीद्रव दाम्न दशमालिक औ भोज भूषिका अमन्द। उत्कल उपाकृत उपावृत अपरकुन्त अधिराज्य अश्वक औ

अपब्रह सुहै सुछन्द। आहिक अभीर अंग अपरान्त अटवी है आनरत अभ्र अमीसार औद्र निरदन्द। अमलअलिन्द औ अवन्त औनहूणदेश रूपब्राह ऋषिकार मन सुनो मोद-कन्द॥ छप्पै॥ नैकपृष्ठ निष्कुट निषाद नभकानन है गोमन्त निषध और गोपराष्ट है अनूप। गुण गान्धार गोपपालक औ गच्छदेश खाशीर खण्ड कच्छ सुकांभोज शुभरूप। तिलभार तीरगस्न औ त्रिगर्त्त ताम्रलिप्त स्तन बालायतन रचिततत्र यज्ञजूप। एतेदेश विशद बिख्यात तिन्हैं कहैं जानि कहिये कहांलों अब देशसिगरे हे भूप॥ दोहा॥ संजयसों फिरि नृप कहे संजय कहोप्रमान। सर्बद्वीप सबसमुद्रके सुनि बोलोमति-मान॥ योजन अष्टादशसहस अरु षटशत मित भूप। जाहिर जम्बूद्वीपहै अतिरमणीय अनूप॥ तासुद्विगुणहै लवणनिधि नृप ताके चहुंओर। तितनो शाकद्वीपउत पूरितप्रभा अथोर॥ हैंनृपशाकद्वीपमें सातशैल अभिराम। खण्डसातअरु आपगा तिनके सुनियेनाम॥ प्रथम मेरु फिरि मलयगिरि फिरि जल-धारा शैल। रैवत श्यामक दुर्गफिरि केशरशैल सुफैल॥ मलय शैलपै बसतघन जलधारातेबारि। लैबरषत हैं बिश्वमय प्रभु ईहा अनुसारि॥ केशरिगिरिपै करतहैं मारुत सकल बिहार। हैं आयत येसर्बगिरि पश्चिम पूर्बउदार॥ नृपहैंतिनके मध्यमें सातखण्डछबिधाम। महामेरु तवजलदफिरि कुसुदोत्तरअभि-राम॥ मेरुमलय जलधारके इतये खण्डसुग्राम। खण्डउतेजल-धारके हैंसुकुमार सुनाम॥ रैवलगिरिके उतेहैं खण्डचारुकौमार। खण्डउते गिरिश्यामके मणिकाञ्चन गुणगार॥ हैंगिरिकेशरके उते मोदाकी बरखण्ड। क्रमसों तेगिरि खण्डहैं द्विगुण द्विगुण उतचण्ड॥ हैजम्बू तरुते द्विगुण तहां शाकतरुपर्म। तातेशा-कद्वीपजो सेवैंताहिसुधर्म॥ बिलसैं चारोंबर्ण तहँ देवतुल्य तप ऐन। जरारोग असु मृत्युकी भयकछु तिनकहँहैन॥ सुकुमारी

अरु मणि जलानदी कुमारी यत्र । सीता सबिनी नदीहै चक्षु बर्द्धिनी तत्र ॥ महानदी सह बहु नदी कहैं कहांलों सर्व । देश भेद तिनके न कहिसकैं देव गन्धर्व ॥ है उत शाकद्वीपते द्विगुणित क्षीरसमुद्र । तिततोई कुशद्वीप उत जहँ कुश यूप अक्षुद्र ॥ भूपति हैं कुशद्वीपमें अधिकारी षटशैल। तिनके इत उत मध्यमें सातखण्ड बरफैल ॥ तहां देव गन्धर्वसह बिलसत प्रजा प्रवीन । सदाचार रत ज्ञान में सुरगण सदृश अहीन ॥ घृत दधि सुरा सुशर्करा जलनिधिके मधिभूप। शालमल क्रौंच सुप्लक्ष अरु पुष्करद्वीप अनूप ॥ क्रमते द्विगुणित सर्वपै तिमि गिरिखण्ड समेत। पुण्यपुरुषमय लसतहैं सुनिये ज्ञाननिकेत॥ हैं नृपशाल्मलद्वीपमें शाल्मलवृक्ष प्रधान । क्रौंचशैल है क्रौंच में सुनिये ज्ञान निधान॥ प्लक्षद्वीपमें नृपतिहै प्लक्षवृक्ष विख्यात। नामी पुष्करद्वीप में पुष्कर शैल बिभात ॥ भूपचतुर्दल कम-लसम जम्बूद्वीपललाम । योजन तैंतिससहस है त्यहिलेखे में श्याम ॥ त्यहिधारे बसु ओरते बसु दिग्गजबलधाम । सार्व-भौम सुप्रतीक अरु अंजन बावननाम ॥ पुष्पदन्त ऐरावतौ पुण्डरीक बलवन्त । कुमुद आठ ये गजधरे महिबलबीर्य अ-नन्त ॥ इतै कर्मकरि जीव सब सुनो बुद्धिमत भूप। क्रमते भो-गत द्वीप सब निजकृत के अनुरूप ॥ एक ग्रामसम द्वीपसब पालत बिधि गुणवान । न्यामक दायक कर्मफल व्यापक ईश महान ॥ सदाचाररत पुरुष कहँ लभ्य सर्वपद भूप । दुराचार रत जीवते लहैं निरयको कूप ॥ अब रबि शशि अरु राहुको सुनो भूप आख्यान। पृथक् पृथक् मैं कहतहौं थिरकरि मनहिं सुजान ॥ द्वैशतकम षटदश अरु तीस सुसहस कोशको भूप। थौल्यगर्भ अरु मण्डल जानो रबिको उदयअनूप ॥ शतकम षट सहस्र एकादश तैंतिससहस नरेश। थौल्यगर्भ अरु मण्डल जानो शशिको परमसुभेश ॥ मण्डल छातिस सहसको षट

सहस्रको थूल । गर्भ सुद्वादश सहसको तमको जानु अतूल ॥ योजन छत्तिस सहस है शशिन्तदको परिवेष । योजन द्वादश सहस है बिस्तर व्याम बिशेष ॥ हे नृप योजन षटसहस तासु गुर्बता पूर । छादति छाया जासुलहि शशि सूरहि युतनूर ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ सोरठा ॥ संजय यहि बिधि भाखि क्षितिप्रमाण धृतराष्ट्रसों । हियरे आनँदराखि गये बिदाह्वै समर महि ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिभूगोलबर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

बैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ बध भीषमको निरखिकै संजयनृप पै आय । करि प्रणाम इमि कहत भे दुसहदुःखसों छाय ॥ चौपाई ॥ नृपजूझे भीषम रणचारी । धीर धुरीण बिदित धनुधारी ॥ पुरुषसिंह जो परदल जेता । गङ्गासुत महिमण्डल नेता ॥ जो बरबीर धीर धनु धरिकै । नहिं हार्यो भृगुपति सों लरिकै ॥ जाकेबल तुव सुत मुदलीन्हे । दुसहबैर पांडवसा कीन्हे ॥ ताकहँ हांकि शिखण्डी मारे । रहे लखत सब सुबन तिहारे ॥ जो निजबल परदल बल खोयो । सो अब शरशय्या पै सोयो ॥ ह्वैबे योग न हो जो कबहूं । सो अनरथ देखो अब सबहूं ॥ कारण याको मंत्र तिहारो । करहु कृपाकै रिसि हियधारो ॥ तेज बीर्य्यनय धर्म अतुलको । रविभा अस्त आजु कुरुकुलको ॥ दश दिनराति रक्षि तुवसेना । हतिअर्बुद परभट जगजेना ॥ छिन्न मूल गुरु तरुसम गिरिकै । सोये शर शय्यापै थिरिकै ॥ सुनि ये वचन मर्मभिद शरसे । अन्धभूप करुणा सों सरसे ॥ शोकाकुलह्वै बोले बानी । आरत करुणारस सों सानी ॥ संजय शक्रोपम कुलनायक । किमि जूझो जगजैन सहायक ॥ के के रहे संग ताक्षणमें । के थिररहे भगेकेरणमें ॥ रबिसम भीष्महि पर तम नाशत । रोक्यो कौननसे संभाषत ॥ हे कृप द्रोणहिं आछत भीषम । किमि भेनिधन शक्रसम भीषम ॥ जामदग्नि कहँ जीत्यो जोई । किमि शिखण्डिसों हार्यो सोई ॥ याक्षण

गिरे भीष्मभट रथते । तब किमि भे ममसुत अनरथते ॥ सो सब संजय गोइ न राखो । पृथक पृथक अब सादर भाखो ॥ दोहा ॥ भीष्म सत्व बोहित बिषद के अधेय ममपुत्र । ताहि बिना अब ते सबै कहा करैंगे कुत्र ॥ भूप सहस्रनि एक तेहि काशीपुर में जीति । लै आये मम जननि कहँ जो स्वभ्रातके प्रीति ॥ दनुज दैत्यके नाशहित सुरपति जासु सहाय । चाहत हैं ते भीष्म किमि जूझे कहौ बुझाय ॥ सोरठा ॥ ममसेनायुत चारि भईं मरे ते भीष्मके । बिना नाथकी नारि गोपबिना गौ यूथ जिमि ॥ उपलहुते अधिकाय कठिन भयो ममहृदयअब । भीष्म मरण सुनिहाय संजयजो दरकत नहीं ॥ चौपाई ॥ कर्म कियेको फलमति बिगरे । लहन चहत अब ममसुत सिगरे ॥ तबजे शठजूवामें जीते । अबतेहारि लहत मतिरीते ॥ भीष्म मरण सुनिमम मनभाई । गहत न धीरज शोकविहाई ॥ पुत्र मरण को संशय भारी । भयो हमंअब लेहुबिचारी ॥ अबतुम युद्ध व्यवस्था कहहू । ममअघ समुझि मौनमति रहहू ॥ सुनिधृतराष्ट्र भूपकी बानी । कहतभये संजय बिज्ञानी ॥ व्यासहि बन्दि कहै सुनुराजा । युद्ध व्यवस्था सहित समाजा ॥ दुर्योधन योधन सँगलीन्हें । दुःशासन कहँ शासन दीन्हें ॥ दुःशासन रथ सुभट सजावो । नृप समूह कहँ शीघ्र बुलावो ॥ लैसंग सुभट भूपगण दक्षण । हैकरतव्य भीष्मकोरक्षण ॥ हैं इमि भाषें भीष्म सुजाना । हम शिखण्डिपै तजब न बाना ॥ वहहै प्रथम युवति हमजाने । तापैं तजब न शस्त्रअमाने ॥ बिनुमारे ह्वै निडर शिखण्डी । तजिहि भीष्मपै शक्ति प्रचण्डी ॥ ताते नृप न सङ्कलै हमको । रक्षितव्य है निति भीषमको ॥ भीष्मकुशल तौ जयमम करमें । बिना भीष्मकछु बनिहि न फरमें ॥ हमसब कहँ तौ इतनो कारय । करिबो बध शिखण्डिको आरय ॥ औरहि बधि भीषम जयलेहैं । सार्वभौम पदहमकहँ देहैं ॥ ताते

करहि प्रयत्न सब कोई। बधहु शिखण्डिहि संशय गोई॥ दाहिने पीछे बायें आगे। रहिरक्षहु भीष्महि भयत्यागे॥ बिनुराखे सिंहहि शश मारहि। तौयहि बनमें सुचित बिहारहि॥ दोहा॥ सुभट उत्तमौ:जासुदल दक्षिण दिशि रहि बीर। रक्षत पार्थहि बाम दिशि युधामन्यु रणधीर॥ रक्षतपार्थ शिखण्डिकहँ अभय भीष्मसों तौन। ताको बधिबो कठिन है है यह शोच अगौन॥ सोरठा॥ इतनेहीमें भूप बीती तौन बिभावरी। करि नितकर्म अनूप लगेसजनभट दुहुँ दिशा॥ चौपाई॥ सजहु सजहु रथ भट धनुधारी। भयो शब्द दुहुँदलमें भारी॥ बाजे दुन्दुभिशंख अनेका। गहे शस्त्र सब सुभट सटेका॥ रथीगजी हयसादी योधा। सुभट पदाती धीर सक्रोधा॥ सजिसजिभे जिमि दुहुँ दिशिठाढ़े। भरे बीररस अमरष बाढ़े॥ हयरथ गजगणमणि सुबरणसों। भूषे दुहुँदिशिके सुबरणसों॥ आयुध भूषणबसन सोहाये। मणि सुबरणमयसो भटभाये॥ रत्नअमौलिक मयकमनीया। मुकुट छत्र युत नृप रमणीया॥ चारु सुतड़ित मेघ सम सोहै। रणमण्डल सुखमासोंपोहै॥ शाल्व जयद्रथ शकुनि नरेशा। जयत्सेन अनुबिन्दु सुभेशा॥ बिन्दु श्रुतायुध अरु कृतबरमा। नृपति सुदक्षिण सरस सुधर्मा॥ भूपवृहद्दल येदश राजा। और भूपगण सहित समाजा॥ दश अक्षौहिणि सेना साजे। थिरि भीषमके चहुंदिशि राजे॥ अक्षौहिणि दलसह बलभारे। रहे निकट सब सुवन तिहारे॥ रजतमये सितहत युतरथपै। राजे भीष्म मध्यरण पथपै॥ धारे श्वेत बचन नय गामी। गहे सर्ब आयुध गुणनामी॥ सैन मध्य शोभितभेकैसे। उडुगण मध्य राकापति जैसे॥ दोहा॥ सहित एकादश क्षौहिणी हैतुव सुतहे भूप। हैं सह सात अक्षौहिणी पाण्डव नृपति अनूप॥ निज सैनिक क्षत्रियन कहँ भीषम निकट बुलाय। कहतभये इमि धर्म बिद क्षत्रधर्म समुझाय॥ समर स्वर्गको द्वार

है क्षत्रिनको सुखदाय। खुल्यो तौन अब शुद्धह्वै बसौ स्वर्गमें जाय॥ रोग ग्रस्थ ह्वैकै मरब क्षत्रिहि परम अधर्म। रणमें सन्मुख शस्त्रसों मरिबो सरस सुकर्म॥ भीषमके ये बचन सुनि ह्वैप्रसन्न भट सर्ब। निजनिज यूथनि जायकै बिलसत भये अखर्ब॥ इर्षा करिकै भीष्मसों करण सहित परिवार। भये निरायुध शस्त्र तजि परिहरियुद्ध बिहार॥ पद्म वर्ण अरुसैब्य नृप चित्रसेन पुर मित्र। भूरिश्रवा सद्रोण सुत रक्षत चक्र पवित्र॥ नृपतिक्षेम धन्वा प्रबल शल्य द्रोण कृत बीर। रक्षक सेना सर्बके हैं नियमित रणधीर॥ केतुमान क्षितिपाल अरु अरु भगदत्त नरेश। नृपति बिन्द अनुबिन्द ये हैं गजस्थ शुभ भेश॥ सोरठा॥ द्रोण द्रोणसुत दक्ष कृपाचार्य बाह्लीक ये। बिरचतभये सपक्ष ब्यूहसर्ब तो मुख बिशद॥ चौपाई॥ सहसेना सबसुवन तिहारे। हैं रक्षत भीष्महि गलभारे॥ रथकेचक्रचरण हय गनके। तिनके रक्षक भट दृढ़ मनके॥ साठिलाख हैं बीर पदाती। निजदल रक्षक परदल घाती॥ कै यकलाख सुभट पदचारी। आगेचले खड्ग धनुधारी॥ यहिबिधि निजदल गौरव सुनिकै। नृपधृतराष्ट्र कहतभे गुनिकै॥ एकादश अक्षौहिणिसेना। लखि मम पुत्रनकी जगजेना॥ किमि पांडव चढ़ि सन्मुख आये। लघु सेनापति भीति न पाये॥ सो कहि संजय संशय नाषो। मोमन सुनिबेको अभिलाषो॥ सुनि संजय बोले सुनुराजा। धर्मज लखितुव सैनसमाजा॥ कहे धनंजयसों सुनि लीजै। बचनबृहस्पतिकोसुधिकीजै॥ भरेएकमतसंगतिकरिकै। तौजीतैंलघु बहुसोंलरिकै॥ ममदललघु परदलबहु भाई। ताते लीजैब्यूहबनाई॥ अर्जुनकहेभूपअवरेखो। बज्रब्यूहहमबिरचतदेखो॥ बज्रपाणि जेहि निरमितकीन्हें। परदलदुखद मोहिंसो दीन्हें॥ भीमसेनबरबलभटमर्दन। अतुलितबीरमेघसमनर्दन॥ गदापाणि बिलसै रहि आगे। जेहिलखि दुरै शत्रुभयपागे॥

असको जो जियलोभ गँवाइहि । भीमसेनके सनमुख आइहि ॥
दोहा ॥ इमि कहि रचना ब्यूहकी कीन्हें अर्जुन धीर । महाराज सुनि लीजिये जिमि राखे भटबीर ॥ कवित्त ॥ आगे भीमसेन तब धृष्टद्युम्न सहसैन भीमके उभैदिशि हेमाद्री सुतबलधाम । पृष्ठरक्ष तिनके बिराट अरु धृष्टकेतु नायक अक्षौहिणीके अमनेत अभिराम । तिनकेहे रक्षक सुभद्रा द्रौपदीके सुत तब है शिखण्डी सह पार्थ अइवगुण ग्राम । पार्श्व रक्षपारथके युधामन्यु उत्तमौजा पृष्ठरक्ष युयुधान भूपति बिदित नाम ॥ अपरं ॥ चेकितान यज्ञसेन द्रुपदसपुत्रबर्ग और भूपसिगरेप्रवीण अस्त्र कलमें । रक्षत चहुं दिशिसों सैन चारुचढ़ चाव चितमें रहेहे चाहि जीतिलीबो पलमें । आयुत प्रमत्तमें जुमैगलके मध्यरहे महाराज धर्म्मराज राजि मध्य थलमें । ऐसो बांधि सर्बतोबदन बज्रब्यूह चल्यो पाण्डव नरिन्द दैनगारे निज दलमें ॥ दोहा ॥ धृष्टद्युम्न पांचालपति सेनापति हेभूप । सबपै शासन कृतउचित सर्बस्ववित शुभरूप ॥ नृपफाल्गुनके केतुपैआपुमहाकपिआय । भयेबिराजत जयद प्रभु मङ्गल कृतसुखदाय ॥ ताक्षण बहुअशकुनभये कहे पूर्बजिमिब्यास । अवशिभयो चाहे अनर्थ किये कर्मकेआस ॥ कवित्त ॥ बाह्लीक शलऔ अम्बष्ठसिंधु सेनापति अनुगामी द्रोणकेहे पृष्ठरक्षचाहेचैन । भूरिश्रवा रिपुंजय मित्र सह तुवपुत्र मध्यगत भीषमके रक्षकहे सहसैन । शाल्वमत्स्य केकयके पतिसह कृपाचार्य्य पाहेंदल उत्तरदिशामेंरहिबलऐन । यवन किरातशक पलवह संसप्तक ये दक्षिणदिशामें रहिरक्षक हेजगजैन ॥ अपरं ॥ भूपतुवसैनमें हैंमैगल प्रमत्तलाख प्रतिनाग शतरथ रथप्रतिशतबाजि । प्रतिबाजिनियममें धनुर्द्धरहेदशदश तिन प्रतिशत असिचर्मधारी रहेराजि । ऐसोब्यूह बांधिबीर भीषम बिदित धीर धरे बीररसभे बिभातदै नगारेगाजि । साफ जंग जीतिबेको सिगरे सुभटशूर साहसी सराहे सावधानसोहे

शस्त्र साजि ॥ दोहा ॥ तुव पुत्रनको वृहतदल देखि युधिष्ठिर भूप। चिन्तितह्वैकै पार्थसों बोलेबचनअनूप॥ दुर्योधनकोवृहतदल प्रबल सर्वभटजूह। शास्त्ररीतिसों भीष्मदृढ़ व्यूहरच्चे करिऊह॥ इनसों जयपैबोसुनो मोकहँ कठिनलखात। सोसुनि बोले पार्थइमि मतिभय कीजैतात॥ जासुसहायी कृष्ण प्रभु बिश्वयोनि भगवान। जयलहिबेको हेतते संजयकहो सुजान॥ जुरि असंख्य अतिप्रबलभट दानवदैत्य अमान। लरेजबैतब प्रभुकृपा तेजीते मघवान॥ तातेजयके लहनको संशय तजो नरेश। कृष्णचन्द्रकी कृपाते निजजय लहब सुभेश॥ सोरठा॥ सुनि अर्जुनके बैन नृपति युधिष्ठिर शंकतजि। प्रभुहिनौमिलहिचैन लखि निजदल मोदितभये॥ इतनेमेंभगवान अर्जुनके हित हेतुगुणि। कहेसुनो मतिमान दुर्गाकी अस्तुतिकरो॥ जयकरी॥ सुनिनिदेश प्रभुको हितजानि। हयतेउतरिपार्थ अनुमानि॥ शुचिह्वैध्यायदेविकेपाय। अस्तुतिकिये भूरिसुखदाय॥ नमोदेविदुर्गे यशदानि। बिन्ध्य निवासिनि आनँदखानि॥ जय कौशिकि कात्यायनि कालि। जयशाकम्भरि कालिकरालि॥ कृष्ण सहोदरि जयअसुरारि। जयतिचण्डि चामुण्डि कुमारि॥ भद्रकालिजय जयतिकपालि। खड्गशूल धारिणि शिरमालि॥ जयमाया श्रीह्री श्रीजगदम्बे। सन्ध्याप्रभा सर्ब अवलम्बे॥ तुष्टिपुष्टि धृतिदीप्ति महानि। बिद्यानिद्रा क्षमा सुजानि॥ जय साबित्री स्वाहाकारा। जयजग प्रभवे जगदाधारा॥ जयतिब्रह्मबिद्ये बरदानि। कैटभनाशिनि जयतिभवानि॥ जयनिशुम्भ मर्दनि बिद्दानि। कृष्णे अष्टभुजे कल्यानि॥ कष्टबिदारिणि मङ्गलदानि। सुमिरतनाम लहत जयखानि॥ जयप्रदे जयबन्दौं तोहिं। दीजैसुयश कृपाकरि मोहिं॥ सुनिअस्तुति करुणाकी ऐन। अन्तरिक्ष रहिबोलीबैन॥ थोरेदिनमें लहिजयपर्म। महि पालन करिहौ युतधर्म॥ सुनिकै अर्जुन लहि अतिचैन। रथ

चढ़ि राजे परदलजैन ॥ दोहा ॥ पाण्डवके कल्याणको कारण सबबिधिपुष्ट । जासुसहायी कृष्णप्रभु निरखि भक्तसंतुष्ट ॥ राम कृष्ण अरु व्यासके अरु नारदकेबैन । नहिंमाने तवसुत चहत जयलेसँग बहुसैन ॥ सोरठा ॥ सुनि संजयके बैननृप धृतराष्ट्र महीपमणि । चितमें चिन्तिअचैन युद्धचरित सुनिबोचहै ॥
इतिश्रीमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिचमूसमागमबर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः

दोहा ॥ परब्रह्मपरमातमा विश्वयोनिभगवान । केकामदपद गुणिगुणत गीताज्ञान निधान ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में युद्धोत्सुक वरबीर । मामकपांडव जुटिकहा कियेकहौ हेधीर॥ संजयउवाच ॥ व्यूहित पांडवकीचमू लखिदुर्योधनराय । जायपास आचार्यके कहतभये समुझाय ॥ यहपांडवको महतदल निरखो हे मतिमान । द्रुपदपुत्रतवशिष्यसों व्यूहित सहितविधान॥ चौपाई ॥ यामें भीमार्जुन सम युधिमें । हैंबिराट सात्वकि गुरु सुधिमें ॥ चेकितान अरु द्रुपद नरेशा । कुन्तिभोजअरु सव्यसुभेशा ॥ युधामन्यु काशीपति राजा । उतमौजा अभिमन्यु सुसाजा ॥ सुवनद्रौपदीके रणधीरा । अबसुनिये मामकबरबीरा ॥ आपु भीष्मअरु अश्वत्थामा । कर्ण बिकर्ण शल्य बरसामा ॥ भूरिश्रवा आदि रणचारी । हैंममसहितकृत बहुभटभारी ॥ वै न सकेमम बरदल घेरी । ममभट धीरसकें चहुंफेरी ॥ पर जिमि जहँ नियमित भट जोई । तिमिरहि रक्षइ भीष्महिं सोई ॥ नृप इतनेमें भीष्म अकम्पन । निजदल हर्षन परदल शंकन॥ शंख बजावतभे रणचारी । दुर्योधनहिं सशंक निहारी ॥ दुन्दुभि आदि बाद्यतिहि क्षनमें । बजेअसंख्यसु सैनसदनमें ॥ तात्क्षण हृषीकेश छबिछाये । पांचजन्यशुभ शंख बजाये ॥ पौंड्र शंख कहँ भीम बजाये । देवदत्त कहँ पार्थ सोहाये ॥ शंख अनन्त बिजय कहँ चावन । लगे युधिष्ठिर भूप बजावन । शंख सुघोषहि नकुल प्रियम्बद । सहदेव मणिपुष्पकहि जयम्प्रद ॥

औरहु ते तहँ नरपति जेते। शंख बजावत भेसबतेते॥ दोहा॥ महाराज नभभूमिलों सहित कोणचहुँ ओर। पूरितभो तेहि क्षण तहां दुःसह सहअति घोर॥ कहो पार्थ तब कृष्णसोंमम रथ शीघ्र बढ़ाय। उभय सैनके मध्यमें थापितकरौ सचाय॥ निरखोमैं वहिसैनमें केकेभटबरबीर। मोसों लरिबे योग्यहैं युद्धोत्सुकरणधीर॥ सोसुनिकेशव हांकिरथ सैनसन्धिमधिजाय। कहो लखौ परदल सुभट करतायुद्धसचाय॥ रोला॥ तहांभ्राता पितामह पितृव्य पुत्रन देखि। सार सम्बन्धी श्वशुर अरुसखा सुहृदन पेखि॥ निरखि मातुल मातुलेयन भागिने मनलेखि। पौत्र गुरु गुरुसुतन लखि इमि कहतभे अवरेखि॥ स्वजनसम्बन्धीरुवबन्धु स्ववर्ग येजन सर्व। युद्ध हितजे खरे सन्मुखशस्त्र पाणिअखर्व॥ इन्हें लखि ममहृदयमें अति होत करुणा तात। बदन सूखत कण्ठ कितक्कै होतकम्पित गात॥ मोहवशमोमन भयो नाहिं छोह छांड़ो जात। करबहम केहिभांति इनपै कठिन आयुध पात॥ राज्यसुख ऐश्वर्य जयकी हमैंवांछा नाहिं। मारिबन्धु निबन्धु ह्वैबो उचितनहिं महि माहिं॥ जासुसुख हित राज्यचाहत तिन्हैं निजकरमारि। लहब कौन अपूर्वसुख महि बन्धुहीन निहारि॥ बन्धुगण बधबंश छेदन पितृकर्मबिनास। उग्रपातकबूभ्किममहिय भयोअतिशयत्रास॥ दोहा॥ यहिप्रकार बहुभांति कहि परमशोकसों ग्रस्त। पारथ रथ पै धरिदये धनु गांडीव प्रशस्त॥

इतिभीष्मपर्वणिश्रीकृष्णार्जुनसंबादेअर्जुनविषादोनामपंचमोऽध्यायः ५॥

दोहा॥ बोले प्रभु इमि तुमहिं लखि कहाकहैंगे लोग। यह अकीर्त्तिकर क्लीवता रणचढ़ि करब अयोग॥ करहुयुद्ध शरधनुष गहि संशय सकलबिहाय। रणचढ़िकै करिबोदया कादरता कहि जाय॥ सोरठा॥ सुनिकेशवके बैन सजलनयन पारथकहे। ममम्न होत अचैन भीष्म द्रोणपै तजतशर॥ तजोजातनहिं

बान शतधा पूजन योगपै । मोहिं न संशय आन होत ग्लानि शर धनु गहत ॥ जिन्हैं मारि फिरि होय शोकाकुल कै निजमरण । कहत शास्त्र बिद गोय तिनसों लरिबोनाहिं उचित ॥ बन्धु बर्ग को नास दुहूंओर सों है अवशि । करिकैव्यर्थ प्रयासकौन लहैधौं जय अजय ॥ जयकरी ॥ बंधुबधनको दोष महान । हम जानत नहिंवै अज्ञान ॥ सुनोजानि सोदोष भुलाय । किमिहम बधैंबंधु समुदाय ॥ करुणा नाम दोष अबभूरि । नाथ गयोमम हियमें पूरि ॥ ताते कै हतआत्म सुभाव । अरु संमूढ़ चेतचित चाव ॥ बूझत हौं मैं शिष्यसमान । कहौकृपाकर करिअनुमान ॥ जातेहोइ मोर कल्यान । कहै न ज्ञानवान अज्ञान ॥ लहि महि दिवको राज्य महान । नहि दुरिहैं मम शोक अमान ॥ प्रभुहम लख न कहत यथार्थ । इमिकहि रहे मौन कै पार्थ ॥ दोहा ॥ उभयसैन के मध्यसुनि अर्जुनके ये बैन । हँसिबोले करुणायतन केशव राजिवनैन ॥ कत अशोच्यको शोच तुमकरत कहाय सहान । अगत प्राणगत प्राणको नाहिं शोचत मतिमान ॥ हम तुम ये सिगरे नहे कबहुंनमानेहु येहु । फेरि नरैहैं सोउमतिजानेहु ध्रुव सुनिलेहु ॥ प्राप्तहोत जिमि देहमें देहीको पनभेद । देहान्तरकी प्राप्ति तिमि गुणिपटु लहत न खेद ॥ अवस्थान्तरणमें रहत जैसे सोई जीव । देहांतरहूमें रहत तिमिहि कहत मति सीव ॥ बिषयेन्द्री को परसहैं सुख दुखको दातार । गमन आगमन तासु नितसहौं ताहि नृपबार ॥ तिनसों जेनलहैव्यथा समसुख दुखगंभीर । मोक्ष अर्थ सामर्थ्यते पुरुषप्रवीण सुधीर ॥ जोंसतसोंन अभावहै अस तन कबहुं सभाव । लखत अन्त सतअसत को ज्ञाता तत्त्वसचाव ॥ जासोंसब जगपूर्णहै सो अबिनाशीपर्म । कोऊकबहुं न करिसकै तासु नाशदृढ़मर्म ॥ अव्यय देहीकीसदा नाशमान यह देह । ताते संशय तजिलरौ करि जयसों नवनेह ॥ जानत हंताताहि जो जेहि हत जानत

जौन। तत्त्व न जानततें उभै नहिं हतहन्ता तौन॥ जात न मरत न बीचकै थिरि बिनशतहै तात। आत्मा नित्य न देहके हने कबहुं हनि जात॥ अव्यय आत्महि लखत जो सुनहु पार्थ सो आर्य। मनशै काकोघाति किमिहनै काहि केहिकार्य॥ जिमि बिहाय जीरण बसन नव धारतनर तात। तिमि देही तन जीर्ण तजि नूतन तन मधिजात॥ छेदि सकै नहिं शस्त्रयहिपावक सकै न जारि। मारुत सकै न शोषि यहि बोरिसकै नहिं बारि॥ अबिकारी अरु सर्बगत नित्य अदह्य अछेद्य। तासु शोच मतिकरहु गुणि तौन अशोष्य अक्लेद्य॥ अथ जोजानहु आतमहि नित्यजात म्रियमान। तऊ न शोचबउचितहै गुणि बूझो मतिमान॥ जातमात्रको मृत्युध्रुव मृतको जन्मअबाध। ऐसे निहचल अर्थ से उचित न शोच अगाध॥ आदि अन्त अव्यक्त अरु मध्य जासुहै व्यक्त। तिन भूतनके हेतुकी करौ कल्पना व्यक्त॥ आत्महि कोउ आश्चर्यवत कहत लखततिमि कोय। सुनत कोउ आश्चर्यवत सुनेहु न बूझत कोय॥ देही नित्य अवध्यहै सबके तनमाधि पार्थ। तातें उचित न शोचिबो यह मत जानि यथार्थ॥ और सुनो निज धर्मऊ ते टरिबो नाहिं श्रेय। क्षत्रिहि श्रेष्ठ न युद्धते अन्य धर्मको तेय॥ बिनमांगे यह प्राप्तभो खुलो स्वर्गको द्वार। ते क्षत्री धनि जे लहैं ऐसो युद्ध बिहार॥ रोला॥ जौनकरिहौ पार्थ तुम यह धर्मशुभसंग्राम। लहहुगे तौ पाप करि निज धर्म्म कीर्त्तिहि क्षाम॥ लोक सिगरो करैगो अपकीर्त्ति तुव मतिमान। महतजनको मरण तें अपकीर्त्ति अधिक अमान॥ भीति पारथ भगे रणतें कहैंगे जन सर्ब। जासु मधिमें श्रेष्ठहौ तुम गुणहिंगे ते खर्ब॥ कहहिंगेतव अहित परुषअवांच्यवचन मलान। निन्दिहैं तवबीर्य्यतातेको न पुरुषमहान॥ हते लहिहौ स्वर्ग जीते भोगिहौ महि भूरि। करौ निश्चय युद्धको करि सर्ब संशय दूरि॥ दुःख सुख जय

अजय लाभअलाभ में सम भाव। मानि मनमें लरो पापनहोय-
गो यहि छाव ॥ सांख्य बिषयक बुद्धि तुम सों कहीयह हे धीर ।
योग बिषयक कहतहैं अब सुनहु सुगुण गँभीर ॥ भये जासों
युक्त छूटत कर्मबन्धन आसु। ताहि जितनो करो तितनो मिल-
त है फल तासु ॥ प्रबलबाधक कामनासो रहित सो शुभदान ।
करत ताको धर्मस्वल्पो महत भयसे त्रान॥ तत्त्व निश्चयआ-
त्मिका बुधि एक है हे दक्ष। कामनायुत बुद्धि होति अनेकशाख
अइवक्ष ॥ दोहा ॥ कामात्मननहिं स्वर्गपर वेद बादरत पर्म। ते
सब भोगे स्वर्गपति प्रतिज्ञापित है कर्म ॥ क्रियाबिशेष मईसो
गति जन्म कर्म फलदाय । तऊ कहतकर्महि अपर पुष्पित ब-
चन सुनाय ॥ जे रत भोगैश्वर्य में ताते अपहित चेत । ते
समाधि मधि नहिं लहत शुद्धि बुद्धि तेहि हेत ॥ रोला ॥ त्रिगुण
बिषयक वेद शीक्षक सर्ब कर्मप्रधान। ऊर्द्धगति अधगतिप्रका-
शक तौन हे मतिमान ॥ निर्द्वंद निति सत्वस्थ ह्वै निस्सङ्ग ताते
तात। होहु अत्रिगुण चित्त जित जिमि अपरगति परभात॥
दोहा ॥ कर्म अनेक अनेक बिधि कहे भांति बहु वेद । सो सब
पढ़िपढ़ि करि लहत लोक व्यर्थ श्रम खेद ॥ यथा सरिततले-
तहैं जल निज काजप्रमान । चित्त शुद्ध मिति ताहि तिमि पढ़ैं
गुणैं मतिमान ॥ कर्म बिषे अधिकारतुव नहिंफलविषे कदापि ।
संग अकर्मिनको तुम्हैं करैं न बसिकहु प्रापि ॥ करौकर्म्म योग-
स्थह्वैतजितृष्णाअभिमान। सिद्धआसिद्धेअसुखदुखकर्मोयोग
समान ॥ बुद्धियोगते दूरिहै तृष्णायुत कृतकर्म । ताते फलत-
जि मोरि मन साधौ कर्म स्वधर्म ॥ सुकृत दुकृत तजतसम
बुद्धियुक्त जे लोग । ताते साधौ योग तुम कर्म कुशलतायो-
ग ॥ कर्मज फलको त्याग करि बुद्धियुक्त मतिमान । जन्मबन्ध
ते छुटि लहत उत्तमपर अस्थान ॥ मोह कलुष तजिबुद्धि तव
ह्वैहै जबहिं प्रसन्न । श्रुत यथार्थ बैराग्यमें ह्वै है तबहिं प्रप-

न्न ॥ बहुमत सुनि ह्वै बुद्धि तब थिरिहै लहि सिद्धांत। तबस-
माधि मधि अचल ह्वै लहिहौ योगहि दांत ॥ अर्जुनउवाच ॥ जे
थित प्रज्ञ समाधि रत कहा प्रकाशक तासु। बोलन चलनसु-
भाव प्रभु तिनके कहिये आसु ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ त्यागि कामन-
ना आपुमें करि आत्माको ध्यान। तोषत आत्मा नंदलहिसा-
थित प्रज्ञ महान ॥ सहनशीलता दुःखमें सुखमें निस्पृहबानि।
तजे राग भय क्रोधजो सो स्थिति बुद्धि अज्ञानि ॥ बिगत नेह
सबमें सदा लहि शुभ अशुभ अमन्द। नहिं हरषत नहिं ल-
हत दुख सो थितप्रज्ञ स्वच्छन्द ॥ शब्दादिक बिषयानसों कच्छ
पांगसमदक्ष। मोरत जोजननिज मनहिं सो थितप्रज्ञ प्रतक्ष ॥
इन्द्रिनको निग्रह किये मिटत विषय बिधितात। रहतवासना
मूलसों ऊपर निरखतजात ॥ सुयतन रतो सुपुरुषको मनइन्द्री
हरि लेहि। ते सुधि बुधि जे तिन्हहिं गहिमम पदमें मन देहि ॥
धाये ते बिषयानके होत संगतेहि तासु। होत संगते काम फिरि
ताते क्रोध प्रकासु ॥ होत क्रोध ते मोह तब स्मृति भ्रम कहत
उदोत। ताते प्रणशति बुद्धि सो नष्टनसे बुधि होत ॥ स्वाधी-
नाते करत नर बशकरि इन्द्री सर्व। चरत बिषय बिनु रागते
लहत प्रसाद अखर्ब ॥ हानि होति सब दुःखकी लहि प्रबोध
प्रसाद। शुचि प्रसन्न चेतस भये थिरत सुबुधि अहलाद ॥ जे
अयुक्त श्रवणादिसों तिन्हैंन सुबुधि बिहार। सावधान मन बिनु
न तेहि मिलत भावना द्वार ॥ नहिं अभावनिक पुरुषको शांति
होति हे पार्थ। शान्ति हीनको सुख कहां सुनि गुणिलेहु यथा-
र्थ ॥ विषयनमें इन्द्रियन सहमनके कीन्हे गौन। बिनशति
प्रज्ञा तिमि यथा नाव बायुबश जौन ॥ ताते विषय बिहारते
जे प्रवीण करि सूर्ति। इन्द्रिन मो रत करति हैं तासु बुद्धि
अस्फूर्ति ॥ जामें जागत भूत सब सो योगिहि निशि तात।
जामें सोवत भूतसब सोदिन मुनिहि बिभात ॥ कामवारि बिनु

कामना जो मुनि जलनिधिपाय । हर्षवृद्धि प्रगटत न सो लहत शांति सुखदाय ॥ निस्पृह निर्मम ह्वै चरत जेसब काम बिहाय । लहत शांतिते नहिं लहत जे तिन सहित अवाय ॥ पारथ यह तुमसों कही ब्राह्मी थिति सुखदाय । याहिलहै जो ताहि नहिं होत मोह सुखदाय ॥ अन्तहुमें यहि पै थिरे मिलत ब्रह्म नि-र्बान । करि प्रयत्न यापै थिरे सोई सुबुधि सयान ॥

इतिभीष्मपर्वणिश्रीकृष्णार्जुनसंबादेसांख्ययोगवर्णनोनामषष्ठतमोऽध्यायः

अरजुनउवाच ॥ दोहा ॥ आत्म बिषयिनी बुद्धि गुरु जोतुव मति में इष्ट । घोर कर्म्ममेंमोहिं तो प्रभु कतकरत प्रविष्ट ॥ कबहुं प्रशंसाकर्मकी करत आपु यदुराय । कबहुं प्रशंसा ज्ञानकी करत कहत सुखदाय ॥ प्रभु कहि मिश्रित बचन कत मोहितसे हो मोहि । निश्चय करिकै एकअब कहिये श्रेयद जोहि ॥ श्रीभगवानु-वाच ॥ कही पूर्ब निष्ठा द्विधा ज्ञान योग संचार । सांख्यन कहँ योगीनकहँ कर्मयोग व्यवहार ॥ अनारम्भते कर्मकेहोत न नर निष्कर्म । सर्बत्याग संकलपते मिलत न सिद्धि सुधर्म ॥ कबहूं कोऊ नहिं रहतकिये बिनाकछुकार्य । प्रकृतिजगुणकरि सब करत सदाकर्म हे आर्य ॥ कर्मेन्द्रिनकहँरोकिजेकरत न तत्त्व बिचार । रहत लगाये बिषयमें मनसों मिथ्याचार ॥ मनसह इन्द्रिन रोकिजे बिषयनचरत यथेष्ट । कर्मेन्द्रिन करिकरत हैं कर्म योगते श्रेष्ठ ॥ हैं अकर्मते कर्मबरकरौ कर्म अबिकार । तजे कर्म नहिं सधैगो देहौंको ब्यवहार ॥ बिष्णुप्रीति कृतकर्म जे बिनु बध सिगरे कर्म । गुणि सो अर्थ अकामह्वै करौ सुकर्म सुधर्म ॥ यज्ञ प्रजन रचि प्रजनसों पूर्ब कह्यो बिधि येहु । ये मख तब कामद इन्हैं करि निज इच्छित लेहु ॥ तर्पित यज्ञ बिधान सों निर्पित ह्वै सब देव । तुमहिं पोषिहैं कामदै परमश्रेय शुभ भेव ॥ सुमन देतहैं नरनकहँ बरषि बारि सब भोग । तेहि अरपे बिनु अन्नभुक जेहैं अघभुक लोग ॥ बैश्वदेव आदिकहि करि

शेष खातते पुण्य । आत्महेतु करि खातजेते पापात्म अगुण्य ॥ कवित्त ॥ भूत होत अन्नसों ते अन्न परजन्यसों औ परजन्य यज्ञसों औ अज्ञकर्मही सों होत । कर्महोत वेदसों औ वेदहोत अव्ययसों सर्बमय वेदकरै नित्य यज्ञको उदोत । या विधि प्रवर्त्तित अनादि चक्र चारु ताके अनुसार गमनमें मूढ़जे करत ओत । भोगि सुख इन्द्रिनको मोदत सदाही ते वै जीवत वृथाही जिये पुंज पापको तनोत ॥ दोहा ॥ आत्मामें रति जासु नित आत्मतृप्त मतिमान । आत्महि लखि संतुष्ट जे तिनहिं कार्यनहिं आन ॥ ताहि कर्मसों अर्थनहिं नहिं अकर्मसों काज। सर्ब भूतगणसों न कछु ताकहँ अर्थ समाज॥ ताते सदा अशक्त रहि करो निरन्तर कर्म । अनाशक्त रहि करि करम परपद लहत सधर्म ॥ निति करि कर्महिते लहो परम सिद्धिजनकादि । लोकसंग्रहो निरखिकै करिबो उचित न बादि ॥ ब्रह्मज्ञानसो युक्त है जनकादिक सब भूप । पारथ सुनु ते करत हे बिधिवत कर्म अनूप ॥ यथा आचरत श्रेष्ठजन तथा चरत सब पोत । गुरुजन करत प्रमाणजो तासु अनुग सबहोत ॥ हमें न कछु कर्त्तव्यनाहिंप्राप्तिअप्राप्ति बिचार । तऊलोकहित हेतिनित करत कर्म आचार ॥ जो हमचरहिं न कर्ममें तौसो लखि जनसर्ब । कर्म त्याग करि चरिहैं बंचित ह्वै गतिखर्ब ॥ यथाशक्तह्वै करतहैं कर्म अपटु अज्ञान । तिमि अशक्तह्वै करत हैं कर्म सकल बिद्वान॥ जे अज्ञानी कर्मरत तिन्हैं न भेद बताय । कर्म छोड़िये लाइये छोड़े तासु नशाय ॥ प्रकृतिकार्य इन्द्रियनसों क्रियमाण सबकर्म । करतामानैआपुकोमूढ़नजानैमर्म ॥ जेगुण कर्म बिभागको तत्त्व लखत अनुमानि । गुण बरतत निज गुण बिषे गुणितेलहत न हानि ॥ प्रकृति गुणनमें जेअपटुकरें ममत्व प्रधान। तेहि न चलावें कर्मसो ज्ञानी बूझि निदान ॥ गुणि मम बिषे समर्पि अब सिगरो कर्म यथार्थ । निर्मम अरु निष्काम

ह्वै युद्धकरौ हे पार्थ ॥ जो नर मम यहि मतविषे तिष्ठत तेऊ तात । शर्म न धर्म अधर्म सबकर्मन ते छुटिजात ॥ जेयहि मत रत होतनहिं गहे असूयागूढ़ । देह निष्ठके भ्रष्टमति नष्टचेतते मूढ़ ॥ तुम अन्तर्यामी न्यामकहे। तुम्हरे मतमें कोऊकाहेनाहीं तिष्ठत यहशंका बिन हेत कहतहैं ॥ पूर्वकृत्य जोसो प्रकृति बिदुषो तेहिअनुसार। चेष्टक तौनअगाधहै तजौ शंकसंचार ॥ यामें पुरुषके स्ववश ताकोअभाव होतहै ताहेत कहतहैं ॥ प्रति इन्द्रिनके अर्थकहँ रागद्वेषमयजानि। तिन केवश नहिंहोइसुनि शास्त्रबचनअनुमानि ॥ बर बिगुणो निज धर्मनहिं परको सब गुणखानि । मरणश्रेय निज धर्म में परमें जय भयदानि ॥ अर्जुनउवाच ॥ बिनु चाहतहूं पुरुषभ्रमि परबश परोसमान। कासों प्रेरित पापमें चरत कहो मतिमान ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ भये रजोगुणसों प्रबल कामक्रोध सउमंग । गहेअग्निको गुण अथक् अरिहैं तन के संग ॥ जिमिछादित मल सों मुकुर अनल धूमसों होत। तिमि आवृत कामादिसों ज्ञान न करत उदोत ॥ इन्द्रीमनकामादिकेहैं स्वछन्द अधार। तिन सों ज्ञानहिं रूंधिते मोहत जनहिं सबार ॥ ताते प्रथमहिं इन्द्रियन कहँबशकरिहे दक्ष। जीतो कामहिंज्ञानको नाशक जौन प्रतक्ष ॥ केवल बाह्येन्द्रियनके जीते कृतार्थता न जानोमन बुद्धिको जीतो चाहिये ताको हेतुकहत हैं ॥ इन्द्री पर बिषयान ते तबमन तबबुधि जौन। बुधिके पर बिज्ञानमय आत्मा आनँद भौन ॥ यहि बिधि बुधिते परे गुणि परआत्मा निजपक्ष। आत्मामें थितितासुकरि जीहि कामहिं हे दक्ष ॥

इतिश्रीभीष्मपर्वणिश्रीकृष्णार्जुनसंवादेकर्मयोगबर्णनोसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

दोहा ॥ पूर्व योग यहहम कहे रबिसों मनुसोंसूर । मनुभाषे इक्ष्वाकुसों कर्मयोग यहपूर ॥ यहि क्रमते राजर्षिसब सुनोगुणो सहचोप। बहुतकाल बीते सुनो भयो तासु अवलोप ॥ सोई पुरातन योगयह तुमसों कहत सनेम । भक्तसखा मम मोहिं

प्रिय हौ तुम पूरित प्रेम ॥ अर्जुनउवाच ॥ प्रथम जन्म रबि को भयो पूर्ब भयो तवतात । आदिहि तुम रबिसों कहे किमि बूझै यहबात ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ मम तुव बीते जन्मबहु हम जानत सब तौन । तुम नहिंजानत आपनो जन्म आगमन गौन ॥ ईश्वर अज अव्यय जऊ हैं हमतऊसचाय । निज माया करि प्रकृतिबश ह्वै इत प्रगटत आय ॥ केहिहेतु प्रकटहैं सोऊकहत हैं ॥ नशत धर्म अधर्म बढ़त जबजब तबतब जानि । सिरजत हम निज आतमहि यह ममनित्य सुबानि ॥ रक्षणहित साधून के खलके नाशन हेत । संस्थापन हित धर्मके जन्म युगन में लेत ॥ दिब्य जन्म अरुकर्म को मर्म जेलखत निदान । देह त्यागि फिरि देह नहिं पावत ते मतिमान ॥ त्यक्तराग भयक्रोध मद मम पदरत तपपूत । हेपारथ ममभक्त बहु ममआश्रयीअ-धूत ॥ जे जिमि होत प्रसन्नमोहिं तिमि पोषत हमताहि । सब ममपथ अनुगमित हैं भजतमोहिं तजि काहि ॥ सर्वआदिसुर सर्वको जे सेवतफल चाहि । ते सब ध्यावत हमहिंहम देतशीघ्र फल ताहि ॥ चारिबरण हम रचे करि भेदसहितगुणकर्म । क-रता अकरता तासुहम सगुण अगुणकेधर्म ॥ मोहिं न लिम्पत कर्म मोहिं कर्मफलाशानाहि । इमि जे जानत हैं हमहिं कर्म न वाधत ताहि ॥ सिगरे पूर्बमुमुक्षुजन किये कर्म यहजानि । ताते करहु सुकर्म तुम वेदउक्त अनुमानि ॥ कर्मकहा निष्कर्म यहि होत कबिनहूमोहँ । कहततौन जाकेलखे छुटति सृष्टिकीछोह ॥ कर्म बिकर्म अकर्म ये सदा जानिबे योग । श्रुतीअयुती असंग ये गहन तत्त्व संयोग ॥ कर्म बिषे निष्कर्मता निष्कर्महूमें कर्म । निरखतसो पटुनरनमें कृत शुभकर्म सुधर्म ॥ बिनाकाम संकल्प है जासु आरम्भ कर्म । ते पण्डित ब्रह्मबिदगहे ज्ञाना-ग्निसों कर्म ॥ त्यक्त कर्म फल संगनित तृप्त अममता जौन । कर्मन बिषे प्रवृत्तऊ करत कछू नहिं तौन ॥ त्यागिपरिग्रह जे

करें चित्तआतमा युक्त । करिशारीरककर्म ते लहत न किल्वि-षउक्त ॥ तुष्टलाभ त्यागतलहैं मत्सरहीन अदन्द । सदाशुद्ध समभाव करि कर्म होत नहिंमन्द ॥ जे कर्तत्व ममत्व बिनुज्ञा-नावस्थित चेत । बिष्णु प्रीति कृतकर्मको विनशत कर्मसहेत ॥ अथ त्रयोदशयज्ञकहत हैं ॥ होता आहुति अग्नि हवि सिगरेब्रह्म अ-नूप । करै कर्म इमिजानिते लखै ब्रह्मको रूप ॥ पूर्व कर्म सुर यज्ञकोउ करत समेत बिधान । ब्रह्मअग्निमें जीव हवि होमत अपरसुजान ॥ होमतकोउइन्द्रियनकहँ संयमाग्निमें जानि । हो-मतकोउविषयानकहँ इंद्रियाग्निमेंआनि ॥ सबइंद्रिनके कर्मअरु प्राणकर्म कहँ कोइ । आत्म सुसंयम योग सिखिमें होमतधनि सोइ ॥ द्रव्य साध्य तपसाध्य अरु योगसाध्य मखकोइ । स्वा-ध्याय ज्ञान मख करत कोउ सुयती सुब्रती सोइ ॥ एकादशयज्ञक-हतहैं ॥ होमत प्राणअपान मध प्राण बिषै आपान । रूं-धतप्राण अपानकरि प्राणायाम बिधान ॥ द्वादश यज्ञ कहतहैं ॥ होमत प्राणविषय कोऊ इन्द्रिन नियताहार । हैंते सिगरे यज्ञ कृत बिनुकल्मष ब्यवहार ॥ अथ साधारण नित्यउचित त्रयोदशोयज्ञः ॥ बलिवैश्यादिक कृत्यकरि अतिथिन दै लहि शेष । भोजन कृत्य ते यज्ञकृत लहतब्रह्मपद भेष ॥ नाहिं अयज्ञ सुखसो लहैं याहूपुर को बास । अन्य लोककी कोकहै तिनकहँ इतउत त्रा-स ॥ बेदमुखे बिस्तारितहैं यहिप्रकार बहुयज्ञ । तेकर्मज निष्क-र्म नहिं हैं हेपटुसरबज्ञ ॥ सर्बयज्ञ ते श्रेष्ठ है ज्ञानयज्ञ हेपार्थ । सर्बयज्ञको परमफल ज्ञान निदान यथार्थ ॥ सेवित कै गुणि-पत्रिसुनि प्रश्नहि करि अनुमान । ज्ञानी शिष्यहि करत हैं ज्ञान प्रभाव बिधिदान ॥ जाहिजानि नहिंमोहइमि होइ प्रगट होइअस्त । मोमें अथवा आपुमें निरखौ भूतसमस्त ॥ सब पापिनते पापकृत अधिकौ सोऊतात । लहैज्ञानप्लवतौ अगम भवसागर तरिजात ॥ यथासमिधके शयलकहँ जारतज्वलित

ाशान। सर्बकर्मकह करतहै भस्मतथा गुरुज्ञान॥ नहींज्ञानके सदृश है कछुपवित्र मुदमौन। योगकर्म साधनकरें प्राप्त होत हैतौन॥ जितइन्द्री तिलपर सहितश्रद्धाते लहिज्ञान। सोजन थोरेहि कालमें परपद लहत महान॥ संशयात्मा अज्ञजे अ-लगअश्रद्धावान। नशततासु दोऊदिशा सुनोपार्थ मतिमान॥ कर्मयोगसों ज्ञानसों संशयछूटोजासु। तिन्हैं न बाधत कर्मते ावत पर्म सुपासु॥ तातेसो अज्ञानते संशय जौन हृदस्थ। ज्ञानखंगसोंकाढ़ितेहि कर्मयोग कुरुस्वस्थ॥

इतिभीष्मपर्बणिश्रीकृष्णार्जुनसम्बादेयज्ञयोगोनामअष्टमोऽध्यायः ८॥

अर्जुनउवाच॥ दोहा॥ कर्मनको संन्यासअरु कर्मयोग यक साथ। चाहिप्रशंसतहौ कहौ कौनश्रेष्ठ हेनाथ॥ श्रीभगवानुवाच॥ न्यासयोग ये उभयहैं करताश्रेय अमन्द। तिनमेंयोग बिशेष है चितशुचिकर निरद्वन्द॥ कर्मयोग निष्कामकृत जे संन्या-सीसोय। कैज्ञानीते बन्धसों छूटत कलमषगोइ॥ सांख्यहियो-गहि पृथक्करि कहत अपंडित लोग। शुद्धउभयमें एक फल ाहैनिति संयोग॥ मिलत सांख्यसो स्थानजो कर्मयोग सो देत। सांख्य योगकहँ एककरि पश्यत ज्ञान निकेत॥ दुस्तर कष्टदहैंसुनो विनायोग संन्यास। कर्मयोगयुत पुरुषको पूरत शीघ्रहिआस॥ योगयुक्त बिजितात्मजे नित्य जितेन्द्रियस्वक्ष। सब भूतात्मक आतमा बन्धहोत नहिंदक्ष॥ कहत सुनत पर-सत स्वपत चलतदेत लखिलेत। गुणत अकरता आपु कहँ परम तत्त्वबिद चेत॥ संगत्यागकरिकर्मजे ब्रह्मार्पण करिदेत। ताहि न परसत पापजल जलज पत्रकेनेत॥ कायिक बाचिक मानसिक इन्द्रिनसों सहधर्म। योगी आत्मा शुद्धहित करत अकामुककर्म॥ त्यागिकर्मफल ब्रह्मबिद पावत नैष्ठिकशान्ति। अपटुफलासी कर्मकृत बन्धितहोतअकान्ति॥ करिअर्पणसब कर्मको योगीजन लहिमोद। करत करावत कछूनकरि तनपुर

मध्य बिनोद ॥ कर्म और कर्तत्व अरु कर्मनको फलताहि । सिरजत परमातमा न रबि कमल कुमुदवत आहि ॥ कबित ॥ ईश्वरनकरत करावत न कछुकर्म तातेनहिं लेतपाप पुण्यकाहू जनको । सूरज प्रकाशित करतपै न गहतहै कर्मगुण दोषजो प्रकाशितके तनको । चाहि कछु सिद्धिकर्म करेजो अज्ञानबश ताते गोपीज्ञान भूलिआपैं आछोपनको । स्वप्नमें ज्यों सार्व-भौम छोटेसों सतायो जात मोहिंत्यों लहतदुख जीवदुखी मन को ॥ दोहा ॥ जे नाशे शुचिज्ञान सो भ्रमकरता अज्ञान । दर-शावत तेहिज्ञानसो परमतत्त्व सुखदान ॥ अस्तिब्रह्म निश्च-यी जे ब्रह्म परायणदक्ष । लहत अपुनरा वृत्ति ते ज्ञानीपूत प्रतक्ष ॥ गोब्राह्मण गजश्वान अरु चर्मकारमेंशुद्ध । समदर्शी जेतेपुरुष पंडित परम प्रबुद्ध ॥ इतहोंजीते स्वर्गते निजमेंइमि समभाव । सबमें ब्रह्म अदोषसम ते ब्रह्मज्ञ सचाव ॥ मुदित होतनहिं पायप्रिय दुखित न अप्रिय पाय । तेज्ञानी थिर बुद्धि पटु अमल अमोह सचाय ॥ बिषयस्पर्शज क्षणिकसुख बिषे न रतजेदक्ष । लहत ब्रह्मबिदते अनघ परमानन्द प्रतक्ष ॥ बिषय स्पर्शजभोगजो दुखदायकहैंतौन । आदिअन्तवतसोनतेहिबिषे रमतबुधजौन ॥ देहपतनलोंजोसहै कामक्रोधकोबेग । सोयोगी सो नितिसुखी-तासुकरैको सेग ॥ अन्तःसुखवन्तः अरु अन्त-र्ज्योति अमन्द । लहत ब्रह्म निर्बाणते लहि शुचि ब्रह्मानन्द ॥ सबकेहितरतब्रह्मविदलहतब्रह्मनिर्बाण । इतहूउतबिदितात्मकहँ प्राप्तब्रह्मनिर्बाण ॥ अथध्यानयोगरूपं ॥ बाह्यस्पर्शन बाह्यकरि करिभ्रू मधि चख आम । प्राणअपान समानकरि करत सुप्राणायाम ॥ मन इन्द्रीजित मोक्षपर बिगतेक्षा भय क्रोध । सदामुक्तते ब्रह्म-बिद किये मुक्ति मगशोध ॥ सर्बभूतके सुहित अरु ज्ञाता ईश्वर मोहि । जानिलहत है शान्तिनर अमल तत्त्वयह जोहि ॥
इतिभीष्मपर्बणिश्रीकृष्णार्जुनसंवादेप्रकृतियोगबर्णनोनामनवमोऽध्यायः॥

भगवानुवाच ॥ दोहा ॥ पार्थकर्म जो करतहैं सर्व फलाशाभग्नि। संन्यासी योगी सोई नहिं नरग्नि युत अग्नि ॥ जाहि कहत संन्यास सोइ योग बिचारो पार्थ। आशा नाश किये बिनायोगी नहीं यथार्थ ॥ बांछित योगारूढ़को कारणकर्म अकाम। कारण योगारूढ़को हैं संन्यासललाम॥ बिषयबिषे अरुकर्ममें जबैन बर्त्तितहोइ। करैत्याग संकल्पको योगारूढ़ोसोइ॥ आपुहि हित रिपुआपनो यहकरि शुद्ध बिचार। करै आपुमोंआपनो निर्बिध्निक उद्धार॥ बन्धुआपनो आपुजे जीतेआत्महिआप। अजित चित्त रिपुसम करत आपुहि आप सँताप॥ जेप्रशान्त जित आतमा सुखदुख जिन्हैं समान। ते परमात्महिं लखतहैं सबमें सम सुखदान॥ तृप्तज्ञान बिज्ञानसों अचल जितेन्द्री स्वक्ष। हेम उपलहित शत्रुमें सम मतियोगी दक्ष ॥ एकाकी थिर चित्तबसि निर्जनसुस्थलचाहि। बुध्यात्महि योजितकरत शान्ति सिन्धु अवगाहि॥ दर्भ अजिन अरु बसनमें आसन पद्म अमन्द। राखि अमलसम भूमि कै उदासीन स्वच्छन्द॥ तहँ करिकै एकाग्रमन जिताचित इन्द्रिय वृत्ति। साधै योग सयुगुति करि बाह्य क्रिया निरवृत्ति॥ समकरिकै शिरग्रीव कटि रहिकै अचलसुजान। अवलोकै नासाग्रइमि साधै योग महान॥ संचितात्म निर्भय ब्रती यती मनहिं संयम्य। चित्तलाय मोमें सुबुधि साधै योग अगम्य॥ योजितकरि यहिंभांतिमन आत्मामें बहुकाल। लहतपरम निर्बाण पद योगी लहि मुद माल॥ अशन निरशन शयनसो करै न अतिशय जानि। युक्त अहार बिहारते होत दुःखकी हानि॥ ह्वै बिशेषते अचलमन आत्मामें लगिजात। जबतबनिस्पृह होयकै योगीपरम बिभात॥ निहचल दीपत भांतिजेहि दीपक निर्वातस्थ। तिमिआत्मामें लायमन बिलसत योगी स्वस्थ॥ कै निरुद्धइमि योग सों पेखत आत्महि यत्र। रहत तितैहीमनसदा फिरि नहिं तो-

षतअत्र ॥ बुद्धिबाह्यतहँ परमसुखअनघ अगोचरपाय । चलत न फिरि मत तत्त्वसों रहतसदा लपटाय ॥ जेहि लहिदूजोलाभ नाहिं मानत अधिकसुजान । टरतनतासों लहेहुदुखआगान्तुक बलवान ॥ सब दुखके संयोगकी है वियोगसों योग । बशकरि इन्द्रियमनहिं से शतधा करिबेयोग ॥ धीरे२सुमति सो करि प्रवृत्तिधरिधीर । आत्मामें थिर मनहिं करि चिन्तहिकरै न तीर ॥ जहँजहँ जावैचपलमन तहँतहँ सोंगहिल्याय । दृढ़करि आत्मा अमलमें देवै ताहि लगाय ॥ शान्त मनस योगीलहत उत्तम सुख अभिराम । तासों ते अति सुखलहत ब्रह्मस्पर्शसुनाम ॥ आत्महि सबभूतस्थअरु आत्मामें सबभूत । लखत योगयुक्तात्मा समदरशीमजबूत ॥ सबथरपै लखिमोहिंजो मोमेंपेखत सर्ब । ताहि न हमभूलत कबहुं हमहिं न तौन अखर्ब ॥ लखत मोहिं सर्बस्थजो मत अद्वैत उदोत । कर्म अकर्म चहौ करत मोसों नाहिं च्युतहोत ॥ सुखदुख ब्यापै आपुपै जिमिजानैमतिमान । सबमें जानै भांति तिहि सोयोगी नहिंआन ॥ अर्जुनउवाच ॥ कहे योग तुम तासुनहिं थिरतासिद्धलखात । गहन चपल मन को गहन बायु गहनते तात ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ पार्थ असंशय चपल मन को गहिबो दुःसाध्य । पर बैराग्य अभ्याससों है क्रम सों श्रमसाध्य ॥ अजित चित्त जनकहँ सदा है दुष्प्राप्य सुयोग । प्राप्तहोत जितचित्तकहँ सिद्धसुयोगप्रयोग ॥ अर्जुनउवाच ॥ श्रद्धा ते चरि कर्म तजिचरत योग हित जानि । तहँसों बिचलत जासुमन लहै कौनते हानि ॥ शाखा चूक्यो कपिसदृश छिन्न अभ्रसम तौन । उभय भ्रष्टबिनशत कहा कहौ कृष्णसतजौन ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ सुनहुपार्थ इत उत कहूं तासु नाश नहिं होत । सदाचार रत कहँ न कहु दुर्गति करत उदोत ॥ पुण्य कृतन को लोक लहि बसि बहुकाल सचाय । शुचि श्रीमन्तन के गृहे जनमतहै ते आय ॥ धीमतयोगिनके कुले अथवा प्रगटतआ-

य । जगमें ऐसो जन्म है दुर्लभ शुचि सुखदाय ॥ पूर्व जन्मकी बुद्धिको होत तहांसंयोग । करत यतन तिहि सिद्धहित तजि बिषयेन्द्रियभोग ॥ ताहीपूर्वाभ्याससोंकरतयोगव्यापार । ज्ञाने-च्छितजन थिरततरि कर्मकाण्ड व्यवहार ॥ जन्मांतरसोंशुद्ध चारि सजतनयोगबिधान । योगीलहि उतकृष्टगति ध्यावतब्रह्म महान ॥ तपकृतसों शास्त्रज्ञसों कर्मनसों हेपार्थ । अधिक होत योगीकसै तातै योगयथार्थ ॥ सब योगिनहूंते सुनो जेजन शुचिममभक्त । तेजनमोकहँ परमप्रिय जे न अनत कहुंशक्त ॥ इतिभीष्मपर्बणिश्रीकृष्णार्जुनसम्बादेआत्मसंयमयोगोनामदशमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच ॥ दोहा ॥ मोमेंसदा अशक्त ममआश्रय निति करियोग । जानतयथा समग्र मम सुनिये सो उतयोग ॥ चारु ज्ञान बिज्ञानसों तुमसों कहेउँअशेष । जाहिजानि नहिं जानिबे को कछु और बिशेष ॥ सहसन नरमें एककोउ करतयोग अ-भ्यास । तिन सहसननमें एककोउ जानत तत्त्वप्रकास ॥ अनल अनिल महिबारि नभ मनबुधि अरु अहँकार । आठभेद मम प्रकृतिकेक्षेत्रात्मकव्यवहार ॥ क्षेत्रज्ञात्मकअन्यमम प्रकृतिश्रेष्ठ बिख्यात । जीवभूतजो जगतको धारण करतातात ॥ सर्बभूत की योनिये सुनोपार्थ मतिमान । हैंहम सिगरे जगतकी उत-पति लयअरुस्थान ॥ नहिंहमसों कछुपृथक्तर हैहेपारथआन । मोमेंपोहित सर्बजग गुणमें मुक्तिगण मान ॥ रस जलमें शशि सूरमें हैममप्रभाउदार । वेदगगनमें प्रणवधुनि नरमें बलव्य-वहार ॥ पुण्यगन्ध हम भूमिमें रबिमें तेजमहान । जीवन सि-गरे भूतमें तपकृतमें तपज्ञान ॥ सर्बभूतके बीजहम बुद्धिमानमें बुद्धि । तेजस्विनमें तेजहम सुनो धनंजय सुद्धि ॥ हैं हम बल बलवानमें बरजि रागअरुकाम । अविरुद्ध धर्म सबभूतमें हैं हम अति अभिराम ॥ जे त्रिगुणात्मक भावहैं ते सब हमसों ज़ात । मोमें ते तिनमें न हम इमिध्रुव जानोतात ॥ मोहिं त्रि-

गुणके भावसों सब जग रहो भुलाय । मोहिं न जानत त्रिगुण सों युक्तसुनो शुचिकाय ॥ दैवीदुस्तर गुणमयी मम माया है तात । मोहीमें रतहोतजे ते ताकहँ तरिजात ॥ दुष्कृत मूढ़ नराधम जेहि मम बिषेअभाव । माया अपकृत ज्ञानते गहैं आसुरीभाव ॥ ज्ञानार्थी अरु आर्त अरु अर्थार्थी अभिराम । अरु ज्ञानीभये चारिजन भजत हमहिंसबयाम ॥ तिनमेंज्ञानी सरसहै एक भक्ति नितयुक्त । ज्ञानी मोहिं अत्यन्त प्रिय हम ज्ञानिहि सुप्रशक्त ॥ हैचारौं उत्कृष्टते दानी मम आत्मैव । युक्तात्मा सो मोहिंमें अस्थिन रहत सदैव ॥ ज्ञानीसो बहुजन्म में होतप्राप्त मोहिंपार्थ । भयेपूर्णता ज्ञानकी तोको कहतयथार्थ ॥ बासुदेव प्रभु सर्बहै इमिजानतहै जौन । प्राप्तहोतहैसोय मोहिं सोईहै मतिभौन ॥ चिन्तिकामना अज्ञजे ध्यावत प्रिय करिजाहि । बूझिभाव तत्रस्थहम देततौन फलताहि ॥ नाशमान फल तौनसो तिन अज्ञनकोतात । जेजेहि पूजत प्रेमसों तेनर तिनमें जात ॥ अब्ययअरु अब्यक्त हम तिनकहँसबहि समान । ब्यक्तमानतेलखतहैंजेअतिशयअज्ञान ॥ सबकहँनहिं हैं प्रगटहम माया छादितरूप । मूढ़ न जानत मोहिंअज अब्यय असल अनूप ॥ जानैहम सबभूतको तीनिकाल ब्याख्यानं । नहिंकोउ जानत ममकछू सुनहु पार्थ मतिमान ॥ द्वंद द्वेष अस्नेहअरु कामक्रोध बशसर्ब । जन्तुमोहिं यहि सृष्टिमें गुणत न खर्ब अखर्ब ॥ जेहिं सुपुण्यकृतके भये निर्गत सिगरे पाप । द्वन्दराग निर्मुक्तते भजत मोहिं निस्ताप ॥ जन्म मरण के मोक्षहित ममआश्रित मतिमान । निरखतहैं ते ब्रह्मविद अध्यात्मक धरिध्यान ॥ मोहिंलखत अधिभूतजे अधि सुदैव अधियज्ञ । होहिंप्राण यात्रासमय ते सुजान तत्त्वज्ञ ॥

इतिभीष्मपर्बणिकृष्णार्जुनसम्बादेज्ञानबिज्ञानबर्णनोनामैकादशोऽध्यायः॥

अर्जुनउवाच ॥ दोहा ॥ प्रभुकोब्रह्मअध्यात्मकोकोहै कर्ममहान ।

अधिभूतसुको अधिदैवको कोअधियज्ञ सुजान॥ केहिबिधिप्राण पयानक्षणस्मरणीयहौआर्य । कहौकृपाकरिकृष्णप्रभुज्ञापककार-णकार्य ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ अक्षरब्रह्म स्वभावजो सोअध्यात्मसुभाग। भूतभाव उद्भवकरण कर्मद्रव्यकोत्याग ॥ अधिभूतसुजो भूतहै नाशमान स्वच्छन्द।ग्राहकजोशब्दादिकोसो अधिदैवअद्वन्द॥ हैं देहिनकेदेहमें हम अधियज्ञमहान। हैं अभिमानीयज्ञके विष्णु वेदको न्यान ॥ अन्तकाल स्मरणमम करि प्रस्थित तजि देह । सो पावत मम भावध्रुव करि मम पदसों नेह ॥ जेहि जेहि भा-वहि स्मरत हैं तन तजि करत पयान। ते तेहि भावहि लहतहैं भये बासनावान ॥ ताते सबक्षण स्मरहु मोहिं करहु युद्ध मति-मान । मोमें अरपत बुद्धि मन ते मोहिं प्रापत न्यान ॥ योगा-भ्यास सुयुक्तिजे आनहिं अनुगत नाहि। परम पुरुष पै जातते चिन्ति निरन्तर ताहि॥ कबि पुराण न्यामक स्मरहु तनुते तनु धातार । अचिन्त्यरूप रबि बरणकृत तमते परे बिहार ॥ भक्त अचलमन योग बलसो मरि भ्रूमधि प्रान। परम पुरुषकहँ ल-हत हैं प्राणहिं करत पयान ॥ बदत वेदविद जाहि जेहि मधि मुनि होतप्रवृत्त। सोपद अक्षर परमशुचि कहियतु करण नि-वृत्त॥ सब द्वारनु संयमित करि हियसे मनहिं निरोधि । प्राण सुथिर करि मूर्द्धपै योगधारणा शोधि ॥ ब्रह्मभूत ओंकार कह उचरि सुमिरिमोहिं तात। तनतजि करतपयान जो सो परपद मधिजात ॥ जो अनन्य चेता सदा सुमिरत मोहिं न आन। तेहि योगी कहँ सुलभ हम पारथ सुनो निदान ॥ हमहिं पाय फिरि नहिं लहत जनम सकल दुखभौन । परम सिद्धिगति रौनतहँ होत महात्मा तौन ॥ ब्रह्मलोक पर्य्यन्त है पुनरावृत्ति निदान। साश्वत मोपद प्राप्तको फेरि न जन्म बिधान॥ सहस चौकड़ी युगनलों बिधिको दिन परमान । ताही मिति रजनी महा सुनो पार्थ मतिमान ॥ जिते व्यक्त अव्यक्त ते प्रभवत हैं

दिन पाय। रात्रीलहि पुनिसब बिनशि मिलत प्रकृतिमें जाय॥ तेई दिन लहि प्रगट फिरि निशि लहि नशत समस्त। प्रगटि बिनशि भोगत रहत निजकृत मलिन प्रशस्त॥ है अव्यक्तसों परे सो अन्याव्यक्तस्थान। जो सबभूतनके नशे नशत न सुनहु सुजान॥ अक्षर अरु अव्यक्त इति उक्तिपरमगति जौन। निवृतहोत नहिं जाहि लहि परम धाममम तौन॥ लभ्य अनन्य सुभक्तिते सोपर पुरुषमहान। सर्व जासु अन्तरस्थसब जासों ब्याप्तसथान॥ आगम औरनिशागमन पावत हैं मतिमान। करि पयान जेहि कालमें कहियत तौनबिधान॥ अर्च्यभिमानी देव अरु दिन अभिमानी स्वक्ष। शुक्लपक्ष अभिमान अरु सुनो पार्थ बरदक्ष॥ उत्तरायण बपुमास षट तिहि अभिमानी देव। तिन्हें प्राप्तह्वै जात जो सुनो तासु तुमभेव॥ होत मोक्ष को प्राप्त सो होत न आगम तास। अक्षर अव्यय ताहि लहि कीन्हें रहत प्रकास॥ धूमाभिमानी देव अरु रात्र्यभिमानी जौन। कृष्ण पक्ष अभिमानि जो है देवसुनौ बलभौन॥ दक्षिणायन बपु मासषट तिहि अभिमानी देव। अरु शशिज्योतिहि पाय जे जात तासु सुनु भेव॥ स्वर्गहि लहिफल भोगि सब फेरि निवृत्तसो होत। जानतयह वृत्तान्त हैं जिनके ज्ञानउदोत॥ अर्चिरादि धूमादिइन द्वैपथह्वै सबजात। लहत अनावृति आवृतिहि क्रमसों जानेहुतात॥ इन मार्गनको जानि फल योगीकर अनुमान। रहतअनालस यतनमें होहुसँयोग सुजान॥ वेदयज्ञ तप दानमें जितनो फल सुखदान। तिन्हें अतिक्रम करि लहत योगी परअस्थान॥

इतिभीष्मपर्वणिश्रीकृष्णार्जुनसंवादेपुरुषोत्तमयोगबर्णनोद्वादशोध्यायः १२

श्रीभगवानुवाच॥ दोहा॥ सहित ज्ञानबिज्ञान अरु परम गुह्य ब्याख्यान। कहियतु हैं जेहि जानिकै मुक्तहोत मतिमान॥ बिद्यन को अरु गुह्यको राजा उत्तमपूत। धर्मजासु प्रत्यक्ष फल

अव्यय मुमुख अकृत ॥ जे जनहैं यहिधर्मके सुचि श्रद्धासों हीन । मोमें होत न प्राप्तते भ्रमो करत हैं दीन ॥ कांचन अरु कटकादि सम सबजग हमसों व्याप्त । हैं ममस्थ सब भूतनुतु भूतस्थन हमआप्त ॥ नाहिं ममस्थहै भूतहै निरखो निर्गुणभाव। भूत भृतौ भूपस्थ नाहिं भूतवृद्ध करभाव ॥ सबथर गत मारुत यथा है नभस्थ हेतात । तिमि ममस्थ सबभूत हैं ब्रह्मबीज वि-ख्यात ॥ सर्वभूत कल्पान्तमें ममसुप्रकृतिमें लीन । होततिन्हैं कल्पादि में सिरजि करत हम पीन ॥ ह्वै निज प्रकृताधीनजग रचियतु बारम्बार। मोहिं न बाधत कर्मकृत आरत आराग वि-हार ॥ मैंजो नाथ प्रवर्त्तकमु तेहिसों प्रकृति पुरानि। बिरचति जगतेहि हेतु जगसाहृतिलीजै जानि ॥ जेमावज्ञा न मूढ़लेश्रमि माया भ्रम माहिं । गहे मानुषी देहमोहिं ईश्वर जानतनाहिं ॥ व्यर्थाशाअरु कर्मते व्यर्थज्ञान अरुचेत । गहेराक्षसी आसुरी प्रकृति तमसरजहेत ॥ जामेंहिंसाहोयवहु प्रकृतिराक्षसीतौन । जामें होयमदादि बहुसो आसुरिमतिभौन ॥ जे महान दैवीप्र-कृति आश्रित सत्वप्रधान । ते अनन्यमन भजहि मोहिं गुणि अव्ययमतिमान ॥ भजनस्वरूप कहियतु हैं ॥ सन्तत कीर्त्तत मोहिं ते दृढ़व्रत मनजित स्वक्ष । प्रणमत नवधा भक्तियुत गहिउपास-नादक्ष ॥ ज्ञानी भजत अभेद गुणि गुणि कोउ सेवकस्वामि । भजत कोऊ गुणि सर्वगत कोउ त्रिमूर्त्तिको नामि ॥ हम मख स्वाहा स्वधाहवि अग्निआज्य द्विजमंत्र । हम माता धाता पिता वेद्य प्रणव अरु तंत्र ॥ भर्त्तागति साक्षी शरण सुहित निवास निधान । प्रभव प्रलय प्रभु बीजहम हैं अव्यय मति-मान ॥ हम बरषत हम तपत हमकरत अवर्षणरूप । हम अमृ-त्यु हममृत्यु हम सत अरुअसत अनूप ॥ जे सुमखकरि इष्टि मोहिं चहैं स्वर्गमें ओक । पाय पुण्यफल ते बसत सुरनायकके लोक ॥ भोगि स्वर्गगत पुण्यह्वै पतत भूमिपै फेरि । वेद निष्ठ

कामी इबिधि लहत गतागतहेरि ॥ जे अनन्य चितभक्त मम भजत मोहिंयुतभक्ति । तिनके रहति अधीन नित सर्बयोग की पंक्ति ॥ औरहि पूजत भक्तियुत जेऊतेऊ भक्त । मोहीं पूजत पार्थ पै अबिधि पूरबकशक्त ॥ हमहीं हैं सबयज्ञके भोक्ता ईश महान । मोहिं न जानत तत्वसों ताते तपत न दान ॥ जे ध्यावत हैं जिनाहिं ते अवशि तासुढिगजात । जे ध्यावत हैं मोहिं ते मम ढिग आवत तात ॥ पत्र पुष्पफल तोय जो अरपत हमाहिं सभक्ति । ह्वै प्रसन्न हम लेतसो तस्योपरिअनुरक्ति ॥ अशन हवनदानादि जो करहुकर्म ब्यापार । करौ ममार्पणतौन सब यह मत मंजुलसार ॥ इमि संन्यास सुयोगसो युक्तात्मा ते तात । कर्मबन्ध शुभ अशुभफल सो छुटि ममढिगजात ॥ हम सबमें समभाव अरु है मोहिं प्रियनाहिं कोइ । ढिगबर्त्ती ऐकी अगिनि शीत देति है खोइ ॥ यदपि दुराचारी महत मोहिंभजै जोउ सोउ। साधुमानिबे योग तेहि कहौं असाधुन कोउ ॥ शीघ्र होतधरमात्मा लहत शांति सोदास । ध्रुवतुम जानो नशत नहिं ममजन लहत सुपास ॥ बैश्यशूद्र तियआदि दै पापयोनि हैं जेउ । मम आश्रित ह्वै परमगति ध्रुवपावत हैं तेउ ॥ ममसुभक्त जो पुण्यजन अकथनीयहै तौन । लोक अनित्य असुखहिलहि मोहिं भजै पटुतौन ॥ ममपूजक ममभक्त जे मोमें रत मतिमान । लहत परमपद तेसुबुधिपापशान्ति बिज्ञान ॥

इतिभीष्मपर्बणिकृष्णार्जुनसंबादेराजबिद्यागुह्यबर्णनोत्रयोदशोऽध्यायः १३

श्रीभगवानुवाच ॥ दोहा ॥ तव हितार्थ फिरि कहत हौं बचनपरमसुददान । सुनो धनंजय तौनतुम तासु पूर्ण प्रियमान ॥ नहिं जानत ऋषि सुमनगण ममसुप्रभवहेतात । सबऋषिगण अरु सुमनके हम हैं आदि बिभात ॥ अजअब्यय अरु लोक को ईश्वर जानत मोहि । जेते सब मानवन में असम्मूढ़ बिधिजोहि ॥ असम्मोह बुधिज्ञानसम क्षमासत्य दमदान । सुख दुख

भाव अभावभय अभय अहिंसामान॥ समता तपयशअयश अरु तुष्टिभावजो होत। पृथक् पृथक् ते भूतमें मोसों करत उ-दोत॥ सनकादिक ऋषिचारि अरु भृगुआदिक ऋषिसात। चौदह मनु मानस सम तिनसों सबजग जात॥ मम विभूति अरु योग यह लखत तत्त्वसों जौन। निस्संदेह सुयोगते युक्त होत है तौन॥ हम सबके हैं प्रभवअरु न्यामक सुनो यथार्थ। भावयुक्त बुधमानिइमि भजत मोहिं हे पार्थ॥ जासु चित्तमेंहम बसत शतधा ते मतिमान। कथत मोहिं मोमें रमत तोषतमो-सों न्यान॥ तिनभक्तनकहँ देतहम बुद्धियोग सोतात। जातेमो ढिगप्रापिते अमलअनन्यविभात॥ नित्यप्रकाशित चारुअति ज्ञानदीपसों तासु। हमनाशतअज्ञानतम करिअनुकम्पाआसु॥ अर्जुनउवाच॥ परब्रह्म परधाम अज अव्यय पुरुषपुरान। आदि-देव तुमकहँ चहत नारदादि मतिमान॥ आपहु कहोसो सर्व सति नहिंसंशयहै नेक। जानत हैं न स्वरूपतव सुरअरुअसुर अनेक॥ आपुहि अपने रूपको जानतहौ तुमनाथ। यातेमो-को जानिकै निज चरणनकेसाथ॥ फिरिअशेषतेकहौप्रभु निज विभूति व्याख्यान। जासों व्यापि समस्त जग वर्त्तितहौ मति मान॥ किमिजानै केहिभाव में चिन्त्यमान तुमतात। विस्तर सों सो कहहु प्रभु सुनिमोमन न अघात॥ श्रीभगवानुवाच॥ आ-पनि दिव्य विभूतिहम पारथ तुमसों भन्त। कहिप्रधानताता सुनहिं विस्तरसों मम अन्त॥ सब भूताशय आतमा हैं हम हे मतिमान। आदिमध्यअरु अन्त हम सबकेसुनहु निदान॥ आदित्यनमें विष्णु रवि ज्योतिमानमें भात। शशिनक्षत्र में मरुतगणमें मरीचिहमतात॥ कवित्त॥ वेदनमें सामवेद देवनमें बासव औ इंद्रिनमें मनचेत भूतनमें हमहैं। रुद्रनमें शङ्कर अ-यक्षनमें धनपति वसुनमें अग्नि सिखरीनें अरुहम हैं। गुरूसु-पुरोधनमें सिन्धुसरिता गनमें सबसेनापतिनमें कार्त्तिकेयहमहैं-

ऋषिनमें भृगुबरबाणीमें एकाक्षरयज्ञनमेंजपतरुमें अश्वस्थहम हैं॥ छप्पै॥ऋषिनमेंनारदहिमालयथावरनमें औसिगरेगन्धर्वनमें हमचित्ररथहैं । सिद्धनमेंकपिलऔ उच्चैश्रवा अश्वनमें गजन में सुरगज बीरज अकथहैं । अस्त्रनमें बज्रकाम धेनु धेनुगनमें औ सर्पनमें बासुकि प्रजन मनमथ हैं । नरनमें नरनाह सब शस्त्रधारिनमें ध्यायबेके योगनमें हमदाशरथहैं ॥ दोहा ॥ दैत्यन में प्रहलादहम गणक गणनमें काल । मृगगणमें मृगराजहम गरुड़ खगनमें आल ॥ गवन कृतनमें पवनहम मकर भखनमें तात । सुरसरि हम स्रोतसनमें मुनिमें ब्यास बिभात ॥ पितृन में हम अर्यमा हम नागनमें शेष । नियम कृतनमें यम बरुण जलचरमें सबिशेष ॥ कवित ॥ आदिअन्त मध्यहम सब रूपवाननमें अध्यात्मबिद्या सबबिद्यन में हमख्यात। हमबाद बकतनमें अक्षरनिमें अकारहमहैं अक्षय काल हममृत्युअवदात ॥ द्वन्दहैं समासन में हम कामफलप्रद हमहीं वृहत साम साम बेदमें बिभात। हमऐश्वर्य हमस्मृतिमेधा धृतिक्षमा कीर्त्ति बाणीश्रीहैं सबनारिनमेंहमतात ॥ छप्पै॥छन्दनमेंगायत्री मासन में मार्गशीर्ष तेजतेजवाननमें ऋतुन में ऋतुराज । छलन में जुवाब्यवसायन में जय हम तेजनमें तेजवान सत्वनमें सत्व साज । वृष्णिनमें बासुदेव पाण्डवमें पारथ औदण्ड दण्डकृतनमेंकबिनमेंकबिराज। नीतिजीति चाहकमें मौनगुह्य मंत्रनमें ज्ञानज्ञानवाननमें राजनिमें साम्राज॥ दोहा॥ सर्बभूतको बीजजो सो हमहैं हेपार्थ। हमैंबिना जो भूतसो नाहिं कछु सुनहुयथार्थ ॥ हैनादिब्य ममभूतको अन्तसुनो हेआर्य। एकदेशसों एकहोनिज बिभूति कृतकार्य॥ज्ञानबुद्धिबल रूपधन बिद्याआदि समस्त । कीउतकृता जहँलखौ तहँममभूतप्रशस्त॥ ज्ञानवानतुमहौ कहा कहैंअधिक हेतात। एकअंशसों सबजग मेंहमब्यापि बिभात॥

इतिभीष्मपर्बणिश्रीकृष्णार्जुनसम्बादेबिभूतियोगबर्णनोचतुर्दशोऽध्यायः॥

अर्जुनउवाच ॥ दोहा ॥ नाथकृपाकरि जो कहे परमगुह्य व्या-
ख्यान । सो सुनिभो ममभ्रम शमन दमन मोहअज्ञान ॥ भू-
तनको भवनाशकृत सुनो सविस्तर तात । लखोचहत तवरूप
प्रभु जोपर परम बिभात ॥ जो तेहि लखिजे योगमाहिं जानौ
तत्त्वनिकेत । तौदरशावहु रूपनिज सानँदकृपा समेत ॥ श्रीभग-
नुवाच ॥ लखहु पार्थ ममरूपसो शतसहस्र सहभेष । विधि
गिरिसागर आदिजग तनमें लखो अशेष ॥ नहिंलखि सकि
हौ पार्थयहि चखतेसी ममरूप । दिव्यचक्षु हम देतहैं निरखौ
प्रभाअनूप ॥ इमिकहि दरशावतभये प्रभु परमेश्वररूप ॥ चख
मुख पगभुज अनगिने अदभुत दरश अनूप ॥ दिव्यगन्ध
स्रकआभरण आयुधधरे अनन्त । सर्वआचरणसों भये केशव
कमलाकन्त ॥ एककालमें सहसरवि दिपैंगगनपै आय । तऊ
नतहँ प्रभुकी प्रभा कीसमताकहि जाय ॥ पृथक् पृथक् तहँसर्ब
जग प्रभुकेतन मधिदेखि । करिप्रणाम पारथकहे विस्मय सों
हियभेखि ॥ प्रभु निरख्यों तुव देहमें सर्बभूत समुदाय । शिव
बिरंचि सुरसिद्ध ऋषि उरगविहँग खगराय ॥ निराखिपरे अग-
णित उदर चखमुख ऊरू हाथ । आदि अन्त अरु मध्य तुव
लखि न परत हेनाथ ॥ चारुकिरीटी अरुगदी चक्री वर्चसधा-
म । लखततुम्हैं ज्वलनार्कसम दुरनिरीक्षअभिराम ॥ वेदितव्य
अक्षरपरम तुमप्रभु बिश्वनिधान । साश्वत रक्षकधर्म्मके पुरु-
षोत्तमभगवान ॥ शशिरविनेत्र अनन्तप्रभु नित्यअनादि अ-
नन्त । दीप्तहुताशन वदनजग लहि तुवतेज तपन्त ॥ नभमहि
सबदिशिमें भये पूरित एकअनूप । व्यथितभयो त्रैलोकप्रभु
लखितुम उग्रस्वरूप ॥ रोला ॥ कितेअसुर समूहशरणे होततब
तजिदर्प । कितेप्रणत सिद्ध ऋषिगण करत अस्तुतिअर्प ॥
रुद्रवसु गन्धर्व आश्विनि साध्यमारुत यक्ष । पितरसुर साचरज
निरखतकरे अचपल अक्ष ॥ उग्ररूप निरेखि यहभे व्यथित

सिगरेलोक । व्यथित कैहम सधृति नहिंलहि दीप्तिको अव-
लोक ॥ दशन बिकट कराल कालानल सदृश तब आस्य ।
देखिदिग भ्रमभयो मोहिं प्रसीद लखिमम दास्य ॥ पुत्रसब
धृतराष्ट्रके सहसैन नृपति समूह । औरजेमम संगके महिपाल
अरु भटजूह ॥ सर्व्वतेतव मुखेप्रविशत शलभआगिनि समान ।
परेदशनान्तरनि चूर्णित उत्तमांग महान ॥ बेगसों जल नदिन
को जिमि उदधिमांधि चलिजात । तथा प्राविशत सकलये तुव
बदनमें हेतात ॥ दीहरसना करत चालन जगतग्रसत समान ।
करेप्रतपित लोकत्रयकरि तेजपरम प्रधान ॥ कहौप्रभु करिकृपा
को तुम उग्ररूप अमान । चहत जान्यो भेदतुव नहिंलहतकरि
अनुमान ॥ श्रीभगवानुबाच ॥ लोकक्षयकृतकालपरम प्रबुद्धहम पन
वान॥बिनापाण्डव सर्व्वसुभटन करब शीघ्र अप्रान ॥ लरौताते
लहौशत्रुन जीति सुयश अमन्द । हतेहमसों सकलयेतुव व्याज
मात्र स्वछन्द ॥ संजयउवाच ॥ कृष्णकेये बचन सुनिकै पार्थयुग
करजोरि । काम्पिगदगद ह्वैरोमांचित कहेनौमि बहोरि ॥ सत्य
प्रभु तुवप्रकृतिसों जगलहत त्रयबिधि जौन । बिश्वतुमसों
व्याप्त तुम परधाम आनँद भौन ॥ आदिकर्त्ता आपु कर्त्ता के
अनादि अनंत । अग्निरबि शशि दिशपलोकप तुमहिं श्रुति
स्मृतिभंत ॥ बिश्वकरता बिश्वपालक बिश्वमें भगवान । बार
बार प्रणाम सब दिशि सों तुम्हहिं मनमान ॥ क्षमेहुप्रभु मम
अज्ञताके भावसिगरे तौन । कृष्ण हे हे सखायादव कहतहैं हम
जौन ॥ दोहा ॥ यहतुव महिमा महततोहि बिनु जाने हे नाथ ।
वाप्रमाद वाप्रेमसों वासहास रहिसाथ ॥ शयन अहार बिहार
में अनुचित भाष्यो जौन । पिता पुत्रको क्षमततिमि क्षमहुँकृपा
करि तौन ॥ लखेअगोचर रूपयह व्यथव्रतहै मोहिंत्रास । चा-
रुसउम्य स्वरूप गहि दीजै नाथ सुपास ॥ श्रीभगवानुबाच ॥ मम
प्रसन्नता ते लखेहु तुमममरूप सगौर । जपतप मख दानादि

करिलख्यो न कबहूं और ॥ तजौ भीति अब लखहुमम पूर्व स्वरूपउदार। इमिकहि दरशावत भये रूपसदनमदगार ॥ कहे पार्थ यहरूपलखि मोसप्रकृति ममचेत । सुनिप्रसन्नह्वै कहत मे केशव कृपानिकेत ॥ ममस्वरूप दुरदर्श है लखेहु पार्थ तुम ताहि । लखिबे को बांछित रहत नित्य सुमनगण चाहि ॥ वेद यज्ञ तप दानसों नहिंस्वरूपसों दृश्य। है शुचि भक्ति अनन्य सों ज्ञातदृश्य अस्पृश्य ॥ नित्य समर्पण कर्मकृत परम भक्त ममजौन। वर्जित संग ममत्व बिनु प्राप्त होत मोहिंतौन ॥

इतिभीष्मपर्वणिश्रीकृष्णार्जुनसंवादे विश्वरूपदर्शनवर्णनोपंचदशोऽध्यायः

अरजुनउवाच ॥ दोहा ॥ सगुण स्वरूपी तुमहिंजे ध्यावत हे सर्वज्ञ। ध्यावत निर्गुण जे तिनमधि प्रभुके योगज्ञ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ नित्यलग्न श्रद्धा सहित मोमें मन आवेशि। ध्यावत जे मम भक्ते हैं मोहिंयुक्त बिशेशि ॥ ध्यावत इन्द्रिन नियमि जे अगुण अचिंत्य स्वरूप। प्राप्तहोत मोमें तेऊ पाय सुसिद्धि अनूप ॥ पै अचिंत्य अव्यक्त में करि अशक्त निंतिचेत । लहत क्लेश अतिही सुनो पारथ बुद्धिनिकेत ॥ जे मम विषे समर्पि के सर्व कर्म कृतजात। मोहिंजपत हमतासुहैं उद्धरता हे तात ॥ मोमें मनथापित करैं बुद्धि प्रवेशनकार्य। देहत्यागके अन्तसों निवसत मोमें आर्य ॥ जो मोमें नहिं करिसकै थिरचंचल मनताहि। तौ अभ्यास सुयोगसों करै आप्त मोहिंचाहि ॥ जो अभ्यास में अक्षम तौ करिये ममहितकर्म। ममहित करिकै कर्मनर लहत सिद्धि तजिभर्म ॥ ममहित कर्मन करिसकै जो मम आश्रित अक्ष। कर्मनके फल पक्षको करैत्यागतौ दक्ष ॥ श्रेय ज्ञान अभ्यास सों ध्यान ज्ञानसों श्रेय। ताहूसों फल त्याग अरु तासों शांति अमेय ॥ निर्द्वेषी शुचि कारुणिक निर्मम योगी तुष्ट ।

गोकुलनाथात्मज गोपीनाथकविने शान्तिपर्वके मोक्षधर्म के ८३ अध्यायतक व दानधर्म के प्रारंभ से हरिवंशपर्वतक बनाया ॥

मनबुधि मोमें आर्पिमम भक्तमोहिं प्रियपुष्ट ॥ अनहित करत न आपुनहिं होतकबहुं उदबिग्न । जोभय हर्ष अमर्ष बिनु मोप्रियमोहिं अबिघ्न ॥ अनपेक्षी दृढ़ निश्चयी उदासीन सम भाव । तजेसर्व आरम्भ सो ममप्रिय भक्तसचाव ॥ मुदित होत नहिं पायप्रिय दुखित न अप्रिय पाय । समसुखदुख अरिमित्र में सो ममभक्त बनाय ॥ निन्दा अस्तुति तुल्यजो अपटुमौनि अनिकेत । तुष्टलहैजो ताहिमें थिरमति भक्तसहेत ॥ तजे संग अरु शुभअशुभ तजे दोषजे सर्व । तुल्यमान अपमानसुख दुखमों भक्त अखर्व ॥ धर्म्यामृतयह परम हित यथाउक्त तेहि जौन । याहि उपासत सारधिक भक्त मोहिं प्रियतौन ॥

इतिभीष्मपर्वणिश्रीकृष्णार्जुनसंबादेभक्तियोगवर्णनोनामषोड़शोऽध्यायः॥

अर्जुनउवाच ॥ दोहा ॥ क्षेत्र और क्षेत्रज्ञऔ ज्ञानज्ञेयहैं जौन । प्रकृति पुरुषके येकहौ जान्यो चाहततौन ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ यह शरीर है क्षेत्र है सुनो बुद्धिमत पार्थ । चित आत्मा क्षेत्रज्ञ जो जानत याहि यथार्थ ॥ सर्वक्षेत्रमें पार्थ मोहिं जानहु प्रभुक्षेत्रज्ञ । क्षेत्र और क्षेत्रज्ञको ज्ञान ज्ञान सर्बज्ञ ॥ जो अरुजैसे क्षेत्र है जासु बिकार बिभात । जैसो तासु प्रभाव सो सुनो सबिस्तर तात ॥ ऋषिगणसों अरुवेदमें ब्रह्मसूत्रपद माह । पृथक् पृथक् है कथित सो सुनो पार्थ नरनाह ॥ अहंकार बुधिभूत अरु इन्द्री मन शब्दादि । इनमें क्षेत्र प्रसिद्ध है कहत वेद बिद नादि ॥ इच्छासुखदुखद्वेषधृतिअरुचेतनाउदार । मनइन्द्रीअरुआतमा ये हैं क्षेत्र बिकार ॥ अथज्ञानलक्षणम् ॥ कबित्त ॥ कोमलता शांतिऔ अदंभता सुअमानित्व शुचिता औ थिरता अहिंसानिरहंकार । बैराग्य इन्द्रियार्थ बिषे आत्म निग्रह आचार्यको उपासनसम चित्तत्व ब्यवहार । इष्ट औ अनिष्ट बिषे समचित्त गोपीनाथ जन्ममृत्यु जरा ब्याधि दोष दुःखकोबिचार । पुत्रदारऔ गृहादिमेंअशक्तता सदैवमो मधिअनन्य भक्तिकीबो ज्ञानहैउदार ॥

दोहा ॥ जो निर्जन सेवित्व अरु जनगण विषे अप्रीति । नि-
ति शास्त्रज्ञ सुज्ञानमें कीन्हो निष्ठा नीति ॥ चारु तत्त्व ज्ञानार्थको
दरशन हेमतिमान । इनको कहिये ज्ञान अरु इनते इतर अज्ञा-
न ॥ अब कहियतुहैं ज्ञेय जो सुनो तासु व्याख्यान । नशत न
असतअनादि जो परब्रह्मभगवान ॥ पाणिपाद शिर नेत्रमुख
श्रुतिसबदिशि में जासु । बिलसत सबथर व्यापि सो वेदवदत
गुणतासु ॥ सर्वेन्द्रिय के गुणनिको ग्राहक बिस्वेबीश । वर्जित
सब इन्द्रियनसों अनाशक्त जगदीश ॥ बाहेर अन्तःभूतगण
केचर अचरसुजान । अविज्ञेयसूक्ष्मत्वते निकटदूर थितवान ॥
है अभिन्न सब भूतसों बिलसत भिन्नसमान । भरता हरता
भूतगणकोप्रभु ज्ञापक ज्ञान ॥ सबज्योतिनके ज्योतिकृत तमते
परे बिहार । ज्ञेयज्ञानसों गम्य हम सर्व हृदिस्थ उदार ॥ क्षेत्र
ज्ञान अरु ज्ञेय कहि प्रगट सुनायेतात । जाहि जानि मम भक्त
मम भाव हेतु लपटात ॥ प्रकृति पुरुषये जगतके जननी जनक
अनादि । सोबिस्तर सों प्रगट करि कहैं वेद विदनादि ॥ कार-
ण कार्य कर्तृत्वमें हेतु प्रकृती दक्ष । सुख अरु दुख भोक्तृत्वमें
हेतु पुरुष परतक्ष ॥ कारणहै इन्द्रिय सकल अरु शरीर है का-
र्य्य । लगीरहतिहै विषयमें याते जानत आर्य्य ॥ करत पुरुष
प्रकृतिस्थि ह्वै प्रकृतिज गुणको भोग । कारण सद सद योनि
को त्रयगुणको संयोग ॥ दर्शक न्यामक नित्य जो भर्त्ता भोक्ता
तात । परमात्मा प्रभु ख्यातसो तनमधि पुरुष बिभात ॥ प्रकृ-
ति पुरुषकहँ गुणनिसह इमि जानतहैं जौन । बर्त्तमान सबमें
तऊ फेरि न जन्मत तौन ॥ देखत आत्महि आपुमें कोउ करि
आपुहिध्यान । कोउ सांख्य विधियोगते कोउ करिकर्मबिधान ॥
जे अजान इन बिधिन मधि तेसुनि गुरु के बैन । ध्यावत आ-
त्महि नेम सों तेऊ तरत सचैन ॥ थावरसंगमहैं जिते तेसिगरे
हे तात । क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ के संगम सोहैं जात ॥ परमेश्वरसब

भूत में सम बिलसत है पार्थ । नहिं विनशे बिलसत लखत यह सो लखत यथार्थ ॥ सब थर सम इस्थित प्रभुहि सबथर लखतसमान । पुष्ट करतसब भांति निज कारय तौन सयान ॥ प्रकृतिहिसों क्रियमाण हैं तिते जिते सबकर्म । लखत अकरता आतमहि लखत लखत सो पर्म ॥ पृथक् भावसबभूतको जब निरखै एकस्थ । लखै बिस्तरित एकसों लहै ब्रह्मसों स्वस्थ ॥ अनादित्व अगुणत्वसों प्रभुदेहस्थ प्रशस्त । करत न कछु ताते नहीं होत दोषसों ग्रस्त ॥ तथा सर्वगत आतमहि कर्मनलिप्त करोत । यथा सर्वगत सुष्णतासों नभ लिप्त न होत ॥ यथा प्रकाशत सकलजग कहँ रबि एकअमन्द । तथाप्रकाशत क्षेत्रसब क्षेत्री परमस्वछन्द ॥ लखतक्षेत्र क्षेत्रज्ञको ज्ञानचक्षुसों बीच । भूतप्रकृतिपर मोक्षबरते नरलहत निभीच ॥

इतिभीष्मपर्वणिश्रीकृष्णार्जुनसंबादेप्रकृतिगुणबर्णनोनामसप्तदशोऽध्यायः

भगवानुवाच ॥ दोहा ॥ उत्तमासिगरे ज्ञानसों फिरि कहियतुपर ज्ञान । परम सिद्धि मुनिगण लहत जाहि जानि सबिधान ॥ यह शुभज्ञान उपासिकै लहि मम रूपहि तात । कल्पादि सुकल्पान्त में कबहुँनशत नहिंजात ॥ सत्वरजस तम त्रिगुण ये प्रकृतिज सुनु कैस्वस्थ । बरधिबाधि ते करत है देहिनको देहस्थ॥ एकएकये बरधि जिमि बाधत करि जे कार्य । सो सबक्रमसों कहत हैं सुनो धनंजय आर्य ॥ बढ़त सत्वतबहोत है निर्मल हृदय सज्ञान । तासोंसुख संगमहि लहि बँधत जीव मतिमान ॥ बढ़े रजो गुणके बढ़ति तृष्णा महत अमान । कर्मसंग लहिके बँधत तासों जीवसुजान ॥ तामस बढ़े अज्ञानबढ़ि करत हृदयको अन्ध । लहि प्रमाद आलस्य तब जीव होतहै बन्ध ॥ सत्व प्रकाशक सुख जनकरजस करावत कर्म । ज्ञानगोपितामस करत प्रगट प्रमाद अधर्म ॥ सोरठा ॥ सत्वरजतमाहिगोपि रजतमसत्वहिदाबिकै । सत्वरजहितमलोपि प्रगटकरत निज २

धरम ॥ दोहा ॥ ज्ञानशर्म्मकर सत्वरज ज्ञापक कर्मसलोभ। ता-
मसकरत प्रमाद अरु क्रोध मोहमदक्षोभ ॥ बढ़े सत्वके करत
तन त्यागन जो तनवान। सोसोलोक लहैंलहैंजेतत्वज्ञसुजान ॥
बढ़े रजसतन त्याग जो करत होतनर तौन । पावत कुत्सित
योनितन तजत बढ़ेतम जौन ॥ सात्विकिको फल ज्ञानसुख रज
को फल दुखपर्म। तामस को अज्ञानफल बरणत ज्ञातामर्म ॥
होत सत्वसों ज्ञानअरु रजसों लोभ महान। तमसों मोह प्र-
मादअरु होत अज्ञान अमान॥ गच्छत ऊर्ध सतोगुणी राजस
तिष्ठत मध्य। अधोगच्छत हैं तामसी असत्कार्य आराध्य॥ क-
रता जानत गुणिहिजो नहिं आपुहि सुतचाव। निजकहँ गुणि
तम गुणन ते परे लहतममभाव॥ जब देहीइन त्रिगुणकहँ जी-
तत सहित विधान। जन्ममृत्यु दुखसों तबहिं मुक्तहोत मति-
मान ॥ अर्जुनउवाच ॥ त्रिगुणहि जीते को कहा चिह्नकहो सो
तात। काअचार केहिभांति प्रभुअनघत्रिगुणतरिजात ॥ श्रीभग-
वानुवाच ॥ सत्वप्रवृधि बारजतमस कियोकरैनिजकर्म। इमिगुणि
मोमेंलीन नितरहत तौन बिदमर्म ॥ उदासीनवत रहतसो अ-
नालिप्त सर्वत्र। गुण प्रगटत निज गुणनि इमि अचल गुणात
सर्वत्र॥ सुखदुख कंचन उपल प्रिय अप्रिय तेहि सम पार्थ।
त्यागीसबके यतनको जीतेगुणनि यथार्थ॥ सोरठा ॥ जपतमोहिं
तजिओत गहि अनन्य शुचिभक्ति जो। जीतिगुणनिकहँहोत
ब्रह्मभावके योगसों ॥ दोहा ॥ तातपर्यते ब्रह्मको हम सुप्रतिष्ठा
न्यान। अरु साश्वत शुचिधर्मको अरु परसुखको स्थान ॥
इतिभीष्मपर्वणिश्रीकृष्णार्जुनसंवादेप्रकृतिगुणभेदवर्णनोअष्टादशोऽध्यायः

दोहा ॥ ऊर्द्ध मूल अधशाख अरु परण छन्दमय यज्ञ। तरु
अश्वत्थ जग ताहिजे जानतते वेदज्ञ ॥ सोरठा ॥ सबके ऊरध
स्वक्ष ईश्वर अव्यय परम हैं। ताते अधसुनु दक्ष जीवतौन
शाखा बपुष ॥ कवित्त ॥ बढ़ो गुण जलसों सुविषय प्रवालयुत

शाखा अधऊरधको परसे लसत तासु । अध मूल लसैंते बैं करमानुबन्धीकृत ऊरधसों क्रमतेत्यों अधसोंकरेप्रकासु । आदि अन्त ध्रुवरूप दीसै ताहि तरुकोण ताहिसंग त्यागदृढ़ आयुध सों छेदि आसु । शोधै तेहि पदकी सुगैल जाहिप्रापिफेरि परसै न भूमिमोदैपाय सरसै सुपासु ॥ दोहा ॥ मैं शरणागत नाथइमि आरत बचनसुनाय । प्रकृति पुरातनको प्रभव पुरुषहि लहत सचाय ॥ निर्मानी निर्मोह जित संगअदोष अकाम । ध्यानाव- स्थित चितलहे परमसुपद अभिराम ॥ यहां न दीपत सूर्यशशि नहिं पावक शुचिरूप । जहां जाइ नहिं फिरत फिरि सोममधाम अनूप ॥ शुद्ध सनातन अंशमम जीवभूत अविभंग । सो मन सह ज्ञानेन्द्रियन कहँ नित राखतसंग । तिन प्रकृतिस्थन कहँ लये गहत तजत तनतौन । गहेरहत तिनकहँ तथा यथागन्ध कहँ पौन ॥ कबित्त ॥ रसनाकरण चक्षुघ्राण परसनमन इन्हैं मय तनुतन तामैं नित्य बासकरि । बिबिध बिधाननके थूलदेह में बिलसिभोग बिषयानको करत महामोदभरि । कहैं कबि गो- पीनाथ यह जो वृत्तान्त ताहि जानत न मूढ़ जाने ज्ञानवान ध्यानभरि । ऐसे मनसह पंचतत्त्वन सखानसम सब थर रहैं संग लीन्हेंजीवमायाकरि ॥ दोहा ॥ तेजअग्निशशिसूरमें सोमम तेज अमन्द । हमपोषतसब औषधिन कहँ ह्वै सोम स्वछन्द ॥ धारत भूतसमूह हम महिमें प्राविशि बिचारि । हम पचवत जठराग्नि ह्वै अन्नजौन बिधि चारि ॥ हम सबके हृदयस्थहैं हमरो सोस्मृति ज्ञान । सबदेवनमेंवेद्यहम करतावेद बिधान ॥ कबित्त ॥ लोकमें पुरुषदोय क्षर औक्षर सुनो क्षर प्रतिबिम्बवत होतनाशमानजौन । अबिकारी अचल सोअक्षर अमन्द और तिनसों इतरपरमात्मा प्रसिद्ध तौन । धारे सब लोकन जो अ- क्षरसों परे ताते स्यात पुरुषोत्तम न प्रकृति तियाको रौन । यहि बिधि जानतजे मोहिं पुरुषोत्तम ते मोहिंको भजततासों

सरवज्ञ दूजो कौन ॥ सोरठा ॥ परम गुह्य यह शास्त्र कहे पार्थ जेहिजानिकै । कृत्यकृत्य सतपात्र बुद्धिमान नरहोत है ॥

इतिभीष्मपर्व्वणिश्रीकृष्णार्जुनसंवादेपुरुषोत्तमयोगवर्णनोएकोनविंशोध्यायः

श्रीभगवानुवाच ॥कवित्त॥ राजसीतेहोतनरतिन्हैंदोयसम्पदहैदैवी अरुआसुरीते सत्यतमकेनिदान । मृदुताअहिंसाक्षमातप यज्ञ सत्यशांतिअभयअलोलुपतादयाशमदमदान । ज्ञानकोसंयोग औस्वध्यायकरुणो अद्रोहतेजत्याग धीरज सुशौचकीवो जप ध्यान। इन्हैंआदिसतकाज दैवीसम्पदातात सेवतसप्रेम तिन्हैं सत्वमयमतिमान॥ अपरं॥दम्भदर्पअभिमानक्रोधरुच्छताअज्ञान आदिकलिखेजे गणेकारजअसतहैं । सम्पदाते आसुरीहैबन्ध करतारइन सेवैसदा तामसीते अधकोखसतहैं । त्रातासवथर में सुदाता मंजुसुकृतिकी गोपीनाथदीह दैवीसम्पदा लखतहैं। दैवी शुचि सम्पदामें प्रगटभये हौ तुम शोच मतिकरो शोचे शोच सौं ग्रसतहैं ॥ दोहा ॥ दोयभूत यहि लोकमें आसुर दैव प्रधान। कहे देव अब कहतहैं आसुर को व्याख्यान॥ आसुर जन मानत नहीं प्रवृतिनिवृति व्यवहार । शौच सत्यजानतन ते नहिं जानत आचार ॥ कहतअनीश्वर जगतकहँ कहि अ- सत्यउपखान। रजबीरज संभव सकलनाहिंकछु आनविधान॥ यहि बिचारमें दृष्टि करि नष्टात्मा अज्ञान। उग्रकर्मकर जगत के नाशक होत अमान॥ काममये अतिदम्भ युत मानमदा- न्वित मूढ़ । असतग्रहण करि मोह ते चरत अशुचि व्रतगूढ़॥ मरणावधि चिन्तित रहत योग क्षेमके हेत । कामभोग उतकृष्ट यह निश्चय करत अचेत॥ आशापाश सहस्रसों बद्धभरेरिसि काम । मदनभोग हितधन सचतकरि करि कुतसितकाम॥ यह भोमोकहँ लुब्ध यह ममपौरुष सों प्राप्त । निरखिअन्य धनक- हत यह ह्वैहै ममहेआप्त ॥ मैं मार्‍यों यह शत्रुकहँ हतिहों और अनेक । हम ईश्वर भोगी सुखी बलीसिद्ध सविवेक ॥ हमकु-

लीन जनवान हम नहिं मोसमकोउअन्य । इमि मोहितअज्ञान सों गुणत आपु कहँधन्य ॥ थरअनेकमें लायाचित भ्रमत मोहकेजाल । कामभोगरतते पतत जहँअतिनरककराल ॥ आपुहि जानत आपुबर संधन भये अभिमान । करतयज्ञसो दंभ सोनाम हेतु अविधान ॥ अहङ्कार बलदर्पअरु युतकामादिक सर्ब । निज परदेहस्थहि सुमोहिं द्वेषत ईर्षत खर्ब ॥ परे आसुरी योनिमें अमोकरत तेमूढ़ । मोहिं लहे बिनु लहतहैं क्रूर अधम गतिमूढ़ ॥ तीनि नरकके द्वारहैं काम लोभ अरु क्रोध । इन्हैं त्यागि आचरतले करत परम गतिशोध ॥ करिउल्लंघन शास्त्रबिधि चरत स्वइच्छा जौन । सिद्धि परमगति सुख शुभहि नहिं पावतहैं तौन ॥ ताते शास्त्र प्रमाण सो कारज कृत्यअकृत्य । शास्त्र उक्तय बिधि जानिकै है गुणि करिबो नित्य ॥

भीष्मपर्वणिश्रीकृष्णार्जुनसंवादेदैवासुरसम्पदविभागवर्णनोबिंशोऽध्याय ः

अरजुनउवाच ॥ सोरठा ॥ जेकै श्रद्धावान त्यागि शास्त्र बिधिमख यजत । सत्वरजसतमन्यानकहा तासुनिष्ठाकहौ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ दोहा ॥ देहिनकी श्रद्धात्रिधा पूर्बकर्म परभाव । सात्विकि राजसि तामसीहोति सुनो गहिराव ॥ श्रद्धासबको होतिहै शुद्धसत्व अनुसार । जेहिजसिश्रद्धाहोतितेहितैसोपदनिरधार ॥ सात्विकि ध्यावत सुरनकहँ राजसराक्षसयक्ष । भूतप्रेतगण कहँयजत तामस धर्म प्रतक्ष ॥ जेअशास्त्रमत गहि तपत दम्भ युक्ततप घोर । रागरतेते बिनुलखे ममआज्ञाकीओर ॥ भूतग्राम देहस्थ अरु हम हृदयस्थस्वछन्द । तेहि कृश करजानौतिन्हें असुर निश्चयमिन्द ॥ कबित्त ॥ आहारयज्ञ तपदानये त्रिबिधहोत तिनको कहत जौन भेद व्यवहारहै । आयुसत्वबलसुख प्रीतिऔ अरोग्यकार घृत सिता क्षीरयुत सात्विकि अहारहै । अतिकटु आमल लवण अति अति ऊष्णराजसीको प्रिय शोक दुखद अहारहै । अशुचिउछिष्ट गतरस कांचो औअसद्य तामसअ-

हारसो अनाढ्यो अनाचारहै ॥ अपरं ॥ यज्ञहैं त्रिविधतामें सात्व-
क्किकी सुनो रीति फलमें अईहा ताको प्रथमविधानहै। वेदउक्त
ईश्वरकी आज्ञा जानि करतव्य विधिवत की खोजी यज्ञसात्व-
कि महानहै। फलचाहि दम्भयुत नामकाम हेत जौन कस्यो
जातयज्ञ तौन राजस अमानहै। मंत्रहीन विधिहीन श्रद्धा द-
क्षिणा विहीन अन्न दान हीनयज्ञ तामस मलानहै ॥ अपरं ॥
कायिक औ वाचिक औमानस त्रिविधतापपूजन सुमनगुरुप्रा-
ज्ञ द्विजगनको। तीरथ परयटनस्नान ब्रह्मचर्य्य मृदुता औ
शुचिता अहिंसा तपकायिक सुजनको। अनुद्वेगकर सत्यप्रिय
हित बोलिबो औपुण्य पाठवाकतप मोदकश्रवनको। शुचिमन
परहित हेतिबो औ भावशुद्धि मौन आत्मनिग्रह अरागतपमन
को ॥ अपरं ॥ श्रद्धासों तपित तप होतहै त्रिविध सुनोफलआ-
शा त्यागि कियो सात्वकि परमहै। सतकार मानपूज्य हूवे हेत
दम्भयुत कस्यो जात तप तौन राजस करमहै। कार्य सिद्धिदे-
ह नाशावधि हठि कीबो और साधिबो मशानजामें जाहिर भ-
रमहै। परनाश हेत हेति करै उग्रतपतौन तामसतपस्या ताको
तीक्षण मरमहै ॥ अपरं ॥ देशकाल देखिदीबो अन उपकारीवर
पात्रनको जानि तौन सात्वकि सुदान है। प्राति उपकार हेतदी-
बो दीबो फलचाहि क्लेशित कै दीबो तौन राजसविधानहै। दी-
बो जो अपात्रको अदेशकालमधिक असतकार दान तौन ता
मस मलानहै। ताते यह बूझि कीबो सात्वकि को साधन सो
मतिमान जनताका सरससयानहै ॥ दोहा ॥ ॐतत्सत् ये त्रि-
बिध हैं शुभद ब्रह्मकेनाम। प्रथमतिन्हैं उच्चार विधि करैं वेद
मखआम ॥ तातेॐ तत्सतइति उचारि वेदविददक्ष। तपमख
दानादिक क्रियाकरै सुविधिवतस्वक्ष ॥ तपमखदानादिकक्रिय-
हि शुचि मतितत इतिमानि। करत मुमुक्षु फलार्थविनुवेद उक्त
अनुमानि ॥ साधुभाव सतभावमें अरु सुकर्म में पार्थ। सतश-

देहि योजितकरत वकताशुद्ध यथार्थ ॥ दानयज्ञ तपमें सुरति
सोंसतहै मतिमान। असतअश्रद्धासोंकरत जौनयज्ञतपदान ॥
इतिभीष्मपर्बणिश्रीकृष्णार्जुनसंबादेश्रद्धाबिबेकयोगवर्णनोएकबिंशोध्याय :

अरजुनउवाच ॥ दोहा ॥ नाथतत्त्व संन्यासको अरुसुत्यागकोतत्व ।
पृथक् पृथक् चाहतसुन्यो कहौ सहितभिनत्व ॥ श्रीभगवानुवाच ॥
काम्यकर्म को न्यासतेहि कहत सुकबि संन्यास । सर्ब कर्मफल
त्यागको कहत त्यागबुधिरास ॥ त्याजकर्म जेदोषवत कहतएक
मतिमान । कहत अपर मख दान तप कर्मन त्याज बिधान ॥
तामेंमम निश्चय सुनो त्यागत्रिबिध हेआर्य्य । सात्विकि राज-
स तामस सुकारण अनुगतकार्य्य ॥ यज्ञदान तपकर्म ये हैं न
त्याज्य है कृत्य । चित्तशुद्ध करियेसकल पावनकरता नित्य ॥
तजि ममत्व अरु त्यागिके सर्बफलाशा स्वार्थ । शुद्धकर्म कर-
तव्यनिति यहमम निश्चयपार्थ ॥ शतधा कृत्यसुकर्मको त्याग
न उचित अराग । करत मोहसों त्यागजो सो है तामस त्याग॥
दुख स्वरूप गुणि कर्मजो तजत क्लेशभय मानि। सो है राजस
त्यागनाहिं तौनत्याग फलदानि॥ वेदउक्त करतब्य गुणि करत
कर्म सबिधान । करतफलाशा त्यागसो सात्विकि त्यागमहान॥
कबित्त ॥ कर्मजे दुखद तिन्हैं निन्दत हैं जेन औ न सुखद करम
जानि इष्टकरि लेत हैं । सत्वसमाबिष्टते प्रविष्ट तत्त्व ज्ञापनमें
उतकृष्ट मतिह्वै फलाशा त्यागिदेतहैं ॥ देहवान त्यागिन स-
कत हैं अशेषकर्म ताते कर्मफल त्यागी त्यागी ते सहेतहैं। इष्ट
औ अनिष्ट मिश्र तीन कर्मफल तेवै त्यागी कौन लभ्य है
अत्यागी के निकेत हैं ॥ अपरं ॥ सिगरे करम ताके सिद्धि हेत
सुनो पार्थ सांख्य शास्त्रबिषे पांचकारण बिख्यात हैं । देह जो
अधार अरुकर्त्ता ममत्व बुधि करण जे इन्द्रिमन आदिक बि-
भात हैं । चलनादि चेष्टाअरुदैव जौन प्रारब्ध तीनौं बिधिकर्म
इनहींसों कीन्हेंजात हैं । तामधि अकेले आतमा को मानैं कर

नाते दुर्मतिअज्ञात हैं न पटुअवदातहैं ॥ दोहा ॥ नहिंहम करता जाहि हैं अतिशय दृढ़यहभाव। सोयहिलोकहि हतेहुनाहिं होत बृद्ध तजिचाव॥ ज्ञानज्ञेयज्ञातात्रिविध कर्म कथनमधिस्यात। करण कर्म करता त्रिविध कर्म ग्रहण मधितात॥ कवित्त ॥ ज्ञान कर्म करता येत्रिविध गुणभेद सो है सांख्यमें कथितहैसो जानै ज्ञानी मुनिये। भिन्न भिन्न भये सर्बभूतमें अभिन्नभाव मानिबो जोज्ञान तौन शुद्ध सातौ गुनिये। न्यारेन्यारे देखिन्यारे न्यारे भाव मानिबो जो न्यायमत ज्ञानहि गुणैरजो गुनिये। देहैं सर्बमयआत्मा कै जानिबोसो ज्ञानै तामस प्रधान बोधकोसो मतौ सुनिये॥ अथत्रिविधकर्म ॥ रागद्वेषफल चाहत्यागि करतव्यगुणि कृतजौन कर्मतौन सात्विक बिहारहै। फलहेत दंभसो प्रयास करि कियोकर्म जौनतौन राजसको असद्अचारहै। परपीड़ा हिंसा और अयुक्त द्रब्य व्ययवान मोह सों कियो सो कर्म तामस असारहै। सोई सावधान तत्त्वबिद जे बिचारि करिसात्विक करम मुक्तिपदजो उदारहै॥ अथ त्रिविधकरता लक्षणम् ॥ धीर उतसाह युत अहंकार रागबिनु सिद्धऔ असिद्ध समसात्विक ते करता। रागी सफलाशा लुब्ध हिंसात्मक औ अशुचि हर्ष शोकवान कर्त्ता राजसअचरता। आलसी अयोग्य शठ दीर्घसूत्री औ अनम्र अविवेकी कर्त्ता तामसी जे अनादरता। सात्विक फलाशा त्यागि पावत अचलते जे दोयतिन सों न छूटै छाव क्षरता॥ छप्पै ॥ गुण प्रभावसों बुद्धि त्रिविध है सुनिये सुधि सों। बन्ध मोक्षयुत हेतु गुणति हैं सात्विकबुधि सों॥ कृत्यअकृत्य अधर्म धर्म अयथा विधि जानत। सोहैं राजसबुद्धि सदा असतै बिधि हानत॥ धर्महि अधरम गुणति धर्म अधर्माहिं गुणि चरति। सर्ब अर्थ बिपरीत इमि गुणि तामस बुधिअघभरति॥ कवित्त ॥ त्रिविधहोतिधृति जौनि प्राणइन्द्रीमन गनकी। गतिजोजासों रुकैतौनि सात्विक धृतिजनकी ॥ अर्थ

धर्म अरुकाम हेतुकीबांछाभावनि। तेहिगहिजो थिररहतितौनि राजसिधृतिबावनि॥ जोशोकस्वप्नभयमोहमद अरुविषादगहि नहिंतजति। तौनितामसी धृतिअहितनितिअघगतिकीमतिसजति॥ अपर॥ त्रिविध होतसुख सुनोजौन सुखप्रथम जहरसम। अन्तअमीसम होत तौन सुख सात्विकअनुपम॥ इन्द्रीबिषय सँयोग आदि अमृतसमजोसुख। बिषसमलहि परिणाम तौन राजसदायक दुख॥ अरु आदिहु अन्तहु विषसदृश आत्मा को मोहन असत। जौन प्रमादज तौनसुख तामसतासों सब नशत॥ दोहा॥ पृथिवी दिव देवन बिषे ऐसो कछूनपार्थ। प्रकृतिज गुण सो हीनजो जानहु इतो यथार्थ॥ महिखरी॥ भोविप्र क्षत्री बैश्यशूद्र स्वधर्म अनुगतगुणमये। सोधर्म गुणअनुसार तिनके कहत जे त्यागित नये॥ शमशान्ति दम बिज्ञान शुचिताकाजजे सतपरमहैं। आस्तिक्य मृदुता ज्ञानतेसबबिप्रके शुभकरमहैं॥ धृतितेज आयुधमें कुशलताशूरता सानँदगहैं। अरुदान ईश्वरता स्वभावज क्षत्रिके येकरमहैं॥ बाणिज्य गोपालन कृषीये बैश्यके निति धर्म हैं। ये तीन तिनकी करबसेवा शूद्रको कृत मर्महैं॥ नाहिं निज करमरत रहत जेते लहतसिधि यह ध्रुवगुनो। निजकर्म करिकै ईश्वरहि नितअरचि सिधिपावत सुनो॥ निजधर्म बिगतो अंगपरकेसांगसोंहैश्रेष्ठहे। नहिं होत किल्विष कबहुंकीन्हे नियतधर्मयथेष्ठहे॥ निजधर्मस्वाभाविक न त्याज्य सदोष तदपि महानहैं। आरंभ सिगरे दोष युत नितिधूम अग्नि समानहैं॥ नाहिं होत कितहूं शक्त निस्पृह रहत सबथर सबिधि जो। फल त्यागते सो लहतअतिबर निवृति पथकी सिद्धिजो॥ दोहा॥ सिद्धि मिले जिमि मिलतहैब्रह्म सुनो मतिमान। कहत सबिधिसो ज्ञानकी निष्ठापरअमलान॥ त्यागे शब्दादिक बिषय तजे द्वेष अरुराग। आत्महि निश्चय धैर्यसों करे द्वन्दको त्याग॥ शुचि सुबुद्धि सों युक्त अरुध्यान

योग परदक्ष । निर्जनवल सेवीकरें कायवाक मनस्वक्ष ॥ वैरागी लघु भोजनी निर्मम निरहंकार । काम क्रोध तजिशान्तते पावत ब्रह्मउदार ॥ ब्रह्मज्ञानी मोदमें कांक्षा शोच विहाय । सब में सममति लहतहैं मम सुभक्ति सुखदाय ॥ जानत सोममभक्ति सो ममस्वरूपको भेद । जानि भेद सो मम विषे प्रविशत तजि निर्वेद ॥ मम जपको आश्रय गहे करै जऊ सब कर्म । मम प्रसादसों लहतसो जो शाश्वत पदपर्म ॥ लहि विवेक बुधि अरपिमोहिं कर्मनित्यनैमित्य । ममशरणागत होतपटुबुद्धि योग आश्रित्य ॥ ममप्रसादसों दूर्गसब तरतममाश्रितजौन । अहंकारसों नाहिं सुनत यह मत बिनशत तौन ॥ ज्ञानगर्व सों जो कहौ लरब न तौ सुनिलेहु । सोमिथ्याह्वै प्रकृति वश लरिहौ हैं ध्रुव येहु ॥ कर्मज सगुण स्वभावसों परवश परे समान । मोह त्यागि लरिहौ सुनत कटुपर बचनअमान ॥ ईश्वर निति सब भूतगणको हृदयस्थ यथार्थ । गुणीदारुदारा सदृशसबहि भ्रमावतपार्थ ॥ होहु तासु शरणागतै शुभबिधिसों मतिमान । ताके शुभद प्रसादसों लहिहौ पर सुस्थान ॥ पारथ हम तुमसों कह्यो परमगुह्ययहज्ञान । तेहिबिचारि सोईकरौ इछौ जो मतिमान ॥ परमबचनममसुनहुफिरिसर्वगुह्यतमजौन । हौअतिदृढ़ ममइष्टतुम तातेकहियततौन ॥ मदाकार मनभक्तमम ममहित करताकर्म । ममसुप्रणामीलहत मोहिंहैप्रिययहदृढ़मर्म ॥ कबित्त ॥ ममसुप्रणामी मदाकारमन ममभक्तहोहु हेतिहोहुमम हेतकरता सुकर्म । मोहिंप्राप्तह्वैहौ प्रिय जानिकै कहत सत्यकरिकै प्रतिज्ञा यह निज भेदको सुमर्म ॥ और एककहत सुनोसो मनदैके गहौएक मेरो ईश्वर न त्यागिकैसकलधर्म । सिगरे जे पाप ताते तुम्हैं मोचिहौं मैं तात शोच मतिआनोसांचमानो मो वचनपर्म ॥ दोहा ॥ जे न शुश्रूषा कराहिं जे अतप अभक्तमलान । ममद्वेषी तिनसों कबहुं हैन बाच्ययहज्ञान ॥ करियोजित मम

भक्ति में परमगुह्य यह जौन । परमभक्ति मम बिषे कहि प्राप्त होतमोहिंतौन ॥ मम प्रियकृत तिनके सदृश है नभूमिपैआन । कहत सांच नहिं अन्यथा सुनोपार्थ मतिमान ॥ सुनहिं पढ़हिं पढ़ि गुणहिं जे यह मम तुव सम्बाद । क्रमसे सो उतकृष्ट पद लहहिं सहित अहलाद ॥ ह्वै यकाग्रचित सुनेहु सो जो हम कही यथार्थ । सुने मोह अज्ञान तुव मिट्यो कहौ हे पार्थ ॥ अर्जुनउवाच ॥ नश्यो मोह प्रगटीसुस्मृति तुव प्रसादसों ईश । गत सन्देह निदेश तुव करिहौंबिस्वेबीश ॥ संजयउवाच ॥ परमगुह्य हरि पार्थको यह अद्भुत सम्बाद । ज्ञानयोग प्रद हम सुने लहिकै व्यास प्रसाद ॥ सुमिरि सुमिरि सम्बादसों अनुक्षण प्रगटत हर्ष । नृपति सुमिरिसो रूपभो बिस्मय मुद उतकर्ष ॥ जहँ योगेश्वर कृष्णप्रभु पार्थ धनुर्द्धर यत्र । श्रीमति नीति बिभूति जय ममम‍त है ध्रुवतत्र ॥

इतिश्रीकृष्णार्जुनसंबादेसंन्यासादितत्त्वनिर्णययोगबर्णनोष्टादशोऽध्यायः

संजयउवाच ॥ दोहा ॥ मोह त्यागि यह तत्त्वसुनि गुणि करतब्य स्वधर्म । रणहित भे सन्नद्धगहि शरधनु पार्थ अभर्म ॥ शरधनु धारे पारथहि निरखि महारथ सर्ब । बीर बचन कहि कहि उमहिं गरजे गहि गहि गर्ब ॥ चौपाई ॥ पाण्डव आदिक सबभट रूरे । शंखबजावत भे मुदपूरे ॥ भेरी आदि बजे बहु बाजे । धीर धुरीण बीरबर गाजे ॥ सुर गंधर्ब पितर गण मोदत । ऋषिगण सुरपति संग बिनोदत ॥ युद्धलखन हित हुलसे मनमें । नभपै थिरे आइ तेहि क्षनमें ॥ तात्क्षण धर्मराज बिधि ज्ञाता । तजि शर धनुष कवच तनत्राता ॥ रथते उतरि अकेले सादे । शत्रुसेन मुखचले पयादे ॥ यहिबिधि भूपहि जात निरेखी । पारथ हिय संशयसों भेखी ॥ रथते उतरि पयादे धाये । भाइन सहित भूपपै आये ॥ गेतहँ बासुदेव सब जानत । नृपगण गये आचरज मानत ॥ नृप सों कहे धनञ्जय ऐसो । अब तुम करत

काज यहकैसो ॥ इबिधि जुरे दल तजि उतसाहू । का गुणि शत्रुसेन मधि जाहू ॥ भीमसेन आदिक सबभाई । यहिविधि कहत भये समुझाई ॥ चलेजात नृप सुनियह बानी । दिये न कछु उत्तर अनुमानी ॥ कहो कृष्ण हँसि हमसों जानी । जो नृप धर्म्म नीति उरआनी ॥ बन्दि गुरुनकहँ कारज करई । सो जय लहै न टारे टरई ॥ सर्बशास्त्रबिद नृप नयगामी । जात गुरुन पै जययश कामी ॥ दोहा ॥ नृपति धर्मकहँ भीष्मपै यहि बिधि आवत देखि । दुर्योधनके सुभट सब कहत भये अवरेखि ॥ लखौ युधिष्ठिर भूप डरि मेलकरन के हेत । जात भीष्मढिग लाज तजि कुलहि कालिमा देत ॥ चौपाई ॥ लरे विना सेना लखि हारो । ऐसो कहूं न निलज डरारो ॥ जाके ऐसो पक्ष सुभाई । सो कस शत्रुन देखि डराई ॥ अल्प पराक्रम अति भयसाने । नृपतियुधिष्ठिर नितिके जाने ॥ इबिधिपरस्पर कहि सुनि सिगरे । हरषित भये भूप मति बिगरे ॥ हँसिबोले अब सुनो चुपाई । का ये कहत भीष्मसों जाई ॥ भो संशय दुहुँ दलमधि राजा । जात भीष्मपै नृप केहिकाजा ॥ जाइ भीष्मपै नृप मुद राचे । बन्दिचरण करजोरि उबाचे ॥ तात न करत बनत सम्भाषन । चाहत युद्धअर्थ अनुशासन ॥ देहुकृपाकरि आशिष आला । जासों मिलै बिजयकीमाला ॥ कहोभीष्म सुत मोढिग आयहु । वर अनरथकर मूल नशायहु ॥ नातरु लखि अनुचित कृत पापा । देइत दुसह अजयकर शापा ॥ अब प्रसन्न हम सुत मुदपागौ । तजि संशय बांछित वर मांगौ ॥ दास अर्थ के पूरुष सबहू । अर्थ न दास पुरुषके कबहू ॥ ताते दुर्योधन बिधि साधे । है मोहिं अर्थ सुगुणसों बांधे ॥ निज दिशिहवै लरिबेसों आना । मांगौ निज हितकर बरदाना ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ कहेयुधिष्ठिर इतहीं रहहू । ममहित होइ मंत्रसो कहहू ॥ दोहा ॥ कहे भीष्म तुव अर्थको साधन कहो न जाय । कौरव की दिशि त्यागि

छल लरब धर्म मम न्याय ॥ मोसों लरि जय जोलहै ऐसोको महिपाहिं । नरपति नरकी को कहै सुरनायकऊ नाहिं ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ योहींसों करजोरि मैं मांगों कृपानिकेत । कहि औरन मैं आपुसों जय लहिबेके हेत ॥ भीष्मउवाच ॥ सोरठा ॥ सुनोपार्थ अव-रेखि निजदलमें अबजाहु फिरि । मृत्यु कालमम देखि आयहु फिरिममपास तुम ॥ जयकरी ॥ तबह्वै बिदा भीष्मसों भूप । गये द्रोणपै आनँदरूप ॥ करि परदक्षिण करि परणाम । जोरिपाणि करि बिनय सकाम ॥ कहोरहो भीषम सों जौन । कहो द्रोण सों तेहिबिधि तौन ॥ सोई कहो द्रोण मतिमान । प्रथम कहो जो भीष्म सुजान ॥ सोकहि कहो द्रोण सज्ञात । हम प्रसन्न मांगो बर तात ॥ कहे भूप हम पावैंजीति । सो बिधान साधैंकरि प्रीति॥ कहे द्रोणहै ममध्रुवधर्म । कौरवके हित लरिबो पर्म ॥ लरि हम सों जयपावै जौन । ऐसोतीनिलोकमें कौन ॥ तुव ईछितके बि-धिकीबात । लखि निदानकछु कहो न जात ॥ कहेभूप तुवबिक्रम जानि । हम इमि कहे जोरियुगपानि॥ तुम ज्ञाताकाकहौं बुझा-य । निज बधकीबिधि देहु बताय ॥ कहोद्रोण नहिं असकोउ बीर । मोहिं हते जो धनुधर धीर ॥ जब हम मरण आपमों ठानि । होहिं अचेत अचलकरि पानि ॥ शस्त्र बिहीन निरखि तब आय । बधै बधैसो लाजभुलाय ॥ अतिसाति बकतासों सबिधान । सुनि दृढ़ अप्रिय बचन अमान ॥ त्यागैंगे हम बर धनु बान । सुनोभूप यहसत्य महान ॥ दोहा ॥ द्रोणाचारयके बचन सुनि नृपभरेहुलास । करिप्रणाम ह्वैबिदागे कृपाचार्यके पास ॥ सबिधिबन्दिपगकहतभे कहेभीष्मतेजौन । सुनिअचार्य सोईकहो कहोभीष्महैतौन ॥ सोकहिकृप नृपसोंकहे निजदिशि थितिसोंआन । चाहौसोमांगौनृपतिधर्मशीलमतिमान ॥ सोरठा॥ मम जयहेतु अचार्यनिज बधकी बिधिदेहुकहि । यह कहिबो गुणिआर्य कहि न सके मोहित भये ॥ नृपके चितकीचाह गुणि

गौतमनृपसों कहे। हम अवध्य नरनाह ममबधको न उपाय कछु॥ युद्ध व्यवस्था देखि हम रणतजि जैहैं अनत। तुम जय लहौ बिशेखि सत्यकहत संशयतजो॥ रोला॥ कृपायुत कृप के बचन सुनि नृपतिपूरि अनन्द। जायमातुल शल्यपै करिउचित कृत्य अमन्द॥ कहौ है जो भीष्मसों सो कहो सो सुनिशल्य। कहे भीषम प्रथम जो हो कहे बचन अशल्य॥ भूप कौरव त-रफ ह्वै हम लरब अब ममधर्म। याहि तजिजो और चाहो कहो तौन सुकर्म॥ कहे पांडव सूत सुतको तेजनाश सनेम। युद्धमें तुम कीजियो मम सुजय हेत सप्रेम॥ माद्रपतितबकहे करिहैं अवशि हमयहकाज। जाय अब निज सैनमें तुम करो युद्ध समाज॥ सहित बन्धुन निजसैन प्रति गये नृपअभिराम। सूतसुतके पासगे तब कृष्णआनँदधाम॥ जायतासों कहो प्रभु हम सुने यह हमकर्ण। भीष्मसों करि द्वेषत्यागो युद्धकरि दृढ़ पर्ण॥ लरैं जौलों भीष्म तौलों चलौ उनकी ओर। आइयो फिरि इतै जूझे भीष्मके लहि भोर॥ कहो करण कहौ कहातुम कृष्ण कैसे बैन। भूमिपति को अप्रिय करिबो उचित हमको हैन॥ बचन यहसुनि गये केशव जहां पांडुनरेश। हैं युधिष्ठिर खरे निजदल सींवपै शुभभेश॥ धर्मनृप तहँ पुलतु स्वरसों क-हो बांह उठाय। करैआय सहाय ममजो गुणे धर्म सुन्याय॥ बचनयह सुनि रहे चुपह्वै सुभटसिगरे धीर। कहो टेरियुयुत्स हमहैं तुव सहायकबीर॥ भाषि इमिसो भेरिदुन्दुभि कौरवीदल त्यागि। आय पांडव भूपसों भो मिलत अति अनुरागि॥ राज पुत्र युयुत्सको नृपकरि उचित सतकार। कवचभूषण शस्त्रधारे चाहि युद्ध बिहार॥ आदिनृपते सर्व निजनिज बाहननपैजाय। ब्यूहढिगकरि पूर्ववत भे लसत सुखमाछाय॥ बजे बाजे दुहूं दिशिगो शब्द दशादिशिपूरि। लगे हींसन तुरगगाजन लगे मैगल भरि॥ धृतराष्ट्रउबाच॥ दोहा॥ संशय यहिविधि दर्पयुत जुटे

उभयदल तत्र। चल्योशस्त्र कितसोंप्रथम कहौतौन अबअत्र॥ संजयउवाच॥ दुर्योधनके बचनसुनि दुःशासन बरबीर। भीष्महि आगे करि बढ़े सह सेना रणधीर॥ भीमहिं आगे करि प्रबल पांडव सब सहसैन। इच्छियुद्धबर भीष्मसों सन्मुखचले सचैन॥ चौपाई॥ हयहींसनि गज गर्जनिभारी। रथ घण्टनकीधुनि बिकरारी॥ अगणितबाद्य भेद श्रुतिमर्दन। अरुभट गण को भूरिनिनर्दन॥ भो अति दुसह शब्द तेहि क्षनमें। पूरि रह्यो गुणवान गगनमें॥ ह्वै सरोषतब भीम भयंकर। गरजत भो अरिदल प्रलयंकर॥ सो गर्जनिसबधुनिसों बर्द्धित। कै कीन्हों पर भट हिय मर्दित॥ भीमहि गरजित आवत देखी। तुवसुत सिगरे अतिशयतेखी॥ सत्वरशर धनुयोजित कीन्हे। भीमहिं शर छादित करिदीन्हे॥ जिमि निहार मधिसूर बिराजत। तिमिकरिभीमहिं भे सबगाजत॥ तबसपुत्र पांडव बलभारे। शर बरतुव पुत्रनपै मारे॥ बीरअभीर धीरभरिरिससों। मारनलगे बाण दुहुँ दिशिसों॥ चल कोदण्ड न युतते कोहे। बिजुलिन सहित घननिसमसोहे॥ शरसों बन्धु समागमसाजा। कछुक्षण देखिरहे सबराजा॥ चढ़चाव फिरिभिरि बलबाढ़े। लगे लरन रण कर्कश गाढ़े॥ अतिशय तुमुल युद्ध भोमण्डित। हांकिहांकि भटभिरे प्रचण्डित॥ धूरधारमें तरणिछपाने। काहूनिजपर नहिं अनुमाने॥ को आयोको गो केहिमारो। इतोन काहूतहां निहारो॥ दोहा॥ शोणित सों पूरित धरणि बिरजभई हे भूप। ऊरध रज छाई घनी सुखमासनी अनूप॥ चारु अमल पावक बिषद अध बिपतरित बिभात। रहै धूम ऊपर घुमड़ि यथाभये निरबात॥ तब भीषम तकि पारथहि निजरथ शीघ्र चलाय। हांकिबाण मारतभये अति उदण्ड दृढ़धाय॥ चौपाई॥ पार्थबाण भीषमपै मारे। कोपिभीष्म पारथहिप्रहारे॥ प्रबल बीर दोऊ धनुधारी। दोऊरण कर्कश रणचारी॥ दोऊ दोउनकोबधइच्छे।

आगेबढ़ैं हटैं नहिंपीछे ॥ कठिनयुद्ध नृपतिनसों माच्यो । रण महिमें भीषमतारराच्यो ॥ सात्वकि कृतबरमासों भिरिकै। उद्ध युद्धकीन्हें तहँ थिरिकै ॥ रथचलाय अभिमन्युप्रवीरा । भिरो वृहद्वलसों रणधीरा ॥ भीमसेन भट भरिरिस अतिसों । भिरो हांकिनृप कौरव पतिसों ॥ भरोगर्व दुःशासन पुलको । देत भयो भिरि जो रणकुलको ॥ तो सुतजो दुर्मुख भटभारी । तासों सहदेव भिरे प्रचारी ॥ भिरे शल्यसों पांडवनायक। नृपतिधर्म जयलहिबे लायक॥ धृष्टद्युम्न वृत्तान्तबिचारी। चाहि द्रोणसों भिरो प्रचारी॥ भूरिश्रवा भूपसहसाजा। भिरोशंख नृपसोंजयकाजा ॥ जो बाह्लीक भूपवरतासों । अभिरे धृष्टकेतु भरि भासों ॥ राक्षसबीर अलम्बु सुक्रोधा । तासों भिरो घटोत्कच योधा ॥ भिरे शिखण्डी अश्वत्थामा । कठिन युद्धकरता जय कामा ॥ भिरि भगदत्त बिराटमहीपति। लरे चाहि कीरतिअतिदीपति ॥ दोहा ॥ वृहतक्षत्र भिरि करतभो कृपाचार्यसोंयुद्ध। तजेशस्त्र प्रति शस्त्रते बध बिचारि अतिक्रुद्ध ॥ द्रुपद जयद्रथ भिरिभये विरचित युद्ध अमान । तजिअन्योन्य अनन्त शर किये कठिन घमसान ॥ लरे जूटिसुत सोम अरु तुवसुत वीर बिकर्ण। हनत परस्पर बाणबर चाहि चाहि परमर्ण ॥ चौपाई ॥ चेकितानअरुसुभट सुशरमा। भिरि भे करत युद्धभरि परमा॥ भिरे शकुनि प्रति विन्ध्यअधर्षन । बारिद बाणवृंदके बर्षन ॥ भिरे सुदाक्षिण अरु सुतबरमा। तजै बाण तन तरु कै बरमा ॥ इरावाण अर्जुनसुत सोई । लर्यो श्रुतायुषसों रिसभोई ॥ नृपति बिन्द अनुविन्दसुधीरा । सुतसह कुंतिभोज रणधीरा ॥ भिरिभे करत युद्ध अतिभारी । परबध निज निज सुजय विचारी ॥ पांचभाय नृपकेकय थरके। पांचभूपगान्धार बगरके॥ ते सबगभिरि आनँद लीन्हे। कठिन कराल युद्धअति कीन्हे ॥ तोसुत बीरबाहु धनुधारी। लरो उत्तरा सों रणचारी ॥ अर्जुन

सुत अतिशय रण कर्कस । चेदिराटसों भिरो अधर्कस ॥ यहि बिधि द्वन्दसहस्रानि जूटे । रथगजहयसादी जय ऊटे ॥ भिरे पदाती भट अनगिनते । शस्त्रअसंख्य चले तहँ तिनते ॥ ध्वज धनु कवचपरस्पर काटें । हनेबाणसहि हनि हनि डाटें ॥ रहे पूरिशर इतहूं उतहूं । रह्यो न रथ बाकी कहुं कितहूं ॥ बढ़ि बढ़िबीर गर्वगहि गाढ़ो । हनै बाणकहि अब रहु ठाढ़ो ॥ प्रबल प्रकर्ष पराक्रम सगरे । पृथक् पृथक् कहिजातनानिगरे ॥ दोहा ॥ मच्यो युद्ध तहँ अति तुमुलकहत होत निरवेद । भूपति रह्यो मुहूर्तभरि प्रगटद्वन्दको भेद ॥ तदनन्तर उनमत्तह्वै रह्योनकछू बिबेक । युगसमुद्रसम उमड़ि मिलिलागे लरन सटेक ॥ महाराज तेहि क्षण कटे हयगज पुरुष अनेक । घनेघाय घालैं सुभटजुरैंमुरैं नाहिं नेक ॥ कटि शरसों अभिमन्युके होतहि ध्वजा पपात । भीम मुदित ह्वै करत भे भीमनाद हे तात ॥ लखिप्रपितामह भीष्मतब ह्वै सरोष अनखाय । छाय देतभे कुंवर पै बाण असंख्य चलाय ॥ चौपाई ॥ यहलखि महारथी दशधाये । अभिमन्युहि रक्षण हित आये ॥ भीमबिराट द्रुपद धनुधारी । श्वेत उत्तरा अरिमदगारी ॥ पांचभायकेकय पतिराजा । आये ये दश सहित समाजा ॥ तिन्हैं देखि भीषम रिसिधारे । तीन बाणबरद्रुपदहि मारे ॥ एक एक शर सब कहँदीन्हें । तब क्षुरप्रशरकरमें लीन्हें ॥ ध्वजा भीमकी काटी तासों । पुरुषसिंह भरि क्रोध महासों ॥ तीनि बाणभीषम के तनमें । हनेभीमगर्वित ह्वै मनमें ॥ एक बाण कृप के तनमारे । कृतबरमा पै बसुशर डारे ॥ उत्तर कुंवर गजस्थ सक्रोधा । चल्यो शल्यपै लखिबर योधा ॥ अति जवसों गज रथ पै आवत । देखि शल्य शरभये चलावत ॥ लगे बाण गज अति रिस धारी । हतेसिचारि हय नृप रथचारी ॥ तब नृप शल्य क्रोध अति कीन्हें । शक्ति अमोघ पाणि मेंलीन्हें ॥ तजी ताहि उत्तर पै पविसी । नृपसुतके

तन मधिमों प्रविसी ॥ नृपसुत मुरछि गिरोमहिपाहीं। रह्यो न जीव क्षणौतन माहीं ॥ तब गहि गङ्गगजहि नृपडाटे। रथतेतुरित कूदिकर काटे ॥ दोहा ॥ कटेपाणिगज गिरतभो करि धुनि मेघसमान। घरी न तनमधि थिरतभो गोपायन करि प्रान ॥ ऐसो अद्भुत कर्म करि शल्य भूप हरषाय। कृतवरमाके सुरथ पै भयो बिराजत जाय ॥ बन्धु मरणलखि श्वेत तब अतिसक्रोध ह्वैडाटि। शल्यआदि भटसातके तुरित दयेधनुकाटि ॥ सोरठा ॥ तब तेते धनु डारि और और धनु गहतभे। श्वेतक्रोध बिस्तारिकाटि दये तेऊ तुरित ॥ सबते गहिगहि शक्ति तजे श्वेत पै मरण हित। श्वेत शक्तिकी पंक्ति शरसों काटीबीचही ॥ तोमर ॥ तब श्वेत अतिशय क्रोधि। ध्रुवमरण परकोशोधि ॥ नृपरुक्म रथके काय। शर हने अति दृढ़घाय ॥ शरलगे नृपमुरझाय। गिरिपरो चेत गँवाय ॥ लखि नृपहि मुरछित सूत। रथ दूरि लागो धूत ॥ तब श्वेत करि अति गौर। जेरहैं षटभट और ॥ हय सूत धनुध्वजतासु। शरमारि काटे आसु ॥ फिरि शल्य पै करिकोप। भो चलत गहि बध चोप ॥ तब भयो हाहाकार। तो सैन मध्य अपार ॥ दोहा ॥ शल्य भूप पै रिस भरो श्वेतहि आवत देखि। भयो मरण निजु शल्यको यह तोसुत अवरेखि ॥ तब आगेकरि भीष्म कहँशल्यहि पीछे डारि। लरत भये सब शल्यकहँ यमके मुखते वारि ॥ सोरठा ॥ नृप ताक्षण तेहि खर्व भयो युद्ध अतिशयतुमुल। तोसुतसर्व सगर्व पाण्डव सर्वसवर्ग सों ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ यहि विधि जूटि अधर्मीकिये युद्ध जिमि दे सकल। सोसबयुद्ध सुकर्म पृथक्पृथक् संजयकहो ॥ संजयउवाच ॥ चौपाई ॥ शत सहस्रक्षत्री भयत्यागे। सेनापति श्वेतहि करिआगे ॥ भरे बीररस आनँद पागे। तौसुतको बल देखनलागे ॥ भिरे हांकि दुहुँदिशि के योधा। करि मारुत की गति अवरोधा ॥ भीष्म श्वेत भिरि गौरव कीन्हें। अगणित रथ भटबिनु करि

दीन्हें ॥ शिर असंख्य शत्रुनके काटे । रण मण्डल रुण्डन सों पाटे ॥ अगणित गजहय रथ बिनुभटके । ब्याकुल फिरैं चहूं दिशि भटके ॥ लगेबाण कितने भट गिरहीं । उठैं सँभारि हांकि फिरि भिरहीं ॥ लगेबाण भट गिरैं गजनते । जिमि कपिके गण गिरे कुजनते ॥ बिनाशीश के बहुभट बांके । इत उत फिरैं बीर रसछाके ॥ बाहुकटे भट कितने डोलैं । हटैं न नेकु सामुहेबोलैं ॥ गजते गिरत सांकरनि अटके । इत उत फिरैं बीरबहु लटके ॥ कटैंबाजि गज रथ भट केते । महिपै खरे लरे जयहेते ॥ रहे न बिनुक्षतके भट एकौ । बच्योन शोणित सों थरनेकौ ॥ कितेबाण धनु ध्वज दुहुंदलके । कटेकटे गज हयके हलके ॥ महाराज सुनिये दुहुं दलमें । सुभट असंख्य कटे तेहि पलमें ॥ अद्भुत युद्ध भयो तहँ राजा । कहैं कहांलों सकल समाजा ॥ दोहा ॥ इत भीषम उत श्वेत ये दोऊ प्रबल अमान । उभय सैन मधिसेशरन रोपे प्रलय महान ॥ बीरश्वेतके शरन सों ह्वै ब्याकुल भयपाय । हमहिं आदि कितने रहे शरके बाहरजाय ॥ तिनके जीवन दानिभे भीषम अचल उतंग । उतके ऐसे भटनको श्वेतशैल अविभंग ॥ गुरुतोमर ॥ बर धनुषके सन्धानसों । नभ छायदीन्हों बानसों ॥ रबिपरे देखि न देरलों । घिरि मघाके घनघेरलों ॥ अति शब्दमाढ़ि धनु बानके । पथ पूरिदीन्हे कानके ॥ तहँटेरबो रण ठानको । नहिं परो सुनि निज आनको ॥ दोहा ॥ पाण्डव के हित श्वेत अरु कौरव के हितभीष्म । किये युद्ध अतिशय तुमुल जो देखे अति भीष्म ॥ भीषम मारत तेहि दिवस पांडव की सबसैन । श्वेत जौन बारण करत महाबीर गजजौन ॥ चौपाई ॥ निज दलमर्दत श्वेतहि देखी । पिता तुम्हारभीष्म अतितेखी ॥ बाण बिशाल श्वेतपैडारे । जे तरु पाहन बेधन हारे ॥ तब भीष्महिं भटश्वेत प्रचारे । बाण अमान अनगिने मारे ॥ भीष्माहिं श्वेत श्वेत कहँ भीषम । हने असंख्य बाण बरभीषम ॥ दोऊ

बिधिवत धनुबिधि सीखे। दोऊ बर धनुधर मैलीखे ॥ दोऊ धनु बिधि सिधि के शीक्षक। दोऊ निज निज जयके ईक्षक॥ दोऊ अस्त्र अमोघ प्रहारैं। दोऊ अस्त्र अस्त्र सों वारैं॥ दोऊ बीर सिंहसम गरजैं। लगे अनेक बाणनहिं लरजैं ॥ अस्त्र अमोघ भीष्म के चीन्हें। तिनकहँ श्वेत ब्यर्थ करि दीन्हे॥ यह गुणितौ सुत नृपदुर्योधन। गर्वितआय भिरो लैयोधन॥ तब तजि भीष्महि तिनसों लरिकै। तिन्हैं पराजितकरि मुदभरिकै॥ फिरि भट श्वेत भीष्मसों भिरिकै। लाग्यो लरन पूर्ववत थिरि कै॥ वृत्रबिडौजा समते दोऊ। लरत भये नहिं हारैकोऊ॥ श्वेत सात शर अतिअनियारे। कोपि भीष्मके तनमधिमारे॥ तबतौ पिताभीष्म अतिरोखे। मारेताहि बाण दश चोखे॥ श्वेत हने तब गाहिप्रण मनमें। बाण पचीस भीष्म के तनमें॥ दोहा॥ अतिअद्भुत यहकर्मकरि बिहँसि श्वेतभट चण्ड। दश शरसों दशधा कियो भीषमको कोदण्ड॥ काटिधनुष फिरि शीघ्रगहि अन्यबाण उद्दण्ड। तालध्वज बर भीष्मको करतभयो द्वैखण्ड॥ केतुपतत लखितौ तनय करतभये अनुमान। करि निजबश अब भीषमहिं बधत श्वेत बलवान॥ शंख बजावत भेमुदित पांडवभट समुदाय। निज सुभटन सों कहत भे दुर्योधन अनखाय॥ कुरुकुल को रबि भीष्म अब होन चहत है अस्त। शिथिल पराक्रम कै भये श्वेतदाहसों ग्रस्त॥ चौपाई॥ दुर्योधन नृपकी सुनिबानी। भिरे आइ योधा अभिमानी॥ कृतबरमा बाह्लीक नरेशा। चित्रसेन अरुशल्य सुभेशा॥ जरासन्धको सुत भटभारी। अरुतौ सुतबिकर्ण धनुधारी॥ अरु शल बीरधीर बलवाना। भिरिभे हनतअनेक बिधाना॥ तिन सों भिरोश्वेत तब तैसे। भिरैवायु घन बनसों जैसे॥ क्षणमें तिन्हैं बिमुख करियोधा। बहुरि भीष्मसों भिरो सक्रोधा॥ अतिकर लाघव कीबिधि ठाटे। शरसों धनुष भीष्मको काटे॥

तब भीषम अतिरिस बिस्तारी । सोधनु त्यागि और धनुधारी ॥
बहुशर हनेश्वेतके तनमें । तब भटश्वेत कोपि अतिमनमें ॥
बाणवृष्टि भीषमपै कीन्हे । कुरुपति कहँशंकित करिदीन्हे ॥ हते
भये भीषम यहजाने । पाण्डव गर्व सर्वहरषाने ॥ सो लखिकैभी-
षम अतिरोखे । तजेश्वेतपै बहुशर चोखे ॥ भीषम जितने बाण
चलाये । शरसोंतेसबश्वेतबराये ॥ फिरिभीषमकोवरधनुसोऊ ।
काटोश्वेतलखोसबकोऊ ॥ तुरतहिभीषमसोधनुत्यागो । लैधनु
और महारिसपागो ॥ सावधानशर योजित करिकै । भयेतजत
धनु बिधि अनुसरिकै ॥ दोहा ॥ चारौंहय शरचारिसों द्वैशरसों
ध्वजतासु । एकबाण सों सारथिहि भीषम काटो आसु ॥ मरे
सूत हय तव प्रबल योधा श्वेत अधर्ष । रथते कूदिखरो भयो
महिपै भरोअमर्ष ॥ महा रथिन को श्रेष्ठतिहि भीषम बिरथ
निरेखि । तीक्षणबाणअनेकसों हनतभये अवरेखि ॥ महिखरी ॥
तब श्वेतकरिअति क्रोधनिज धनुबाण रथपै डारिकै । मणिहेम
मण्डित शक्तिबर यमदण्ड समतेहि धारिकै ॥ इमिहांकि बोल्यो
भीष्मसों अबजाहु मतिकहुँ भागिकै । बपु खिन्न तनसों भिन्न
प्राणहिं करति यह उरलागिकै ॥ यहिभांति कहिसो शक्तिमारी
भीष्मपै बलभूरिकै । लखि सुवनतौ सबकिये हाहाकार अति-
भय पूरिकै ॥ तेहिज्वलत उलका सदृश आवत देखिवेग महा-
नसों । हनिबीचही नवटूक कीन्हों भीष्मवर बसुबानसों ॥ निज
शक्ति व्यर्थनिरेखि श्वेत समर्थ भट अतिक्रोधिकै । लैगदावज्र
समान घनसम गरजि बढ़ि बिधि शोधिकै ॥ सो भीष्मपै भो
तजत तासुप्रभाव बिदते भीतिकै । रथत्यागि महिपै गयेशीघ्र
प्रभाव ताको रीतिकै ॥ सोगदा रथपै परतरथ ध्वजसूत हय
भस्मित भये । तबधाय तौसुत भूपभीष्महि और रथपर करि
लये ॥ चढ़िऔर रथपै भीष्मधनु टंकारकरि सुखमामये । चलि
मन्दमन्द अनन्दयुत बढ़िश्वेतके सम्मुख गये ॥ दोहा ॥ तीक्षण

नभवाणी भई ऐसेमें अवयाहि। करिउपाय भीषमवधै यहक्षण निर्मित चाहि ॥ तहांविरथ श्वेतहि निरखि पार्षत सात्वकिभीम। धृष्टद्युम्न अभिमन्युअरु केकय पतिभटभीम ॥ धृष्टकेतुये महारथ चलेश्वेतपैधाय। बीचहि तिनसों भिरतभे द्रोणशल्य कृपआय ॥ इमिआड़ेतेतिन्हैं जिमि वायुवेगकोशैल। महतयुद्ध भिरिकरतभे जीति तरुणिकेछैल ॥ सोरठा ॥ लखिइनकोअवरोध श्वेत खड्ग गहिगर्वयुत। अतिप्रगल्भ करिक्रोध काटिदयो धनुभीष्मको ॥ चौपाई ॥ तबभीषम अतिरिसविस्तारे। गहिधनु बाणचढ़ायसुधारे ॥ भीमादिकसुभटनकेतनमें। बहुशरहनेपकारि प्रणमनमें ॥ तबप्रचण्ड शरकरमें लीन्हों। ब्रह्ममन्त्रसों मंत्रित कीन्हों ॥ ताकोहने श्वेतपै कैसे। वज्रहिइन्द्र वृत्तपै जैसे ॥ सो शर कवच भेदहिय भेदी। गोधरणी मधिपर दलखेदी॥ अरि दल तमको शूरअमाना। श्वेतगिरो तबहवै गतप्राना ॥ सो लखि पांडव अतिशयशोचे। तोसुत सिगरे चिन्तामोचे ॥ दुश्शासन आनँद सों छाये। जङ्गमजय दुन्दुभी बजाये ॥ पांडव अति अमरष सों पागे। थिरिभिरि युद्धकरनफिरिलागे ॥ श्वेत मरणकी अति प्रियबानी। सुनि धृतराष्ट्र कहो अनुमानी ॥ जब मरि परोश्वेत रणधीरा। तबपांडव पांचाल प्रवीरा ॥ कियेकहा सो सञ्जयभाषो। सुनिवेको ममभन अभिलाषो ॥ पांडवरहि विराटके घरमें। लहेबहुत सुखकहिये धरमें ॥ ताके दोयतनय मरवाये। सञ्जयकहो लाज कछुपाये ॥ हम अनुमानि कहैंतुम मानो। अब अनरथको मूल मिटानो ॥ पारथ भीमकोपि यहि कारण। भरिहैं महिशोणित केधारण ॥ दोहा ॥ हम गान्धारी कृष्णकृप भीष्म द्रोण बलराम। विदुरव्यास को कहोनहिं मानो मोसुत क्षाम ॥ सब पांडवको मनरह्यो राखें रीतिसदैव। दुर्योधन हठिरण रचे करैकहा अबदैव ॥ संजयउवाच ॥ महाराज तेहि दिवसको तब बीतो युगयाम। भयेप्राप्त तीजोपहर भिरे फेरि

बलधाम ॥ कृतबरमा सहशल्य कहँ देखिशंख बरबीर। सेवित सुरथ समूहसों भरोकोप रणधीर ॥ दण्डपाणि समचण्डह्वै टंकारत कोदण्ड। चलोशल्यपै बेगसों गुणिकीबो ह्वैखण्ड ॥ इमि शंखहि आवत निरखि जानिशल्यको घात। सातभूपभट सिमिटिकै जुटत भये हेतात ॥ जयत्सेन अरु वृहद्बल अरुकौशल्य नरेश। बिन्दभूप अनुबिन्दये महारथी भटवेश ॥ भूप शल्यको तनय अरुबीर जयद्रथ भूप। एकसाथ भिरिशंखसों कीन्हों युद्धअनूप ॥ चौपाई ॥ घूमिघने घनगिरिपै जैसे। बरषत बारिबूंदते तैसे ॥ बाण अनेक शंखपै मारैं। सुभट शंखलखि रिस बिस्तारैं ॥ तिन सबके धनु सुखमापाटे। सात क्षुरप्रबाण सों काटे ॥ धनुष समूह काटिभो गरजत। परदल भटगण के हियदरजत ॥ सोलखि भीषमअति रिस धरिकै। ताल सदृश धनुशब्दितकरिकै ॥ चलेशंखपैघनरवकीन्हें। लखिसब पांडव अनरथ चीन्हें ॥ तब सत्वर अर्जुनबाढ़ि आगे। भीषमसों रण बिरचनलागे॥भिरेसिंहद्वैरणकाननके। कुशलप्रहारकनखबाणनके ॥ परमप्रचण्ड प्रगल्भप्रचारैं। मारैंशर शरशरसेवारैं ॥ माच्योकठिन युद्धतेहिपलमें। हाहाकार मच्योदुहुँदलमें ॥ तेहि क्षण शल्यगदालैकरमें। रथतेउतरिशीघ्रचलिफरमें ॥ बधेतिन्हैं जेमरदनपथके। घोरेचारिशंखकेरथके ॥ असिगहिशंख स्वरथ परित्यागी। गेजहँपारथरणअनुरागी ॥ गुड़ाकेशसोंयुद्धविहाई। भीषम भिरेद्रुपदसों जाई ॥ अगणितबाण द्रुपदपरडारे। हय गज सुभट असंख्यसँहारे ॥ केरलमत्स्यदेशकेयोधा। सहसन हतेभीष्मकरिक्रोधा ॥ दोहा ॥ दहैघनेवनको यथालागिदवाग्नि अमान। तथा पांडवीसैन कहँ हती भीष्मके बान ॥ तरुणतरणिकहँ ग्रीष्ममें जिमि न सकैं लखिकोइ। तिमि ताक्षण तहँ भीष्मकहँ सक्यो न कोऊ जोइ ॥ व्याकुल पांडवके सुभटत्राता लहो न तत्र। ऐसे थरनाहिं होन हे भीषमके शरयत्र ॥ भीषम

को धनु देरवों रह्यो मण्डलाकार। हय गज भट कितनेकटेको करिसकै शुमार॥ इतनेमें सन्ध्याभई भीषम युद्धविहाय। कुरु-पतिकहँ मोदितकिये घनरव शंखबजाय॥ तदनन्तर ते उभय नृप निजनिज डेरन जाय। किये अहारादिक क्रिया सहितसैन समुदाय॥

इतिमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्व्वणिप्रथमयुद्धवर्णनोनामत्रयोविंशोऽध्यायः॥

दोहा॥ निज सैनिक नृपभटन कहँ दैसुअहार सुपास। धर्म नृपति बन्धुन सहित गयेकृष्णके पास॥ रोला॥ भीष्मकोलखि कर्म चिन्तित धर्म प्रभुपै जाय। सुजयपैबो जानि दुरलभ कहतभे बिलखाय॥ कृष्णदेखो भीमविक्रम भीष्ममममदल भूरि। दहत कच्छहि अग्निजिमि तिमि दहत बाणन पूरि॥ सुभट मम रणधीर सम्मुख भीष्मके जे जात। ज्वलनते प्रज्वलितके ढिग शलभ सदृश लखात॥ बधे लाखन रथी भीषम दिव्य अस्त्रचलाय। परमउग्र प्रभावसों नहिं बचतभट समुदाय॥ इन्द्र वरुण कुबेर यमनहिं सकैंभीष्महिं जीति। नाहिंजीतै कौन महिपै जोरि जयसों प्रीति॥ भीष्म जाकेओर तासों युद्धको प्रणठानि। होन चाहत मृत्युमेंहम अनय अघकी खानि॥ सुभट सम्बन्धी सुहित ममअर्थ मारेजात। तातनाहू अर्थको न समर्थलाभ लखात॥ उदधि विक्रम भीष्मको तेहिमध्य परिहरिसर्ब। अवशि ह्वैहैं मग्नअब नहिं बाचिहैं यहिपर्ब॥ भीष्म केसम अस्त्रविद तो सखासों रणकर्म। लखत है मध्यस्थ सम नहिंजानिये केहिमर्म॥ करतकोमल युद्धयासों शत्रुपावतहारि। द्रोण भीषम करण कृपहैं जासुदिशि प्रणधारि॥ एकभीम सुवीर भुज बलसों लरत गहिचाव। हतैचौविधि सैनबहुदै गदनके गुरुघाव॥ एकभटके लरेऐसे मिलिहि कैसेजीति। भीष्म द्रोणादिकन सों जय अन्य दलकी ईति॥ आपु निरखो गौर करि ममसैनमें भटतौन। जलददावहि जिमिकरै तिमिशान्त

भीष्महिंजौन ॥ कृपाकरि अबकरहु प्रभु निज कृपाको फलव्यक्त । राज्यलहि हमसर्बजाते करैंचिन्ता त्यक्त ॥ भाषि यहिविधि कृष्णसों चुपरहे भूपति धर्म । कहतभे तबधर्म नृपसों कृष्ण ज्ञाता मर्म ॥ भरत कुलमणि शोचत्यागो होहु धीरजधाम । अवशिलहिहौ राज्यअरि हति जीतिकै संग्राम ॥ दोहा ॥ धृष्टद्युम्न तब प्रीतिरत सेनानाथ अनूप । हतिहि शिखण्डी भीष्मकहँ निश्चय मानौभूप ॥ यह सुनि धर्म नृपालमणि बोलेवचन गँभीर । मम सेनापतिहौ सुतुम धृष्टद्युम्न रणधीर ॥ यह सम्मत है कृष्णको जीतौशत्रु समस्त । हम सबर्ग हैं तुव अनुग लेहो सुयश प्रशस्त ॥ चौपाई ॥ सो सुनिधृष्टद्युम्न हरषाने । बोलेबचन बीररस साने ॥ सुद्विज द्रोणके नाशन हेतू । निर्मितमोहिं किये वृषकेतू ॥ भीष्मशल्य कृप आदिक जेते । ह्वैहैं कालिह व्यथित सबतेते ॥ कालिह सैनपै जययश लेहौं । सुभटन समर सिखापन देहौं ॥ धृष्टद्युम्नकी बाणी सुनिकै । भूप युधिष्ठिरबोले गुनिकै ॥ बिरचो क्रौंच व्यूह मनभायो । जो सुरगुरु सुरपतिहि बतायो ॥ सो सुनि धृष्टद्युम्न मुदलीन्हें । क्रौंच व्यूहकी रचना कीन्हें ॥ चोंचतासु अर्जुन धनुधरता । परदल प्रबल बिदीरण करता ॥ लैसँग रथीलाखदश साजे । द्रुपद भूप शिरकेथर राजे ॥ कुन्तिभोज अरुचैद्य ससाजा । राजेचारु चक्षुह्वै राजा ॥ सत्तरिसहस लाखदशभाये । योधाभये ग्रीवछबि जाये ॥ एकार्बुद अरु बीससहसभट । सहहैंधर्मपीठिथर परगट ॥ सुवनद्रौपदाके रणधीरा । अरु सात्वकि अभिमन्यु सुबीरा ॥ बाह्लीक देशकेर धनुधारी । रथी अयुतसह भीम सुखारी ॥ दक्षिणपक्ष भये अरिमर्दन । गदा प्रहारक घनसम नर्दन ॥ नकुल और सहदेवहि आदिक । अयुतरथी रणधीर प्रमादिक ॥ सहबरबाम पक्षह्वै सोहे । धृष्टद्युम्न सेनापतिकोहे ॥ दोहा ॥ केकयसैब्य बिराटये जघनपालिहैं भूप । तीससहस्र रथीनसह आयुधगहे

अनूप॥ उभयपक्ष अरुपुच्छकहँ करिआवृतवरवीर। गजसादी योधारहेधनुधारीरणधीर॥ क्रौंचव्यूहयहिविधिविरचिधृष्टद्युम्न मतिमान। सूर्योदय निरखतरहे खरेधरे धनुवान॥ चौपाई॥ क्रौंच व्यूह विरचित लखिराजा। दुर्योधननृप सहित समाजा॥ द्रोणाचारयके ढिग जाई। भरेमोद इमिकहे बुझाई॥ ये सिगरे ममभट भटनायक। सदल पांडवन जीतन लायक॥ तिन्हें सहित तुममम जयहेतन। रक्षहु निति भीष्महिं रहिजेतन॥ संजयउवाच॥ तदनु सुभीष्म द्रोणसह चावन। विरचे महाव्यूह मनभावन॥ सुभटअसंख्य रथिनसह भीषम। आगेचलनलगे अतिभीषम॥ भीष्महिं रक्षत द्रोणाचारज। चले अनेकरथिन सह आरज॥ सुभट समूह सहित बलभारे। शकुनि द्रोणके हैं रखवारे॥ भूरिश्रवा शल्यसह राजा। अरु भगदत्त विन्दुसह साजा॥ अरु अनुविन्दु आदिभट जाने। रहे वामदिशि आनँदसाने॥ सोमदत्त अरुवीर सुशरमा। अरुकाम्बोज अधर्म अभरमा॥ अरु अयुतायुश्रुतायु सुदक्षिण। अगणित भटन सहित हे दक्षिण॥ कृप कृतवरमा अश्वत्थामा। सात्वत आदि भूपवर सामा॥ सुभट असंख्यन सह धनुधारी। रहेपीठिरक्षक रणचारी॥ यहि विधि विधिवत व्यूह बनाई। दुर्योधननृप ओजबढ़ाई॥ सुभटबन्धुगण सहितसोहाते। शंखबजावतभे मुदराते॥ दोहा॥ सोसुनि पारथ कृष्णप्रभु सहित सुभट समुदाय। शंख बजावतभे मुदित सरस शुभद सुखदाय॥ बाजे बाजन गहगहे दुहूंओर तहँभूप। नभमहिलों पूरितभयो शब्दअसह्य अनूप॥ तबनिज सुभटनसों कहे दुर्योधन बलधाम। लरहु शीघ्र हतिपाण्डवन लेहुसुजय अभिराम॥ सोरठा॥ सो सुनि सुभट अमान तजे पाण्डवनपै विशिख। चलन लगेनभ बान दुहूंओरसों भूपमणि॥ चौपाई॥ लागे चलनबाण अनियारे। सर्पसदर्प सदृशभयभारे॥ बीर बिरत्वलखावन लागे। परदल

दन्द मचावनलागे ॥ बढ़ि बढ़ि इत उत डाटनलागे । रथ हय धनुध्वज काटनलागे ॥ शरबर इत उत फरकन लागे । लागि कुण्डलपै ठरकन लागे ॥ बहुशिर कटिभुज छेदन लागे । बहु हिय उदर बिभेदन लागे ॥ बहु हययूथ विदारन लागे । बहु गज गरट सचारन लागे ॥ बहुभट महिपै लोटन लागे । बहु गिरि भूमि खरोटन लागे ॥ बहु भटघायल ऊवन लागे । बहु शोणित मधि डूबन लागे ॥ बहुभट घायल घूमनलागे । बहुत खरे ह्वै भूमन लागे ॥ बहुभट भटन प्रचारन लागे । तकि तकि बाणन मारन लागे ॥ ऐसो भीषम युद्ध निहारी । धनु टं-कारि भीष्म धनुधारी ॥ भीमादिक सुभटन पैरोखे । तजत भये अगणित शरचोखे ॥ यहिबिधिवरकर लाघवकीन्हें । ब्यूहभेद भेदितकरिदीन्हें ॥ अर्जुन निजदल अर्दितदेखी । कहेकृष्णसों अतिशयतेखी ॥ तातभीष्म ममब्यूह बिमर्दत । गहेगर्व बारिद सम नर्दत ॥ अब बिलम्ब मतिकरहु गोसाईं । ताढिग चलहु पौनकीनाईं ॥ दोहा ॥ कहेकृष्ण अबहोहुतुम यत्नवानदृढ़चाय । तौरथभीषमके सुरथ सोंहमदेत मिलाय ॥ इमि कहि प्रभुयहि भांतिगे चीरि सुभट समुदाय । जल प्रवाह में मीनजिमि पीन मीन कढ़िजाय ॥ यथा मत्तद्विप गहनबन मधि तरु अर्दतजात । तिमि सुभटन मर्दत गये भीषम के ढिगतात ॥ धृष्टद्युम्न सा-त्वकि सहित अरु अभिमन्यु सुछत्र । सुवन द्रौपदी के गये अर्जुन के सँग तत्र ॥ चौपाई ॥ यहिबिधि पार्थहि आवत देखी । भीषम हियो रोषसों भेखी ॥ बिदित बीर सुखमासों छाये । रथ बढ़ाइ सन्मुख चलिआये ॥ महारथिनको शीक्षक कूजा । भिरै पार्थ सों को असदूजा ॥ बढ़िभीषम अर्जुनहिंप्रचारे । हनेबाण सत्तरि अनियारे ॥ चौंसठि शर दुर्योधन मारे । द्रोणाचार्य पचीस प्रहारे ॥ हने बिकर्ण तीनि शरचोखे । अश्वत्थामा साठि अनोखे ॥ तीनिबाण आर्त्ताइनि दीन्हें । तब सगर्व पारथ रिसि

कीन्हें ॥ शर पचीस भीषमपरघाले । कृपाचार्य पै नवशर आले ॥ दुर्योधनपै अतिअनियारे । पांच बाण हनि गरजि निहारे ॥ अश्वत्थामा के गुरु तनमें । हने साठि शर कोपितमनमें ॥ आर्त्ताइनिपैत्रय शर छांड़े । तीनि बिकर्ण सुभट पै मांड़े ॥ द्रोण द्रुपदके सुतसों भिरिकै । लागेकरन युद्ध तहँ थिरिकै ॥ फिरि भीषम करलाघव लीन्हें । मारे असीबाण वर चीन्हें ॥ तब तौ तनय हँसे वरियारे । सुनि पारथ अतिरिस विस्तारे ॥ पैठितुरित दलमाधि अतिकोपे । भटसंहारि प्रलय आरोपे ॥ हाहाकार मच्यो तौ दलमें । पार्थहते अगणितभट पलमें ॥ दोहा ॥ तब दुर्योधन दुखितह्वै कहे भीष्मसों बात । पारथ मर्दत मम बलन तुम्हरे देखततात ॥ तुम्हरे कारण करतभट मम हितरत रणधीर । लरत न पारथसों लखत खरो मौनह्वैबीर ॥ सोरठा ॥ कछु उपाय करितात हतो पार्थ कहँ शीघ्र अव । भीषम सुनि यहवात क्षात्रधर्म कहँ धिक कहे ॥ चौपाई ॥ गये पार्थ के रथ प्रतिरथलै । दुर्योधनको सुजय अरथलै ॥ द्रोणतनय दुर्योधन राजा । अरु बिकर्णये सहित समाजा ॥ रक्षणहेतु भीष्मके पीछे । ठाढ़े रहत भये जयईछे ॥ सात्विकि आदि बीरधनु धारी । हे पार्थहि रक्षतरणचारी ॥ भीषम पार्थहि नवशरमारे । भीष्महिं दशशर पार्थप्रहारे ॥ फिरिशीघ्रगशर सहसचलाई । दीन्हें दशदिशि जालबनाई ॥ बाणजाल बाणन सों भीषम । काटिहने शर अहिसम भीषम ॥ पार्थहि भीष्म भीष्मकहँ पारथ । अगणितशर मारे गुणिस्वारथ ॥ दोऊ बाण अनागिने मारैं । दोऊबाण बाणसों वारें ॥ दोऊवीर विदित धनुधरता । दोऊ अद्भुत संगरकरता ॥ दोऊरथ बर इतउत फेरें । दोऊ हतिबे की गतिहेरें ॥ दोउन के रथ अरु धनुदोऊ । मण्डलसम दरशे सब कोऊ ॥ दोऊ शरपंजर करिडारें । दोऊबाणन मारि बिदारें ॥ दोऊहनें न दोऊमोहें । दोऊ भरे रुधिर सों सोहें ॥

दोउन के हैं बाणनिभेदे। मनसमइतउत फिरत अखेदे॥ दोऊ घनसम धनुटंकारैं। दोऊगर्व भरे हंकारैं॥ दोहा ॥ इकधनु की धुनिसों दई दोऊ दशदिशिपूरि। सो थरतरकस सो करो दोऊ तजि शरभूरि॥ तहँ प्रभुके उरमधिहने भीष्मतीनि बरबान। लसेकृष्ण पुष्पिततरुन किंशुक सुतरुसमान॥ तब अर्जुनअतिकोपकरि तीनिबाण संधानि। भीषमके सारथिहि हने चाप श्रवणतक तानि॥ जे जाके रथसूतहय धनुध्वजानमें बान। मारे तिनके तिनहिं तिमि मारे ते मतिमान॥ भीष्म पार्थभिरि भांति यहि कीन्हों युद्धउदण्ड। दोऊ अनुपम परमभट दोऊ प्रबलप्रचण्ड॥ चढ़े बिमानन सुरनगण देखिसुयुद्ध बिहार। करीप्रशंसा भीष्मअरु अर्जुनकी बहुबार॥ सोरठा ॥ यहि बिधि युद्ध बिधान सुनिधृतराष्ट्र कहैंतहां। सुनुसंजयमतिमान दैवचहैं जो सोकरै॥ तीनिलोकके जौन भीषम तासों पार्थ भिरि। इबिधिलरे यहबैन सुनतहोत बिस्मयमहा॥ जयकरी ॥ धृष्टद्युम्न अरु द्रुपद अमान। कैसे लरेकहो मतिमान॥ सुनिबोलेसंजय मतिऐन। भूपतिकहो न ऐसे बैन॥ तीनिलोकमें ऐसो कौन। लरिजीतै पारथ कहँ जौन॥ धृष्टद्युम्न कहँ द्रोणअमान। बेधतभये मारिबहुबान॥ मारिभल्ल शरबर दृढ़घाय। रथसों सूतहि दयेगिराय॥ धृष्टद्युम्नतब रिसबिस्तारि। मारे नब्बे बाण प्रचारि॥ तब करिद्रोण क्रोध बिकराल। करिदीन्हे सब दिशि शरजाल॥ फिरिलीन्हें शरबर अतिघोर। बज्रसमान अमान कठोर॥ पाण्डवलखि तेहिशरकोरूप। हाहाकार कियेसुनुभूप॥ धृष्टद्युम्न लखिडरे न नेक। रहे अचल सम खरेसटेक॥ काल दण्डसम आवत देखि। काटो ताहि शरनसों तेखि॥ सोशर बीचहि कटत निरेखि। हरषेपाण्डव सुदिन सरेखि॥ धृष्टद्युम्न तब रिसउरआनि। द्रोणबीरको वध अनुमानि॥ तजी शक्ति अति तीक्ष्णपीनि। द्रोणकाटि तेहि कीन्हीं तीनि॥ फिरिकाटो

हनिबाणकराल। धृष्टद्युम्नको धनुष विशाल ॥ दोहा ॥ धृष्टद्यु-म्नतब गुरुगदा गहिकर अतिशय कोप। तजो द्रोणपै द्रोणके नाशन को लहिचोप ॥ मारिबाणवर सो गदा बीचहि काटि अचार्य। धृष्टद्युम्नके गातमधि हने बाणबहुआर्य ॥ सोरठा ॥ धृष्टद्युम्न ह्वै चण्ड तबहिं और को दण्डगहि। पांचबाण उद्दण्ड हने द्रोणके गातमें ॥ चौपाई ॥ दोऊ शोणित भये अमेहे। पुष्पित किंशुक तरुसम सोहे ॥ फेरि द्रोण काटत भे हनिशर। धृष्टद्युम्न भटबर को धनुबर ॥ करलाघव करिकै अतिहरषे। धृष्टद्युम्न भटपर शरबरषे ॥ मारि पांचशर बर धनुधारी। बधे सूत अरुहय रथचारी ॥ फिरिहनिबाण धनुष बरकाटे। करलाघव की सुखमा ठाटे ॥ बिरथबिधनु रिपुबचननजासों। हनत गदाभो बरभट तासों ॥ सोऊगदा बाणसों छेदी। गरजेद्रोणाचार्य अखेदी ॥ तबगहिखड्ग चर्मअतिभारी। रथतजि धृष्टद्युम्न प्रणधारी ॥ जबसों चले द्रोणपै तैसे। चलैसिंह करिवर पै जैसे। तहां द्रोण अति पौरुष कीन्हें। बाणनमारि न आवन दीन्हें ॥ थिरि बीचहि नृपसुतभट चीन्हें। सगरेबाण ढालपर लीन्हें ॥ धृष्टद्युम्न कहँ याहिबिधि देखो। भीममहारथ अतिशयतेखो ॥ आइ बेगसों गुरुहि प्रचारे। मारे सातबाण अनियारे ॥ धृष्टद्युम्न कहँ अन्य सुरथपै। थापिलगे बिहरण रण पथपै ॥ तब दुर्योधन कहे सुगातिसों। भटश्रुतायु कालिंग नृपतिसों ॥ सेनसहित तुम सत्वरजाई। करोसहाय द्रोणकी भाई ॥ दोहा ॥ सो सुनिकै कालिंगपति नृपश्रुतायु सहसैन। जाइ भीमसों भिरतभो बरषतबाण सचैन ॥ धृष्टद्युम्नकहँ त्यागितब निजरथ द्रोणचलाय। द्रुपद बिराटमहीपसों भिरतभयेहरषाय ॥ सोरठा ॥ धर्म नृपति के पास धृष्टद्युम्नतब जातभे। बिरचे युद्ध बिलास भीमश्रुतायु महारथी ॥ तबधृतराष्ट्रमहीपकहे कहौ संजयसबिधि। किमिश्रुतायुकुलदीपलरोभीमभटप्रबलसों॥ तोटक॥

नृपजोसुनिबो अभिलाषत भे । सुनिसंजय सों इमि भाषतभे ॥ दुर्योधनको अनुशासनलै । सहसैन श्रुतायु शरासनलै ॥ जबसों दुर्योधनके तटसों । चलिगो भिरिभीम महाभटसों ॥ निहकंचुक व्यालसमान बने । शर भीमहिं सों तेहिभीम हने ॥ दोहा ॥ केतु भंग नरनाह तब सहनिषाद समुदाय । नृप श्रुतायु केसाथ बढ़ि भिरो भीमसों जाय ॥ भानुमान नृपचैद्यपति सोऊबढ़िसह सैन । भिरोभीमके भटनसों सुनि निज नृपकेबैन ॥ रथहय अगणित सहसअरुमैगल अयुत बलिष्ठ । पैदरसुभट असंख्य सहभेतेसमरप्रविष्ट ॥ सोरठा ॥ इनसोंभिरेसचायभीमसेनकेसाथ थिरि। साहितसैन समुदायचेदिमत्सकारूषपति॥ चौपाई ॥ उभय ओरकेसुभटसमाजा । कठिनयुद्धकीन्होंभिरिराजा ॥ पदचारिन सोंभिरेपदाती । भिरेरथिनसोंरथीविघाती ॥ भिरेअश्वसादीहय सादी॥भिरेगजस्थगजस्थप्रमादी ॥कियेसुरासुरसंगरजैसे।लरत भयेतहँतेसबतैसे ॥ रुधिरमासकोकरदमकीन्हें । निजपरसुभटन काहूचीन्हें ॥ कितने साथहि अस्त्रप्रहारे । साथहि गिरि भे तनसों न्यारे ॥ साथहि चढ़े बिमानन हरखैं । संग अप्सरनके रण परखैं ॥ कितने बहु प्रति द्वन्दिन मारे । पुरुष सिंहरण बिपिन बिहारे ॥ कितेमरैं बहुसुभट न ज्वैकै । कितने गिरैंअधमरे ह्वैकै ॥ कितने अस्त्रलगेहू ओलैं । कितने शीश कटेहू डोलैं ॥ कितने निजसम सुभट निहारी । मारैंअस्त्रअमोघ प्रचारी ॥ कितने योजिचाप शरडाटैं ॥ हटैंन शीश शत्रुके काटैं ॥ कितने बिना तके शरत्यागैं । सन्मुख आइपरैं तेहि लागैं ॥ यहिविधि घोरयुद्ध तेहिक्षनमें ॥ भयोभूप मणिगुणियेमनमें ॥ तब उतके भट अरदित ह्वैकै । गयेपिछिलिबलधीरज ग्वैकै ॥ भीमसेन रण कर्कश गाढ़ो । रह्यो रथस्थ अकेलो ठाढ़ो ॥ दोहा ॥ महारथी मणिभीम तहँ करि अतिकोप कराल । कालिंदी दल मधिकरी बाणदृष्टि तेहिकाल ॥ चौपाई ॥ तब श्रुतायुको सुतधनु

धारी । शक्रदेव नामकभटभारी ॥ बाणअनेक भीमपैडारे । भी-
मतहि अगणित शरमारे ॥ तब तिहि हनेभीमके रथके । वाजी
गुणिकरता अनरथके ॥ हयन मारिनिजमुद्दिन निहारी । भयो
हनत बहुबाण प्रचारी ॥ तेहिलखि भीमक्रोध विस्तारे । गदा
आयसी फेरि प्रहारे ॥ लागति भईगदा तेहिक्षनमें । मृतध्वजा
नृपसुतके तनमें ॥ मरिध्वजमहते गिरेगिरेजिमि । युगकपि तरु
सँग गिरिवरतेतिमि ॥ निजसुतको मरिबो लखिराजा । नृपश्रु-
तायु सहसैन समाजा ॥ चैद्यनिषाद सदलभरि रिशि सों । घेरि
लये भीमहिं चहुंदिशिसों ॥ घेरि बाण वर मारनलागे । मारहु
धरहु पुकारन लागे ॥ तबभट भीमगदातजि करते । गाहिअसि
चर्मकूदि रथवरते ॥ कठिन कराल कोपसों पागो । सुभटसमूह
सँहारन लागो ॥ लखिश्रुतायु अतिरिस सों छायो । अति शी-
घ्रगशरएक चलायो ॥ सोशर भीम खड्गसोंकाटो । गजहिसिंह
जिमि तिमितेहिडाटो ॥ फिरिश्रुतायु नृप रिसकरिमारे । चौदह
तोमर अति अनियारे ॥ भीम पराक्रम भीमअखेदे । असिसों
बीचहि तिनहूं छेदे ॥ दोहा ॥ इतनेहीमें चैद्यपति भानुमान नृप
स्वस्थ । धनु टंकारत भीमके सन्मुख गयोगजस्थ ॥ गरजिसिं-
हसमभीम तब तापै चलेसवेग । हने चैद्यनृप बाणबहु रुक्यो
न सुभटअसेग ॥ दीहद्विरदके रदनपै कूदिसुपदधरिधीर । जा-
य खरो भोजहँ रहो भानु मानभटबीर ॥ सोरठा ॥ निजढिगभीम-
हिं देखि भानुमान इमि जकिरह्यो । सिंहहि निकट निरेखि रहै
मूंदिचख द्विरद जिमि ॥ गुरुतोमर ॥ तहँभीमसेनहिं देखिकै । का-
लिंग पति अति तेखिकै ॥ गुरु शक्ति मारयो तानिकै । तेहिभीम
आवत जानिकै ॥ तरवारि तीक्षण वाहिकै । द्वैकरे बीचहिचाहि
कै । फिरि चैद्यनृपकोडाटिकै । शिर मौलि दीन्हे काटिकै ॥ सोरठा ॥
भीमसेन बलवान भानुमान कहँ विविध बधि । करिकसीसकिर-
बान हनेद्विरदकेशीशमधि ॥ दोहा ॥ लगेखंग चिक्कार करि गिरत

भयोगजराज। प्रथमहिकूदिगयो अनत भीमसुभट शिरताज॥ चौपाई॥ कूदिजाइ महिपै असिधारी। भीमसेन दुर्मदरणचारी॥ आकुल सूत उण्णा तहि आदी। ग्रामभेद करि घनसमनादी॥ कितनेके शिरभुज कितनेके। काटेझपटि सुकाटिकितनेके॥ काटेदपटि उरूकाहूके। काटे गिरहु गुल्फ काहूके॥ कितनेके धर उरथर काटे। कितने भटवरके करकाटे॥ उदर बिदारे भटअगणितके। फारेचर्मपाणि अगणित के॥ द्विरद असंख्य अरदि करि दीन्हें। कितने अपग अकर करि दीन्हें॥ अद्भुत बिक्रम करि इमि रणमें। हतीअसंख्य सैन तेहि क्षणमें॥ मथैग्राहवर लघुसर जैसे। भीमसेन दलमरदोतैसे॥ चपल प्रबलभटइमि विरुझानो। कालचक्रसमतहां लखानो॥ भीमबाहगिरितेसंचरिता। बहीतहांशोणितकीसरिता॥ तुङ्गवाजि गजराजनरनके। रुण्ड मुण्ड अरु हाथ चरनके॥ अंग रथनके ध्वजधनुबाना। शक्तिगदादिक आयुध नाना॥ कटे गिरे तहँ परे अनेरे। तिन्हैं याद समतामधिहेरे॥ हयगज रथभट तेहिमधि धावैं। तेसब तरणहार समभावैं॥ दोहा॥ लगे धकामरि भूमिपै गिरे अनेकनवीर। अगणित गिरि दवि चरणतर गेतन तजि यमतीर॥ इमि अरदित निज सैन लखि नृपश्रुतायु अनखाय। भीष्महिं लै निजसैन मधि भिरो भीम सों जाय॥ ताहीक्षण रथलै गयो रथी अशोक सुधीर। तापैचढ़िकै सिंहसम गरजोभीमसुवीर॥ चौपाई॥ रथचढ़ि नृपसों कहे रिसाई। अब रहु खरो न जासि पराई॥ यहसुनि नृप श्रुतायु अतिरोखे। मारतभये बाण नव चोखे॥ भीमसेन तबधनु टङ्कारी। हने सातशर प्राणप्रहारी॥ तिनके लगे श्रुतायुनरेशा। गेसुरलोक त्यागियहभेशा॥ सत्यदेव अरु सत्य सुनामी। हे श्रुतायु केभट अनुगामी॥ भीमसेन अतिगौरव लीन्हें। ताक्षण तिनहूंकोबध कीन्हें॥ तब निषादपति सन्मुख आयो। केतुमत्त जो भटवर गायो॥ तीनि बाण

अति तीक्षण गनिकै। भीमसेन ताकेउर हनिकै॥ तुरित ताहि यम लोक पठायो। गरजि सगर्व सुशंख बजायो॥ तब कालिंग भूपके योधा। चैद्य निषाद बीर करिक्रोधा॥ तेसबमिमिटिभीमसों भिरिकै। युद्ध करन लागे तहँ थिरिकै॥ शक्ति परश्वध शर अनियारे। गदाआदि बहु आयुध डारे॥ तब पाण्डवगहि गदा बिशाला। रथसों कूदिभयो बिकराला॥ सत्ताइससैसुभट सँहारे। तब भागे बहुभट भयभारे॥ कै बिनु स्वामि भगेगजकेते। बहु निज दलभट मरदेतेते॥ भागि किते भट फिरे लजाई। कितने बहुरे लाज बिहाई॥ दोहा॥ कितने निजरथ थिरि रहें भिरें किते बलवान। होहिं सर्बते ज्वालढिग प्रापत शलभ समान॥ तहांकठिन तरवारिलै भीमसेन उमदाय। हने कौरवी सैनके अगणित भट समुदाय॥ ताही क्षण सेनाधिपति धृष्टद्युम्न हरषाय। मत्स्य चेदि कारूषमों कहे लरौ फिरिजाय॥ मालिवारी॥ सेनाधि पतिके वचन सुनि ते सुभट फिरि भिरि लरतभे। बहुशस्त्र बहुविधि वाहि वाहि बिशाल विक्रम करत भे॥ चढ़ि सरथ पै तब भीमधनुगहि शरनसों दुरदिन करे। तहँ द्रुपद सुत सँग तासुरहि बहु भटनकेजीवनहरे॥ यहअतुल विक्रमयुद्ध कर्म निरेखि अति आनँद भरे। नृपधर्म बढ़िमह सैनमें तहँ भीमके अनुढिग खरे॥ इमि निरखि ताक्षण सखा भीमहिं लरत अनुपम भावसों। रथहांकिसत्वरगये ताढिगसुभट सात्यकि चावसों॥ दोहा॥ भीमसेन अरु सात्यकी धृष्टद्युम्न बलवान। ह्वै एकत्र कीन्हें तुमुलयुद्ध सुनो मतिमान॥ ताक्षण कालिंगी सुभट बोले होयबिहाल। भीमरूप यह भीम है यहि दल जनकोकाल॥ चौपाई॥ यह सुनि भीषम धनुटंकारी। वीरभीम पैचले प्रचारी॥ भीष्महिं लखिते तीनों योधा। तीनि तीनि शर हने सक्रोधा॥ तब भीषम अतिरिस बिस्तारे। तीनि तीनि शर तिनकहँ मारे॥ फिरिशर सहसमारि जगजेना। दई

विडारि पाण्डवी सेना ॥ तबतजिचारि बाणकी राजी । हतेभीमके रथके वाजी ॥ भीमसेन तबशक्ति चलाई । भीष्म काटि तेहि मगहि गिराई ॥ तबगहि गदाभीम रणचारी । कूदिभीष्म पै चलो प्रचारी ॥ इतनेमें सात्यकि रिस बरसों । बधेभीष्मके सूतहि शरसों ॥ मरे सूत के हय भयपागे । निजदल ओर सुरथलै भागे ॥ तात्क्षण भीमसेन प्रण लीन्हें । कालिंगी दलभट विनु कीन्हें ॥ लखत रहे तौसुत सबभाई । सके न कोऊ सन्मुख जाई ॥ धृष्टद्युम्नलखि आनँद धारे । भीमहिं निजरथपै बैठारे ॥ तबसात्यकि सुखनिधि अवगाहे । भीमहिं विधिवत बहुतसराहे ॥ कालिंगी दल बलसों रीते । नृपतब दिवस यामयुगबीते ॥ तदनुभीम निजरथपै चढ़िकै । सात्यकि धृष्टद्युम्नसह बढ़िकै ॥ धीर सगर्व भरे अतिबलसों । लागेफेरि लरनतौ दलसों ॥ दोहा ॥ तहँगौतम अरुशल्य अरु अश्वत्थामावीर । धृष्टद्युम्नसोंभिरत भे जानि परन रणधीर ॥ शुद्धधनुर्द्धर उद्भट धृष्टद्युम्नबलवान । द्रोणतनयके सुरथके तुरगहते हनिबान ॥ मृत हयरथतजि जायतब अश्वत्थामा विप्र । बैठि शल्यके सुरथपै हनेबाणबहु क्षिप्र ॥ धृष्टद्युम्नरणधीरसों लरत तीनि भट देखि । रथबढ़ाय अभिमन्यु तहँ जाय भिरो अतितेखि ॥ सोरठा ॥ कृपहि हने नव बान शरपचीस हनि शल्यकहँ । आठनराच अमान द्रोणतनय कतनहने ॥ तबद्वादश शर चण्ड शल्य हने अभिमन्यु कहँ । कृपत्रयबाण उदण्ड हने द्रोणसुतएक शर ॥ तोमर ॥ तहँकुंवर लक्ष्मणदेखि । करिअरुण अक्षणतेखि ॥ बढ़िसहित पक्षणधाय । भोभिरततात्क्षणजाय ॥ लखिविदितलक्ष्मणअक्ष । अभिमन्युरक्षणपक्ष ॥ भिरि सहित दक्षिणतत्र । भेहनत तिक्ष्ण पत्र ॥ दोहा ॥ दुर्योधनको तनयअरु अर्जुनकोसुतवीर । उभय बंधुयेभिरि तहां कियेयुद्ध गम्भीर ॥ लक्ष्मणकेतनपांचशतबाणहनेअभिमन्यु । तब लक्ष्मण अभिमन्युको धनुकाटकरिमन्यु ॥ चौपाई ॥ तब अभिमन्यु

सुजय अनुरागी। अन्यधनुष गहि सोधनु त्यागी॥ बहुशरहनि लक्षणकेतनमें। व्याकुलकरतभयोतेहिक्षनमें॥ निजपुत्रहिअति व्याकुलदेखी। भूपतिदुर्योधनअतितेखी॥ नृपनसहितबहिभेरि सुभेरी। लगेलरन अभिमन्युहिघेरी॥ तहँअभिमन्युलरोसबज-नसों। डरोननेकुनटरोसुप्रनसों॥ लखिअर्जुन सुतत्राणविचारी। सत्वरतिनसोंभिरप्रचारी॥ क्षणमेंवाणअसंख्यप्रहारे। अगणित गजहयभटवधिडारे॥दुर्योधनभूपतिकेदलमें। हाहाकारमचोतेहि पलमें॥ इमिअर्जुन शरछादित कीन्हें। दिनरजनी नहिंकाहूची-न्हें॥ कितनेभट विनुबाहनकीन्हें। बहुबाहन बिनुभटकरिदीन्हें॥ बिधनु बिध्वज बिनुशर पगकरके। किये असंख्य भटन युगधर के॥ व्याकुलह्वैतजिधीरजलाजा। तौमुलकोदलविचलोराजा॥ जिमिकेशरिकेकरसों मरादित। भगैंअसंख्यद्विरदह्वैअरदित॥ तिमिअर्जुन के शरसों छेदे। भागे हय गजभटअतिखेदे॥ ता-क्षण नृप हे समबल जेऊ। सके न भिरि अर्जुनसों तेऊ॥ जे सन्मुख गेधीरज रांचे। तेयमलोक गये नहिं बांचे॥ दोहा॥ तहँ भीषम हँसि द्रोणसोंकहे लखो आचार्य। कृष्णसहित भटपार्थ को अद्भुत विक्रम कार्य॥ कालकराल समानभो यहि क्षणपार्थ अमान। अब यासों लरिजय लहै ऐसोको बलवान॥ सरितप्र-वाहसमान कहुँभागी फौजरुकैन। फेरहुँघायल अमितभट फि-रिलरि जीति लहैन॥ ताते अब संध्यो भईतजौ युद्धउपचार। चलि डेरन निजभटन कहँदेहु अहार विहार॥ इमिकहिभीषम हांकिरथ सहित सुभटसमुदाय। उचित कृत्यसब करतभे निज निवास थरजाय॥ सोरठा॥ तब पाण्डव हरषाय जयदुन्दुभिव-जवाइकै। निज डेरन मधिजाय किये अहारादिक क्रिया॥

इतिश्रीभीष्मपर्वणिद्वितीयदिनयुद्धवर्णनोनामचतुर्विंशोऽध्यायः २४॥

दोहा॥ तीजेदिन भोरहि रचो भीषम गारुड़व्यूह। पृथक् पृथक् सब अंगमें राखि प्रबल भटजूह॥ तासु तुण्डथर लसत

भे भीषम धीरधुरीन । चखभे भारद्वाज अरु कृतबरमा भट पीन ॥ केकय मत्स्य त्रिगर्त्त अरु बाटधान भटभूरि । सहकृप द्रोणतनय भये शिर गौरवसों पूरि ॥ भूरिश्रवासुजयद्रथ शाल शल्यभगदत्त । ग्रीवभयेये भूमिपतिलै बहुसुभटप्रमत्त ॥ दुर्योधनबन्धुन साहितसहित सैनसमुदाय । बिशदपीठि धरलसतभे ह्वै सगर्व उमदाय ॥ बिन्दभूपअनुबिन्द अरु सूरसेनबलवान । सक कांबोजन सहितहे पुच्छगहे धनुबान ॥ दाशेरक कालिंगभटसहसँग लै निजसैन । जरासन्ध को तनय हो दक्षिण पक्ष सचैन ॥ कानर पौर बिकुंजपति अंधाधिप ये सर्व । संग वृहद्वल के रहे बामपक्षगहिगर्व ॥ जयकरी ॥ यहिबिधि तो दल व्यूहित देखि । पारथ धृष्टद्युम्न अवरेखि ॥ अर्द्धचन्द्रवत व्यूह अनूप । बिरचिबिराजे सुनियेभूप ॥ भीमतासु हे दक्षिणओर । लै सँग भूपति सुभटअथोर ॥ सात्वकि अरुअभिमन्युसुबीर । पांच द्रौपदीके सुतधीर ॥ इराबाण करता अति युद्ध । बीर घटोत्कच दै अति क्रुद्ध ॥ येहेबामओर अतिघोर । नृपनजासु बिक्रमकर ओर ॥ द्रुपद बिराट नीलक्षितिपाल । धृष्टकेतुअरि कुलको काल ॥ चेदिकाशि कारूष नरेश । धृष्टद्युम्न पांचाल सुबेश ॥ बीरशिखण्डीअरिदलजैन । रहेमध्यमें सदलसचैन ॥ गजानीक मधितहैं बलधाम । रहे युधिष्ठिर नृप अभिराम ॥ सबके रक्षक हे जगऐन । श्रीकेशव प्रभु राजिवनैन ॥ पाण्डव इमिरचि व्यूह सऊह । भेदन हिततौ सुतको व्यूह ॥ घनसम स्वन दुन्दुभि बजवाय । लागे तजन शस्त्र समुदाय ॥ तौदिशि केभट प्रबल प्रचण्ड । लगेप्रहारन अस्त्र अखण्ड ॥ भटप्रति भटनप्रचारि प्रचारि । लागे हनन सिहारि सिहारि ॥ उभय सेन मधिअतिबिकराल । गयोपूरिअस्त्रनकोजाल ॥ दोहा ॥ उमड़िउमड़िभिरि लरतभेसुभट समूह सघट्ट । भूप भूपभिरि रणरचेसहसावन्तगरट्ट ॥ भूपतितेहिक्षणमचत भो यहि बिधिकोघमसान ।

दिशिकोअरुनिजआनको रहोनकाहुहिज्ञान ॥ चौपाई ॥ सुभटनके रुण्डन मुण्डन सों। कटेवाजि गजके झुण्डनसों ॥ भूपअगम्य भई तहँधरणी। रुधिर धारसों भरी विवरणी ॥ धनुध्वज घण्टा अस्त्र घनेरे। परे कटेरथ अगणित हेरे ॥ भिरत असंख्य कबन्ध निरेखे। विनुभुज फिरतसुभट बहुदेखे ॥ भरेरुधिरसों भट विरुजाने। तहँ सब असुर समान लखाने ॥ भीष्मद्रोण पुरमित्र नरेशा। शकुनि विकर्ण भयानक भेशा ॥ शल्य जयद्रथ ये सबराजा। हती असंख्य सैनसहसाजा ॥ भीमघटोत्कचसात्यकिबीरा। सुवन द्रौपदीके रणधीरा ॥ चेकितानये भटधनुधारी। अगणित तौदल हते प्रचारी ॥ निजदल मर्दत पार्थहिज्वैकै। बहु नरपाल एकमत ह्वैकै ॥ कैयक सहसरथिनसह कढ़िकै। पार्थहिघेरि लियेतहँ बढ़िकै ॥ शक्ति परठवधशर अनियारे। गदाआदि बहु आयुधडारे ॥ तब पारथकरलाघव कीन्हे। दश दिशि शरपंजर करि दीन्हे ॥ परके अस्त्रनिसब राखे। धन्य धनंजय सुरगण भाखे ॥ सात्यकि अरु अभिमन्यु सुधीरा। सदल शकुनि सों भिरे प्रवीरा ॥ रण दुर्मद ते गौरव लीन्हे। हे नृप कठिनयुद्ध तहँ कीन्हे ॥ दोहा ॥ तहँकर लाघव करि शकुनि हनि बहुबाण अचूक। क्षणमें सात्यकिको सुरथ करि दीन्हेशत टूक ॥ तब सात्यकि अति क्रोधसों आयत चखकरि बङ्क। निजरथ तजि अभिमन्यु के रथ पैगये निशङ्क ॥ सोरठा ॥ दोऊबीर अमान धीर धनुर्द्धर अस्त्रविद। मारि अनगिने बान किये सदल शकुनिहि विकल ॥ चौपाई ॥ ताक्षण भीष्मद्रोण रणचारी। करी शंखधुनि धनु टंकारी ॥ जाइ धर्मके सम्मुख चावन। लगे भटन पै बाणचलावन ॥ तहँ नृपधर्म नकुल दोउ भाई। कीन्हों तिनसों दुसह लराई ॥ दुर्योधन भट विधि अनुसरिकै। रथसहस्र सह बढ़िरिस भरिकै ॥ भीम घटोत्कच भट सों भिरिकै। युद्ध करनलागे तहँ थिरिकै ॥ तहां घटोत्कचभट हे आरय। अ-

तुल युद्ध कीन्हों जयकारय ॥ भीमसेन शर एक सुधारी । तो सुतके उरहने प्रचारी ॥ लगे बाण नृप मुरछित ह्वैके । रथपर परेडरे सवज्ञैके ॥ दुर्योधनहिं अचेत निहारी । भगो फेरि रथ सूत विचारी ॥ नृपके रथहिपराजितदेखी । भगीफौजसबभयसों भेखी ॥ ताक्षण भीमादिक धनुधारी । बहुशर हनेप्रचारिप्रचारी ॥ लरत रहे पारथ सों जेऊ । ह्वै व्याकुल तब भागेतेऊ ॥ भीषम द्रोण बहुत कहिहारे । थिरे न नेकु सुभट भयधारे ॥ भीष्म द्रोण रोंकतहैं ठाढ़े । फिरे न तेजे गनेउ सुकाढ़े ॥ इतनेमें दुर्योधन चेते । धनु टङ्कारि बहुरि रणहेते ॥ निजदल भागत लखि रिसपागे । फिरहु फिरहु इमि टेरन लागे ॥ दोहा ॥ दुर्योधनके वचनसुनि नृपगण फिरे लजाय । क्रमसों सिगरे सुभट फिरिलरन चले समुहाय ॥ तब दुर्योधन भूपगुणिकहे भीष्म सों जाय । सुनो पितामह ममबचन लखो कहा अलगाय ॥ चौपाई ॥ तुम्हरे जियत सैन मम अरदित । होति भगति अरिसों ह्वै मरदित ॥ ऐसो तुमहिं न उचित गोसाईं । ममदुर्दशा लखौ यहि ठाईं ॥ जीतहिं तुम्हहिं पाण्डु सुत रणमें । ऐसो कबहुंन भासतमनमें ॥ द्रोण द्रोणसुत कृप तुम देखत । ममदल बिचलत नेकु न लेखत ॥ अब यह बूझिपरो दृढ़हमको । हैंप्रिये पांडुतनय तुम सबको ॥ ताहीसों तुमकौतुक पेखत । ममजय होय न सो अवरेखत ॥ जो तुमको करिबो हो ऐसो । तौप्रथमहिं कहिदेते तैसो ॥ तो हम तबहीं बूझिकरणसों । उचितकृत्य करि भिरित परनसों ॥ जो हमत्याज न तुम सबहीको । तौलरिये करि अकपटहीको ॥ सुनिदुर्योधनकी यहबानी । हँसिबोलेभीषम अनुमानी ॥ महाराज हमगोइ नराखे । कइक बारइमितुमसों भाखे ॥ हैं अजेय पाण्डव सुरबरसों । कबहूं जीतिन जैहैं नर सों ॥ तब नाहिं मानेहु मानन लायक । अबकत शोच करहु नरनायक ॥ वृद्धपुरुष हम निज अनुरूपा । करबयुद्ध सो

निरखेहु भूपा ॥ आजु पाण्डवन कहँ यहि रणमें । निरखिपरा-
जित मोदहुमनमें ॥ आजु असैन पाण्डवन करिहौं । रणमण्ड-
ल श्रोणितसों भरिहौं ॥ दोहा ॥ भीषमके ये वचन सुनि तो भूप
सब हरषाय । बजवावतभे दुंदुभी घनरव शंखबजाय ॥ ताअग
पाण्डव नृपनसह शंख बजाये भूरि । बजवाये दुंदुभि घने अ-
ति आनँद सों पूरि ॥ सोरठा ॥ तेहि दिनको युगयाम ताक्षणबी-
तो भूपमणि । उभयसैन बलधाम युगसमुद्रसम फिरि भिरे ॥
रोला ॥ कहे तब धृतराष्ट्र संजय कहो सहित विधान । ठानिप्रण
यहि भांति भीषमकिये किमिघमसान ॥ कहे संजय भाषि ऐसो
भीष्म निजरथ हांकि । पाण्डवी दल प्रबलसों भिरि लरनला
गे डांकि ॥ सर्व सेना सहित तो सुत सर्व तदनु सगर्व । जाय
भिरि भे लरत रक्षत भीष्मतेहि तेहि पर्व ॥ युद्ध अति से तुमु-
ल ताक्षण मचो तहँ हे भूप । लगे तकितकि सुभट घालन श-
स्त्र विविधअनूप ॥ खरोरहुमाति भागुमाखो पर्योमारुसँभारि ।
आउ सम्मुख जातकित नहिं बचतअस्त्र प्रहारि ॥ एक एक
सुशब्द ये बहु बार भाषतभूरि । युद्ध थलपे दुहूं दलमें रह्यो
तेहि पल पूरि ॥ अस्त्र अस्त्र तनुत्र अस्त्रनके जटनसों शब्द
भयो तहँ सो भयद परसत भयो माहि अरु अब्द ॥ सुभट
गज हयरथ असंख्यन दुहूंदलके तत्र । कटेपलमें भूपमणिसो
कहत बनत न अत्र ॥ तहां भीषम किये कार्मुक मण्डलाकृत
वेख । तजे बाण बिशाल अगणित अतुल अकथ अले-
ख ॥ कुपित अहि समशरन सों सब दिशा दीन्हींछाय । हते
अगणित द्विरद हय अरु रथिन के समुदाय ॥ रुर्व दिशिमें
फिरत भीषम को सुरथमनमान । लखे सबकोउ तहां भूप अ-
लात चक्रसमान ॥ सर्वथर सब रथिनसों तेहिसमय नृप सब
ओर । एक भीषम सहस सम सो जुरोहो तहँ जोर ॥ लखे जे
जेहि ओर भीष्महि लखे ते तेहि ओर । देखि इमिसब गुणे

भीषम करतमायाघोर ॥ एक एक इषूनसों एकैक मैगलमारि। भीष्मक्षणमें दिये अगणित द्विरद महिपै डारि ॥ भये सम्मुख भीष्मके तहँ गये ते यमलोक। एकपल भरि सुभटकोऊ सक्यो नहिंकरिरोक ॥ पाण्डवनके सैनमधितब मचो हाहाकार। भये व्याकुल सुभट सब नहिं लहे तहँ त्रातार ॥ दोहा ॥ अगणित गज हय भटबधे तहँ भीषम गहिटेक। जेहि न लगो शरभीष्मको ऐसो रहो न एक ॥ मारतण्डसम भीषमहि लखिन सक्योकोउतत्र। आतप सम छादित दुसह शर निरखे सर्बत्र ॥ भीषमके शर बरनसों मर्दितभई अचैन। सहि धीरज नहिंरहि सकी भगी पाण्डवीसैन ॥ चौपाई ॥ पारथ वासुदेव के देखत। भगीफौज जीवन अवरेखत ॥ कोऊ काहुहि संग न लीन्हें। बन्धु पितासुत सखा न चीन्हें ॥ गिरत उठत भागत फिरि ताकत। भगे पदाती आरत भाषत ॥ रथी गजीहय सादी केते। निजदल मर्दत भगे अचेते ॥ हैं सधीर पांडव सब भाई। भगे और सब लाजविहाई ॥ आरतशब्द महा तेहिपलमें। भयो भूप पाण्डवके दलमें ॥ तब रथरोकि कृष्णअनुमानी। कहोधनंजय सों यहबानी ॥ पूर्ब सभामधि तुमहे पारथ। प्रणकीन्हों सो करहुयथारथ ॥ भीषम द्रोणादिक बरबांके। दुर्योधन के सुभट निशाके ॥ जे लरिहैं मैं तिनको हनिहौं। रणकेबीच कछू नहिं गनिहौं ॥ बहुदिन गये समयसो आयो। अबइत करिये निजमनभायो ॥ भगो जात तोदल यहिक्षनमें। अब सो प्रण करिहौ केहि दिनमें ॥ कहे कृष्णसो सुनिहितजानी। कहतभये पारथ अभिमानी ॥ तातशीघ्र परदल मधिहलिये। भीषमके ढिग रथलैचलिये ॥ बूढ़हि एकबाणसों मारी। रथसोंदेउँ भूमि परडारी ॥ सो सुनिकृष्ण हांकिबर घोरे। रथ लैगये भीष्म के धोरे ॥ पार्थहिनिजढिगभीष्मनिहारे। गर्जिसिंहसमधनुटंकारे ॥ दोहा ॥ भीषम सों पार्थहि भिरत लखिबहुभट धरि धीर।

त्वर फिरिकै भटन सों लरनलगे बरवीर ॥ क्षणमें अगणित बाण तजि भीषमवीर प्रसन्न। सध्वज पार्थके रथवरहि करि-दीन्हें सुप्रछन्न ॥ भुजंगप्रयात ॥ तहां पार्थ बाणौनको ठाटठाटो। बने बाणसों भीष्मको चापकाटो ॥ महावीर ज्योंचाप सो डारि दीन्हों। महाचंड ह्वै और कोदंडलीन्हों ॥ सुदोर्दण्डसों तानि टंकार कैकै। लगे मारिवेबाण उद्दंडलैकै ॥ बलीपार्थ त्यों वाहि कैवाणचीन्हों। तहांसोऊकोदंड दोखंडकीन्हों ॥ दोहा ॥ तवभी-षम तहँ कहत भे साधु साधु हे वीर। ऐसो दुस्तर करम करि सकै कौन रणधीर ॥ निज पौरुष परमान अब करो युद्ध तजि भर्म। इमिकहि गहि धनु आनफिरि लगे करनरणकर्म ॥ अ-र्जुन पै लागे करन बाणवृष्टि तेहिकाल। अर्जुन लागे भीष्मपै मारन बाण विशाल ॥ चौपाई ॥ तहँ प्रभुनिजसारथ्यसुजानसु। दरशावत भे सदय सज्ञानसु ॥ यहि विधिसों रथचालनकीन्हें। अगणित बाण व्यर्थ करिदीन्हें ॥ तव भीषम बहुशर तेहिक्षन में। हने पार्थ अरु प्रभुके तनमें ॥ फिरिबहुसहस बाण परिहरि कै। सरथ पार्थकहँ छादित करिकै ॥ पाण्डवके जे भट फिरि आये। रहे तिन्हें फिरिमारिभगाये ॥ बाण असंख्यमारि नभ पथपै। देहिछाइ पारथके रथपै ॥ जौ लगि पारथ बाण विदारें। तौलगिभीषम बहुभटमारें ॥ भीषमको गौरव लखिऐसो। पा-रथको मृदुता लखि तैसो ॥ मनमें गुणत भये यदुनायक। नहिं कोउ भीष्महि जीतनलायक ॥ आजुहि भीष्मवीर जगजेना। हतिहि सर्व पाण्डवकी सेना ॥ पाण्डवको दल विचलितदेखी। कौरव हियो गर्व सों भेखी ॥ शोच विहाय सुचित ह्वै मोदत। भीष्महि सविधि प्रशंसि विनोदत ॥ पारथ लखि भीषमकी गु-रुता। करि न सकत निज गुणकी पुरता ॥ ताते हम पाण्डवके कारन। हतत भीषमहि आन विचारन ॥ कृष्ण विचार कियेयह जौलौं। भीष्महने अगणित शरतौलौं ॥ छायदियेदशादिशिशर

चोखे। सो लखिकै केशवअतिरोखे ॥ दोहा॥ इतनेहीमें द्रोणकृप शल्य जयद्रथआदि। भूपसदल सबपार्थपै झुकेप्रकर्षिप्रमादि ॥ लखिसात्विकि तिनसोंकहे भगतरहे जेबीर। फिरहुफिरहु निज धर्म गुणि क्षत्रीभट धरिधीर॥ ऐसो भाषतपुलित स्वरसों निज सुरथ बढ़ाय। भिरि ममदल सों पार्थकी लागे करन सहाय ॥ तब सात्विकिसों प्रभु कहे करि चख अरुण अमंद। जाहिंगये जेजे थिरे तेऊ जाहिं स्वछंद ॥ चौपाई ॥ भीष्मद्रोण आदिक जे रणमें। तिनहिं बधब अब हम यहि क्षणमें ॥ इमिकहि चक्रपाणिमें लीन्हें। करि आमित ऊरधभुज कीन्हें ॥ रथते कूदिसिंह सम परखत। चले भीष्मपै धीरन धरषत ॥ प्रभुको पाणिनाल बपु सरसो। लसो चक्रतहँ बारिजबरसो॥ रिसि रबिसों बिकसित रणदिनमें। निरखि रह्यो तहँ धीरज किनमें ॥ जानि कुरुनको क्षयसब राजा । भये प्रकम्पित सहित समाजा ॥ पुरुष सिंह अनुपम छबिछावत। कृष्णचन्द्र कहँ निजदिशि आवत॥ लखि भीषमकरि अचल शरासन। करत भये प्रभुसोंसम्भाषन ॥ आवहु आवहु त्रिभुवनस्वामी। सादर मोहिंबधहु खगगामी ॥ प्रभुतुमसों हत ह्वैबो रनमें। इतउत श्रेष्ठगुणैं हममनमें ॥ इतनेमें यह अनुचित जानी। कूदि सुरथसों पारथज्ञानी ॥ चालि सत्वर प्रभुको भुजधारी। कहेक्षमहु प्रभुक्षमहुबिचारी॥ तऊस क्रुद्धकृष्ण नहिंमाने। तब पारथपगसोंलपटाने ॥ नृपतबदशये डगपै तायर। थिरे नीठिकै प्रभुविपदाहर॥ विनय करी पारथ बकताबर। क्रोधहि तजहुकृष्णकरुणाकर ॥ हम सबको आपुहिकी गतिहै। यह सबजग जानत प्रभुसाति है॥ दोहा ॥ सुत अरु बन्धुनकी शपथ मोहिं सुनो मति मान। उतहमजो प्रणहैं किये सोतजिकरब न आन॥ लहबअन्तजिमि कुरुनको करिहैं सोइउपाय। यहसुनि केशव मुदित ह्वै रथपर बैठेजाय ॥ पारथरथ पै जाइ तब टंकारे कोदण्ड। शंख बजाये कृष्ण प्रभु

दनुजार्द्दन अतिचण्ड ॥ भुजंगप्रयात ॥ उभयसेनमें त्यों बजे भूरि बाजे। कली कौशलीते बलीवीर गाजे ॥ लगे बाहिबेबाण तेवीर बांके। गने शूरजे शत्रुसेना निशाके ॥ हने पार्थके बज्रसे बाण रूरे। बढ़ी कौरवी सैनको पूरपूरे ॥ गर्जा अश्वसादी रथी भूरिजूझे। तबै पार्थसोंये प्रमार्थीअरूझे ॥ दोहा ॥ शल्यभीष्म भूरिश्रवा दुर्योधन क्षितिपाल। हने पार्थपै वेगसों अस्त्र करालविशाल ॥ शल्य गदा भूरिश्रवा सातबाणकी पंक्ति। तजे हने तो सुत नृपति तोमर भीषम शक्ति ॥ तिनसबके तेअस्त्र सबकाटि शरन सों पार्थ। किये महेन्द्र सुअस्त्रको बिषद प्रयोगयथार्थ ॥ मदिरा ॥ करि उग्र अस्त्र अमन्दको सुप्रयोग तहँ पारथ हते। वलभरे अचल अनेक भट तासुवनकेजेहितरते ॥ कोदण्डबर गाण्डीवसों निर्मुक्त अनुपम शरघने। रथतुरग गजनर धनुष ध्वज शरभये काटत अनगिने ॥ तेहि समय धनुगांडीवको टंकार सुनि पहिंचानिकै। भटभगे हैं द्रुपदादि ते सब फिरतभे अनुमानि कै॥ गांडीवकी धुनिदीह सुनि सुनि सुभटतो शंकित भये। निर्मुक्तबाणअमोघसों बहुमरेबहुशंकितभये ॥ जेवीर तहँ धरिधीरताक्षण पार्थकेसंमुखभये। भिदि शरनसों तेसकल तन तजितुरतहीयमपुरगये ॥ कपिराजकेतुप्रवीरगो तहँमण्डलाकृत धनु रह्यो। नहिंएकभटयहि ओरको तेहिमारिबेको क्षणलह्यो ॥ सब दिशि विदिशि सब शरवरणसों पूरिपारथ रिसभरे। नरनाग हयके रुधिरकी बरनदी तरु विरचित करे ॥ मद मेद फेन समानहै सबजन्तुसे तामधि परे। अरुअस्त्र अखिलअलार समतहँ फिरत है इतउततरे ॥ दोहा ॥ इतनेमें सन्ध्याभई लई अस्तिगत सूर। उभयओर फिरि चलतभो उभयभटनको पूर ॥ शल्यादिक सब भूपगण तेहि दिन निजथरजात। भये ससहत पार्थको वर बिक्रम अवदात ॥ अयुत रथी अरु सातसै गजकरि दुस्तर काज.। हय पदचारी अनगिने पार्थ बिनाशे

आज ॥ यहिविधि लरि तीजे दिवस निशि निजनिजथरजाय। करी अहारादिक क्रिया उभयसैन समुदाय ॥

इतिभीष्मपर्वणितृतीयादिवसयुद्धवर्णनोनामपंचविंशोऽध्यायः २५ ॥

दोहा ॥ चौथो दिन लहि भोरही उभय भूपदल साजि । बजवावतभे दुन्दुभी समरभूमि मधिराजि ॥ अर्धचन्द्र वरव्यूह अरु गारुड़ व्यूहअपार । विराचि पूर्ववत करतभे धनुषनकीटंकार ॥ मैंगलरथ मंजुल महत चख श्रुतिके सुखदान । राजे घने निशान अरु बाजे घने निशान ॥ सोरठा ॥ शंख वजायबजाय सुधनु चढ़ाय चढ़ायके । सुरथ बढ़ाय बढ़ाय भिरत भयेभट भटनसों ॥ भुजंगप्रयात ॥ भिरे हांकदै पायदे पायदे सों । रथी सों रथी ऐ भिरे काय देसों ॥ भिरे बाजिसादीनसों बाजिसादी । भिरे मैंगली मैंगलीसों प्रमादी ॥ घने बाणमारैं घनेबाण वारैं । न टारे टरैं नाटरैं ताहिटारैं ॥ हनैंबाण हीरे भरेक्रोधडाटैं । ऊरूलंक जानू भुजा शीश काटैं ॥ ध्वजाचाप छत्रै रथैभूरि छेदैं । करी सूत बाजीनके गात भेदैं ॥ गदाशक्ति औभिण्डिपालै करालैं । घनेतोमरैं भल्लनाराच घालैं ॥ कितेमैंगलीबाजिसादीनमारैं । कितेबाजि सादी गजीये विदारैं ॥ रथी बाजिसादीनसों रंग राच्यो । रथी मैंगली येकहूं जंग माच्यो ॥ दोहा ॥ बिनुमारे मारे मरें मारे मरें अनेक । मारे विनु मारे सदृश मारैं किते सटेक ॥ घोरयुद्ध यहि भांतिको मचोतहां क्षितिपाल । उभय ओरकेभटनके शिरचढ़ि निरतोकाल ॥ पांचताल मिति उन्नत शुचि तालध्वज बान । भीष्म पार्थ कहँ लखितहां संमुखचलेअमान॥ चौपाई ॥ द्रोण शल्य कृप आदि प्रमाथी । लैसँग सहसन रथी सुसाथी ॥ दुर्योधन भीषमके गोहन । चले वेगसों जयकेछोहन ॥ तिन्हें देखि अभिमन्यु रिसाई । सहसरथिन सह सुरथ बढ़ाई॥ सरित प्रवाह सदृशअति जवसों । बीचहि भिरत भयो तिन सबसों ॥ कठिनयुद्ध माचोतहँतिनसों । पृथक् पृथक् कहि नियरैं

तिनसों॥ मंत्रित ज्वलित ज्वलनसम ताथर। लसो पार्थकोसु-
त योधाबर॥ तहँअगणित सुभटनबधि कढ़िकै। भिरे पार्थसों
भीषम बढ़िकै॥ सहित द्रोण कृप तासुत राजा। गये भीष्मके
सँगसहसाजा॥ चित्रसेन अरु अश्वत्थामा। भूरिश्रवा शल्य
जयकामा॥ सुत सांजमन भूपकोयेसब। भिरे पार्थके सुतसोंनहँ
तब॥ तिनसों भिरो पार्थसुत तैसे। सरगजसों केहरि शिशु
जैसे॥ लहैनते अभिमन्यु सुभटकी। तुलताधनु विधि नागर
नटकी॥ अभिमन्युहिं अतिप्रबल निरेखी। सदलसर्व नृपअ-
तिशय तेखी॥ पारथसुतहिं घेरि सबदिशिसों। लागे हनन
अस्त्रभरि रिसि सों॥ तहँ अभिमन्यु अशंकित मन सों। तिन
के अस्त्रन काटि शरन सों॥ अश्वत्थामाके गुरु तनमें। हने
एकशर कोपित मनमें॥ दोहा॥ लखि सांजमन नरेशके सुतको
ध्वजा उदण्ड। आठ बाण सों काटिकै करि दीन्हों बहुखण्ड॥
सोमदत्त तेहि क्षण हने शक्ति प्रचण्डी चाहि। काटि दये अ-
भिमन्यु भट तीक्षण शर हनि ताहि॥ चौपाई॥ पांचबाणअति-
शय अनिआरे। शल्य भूप के तनमधि मारे॥ तबनृपशल्यक्रोध
सों छाये। करिलाघव शतबाणचलाये॥ तिन्हैं काटि अभिमन्यु
प्रचारी। हते शल्य के हयरथ चारी॥ निरखिबिचारयो तासुत
राजा। जीतैंगे ये सहित समाजा॥ तबहिंपचीससहस भटगन-
को। शासनदयो कुपित तब मनको॥ तुम सब शीघ्र बधो है
भाई। मम सम्मुख लरिलहत बड़ाई॥ ते सिगरे भट सत्वर
जाई। लागे तासों करन लराई॥ सोलखि धृष्टद्युम्न अनखाई।
चतुरंगिणि सेना सहआई॥ भिरो सकल सेनासों कैसे। घने
बिपिनसों मारुत जैसे॥ जात पार्थ पै कृपहि निरेखी। धृष्टद्यु-
म्न सेनापति तेखी॥ तीनि बाण अनुपम दुखधारे। भालदेश
मधिमारि प्रचारे॥ भट कृतबरमाको अनुचारी। ताकहँ बधो
भल्ल बरमारी॥ मद्रदेशके श्रेष्ठ भटनको। बेधे हनि दशशार

गहिप्रनको ॥ दमनहिं हतो एकशर मारी । धृष्टद्युम्न दलपति धनुधारी ॥ ताथरसुत सांजमन नृपतिको । बीरनमें बरणोबल अतिको ॥ धृष्टद्युम्न दलपति के तनमें । दश शर हने कोपकरि मनमें ॥ दोहा ॥ दशशर मारे सूतकहँ नृपको सुत ह्वै चण्ड । तब दलपति नृप तनय को धनुकीन्हों दोखण्ड ॥ चारि बाण हनि हनतभो बाजीचारि अमान । पृष्ठरक्ष अरु सूतको बधे मारिद्वै बान ॥ सोरठा ॥ तब नृपको सुतधीर खड्गचर्म गहिकूदि कै । करत पैंतरे बीर धृष्टद्युम्न पै चलतभो ॥ गुबतोमर ॥ नृपसुतहि आवत देखिकै । सेनाधिपति अवरेखिकै ॥ बहुबाणमारि भूमिकै । तेहि बारि नृपसुत घूमिकै ॥ बहुढालपै ढरकायकै । ढिगगयो असिफरकायकै ॥ तेहि धृष्टद्युम्न के शीशमें । लहि गदा मारी शीशमें ॥ शिरसक्यो नहिं लहि झेलसों । फटिफूटिगोफल बेलसों ॥ तब गिरोमरि सुतभूपको । जोबिदितसागर रूपको ॥ नृप सांजमन बिनु बारभो । यहि ओर हाहाकारभो ॥ तब सांजमन अतिकोपिकै । बढ़िभिरो जयकोचोपिकै ॥ दोहा ॥ थिरहु थिरहु रहु भाषिकै नृप सांजमनकठोर । धृष्टद्युम्नकेगात में हने तीनिशरघोर ॥ हनेशल्य नृप तीनि शर धृष्टद्युम्नके गात । धृष्टद्युम्न तिनकहँ हने तितनेशर अवदात ॥ दुहूंओर के भटन सों मचायुद्धतहँ घोर । पृथक्पृथक् सो सब कहै भूपलहैं को ओर ॥ जयकरी ॥ यह सुनिकै धृतराष्ट्र महीप । कहै सुनो संजय कुल दीप ॥ प्रतिदिन मम भट होत अचैन । अरुप्रतिदिन हारति मम सैन ॥ बिधिको निर्मित प्रबलप्रयोग । नहिं ममसुभटनहारनयोग ॥ हँसिबोले संजयमतिमान । नृपहमकहैं सत्य नहिंआन ॥ तुमजोकरी अनीति महान । अब ताकोफल मिलत निदान ॥ सुनिबोले धृतराष्ट्र लजाय । कहत रहे सो कहहु बुझाय ॥ तबसंजय बोले सुनुभूप । शल्यनृपति नवबाण अनूप ॥ मारे धृष्टद्युम्नके काय । धृष्टद्युम्नतब क्रोधबढ़ाय ॥ हने

शल्यकहँ अगणितबान। शल्यहने बहुबाण अमान॥ घोरयुद्ध कीन्हें ते धीर। अतुल पराक्रम तुल बलबीर॥ तबनृप शल्य सुभटता ठाटि। शरसोंद्वै शरासनकाटि॥ काटिशरासन शर समुदाय। धृष्टद्युम्नपै हनेसचाय॥ धृष्टद्युम्न कहँपीड़ितदेखि। श्रीअभिमन्यु वीरअति तेखि॥ हने तीनिशर कठिन कराल। शल्यभूपके तन मधिहाल॥ हानिहनि अस्त्र अस्त्र प्रति ऊटि। कठिन युद्धकीन्हों ते जूटि॥ सुवन पार्थको वीर अधर्ष। तहां शल्यपै भयो प्रकर्ष॥ दोहा॥ तब दशरथिन समेत बढ़ि दुर्योधन नृपजाय। शल्यहि मधिमें कारिलगे तजन अस्त्रसमुदाय॥ दुर्मर्षण दुर्मुखसुभट दुःशासन रणधीर। दुर्योधन पुरमित्रअरु सत्यव्रत वरवीर॥ चित्रसेन अरु दुःसह अरुविकर्ण बलवान। सुभट विविंशत ये सुदश वीरगुनो मतिमान॥ तब उतके दश वीरवर भिरेआय हेतात। पांच द्रौपदीके सुवन धृष्टद्युम्न विख्यात॥ भीमनकुल सहदेव अरु भटअभिमन्यु उदार। येदश दशभट भिरितहां कीन्हें युद्ध अपार॥ चौपाई॥ माचो कठिन युद्ध तिन तिनसों। होतहँ जुटेजोर जिन जिनसों॥ प्रतिद्वन्दिनको नाश विचारी। मारतभये प्रचारि प्रचारी॥ तहँदुर्योधन नृपरणचारी। वरकर लाघव विधिअनुसारी॥ चारिबाण अतिशय अनियारे। धृष्टद्युम्न दलपति कहँ मारे॥ शरपचीस दुरमर्षणमारे। चित्रसेन शर सातप्रहारे॥ शरशर हने विविंशत वरभट। हनेदुशासन त्रयशर परगट॥ धृष्टद्युम्न अति गौरव लीन्हें। भूप कठिनकर लाघव कीन्हें॥ इनसबके तनमधि अनियारे।बाणपचीस पचीस प्रहारे॥ भटअभिमन्यु सुवीर प्रकरषो। पुरमित्रहि दशशर हनिहरषो॥ सत्यव्रतहि दशबाण प्रहारी। गरजो पार्थतनयधनुधारी॥ माद्रीतनय शल्यसों भिरिकै।बाणवृष्टि कीन्हेंतहँ थिरिकै॥ तिनपैशल्यबाण बहुघाले। एक एकसों तीक्षण आले॥ तहँ दुर्योधन भूपहिदेखी। भीम-

सेन ध्रुवबध अवरेखी ॥ अति गुरुगदा आयसी गहिकै । रथ पर खरोभयो थिरुकाहिकै ॥ सानुमान सम भीमहिं देखी । भगे सकल तौसुत भयभेखी ॥ लखिसिगरेक्षितिपाल सकाने । अनरथ होनचहत अनुमाने ॥ दोहा ॥ तब मगधाधिप सोंकहे दुर्योधन क्षितिपाल । निजदल सहबढ़ि लखिबधो भीमहिं तुमयहि काल ॥ सोसुनि मगधाधीश गुणि गुरु जययश कहँचोपि । अयुत गजरथन सहित बढ़िचलो भीमपै कोपि ॥ आगेकरि मगधेशकहँ दुर्योधन सहसैन । दुन्दुभि बजवावत चलोसर्ब गर्बको ऐन ॥ सोरठा ॥ गजानीक अतिभीम निज सन्मुख आवत निरखि । कूदिचलो भटभीम सुरथ सानुते सिंहवत ॥ चौपाई ॥ गदापाणि भुज ऊरध कीन्हे । काल कराल दण्डजनुलीन्हे ॥ बढ़ि भटभीम सिंहसम गरज्यो । सकल गजरथनको हिय दरज्यो ॥ गजानीकमधिगदाप्रहारो । अगणितद्विरद निमिषमधिमारो ॥ हतेबज्रधर जिमि दनुजनको । हतेभीमतहँ तथा गजनको ॥ सुवनद्रौपदीके रणधीरा । सहदेव नकुल बांकुरे बीरा ॥ अरु अभिमन्यु बीरधनुधारी । धृष्टद्युम्न ये नवभट भारी ॥ भीमसेन भटकेढिग रहिकै । सगरव हियो रोषसों नहिकै ॥ करिकरि करलाघव अतिगाढ़े । हनिहनिबाण क्षुरप्र उकाढ़े ॥ कियेगजरथनके शिरछेदन । को केहि हत्यो लख्यो यहभेदन ॥ प्रपतै मुण्ड बितुण्डनते तिमि । गिरिशिला बहुशृङ्गनिते जिमि ॥ कटैं शीश भटनसे करिनपै । गतशाखा तरु यथा गिरिनपै ॥ ऐरावतसम गजपै रूढ़ा । मगधाधीश नरेश अबूढ़ा ॥ पार्थतनयके सम्मुख आयो । चाहिप्रबल गजसों हतवायो ॥ तबअभिमन्यु द्विरदके तनमें । मारेबाण कोपकरि मनमें ॥ करिचिक्कार द्विरद मतवारो । रह्यो खरोह्वै भयसों भारो ॥ तब अभिमन्यु क्षितीशहि डाटे । बाण क्षुरप्रमारि शिरकाटे ॥ दोहा ॥ मगधाधीश महीप को बधि अभिमन्यु कुमार । बाणवृष्टिकरि करतभो सुटभनको

संहार ॥ भीमसेन तहँ हननभो अगणितमत्त वितुण्ड । तोरे अगणित द्विरदके चरणदन्तअरुशुण्ड ॥ दोहा ॥ प्रवलमत्त वि-तुंड वरके झुंडबीच अभर्म । भीमविक्रम भीमभट तहँ कियो अद्भुतकर्म ॥ गदागुर्वी आयसी दृढ़दीर्घ ताहि प्रहारि । द्विरद अगणित मारिक्षणमें दिये महिपै डारि ॥ शैलसमसे द्विरद ता थर लसे महिपैभूरि । गलित जलसँग गेरुखानि समान शो-णित पूरि ॥ खरेशोणित वमत बहुलहि गदाको व्यापार । धसी बहुगिरि गुफासों मनु भारतीकी धार ॥ भगे बहु गज भीमको तहँ देखते डरपाय । उड़े रहस वायुवश जिमि तरु-नको समुदाय ॥ रथी हयबहु सुभट पैदर सैनिनसों मर्दि । धृष्टद्युम्नादिक निरखिसो हँसे भूमिनर्दि ॥ भरीशोणित गदा गुर्वीलये चरतअधीन । मारिगज समुदायताथर लसतभोभट भीम ॥ शूलभृत कलपांतमें जिमि नाशभूतसमस्त । कालरू-प कराल निरतत करतचालन हस्त ॥ दोहा ॥ गजानीक मर-दित निरखि दुर्योधन अनखाय । सर्व भटन सों कहतभे बधो भीमकहँ जाय ॥ सुनि अज्ञा नृपराजकी सुभट सैघसमुदाय । भीम अचल पै चलतभे युद्धभूमि लसदाय ॥ आवत लखि उमड़ो प्रवल सिन्धु सरिस दलसर्व । गिरिवेलासम ताहि सों रोकत भीमसगर्व ॥ चौपाई ॥ प्रविशि सैनमधि भीम रिसाई । लाग्यो हतन सैन समुदाई ॥ रथपर हयगजगणपर महिपर । हते असंख्य सुभट सो ताथर ॥ गदापाणि भटवर विरुझानो । शूलपाणिसम तहां लखानो ॥ नहिंबढ़िजोर दियै भट केऊ । रहेदूरि डरपत हे तेऊ ॥ तहांभीम जिनके दिशि देखे । मरे आजु ध्रुव तिन अवरेखे ॥ क्षुधित गयंद इक्षुके वनमें । लसै लसो तिमि भीमभटनमें ॥ तहँ अभिमन्यु आदि धनुधारी । रहे भीमभटके सहचारी ॥ भूपति कठिन युद्ध तेहि पलमें । स-चो दुहूंदल मधि सब थलमें ॥ निजदल भगदत भीमहिंदेखी ।

विदित धनुर्द्धर भीषम तेखी ॥ चलो भीमभट अरिमरदन पै ।
जिमिवर फणिमणि ग्राहक जनपै ॥ फूतकार सम बहुशर छा-
ड़त । गे अरिगणके हियभय माड़त ॥ भीष्महि निजपै आ-
वतलखिकै । बढ़िसम्मुख भो भीम हरखिकै ॥ सात्वकि यह
वृत्तान्त निहारी । चलो भीष्मपै धनुटंकारी ॥ तहँ इतके बहु
योधा भिरिकै । सके आड़ि सात्वकिहि थिरिकै ॥ देखिअलंबुष
असुरअमाना । हने सात्वकिहि वरदशवाना ॥ सात्वकिताहि
चारिशरमारी । बढ़ि भीषम पै चले प्रचारी ॥ दोहा ॥ इतने में
भूरिश्रवा भिरि सात्वकिसों भूप । हनतभयो नवबाणअति ती-
क्षण रचित अनूप ॥ जेहि सात्वकिबहु शरहने सो सात्वकिहि
अनेक । वाहिअस्त्र प्रति अस्त्रते कीन्हें युद्धसटेक ॥ चौपाई ॥ यह
लखिकै दुर्योधनराजा । बढ़िसबन्धु सहसैनसमाजा ॥ भूरिश्र-
वहि मध्यमें करिकै । लगेपरनसों लरन सँभरिकै ॥ तब सब
पांडव इनसब जनसों । लरनलगे भिरिनिर्भयमनसों ॥ अति-
शय कठिनयुद्धतहँमाचो । सबकेहियेवीररसराचो ॥ गरुईगदा
पाणिमेंलीन्हें । तहांभीम अतिविक्रमकीन्हें ॥ नन्दकतौसुतभट
बलवाना । कोपिहनेसि भीमहिंबहुबाना ॥ दुर्योधननौशरहनि
हरषे । लहिअवसर अगणितशरबरषे ॥ तबगुणिभीमचढ़ेनिज
रथपै । गरजिविराजतभेरथपथपै ॥ तहां विशोक सूतसोंभाषे ।
येसबममवध हितअभिलाषे ॥ तातेइन्हेंवधबहमक्षणमें । रहेहु
सो यत्न सदातुम रणमें ॥ इमि कहिकै निजधनु टंकारे । दुर्यो-
धनहिं बाण दशमारे ॥ तीनिबाण नन्दकके तनमें । मारेभीम
गर्वगहिमननें ॥ तौलगि साठिबाण अनियारे । दुर्योधन क्षिति-
पाल प्रहारे ॥ हने तीनिशर सूत विशोकहि । अरु काटो धनु
दृढ़ताओ कहि ॥ तुरित वृकोदर सो धनुताजिकै । गहि धनु
आन सगर्व गरजिकै ॥ मारिक्षुरप्र सुबाणअखेदे । दुर्योधन
नृपको धनुछेदे ॥ दोहा ॥ सो धनुताजि दुर्योधनौ गहि अतिदृढ़

को दण्ड। भीमसेनके उर विषे हनेबाणउद्दण्ड ॥ अति कठोर सो शरलगे मुरछिभीम बलवान । अचल अचेष्टित ह्वैरहे रथ परमृतकसमान ॥ तात्क्षण सब पाण्डव सिमिटि महाक्रोध सों पूरि । दुर्योधन नृप सदल पै बरषत भे शरभूरि ॥ तोमर ॥ दुहुँ ओर सों तेहि जाम । शरचले अति अभिराम ॥ शरपूरिगे सब ठौर । नहिं परो लखि कछुऔर ॥ तब चेतिभीम प्रचंड। टंकोरि गुरुकोदंड ॥ तौतनयनृपकेगात । शरआठमारेतात ॥ जोशल्य मद्राधीश । तेहिहनेबाणपचीश॥तौतनयनृपनाहिंतत्र । थिरिसकोगोअन्यत्र ॥ तौतनय चौदहजाय । तबभिरतभे गहिचाय ॥ नृप सुनो तिनकेनाम । अरु किये जिमिसंग्राम ॥ दोहा ॥ सेनापति जलसन्ध अरुउग्रसुलोचनवीर । भीम अलोलुप भीमरथ भीमबाहुरणधीर ॥ दुःप्रधर्ष दुर्मुखविकट अरु विचित्रसुशल्ल जौन । अरु सुखेण ये भीमसों भिरे सुनौ क्षितिरौन ॥ चौपाई ॥ ये सब भीमसेन सों भिरिकै । घोर युद्ध कीन्हों तहँ थिरिकै ॥ हनिक्षुरप्र शरभीम सुखारो । सेनापतिको शीशविदारो ॥ फिरि हनि तीनिबाण अनियारे । जलसन्धहिबधि महिपैडारे ॥ तदनुसुखेणहिं हति सुखपाये । बधिउग्रहि यमलोक पठाये ॥ तब हनिभीम बाहुको शरसों । न्यारो करत भयो शिरधरसों ॥ भीम भीम रथको तेहिक्षणमें । मार्यो भीम वृकोदर रणमें ॥ तदनु सुलोचन को बधकरिकै । गरजत भयो मोदसों भरिकै ॥ यहि विधितो वसुसुत कहँ स्वामी । बधेभीम दुर्मद जयकामी ॥ तब जे भट हते भयपागे । थिरि नहिं सके वेगसोंभागे ॥ यह लखिकै भीषम अति माखे । सकल महा रथिकन सो भाखे ॥ अब मति क्षोभ जीवको करहू । भिरिभिरि यथापराक्रम लरहू ॥ सोसुनिकै सबभट उमदाने । चलेभीमपै अति रिससाने ॥ तिनसोंभिरत भयेभटउतके । हितकारी पांडवबल युतके ॥ भिरि इत उतके भट सहसाजा । तुमुल युद्ध कीन्हों

तहँ राजा ॥ अति उन्नतमैंगल मतवारो । तदारूढ़ भगदत्त रिसारो ॥ धनुषअशनि गरि गरजि प्रकरषो । घनेबाण बारिद समबरषो ॥ दोहा ॥ तब भीमादिक सुभटबर प्रबल द्विरदके गात । बहुशरमारे क्रोध करिवज्रसदृशअवदात ॥ क्षतजरुधिरकी धारबहु तेसों गज तेहिकाल । अगणित अरुण सुलीक युत घनसम लसो बिशाल ॥ सोरठा ॥ ताक्षणसो गजराज ह्वै प्रेरित भगदत्तसों । परदल मरदन काजचलो गरजि घनघोर सम ॥ चौपाई ॥ लखि तेहि गजको रूप दराजा । डरपे पांडव सहित समाजा ॥ जानि असह्य पराक्रम गजको । लखे उपाव नटुसह मरजको ॥लखिभीमहि भगदत्तप्रचारे । बाण बिशाल हृदयमधि मारे ॥ लागेबाण भीमभट अरछित । ध्वजसों अभिरि रहो ह्वै मुरछित ॥ उतके सुभटन शंकित देखी । अरुभीमहि इमि मूर्छित पेखी ॥ हँसि गरजो भगदत्त नरेशा । करौं आजु पांडवन अलेशा ॥ मूर्छित भये भीमभट जबहीं । राक्षस बीर घटोत्कच तबहीं ॥ ह्वै प्रछन्न माया बिस्तारी । प्रगटोभेष भयानक धारी ॥ ऐरावत गजबरपै बैठो । मोछउमेठि ऐंठि सो ऐंठो ॥ दिग्गज तीनि साथमें सोहे । तिनपै तीनि असुर अति कोहे ॥ यहि बिधि चारि कालसम धाई । नृप भगदत्त बीर पै जाई ॥ चारिउ दिशिते घेरि गजन सों । लागे हनन अनेक शरनसों ॥ चतुरदन्त तेगज भिरिरिसिसों । लागे हननगजहि सब दिशिसों ॥ गजभगदत्त भूपको तनसों । ह्वैपीड़ित तिनके गजगनसों ॥ करि आरत धुनि चिघरोताक्षण । सोसुनिमोदित भे पांडव गण ॥ तब भीषम द्रोणादिक सबसों । कहे सुनो यह मन दै हमसों ॥ दोहा ॥ मायावी राक्षस प्रबल बीरघटोत्कच जौन । भगदत्तहि चाहत बधन यहि क्षण सो बल भौन ॥ तातेअब उत शीघ्र चलि नृपको करोसहाय । मरननपावैअसुर सों भिरि लरिलेहु बचाय ॥ सोरठा ॥ द्रोणादिक भटसर्ब भी-

षमके ये वचनसुनि । वरषतवाणमगर्व चले वेगसों असुरपै ॥
महिखरी ॥ तहँ इन्हें जात घटोत्कच पै सकल पांडवदेखिकै । अ-
ति वेगसों रथहांकि उनपै चलत भे अति तेखिकै ॥ तवकौरवी
दलप्रवल वढ़ि निज ओर आवत पेखिकै । वरवीर धीर घ-
टोत्कच तिहि नृपहि तजि अवरेखिकै ॥ वढ़ि तुरतइनपैचलो
धनुटंकारि भटन प्रचारिकै । इमि देखि ताकहँ द्रोणसों तहँ कहे
भीष्म विचारिकै ॥ यह प्रवलराक्षस कौतुकी सुसहाय तासों
भिरनको । नहिंहोत मम मनचाव युतनहिं गुणतअवइताथिरन
को ॥ वल धैर्य्य विक्रम शूरता अरु अस्त्रविधिके मर्मसों । यह
जीतिवे कीयोगहैं नाहिं वज्रधरण कर्मसों ॥ भिरि पांडवनके
शरणसों इत सकल वाहन श्रमितहैं । सवसुभट शस्त्रजक्षतन
सों अति भये पीड़ित अमितहैं ॥ अवलर यासों आभिरि एसो
इतैनहिं कोउ सुचितहै । यहवूझि आजु उपायकछु करिवहुरि
चलिवो उचितहै ॥ करि रजनिमें विश्राम फिरि संग्रामभोरहि
करवहे । यहवचनसुनिसवनृपति गुणितुमकहेसोसातिइमिकहे॥
दोहा ॥इहिमतको सिद्धान्त करि पलटि जुगुतिसोंसर्व । निजडेरन
प्रतिचलतभे लज्जितसेतजिगर्व ॥ दुर्योधननृपके दलहि रणते
विमुख निरेखि । पांडव वजवावत भये दुन्दुभि सुदिनसरेखि॥
तदनंतर पांडव सदल निज डेरन मधिजाय । उचित कृत्य
सव करतभे निशिदिनके सुखदाय॥ सोरठा ॥ निज डेरन मधि
जाय चिंतित दुर्योधन नृपति । उचित कृत्य करवाय शोका-
कुलगे भीष्मपै ॥
इतिभीष्मपर्वणिचतुर्थदिनयुद्धवर्णनोनामषट्विंशोऽध्यायः २६ ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ समाचार चौथे दिवस कोसुनि वृद्ध
महीप । संजयसों वूझत भये सुनहु भूप कुलदीप ॥ धृतराष्ट्रउवा-
च ॥ संजय सुनि पाण्डवनको नित्य अमानुपकर्म । निजपुत्रन
की हारि सुनि होत मोहिं अति भर्म ॥ पाण्डव सवै अवध्य हैं

कैहैं योगीदक्ष । जातेवै नहिंमरत निति ममसुत मरतप्रतक्ष ॥
करन चहत हैं भीम अब ममसब सुतकोनास । संजय यहनि-
श्चय समुझि होतमोहिं अतित्रास ॥ भीष्मद्रोण कृप सहितमम
सुतइमि रणतेजाय । कियेकहा सोसब कहो हेसंजयसमुझाय ॥
रोला ॥ कहेसंजय सुनोनृप इत और कछुनहिं भेद । कियेजौन
कुकर्म तुम यह तासु कुफल सखेद ॥ करत पाण्डव धर्म युत
निति उचित कर्म विधान । करत नित्य अधर्मअनुचित तनय
तोअज्ञान ॥ किये तो सुत पाण्डवन सों यथा अनुचित कर्म ।
नीचजन नहिं करत ऐसे कबहुं अनय अधर्म ॥ द्रोण भीषम
व्यास कृपहम बिदुर ये बहुबार । मनेकीन्हें सो न माने भूपतुम
तुवबार ॥ पाण्डवन कहँजीति हैं यह सुतनको मतमानि । किये
कारण जान ताको काजयह दुखदानि ॥ भूप दुर्योधन रजनि
में भीष्मके ढिगजाय । कहो यह जोकहो हमसों नृपति तुम
बिलखाय ॥ कहे तासों भीष्मइमि हेसुनो कौरवनाथ । कहो
तुमहिं बुझाय हमबहुबार गहिगहिहाथ ॥ पाण्डवन कहँ भाग
देकरि सुहित प्रेम बढ़ाय । भूमिभोगो सहित बन्धुन कपट बैर
बिहाय ॥ सो न मानो भूपतुमयह लखोतासु निदान । इहै अ-
वशि कुमंत्रकोफल कहत सबल सुजान ॥ भूपजीतै पाण्डवन
कहँवीर ऐसो कौन । सुनो मनदै कहतहों मैं हेतुताको जौन ॥
सदा रक्षक पाण्डवनके कृष्ण करुणा ऐन । कृष्णको सुप्रभाव
हमसो कहे सुमुनि सचैन ॥ कहैंतुमसों तौन हम तुम सुनो मन
दै भूप । सुनेपावन करणसों इतिहास परमअनूप ॥ एक दिन
विधिगंधमादन शैलपै अनुमानि । राजसुरन समेत ध्याये प्र-
भुहि जग हितजानि ॥ लखे विधि तहँ गगनपै प्रज्वलितपरम
अमंद । तेजराशि विमानपै आसीन पुरुष स्वछंद ॥ लखतही
उठितुरित वेधा नौमि युगकर जोरि । भयेगदगद कियेअस्तु-
ति गह भक्ति अथोरि ॥ सुप्रसीद प्रभुपद्मांक्ष पुरुष पुराण

पावनकर्ण। पद्मगर्भ सुपद्मनाभ सुखाहिपद्माभर्ण॥ कवित्त॥ विश्वावसु विश्वेश विश्वमूर्त्ति विश्वकृत विभवसी निरामयमूल भव्य भगवान। पादतो धरणिदिशि बाहु दिवसीसुनय बल सत्य धर्म्म कर्म्म करतव्यबलवान। मूर्त्तिहमसुरकाय शशिसूर चखचारु अग्नितेज जलखेद बायुश्वास सुखदान। अश्विनि करणगिरा जीभिवेद संस्कार आपुकहें विश्वमय नाथ करुणा निधान॥ दोहा॥ तुवप्रसादते हम रचत सबथंर भूत समस्त। सबकी गतिहैं आपुसों सबमधि आपु प्रशस्त॥ नाथ हतेतुम असुरगण जिते सुरनके हेत। ते सब कैंहं भूमिपति व्यथवत महिहि अचेत॥ ताते प्रभुतुम करिकृपा भूपविशद यदुवंश। वासुदेव ह्वै करहुमहि भार विबुध अवतंश॥ प्रथम सिरजि निजअंशसों संकरषणहिं उदार। तदनु प्रगटह्वै कृष्णतुम हरेहु भूमिकोभार॥ जयकरी॥ करि सुप्रद्युम्नहिं आत्मज बार। लहेहु तासु अनिरुद्ध कुमार॥ इमिविभज्य निजअंश उदार। ह्वै मानुष हरिये महिभार॥ सुनि तथास्तुकहि श्रीभगवान। करुणानिधिभे अन्तर्द्धान॥ तब सुरगण विधिसों यहभेद। बूझे सो विधि कहेअखेद॥ परब्रह्म निर्गुण भगवान। जोअव्यय अव्यक्त महान॥ तासों हम यहविनयसचेत। कीन्हीं जगधुरनाशन हेत॥ सुनि प्रभुकहे लेन अवतार। क्रमसों हरण भूमिकोभार॥ ह्वै यदुवंशज कृष्ण उदार। करिहैं महिपै भूरि विहार॥ तहँजे जनिहैं मानुषताहि। तेसब मन्दबुद्धि पटुनाहि॥ ज्ञेय ज्ञेय ज्ञापक चितज्ञान। ज्ञाता कर्त्ता प्रभु भगवान॥ व्यापक ईश्वर कृष्णहि जानि। भजिहैं ते लहिहैं सुखखानि॥ इमिकहि गे वेधा निजलोक। गेसुर ऋषिगण निज निज ओक॥ सुनो भूमिपति यह इतिहास। परशुराम अरु नारदव्यास॥ मार्कण्डेय सुमुनि अवदान। हमसों कहेरहे हेतात॥ आत्मज जासु विरंचि प्रधान। सोजगदीश कृष्ण भगवान॥ लखिपा-

पांडवको धर्म सुनीति । हैं उनपै अनुकूल सप्रीति ॥ दोहा ॥ यह विचारि हम प्रथमहीं भूपतुम्हैं बहुबार । दियो सिखापन सुनि न तुम मानैसो व्यवहार ॥ हैं नारायण कृष्णप्रभु अर्जुन नर विख्यात । करि तिनसों इमि बैरतुम लहौ कुशलकिमितात ॥ जहां कृष्ण तहँ धर्महै जहां धर्मजयतत्र । इहां न कृष्ण न धर्महै होय सुजयकिमि अत्र ॥ सोरठा ॥ भीषमके ये बैन सुनि दुर्योधन भूपमणि । कृष्णहिंराजिवनैन परमेश्वर जाने समुझि ॥ चौपाई ॥ भीष्म पितामहसों यहसुनिकै । अवनीपति दुर्योधन गुनिकै ॥ कहे कहौप्रभु गुण मनभाये । सोसुनि भीषम अतिसुख पाये ॥ जेहि विधि प्रभु जग उत्पति कीन्हैं । पृथक् पृथक्सो सब कहि दीन्हैं ॥ सोकहि कहे भीष्म गुरुज्ञानी । पांडव यथातथ्य यह जानी ॥ हैं कीन्हे केशवहि अराधित । तासोंपावत सुजय अबाधित ॥ भीष्मपितामह यहिविधिकहिकै । चुपह्वैरहे मौनता गहिकै ॥ तबलौंतनय बिताहुबैनाई । सोइजगे फिरिनिशाबिताई ॥ निरखिभोरनृप अवरपथाढ़े । उभयसैन साजिसाजिभेठाढ़े ॥ तहां भीष्म अतिगौरव लीन्हें । मकरव्यूहकी रचनाकीन्हें ॥ मुखथर रहेआपु जगजेना । करि सबअंगचतुरंगिनिसेना ॥ सोलखिकै पांडवअतिकोहे । विधिवत बाजिव्यूह अतिसोहे ॥ मुखथर रहो भीमभट भारी । बिदित पराक्रम अरि मदगारी ॥ धृष्टद्युम्न अरुबीर शिखण्डी । चखभेअनलिप अमलअदण्डी ॥ सात्यकिशीश पार्थभे ग्रीवा । तैसँग बहुभटपालक सीवा ॥ बामपक्षभे द्रुपदनरेशा । सदल सपुत्र भयानक भेशा ॥ दक्षिण पक्षभयो जयलायक । केकयपति अक्षौहिणि नायक ॥ नृपति युधिष्ठिर सहितसमाजा । पृष्ठदेश हे सुनियेराजा ॥ सुवन द्रौपदीके अरि मर्दन । अरु अभिमन्यु सिंहसम नर्दन ॥ पुच्छरक्ष हे अरिदल गंजन । निज चरितन गुरुजनमनरंजन ॥ इमिरचि बाजिव्यूह अति भीषम । चलो भीमभट जहँहैं भीषम ॥ दोहा ॥ मकरव्यूह

मुखभीष्म पै बरषत बाण बिशाल । बाजिव्यूह मुखभीम भट चलो चलै जिमि काल ॥ तब भीषम अति कोपकरि बरषि बाणसमुदाय । पांडवके दलकेमध्य मोहित करकमचाय ॥ सोरठा ॥ निजदल अरदितदेख बीरधनंजय कोपकरि । भयो भयानक वेख हन्यो भीष्मपै सहसशर ॥ चौपाई ॥ कहि दुर्योधन भूपति ज्ञानी । कही द्रोणसों यहिबिधि बानी ॥ पूर्वदिवसमें पांडवआई । बधे सुभटबहु अरुबसु भाई ॥ भीष्म आदि तुम सबबलभारे । एक प्रमाण पुरुष नहिंमारे ॥ हम तुम्हरे भीषमके बलसों । लरन चहतहैं इन्द्र प्रबलसों ॥ नहिं पांडवन गुणन है रणमें । ते तुव लखन करत इमि रणमें ॥ ताते अवगुणि समहिंतथरिये । निजअनुरूप पराक्रम करिये ॥ यह सुनिद्रोण कोपसों भरिकै । लगेलरन करलाघव करिकै ॥ निजदल मर्दत द्रोणहिं देखी । भिरोआय सात्यकि अतितेखी ॥ सात्यकि द्रोण बीरवरभिरिकै । कठिन युद्धकीन्हें तहँ थिरिकै ॥ करिकर लाघव द्रोण रिसारे । दशशर मालदेश मधिमारे ॥ सोलखि भीमसेन अतिरोपे । तजे द्रोणपै बहुशर चोपे ॥ ताक्षण द्रोण भीष्म धनुधारी । अरु नृप शल्य बिदित रणचारी ॥ करकरलाघवके बितरनसों । भीमहिं दीन्हें छाय शरनसों ॥ ताथर सुवन द्रौपदीकेरे । अरु अभिमन्यु बीरवहहेरे ॥ तेपटभट अतिगौरव कीन्हें । इन्हें शरन सों छादित कीन्हें ॥ कठिन युद्धमाचो नहँ ताथर । भिरे उभय दिशिके योधावर ॥ दोहा ॥ भिरो शिखण्डी आयतहँ भीष्म ताहि निहारि । पूर्वनारि यहजानि तजि युद्धकियै नतनारि ॥ सोरठा ॥ ताक्षण जानि अनर्थ द्रोणशिखण्डीसों भिरे । दोऊबीर समर्थ बीरभाव बिधिसधि थिरे ॥ तोमर ॥ तो तनय तब अति भाखि । दलमध्य भीष्महिं राखि ॥ बहु दुन्दुभी बजवाइ । बढ़ि चलो रिससों छाइ ॥ सो निरखिभट भीमादि । बढ़ि भिरे घन समनादि ॥ तहँ मचो संगरघोर । बहुभट कटे दुहुँओर ॥ बहु

भये शीश विहीन । बहुभयेकर पदहीन ॥ बहुतजे तोमरवान ।
बहुमल्लशक्ति अमान ॥ हनि भिन्दिपालसटेक । बहुहतेसुभट
अनेक ॥ बहुसुभट गहि असिचर्म । लरिहने भटन अभर्म ॥
कटिगिरत वेपरमान । शिर उपलवृष्टिसमान ॥ नरमुण्डकरपग
रुण्ड । कटिपरे तुरगवितुण्ड ॥ केभुण्ड शोणितबीच । इमिलसे
अमल अनीच ॥ मनुभारतीमधिजाद । परिरहेलहिअहलाद ॥
कटि गिरत सुभट गजस्थ । तन भरे रुधिर अवस्थ ॥ ते गिरत
इमि लखिजात । जिमिघने उलकापात ॥ भिरि गिरेकितनेबीर ।
धरु मारु टेरत धीर ॥ बहुबीर ह्वै विनु शीश । करिरहे धनुष
कसीश ॥ दोहा ॥ कितने भट भिरि परस्पर बाहनअस्त्रबिदारि ।
बाहुयुद्ध भिरि करतभे महाक्रोध बिस्तारि ॥ तहां कपिध्वजपा-
र्थभट घनधुनि धनुटङ्कारि । मरदतभोतोदल प्रबल अगणित
बाण प्रहारि ॥ चौपाई ॥ अगणित भटन प्राणविनु कीन्हें । अ-
गणित अंगभंग करि दीन्हें ॥ बहुगज किये विनाकर रदके ।
बहुभट कीन्हें विना द्विरदके ॥ कितने सुरथकरे विनुबाजी । अ-
गणित कीन्हें विनुरथ साजी ॥ बहुहय किये विगत हयसादी ।
बहुगज कीन्हें बिगत प्रमादी ॥ बहुवाहन ह्वै ह्वै गतबाहक ।
इत उत भगत फिरे विनुगाहक ॥ बहु बाहक गतवाहनह्वैकै ।
लरत भये थिरि महिपै ज्वैकै ॥ कीन्हें विनुध्वज बहुयुथपनको ।
दिये अधनुकरि बहुसुभटनको । करिअतिकर लाघव हेराजा ।
छाय दिये तो सुभटसमाजा ॥ तो सैनिक गणको तेहि क्षनमें ।
रह्यो न दिशा ज्ञानगुणि मनमें ॥ इमि पारथवन केशर बनमें ।
भये मगन इतके भटरनमें ॥ पारथके धनुकी धुनि सुनिसुनि ।
ह्वै अधीरइतके भट गुनिगुनि ॥ भीष्मपितामह के ढिगडगरे ।
तब सगर्व भीषमभे अगरे ॥ मद्र त्रिगर्त्त देश के योधा । अरु
कालिंगज सुभट सक्रोधा ॥ भट गान्धार देशकेजेते । अरु
सौ वीर देशके तेते ॥ हयारोह निज दल सहचायक । भूप

जयद्रथ सैन्धव नायक ॥ चौदह सहस सुभट रण धीरा । सहित शकुनि दुर्मति बरबीरा ॥ बढ़ि भीषमके सँग अति बलसों । भिरे जाय पांडव के दलमों ॥ रथीगजी तुरगस्थ वि-धाती । भिरे परस्पर बीर पदाती ॥ भिरेभीष्म पारथसों जाई। शल्य युधिष्ठिर भिरे रिसाई ॥ वीर अवंति देशको राजा । काशिराजसों भिरो ससाजा ॥ दोहा ॥ पुरुषसिंह भटभीमसों भिरो जयद्रथ वीर । हांकि भिरो सहदेवसों भट विकर्ण रणधीर ॥ दुर्योधन अरु शकुनिये निज निज धनुटंकारि । सदल मत्स्यपति नृपति सों भिरे सगर्व प्रचारि ॥ चेकितानअरु द्रुपद अरु सात्वकि वीर प्रचण्ड । द्रोण द्रोणके पुत्रसों भिरे करषिकोदण्ड ॥ सोरठा ॥ धृष्टद्युम्न बलवान कृप कृत बर्मासों भिरो । करत भये घमसान यहि विधिद्वन्द सहस्र जुटि ॥ भुजंगप्रयात ॥ मच्योघोर संग्राम ताठौर भारी । चढ़े चाव चोखे भिरे युद्धचारी ॥ उभय ओरके बीरलै नामटेरें । थिरो हेथिरो भाषिके बाण प्रेरें ॥ किते बाण मारें कितेशक्तिझेलें । कितेभिन्दिपालें कितेभल्ल मेलें ॥ किते खड्ग लीन्हे पिले खग्गखेलें । कितेलै गदा घूमिदै घाव केलें ॥ विना अस्त्र ह्वै केकितेवीरटूटैं । भरेगर्वसों तालदै हांकि जूटैं ॥ भिदे भूरि शस्त्रानसों वीरकेते । खरे है भरे कोपसों युद्ध हेते ॥ भिरेवीर केते गिरें फेरि ऊठैं । न संग्राम के श्रामसों नेकुतूठैं ॥ विना शीशके ह्वै कितेवीर डोलें । किते मारुरेमारुरे मारु बोलें ॥ दोहा ॥ सुबरण सों विरचित विशद बरण बरणके भूरि । अस्त्र अनगिन जेरहे चलत उभय दिशिपूरि ॥ हेममयी कोदण्ड अरु भूषणमय दोर्दण्ड । चपल असंख्यन होत हे अध ऊरध जे चण्ड ॥ जानिपरो तिनकहँ निरखि मनुघनघटा अनेक । अनुक्षन प्रगटति दुरति फिरि प्रगटति दुरतिसटेक ॥ चौपाई ॥ हय गजभट अगणित तेहि रणमें । कटे कटे अगणित भट क्षणमें ॥ कितने मत्त द्विरद विरुझाने । बधि बहु भटनगये

वधिजाने ॥ अस्त्रजान सों थिरि तिहि पलमें । भे मोहित सब भट दुहुँदलमें ॥ ताक्षण मत्स्याधिप रणधीरा । अरु विराटबल बुद्धि गँभीरा ॥ लै सँग सुभट शिखण्डिहि कोपे । भिरे भीष्मसों जयहित चोपे ॥ कृप विकर्ण अरु बहुभट गणसों । भिरे पार्थ अरिजय के प्रणसों ॥ सदल जयद्रथ के सँग ह्वैकै । बहुतौतनय क्रोधसोंग्वैकै ॥ भिरे भीमसोंअमरषसाने । भीमतिन्हेंलखिअति हरषाने ॥ शकुनिउलूक पितासुतताक्षन । सहदेवसोंहभिरेअरि तापन ॥ नकुल त्रिगर्त्तनसों भिरि राजा । किये युद्ध भिरि जय यश काजा ॥ केकय अधिप शाल्वसों भिरिकै । भूपति लरत भयो तहँ थिरिकै ॥ सात्वकि चेकितानरणचारी । अरु अभि-मन्यु विदित धनुधारी ॥ तो पुत्रनसों भिरि रण कीन्हें । बाण-नहानि व्याकुल करि दीन्हें ॥ सेनाधिपति द्रुपद सुत योधा । भिरो द्रोणसों सबल सुयोधा ॥ गजानीक युत धर्मनरेशा । की-न्हो युद्धभयानक भेशा ॥ फिरि इमिवीरधीर तकितकिकै । भिरे वीर रससों छकि छकिकै ॥ दोहा ॥ मांस रुधिर के पंकसों पूरित कैहैभूप । रणमण्डलभो कालकेपाक सदनकेरूप ॥ गुरुतोमर ॥ तहँ दुंदुभिकेभेरको। हयभैगलनकेटेरको ॥ वरधनुषकेटंकारको ।अरु भटनकेहुंकारको॥बहुभल्लतोमरधानको ।असिभिन्दिलमटोपमि-लानको॥रवरह्योपूरिदिशानमें । तेहिसमयकेघमसानमें ॥ दोहा ॥ ताक्षणभीषमभीमकहँ निजदलमर्दतदेखि । हनतभये बहुबाण वरबधकी विधिअवरेखि ॥ चौपाई ॥ तहांभीमअति रिसविस्ता-री । दीरघशक्ति भीषम पै डारी ॥ भीषम शक्तिहिआवत देखी । बीचहि काटि दये अतितेखी ॥ फिरि क्षुरप्रशर करमें लीन्हों । मारि भीमको धनुद्वैकीन्हों ॥ लखि सात्वकि भीषमपैरोखे । स-त्वरहने बाणबहु चोखे ॥ तबहिं भीष्मवर बाणप्रहारो । सात्वकि के सूतहि बधि डारो ॥ तब सात्वकिके रथके बाजी । निजवश भये विनारथ साजी ॥ रथयुत इत उत दौरनलागे । धरहु धरहु

सब कौरनलागे ॥ दुचित भये पाण्डव तेहि छनमें । तहँ लहि समय भीष्म गुणि मनमें ॥ बरकरलाघव विधि विकसारे । पर-दलके अगणित भटमारे ॥ सो लखि बीर पाँडवी दलके । भिरे भीष्म भट सों अतिबल के ॥ तब इनके द्रोणादिक योधा । जु-टिकीन्हें तिनको अवरोधा ॥ नृप बिराटअति कोपितह्वैके । हन तीनि शर भीष्महिं ज्वैके ॥ तीनिबाण तुरगनके तनमें । उरगण सममारत भे रनमें ॥ तब भीषम दशशर अनियारे । नृपविराट के तनमधि मारे ॥ अश्वत्थामा भट रणचारी । लखि अर्जुनहिं क्रोध बिस्तारी ॥ मारतभयो बाणापट तैसे । लषणहिं हने जल-दरबन जैसे ॥ दोहा ॥ तब पारथ अति कोपकरि मारिबाण उद्-दण्ड । अश्वत्थामा बीरको धनुकीन्हें दोखण्ड ॥ सो धनुतजिकै द्रोण सुत गहिअनित्य कोदण्ड । हनेपार्थकेगातमें दशकमशन शरचण्ड ॥ सोरठा ॥ सत्तरिबाणविशालहहने कृष्णकेगातमों । लखि करिकोप करालपार्थहनेअतिकठिनशर ॥ चौपाई ॥ वेधितासुअति दृढ़तनुत्राणा । प्रविशो तनमधि सोवर बाणा ॥ भयो न व्याथित द्रोण सुततासों । बरषत रह्यो बाण भरि आसों ॥ जेठमि तासु शूरताचाहै । तेइनकेभटताहिसराहैं ॥ गुरुकोतनय गुरुहि प्रिय भारी । अरु विशेषसोविप्रप्रचारी ॥ पारथतापै करुणा धरि-कै । गये अनतही रिस परिहरिकै ॥ दुर्योधन भीमहि लखि रोखे । हनेबाणदश अतिशयचोखे ॥ तब कुरुपतिकहँ भीम प्र-चारे । हने बाणदश अति अनियारे ॥ भीमहि सो तेहि भीम प्रहारी । घोर युद्ध कीन्हों धनुधारी ॥ भटअभिमन्यु धीर रण-चारी । चित्रसेन कहँ दश शरमारी ॥ सत्तरिबाण भीष्म कहँ मारे । पुरमित्रहि शरसात प्रहारे ॥ चित्रसेनमारे तेहि छनमें । दशशर पार्थतनय के तनमें ॥ भीषम हने बाणनव ताही । अरु पुर मित्र सातशर चाही ॥ तबअभिमन्यु क्रोधकरिडाटो । चि-त्रसेन नृपको धनुकाटो ॥ तबबहु भूपक्रोधमोंपागे । घोरिताहि

शर मारनलागे ॥ तहांधनंजय को सुत बरभट। करतभयो अ-
ति विक्रम परगट ॥ सब के बाणकाटि महिडारे । सबके तनमधि
बाण प्रहारे ॥ दोहा ॥ अर्णव मधि बड़वाग्नि समलस्यो तहां
वरवीर । पार्थ तनय अभिमन्यु भट बिदित धनुर्द्धर धीर ॥
ऐसेसंगरमें निरखि अभिमन्यु हि निश्शंक । भिरोजायलक्षण
कुंवरकीन्हें भृकुटीबंक ॥ सोरठा ॥ निरखि लक्षणहि तत्र तनय
पार्थको कोपकरि । गुणि लीबो जयपत्र हनत भयो षट बाण
वर ॥ जयकरी ॥ फिरि सूत महाबलकेतनमें । षटबाण हनेरिसकै
मनमें ॥ तेहि ताक्षणलक्षण वीरबली । बहुबानहने गहि ऐंडि
भली ॥अभिमन्यु महारिस त्योंगहिकै । अबआड़हु मो शरयों
कहिकै ॥ सब बाजि हते तेहिके रथके । चलिजे कबहूं पथमें न
थके ॥ फिरि सूतहि मारि गिरायदयो । करमेंतबबाण कराल
लयो ॥ लखि लक्षण सत्वर शक्तिहने । अभिमन्यु करेतेहि टूक
घने ॥ यहदेखतही कृपजू बढ़िगे। तेहि लै अपने रथपै कढ़िगे ॥
दुर्योधन को सुत ताक्षण में । यमके मुखते बचिगो रणमें॥ दोहा॥
उभयसेनसों होतभो घोरयुद्ध तेहिकाल । पृथक्पृथक् कहिको
लहे तासुअन्त क्षितिपाल ॥ अद्भुत विक्रमतहँ कियो सात्वकि
बीर अमान । करिकरलाघव तजतभो अनुपम अगणित बान॥
सोरठा ॥ जिमिकच किमि जलदान तजत वारिनहिं लखिपरत।
तिमि सात्वकिके बान गहत तजतनहिं लखिपरे ॥ महिखरी ॥
तहँ छाय दीन्हें बीरसात्वकि बाणबर चित्रित बने । अति चपल
प्रति सन्धानमें हति डारि दीन्हें भटघने ॥ यहिभांति निजदल
वधत लखि कुरुनाथ तोसुतरिसभरो । इमि कह्यो अयुत रथी-
नसों लारि सात्वकीको बधकरो ॥ सुनिरथी ते बढ़ि कोपकरि
भिरि सात्वकी सों लरतभे । भिरि सात्वकी के शरन सों बहु
सुभट तिनमें मरतभे ॥ बहुभये अकर असूत अधनु अबाजि
बहुरण तजि गये । यहदेखि भूरिश्रवा सात्वकि बीरके सन्मुख

भये ॥ दोहा ॥ करि करलाघव सविधि तहँ भूरिश्रवा अमान। सात्वकिके दलपै दये छाय उरग समवान ॥ सोरठा ॥ ह्वैव्या-कुल तेहिकाल सात्वकि के भट भगे तिमि। जिमि लखिसिंह-हि हाल मत्त गजहितजि कलभगण॥ चौपाई ॥ सात्वकिके दश सुत बलभारे। तेसब भूरिश्रवहि प्रचारे॥ कहत भये इमि अ-तिशय माषे। हम सब तुमसोंरण अभिलाषे॥ पृथक्पृथक् कै साथहि लरिये। जिमि चाहौ तिमि संगर करिये॥ कैतुम हमहिं जीति जय लहिहौ। कै हमसों मरि नभपथ गहिहौ ॥ सोसुनि भूरिश्रवा मुसुकाई। कह्यो लरहु सबसाथहि आई॥ सोसुनि ते दशभट अतिहरषे। भूरिश्रवा पर बर शर बरषे ॥ ते सिगरे अगणित शरमारे। भूपकाटि सब महिपै डारे॥ तृतियपहर में ते भिरि ताथर। कीन्हों घोरयुद्ध योधावर॥ भूरिश्रवा कियो अतिविक्रम। काटि दियो सबके धनुक्रम क्रम ॥ फिरि तिनके शिर छेदन करिकै। गरज्योहियोमोदसों भरिकै॥ निजदलपुत्र-नके बधदेखी। भूरि पराक्रम सात्वकितेखी॥ सत्वर भूरिश्रवा सों भिरिकै। कठिन युद्ध कीन्हों तहँ थिरिकै॥ रथके हय अरु धनुध्वजभारी। काटि परस्पर ते रणचारी॥ खड्ग चर्म गहिगहि रथत्यागी। लरनलगे अतिरिससों पागी॥ यहि विधि लरत सात्वकिहि पेखी। पाण्डव भीमसेन अवरेखी ॥ शीघ्र सात्व-किहि रथपैलीन्हें। कहिसुवचन आश्वासितकीन्हें ॥ दोहा ॥ दु-र्योधन भूरिश्रवहिलै निजरथपै तत्र। बजवावतभे दुन्दुभी मनु पायेजयपत्र ॥ दुर्योधन क्षितिपाल मणिक्कै सगर्व तेहिकाल। अर्जुनपै भेजेसुभट सहसपचीस कराल॥ तिन्हें सँहारे निमिष में पारथधीर धुरीण। नरगजहयके रुधिरकी सरितहिकीन्ही पीण॥ ताक्षण भीषम वीरवर घोरयुद्ध करिभूप। अगणित भट क्षणमें हने भये भयानक रूप॥ इतनेमें संध्याभई अस्त होत भेसूर। फिरि निजनिज डेरन गये उभय भटनके पूर॥ सोरठा ॥

निजनिजडेरन जाय उचित कृत्यसब करतभे । इमि पचयों दिन पायभयो युद्धहे भूमिपति ॥

इतिभीष्मपर्व्वणिपंचमदिवसयुद्धवर्णनोनामसप्तविंशोऽध्यायः २७ ॥

दोहा ॥ लहि छठयोंदिन भोरहीनित्यकृत्य करिसर्व। सजतभये निज निज सयन भूपतिगहि गहिगर्व ॥ लहिआज्ञा नृपधर्म की धृष्टद्युम्न मतिमान । मकरव्यूह विरचितभयेअनघ अभेद्यअमान॥ चौपाई ॥ शिरभे पारथ द्रुपदनरेशा । सहदेवनकुल चक्षु शुभदेशा ॥ मुखभे भीमसेन अरिमर्दन । पुरुषसिंहवारिदसमनर्दन ॥ सात्विकि सहित युधिष्ठिर राजा । अरु अभिमन्युवीर सहसाजा ॥ सुवन द्रौपदीके रणधीरा । अरुभट प्रबल घटोत्कच बीरा ॥ येभग्रीव बिराट ससेना । पृष्ठ देशभे अरिदल जेना ॥ पांच भाय नृपकैकय थरके । अरुभट धृष्टद्युम्न बलबरके ॥ बामपार्श्व ह्वै सदल बिराजे । रण मण्डल सुखमासों साजे ॥ ससयन चेकितान नरनाहू । अरुनृप धृष्टकेतु बरबाहू ॥ दक्षिण पक्षव्यूह को ह्वैकै । खरेभये अमरष सों ग्वैकै ॥ इरावाण अरुबीर शिखण्डी । पुच्छभये लैसेना चण्डी ॥ कुन्तिभोज नरपति रणचारी । अरुनृप सतानीक धनुधारी ॥ सदल भयेहे पद अरि नाशन । गर्बि गरजि टंकारि शरासन ॥ यहिविधि मकरव्यूह रचि जतिसों । लसे भूप पाण्डव बलअतिसों ॥ उनको मकरव्यूह लखि भीषम । बिरचे क्रौंचव्यूह अतिभीषम ॥ तुण्ड तासुभेद्रोण सुकामा । चखभे कृप अरु अश्वत्थामा ॥ नृपबाह्लीक भूप कृतवरमा । सदल शीशभे पूरित परमा ॥ दोहा ॥ सूरसेन आदिक नृपन सहदुर्योधन भूप । भे उरक्रौंच सुब्यूहको आयुध गहे अनूप ॥ देश प्रस्थला को अधिप नृपति सुशर्मा बीर । निज दल युतभो व्यूहको बामपक्षगंभीर ॥ चूलिक जवन तुषार अरु सकदेशस्थ समस्त । क्रौंचब्यूह के होत भे दक्षिण पक्ष प्रशस्त ॥ नृपति श्रुतायुस सतायु अरु भूरिश्रवा नरेश । क्रौंच-

व्यूहके जघनहवै शोभित भये सुभेश ॥ सोरठा ॥ यहिविधि रचि रचि व्यूह उभय बन्धु अमरष भरे । बढ़िबढ़ि सह भटजूह भिरि भिरि लागे लरन तहँ ॥ चौपाई ॥ भिरेगजस्थगजस्थ प्रचारी । जूटे रथी रथी धनुधारी ॥ हय सादिनसों भिरि हयसादी । कीन्हे युद्ध सिंह समनादी ॥ भिरे पदानिन सों पदचारी । केशरि समरण विपिन विहारी ॥ भिरे गजनसों रथीप्रमाथी । भिरेरथस्थ हयस्थ ससाथी ॥ भिरे रथिनसों किते पदाती । कुशल अस्त्र विधिमें दृढ़घाती ॥ कितने हयसादीतेहि क्षणमें । मरदन लगे पदातिन रणमें ॥ कितने तुरग गजनपै डारे । तोमरसांग भल्लअसिमारे ॥ घनसमान सेना चतुरंगी । मणिमय धनु असितुरित सुअंगी ॥ कूजनि हय गजकी चहुँ ओरा । अरु दुन्दुभि धुनि गरजनि घोरा ॥ आयुधपात वारिझरि दुरदिन । लरुधिर रणमहि शरध्वज कुमुदिन ॥ रथनेमिनकी धुनि सुनि जाने । बोलत विविध विहँग उमदाने ॥ मणिगण मुकुटआभरण वारे । जुगनूजाल समाननिहारे ॥ सुभटनकी घुमरनि गहि धाई । सो जनु चली प्रबलचौपाई ॥ रुधिर भरे भटगज हय रूरे । तेजनु विटपवारिसों पूरे ॥ सेवाजि नरगणके केशा । साड्वल सम तहँ लसेसुभेशा ॥ रणमण्डल सुखमासों माने । प्राविटकाल समानलखाने ॥ दोहा ॥ तहां भीमअति वेगसोंचलो द्रोणपै तात । देखिद्रोण तब शरहने भीमसेनके गात ॥ भीमसेन तब कोपकरि तीक्षण शर सों मारि । द्रोणवीरके सारथिहि दीन्हें महिपै डारि ॥ सोरठा ॥ द्रोणाचार्य अमर्ष आयुबाणगहि युगुलि सों । कीन्हें अर्जुन कर्म वरषि बाण अरिसैनमें ॥ भीष्म द्रोण तेहि ठौर उतके अगणित भटवधे । पारथभीम लगौरभट असंख्य इतके हते ॥ चौपाई ॥ तब धृतराष्ट्र कहनमे ऐसो । संजय होतलिखे विधि जैसो ॥ दल अरु बन्धुद्रव्यबलगुण सों । ममसुत भूप अधिक हैं उनसों ॥ जेसेभट अगणितममदलमें ।

तैसो एक न उनके बलमें ॥ भीष्मद्रोण कृप अश्वत्थामा । इन समको उत विक्रम धामा ॥ ममसुतसो लहि लहि मनभाये । मोदित सब नृप मम दिशि आये ॥ नहिं सुनि बिनै नातगुणि क्षोहन । आय लरत ये नृप मम गोहन ॥ सबबिधि उन कहँ जीतन लायक । हे दुर्योधन कुरुकुलनायक ॥ सो नहिं जीति लहत नित हारत । नितवै मम अगणित भटमारत ॥ वैभीषम द्रोणादि भटनको । जीतत यह व्यथवत मम मनको ॥ बिदुर अनेकबार समुझायो । नहिं दुर्योधन हिये बसायो ॥ जो कछु बिदुर कहत हे आगे । सो अब आवन चाहत आगे ॥ सुनि यह अन्यभूपकी बानी । कहतभयेसंजय अनुमानी ॥ नृपअब होत जितो अनभल है। सोसब तुव अवगुणको फलहै ॥ गृह दाहादिक अनरथ जेते । भये किये नृप तुम सबतेते ॥ गुणेहु न जुवा युद्ध करवावत । अवकतइतनो शोच बढ़ावत ॥ अब नितदुस्तर अनरथ सुनिहौ । लहि दुखदुसह दोषनिजगुनिहौ ॥ दोहा ॥ तुम्हैं न बूझे बिनु कियो दुर्योधन कछुकर्म । मनै कियो तुम जौननहिं कीन्हों तौनअधर्म ॥ तातेअबकछुमति कहौ माति कहवावहुभूप । युद्धव्यवस्था सुनहुसब निजकृत के अनुरूप ॥ सोरठा ॥ करत कर्म नर जौन सुखद दुखदजेहि भांतिको । अवशितासुफल तौन लहतभूप इतकै उतै ॥ रोला ॥ मचे संगरघोर भीम असंख्य सेना मर्दि । निराखिकै तौ सुतनको समुदाय घन सम नर्दि ॥ चपलरथ चलवाय बाणन मारिव्यूह बिदारि । भयो प्रविशित सैनमें बहु बाजिगज भटमारि ॥ पाय निजदलमध्य भीमहिं सिमिटि तौ सुतसर्व । लेहु जीवतपकरि यहि यहसमुझि गहि गहि गर्व ॥ चले सम्मुख भीमके सँग लये सेनाभूरि । भीमवीर प्रचण्ड तिनमें देतभो शर पूरि ॥ हनत आयुध सकल तौ सुत सर्व दिशिसों घेरि । चलेभीम सुधीर पै अब भागुमति इमिटेरि ॥ जानिकै वृत्तान्त तौसुत भटनको तब भीम । गदा

गहिकै कूदि रथसों भिरोवीर अधीम ॥ तुरग रथ गजसुभट अगणित मारि मरदतवीर । सयनके मधि देशमें चलिजातभो रणधीर ॥ तहां विगत सहायप्रविशिन वीर भीमहिं देखि । धृष्ट-द्युम्न महारथी तजिद्रोण कहँ अवरेखि ॥ चलो मत्वर भीमके ढिग तजत अगणित बान । द्रोणसों उत भिरतभो तब द्रुपद भूप अमान ॥ कौरवीदल मधि प्रविशि भट धृष्टद्युम्न उदार । भीम बिनुरथ भीमको लखि भयो दुखित अपार ॥ भयो बूझ-त सारथिहि भरि नयन चैन गँवाय । भीम भट मम प्राणप्रिय का भयो देहु बताय ॥ कहतभो नृप तनयभटसों सारथी इमि तत्र । भीम गहि गुरुगदा गे कुरुनाथ भूपति यत्र ॥ दोहा ॥ मम वध हितजे उदितते क्षणमें तिन्हें बिपोहि । मैं आवों तौ लगि रहौ तुम वत कहिगे मोहि ॥ चौपाई ॥ ऐसो बचन सूतसों सुनि कै । धृष्टद्युम्न सेनापति गुनिकै ॥ भीमसेन ममसखा सोहायो । अरु सम्बन्धी जग में गायो ॥ ताहि बिना निजदलमें जाई । कहब कहा सुभटनसों भाई ॥ भीरिपरे तजि संगिहि जोई । नि-जबचाव गुणिन्यारे होई ॥ दैवनकरततासुभल कबहूं । अयश नरक तेहि अबहूं तबहूं ॥ ताते गयो जहां नरचारी । जाततहां हमव्यूह बिदारी ॥ इमिकहि धृष्टद्युम्न धनुधारी । चलोसैन मधि भटन प्रचारी ॥ जितह्वै भीमसेन दल मर्दत । गयो रहोमिंहं सम नर्दत ॥ बरषत बाणगहे मगसोई । गयो न आड़ि सक्यो तेहिकोई ॥ यहिविधि वीरजाइ मधि दलमें । लखतभयो भीम-हि तेहि पलमें ॥ तिमि बिहरत सुभटन तेहि मारत । सोसब दिशिफिरि भटन सँहारत ॥ अगणित गज हय भट बधि डा-रे । हाहाकार सैनमें पारे ॥ धृष्टद्युम्नइमिभीमहिं देखी । निकट गये हिय मुदसों भेखी ॥ सादर निज रथपरबैठारे । लगेरहे शरतिन्हें निकारे ॥ फिरिते उभयवीर मदमाते । लागेलरनवीर रसराते ॥ दोहा ॥ एककालमें अतिप्रबलअनिलअनल बनपाय ।

जिमि विचरै तिमितहँ लसें तें युगभटगहिचाय ॥ तहँ निज बंधुनसोंकहे दुर्योधन अनखाय । द्रुपद तनय इत भीमकी आ-यो करन सहाय ॥ अबयाको बध करहु लरि करिकै कछूउपा-य । तौ मम जीवन सुफल है जोयह जियत न जाय ॥ चौपाई ॥ यहसुनि सिगरे भट भय त्यागे । धृष्टद्युम्न कहँ मारनलागे ॥ घनजलजाल अचलपरजैसे । तापरबरषे ते शर तैसे ॥ धृष्ट-द्युम्न तहँ अति रिस धारयो । तिनपै मोहन अस्त्र प्रहारयो ॥ तब तौ सबसुत मोहित ह्वैकै । जड़सम भये चपलता ग्वैकै ॥ भूपति तहां लराई बिगरी । भगी फौज तिहि थरकी सिगरी ॥ वादिशि जीति द्रुपद कहँ आरज । शंख बजायो द्रोणाचारज ॥ सुनो द्रोण तहँ ताही क्षणमें । मोहितभे सबकौरव रणमें ॥ तु-रितगये तित धनुटंकारत । पाण्डवके दलमें भय पारत ॥ यहि विधि शीघ्रद्रोण तहँ आये । ते भट तिनहिं हनत नहिं पाये ॥ तहँ तौ सुतन प्रमोहित देखी । बरप्रज्ञास्त्र तज्यो अवरेखी ॥ तबहीं चेति उठे सबयोधा । लगे पूर्ववत लरन सक्रोधा ॥ ता-क्षण धर्म भूप अनुमानी । निज सुभटनसोंकही सुबानी ॥ भीम गयो परदलमें जब सों । खबरि न तासु मिली कछु तबसों ॥ होति मोहिं अति चिन्ता भाई । सादर लेहु खबरि उत जाई ॥ भयो कहाका करतब कीन्हों । केहि केहि मारि आजु यशली-न्हों ॥ यह सुनि द्वादश भट बलपूरे । चले सदल बरषत शर रूरे ॥ दोहा ॥ पांचभाय केकय अधिप अरु अभिमन्युसुबीर । पांचद्रौपदीकेसुवन धृष्टकेतु रणधीर ॥ ये द्वादशभट चले तहँ रचि सूचीमुख व्यूह।बेधतइतके व्यूहपर मर्दत भटगुणब्यूह ॥ सोरठा ॥ मचोरहो तेहिकाल अर्जुनसों अरुभीष्मसों । संगर कठिन कराल दक्षिणदिशिमें भूपमणि ॥ तोमर ॥ अभिमन्यु आ-दिक वीर । जेचले उतरणधीर ॥ भटइतैके अवलोकि। नाहिंस-के तिनकहँ रोकि ॥ तेहनत भटन विनोदि । गेभीमके ढिगमो-

दि ॥ तहँ भीम तिनकहँ देखि । अतिमुदित भे अवरेखि ॥ न-
हँ मचो संगरघोर । शरपूरि गेघ्रवञ्ओर ॥ कैकेय नृपनि उदा-
र । भटभीमको करिप्यार ॥ निजसुरथपर बैठाय । भिरिलगे
लरन सचाय ॥ तेहिसमय नृपअभिराम । दिनगयोहो युगया-
म॥ सुतद्रुपदकोबलवान । भिरिद्रोणसों सविधान ॥ करिधनुष
कोसंधान । भोहनत अगणित बान ॥ तबद्रोण ताकहँ डाटि ।
वरधनुषदीन्हींकाटि ॥ इमिकाटिकैधनुतासु।बहुबाणमारेआसु॥
भटद्रुपदसुत तेहि ठौर । गहितुरित वरधनुऔर ॥ आचार्य्य
भटके गात । शरहने सत्तरिजात ॥ तबद्रोण वरशरप्रेरि । धनु
तासु काट्यो फेरि ॥ फिरि मारिवर शरचारि । वरबाजि चारौं
मारि ॥ नृपसुतहि बिरथ निहारि । आचार्य्य धनुटंकारि ॥ स-
बभटन के तकि काय । शरहनतभो दृढ़धाय ॥ दोहा ॥ धृष्टद्युम्न
रणधीरतब निज रथतजि अनखाय । बिदितवीर अभिमन्युके
रथपर राज्योजाय ॥ ताक्षणआयो सुरथलै रथी विशोकसुजान।
केकयके रथसों गयो तापैभीम अमान ॥ सोरठा ॥ दुर्योधन
क्षितिपाल सदलभिरो तबभीमसों । गहिकोदण्ड कराल भीम
हने तेहिबिशिख बर ॥ चौपाई ॥ दुर्योधन नृपरिसाबिस्तारे । बाण
बिशाल भीमकहँमारे ॥ घनसम गरजि भीमनेहि क्षनमें । हने
तीनिशर नृपके तनमें ॥ भीमाहँहनेभूपदुर्योधन । दुर्योधनहिं
भीम जयशोधन ॥ ताक्षण सबतो सुत अभिमानी । भिरेभीमसों
अनरथ जानी ॥ भिरे भीम तिन सबसों तैसे । भिरेवायु तरु
गणसों जैसे ॥ बाणबिशाल परम अनियारे । सबके तनमेंभीम
प्रहारे ॥ हनेभीमकहँ बहुतिनते तब । तिन कहँ भीम भीमकहँ
तेसब ॥ सोलखिभट अभिमन्युहि आदी । तिनपै चले सिंह
समनादी ॥ तिनहिं देखि तोसुतभयपागे । तुरितभीमसोंलरिबो
त्यागे ॥ लरनलगेसबतिनसों भिरिकै । तजनलगे आयुध फिरि
फिरिकै ॥ तहँअभिमन्यु जीतिसों रतिकै । हयबिकर्णके रथके

हतिकै ॥ बाणपचीस विकर्णहि मारे । अबथिर रहुमति भागुप्र-चारे ॥ तब विकर्ण निजरथ तजिपथपै । गोचलि चित्रसेनके रथपै ॥ तेयुगवीर एकतेह्वैकै । अतिअमर्षअभिमन्युहिज्वैकै ॥ छायदेतभेजालशरनके । हरणहार जे प्राण परनके ॥ ते युगभट जितने शरडारे । सबअभिमन्यु वाणसों वारे ॥ दोहा ॥ पांचबाण अभिमन्युके तनमेंलागेभूप । ताक्षण गत भो दिवसको पहर तृतीय अनूप ॥ कैकेयनसों लरतभोदुःशासन बरबीर । दुर्यो-धन सोंभिरतभे द्रौपदेय रणधीर ॥ सोरठा ॥ इमि भिरि भिरि गहिगर्वघोरयुद्ध तेकरतभे । याहीविधि भटसर्व ठौर ठौरभिरि लरतहे ॥ भुजंगप्रयात ॥ महाघोर संग्राम ताथोसमाचो । गुण्योंमैं इहै धौं प्रलयकाल साचो ॥ बलीभीम औभीष्म औ पार्थ योधा । तनय पार्थ को औ कृपाचार्य क्रोधा ॥ तनय द्रोणको औ बली द्रोणधीरा । घटोत्कच्च औ सात्वकी शल्य बीरा ॥ गणोवीर भूरिश्रवा रोष राती । पिता द्रौपदीको हियो जासु ताती ॥ ससेनाइन्हें आदिदै बीर कोहे । सहस्रै सहस्रांशु से तब सोहे ॥ लसैं अंशुसे अस्त्रके भेद रूरे । चहूंओरजेहे स-बै ठौरपूरे ॥ सरी आयसी ज्वालकी जाल जामें । दहैंलोमसे सैनकेजीवतामें ॥ गजस्थादि बीरानकीबेगमारी । महाबायु सो सर्व आशाप्रचारी ॥ प्रलयबारिके पूरसी पूरिसोही । बढ़ी शो-णितोदा नदी तब जोही ॥ दोहा ॥ मारुमारु धरु मारु अरु मार्यो करौं बचाउ । आउखरोरहु भागुमति सहु ममशरको घाउ ॥ ये अरु धनु टङ्कार अरु अस्त्रबेगको शब्द । अरुतन अस्त्रमिलापको रह्यो परसि महि अब्द ॥ सोरठा ॥ दुर्योधन क्षितिपाल लखि दिनको चौथो पहर । करि अतिकोप कराल चलो भीम पै बेग सों ॥ चौपाई ॥ दुर्योधनाहिंआपु पै आवत । निरखि भीमबोलो मनभावत ॥ चौदह वर्ष कल्पसम बीतो । चाहत यह्व शुभदिन चित चीतो ॥ अबमैं तोहिंबधतहौं क्षणमें ।

पैमति भागु खरोरहु रणमें ॥ द्रुपदसुताके कचको कर्षण। करवायो तुम जौन अमर्षण ॥ शकुनिकर्णके मतमों जैसे। कीन्हें हे तुम कर्म अनैसे ॥ आजु तुम्हें तिनको फल दैहों। हियको ताप मेटि सुख लैहों ॥ इमिकहि छब्बिस शरअनियारे। दुर्योधन के तनमधि मारे ॥ हनिद्वैवाण धनुष द्वैकीन्हों। द्वैशर हनि सूतहि वधिदीन्हों ॥ फिरि हनि चारिवाण छविछाये। तुरगन हति यमलोक पठाये ॥ काटोछत्र वाण द्वैमारी। ध्वजकाटो शर तीनिप्रहारी ॥ मणिमय ध्वजवर गिरत लखानो। चपलागिरी जलद ते मानो ॥ घन समगरजि कालसमरोखो। दुरशावनभो विक्रम नोखो ॥ फिरि दशवाण सूतके तनमें। हने भीम अति कोपित मनमें ॥ तेहि क्षण वीर जयद्रथ जाई। भिरो भीमसों नृपहि बचाई ॥ कृपाचार्य्य तहँ तुरता कीन्हें। भूपहि निज रथ पर करि लीन्हें ॥ दुर्योधन नृप मूर्च्छित ह्वैकै। रथपर परे डरे सब ज्वैकै ॥ दोहा ॥ कैयक सहसरथीनमह तहां जयद्रथ धीर। घेरि भीमसों लरतभो तिनसों भीमसुवीर ॥ धृष्टकेतु अभिमन्यु अरु द्रौपदेय कैकेय। ये सब भिरि तो सुतन सों कीन्हे युद्ध अमेय ॥ चित्रसेन चित्रांग अरु चारु चित्र बलवान। उपनन्दक अरुनन्दअरु वीर सुचारु अमान ॥ सुभटचित्र दरशन प्रबल अरु सुचित्र ये सर्व। तो सुत भिरि अभिमन्यु सों कीन्हों युद्ध सगर्व ॥ चौपाई ॥ तहँ अभिमन्यु सुयुद्ध विहारी। तिनके वाण वाण सों वारी ॥ पांच पांचशर तिनकहँ मारे। ते सब फिरिअगणित शर डारे ॥ सब शरकाटि वाणपरिहारिकै। क्षणमें तिन्हैं पराजित करिकै ॥ भट अभिमन्यु विदित धनुधारी। तब विकर्ण सों भिरो प्रचारी ॥ तापै तजि चौदह शरगनिकै। हय ध्वज धनु अरु सूतहि हनिकै ॥ डारिदिये महिपै तेहि क्षनमें। भट अभिमन्यु कोपकरि मनमें ॥ फिरिशर एक श्रवणलोंतानी। हन्यो विकर्णहि भट अभिमानी ॥ सोशर अति तीक्षण निरवे-

दी। लगि विकर्णको दृढ़तन छेदी ॥ रुधिर भरो धरणीमें धसि-
गो । तब विकर्ण मूर्च्छा के वसिगो ॥ यह लखिभट विकर्ण के
भाई । पार्थ तनय सों करी लराई ॥ सुवन द्रौपदी को श्रुतकर-
मा । तासों भिरि दुर्मुख वरपरमा ॥ सातबाण हनिताके तनमें ।
फिरिकाट्यो धनुध्वजतेहि क्षनमें ॥ फिरिहनि तेरह शर रिस
अतिकै । डारि देतभो सूतहि हतिकै ॥ तब श्रुतकरमा अति
रिस कीन्हों । शक्ति विशाल पाणिमें लीन्हों ॥ तासों दुर्मुखको
तनभेदो । सो लखिकै तो सुत अति खेदो ॥ श्रुतकर महिगत
रथ लखि आई । भटसुत सोम तासु प्रिय भाई ॥ लैनिजरथ
पै आनँद पागो । सरुचि पूर्ववत् बिहरन लागो ॥ ताक्षण में
श्रुतिकीर्त्ति सुवीरा । सुवनद्रौपदीको रणधीरा ॥ तोसुतजोजय-
सेन गनायो । तासों भिरि अतियुद्ध मचायो ॥ तहँतो सुतजय-
सेन सुनामी । काट्योतासु धनुष जयकामी ॥ दोहा ॥ सो लखि
कै सुतनकुलको शतानीक बलवान । हनतभयो जयसेनकेअँग
में वर दशवान ॥ तबतो सुत दुःकर्ण भट मारो बाण उदण्ड ।
शतानीक रणधीरको काटि दियोकोदण्ड ॥ गुरुतोमर ॥ तबशता-
नीक रिसाय कै। गहि आन धनुष चढ़ायकै ॥ रहु खरो कहि
शर एक सों । धनुतासु काटो टेकसों ॥ षटबाण फेरिप्रहारिकै ।
हय सहित सूतहि मारिकै ॥ शर एक दीरघ झेलिकै । दुःकर्ण
के उरमेलिकै ॥ हति भूमिपैकरि देतभो । अति दीह आनँदलेत
भो ॥ दुःकर्ण कहँ हत देखिकै। तोपांच सुत अतितेखिकै॥ भिरि
शतानीक अमान सों । थिरि हनन लागे बान सों ॥ तहँ भिरो
तिनसों गौरसों । भट शतानीक सुडौरसों ॥ दोहा ॥ ताक्षणकेकय
के अधिप पांच भाय रणधीर । तिनपांचौ भट सों भिरे हनत
अनगिने तीर ॥ घोरयुद्ध तहँ होतभो तिनसबसों क्षितिपाल ।
रण मण्डलमें तेहि दिवस निरतो कालकराल ॥ महिखरी ॥ अति
युद्ध घोर महान नृप सब ठौर तहँ तिहि दिन भयो । गजतुरग

नरके रुण्ड मुण्डन सों मूरनमण्डल भयो ॥ तिहि दिवस रजनि मुहूर्त्त गतलौं सुभट मिगरे नहिं टरे। लखि लखि परस्पर भरे अमरष गरब गहि गहि नहिं टरे ॥ तब भीष्म शंख बजाय भट समुदायलै निज दिशि गये । नृप पाण्डु नयन समस्तलै निज शिविरको शुभ मग लये ॥ निज निज सुडेरन जाय यथावत निति करम सब करत भे । करि शयन रुचिर विधान श्रमको खेद सब परिहरत भे ॥ दोहा ॥ यहि विधि छठयें दिन भयो घोर युद्ध हे भूप । पृथक् पृथक् नहिं कहि सके कहे विशेष अनूप ॥

इतिश्रीभीष्मपर्वणिषष्ठदिनयुद्धवर्णनोनामअष्टविंशोऽध्यायः २८ ॥

दोहा ॥ सप्तम दिनके आगमनकी रजनी लखि शेष । मजन लगे सब उभयदलके सैनिक भट वेष ॥ ताक्षण दुर्योधन नृपति चिन्तित ह्वै अनुमानि । भीष्म पितामह सों कहे निजहितकर्ता जानि ॥ चौपाई ॥ तुम सब विधि करता मम जियको । ताते कहउँ शोच निज हियको ॥ भीम अकेलो काढ़ि निजदल सों । करि मम व्यूहविदीरण बलसों ॥ आयो सिंह सहश मधि दलमें । अगणित भटन संहार्यो पलमें ॥ नहिं तेहि विधि तेहि देखेउँ तबलों । सो मन धीर धरत नहिं अबलों ॥ ताते हेत करयथा- हत स्वामी । ह्वै तौ भुज बलके अनुगामी ॥ यह सुनिकै भीषम हँसि बोले । भरे वीररस बचन अमोले ॥ मन वच कर्म हम तो जय चाहत । जीवन चाहि न निज तन पाहत ॥ जेहि विधि तुम जय पावहु राजा । हम सब करी गुणत सो काजा ॥ परजे महा- रथी भटरूरे । हैं पाण्डव के सँग बलपूरे ॥ नृपन सहजतिन सों जय लहिवो । यथा जियत केशरिको गहिवो ॥ तथा पराक्रम तिनसों लरिहौं । तनत्यागावधि तोहित करिहौं ॥ लरि पांडवन विकल करि देहौं । तौ प्रिय करि रणमें सुद लेहौं ॥ भीषमकी यह वाणीसुनिकै । दुर्योधन नृप पुलके गुनिकै ॥ चायसदे दुंदुभिब- जवाये । परदलमुख निज दल चलवाये ॥ विविध रंगके ध्वज

छत्रणसों । अरु हय गजरथ भट अत्रणसों ॥ तौ सुतकी सेना तहँ राजी । गहियहिबिधिकी सुखमाताजी ॥ मानहुँ उदयाचल कै जंगम । चाह्यो अस्ताचलको संगम ॥ दोहा ॥ तेहि क्षण दुर्योधन नृपहि निरखि शोचसों ग्रस्त । कहे भीष्म साहसजनक बचन बिशाल प्रशस्त ॥ हम कृप द्रोण बिकर्ण शल्ल द्रौणिशल्य भगदत्त । बिन्द भूप अनुबिन्द अरु कृतबरमा मदमत्त ॥ भूरिश्रवा बाह्लीक अरुबीर वृहद्बल भूप । इन्हैं आदि अगणितनृपति जे अतिरथीअनूप ॥ सोरठा ॥ येसब कीन्हेकोहदेवन जीतन योग हैं । त्यागे तिनको मोह तौजय हिततेसुभट सब ॥ पै नृप पाण्डव सर्ब हैं अजेय निश्चय सुनो । सबदिन क्षणसब पर्ब जासु सहायक कृष्ण प्रभु ॥ चौपाई ॥ इमि कहि भीष्मपितामह ज्ञानी । मण्डलव्यूह रचे अनुमानी ॥ रथगज हय अरु पैदर गनसों । कीन्हों आवृत परमयतन सों ॥ प्रति गज सात सात रथ कीन्हे । रथप्रति सात तुरँग करि दीन्हें ॥ हय प्रति सात सात भटरूरे । राखे खड्गपाणि बलपूरे ॥ तिन प्रतिसात धनुर्द्धर राखे । प्रबल बीरजे जयअभिलाखे ॥ अयुत अयुतगज रथ हय चीन्हें । तासुत सिगरे निज सँग लीन्हे ॥ भीषमके रक्षक ह्वै रनमें । चले शत्रु पै गर्वित मनमें ॥ इतको मण्डल व्यूह निहारी । बज्रव्यूहवन रचो बिचारी ॥ बिरचित व्यूह निरखि दुहुँदिशिसों बढ़ि बढ़ि भिरेबीरभरि रिससों ॥ द्रोणाचार्य जीतिकीमतिसों । भिरेमत्स्यपतिबीर बिरतिसों ॥ भिरोशिखंडी सोंबलधामा । बीरबांकुरोअश्वत्थामा ॥ सहदेवनकुलसदलसामासों । भिरेमद्रपति निजमामासों ॥ धृष्टद्युम्न सोंभिरोप्रचारी । दुर्योधननरपति रणचारी ॥ भूपबिंद अनुबिंदरिसाई । युधामन्यु सों करी लराई ॥ बीर घटोत्कच बढ़िरिस अति सों । भिरो प्राग्जोतिष के पति सों ॥ भिरो सात्वकी सो तहँ राजा । बीर अलम्बुष सहित समाजा ॥ दोहा ॥ धृष्टकेतुसों भिरतभो भूरि

श्वानरेश। चेकितानसों भिरत भे कृपाचार्य वरवेश॥ चित्र-
सेन तौ तनय अरु दुर्मुख हे रणधीर। अरु विकर्ण सों भिरत
भोभट अभिमन्यु सुधीर॥ भूपश्रुतायुधसों भिरे धर्मराज बल-
वान। यहि विधि भिरि भिरि सुभट सबकिये कठिनघमसान॥
चौपाई॥ अगणित सुभट भीमसों भिरिकें। लगे लरन चहुँदि-
शि फिरिफिरिकें॥ कइक सहस्र सुभटजय उठे। चहुँदिशि घे-
रिपार्थसों जूटे॥ तिन्हें देखि पारथ धनुधारी। कहे कृष्ण सों
बचनबिचारी॥ जे ये मम हतहित अनुरागे। तजतअस्त्रअति
रिसि सों पागे॥ नाशत तिन्हें आजु हम क्षणमें। मम विक्रम
निरखौ यहि रणमें॥ इमिकहि पार्थ शरासनकरषे। नृपसमूह
पर बरशर बरषे॥ ते सिगरे अतिगौरव लीन्हें। पार्थहि शर
सों छादित कीन्हें॥ तब पारथ अति रिस विस्तारे। सादर
ऐन्द्र सुअस्त्र प्रहारे॥ काटिबाण सब इनके क्षनमें। हनेअस्त्र
तिन सबके तनमें॥ असनाहिं रह्यो एकभट तिनमें। युगशर
लगो होइ नहिंजिनमें॥ ऐन्द्र अस्त्रसों बेधित ह्वैह्वै। भगेसु-
भट सबव्याकुल ह्वै ह्वै॥ गे भीषमके ढिग अति आरत।
शङ्कित फिरि फिरि अरिहि निहारत॥ सो लखि भीषमरिस
विस्तारी। चले पार्थपै धनु टंकारी॥ ताक्षण दुर्योधनअनखा-
ई। सत्वर तिन सुभटन पै जाई॥ कह्यो भीष्ममम दलकोनाय
क। जात अकेलो बरषत शायक॥ बेगितासु सँग तुम सब
जाहू। लरिनिःशंकलेहुजयलाहू॥ दोहा॥ दुर्योधन के वचनसुनि
तेसब शंकविहाय। लरनलगे परभटनसों भीषमके सँगजाय॥
इमि शासन दै भूप भिरि धृष्टद्युम्न पै जाय। लगो पूर्ववतलरन
भिरि मारि बाणदृढ़ घाय॥ सोरठा॥ घोर युद्ध तेहि याम दल
मण्डलमें मचतभो। सब के हिय अभिरामविशदवीर रसरचत
भो॥ तोमर॥ तहँ द्रोणवीर कराल। अति कोपकरि त्यहिकाल॥ नृप मत्स्यपतिके काय। हनि विशद बाणमचाय॥ फिरि

मारि हैं शर आसु । धनु ध्वजा काटे तासु ॥ तब भूप सो अनखाय । गहिआन धनुष चढ़ाय ॥ भट द्रोण कहँ ललकारि । तकि तीनि बाण प्रहारि ॥ हे सुरथके हय चारि । शरचारि तिन कहँ मारि ॥ फिरि सूतके तनपांच । भो हनत बर नाराच ॥ फिरि दोय शरसों बीर । ध्वज धनुष काटो धीर ॥ दोहा ॥ तदनु द्रोणशर आठ हनि बधे तासुहय सर्ब । सूतहि बधिशर एकसों गरजो लहि अतिगर्ब ॥ तब निज रथसोंकूदिके मत्स्याधिप मतिमान । निजसुत शङ्ख सुबीरके रथपैगयो अमान ॥ चौपाई ॥ पितापुत्र ते अतिरिसि लीन्हें । द्रोणहि शरसों छादित कीन्हें ॥ तिनके सबशर काटि अचारय । तजे अमोघ बाण जय कारय ॥ लागि शंखके उरमें सोशर । कटिगो बेधि गिरोसो महिपर ॥ निज आतमजहि मरो लखि डरिकै । मत्स्याधिपति युद्ध परिहरिकै ॥ गो बिराट नृपके ढिग तबहीं । तबतेहि जियत बिचारयो सबहीं ॥ सो लखिकै अगणित भट उतके । भिरे द्रोणसों अतिबल युतके ॥ बीर शिखंडी अश्वत्थामा । कठिन युद्धकीन्हों जय कामा ॥ तहां शिखंडी लाघव करिकै । भयद असंख्यबाण परिहरिकै ॥ तीनिबाण अतिशय अनियारे । द्रोण तनय के भ्रूमधिमारे ॥ तदनु द्रोणसुत धनुविधि ठाटे । तासु सूतहयधनु ध्वज काटे ॥ तब नृप तनय चर्म असि गहिकै । रथसों कूदि खड़ोरहु कहिकै ॥ बिचरन लगोभूमि पै तैसे । बाज बिशाल गगन में जैसे ॥ बहुशर हने द्रोण सुत ताक्षन । लगो न एक बाण ताके तन ॥ कितने असिसों काटिगिराये । किते चर्म पै आड़ि बराये ॥ तबद्विज मारि बाणबरआसू । दीन्होंकाटिचर्म असितासू ॥ तदनुकोपि बहुशर अनियारे । द्रुपद तनयके तन मधिमारे ॥ दोहा ॥ धीरशिखण्डी बीरतबखण्डित असिजोताहि । बाहत भो द्विज तनय पै अतिबलसों बधचाहि ॥ लखि आवत असिखण्डसो द्विज सुतबीर उदण्ड । मारिबाण बरबीचही

करिदीन्हें दोखण्ड ॥ ताहि काटि बहुशर हने द्रुपद तनय के काय। सात्वकिके रथपर गयो तब सो युद्ध विहाय ॥ गीता ॥ सात्वकी रणधीर भटतहँ क्रोधवर विस्तारि। हननभो बहुवाण सुभट अलंबुषहि ललकारि ॥ राक्षसो सोकोपि सात्वकिको शरासन काटि। भयोबरषत वाण अगणित राक्षसीविधि ठाटि ॥ सात्वकी भटप्रबल तब सुरेन्द्रअस्त्र प्रहारि। किये ताकहँ विकल ताकी सर्वमाया वारि ॥ भयो यहिविधि विकलराक्षस सकोनहिं थिरतत्र। छोड़ि सन्मुख सात्वकी को भागिगोअन्यत्र ॥ प्रखर कै तेहिसमय सात्वकि वर्षिवाण सटेक। हते इतके सुभट अरु गजराज बाजिअनेक ॥ धृष्टद्युम्न उदण्डभट टंकारिवर कोदण्ड। हने तो सुत भूपके तनवाण बहु अतिचण्ड ॥ भूप दुर्योधन हने तेहिवाण अहिमसभूरि। धृष्टद्युम्न सुदेनभो तो तनयपर शरपूरि ॥ धृष्टद्युम्न नरेन्द्रसुत हनिचारिशर तेहि काल। बधत भो तो तनयके रथते तुरंग विशाल ॥ फेरिमारे भूपकेतन सातशर रिस पागि। चर्मअसिगहि चलोतापै नृपतितब रथत्यागि ॥ शकुनि सत्वर जाय ताथर नृपहि नीति सुनाय। गयो लैढिग भीष्मके निज सुरथपर बैठाय ॥ रथी कृतवरमा सुअरथी सुजयको बलवान। भीम भटसों करनभो तेहि समय अति घमसान ॥ भीम हनिशरचारिताके सुरथके हय मारि। सारथिहि बधि काटि केतुहि दयेमहिपै डारि ॥ खड़ोरहु कहिहने अगणित वाणताके काय। भूप कृतवरमा न तहँ करि सकोकछु व्यवसाय ॥ त्यागि निजरथ भागिबैठो वृषभके रथ जाय। भीम ताक्षण हतेहय गज भटनके समुदाय ॥ वचन यह सुनि कहेनृप धृतराष्ट्र रिस बिस्तारि। सदा संजय कहतहौ मम ओरकी तुमहारि ॥ सदलसब पांडवनको अतिविशद विक्रम ओज। भांति भांति प्रशंसि संजय कहतहौ तुम रोज ॥ दोहा ॥ यहसुनि संजय कहतभे सुनिये कुरुपति भूप। तोसुत सिगरे

लरतनित निज विक्रम अनुरूप ॥ सदल पुत्रतो प्रबल अति करता युद्ध बिनोद । पैतुव निज अपराधसों लहत न रणमें मो- द ॥ प्रापि पांडवनके निकट व्यर्थ पराक्रम होत । जिमि सागर मधि उदधिजल स्वाद न करत उदोत ॥ सोरठा ॥ सब क्षितिपण को नास ह्वैहैतुव अपराध सों । करिकै युद्ध प्रयास मरि बसिहैं सुरलोकमें ॥ चौपाई ॥ अब नृप युद्ध व्यवस्था सुनिये । सोनिज कृत तरुकोफल गुनिये ॥ भूपविन्द अनुबिन्द सुबीरा । अरु भट इरावाण रणधीरा ॥ कीन्हों घोरयुद्ध तहँ भिरिकै । मारि परस्पर सबदिशि फिरिकै ॥ इरावाण करलाघव करिकै । षट क्षुरप्रशायक परिहरिकै ॥ अति अनुबिन्द भूपके बाजी । काटे धनुष ध्वजाछबि साजी ॥ तब अनुबिन्द सुरथ परित्यागी । गयो बिन्दके रथपै भागी ॥ तहां कठिन कोदण्डहि गहिकै । गर्वित क्रोध दवासों दहिकै ॥ बरषत भयो भयानक शा- यक । जे तनु त्राण बिदारण लायक ॥ ते युगबन्धु एकथर ह्वैकै । मारे जितने शायक ज्वैकै ॥ सिगरेबाण काटितेहिक्षनमें । इरावाण अति कोपित मनमें ॥ अति तीक्षण गुरुशायक हनि- कै । सूतहि बधो खड़ोरहु भनिकै ॥ ह्वैअसूत हयरथ लैभागे । गये दूरिचलि भयसों पागे ॥ इमिअवंति पतिसों जयलहिकै । मोदो इरावाण तहँरहिकै ॥ नागसुता को सुतसो भारत । भयो तहां अगणितभट मारत ॥ नृप भगदत्त घटोत्कच भिरिकै । कीन्हें कठिन युद्धतहँ थिरिकै ॥ नृप भगदत्तगजस्थ सोहायो । रथीघटोत्कच सुखमा छायो ॥ दोहा ॥ भगदत्तहि अगणित बि- शिख हने घटोत्कच वीर । घटोत्कच अगणित बिशिख हनेनृ- पति रणधीर ॥ कोपितजे भगदत्त नृपचौदह बिशिखअमान । तिन्हें काटिराक्षस नृपहि मारे सत्तरिवान ॥ गुप्ततोमर ॥ भगदत्त नृप तब तेखिकै । हनिचारिशिर अवरेखिकै ॥ हय तासु रथके मारिकै । भोनदत धनुटंकारिकै ॥ तब राक्षसाधिप क्रोधिकै ।

तकि शक्तिमारी शोधिकै ॥ भगदत्त नृपसों काटिकै । वरबाण
डारो डाटिकै ॥ हैडम्ब ताक्षण भीतिकै । सोभागि निशिरथवीनि
कै ॥ लरि इन्द्रसों भयपूरिकै । जिमिनमुचि धीरज दूरिकै ॥ भग-
दत्त नृप तेहिकालमें । भोथमत परदल जालमें ॥ भट पांडवन
के सैनके । करिदेतभो बेचैनके ॥ दोहा ॥ सहदेव नकुल सुबीर
अरु शल्य मद्रपति भूप । घोरयुद्ध तहँ करतभे अनुपम अप्र-
तिम रूप ॥ तेयुग भ्राता शल्य कहँदये शरनसों छाय । शल्य-
हते तब नकुलके थरके हय हरषाय ॥ तुरंगम ॥ तब नकुल
अनुपम सेवके । गेसुरथ पै सहदेवके ॥ युग सुभटने चकडोर
ह्वै । सन्धानि धनुषसगोर ह्वै ॥ निज सानुगाहि शरपुञ्जसों ।
तहँछाय पूरतूरसों ॥ तबशल्यसून सुठानसों । तकि तिन्हैं छाये
बानसों ॥ सहदेव तब अतिकोपिकै । शरहनो मयको चोपिकै ॥
सो विशिख कठिनकराल ह्वै । तन वेधि कढिगो व्याल ह्वै ॥
तब शल्य इत उत जोहिकै । गिरिपरो रथपै मोहिकै ॥ लखि
सूत भयसों पागिगो । रथहांकि सत्वर भागिगो ॥ दोहा ॥ लखि
शल्यहि भागतनिरखि तोसुत अचरज जानि । माद्री सुत पै
शल्यकी कृपा गुणी अनुमानि ॥ तेयुग धनुटंकारि तब हर्षित-
रदी तोसैन । असुरचमुहि मरदीयथा इन्द्र उपेन्द्र नवैन ॥
सोरठा ॥ तहँश्रुतायुषहि देखिनृप तेहिदिनकेमध्यमें । धर्मसुतयुधि-
ष्ठिर तेखि थिरुथिरु कहि नवशरहने ॥ चौपाई ॥ नृपश्रुतायु निज
धनुटङ्कारी । हनेसातशर प्राणप्रहारी ॥ तेशर कवचभेदि धसि
तनमें । रविकर समदरशेतेहि अनमें ॥ तब पांडवपति अति-
शयरोस्यो । मार्यो तासु हियो शरचोस्यो ॥ किरिहनि एकबाण
मनभायो । काटतासु केतुहविछायो ॥ तवश्रुतायुअति रिसवि-
स्तारे । सातबाण नृपके तनमारे ॥ तासणकोपि धर्मसुतताना ।
भोप्रचण्ड सहस्रांशु समाना ॥ लखिदलके सबसुभट सकाने ।
बिवरणभये मरणअनुमाने ॥ हनिक्षुरप्रशर पांडवनाना । काटो

ताको धनुषद्राजा ॥ फेरिश्रुतायुष नृपकेहियमें । मारेबाणजानि वधजियमें ॥ फिरि हनिचारि बाणअनियारे । हति चारोंहय महिपरडारे ॥ करि करलाघव हनिशर भायो । हतिसूतहि यम-लोक पठायो ॥ ताक्षणअतिभय भरोश्रुतायुष । सत्वर भागि गयो लै आयुष ॥ करिऐसो बिक्रम क्षितिनायक । वर्षत भोतो दलमधि शायक ॥ व्याकुल ह्वै भागो दल इतको । मिटोचाव तो सुतके चितको ॥ बदन बगारे काल समाना । लख्यो तहां नृपधर्म अमाना ॥ दोहा ॥ कृपाचार्य्य सों युद्धकरि चेकितान अनखाय । कर लाघव करिदेतभो शर समूह सों छाय ॥ कृपा-चार्य्य अतिक्रोधकरि शरसो सब शरकाटि । चेकितानके गात में बहुशर मारेडाटि ॥ बहुरि बाणषट मारिकै धनुष काटिगहि गर्ब । हतिसूतहि फिरि हततभे रथके घोड़ेसर्ब ॥ वसुकला ॥ तब चेकितान । करिरिस महान ॥ गहिगदा घोर । अतिशय कठो-र ॥ बलसों असूदि । तजि सुरथ कूदि ॥ हनिगदा आसु । हति तुरगतासु ॥ सारथिहि मारि । तहँ दयोडारि ॥ तेहिहन्योआर्य । भट कृपाचार्य ॥ षटदश सुबान । लखिअति अमान ॥ तन त्राणभेदि । तन दयोछेदि ॥ दोहा ॥ चेकितान तबगरजिकै गदा आयसी ताहि । झेलतभो कृपबीर पर अतिबलसोंबधचाहि ॥ असह अशनि समतेहि गदहि आवत लखिद्विजराज । हनि सहस्र शर बीचही काटिदयो जयकाज ॥ चौपाई ॥ तबअसिचर्म पाणिमें लैकै । चेकितान नृपमन निरभैकै ॥ कृपपै चलो सिंह सम गरजत । तासु सहाइनके हियदरजत ॥ कृपाचार्य्य लखि भरि रणभासों । गहि असिचर्म भिरेबढ़ि तासों ॥ समरणधीर बीरते भिरिकै । अनुपम युद्ध कियेतहँ थिरिकै ॥ हनि अन्योन्य सक्षत तन ह्वैह्वै । गिरेभूमिपै मूर्च्छित ह्वैह्वै ॥ लखिरणकर्ष आइरणपथ पै । लैगो नृपहि डारि निज रथपै ॥ शकुनि कृपहि निजरथपै लीन्हें । क्षतनिरेखि अतिविस्मय कीन्हें ॥ धृष्टकेतुअ-

नुपम रणचारी। भूपति भूरिश्रवहि प्रचारी॥ नवे बाण हनत भो बलसों। अनर करहिं जे लागि उपलसों॥ भूरिश्रवाभूप रिसि अतिकै। नृप सुनके हय मृतहि हनिकै॥ करन भयो बाणनकी वर्षा। करिधनु विधिकी गति उनकर्षा॥ धृष्टकेतु गो निज रथ तजिकै। शतानीकके रथपर लजिकै॥ तोसुत चित्रसेन रण कर्कस। अरु दुर्मर्षण वीर अधर्कस॥ अरु विकर्ण ये भट योधा वर। लखि अभिमन्युवीर कहँताथर॥ हांकि हांकि भिरि सहित समाजा। कठिन युद्ध कीन्हें तहँ राजा॥ भट अभिमन्यु कोपि तेहि क्षनमें। बहुशर मारे तिनके तनमें॥ दोहा॥
क्षणमें तिन तीनों भटन के हय सूतहि मारि। अर्जुनसुत अभिमन्यु भटदीन्हों महिपैडारि॥ हनि बाणनसों करनभो तिन्हें पराजितवीर। जिमि त्रिदोषकहँ सुरससों नाशत वैद्यगंभीर॥ समुझि भीमके वचन नहिं बध्यो तिन्हें अभिमन्यु। हनतभयो अगणित भटन अति प्रवृद्ध करि मन्यु॥ महिवरी॥ यहनिरखि भीषम हांकिरथ अभिमन्यु भटपै चलतभे। चलि रथी कइक हजार तासंग शत्रुदल दलमलतभे॥ निज सुवनपै इमिजात भीष्महि देखि पारथ रिसिगहे। टंकारि वर कोदण्ड शर सन्धानिकै सबसों कहे॥ करि चपल अश्वन शीघ्र भीषमपैचलो अबचाहिकै। अभिमन्युपैजेजाततिनको नाशकरिबो चाहिकै॥ सुनि कृष्ण सुरथ चलाय ततक्षण भीष्मपै सत्वर चले। तेहि समय इनके सुभट भिगरे निरखि पार्थहि खल भले॥ तहँभट सुशर्मा वीररक्षक भीष्मको तेहि देखिकै। चहुंओर वर्षतबाण पारथ कहतभे अवरेखिकै॥ तुम किये जितक अनीति ताको पाय फलयहि याममें। तन त्यागि निज पितुके निकट अब जातहौ यमधाममें॥ यहसुनिसुशर्मा वीरतहँ नहिं कछुकउत्तर देतभो। बढ़ि कइक सहस्र रथीन सह भिरि घेरिसबदिशिलेत भो॥ अति घोर संगर मचो तहँ सब ठौर शर पूरित भये।

सिदि पार्थ केशर बरणसों मरि सुभट बहु यमपुरगये ॥ दोहा ॥ तिनके बाणनसों तहां ताड़ित ह्वै तेहिकाल । पार्थ धनुर्द्धर करतभो बिक्रम कठिन कराल ॥ प्रति बाणन सों काटिकै सब के सब कोदण्ड । सबके तनमधि हनत भो चारि पांच शर चण्ड ॥ सोरठा ॥ पार्थ सुभट रणधीर भटअसंख्य क्षणमें बधे । ताकि त्रिगर्त पति बीर हांकि भिरो निज भटन सह ॥ चौपाई ॥ साठि रथी हैं ताके रक्षक । काल सदृश परदल के भक्षक ॥ ते सिगरे अतिबलसों हरषे । बाण असंख्य पार्थपर बरषे ॥ तब पारथ धनु बिधि अनुसारे । साठि बाणसों तिनकहँ मारे ॥ मण्डल सम कोदण्डहि करिकै । हते असंख्य सुभट रिसि भरिकै ॥ जीतितिन्हैं पारथरणचारी । चलोभीष्म पै धनुटंकारी ॥ तब कुरुपति अति रिसि सों मढ़िकै । सहसन भूप रथिनसह बढ़िकै ॥ सबदिशिकरत बाणकोदुरदिन । सत्वर भिरो पार्थसों त्यहि छिन ॥ पार्थधनुर्द्धर सहित समाजा । क्षणमें तिन्हैं जीति सुनुराजा ॥ भिरोजाय भीषमसों तैसे । गज प्रमत्त करिवरसों जैसे ॥ भीम नकुल सहदेव समेता । सदल युधिष्ठिर भूप सचेता ॥ ताक्षण तहां गये अतिबलसों । लहत जीति इतके सब दलसों ॥ कृप शल शल्य जयद्रथ भूपा । चित्रसेन ये सुभट अनूपा ॥ तिनसों आइ भिरे तेहि पलमें । घोर युद्ध माचो तेहि थलमें ॥ हनि हनि हनि अगणित अनियारे । मारु मारु थिरु मारु उचारे ॥ सनसन ठनठन घन घन घोरा । छम छम छप छप धुनि दुहुंओरा ॥ प्रगट पूरिगो सब दिशिमाहीं । शर बिनु रहो नेकु थल नाहीं ॥ दोहा ॥ बीर शिखण्डी बिधनु ह्वै मुरत भयो तेहि ठौर । देखि युधिष्ठिर भूप तहँ रिसिकरि कहे सगौर ॥ भीषमके बधको कियो तुम सुप्रतिज्ञा तात । सो भुलाय बिवरण भये अब कत मुरके जात ॥ यह सुवचन शर सानसों निजमन आयुध ओपि । चलो शिखण्डी भीष्मपै शर

वर्पन अतिकोपि ॥ भुजंगप्रयात ॥ घनेघोर नाराचको जालकीन्हें । बली भीष्मपै ज्यों चलो घात लीन्हें ॥ मिरोधाय त्यों शल्य भूपालतासों । लरे ते तहां सो कहो जाय कासों ॥ महीपाल सों अग्निमय अस्त्र डाख्यो । शिखण्डी तहां वारुणास्त्रै प्रहाख्यो ॥ मिटो अस्त्रसों अस्त्रको दर्पकूरो । नशैंशांतिसों ज्योंमहा कोप कूरो ॥ दोहा ॥ यहिविधि दोऊ वीर तहँ कीन्हें युद्ध विशाल । जानन पायो भीष्मपै द्रुपद तनय तेहिकाल ॥ नृपति युधिष्ठिर को धनुष काट्यो भीषम धीर । हँसो जयद्रथ देखिसो कोपोभीम सुधीर ॥ चौपाई ॥ गहि गुरुगदा कूदि रथ वरसों । चलो जयद्रथ पै त्यहि थरसों ॥ देखि जयद्रथ रिसिविकनागो । नव शर आउ आउ कहि मारो ॥ सहि तिन वाणन कहँभटभारी । माख्यो तव गताम्नु रथचारी ॥ तोसुत चित्रसेन तेहि छनमें । बहुशर हने भीमके तनमें ॥ तहांभीम अति रिसिसों छाये । चित्रसेन पै गदा चलाये ॥ गदहि देखि तोसुतके साथी । बिडरिगये जे गणप्रमाथी ॥ तिमिते बिडरिगये भयराखी । जिमि कर लखि गुरपरते माखी ॥ चित्रसेन अति भयसों पागी । गहि असि चर्मगयो रथत्यागी ॥ रथसोंकूदि गयोसो तैसे । चारु शृंगसों केशरि जैसे ॥ लागी गदा तासुरथ पै तिमि । प्रपतैवज्र सुतरुवर पै जिमि ॥ सहय सूतध्वजसो रथचूरण । कपिखग शाखस जिमि तरु पूरण ॥ खेदित भयो भीम तेहि छनमें । तो सुत सिगरे मोद मनमें ॥ चित्रसेन कहँ वै निज रथ पै । लगो विकर्ण चरण रण पथपै ॥ तिहि क्षण घोरयुद्ध तहँ माचो । मानो काल क्रोध करि नाचो ॥ तहँ भीषम अतिसै रिसिकरिकै - सकल दिशा बाणन सोंभरिकै ॥ सत्वर रथचलाय सुनुराजा । चले धर्म पैं सहित समाजा ॥ दोहा ॥ कोपि युधिष्ठिर भूप तव । सहित नकुल सहदेव । चले भीष्म पैं वेग सों यथापाथिक पै मेव ॥ भीष्म युधिष्ठिर पै किये शरपंजर तेहि काल । धर्म्म

भीष्मपै करतभे कठिन शरनको जाल ॥ सोरठा ॥ दोऊ बीर विशाल काटि काटि शर शरनसों । तजैं शरनको जालभरे जीति के परनसों ॥ चौपाई ॥ भीषम अति करलाघव कीन्हें । क्षणमें नृपहि अलख करिदीन्हें ॥ धर्म नृपति तब अनर बिचार्यो । अतिसै चण्ड एक शर मार्यो ॥ भीषम सोशर आवतदेखी । बीचहि काटिदये अवरेखी ॥ सोशर काटि चारिशर मारी । मारेतासुतुरगरथचारी ॥ तबतहँतजिसो सुरथसमाजा । गयो नकुलके रथपरराजा ॥ ताक्षणमेंसहदेव दोउभाई । करी भीष्मसों कठिन लड़ाई ॥ तहँ भीषमकेशर चण्डनसों । पीड़ित भेरे रुधिर मण्डनसों ॥ निज बन्धुन लखि अनरथजानी । धर्म कहे भूपनसोंबानी ॥ तुमसब महारथी अबलरिकै । बधौ भीष्म कहँ धीरजधरिकै ॥ सोसुनि भट अति रिसिसोंपागे । घेरिभीष्म कहँ मारन लागे ॥ तहांभीष्म विक्रमविस्तारे । अगणितसुभट निमिषमेंमारे ॥ नागयूथमधिकेशरिजैसों । लसैलसो तहँभीषम तैसों ॥ तहांयुधिष्ठिर नृपकेदलमें । हाहाकार मचो तेहिपलमें ॥ निरखि शिखण्डी रिसिसों छायो । बढ़िभीषमके संमुखआयो ॥ टेरिकहत इमि यहिथर थिरि कै । करहुयुद्ध अबमोसों भिरिकै ॥ देखिशिखण्डिहि भीषमज्ञानी । अनत गये तेहितिय अनुमानी ॥ दोहा ॥ संजय गणसों भिरे तब भीष्मपितामह जाय । तीनि पहर दिनको तहां बीतिगयो क्षितिराय ॥ धृष्टद्युम्न अरु सात्यकी तेहि क्षण धनु बिधि धारि । अगणित भट यहि ओर के दीन्हें महिपैडारि ॥ चौपाई ॥ तेहि दिन तेहि छिनमें तेहि थरमें ॥ हाहाधुनि सुनि इतरणघरमें ॥ भूप बिन्द अनुविन्द ससाजा । तिनसों जाइ भिरो सुनुराजा ॥ अतिरणधीर बीरते बांके । युद्ध कलामें निपुण निशाके ॥ घोरयुद्ध कीन्हें भिरि भिरिकै । चपल चक्र के सम फिरि फिरि कै ॥ तहां द्रुपद सुतके बरबाजी । हत्यो अवन्ति नाथ रणसाजी ॥ धृष्टद्युम्न तब निजरथ तजिकै

सात्यकि के ढिगगयो गरजि कै ॥ यहलखि धर्मभूप अनखाई । चपलप्रबलदलसहतहँजाई ॥ भिरे अवंत्याधिपनि नृपनिसों । गुणि दीवो नभगनि वलअनिसों ॥ लवनोतनय कौचसों मढ़ि कै । कैयकसहस रथिनसह वढ़िकै ॥ भूपविन्द अनुविन्दहिवै-री । अरिसों लरनलगे दृभेरी ॥ तेहिक्षणअर्जुन धीरधुरन्धर । कीन्हो वाणा नलको धन्धर ॥ अगणितहयगजभटवधिडारे । श्रोणितकी सरिताविस्तारे ॥ लख्योद्रोणकहँतहँतहि क्षनमें । लसै अग्निजिमि तृणकेवनमें ॥ तेहिक्षण अस्ताचल गिरिवर पर । विलसे अरुण अरुणद्युतिधरवर ॥ लखि दुर्योधन निज भटगणमें । कहकरो अति विक्रम रणमें ॥ मोहिपति निगरे भट रणचारी । कीन्हांघोरयुद्ध प्रणधारी ॥ दोहा ॥ निमि उनके भट क्रूरनमें घोरयुद्ध तेहिकाल । पृथक् पृथक् है अकथ नृप नव संगरको जाल ॥ इतनेमें संध्याभई भयअदृश्य दिनराय । निज निज डेरन चले नृप शंख बजाय बजाय ॥ [illegible] ॥ जेलरनमें जेहिठौर तिनसोंवीरने डेरन गये । अस्नान औषधि भोजना-दिक क्रिया करिसानँद भये ॥ नरपाल निगरे वसनभूषण ग-न्धरुचिसों धरनमें । किनिगान नृत्यादिकन में रतहोइ श्रम परिहरनमें ॥ करिशैन कीन्हें चैन निगरी सैनभट आनँद भरे । नहिं किये तिनके शोच जेमुन वन्धुवितु रणमधिमरे ॥ उनयुद्ध महिमें शिवाभूत पिशाचगण विहरनभये । अरु गृध्रआदिक जीवशोणित मांसभक्षण व्रतनये ॥ दोहा ॥ सतयेंदिनसेंहोतभो यहिविधिको संग्राम । कहे भूपमणि आपुसों है विशेषजग्राम ॥

इतिश्रीभीष्मपर्वणिभाषायांसप्तमदिनयुद्धवर्णनोनामएकोनविंशोऽध्यायः ॥

दोहा ॥ अब अठयें दिनको सुनो महतयुद्ध हेभूप । शेष रज-नि लखि सजनभे सैनिक सुभट अनूप ॥ रथ हयकुंजर भटन के साजन सजनविधान । उभै सैननमें होतभो तेहिक्षण शब्द महा-न ॥ जयकरी ॥ दुर्योधन भीषम रणधीर । चित्रसेन अरुद्रोण सु-

वीर ॥ सागर प्रतिम अमोघ सुव्यूह । विरचत भये तहां करि ऊह ॥ दाक्षिणात्य मालवआवंत्य । देशीजे नृपभटहितसंत्य ॥ तिन्हें साहित भीषम बलवान । आगे चले धरे धनुबान ॥ क्षुद्रक पारद और पुलिन्द । गणन सहितफिरि द्रोण अरिन्द ॥ मगध कलिङ्ग पिशाच सुदेश । के भटसह भगदत्त नरेश ॥ चलो द्रोण के पीछेगाजि । प्रबल प्रचण्ड सैनबर साजि ॥ मैकल त्रैपुरअरु चिवुकस्थ । अरु असंख्य भट निजदेशस्थ ॥ साहितवृहद्वल वीर उदण्ड । तदनु चलतभोगहि कोदण्ड ॥ तदनुत्रिगर्तचलो बलपूरि । सहकांबोजप्रबलगणभूरि ॥ अनुत्रिगर्त नृपको बल भौन । अश्वत्थामा कीन्होंगौन ॥ तदनु सबन्धु ससेनासर्ब । दुर्योधननृप चलोसगर्ब ॥ दुर्योधनके अनुअवदात । राजेकृपाचार्य्य विख्यात ॥ सागर प्रतिम व्यूह यहिठौर । विरचेभीषम करिकैगौर ॥ अगणित रंगके अगणित आम । लखेपताका छत्रललाम ॥ तौदलकी सुखमा तहियाम । लसतभई अनुपम अभिराम ॥ दोहा ॥ इतको ऐसो व्यूह लखिपांडव कुलपतिभूप । धृष्टद्युम्न सों कहतभे विरचो व्यूह अनूप ॥ धृष्टद्युम्न यहसुनि रचे शृङ्गाटक वरव्यूह । इविधि राखिसब दिशनमें विधिवत सुभट समूह ॥ चौपाई ॥ भीमसेन सात्यकि रणधीरा । लसेशृङ्ग ह्वै सदल सुवीरा ॥ लैसँग कइक सहसभटसाजे । पारथशृङ्ग मध्यमेंराजे ॥ नृपसमूह सह सहित समाजा । हेमाधिदेश युधिष्ठिरराजा ॥ यहिविधि नृपसमूह सब अंगमें । राजे लैलै सेना संगमें ॥ सुवन द्रौपदीके मनरंजन । वीर घटोत्कच अरिदल गंजन ॥ अरु अभिमन्यु विराटनरेशा । राजतभे रहिपश्चिम देशा ॥ पांडव यहिविधि व्यूह विरचिकै । लसे वीररस रंगसों रचिकै ॥ भेरी शङ्खादिक बहुबाजे । जेबाजे धुनि सुनि घनलाजे ॥ निजनिज प्रतिमनिहारि निहारी । योधाभिरे प्रचारि प्रचारी ॥ शक्तिपरश्वध भल्ल कृपाना । भिन्दिपाल तोमर

बरवाना॥ तकि तकि हनन लगे दुहुँदिसि सों। धीरधुरीणभरे अति रिसिसों॥ तहां भीष्म विक्रम विस्तारे। अगणित सुभट निमिष में मारे॥ कितने रथी विरथ करि दीन्हें। कितने सुरथरथीविनु कीन्हें॥ कितने तुरग किये विनुसादी। हय विनु कीन्हें किते प्रमादी॥ किते द्विरद द्विरदरुथ सँहारे। किते पदाती महिपर डारे॥ कितने धनुपध्वजा रथकाटे। पर दल मध्य भूरिभय पाटे॥ दोहा॥ भिरो भीष्मसों भीम तव दीरघ धनु टंकारि। गरजि मेघसम वज्रसम वाण अनगिने मारि॥ ताक्षण तौदलमें भयो ऐसो शब्दअपार। भिरो भीष्मसों भीम तव कहा करत करतार॥ चौपाई॥ भीष्म भीमको निरखि समागम। इतसव गुणो विपतिको आगम॥ तहां भीम अति विक्रम कीन्हें। लखि दुर्योधन चिन्ता लीन्हें॥ ह्वै प्रकर्ष पाण्डव सव हरषे। वाण वारि वारिद सम वरषे॥ लखि दुर्योधन भूप विचारी। लै सँग सव सुबन्धु रणचारी॥ बढ़ि भीषम के ढिग ह्वै ठाढ़े। वर्षण लागे वाणउकाढ़े॥ तहां भीमहनि शर मजबूतहि। बधिडारो भीषम के सूतहि॥ विगत सूतह्वै हयभयपागे। रथ लै इतउत दौरन लागे॥ भीमवीर तव अवसर पाई। अति तीक्षण शर एक चलाई॥ तो सुत भट सुनाम तेहि बधिकै। सिंहसदृश गरजो महि मथिकै॥ सो लखितोसुत सातरिसाई। भिरेभीमसों भीतविहाई॥ वहुवासी अपराजित योधा। अरु आदित्यकेतु करिक्रोधा॥ दण्डधार पण्डितक महोदर। अरु विशालचख सातसहोदर॥ येभिगरे अतिरिस सों छाये। क्षणमें वाणअसंख्य चलाये॥ वीरमहोदर भटतेहि क्षनमें। नवशर हन्यो भीमके तनमें॥ भटआदित्यकेतु सत्तरि शर। पांच हन्यो वहुवासी तेहिथर॥ दण्डधार नब्बेशरमारे। अरु विशालचख सातप्रहारे॥ दोहा॥ अपराजित वहुशरहन्यो भीमसेनकेकाय। वीरपण्डितक हनतभो तीनिवाण दृढ़घाय॥

तहां भीम अतिचण्डह्वै सातबाण बरमारि । क्रमसों तिनके काटिशिर दीन्हें महिपरडारि ॥ समुझिप्रतिज्ञा भीमकी ताक्षण तोसुतसर्व । लखिसिंहहि करि यूथसम भागेतजि तजिगर्व ॥ रोला ॥ भूप दुर्योधन कहतभो भटनसों तेहिठाम ॥ घेरिभीमहि बधौ तुम सब बीरबल बुधि धाम ॥ भूपको सुनि बचन बढ़ि बढ़िवीरबहु इकवार । भीमसों भिरिकरतभे तेहिठौर युद्धअपार ॥ निरखि बन्धुनको मरण कुरुनाथ अतिदुख पाय । भीष्मके ढिगजाय ऐसो कहतभे बिलखाय ॥ भीम मारत बन्धु मम अरु भटनको समुदाय । आपुसों मध्यस्थ समहौ लखतछोह छपाय ॥ करत आंशू पतन जब इमि कह्यो तो सुत भूप । भीष्म तब इमिकह्यो नृपसों सत्यबचन अनूप । पूर्व तुमसों कहे हम कृप द्रोण बिदुर बिचारि । सो न मानेहु तासु फल अब लखहु नैन पसारि ॥ युद्धके आरंभमें हम कह्योहो समुझाय । द्रोण केकय संग मम निति रहेहु तुम सब भाय ॥ भीम न्यारो लहैगो ज्यहि बधैगो तेहि तत्र । भूलिसो कत गये हमसों द्रोणसों अन्यत्र ॥ शोच अबकतकरौ भावी होइगी नहिं आन । सर्व पांडवसुरनहूं सोंहैं अजेय अमान ॥ भूप ताते धीर धरि अब लरौ त्यागौ शोच । युद्धमें तनत्याग क्षत्रिहि श्रेष्ठगति नाहिंपोच ॥ बचन यह सुनि कहे तहँ धृतराष्ट्र नृप भरि नैन । दैव चाहत होत सो कछु पुरुषके बशहैन ॥ द्रोण भीषमद्रोण सुत कृप भूरिश्रव भगदत्त । आदि सबममसुभट बीर अजेयप्रबल प्रमत्त ॥ तिन्हैं आछतरोज मम सुत सदल मारे जात । पाण्डवनमें एक को नाहिं होत कबहूं घात ॥ अन्ध नृपको बचन यह सुनि कहे संजय बैन । द्यूत बिरचत समय बरजे बिदुर दायक चैन ॥ सो न मानो ससुत तुम अबलीजिये फलतासु । सुनो क्रमसों पुत्रमित्र सबर्ग सबको नासु ॥ सुनोनृप अबभयो जिमि युगयाममें संग्राम । बढ़ीजामें शोणितोद्धा नदी अमल

अछाम॥ दोहा॥ तोसुतको समुझायतिमि भीषम कै अतिचंड। परदल मर्दन लगे करि मंडल सम कोदंड॥ तहँ आज्ञालहि धर्मकी भिरे भीष्मसोंवीर। धृष्टद्युम्न सात्यकि द्रुपद धृष्टकेतु रणधीर॥ भूपतिवीर विराट अरु कुन्तिभोज कैकेय। सुभट शिखण्डी सब सहित निज निज सैन अमेय॥ सोरठा॥ तिनसों अति संग्राम सदल भीष्मसों मचतभो। कोकहि सकैप्रमान जहँ जैसो संगर भयो॥ दुर्योधन तेहि काल कहे अनेकन नृपन सों। तुम सिगरे क्षितिपाल होहु सहायकभीष्मके॥ चौपाई॥ नृप निदेशसुनि अगणित राजा। चले भीष्मके ढिगसहसाजा॥ तिनसों भिरे बीचही जाई। चेकितान अर्जुन वरदाई॥ अरु सुत द्रुपद सुनाके योधा। सदल प्रचारि किये अवरोधा॥ माचो घोर युद्ध तहँतिनसों। पृथक् पृथक् कहिनिर्वैर किनसों॥ भीमसेन अभिमन्यु सुधीरा। सुभट घटोत्कच अतिरणधीरा॥ लैसँग सहसनभट मनभाये। सिगरेदल मधिद्वन्दमचाये॥ इमि रचितीनिगोलते अतिवल। मर्दनलागे तोसुतकोदल॥ भूपति सुनो द्रोणतेहिक्षणमें। अद्भुतविक्रमकीन्हेंरणमें॥ हति उनके हय गज अरु वीरन। यमपुरमें कीन्हो संकीरन॥ भीमसेन अतिगौरव लीन्हें। द्विरदअसंख्य प्राण विनुकीन्हें॥ अगणितद्विरद किये विनुरदके। अगणितहय कीन्हें विनपदके॥ अगणितरथीगजी हयसादी। वधतभयो तहँभीमप्रमादी॥ सहदेवनकुल वीरतेहि पलमें। प्रलयकाल रोपेतौ दलमें॥ द्वैसरोषमर्दनभेहयदल। अगणितभटकरि दीन्हेंपैदल॥ अगणिततुरग कियेविनुभटके। वहुभट किये हायहारटके॥ तेहिक्षणवहुहय गजभय पागे। भट विनु फिरे सकल दिशिभागे॥ दोहा॥ बाणनकी झरिदिन तहां करि पारथ रणधीर। शोणितकी सरिता वही समुद समान गँभीर॥ कृतवर्मा कृप द्रोणसुत भगदत्तादिकवीर। हति इनके अगणित सुभट भेजिदये यमतीर॥ इतउतके वर प्रवलभट

भये सक्रुद्धकराल । उभयसैनमें करतभो प्रलयकालसमकाल ॥
सोरठा ॥ शकुनि सबन्धु ससैन अरु हार्दिक्य महीप मणि । भरे गर्व बल ऐन चले शत्रुकी सैन प्रति ॥ चौपाई ॥ इन्हैं देखि तहँ भयो सक्रोधा । इरावाण अर्जुन सुत योधा ॥ हयानीक सहबढ़ि अति बलसों । सत्वर भिरो शकुनिके दलसों ॥ तिनसों भयो घोर संग्रामा । कटे असंख्य सुभट बलधामा ॥ इराबाण बल बुद्धि निकेता । ताक्षण तहँ करिकै शर सेता ॥ करिकै प्रखरचतुर बिधिबलको । ब्याकुल कियो शकुनिके दलको ॥ सो लखिकै अतिशय अनखाई । षटभटप्रबल शकुनिकेभाई ॥ गजगवाक्षसुक आर्जव बीरा । चर्म बाण अरु वृषभ सुधीरा ॥ बर्षत तोमरबाण दपटिकै । इराबाण पै चले झपटिकै ॥ बरज्योशकुनि न तेसब माने । इराबाण पहँगे उमदाने ॥ सदल जाय ताके दलमाईं । करन लगे सुभटनकी नाईं ॥ इराबाण तब निजभट गनसों । कहत भयो अति गर्वित मनसों ॥ येअब जानन पावैं फिरिकै । बधौ इन्हैं लरिविधिवत भिरिकै ॥ सोसुनि सुभटभिरे तिन सबसों । कहि कहि मृतकभये तुम अबसों ॥ तिनसोंनिज दल मर्दित देखी । तेषटबन्धु बीर अतितेखी ॥ घेरि इरावत कहँ सब दिसिसों । मारणलगे बाण भरि रिसिसों ॥ हनि हनि अति तीक्षण शर चीन्हें । इराबाण कहँ कीलितकीन्हें ॥ दोहा ॥ नागसुतासों प्रगटसुत अर्जुनको गतभर्म । भूपति ताक्षणकरतभोअतिशयअद्भुतकर्म ॥ तासुगातमधिहेगड़े इनकेमारेबान । तिनहीं को लय लय हने इनकहँ बीर अमान ॥ परके शोणित सों भरे परके हने सठौर । निजनिज बाणन सों भिदि मोहित भेतिहि ठौर ॥ तोमर ॥ तहँ इन्हैं मूर्च्छित देखि । सुत पार्थको अवरेखि ॥ गहिचर्म अरु किरवान । ह्वै पायये बलवान ॥ भो चलत इनपैं धाय । बध करनको उमदाय ॥ तेहि समय येभट सर्ब । फिरिह्वै सचेत सगर्ब ॥ बढ़ि इराबाणहिं घेरि । शर त-

जन लागे टेरि ॥ भट इरावाण विशाल । इमि चपलभो त्यहि काल ॥ इन सर्वको शर घात । नहिं छुवन पायो गात ॥ तब सर्व ये यह चाहि । गहिलेन चाहेनाहि ॥ तब पार्थकोसुतशूर । सब अस्त्रविद्या पूर ॥ असि चर्मकी विधि ठाटि । धनुबाण सब केकाटि ॥ भटपांच तिनमें मारि । तहँ दये महिपर डारि ॥ हो वृषभ नामक जौन । गोभागि घायल तौन ॥ तहँ तिन्हें निपतित पेखि । तो तनय नृप अति तेखि ॥ हो आर्ष्यश्रृङ्गी नाम । भटवीर राक्षस आम ॥ इमि दयोशासन ताहि । तुमवधौ सादर याहि ॥ सोवीर धनु टङ्कारि । बढ़िचलो तेहि हङ्कारि ॥ दोहा ॥ मायावी राक्षस प्रबल दै सहस्र हन शेष । हय सादी सुभटन सहित लस्यो भयानक भेष ॥ अति प्रचण्ड भट राक्षसहि निजपर आवत देखि । गरजि सदल बढ़ि भिरत भो इरावाण अतितेखि ॥ चौपाई ॥ परदल निजसों अधिकनिहारी । राक्षस तहँमाया विस्तारी ॥ रहे शत्रुके सँगभट जितने । आपु करतभो निर्मित तितने ॥ उभय ओरके योधा भिरिकै । घोर युद्ध कीन्हों तहँथिरिकै ॥ हनिअन्योन्य पराक्रम करिकै । दिवगे स्थूल देह परिहरिकै ॥ तेयुग योद्धा ह्वैगतसेना । भिरे हांकि दुर्मद जगजेना ॥ जिमि प्रमत्त मैंगल युग लरहीं । अनुपम अतुल पराक्रम करहीं ॥ तिमि सोहे तहँ ते रणचारी । निज निज जय यशके अनुसारी ॥ इरावाण तहँगरुता लीन्हों । असिसों तासुधनुष द्वै कीन्हों ॥ ह्वैअचाप राक्षस भयपागी । गयो गगन मधि धीरज त्यागी ॥ इरावाण अतिरिससों पागो । नभ पै गयो तासु सँग लागो ॥ तहँ वरभट तो ठाटन लागो । असुरहि असिसों काटन लागो ॥ आर्ष्यश्रृङ्ग तहँनिदरि जिमूतन । अद्भुत कला करतभो नूतन ॥ इरावाण काटै तनतासों । नूतन ह्वै प्रगटत भरिभासों ॥ इरावाण सोऊ तन काटै । फिरिसो प्रगटि वीरताठाटै ॥ स्वप्न मनोरथ कैसो कौतुक । राक्षस करत

भयो तहँसौंतुक ॥ फिरिराक्षस कछुमाया करिकै । प्रगटोअति दीरघवपु धरिकै ॥ दोहा ॥प्रबलघोरबपु गहिचलो गहन ताहि त्यहि ठौर । इराबाण तबभो बिकट नागरूप करि गौर ॥ अरु सहसन अहि प्रगटकरि घेरिलेतभो ताहि । गरुड़रूप तब गहतभो राक्षस निजजय चाहि ॥ गरुड़रूप गसिलेत भो सब नागन कहँ खाय । इराबाण लखि जकिरहो करिनसको व्यवसाय ॥ मातृपक्ष के छाव अरु धृत स्वरूपके भाव । गरुड़रूप लखि जकि रहो इराबाण तजि चाव ॥ तब सो राक्षस समय लहि काटि चारु शिर तासु । लहि अपूर्व जयगयो ढिग दुर्योधन के आसु ॥ सोरठा ॥ उतके सुभट प्रधान अरु पाण्डवनाहिं तात हे । इराबाण बलवान यहिबिधि मारोगो यहां ॥ माहिखरी ॥ तेहिसमय युगदल मध्यसबथर मचो हो संगरमहा । जिमिलरे सबभट तत्रनहिं अब जातसो विधिवतकहा ॥ अभिमन्यु सात्वकि भीष्म पारथ भीम द्रोणाहिं आदिकै । भट उभय दिशिमें प्रलय पारो रहेघनसम नादिकै ॥ तहँ इराबाण सुबीर कोवध निरखि अति अफसोसिकै । हैडम्बराक्षस भट घटोत्कच भयो गर्जत रोसिकै ॥ नृपतासु गरजनि घोर धुनि ब्रह्माण्ड माधि व्यापित भई । सब ओर सागर छोरलौं सहशैल महि कम्पित भई ॥ बहु सुभट इतके ह्वै रोमांचित स्वेद भरि बिबरणभये । सुनि सिंहकी गरजनि द्विरद गण सदृश दीहद रणमये ॥ इमि गरजि घनसम बीर राक्षस भटन सह बल मद मयो । अति कुपित काल करालसम कुरुनाथके सम्मुख गयो ॥ तेहि समय इतकेबीर अगणित भीति भूपहि तजि गये । तब कोपि भूपति तजे तापै वाण अगणित मणिमये ॥ तहँ अयुतगजदल सहित थिरिबंगाधिपति नृपसाथमें । भोकरत अतिसंग्राम मण्डल सदृशकरि धनुहाथमें ॥ दोहा ॥ गजारूढ़ भटजूहसों राक्षसगणसौं तत्र । घोरयुद्ध नृपहोतभो कहँकहांलौं अत्र ॥ शक्ति परश्वध

भल्ल शर आदिक आयुध भूरि। वारिवृष्टिसम उभयदल मध्य रहे तहँपूरि॥ राक्षस गण अति प्रबल हनि शक्ति शिला तरु वान। क्षणमें बधे अनेक गजअरु बहुभट बलवान॥ सोरठा॥ कृं अर्दित तेहिकाल भरे रुधिर अगणित द्विरद। मर्दत निजदल जाल चिघरत भागिगये अनत॥ निजदल विचलत देखि दुर्योधन भूपालमणि। भरोगर्व अति तेखि भिरो राक्षसीलेन सों॥ चौपाई॥ भिरि राक्षस गणसों तेहि क्षणमें। अद्भुत बिक्रम कीन्हे रणमें॥ वीर चारि राक्षसके दलके। रहे मुख्य वरभट अति बलके॥ विद्रुत जिह्वाअपर प्रमाथी। बेगवन्तजिमि मद युत हाथी॥ अरु भट महा रउद्रप्रवीरा। तिन्हें मारि भेजे यम तीरा॥ सो लखि वीर घटोत्कच योधा। कह्यो भूप सों करि अतिक्रोधा॥ संगछलिन कहँलै छल करिकै। ममगुरु-जनसों महि धन हरिकै॥ बहुदिन कियेराज्य मुद भरिकै। अब रहु खड़ोभागु मतिडरिकै॥ आजुतोहिं हति कठिन शरन सों। उऋण होहुँगो निज गुरुजनसों॥ इमिकहिदावि अधरदांतन सों। हनत भयो शरवर घातनसों॥ तबदुर्योधन रिसविस्तारे। वाण पचीस तासु तन मारे॥ तब राक्षस करि क्रोध अथोरा। मारत भयो शक्तिअतिघोरा॥ वज्र सदृश तेहि आवत देखी। बङ्गाधिपति भूप अवरेखी॥ गजचलाय करिकै मन गाढ़ो। भोभूपति के आगे ठाढ़ो॥ तबसो शक्तिभीमता पागी। गज केकुम्भनके मधिलागी॥ मैगल तुरित गिरोतहँ मरिकै। नृप गोकूदिगजहि परि हरिकै॥ ताक्षणमें दुर्योधन राजा। भग्न निरखि निज सुभट समाजा॥ क्षात्रधर्मको चिन्तनकरिकै। ख-ड़ोरहो तहँ धीरज धरिकै॥ दोहा॥ साहस करि तहँ रहिखड़ो योजित करि शर चण्ड। तज्यो राक्षसाधिपतिपै करपि कठिन कोदण्ड॥ वज्रसदृश निपतत निरखि दुर्योधनको वान। सो थर तजि कीन्हों व्यरथ राक्षस चपल अमान॥ भूपतिकोशर

व्यर्थ करि निज कार्मुक टंकारि । घनसम गर्जतभो असुर तौ दल मधिभय भारि ॥ सोरठा ॥ सो गर्जनि सुनि भूप भीष्मकहतभे द्रोणसों । राक्षस काल स्वरूप गर्जत भयो प्रचण्डअति॥ रोला ॥ तासु गर्जनि सुनि सुनो यह परतहमको बूझि। लरत है कुरुनाथसों बह भरो गर्व अरूझि॥ आसि भूपहि जीतिराक्षस गहहै उत्कर्ष । प्रगट जान्यो जातधुनिमें जीतिकै सो हर्ष॥ करो रक्षण भूपको उत जाय तुमसब आर्य्य । भूपकोरक्षण सबहिहै एक उत्तमकार्य्य ॥ जाहि जोवहिओर हमतौपार्थ इतसबसैन । बधै क्षणमें सव्यसाची अस्त्रविद्याऐन ॥ भीष्मको यहबचन सुनि उत चले सत्वरबीर। द्रोणकृपबाह्लीक भूरिश्रवाशल्यसुधीर॥चित्रसेन विकर्णअरुअनुविन्द बिन्दनरेश । नृपजयद्रथ बृहद्बलअरु सोमदत्तसुभेश ॥ अरुबिविंशत बीरअरु सुतद्रोणकोगहिगर्ब । कइकसहसरथीन युत तहँ जातभेयेसर्व ॥ देखिइनसब भटनको नहिं भयो कम्पित तौन । भयोसबपै बाण बर्षत उपलमेदक जौन ॥ दोहा ॥ उतकै राक्षस प्रबल अरु इतकेयोधा सर्व। भिरे प्रचारि प्रचारि तहँ भरे बीररस गर्ब ॥ भूपति ताक्षण होतभो तहां कठिन घमसान । सनसन चलि ठनठन लगन लगे दुहूं दिशिबान ॥ दहत बांसको बनयथा गिरिपै गिरत पषान।होइ शब्द तिमिहोतभो ताथर शब्द महान ॥ सोरठा ॥ महाघोर संग्राम तिनसों ताक्षण होतभो। बीतिगयो युगयाम तेहि दिनको क्षितिपाल मणि ॥ चौपाई ॥ अति दुर्मद राक्षस रणचारी । इन्द्र धनुष सम धनु टंकारी ॥ हनि क्षुरप्रशर अतिशयचोखो । काट्यो धनुष द्रोणको नोखो ॥ मारि भल्ल चोखो मनभायो । सोमदत्त कोध्वजा गिरायो ॥ तीनि बाण बाह्लीकहि मारे। चित्रसेन पै तीनि प्रहारे ॥ फिरि हनि एकबाण बरचीन्हों । भट बिकर्ण के भ्रूमधिदीन्हों ॥ तब बिकर्ण भट मूर्च्छित ह्वैकै ।रथपर पर्यो चेतबल ग्वैकै ॥ नृप अवन्ति पति केवर रथके। हनिशर

चारिवधे हयरथके ॥ नृपति जयद्रथके धनुकेतू । काटत भयो वि-
रचिशरसेतू ॥ भूपश्टहडलकहँकरिभीक्षण । मारनभयो बाणवर
तीक्षण ॥ हनि बहुबाण शल्य के तन में । मोहितकरत भयो तेहि
क्षनमें ॥ इमि सबके तनमधि शरमारी । सबके हने बाणभयकारी ॥ सबकहँ विमुखकरतभो रनसों । वीरघटोत्कच पूर्णपननों ॥
यहि प्रकार सबभटनवरजिकै । दुर्योधन पै चलो गरजिकै ॥ कुरु-
पति तहँ तेहि आवत देखो । फिरि फिरि भिरेवीर सब नेखो ॥
हनि असंख्य आयुध अनियारे । राक्षस भटहि विकल करि
डारे ॥ ताक्षणमें राक्षस रणधीरा । गोनभमधि जिमि सजलस-
मीरा ॥ दोहा ॥ घूमि जलद सम गगनमधि गर्जतभोतेहिकाल ।
सो धुनि सुनिकै भीमसों कह्यो धर्म क्षितिपाल ॥ दुर्योधनकीसे-
नसों लरत घटोत्कच वीर । तासुगरजसुनि मोहिंह धुनिपरत
वरभीर ॥ भीषमसों भिरि फाल्गुण हैं रक्षत निजसैन । तुम
सब सादर जाहुतहँ हैं राक्षस बलऐन ॥ चौपाई ॥ सोसुनिशीघ्र
चलो बलवान । अरि दल मर्दन वर्षत बान ॥ भीम सत्यधृति
सौचित्ति वीर । सुवन द्रौपदीके रणधीर ॥ क्षत्रदेव वसुदान स-
हीप । अरु अभिमन्यु वीर कुल दीप ॥ काशिराज को सुतभट
चण्ड । अरुनृप क्षात्रधर्म उद्दण्ड ॥ ओसिरध्वानअरुसुदेश ।
नायकताकोनीलनरेश ॥ कैकयसहहसरथीलैसंग । अरुभटसहस
मत्तमातंग ॥ वर्षतशरसत्वरतहँजाय । लागेकरनयुद्धदृढ़धाय ॥
सहित घटोत्कच ते भट सर्व । गेयेप्रलयकालतेहिपर्व ॥ दोहा ॥
धीर धनुर्द्धर विदित भट इत द्रोणादिकसर्व । भीमादिक उतके
सुभट सिगरेप्रबल सगर्व ॥ उभयओरसों उभैदिशि छायदये शर
जाल । यमपुर वर्द्धित कियँ करि शोणित नदीबिशाल ॥ जिमि
आयेजलकीउलद भगतलोकनजिओक । तिमिअगणित देही
तहां तनतजिगे यम लोक ॥ भुजंगप्रयात ॥ गर्जाघटनमादीरथी
भूरि योधा । भिरे हांक देदैगहे क्रूरक्रोधा ॥ किनेराति पासें

किते भल्लघालैं । किते तोमरैं औकिते भिन्दिपालैं ॥ कितेखड्ग बाहैं किते बाणडारैं । कितेकौ गदा आयसी यष्टिमारैं ॥ कहूं जंगमाच्यो रथी औ रथी सों । कहूं बाजिसादीनसों औ रथी सों ॥ कहूं जङ्गहो पैदरों औ रथी सों । गजीऔ गजीऔगजी औ रथी सों ॥ कहूंबाजिसादीनसों बाजिसादी । कहूंबाजिसादी पदाती प्रमादी ॥ कहूंबाजिसादी गजीसों भिरेहे । कहूंपैदरैंपैदरें सों थिरेहे ॥ कहूंमैगलैं मैगलैं युद्धमाच्यो । सुबाजीनबाजीनसों रङ्गराच्यो ॥ बिना बाहनै ह्वै किते बीरबांके । भिदे बाण भल्लान हूसों निशांके ॥ भरे गर्ब बैरीनको देखि टूटैं । भिरैं तालदैंदै छुटैंफेरि जूटैं ॥ कटे शीश केते फिरैं रोषराते । खरेहै किते गर्बके दर्पमाते ॥ किते मोहि बाहैं गदा शापियों पै । मरेबीरकेतेपरे हाथियों पै॥ कितेको खिलेभल्लसों तत्रठाढ़े । हनैं भूरिवाणै महारोष बाढ़े॥ गहे धीरतावीरताभूरिठाटैं । करीबाजि बीरानके गातकाटैं॥ करैंदीह चिग्घार केते वितुण्डैं । भगैं औ गिरैं औ मरैंह्वै बिशुण्डैं ॥ भयोभूपताठौर संग्रामजैसो । यथायोग कासोंकहो जाय तैसो ॥ सोरठा ॥ सोधनुताजि धनुऔर भीमचह्यो जौलगिगहन । तौ लगि नृप करिगौर हन्यो तासु उरमाधि बिशिख ॥ लागेसो शरघोर भीमबीर मोहित भयो । सोलखि घनसमशोर करि राक्षस नृपसों भिरो॥ चौपाई ॥ अभिमन्युहि आदिक बरवलके । महारथी जितने वहि दलके ॥ रहे तहांते सब त्यहि क्षनमें । चले भूपपै बधगुणि मनमें ॥ सो लखिकै चिन्तित ह्वै मन सों । द्रोणकहे इतके सुभटन सों ॥ उतके महारथी भट सिगरे । जेधनुधरमें लिखेअदिगरे ॥ चलेबेगसोंनृपपर तेसब । रक्षहु नृपहि जाइसत्वर अब ॥ सुनिआचार्यको यह अनुशासन । चलेसुभटटङ्कारिशरासन॥ भूरिश्रवाशल्यकृपआदी । रहेतहांजेसुभटप्रमादी ॥ वर्षत शरतेसब अति जबसों । गर्जत जायभिरेतिनसबसों॥ तौ लगिचेति भीम रणचारी । बर्षन लगो बाण धनुधारी ॥ ता

क्षणद्रोण भीम कहँमारे । छविमन बाण सरल अनियारे ॥ तहां वृकोदर अतिरिस कीन्हें। दश वरशर गुरुके उर दीन्हें ॥ तिन बाणन सों बेधित ह्वैकै । सोहि परोछिज इतउत ज्वैकै॥ द्रोणा-चार्यहि मूर्च्छित देखी । नृप अरु अश्वत्थामा तेखी ॥ चले भीम पै वर्षत बाना । सोलखि कोपि भीम बलवाना ॥ धनुतजि दीर्घ गदागहि करसों । नृपपै चलो कूदि रथ वरसों ॥ सो लखिद्रो-ण कृपादिक योधा । किये भीम भटको अवरोधा ॥ दोहा ॥ जिमि घनसब दिशिसों सरहि देहि वारिसों पूरि । भीमहिं शर छादित किये तिमिते तजि शर भूरि ॥ अभिमन्युहि आदिक सुभट सो लखि अनरविचारि। सत्वरइनकेभटनसों भिरे प्रचारिप्रचारि॥ तिहि क्षणदेश अनूपको नृपति नील बलवान । अश्वत्थामहिं टेरिकै हन्योहिये मधि बान ॥ चौपाई ॥ तबअति रिसकरि अश्व-त्थामा । करत भयो अति अद्भुत कामा ॥ हनि सबवाजी नृपके रथके । किये पथिक यमपुर के पथके ॥ फिरि वरबाण लाय धनु गुरुमें । हन्योनीलभूपतिकेउरमें ॥ तबअनूपपतिमूर्च्छितह्वैकै। लस्यो मृतकसम रथपर स्वैकै ॥ नीलहि मूर्च्छित निरखि तरजिकै । वीर घटोत्कच असुरगरजिकै ॥ सदलचलोसम्मुख द्विजवरके । रचत सेतु रणनदमें शरके ॥ अगणित भट दल सों कढ़ि कढ़िकै । भिरे द्रोणसुतसों बढ़ि बढ़ि कै ॥ द्रोणतनय तहँ अति रिस लीन्हें । क्षणमें तिन्हें पराजित कीन्हें ॥ निज सुभटन कहँ विचलत देखी । राक्षस राज घटोत्कच तेखी ॥ प्रगट करतभो माया ऐसी । लखी न सुनी आज तकजैसी ॥ इतके भट मोहित ह्वै जासों । लखतभये पूरेविपदासों ॥ इतके द्रोणादिक भट जेते । हने गये राक्षससों तेते ॥ इमि अन्योन्य देखि भट सिगरे । भीति भगे धीरज सों निगरे ॥ तेहि क्षणमें उतके भटरूरे । शङ्ख बजाइ मोद सों पूरे ॥ सोगनि हम अरु भीषमहेरे । रहि चैतन्यचार बहुटेरे ॥ फिरोफिरो भट धीरजधा-

रो । यह मिथ्याजो प्रगट निहारो ॥ दोहा ॥ मायावी राक्षसप्रबल जौन घटोत्कच वीर । ताकी यह माया सकल फिरहुलरहु धरि धीर ॥ सोसुनि कोऊ सुभट नहिं थिरो फिरो धरिधीर । दुर्योधन नृप अति दुखित गयेभीष्मके तीर ॥ पाणिजोरिकै कहत भे लै लै ऊर्ध्व उसास । यथा घटोत्कच जय लहो करिकै अतुल प्रयास ॥सोरठा॥ सुनौ पितामह दक्ष तौ भुजबलको अनुगकै। पांडव प्रबल सपक्ष तिनसों हम सङ्गर रचैं ॥रोला॥ एकदश अक्षोहिणीमम विदित सेनासर्व । लरतिकरत निदेश जिमितुम तथा निलियहि पर्व ॥ आशरित तौ तुव सुवशहम सहित सेनाजौन। भीमसेन घटोत्कचसों हारि पावततौन ॥ पाण्डवनसों हारिहम जो लहतसो दुखभूरि । अरस काठहि अगिनि जिमि तिमि मोहिं दाहत पूरि ॥ सुनो ताते आजुलहितौ कृपाको परसाद । राक्षसहि निज हाथसों हति चहतअति अहलाद ॥ होइ मम कर तासुबध तिमिकरहु विक्रम तात । भूप के सुनि वचनभीषम कहे उचित सुबात ॥ आपु सब के अधिपहौ महराजयहसुनि लेहु । आपुलबसों लरौ सबथर तुम्हहिं उचित न येहु ॥ धर्म आदिक आयु बनसों लरहु तुम गहिचाय। अधिपकै तुम भृत्य गणसों लरहु मति वढ़िजाय ॥ द्रोण हम कृपशल्यसात्वकि शकुनि अरु भगदत्त । द्रोण सुवन विकर्ण आदिक वीरसकल प्रमत्त ॥ करवसंगर घोर सब कहँ बधवके बधिजाव । बधवअरु बधिजायबेमें नेकुनहिं अरसाव ॥ वीर राक्षसके बधनको तुम्हैं जो अतिचाह । देहु शासन बधैवाहि भगदत्त भट नरनाह ॥ भाषि यहि विधि भूमि पति सों भीष्म कुरुकुलवृद्ध । कहतभे भगदत्त नृपसों वचन करण समृद्ध ॥ इन्द्रसमअति प्रबलहौ भगदत्त तुम जगजैन। सदलबढ़िभिरि लरि बधहु भटराक्षसहि सहसैन ॥ भीष्मको यह वचनसुनि भगदत्त भेरिनिशान। पाण्डवीदल प्रति चलतभो तजत अगणित बान ॥ निरखि

भूपहिवीर उतके भीम आदिक सर्व । भिरे वढ़ि वढ़ि तजत आ-
युध करत शोर सगर्व ॥ घोरसंगर किये तहँ भिरि उभयदिशि
के वीर । कटे अगणित वाजि गजरथ धनुष भट रणधीर ॥
मचो संगर घोर तव भगदत्त द्विरदवढ़ाय । चलोसम्मुखभीम
के वरविशिखसों दिशिछाय ॥ देखिसो अभिमन्यु आदिकवीर
धीरसमस्त । भिरतभे भगदत्त सों करि जीतिवे को कस्त ॥
भूरि शक्र समान ते सव वज्रसम वहुवान । हने सद्विरद भूप
गिरिपै जानि परमअमान ॥ क्षतज शोणित धारसों भरि गहे
अनुपम रूप । धातु चित्रित शैलसम तहँ लसो सद्विरदभूप ॥
वीर भूप दशार्णपति द्विरदस्थ भट त्यहि काल । चलो नृपभ-
गदत्त पै करि शरनको अतिजाल ॥ दोहा ॥ देखितांहि भगदत्त
नृप करि अति क्रोध अमान । तकि ताके गिरि सम गजहिमारे
चौदह वान ॥ लगे वाण भागे द्विरद करिआरत चिग्घार । मर्दत
निज दल कढ़िगयो दूरि भयोभय भार ॥ ताहि पराजित देखि
कै भीमादिक भटसर्व । प्राग्जोतिष पति सों कियो घोरयुद्धगहि
गर्व ॥ सोरठा ॥ कालानलहि समान भयो तहां भगदत्त नृप ।
मारि अनगिने वान उतके अगणित भटवध्यो ॥ अगणित
भट तजिधीर ह्वै पीड़ित रणतजि भगे । जिमि सिंहहि लखितीर
भागे करिवर को निकर ॥ चौपाई ॥ भगे सुभट पाण्डवके दलके ।
जे बिरदैत गिने वरवलके ॥ निजदल विचलत लखिवलवान ।
वीर घटोत्कच सुभट अमान ॥ अतिकराल ह्वै रिसविस्तारी ।
मारत भयो शूल अति भारी ॥ लखिसो शूलवज्रसम आवत ।
नृपति काटिसो मगहि गिरावत ॥ शूलहि काटि शक्तिलैकरमें ।
तज्यो घटोत्कच पै नृप फरमें ॥ वीर घटोत्कच शक्ति निरखी ।
कूदि पकरि तोरतभो तखी ॥ यह लखि विस्मयमे सुरसिगरे ।
करत प्रशंसा पाण्डव अगरे ॥ तव भगदत्त शरासन गहिकै ।
अव मतिभागु खरोरहु कहिकै ॥ हनिशर एक भीमके तनमें ।

हने राक्षसहि नवशर क्षनमें ॥ तीनि बाण अभिमन्युहि मारे। केकेयनकहँ पांच प्रहारे ॥ क्षत्रदेवको दक्षिण भुजवर । काटि देतभो हनितीक्षण शर ॥ पांचपांचशर अति अनियारे । पांचौ द्रौपदेय कहँ मारे ॥ फिरि तजि चारिबाणकी राजी । बधे भीमके रथके बाजी ॥ हनिशर तीनि ध्वजा द्वै कीन्हें । एकसारथीके उरदीन्हें ॥ तब भटभीम गदागहि कूदो । लखितो सुतगणको मुद मूदो ॥ नृप तेहि थर ताही क्षणआये । कृष्ण सहित अर्जुन छबि छाये ॥ दोहा ॥ दुर्योधन तहँ देखि तेहि ह्वै चिन्तित तेहिठौर। भेजतभो अगणित सुभट जेज्ञाता रणतौर॥ तेहिक्षण नृपतेहि थरमचो संगर अतिशय घोर। अरुण अरुणई गहतभे प्रापि प्रतीची छोर ॥ सोरठा ॥ कृष्णार्जुनहि सखेद भीम सुनावतभो तहां । करता अति निरवेद इरावानको बध दुखद ॥ जयकरी ॥ निजसुत इरावानको नास। सुनिपारथ लैऊवि उसास ॥ भरि करुणासों भये अचैन । कहे कृष्ण सों ऐसे वैन ॥ कुरु कुलको क्षय हेतु लखाय । प्रथमकह्यो जोबिदुरबुझाय ॥ व्यासादिकसिगरे मतिमान। कहो न मानैं वेअज्ञान॥सो दिनभयो प्रगट यहआय। अबमोसों कछु कहो न जाय ॥ ज्ञाति बन्धुकोनाशमहान। दुहूंओरसों होत निदान ॥ राज्य हेत करि इतो प्रमाद। राज्य लहेको धिक अहलाद ॥ अधनहि मरण श्रेष्ठ है आप्त। नहिं हतिबन्धु राज्यको प्राप्त ॥ नृपति धर्मजब मांगे ग्राम। तबनहिं हमको लगोललाम॥ अब सो जानिपरो अभिराम। लखिकरिबो यह कुत्सितकाम॥ जो प्रभु अबहम त्यागैं युद्ध। क्लीवकहैं तौ क्षत्री शुद्ध ॥ ताते अबकरि युद्ध बिहार। उचित जाव रणआर्णव पार ॥ तातकरहु अब चपलतुरंग। निरखौं मम दुस्तररणरंग॥ यहसुनिकै केशव हरषाय। कीन्हेंचपल तुरंग बढ़ाय ॥ घोरयुद्धभो नृपतेहि ठौर । कहें कहांलौं गुरुता गौर ॥ मारु मारु धरु मार्‍योमारु। शब्द भयो अतिभयद अ-

पारु ॥ दोहा ॥ तेहिथर नृपतो तनय सब लैभट द्रोणहि संग । बढ़िबढ़ि कै भिरिभीमसों लगे करनसब जंग ॥ भीषमकृप भगदत्तअरु नृपति सुशर्मावीर । पारथसों भिरिकै तहां लगे लरन रणधीर ॥ हारदिक्य बह्लीकये भिरे सात्वकिहि देखि । भिरत भयो अभिमन्युसों नृपअम्बष्टपतितेखि ॥ यहि बिधि सिगरे सुभट भिरि किये घोर संग्राम । शोणितकी सरिता भई समुद्र समान अठाम ॥ चौपाई ॥ मचे घोरसंगर हे आरज । भीम कियो अति दुस्तर कारज ॥ व्यूढोशत्रु सुवनतो ताको । शिरकाटेहनि शरसुप्रभाको ॥ फिर कुण्डलिन केर वधकीन्हों । फिर वैराटहि यमपुरदीन्हों ॥ अनाधृष्टको वध फिरिकरिकै । बध्यो सुबाहुहि शर परिहरिकै ॥ कुण्डेलहि यमलोक पठायो । दीर्घबाहुकहँहति मुदपायो ॥ दीर्घ वर्चसहि हति फिरितरजो । कनकध्वजहिहति घनसम गरजो ॥ इमिनवबन्धुन को वध देखी । भगे सकल तो सुत भय भेखी ॥ तोपुत्रनकहँ भीम निपाते । ह्वै तिहि समय द्रोण रिसराते ॥ डारैवाण भीमपै तैसे । घनबन बरषैगिरि पै जैसे ॥ गिरिसम भीम वाणवन सानिकै । बध्यो तिन्हैं अति रिससों हनिकै ॥ छाग सदृश तोसुत रणधीरा । वृकसम लसो वृकोदरबीरा ॥ करिकै बिरथ अम्बष्टहि क्षनमें । भट अभिमन्यु कोपकरिमनमें ॥ मारतभयो बाण अनियारे । जे उतुंग गिरि बेधन हारे ॥ तब अंबष्टपति युद्ध बिहारी । मारत भयो फेंकि असिभारी ॥ सोअभिमन्यु बीचही काटे । फिरितीक्षणशर हनि तेहि डाटे ॥ तब अंबष्ट बिचरिरण पथपै । गोहार्दिक्य भूप के रथपै ॥ दोहा ॥ इमिसिगरेभट जुटितहां कियेयुद्धउद्दण्ड । रुण्डनमुण्डनसों किये रण मंडल अतिचण्ड ॥ माहिखरी ॥ तहँ रुण्ड मुण्ड बितुण्ड मानुष तुरँगके अगणितपरे । करकुण्डलन सह घने बहुकर कुण्डलन बिनु छबि भरे ॥ तनुत्राण सहतनु त्राण बिनुशिर त्राणयुत शिरत्राणके । बहुपरे ह्वै अधमरे भटबहुपरे

ह्वै विनुप्राणके ॥ कटिगिरे धनुसहपरे अगणित भुजातहँ अनुपम बने । शर धनुषताने शोणितक भिदिपरे मरिभट अनगिने ॥ असिशक्ति मुद्गर गदा पट्टिश भल्लकरकासिकासिगहे। वहु सुभट कटि कटिपरे ठटिआदि भूरिव्रिविसोंलसिरहे ॥ बहुछत्र धनुध्वज चक्रचामर मुकुट भूषणमणिमये । रथचर्मआयुधदन्त अंकुश परे थरथर लखिलये ॥ जिमिचलत आयुध दुहूं दिशि सों घने मढ़ि तकितकि नखे । तिमि गिरत नरगज बाजिएकहि बार अगणित तहँ लखे ॥ मदमेद मज्जा मांस शोणित अस्थि सों धरणीभई । जिमिपूर्व्वमधुकैटभ दैत्यके नाशमें मेदिनिभई ॥ इमिहोत संगर भूपतेहि दिन रजनि द्वै घटिका गई । तब युद्ध तजितजि उभयसेना उभय दिशिकी मगलई ॥ दोहा ॥ निज निज डेरनजाय सब कियेअहार विहार । अठयें दिनमें इमि भयो प्रलय पयोधिपसार ॥

इतिश्रीभीष्मपर्व्वणिअष्टमादिवसयुद्धवर्णनोनामत्रिंशोऽध्यायः ३० ॥

संजयउवाच॥दोहा॥ गत अठयेंदिनकी रजनि मधिदुर्योधनराय । सौवल दुश्शासन करण सों इमिकह्यो वुलाय॥ सदलपांडवन सों लहब केहि प्रकार जयतात । उनसों जयपैबो हमैं दुस्तर परमलखात ॥ भीष्मद्रोण कृपशल्य अरु भूरिश्रवा सुबीर । नहिंउनसों जयलहत सो कारण कवन गँभीर ॥ यह संशय व्यथवत हमाहिं करहुतासु परिहार । यह सुनिकैबोल्योकरण सुनिये भूप उदार ॥ शपथ आपुकी करिकहत हमयह सांची बात । भीषम पांडव पै करत दीहदया हे तात ॥ शस्त्रग्रहण तजिकै तजै भीषमयुद्ध विहार । सहित सदल पांडवन को हम करिहैं संहार ॥ तातें भीषमके निकट आपुशीघ्र अबजाय । शस्त्रत्याग करवाइये यह विधि सविधि बुझाय ॥ सूततनयके वचन सुनि दुर्योधन तजित्रास । सेवित सुभट समूहसों गये भीष्मके पास ॥ सोरठा ॥ करि विधिवत परणाम बैठि सुआसन बिशदपै ।

जोरि पाणि अभिराम कहत भये चख सयलकरि ॥ रोला ॥
तात आश्रय आपुको लहि रहतहीममपास। महितशक्र सुरासुरन के जीतिबेकी आस॥ पाण्डवनकी कौन गिनती जहां एसोमान। सुनोताते करौ ऐसी कृपाकरि अनुमान॥ सदल योधा प्रबल अरिको नाशके यहि काल। होहिं हम अति धन्य महिपै पाय सुयश बिशाल॥ मन्दभाग्य बिलोकि ममकै मोहिं दोषीजानि। करहु उनपै दया जोतौ देहु शासनमानि॥ कर्ण उनकहँ बधैयामें नहीं संशयनेकु। भाषि इमि ह्वैरह्यो चुपतो पुत्रमानी एकु॥ भीष्म सुनि यहवचन चुपरहि घरिकलौं करि शोच। कोपयुत ह्वै कहतभे फिरि कोपको करिमोच॥ वाक शरसोंहियो ममकत वृथाबेधत भूप। करत हमतौ काज नित निज शक्तिके अनुरूप॥ छिप्योहैं का तुम्हें विक्रम पांडवनको जौन। दह्यो जब खांडीव बनको जीति इन्द्रहितौन॥ छोड़ि तुमकहँ भगेजब कर्णादियोधा सर्व। छोरिपांडव लये तुमकहँ गह्योजबगन्धर्व॥ हमहिं आदिककर्ण तकसबसुभटहे तो संग। आपु जबहिं विराटपुरको गये सहित उमंग॥ वीरअर्जुन सुभट एकै तहां सम्मुखआय। जीति सबको बसन भूषण सहित लैगोगाय॥ विदितबीर निवातकवची तिन्हें जीत्योपार्थ। जिन्हैं जीति न सकैबासव सुरन सह गुणिस्वार्थ॥ दियेद्रुपद भगाय तुमकहँ सूतसुत सहयत्र। पार्थद्रुपदहि जीतिगहिकै दये द्रोणहितत्र॥ जानिबिक्रम पाण्डवनको कहतहौ इमिभूलि। किये विनु अनुमान भूपति कुमतिपै अनुकूलि॥ जासु रक्षककृष्ण करता जगतके जगदीश। सकैको तेहि जीतिसो जयलहहि विस्वेबीश॥ निदरिसबके वचन तुम हठि रचो रण व्यापार। मारि उनकहँ आपुकत नहिं लेत सुजयअपार॥ पाण्डवनकहँ बधहु तुमकरिप्रगट विक्रमउद्ध। तजिशिखण्डिहि और सब कहँ बधब हमकरियुद्ध॥ बधहिं गे कै हमहिं उतके सुभटहे

क्षितिपाल। मारिउनकहँ लेब हमकै सुजयसुयश रसाल ॥ तज-हुचिन्ता भूप हम इमि करब संगर आजु । लोकसकल प्रशं-सिहै बहुदिवसलौं जोकाजु ॥ भीष्मके ये बचन सुनिनृपजानि कारयसिद्धि। मोदिगे निज शिविरकहँ जो लसतपूरित ऋद्धि॥ तहांरजनि बिताय नृप सजवाइकै निजसैन । कहे दुश्शासन सुभटसों जानि बलबुधि ऐन॥ प्रबलदै अरु बीस बिशद अनी-कनी भटभूरि। करहु नियमित रक्षणारथ भीष्मके मतपूरि ॥ भीष्म बाधिहैं आजुसिगरे शत्रुको समुदाय। ताजि शिखण्डिहि कहो हमसों पितामह गहिचाय ॥ काज सबकहँ एक रक्षण भीष्मकोहेतात। भीष्मसबकहँ मारिदैहैं सुजय अतिअवदात॥ द्रोण गोतम नृप बिबिंशित शकुनि शल्य नरेश। सदा रक्षहिं भीष्मकहँ ये निकटरहि सबदेश ॥ भूपकेये बचन सुनि तेसक-लभीष्महिंघेरि। सहित तोसुत भयेठाढ़े दीहदुन्दुभि भेरि ॥ पार्थ धीरधुरीण भीष्महिं सदल इबिधि निहारि । धृष्टद्युम्न सुबीरसों इमिकहे बचन बिचारि॥ भट शिखण्डिहि करहु सम्मुख भीष्मके गहिचाव। रहब रक्षक तासुहम करिप्रगट आतम प्रभाव ॥ दोहा ॥ भीषम तेहि दिन रचतभे व्यूह सर्व-तोभद्र। राखि सर्वथल प्रबलभट जे करतारणभद्र॥ कृपकृत-बरमा शैब्यअरु शकुनि जयद्रथबीर। नृपति सुदक्षिणभीष्म अरु सिगरे तोसुत धीर ॥ राजे आगे व्यूहके रहेदाहिनीओर। द्रोणशल्य भूरिश्रवा अरु भगदत्तअथोर ॥ भूपबिन्दअनुबिन्द अरु सोमदत्तक्षितिपाल। अश्वत्थामाभटसदल रहेबामदिशि-पाल ॥ सुभट त्रिगर्त्तन सहिततहँ दुर्योधन क्षितिनाह। व्यूह मध्यमें थिरत भे पूरित परमउछाह ॥ नृपति श्रुतायू प्रबलभट असुर अलम्बुष बीर। पृष्ठदेश रक्षतरहे सहसेना रणधीर ॥ यहिबिधि व्यूह बनायहवै मारत्तण्ड समचण्ड। भीष्मपितामह लसतभे सहकरशर कोदण्ड ॥ सोरठा ॥ उतैयुधिष्ठिर भीम अरु

माद्रीके उभयसुत। महारथी भटभीम दलके आगे लसतभे॥ सात्वकिभूप विराट धृष्टद्युम्न ये सैनसह। करि संगरको ठाट खरेभयेदिशिदाहिनी॥ विजयशिखण्डीवीर चेकितानअरुघटोत्कच। कुन्तिभोज रणधीर सदल लसतभे वामदिशि॥ केकयपति सबभाय द्रुपद और अभिमन्युभट। सैनसहित उमदाय पृष्ठपालह्वै लसतभे॥ महाव्यूह अतिउग्र इमि पांडवरचि भटनसह। मुदसों भरे समग्र अरुणवदनकीन्हें खरे॥ जयकरी॥
यहिविधि रचिरचि व्यूहविशाल। उभयबन्धु कौरवकुलपाल॥ दुन्दुभि आदिवाद्य बजवाय। दुहुँ दिशिसों बढ़िचले सचाय॥ महाराजसुनिये तेहिकाल। भोअनेक अपशकुन कराल॥ दुहूं ओरसों आयुधभूरि। लगे चलन भीषमता पूरि॥ चौपाई॥
माचो घोरयुद्ध तेहिक्षनमें। लखि सुरगण विस्मितभे मनमें॥ तहँ अभिमन्यु बीर रणचारी। सुरथ बढ़ाय सुभटन प्रचारी॥ घनसम गर्जत भयो अमाना। वारिधार समवर्षे बाना॥ काल दण्ड सम बाणप्रहारी। अगणित भट कीन्हेंनभचारी॥ ह्वै बिकराल प्रलय आरोप्यो। घने भटनकीगुरुता लोप्यो॥ सगज गजस्थ सहयहयसादी। हते असंख्यरथस्थ प्रमादी॥ अर्जुनसुवन दवाग्नि अमाना। बाण जालवर लपट समाना॥ इतकेसुभटविहँग भय पागे। सहि न सकेसाहस बनत्यागे॥ मरेकिते कितने भट भागे। उड़त झोलाजिमि तिमितेलागे॥ तासुबाण करि निकर महाना। पंकिल थलसमतहां लखाना॥ इतके भट करि गण समतामें। पारिन लखे त्राता विपदामें॥ लर्‌यो फाल्गुण सुततेहि क्षणमें। बज्रपाणिसम बिचरत रणमें॥ सब थरलसे तासु शर तैसे। पुष्पित वनमें षटपदजैसे॥ द्रोण जयद्रथ अश्वत्थामा। कृपहि आदि जेभट जयकामा॥ तिन सबकहँ मोहित करि बीरा। लख्योआरजुन अति रणधीरा॥ मण्डल सदृश धनुष तहँ ताको। लसत भयोनृप परमप्रभाको॥

दोहा ॥ निजदल मर्दत देखिकै अभिमन्युहिं तेहिकाल । असुर अलम्बुषसों कह्यो दुर्योधन क्षितिपाल ॥ तुम बिनु याकोनाश नहिं करि सकिहै भट और । तातै तुम बढ़ि लरिबधौ याहि सुभट शिर मौर ॥ यहसुनिकै अतिघोर धुनि करि राक्षसरणधीर । रथ बढ़ायकै जातभो जहँ अभिमन्यु सुबीर ॥ सोरठा ॥ प्रबल राक्षसहि देखि निजरथ चपल बढ़ायकै । अर्जुनको सुत तेखि चलो वेगसों तजत शर ॥ चौपाई ॥ अर्जुन सुवन भिरै बढ़िजब लों । राक्षस बीर अलम्बुष तबलों ॥ मर्दि असंख्यसुभटजग जेना । दईबिडारि पाण्डवी सेना ॥ तहां द्रौपदीके सुतगनको । लखि सरोष प्रमुदित करिमनको ॥ तिनपै तजतभयो बरवाना । हने ताहि तेऊ बलवाना ॥ शशिहि पांचग्रह घेरहिं जैसे । भिरे असुरसों तेसबतैसे ॥ अगणित बाण असुरके तनमें । हनत भये ते कोपित मनमें ॥ रुधिर भरोतहँ असुर लखानो । रबिके किरिण सहित घनमानो ॥ बरबाणनसों बेधित ह्वैकै । मूर्च्छितेचित फिरि तिनकहँ ज्वैकै ॥ शर धनु ध्वजाकाटि तिनके सब । पांचपांच शर हनत भयो तब ॥ फिरि सूतहि हनि शायक चोखो । बध्यो हयन करि बिक्रमनोखो ॥ तबलखि तिन्हैं बिरथबलवाना । चलो बधनको करिअनुमाना ॥सो लखिअर्जुनसुत भट भारी । हनत भयो बहु बाण प्रचारी ॥ सोअभिमन्युहिं बहुशर मार्यो । सो असुरहि बहु बाण प्रहार्यो ॥ दोऊ बीर धीर रण चारी । दोऊ बिदित महत धनुधारी ॥ तुलबलबीर भावसों भिरिकै । घोरयुद्ध कीन्हें तहँ थिरिकै ॥ सुनि धृतराष्ट्रकहे अनुमानी । सह बिस्तार कहो गुरु ज्ञानी ॥ दोहा ॥सुनि संजय बोले सुनो भूपति सह बिस्तार । राक्षस अरु अभिमन्यु जिमि कीन्हें युद्ध बिहार ॥ वर्षत अगणित बिशिखवर राक्षसभट उद्दण्ड । थिरुथिरुकहि अभिमन्यु पै चलत भयो ह्वै चण्ड ॥ गुरुतोमर ॥ अभिमन्यु ताकहँ देखिकै । गुणिबन्धु हन्ता लेखिकै ॥

कोदण्डवर सन्धानिकै । बहुहने शर प्रणठानिकै ॥ सो असुर ताहि प्रचारिकै । भो मुदित बहुशर मारिकै ॥ शरतासु अगणित काटिकै । अभिमन्यु ताकहँ डाटिकै ॥ शर आठताकीदेह में । भो हनत चुभि जय नेहमें ॥ तब असुर अतिशय कोपकै । भो हनत नवशर चोपकै ॥ तजिशर हजारन जोरसों । भो भरत नभ धुनिघोरसों ॥ अभिमन्यु तब नवबानसों । तेहिदयो बेधि विधान सों ॥ तब असुर योधा तरजिकै । भोहनत बहुशर गरजिकै ॥ अभिमन्युको तन भेदिकै । ते गयेकढ़ितेहि खेदिकै ॥ अभिमन्यु असुरहि हांकिकै । बहुबाण मारेताकिकै ॥ ते बेधि असुर सुबीरको । कढ़िगये भूषिशरीरको ॥ तब असुर भयसों पागिकै । तजियुद्ध पगद्वै भागिकै ॥ भोकरत माया मोहनी । तममयी जो भय पोहनी ॥ वहि सैनमें तम छायगो । मुदिभटनको व्यवसायगो ॥ अभिमन्यु ताके भानको । तब तजे भास्कर बानको ॥ दोहा ॥ भास्कर अस्त्र अमोघके बर प्रभावते भूप । विनशी माया आसुरीभयोप्रकाश अनूप ॥ अगणित मायाकरतभो यहि बेधि असुर सगर्व । व्यर्थ किया अभिमन्यु इमि दिव्य अस्त्रसों सर्व ॥ तब अभिमन्यु प्रचारतिहि मारे अगणित बाण । थिरि न नको राक्षसभ गो रथहि त्यागिलै प्राण ॥ सोरठा ॥ राक्षस पतिहि भगाय अर्जुनको सुतलसतभो । दाहिबनाहिं छवि छाय प्रज्वलित अग्नि अधूम सम ॥ चौपाई ॥ तेहि भगाय अभिमन्यु सुजेना । मर्दित भयो तावकी सेना ॥ जिमि मद गलित मतंग अमाना । दलै पद्मको वन तेहि माना ॥ निज दल मर्दित बिचलित देखी । पेता तुम्हार भीष्म अतितेखी ॥ अगणित रथिन सहित धनु करषत । भे अर्जुन सुतपै शर बरषत ॥ सब दिशिघेरि घोरधुनि कीन्हें । सारदशर पंजर करि दीन्हें ॥ उभय बंशको गुणअनुसरेकै । अर्जुन सुत तहँ बिक्रम करिकै ॥ सब सों भिरो अकेलो ऐसे । तरुण तरुणसों मारुत जैसे ॥ निज सुतपै इमिभीर नि-

रेखी। अर्जुन अति अनरथ अवरेखी॥ तजत असंख्य बाण बर रूरे। मर्दत अगणित भटबल पूरे॥ भिरो आय भीषमसों कैसे। भिरै सुसिंह सिंह सों जैसे॥ दुर्योधन नृप सहित समाजा॥ हे रक्षत भीष्महिं तहँ राजा॥ तिमि उतके बहुभट भरि प्रन सों। हे रक्षत अर्जुनहिं यतन सों॥ तहँ कृप बढ़िकै धनुटंकारे। बाण पचीस अर्जुनहिं मारे॥ इतनेमें सात्वकि भट बढ़िकै। हन्यो कृपहि शर रिससों मढ़िकै॥ तब कृप नवशर ताहिप्रहारे। जे अतिशय सुन्दर अनियारे॥ तबसात्वकि अतिरिसबिस्तारे। अति प्रचण्ड शर कृपपर डारे॥ दोहा॥ अश्वत्थामा बीचही सो शर दीन्हों काटि। तब सात्वकि तजिकृपहि शर ताकहँमारे डाटि॥ अश्वत्थामा बीरतब मारो बाण उदण्ड। सात्वकि को धनु काटिकै हने बाण बहुचण्ड॥ तब सात्वकि सो धनुष तजि गहि दूजो कोदण्ड। अश्वत्थामा कहँ हने साठिबाण उद्दण्ड॥ भिदि तिन बाणन सों तहां मूर्च्छि द्रोण सुतबीर। चेति हनत भो सात्वकीके तन अगणित तीर॥ सोरठा॥ फिरिहनि बाण त्रिशाल काटि ध्वजा घनसम गरजि। हनि बाणनकोजाल गोपिदेतभो सात्वकिहि॥ चौपाई॥ सात्वकि तिहि अगणित शरमारे। सो सात्वकि पहँ बहुशर डारे॥ मारिअसंख्य बाणबर लैसे। सात्वकि छाय दयो तेहि तैसे॥ प्राविटकाल यथा घन घोरा। गोपहि रविहि घेरि चहुँ ओरा॥ सोलखिद्रोण कोपअति गाहिकै। हने बाण बहुथिरुथिरु कहिकै॥ तब सात्वकिबिक्रम बिस्तारी। द्रोणहि हने बीसशरभारी॥ इतनेमें अर्जुनरणचारी। भिरे द्रोणसों धनुटंकारी॥ अर्जुन द्रोण भिरे तहँ राजा। जिमि नभमें बुध शक्र समाजा॥ यह सुनिरुद्ध भूप अनुमानी। संजय सों बूझी यह बानी॥ अर्जुन द्रोणहिं सरस सनेहू। रहोपरस्पर तुम गुणिलेहू॥ ते निर्दय ह्वै ह्वै कै तेहिथर। कैसेलरे कहो सो बुधिवर॥ यह सुनि बोले संजय आरय। नृपगुणि क्षात्रधर्मको

कारय ॥ हने यथेष्ट द्रोण कहँ पारथ । पार्थहि हने द्रोण लखि स्वारथ ॥ पारथवारिद्रोणके वानन। हनि शर तीनि पुरुषपंचा-नन ॥ छाय देतभो बहुशरद्विजपै। तब अतिकोपि द्रोण अरि रुजपै ॥ करिकर लाघव विक्रम वरसों । पार्थहि छाय देतभो शर सों ॥ पारथबीर कोपि तेहि क्षनमें। बहुशर हने द्रोणके तन में ॥ सोलखिदुर्योधन अतिमाखे। बीर सुशर्म्मा नृपसोंभाखे॥ करौंद्रोणको रक्षणबढ़िकै।सो सुनि भूप सुशर्म्मा काढ़िकै॥ घन समगरजत बीर अमाना। बर्षत भयोबारिसम वाना ॥ दोहा ॥ द्रोण सुशर्मा के विशिख हंस सदृश नभछाय । मुकुतराशिसम पार्थपै पतत भये दृढ़घाय ॥ तब अर्जुन अति कोपकरि मारि अनगिने बान । ससुतसुशर्मा भूप कहँव्यथितकियो बलवान॥ तहँ त्रिगर्त्त पति पुत्रसह मरिबेके प्रणलागि । शर वर्षत भट पार्थपै चलो क्रोधसों पागि ॥ अति विक्रम कीन्हों तहां पार्थ बीर उद्दण्ड। निज बाणनसों तासुसवशरकाटे ह्वैचण्ड ॥ सोरठा ॥ तब पारथ करि शोर तज्यो अस्त्रवायव्य वर। मढ़ो वायु अति घोर इतनृप तासु प्रभावसों ॥ अगणित सुभट अमान तासों मर्दितभे इतै। सो लखि द्रोण सुजान शैल अस्त्रछोड़त भये ॥ चौपाई ॥ मारुत शमित भयो नृपतासों । तब पारथ भरि क्रोध महासों ॥ हनि असंख्य शर हतिबहुबीरा । कियो सुशर्महि बिगलित धीरा॥ सो लखि दुर्योधन कृप योधा । अश्वत्थामा शल्य सक्रोधा ॥ बिंद और अनुबिंद नरेशा । अरु वाह्लीक भूपभट वेशा ॥ अरुकम्बोजाधिपति सुदक्षिण । घेरिपार्थ कहँ लरैसपक्षिण ॥ नृप भगदत्त श्रुतायुस सेना। भिरे भीमसों लखि दल जेना ॥ भूरिश्रवा शकुनिशल राजा । माद्रीसुतसों भिरे ससाजा ॥ सहतो सुतनभीष्म रणचारी। भिरे धर्मसों धनुटङ्कारी ॥ गजानीक लखि भीम उमहिकै । रथसों कूदोसु-गदा गहिकै ॥ गदा पाणि तहँ भीमहिं ज्वैकै । सब गजरथ यो-

धारिस ग्वैकै ॥ घेरि लये भीमहिं बाढ़ि तैसे । घन समुदायसूर कहँ जैसे ॥ तहां भीम अति बिक्रम करिकै । बधो अनेक द्विरद संचरिकै ॥ लसो भीम यहि भांति गजनमें । जैसे प्रबल वायु घन बनमें ॥ मारिगदा करि कुम्भ पदनपै । अति उतंग अतिदीह रदनपै ॥ हते असंख्य द्विरद मतवारे । भगेअसंख्य भीतिसों मारे ॥ मर्दत निज दल ते गजरूरे । सब दिशिमेंआरत धुनि पूरे ॥ दोहा ॥ गजदलबिचलत देखिकै भगेसुभटसमुदाय । त्यहि क्षणमें युगयाम दिन गयोसुनो मनलाय ॥ मध्य दिवसमें भीष्मतहँ कियो घोर संग्राम । लुनित धान्यसमपरद लहि मर्दितभो बलधाम ॥ तहां शिखण्डी द्रुपद अरु धृष्टद्युम्न बलवान । नृपबिराटयेभीष्मसों कियेकठिनघमसान ॥ नृपबिराट कहँ एकशर तीनि द्रुपद कहँ मारि । धृष्टद्युम्नकहँ एकशर मारे भीष्म प्रचारि ॥ सोरठा ॥ धृष्टद्युम्नबलवान तीनि बाण भीष्महि हने । नृपबिराट दशबान मारे द्रुपद पचीसशर ॥ बाणपचीस अमान हन्यो शिखंडी शंक तजि । तहँभीषम मतिमान पुष्पित किंशुकसम लसो ॥ जयकरी ॥ तब भीषम अति रिस बिस्तारि । तीनि तीनि शर तिनकहँ मारि ॥ सुभट शिखंडी युवति बिचारि । हन्योन शायक दीन्हों बारि ॥ बाण एकहनि द्रुपदहि डाटि । शरसोंदयो शरासनकाटि ॥तबनृपद्रुपद औरधनुधारि । मारेपांच बाण ललकारि ॥ सूतहिहने तीनिबरबान । जेकरता अनरथको ठान ॥ त्यहि क्षणभीम सात्वकी बीर । सुवन द्रौपदीके रणधीर ॥ पांचभाय केकयपति भूप । अरुसात्वकि क्षितिपाल अनूप ॥ महारथिन सह धर्मनरेश । भिरे भीष्मसों नृप तेहि देश ॥ दोहा ॥ तिमि इतसों तौ तनय सब महारथिन सह ऊटि । पाण्डव भट सों लरतभे अमरअसुरसम जूटि ॥ घोर युद्ध तहँ होतभो कहैं कहांलों भूप । शोणितकी सरिता बहीसमुद समानअनूप ॥ कितने रथहयबहि गये परिशोणितकेधार ।

कितने गिरत मतङ्गके तर दविगे लहिभार ॥ सोरठा ॥ अर्जुन बधेसटेक सुभट असंख्य त्रिगर्त्त के । तीक्षण विशिख अनेक तज्यो सुशर्मा पार्थपहँ ॥ चौपाई ॥ नवशर हने पार्थके तनमें । सत्तरि हने कृष्णकहँ क्षनमें ॥ तब अर्जुन अति रिस विस्तारी । नृपके शर निज शर सों वारी ॥ प्रलयपारि भूपतिके दलमें । दियो विडारिसुभट सब पलमें ॥ भगे त्रिगर्त्तभूपके योधा । ह्वै अनाथ सम बिगलित बोधा ॥ बहुगज रथहय तजितजिभागे । गिरत उठत ताकत भय पागे ॥ हांकि बाजि गजरथभटरूरे । भागेदीन दशासों पूरे ॥ तिन्हैं सुशर्मा बहुबिधिटेरे । तेनहिं मन भगिबेसों फेरे ॥ यह लखि दुर्योधन अनखाई । लैसँगसबसेना सहभाई ॥ करि आगे भीषम कहँ राजा । भिरे पार्थसों सहित समाजा ॥ उत सब पाण्डव बढ़ि सबदिशिसों । भिरे कौरवनसों भरि रिसिसों ॥ अर्जुन अरु भीषम तहँ भिरिकै । घोरयुद्ध कीन्हों थिरि फिरिकै ॥ भिरि सात्वकि अरु नृप कृतबरमा । कठिन युद्ध कीन्हों तेहि थरमा ॥ दोहा ॥ द्रुपद द्रोण ये भिरि तहां कियेघोर घमसान । भीमसेन बाह्लीक भिरि कीन्हो युद्धमहान ॥ चित्रसेन अभिमन्यु कहँ हने अनगिने बान । बेधे ताकहँ तीनि शरहनि अभिमन्युअमान ॥ चित्रसेनके सुरथके हनिहति सिगरे बाजि । सिंह सदृशगरजत भयो सुरथ शृङ्गपै राजि ॥ चित्रसेन तब शीघ्रही कूदि सुरथ सों त्यागि । दुर्मुख के रथपै गयोभभरि भीतिसों पागि ॥ सोरठा ॥ सूत सहित तेहि देश ह्वै बेधितभट द्रोण सों । भयगहि द्रुपद नरेश भागिगये निज सैनप्रति ॥ भीमसेनके चण्ड बाणनसों भिदि बिरथ ह्वै । तजिबाह्लीक घमण्ड लक्ष्मण के रथ पै गयो ॥ चौपाई ॥ कृतवर्मा कहँ बहुशर हनिकै । सात्वकि अति आनँद सों सनिकै ॥ रथबढ़ाय भीषम सों भिरिकै । हने साठिशर छबि सों घिरिकै ॥ तबभीषम करि कोप कराला । तजे शक्ति अति बिशद बिशाला ॥ सात्वकि

ताहि बीचहीं छेदे । सो लखिकै दुर्योधन खेदे ॥ तब सात्वकि निज शक्ति चलाये । भीषमताकहँ काटि गिराये ॥ काटि शक्ति भीषम अतिरोखे । हने सात्वकिहि नवशर चोखे ॥ सो लखि रथी पांडवन केरे । राखि सात्वकिहि भीष्माहिं घेरे ॥ अतिशय घोर युद्ध तहँ माचो । मानहुंकाल कुपितह्वै नाचो ॥ यहलखि दुर्योधन अनुमानी । दुश्शासनसों बोले बानी ॥ भीषम पाण्डव के सुभटन सों । घिरिछादितभे सरस शरन सों ॥ रक्षण तासु महत है कारय । मम जय को कारणहै आरय ॥ महारथिनसह बढ़ि तुम आसू । रक्षहु भीष्महि हति दल तासू ॥ यह सुनि सह सेना बढ़िसोई । भिरोपाण्डवनसों भयगोई ॥ उभयसेनके भट भिरिभिरिकै । घोर युद्ध कीन्हों तहँ थिरिकै ॥ हयदलसहित शकुनि तेहि क्षनमें । जयहित उमहि गर्व गहि मनमें ॥ बरषत बाण भिरतभो जितिसों । सहदेव नकुल सुधर्मनृपतिसों ॥ दोहा ॥ तोमर पट्टिश भल्ल अरु शक्ति परश्वधबान । भेलिउभय दिशिके सुभट किये कठिन घमसान ॥ दशहजारयोधाप्रबल हय सादी तिहिकाल । तहँभेजतभो चाहिजय दुर्योधनक्षितिपाल ॥ तेहि क्षण चपल तुरीनके खुरधारनको शब्द । दहत बांस को बिपिन तिमि कढ़िपरसत भो अब्द ॥ सोरठा ॥ हय हिंसनको शोर पूरि गयो सब दिशनिमें । उध्व युद्ध अतिघोर क्रुद्धि क्रुद्धि भटकरतभे ॥ वसुकला ॥ तेहिक्षण ससैन । बलबुद्धि ऐन ॥ युत बन्धु बीर । नृप धर्मधीर ॥ ह्वै चपल हिष्टि । करि बाण वृष्टि ॥ हति हय समूह । अरु सुभट जूह ॥ तोदलदबाय । दीन्हों भगाय ॥ तजि सकल सौज । भगिचली फौज ॥ पाण्डवअमान । लहिमुद महान ॥ करिशंखनाद । गहिअति प्रमाद ॥ भेरतनिशान । बढ़ि भरे शान ॥ यहसमय देखि । तोतनय तेखि ॥ नृपशल्य ताहि । अति प्रबलचाहि ॥ भोकहत येहु । सुनु सुबलगेहु ॥ तौभागिनेय । तजिशर अमेय ॥ अरु धर्म भूप । ह्वै बिकट रूप ॥ मम

दल सँहारि। दीन्हीं बिडारि॥ तुमबढ़ि सरीति। लरिलेहु-जीति॥ दोहा॥ दुर्योधनको बचन सुनि शल्यभूप हरषाय। रथ समूह सह बढ़िभिरो धर्मनृपति सों जाय॥ धर्म नृपति तिनसों भिरो लैसँग सुभट अथोर। महतयुद्धतहँ होत भो यमपुर ब-र्द्धन घोर॥ शल्यभूप के हियहने धर्मभूप दशवान। हने नकुल सहदेव शर सात कठोर अमान॥ शल्य मारि तिनकहँ प्रथम तीनि तीनि शरचण्ड। साठि धर्म नृपकहँ हन्यो द्वैद्वै तिन्हैंउ-दण्ड॥ सोरठा॥ घोर युद्ध तेहिकाल भूपति तेहिथर मचतभो। शोणित सरित विशाल रुण्ड मुण्ड मय बढ़िबही॥ यह लखि धीर धुरीन भीम सुवीर अमित्र जित। करत सुविक्रम पीन भिरो शल्य नृपसों तहां॥ तेहि क्षण भीषम क्रुद्धि कठिन परा-क्रम करतभो। जिमि मृगराज प्रबुद्धि गजराजन के यूथमधि॥ चौपाई॥ द्वादश वाण भीमकहँ मारे। नवशर हनि सात्व-किहि प्रचारे॥ तीनि सुवाण नकुलके तनमें। हने सात सह-देवहि क्षनमें॥ द्वादश वाण धर्मके उरमें। धनु टंकारि हन्यो अतितुरमें॥ धृष्टद्युम्न कहँ वेधिननरदे। यहिविधि अगणित सुभटन मरदे॥ द्वादशवाण सरस अनियारे। नकुल प्रचारि भीष्मकहँ मारे॥ सात्यकिहने तीनिशरचोखे। धृष्टद्युम्न सत्तरि शरनोखे॥ गरज्यो भीम सात शर हनिकै। द्वादश हने धर्म नृप गनिकै॥ तेहिक्षण द्रोण सात्वकी भीमहि। पांचपांच शर हने अधीमहि॥ सात्वकि भीम क्रोधअति करिकै। तीनितीनि शायक परिहरिकै॥ वेधि द्रोणकहँ गर्वित मनमें। सिंहसदृश विचरे रणबनमें॥ त्यहिक्षण सकल देशके योधा। घोरयुद्ध कीन्हों गहिक्रोधा॥ भीषमतहां धनुष टङ्कारे। करि मण्डलसम भटसंहारे॥ अग्नि समान भीष्मके बाना। अरिदल भो तृण विपिन समाना॥ सुभट चेदि कारूष सुथरके। चौदह सहस बीरबल बरके॥ भिदि भीषम के शरसों तेहां। गये शूरगण

निवसत जेहां ॥ यहिविधि अगणित सुभट सँहारे । हाहाधुनि परदल मधिपारे ॥ दोहा ॥ कालचक्रसम धनुष रथ करिकै भीषम तत्र । अगणित भटहति निमिषमें भेजे यमपति यत्र ॥ काटिसरथ अगणित रथी सहहय नेक हयस्थ । सगज अनेक गजस्थ हतिपरदल कियो अस्वस्थ ॥ डाटि डाटि अगणित सुभट काटि काटि रणधीर । काल कुंदेरेको अजिर रणमहिकियो सुबीर ॥ सोरठा ॥ भगी पांडवीफौज ह्वै मर्दितभटभीष्मसों । तजितजि संगर सौज भगत गिरत उठिलखिभगत ॥ चौपाई ॥
पांडव को दल बिचलत देखी । रोको सुरथ कृष्ण अवरेखी ॥
कहे पार्थ सों सुनो यथारथ । यह सोई दिन है हे पारथ ॥ जो दिन तुम इच्छितहेबहुदिन । निरखौ प्राप्त भयोअब सोक्षिन ॥
अब कत मोहिं रहेहौ आरज । करहु सभामधि कोपनकारज ॥
यहसुनि पार्थ कहतभेशोचत । नहिंअवध्यको बधमोहिंरोचत ॥
धिगराज्यहिजाके हितस्वामी । होतवनत अनुचितपथगामी ॥
करहु चपल अश्वनकहँसाईं । निरखो मम बिक्रम यहि ठाईं ॥
सुनि प्रभुहांकि श्वेत रँगघोरे । कीन्हें शीघ्र भीष्म के धोरे ॥
भिरे भीष्म सों पारथ जबहीं । पलटे उत के योधा तबहीं ॥
भीषमतहँ करलाघव करिकै । तीक्षण शरअसंख्यपरिहरिकै ॥
गोपि दयो पारथकहँ क्षनमें । लखिसबभट बिस्मितभे मनमें ॥
तहँ यदुनायक अनरथचीन्हें । बेधितहयन चपलअतिकीन्हें ॥
तेहिक्षण पारथ हनिशर चोखो । काटो भीषमको धनु नोखो ॥
तब भीषम धनु आन चढ़ायो । पारथ सोऊ काटि गिरायो ॥
साधुसाधु तब भीषम कहिकै । बर्षे शरअति बरधनु गहिकै ॥
भीषम ह्वै प्रचण्ड अतितेहिक्षिन । कीन्होंकठिन बाणको दुरदिन ॥ दोहा ॥ केशव करिकै प्रकट तहँ निज सारथ्य महान । रथ चालन में व्यर्थकरि दये अनगिनेबान ॥ काटे पार्थ असंख्यशर तऊ अनगिनेबान । सहे कृष्ण पारथहितहँ मारभीष्म

अमान ॥ सहस छिद्र जलयंत्र सों कढ़ै यथा जलधार । चल्ल भीष्मके धनुष सों तिमि तहँ वाण अपार ॥ यहि विधि पारथ के रथहि छाय शरन सों वीर । बधेअसंख्यन भटनकहँ भीषम भट रणधीर ॥ सोरठा ॥ पारथ को मृदुयुद्ध लखि भीषम कहँप्रबल लखि । यदुनायक ह्वै क्रुद्ध रथतजि भीषम पै चले ॥ करे उतंगप्रतोद अनुमानतवध भीष्मको । चले भीष्मकेकोद पुरुष सिंह यदुनाथप्रभु ॥ रोला ॥ महिहि मर्दतयदुपतिहि तेहिसमय आवत देखि । जातमारे भीष्म इमि सब कहतभे अवरेखि ॥ भीष्म आवत प्रभुहि लखि सन्धान धनुको वारि । कहत भे इमि कृष्णके करमरण श्रेय विचारि ॥ आय ममवध कीजिये प्रभु कृष्ण करुणा ऐन । युद्ध मचितुव हाथ मरिबो परम महिमा ऐन ॥ इते में गुणिकूदि रथसों पार्थ पीछे धाय । गहे चरणहि रुके तबगे चरणसों लपटाय ॥ खरेभे तब कृष्णपारथ कहतभे करजोरि । नाथऐसो करे होइहि महत लघुता मोरि ॥ सत्यसत्कृत शस्त्रकी मोहिंशपथ है मतिमान । मारि भीष्महि लहब जय तिमिकरव युद्धविधान ॥ वचन यहसुनि कृष्णराजे सुरथपै फिरिजाय । टंकारि वरको दंड भीषम दये फिर शर छाय ॥ किये दुरादिन पार्थवर्षावाण की करिभूरि । उभय दिशि सों चले आयुध रहे सबदिशि पूरि ॥ बधेसैन असंख्य इतके सुभटपाण्डव वीर । बधेउतके सुभट अगणित पिता तो रण धीर ॥ उभयदिशिके सुभट सिगरे किये विक्रम घोर । मारुमाऱ्यो मारु थिरु धुनि पूरिगो सब ओर ॥ चण्ड ग्रीषम समय कैसो मारतंड समान । भयो भीषम भीष्म तेहि दिन दुसह अमल अमान ॥ दयोकरि शरजाल सबदिशि बध्यो अगणित सैन । पांडवीदल मधिन भट कोउरह्यो तहँ सहचैन ॥ दोहा ॥ दहै दवानलकी लपट जिमि तरु शलभ समूह । तिमि भीषम के शरबधे भट हय मैगलजूह ॥ काटि असंख्यन वाण धनु

ध्वजरथ शक्ति अनेक । रुंड मुंड शोणित मयी रणमहिकरी स-
टेक ॥ भुजंगप्रयात ॥ महाबीर बीराधि श्री भीष्म योधी । अरीत्रै
करीपै महासिंह क्रोधी ॥ प्रलय कालके कालसो क्रूर ह्वैकै ।
प्रलयकाल रोष्यो प्रबीरान ज्वैकै ॥ करे मंडलाकार कोदण्ड
भारी । दयेपूरि नाराचजे गात चारी ॥ यथा भूरि भेकीन में
व्याल कोह्यो । तथा पांडवी सैनमें बीरसोह्यो ॥ दोहा ॥ सबथर
सबजनपै दयो पूरिशरनकोसेत । रह्यो न उतके भटनकहँ थिरि
लरिबेको चेत ॥ जिमिसबात अति वृष्टिमें कछु करिसकै न
कोइ । तिमि तेहिक्षण उतले सुभट रहेअचेष्टितहोइ ॥ महिखरी ॥
तिहि समय भीषमबीरके बर शरनसों भिदि भट घने । मरि
गिरतहे यकसाथ अगणित रहेजकि तकिभय सने ॥ बहुभगे
आयुध डारि कितने लये आयुध भगिचले । बहुभगे बाहन
त्यागि कितने सहित बाहन भयरले ॥ बहुनिरखि बिनु अस-
वार बाहन पकरि चढ़ि सादर भगे । बहुवीरघायल भगतफिरि
गिरि रहत परिश्राति भयपगे ॥ यहिभांति हाहाकार नृपवहि
सैनमाधि सबथर मचो । कल्पान्त सोदिन भीष्मभव धनु शूल
गति बिधिवत नचो ॥ दोहा ॥ यहि प्रकार करि एकरस बिक्रम
भीषम धीर । रबि अँथयेलों लरतभो प्रलयपारि रणधीर ॥
इमि निजदल मर्दित निरखि लहि तेहि दिनको अन्त । सहित
सैन डेरन गये धर्मराज क्षितिकन्त ॥ दुर्योधन तब सहसयन
निज डेरन मधिआय । किये अहारादिक क्रिया महा मोदसों
छाय ॥ सोरठा ॥ ससयन पांडवभूप किये अहारादिक क्रिया ।
समुझि भीष्मको रूप तजीआश जयलहनकी ॥ रोला ॥ निरखि
बिक्रम भीष्मको ह्वै व्यथित पांडवभूप । बैठिपुरुष प्रधानसह
भेकरत मंत्रअनूप ॥ मंत्रिऊबि उसांसलै तहँ बिकल ह्वै नृप
धर्म । कृष्णप्रभुसों कहतभे निजपिता महको कर्म ॥ कृष्णदेखो
भीष्म कीन्हों अतुल बिक्रम आजु । दल्योइमि ममसैन जिमि

बन नलिनको गजराज ॥ गनेभट ममओरके जेभये संमुख तासु । ज्वलन ढिग गतशलभ सम तहँ भयेते सब आसु ॥ बरुण इन्द्र कुबेर यमके जीतिबेके योग । भीष्मतासों युद्ध करिकै लहै जयको लोग ॥ कृष्ण लरिबो भीष्मसों सो वृथा गहि जय आश । जानिकै करवाइबोहै बन्धु गणको नाश ॥ भीष्मके शरघात सों है व्यथित हित समुदाय। तासु रक्षणहेत अब हम बसब बनमें जाय ॥ भूपको यह वचन सुनिकै कहो यदुकुल चन्द। धर्मभूपति धीरधारो तजौसिगरो दन्द ॥ आपुके सब बंधुये हैं प्रबल विक्रम भूरि। भीष्मको वध करहिंगे ये बिशद बाणनपूरि ॥ अर्जुनहिंको नहिंरुचै बधिभीष्मकोतौ मोहिं। देहुशासन मारि भीष्महिं देउँ आनँद तोहिं ॥ पाण्डवन को अहित जोमम अहित सोनहिं आन। अहित ममसो पांडवन को अहित कहत सयान ॥ शिष्य सम्बन्धी सखामम अनुज तो बलवान। तासु हित हम प्राण दीबो गुणत तूलसमान ॥ कृष्णके ये बचन सुनिकै कहे धर्म नरेश । सत्यमम सम कौन जाकेपक्ष आपु सुवेश ॥ कहैंहम केहिभांति प्रण तजि आपु कीजै युद्ध। नाथ अबमैंकहतहों जोमंत्र अतिशयशुद्ध॥ भीष्म मोकहँ देनभाषो मंत्रवादिनजोन । भीष्मपहँचलि विनयकरि अब आजु लीजै तौन ॥ भीष्म करिहैं युद्ध उनकी ओरयह ध्रुवतात। अवशिहम जयलहबउनको पायमंत्रविभात ॥ दोहा ॥ धर्मभूपको बचनयह सुनिकृष्णादिक तत्र । करिसम्मत सादर गये वृद्धभीष्महेयत्र ॥ कृष्ण नृपति सबबंधुसह धर्मभीष्मपहँ जाय। यथा उचित अभिवंद्यभे बैठत आनँद पाय॥ जयकरी ॥ कै प्रसन्नतहँभीष्मउदार। कीन्हें कुशलप्रश्नव्यवहार॥ फिरिबूझै आगमकोहेत। तबबोले नृपधर्म सचेत ॥ तातपूर्व विनतीगुणि मोरि। करिमोपै तुमकृपाअथोरि॥ देनकहो होश्रेयदमंत्र। आयो आजु चाहि सोतंत्र॥ निज बधकी विधिमंत्र अघोर। देहुबता-

य सुजय गुणिमोर ॥ यह सुनि बोले भीषम चाहि । पूर्वशिखंडी युवती ताहि ॥ आगे करि सब सुभट समूह । मम संमुख आवै रचिव्यूह ॥ हम तापै शर हनब न नेक । रहि ताके आड़ेगहि टेक ॥ बढ़िहनि अति अनियारे बान । ममबध करै पार्थ बल-वान ॥ पार्थ बिना कोउ सुभट अनूप । तऊ न मारिसकिहिमो-हिं भूप ॥ जाहु कालिह की जो यह काज । सुनि भूपतिगेसहित समाज ॥ बहुरि बैठि डेरन मधिजाय । लागे कहन पार्थ बिल-खाय ॥ बाल पनेमें रजभरि गात । जबहम जायकहतहेतात॥ तब भीषम मोहिं अङ्क लगाय । ऐसोकहत रहे दुलराय ॥ हम तो तातके रहैं तात । नहिं हम तात तिहारे तात ॥ इमि बहु-विधि सब दिन सबयाम । लालत रहे भीष्म गुणग्राम ॥दोहा॥ ज्ञानी योगी व्रतीपटु वृद्ध पितामह स्वच्छ । यहि बिधि पालत सुव्रततेहि हम न बधबहे दच्छ ॥ बधैभीष्म मम सैनकै बन्धुन अरु कै मोहि । होइअजयकै जय न हम बधब भीष्मकहँजोहि ॥ अर्जुनके ये बैन सुनि क्षात्रसुधर्मसुनाय । कियेकृष्ण सन्नद्धहठि बहुप्रकार समुझाय ॥ सोरठा ॥ अर्जुनसों सिद्धान्त करिभीषम के बधनको । कियेरजनिअतिक्रान्त निज निज डेरनजायसब ॥

इतिश्रीभीष्मपर्वणिनवमदिनयुद्धसमाप्तिर्नामएकत्रिंशोऽध्यायः ३१ ॥

संजयउवाच ॥ दोहा ॥ दशयें दिनको भोर लहि उभयभूपदल साजि । व्यूहबिरचिभिरिल्लरतभे भेरिदुन्दुभीगाजि ॥ बैशम्पायनउ-बाच ॥ दोहा ॥ यहसुनिकैधृतराष्ट्रनृप कहोकहौकरिब्यक्त । किमि रचि व्यूह लरेउमँगि ह्वै जयसों अनुरक्त ॥ संजयउवाच ॥ रोला ॥ भोर लखिकै रजनिके बहि मंत्रिकै अनुसार । साजि सेनारचें पांडव व्यूह बिशद अपार ॥ किये आगेभट शिखण्डिहि तासु तहँ दुहुँतीर । रहे रक्षक भीम अर्जुन अति प्रबल रणधीर ॥ रहे तिनके पृष्ठरक्षक द्रौपदी के बार । अरु सुभट अभिमन्यु करता दुसह युद्ध बिहार ॥ सुभट सात्वकि चेकितानसरेशसैन

समेत । रहे तिनके पृष्ठपालक करे अविचल चेत ॥ तासु पीछू रहो दलपति धृष्टद्युम्न ससैन । रहे तव नृपधर्म अरु सहदेव नकुलसचैन ॥ तासुपीछू रहोदलसह नृपविराट प्रकर्षि । बीर रसमय द्रुपदहो तव सहित सेनाहर्षि ॥ पांचभाय महीपकेकय देशके रणधीर । धृष्टकेतु ससैनहे सबचमू रक्षकबीर ॥ बिरचि यहिविधि व्यूह पांडव दुन्दुभी बजवाय । चलेबढ़ि यहिओर बिधिवत शरनसों दिशिछाय ॥ दोहा ॥ इत आगेकरि भीष्म कहँ महारथिनसह संग । सबतो सुतहैं तदनुहैं द्रोण सपुत्रस-ढंग ॥ गजानीकसह तदनुहो नृपभगदत्त अमान । कृप कृत-बरमा सुभटहैं तासुअनुग बलवान ॥ तबहो काम्बोजाधिपति सदल सुदक्षिण बीर । तदनु वृहद्दल शकुनिअरु जयत्सेन रण-धीर ॥ तदनुसदल सब भूपहैं पृष्ठपाल उद्दण्ड । यहिविधिरचि रचिव्यूहभे भिरत उभयदलचण्ड ॥ सोरठा ॥ होतभयो तेहि काल उभय ओरके भटनसों । उद्धयुद्ध बिकराल यमपुर अति बर्द्धन करन ॥ चौपाई ॥ तिहिक्षण पांडव भट रणधीरा । अति प्रकर्ष दुर्मद रणधीरा ॥ शर वर्षत बर व्यूह बिदारत । बलसों सुभट असंख्य सँहारत ॥ चले शिखण्डिहि आगे करिकै । भीषमके बधको प्रण धरिकै ॥ तिहिक्षण भीमार्जुनकेमारे । अ-गणित भट यमलोक सिधारे ॥ सहदेव नकुल सात्यकिहि आ-दिक । जे उतके भट परम प्रमादिक ॥ तिनके शरघातनसों पीड़ित । ह्वै भागे इतके भट ब्रीड़ित ॥ सहि न सके शर घात अहितके । दशदिशि भगे सुभट सबइतके ॥ नृपधृतराष्ट्रहारि निज सुनिकै । संजयसों बूझ्यो इमि गुनिकै ॥ भीषम निजदलवि-चलितदेखी । कहौकहा कीन्हें अवरेखी ॥ संजय कहो सुनो तेहि क्षनमें । भीषम गहि अतिशय रिस मनमें ॥ बाणवृष्टिकोदुरदिन कीन्हें । अरिको दल व्याकुल करिदीन्हें ॥ अगणित गजहयभट रथकाटे । रुण्ड मुण्डसों रणमहिपाटे ॥ सब दिशिमें भीषमकहँ

तेहिक्षन । लखि सबहोतभये बिस्मितमन ॥ मण्डलसदृश धनुष करिसरस्यो । घनसम गर्जि बाण बन बरस्यो ॥ तहँ भीषमको विक्रमतकिकै । रहे सकल पाण्डव तकि जकिकै ॥ तोसुत जब इमि बिक्रमचाहे । भीष्महि भांतिअनेकसराहे ॥ दोहा ॥ तेहिक्षण अर्जुन वरषि शर हति अगणित भट आसु । सुभट शिखण्डिहि बेगसों सम्मुख कीन्हें तासु ॥ हन्यो शिखण्डी भीष्मके उरमधि शायक तीन । उदासीन सम भीष्म तब बोले बाणीपीन ॥ हनौ बाण वा मतिहनौ हम न मारि हैं तोहि । पूर्व रच्यो बिधि तोहिं जो सोई अजहूं जोहि ॥ चौपाई ॥ शरसम बचनभीष्मको सुनिकै । कोपि शिखण्डी बोल्यो गुनिकै ॥ हम तुम्हार सबबिक्रम जानैं । जानि आजुतुमसों रण ठानैं ॥ बधब आजु हम तुमकहँ आरय । यह सुनि करौबनै जोकारय ॥इमिकहि पांचबाणअनियारे । तकिभीषम के उरमाधि मारे ॥ समय बिलोकि मुदित ह्वै पारथ । कहे शिखण्डीसों गुणिस्वारथ ॥ हम तुव अनुग रुकौ मति नेकौ । पीड़ि न सकिहि तुम्हैं भट एकौ ॥ कृप अरु द्रोण आदि जो योधा । हम करिहैं सबको अवरोधा ॥ तुम बढ़िबधौ भीष्मकहँ भाई । लहौ अपूरव सुयश बड़ाई ॥ भीष्महिं बधे बिना भिरि जगमें । हम तुम सुनब हास्यपगपगमें ॥ तातेकरौ काजअब सोई । जाते जगमें हँसी न होई ॥ इतने में इतकेभट रूरे । भिरे करत विक्रम बलपूरे ॥ पारथभीम शिखंडिहि शर सों । छाय दये करलाघव बरसों ॥ तहँ अर्जुन अति विक्रम कीन्हें । क्षणमें तिन्हें पराजित कीन्हें ॥ तेहिथर निज दल बिचलत देखी । भूपति दुर्योधन अतितेखी ॥ कहेभीष्म सों लखौ न नरदत । पांडवसदल सैनमम मरदत ॥ दहै अग्निबनाजिमि गिरिपाहीं । तिमिते बिहरत ममदल माहीं ॥ दोहा ॥ जिमिगोपालक अति प्रबल वृषभनको समुदाय । जाय भजावतभीम तिमि ममदल देत भजाय ॥ ऐसे आपतकालमें तात तुम्हैं

विनु और । ममत्राताको होयहे सुभटन के शिरमौर ॥ जयकरी ॥
यह सुनिकै भीषम करिगौर । कहे सुनो भूपति शिरमौर ॥ तुम
सोंजो हमकीन्हों पूर्व । परमप्रतिज्ञा गहिप्रणगूर्व ॥ अयुतरथी
मारवहम रोज । सो प्रति दिन कीन्हों कहिओज ॥ तासों अ-
धिक वधेनिति जौन । हय गजभट तुम निरखे तौन ॥ आजु
करवतिमि दुस्तरकर्म । पालिसत्यको जो शुभधर्म ॥ वधवपां-
डवन कहँ कै तात । हम वधिजाव अचल यह वात ॥ इमिकहि
कै भीषम वलवान । लागो तजन वज्रसम वान ॥ तेहि क्षणनिज
विक्रम दरशाय । वधेसहस्रन भट समुदाय ॥ दोहा ॥ पांडवजल
निधिके अनुग गेभट सरित महान । करष्यो तिनकोतेज जल
भीषम सूर समान ॥ मार्यो अयुत गजरथ अरु अयुतहयरथ
सुधीर । लाख पदाती भट वध्यो तेहि क्षणभीषम वीर ॥ इमि
भीष्महि निज दलवधत लखिपांडवभटसर्व । वधको करि अनु-
मानभे भिरत उमँगिगहि गर्व ॥ सोरठा ॥ एक भीष्म तेहिकाल
वहुपांडवभटसों लरत । देखिपरो क्षितिपाल भिरो घननसों मेरु
सम ॥ सो लखि सवनो पुत्र महारथिन सह ऊटिकै । भीष्महि
रक्षणसुत्र करि रण विरचे जूटिकै ॥ चौपाई ॥ माचो घोर युद्ध
तेहि क्षनमें । भरो वीररस सवके मनमें ॥ तोमर शक्तिभल्ल
शररूरे । रणमंडलमें अविरल पूरे ॥ तहँभीषमअति गौरवली-
न्हें । अविचल अरिदल अरिदित कीन्हें ॥ भीषमको विक्रमल-
खिपारथ । कहे शिखंडी सों गुणिस्वारथ ॥ भय मतिगहहु भी-
ष्म सों आस्य । हम हनि वाण वधव जयकारय ॥ यहसुनिभूप
सुवन भयत्यागी । चलो भीष्मपै रिससों पागी ॥ सहदेवनकुल
द्रुपद रणधीरा । चेकितान अभिमन्यु सुवीरा ॥ नृपविराटअरु
भट सेनानी । सात्वकि आदि सुभट अभिमानी ॥ जवसों चले
भीष्मपै तैसे । अगणित गरुड़व्यालपै जैसे ॥ सो लखिइतके
भट भय धारे । यहि विधि भिरत भये रिस भारे ॥ चेकितान

सों भिरो अमर्षण । चित्रसेन अरिदलको धर्षण ॥ धृष्टद्युम्नसों भिरो प्रचारी । कृतवर्मा अनुपम रणचारी ॥ बहत सुबीरवृकोदर तासों । भूरिश्रवा भिरो भरि भासों ॥ वीर बिकर्ण नकुल सों भिरिकै ॥ कीन्हों घोरयुद्ध तहँ थिरिकै ॥ कृपाचार्य सहदेवहि आड़े । बाण असंख्य बज्रसम छांड़े ॥ दोहा ॥ भिरोघटोत्कच असुर सों तो सुत दुर्मुख वीर । सात्वकि सों भिरिलरतभो दुर्योधन रणधीर ॥ भिरत भयो अभिमन्यु सों भूप सुदक्षिण दक्ष । आभिरो द्रुपद बिराट सों द्रोण तनय भटअक्ष ॥ भिरो युधिष्ठिर भूप सों द्रोणाचारय हर्षि । बढ़ि अर्जुनसों भिरतभो दुःशासन धनुकर्षि ॥ सोरठा ॥ बर्षत बिशिख सगर्ब चलेभीष्म पै जे सुभट । इतके योधा सर्ब इमि बढ़ि बढ़ि तिनसों भिरे ॥ सघन शस्त्रगो पूरि जलप्रवाह सम नृप तहां । हय गजरथ भट भूरि याद सदृश तामधि लसे ॥ चौपाई ॥ उतसब भीष्महि मारण हारे । इतसब भीषमके रखवारे ॥ घोर युद्ध माचो तिनातिनसों । भयो समागम नृपजिन जिनसों ॥ तहँ दुःशासन भट रणचारी । कीन्हों अद्भुतविक्रम भारी ॥ तिमि पार्थहि बाणनकी मेला । करि रोक्यो जिमि सिंधुहि बेला ॥ तीनि बाण अतिशय अनियारे । हांकि पार्थ केतन मधिमारे ॥ बीसबाण केशवके तनमें । मारत भयो मर्म गुणि मनमें ॥ कृष्णहि पीड़ित लखि रिस गहिकै । शत शर हन्यो पार्थ थिरु कहिकै ॥ तेशर दुःशासनके तनमें । कवच भेदि प्रविशे तहिक्षनमें ॥ तीनि बाण दुःशासन तबहीं । भ्रू मधि हन्योलख्यो सो सबहीं ॥ तेहि क्षण पारथ अति उतकरषे । दुःशासन भटपर शर बरषे ॥ दुश्शासन अति रिस सों मार्‌यो । तापै अगणित बाण प्रहार्‌यो ॥ तब पारथ काटधनु तासू । अरुरथ मारि तीनिशर आसू ॥ बहुशर हने दुशासन वीरहि । तब दुःशासन गहिअति धीरहि ॥ गहि धनुबान चढ़ाय सुधार्‌यो । बाण पचीस पार्थकहँमार्‌यो ॥ तब

पारथ वहु वाण चलाये । दुश्शासन सव काटि गिराये ॥ तव पारथ अति चोखे शायक । मारेजे तरु भेदन लायक ॥ दोहा ॥
तिन बाणन सों व्यथित ह्वै भागिभीष्म के तीर । जायके मूर्च्छित ह्वै वहुरि चेतिलरतभो वीर ॥ फिरि चढ़िकै रथऔर पै भटसमूह सहजाय । भिरतभयोफिरि पार्थसों महाक्रोधसों छाय ॥ तुरतोमर ॥ यहिभांति सवभट जूटिकै । भेलरत अनरथ ऊटिकै ॥ दोर्दण्ड विक्रम भूरिसों । कोदण्ड केक्रम भूरिसों ॥ दिशि छाय दीन्हों वानसों । अरु भल्लशक्ति अमान सों ॥ वहु शरन सों शरकाटिकै । हनिशस्त्र अगणित डाटिकै ॥ वध चाहि चाहिप्रकर्षह्वै । तजिजीवनाश अधर्षह्वै ॥ वैभीष्मपै चलिजान को । अतिकरो संकरठानको ॥ ये आड़िवेकी रीतिसों । अतिलरे करि रतिजीतिसों ॥ धनुकाटिवाण प्रहारहीं । धनुआन गहिशर मारहीं ॥ वहुवाण मारिप्रचारहीं । डटि डारि डरडर डारहीं ॥ भिदिशरन सो नहिं मानहीं । बढ़िचलैं वधिवे आनहीं ॥ अरि अनुग अगणित मारिकै । करि व्यथित द्वन्दहि टारिकै ॥ वहु सुभट उतके जोरसों । तकि चलहिं भीष्महि तोरसों ॥ तव सुभट इतके जूटिकै । त्यहिआड़ि राखैं टूटिकै ॥ जिमि नावप-रिजल भौंरमें । रुकिरहै ते तेहि तौरमें ॥ वहु व्यथितह्वै टरि आयकै । फिरि सँभरि जूटैं आयकै ॥ जलफेर लहि जेहि भावसों । दुरि जुरैं नौका वायुसों ॥ दोहा ॥ होत भयो तेहिठौर नृप यहि प्रकारको युद्ध । दुसह पराक्रम करतभे सिगरे योधा शुद्ध ॥ तेहि क्षण द्रोणाचार्य लखि वहु असगुन विकराल । अश्वत्थामा सों कहे गुणि अनरथ की माल ॥ यहिदिन में अति होत है अगणित असगुन घोर । होन चहत अनरथकछू मरिहैं सुभट अथोर ॥ भीषमके वधकोकियो प्रण जेहिदिनको पार्थ । सोदिन आज लखातहै चाहत होन यथार्थ ॥ सोरठा ॥ पारथ गहि अतिगर्व करिआगे द्रुपदात्मजहि । लैसँग योधासर्व

जान चहत हैं भीष्मपहँ ॥ भीष्म शिखंडिहि जोहि युद्धत्याग करिहैं अवशि । जानि परत यह मोहि बंधिहि भीष्मकहँ पार्थ तब ॥ चौपाई ॥ ससयन धर्म नृपति सों भिरिकै । हमइत लरब चक्रसम फिरिकै ॥ तुम अब निकट भीष्मके जाहू । रक्षहु भीष्महि सहित उछाहू ॥ रणचढ़ि मरब श्रेष्ठ कै जीतब । हारि जियबलघुगरिमा रीतब ॥ अति चिरकाल पुत्रको जीवन ।जग महँको चाहतहै जीवन ॥ स्वामि काज हित ताहि मरणको । कहियतु शाश्वत धर्म्म धरणको ॥ हाहाकार मचो सबथलमें । माचो तुमुल युद्धयहि पलमें ॥ मरिबेको निश्चय ध्रुव करिकै । करत युद्ध सबभट प्रण करिकै ॥ भीषम के बध रक्षणहेतू । बँध्यो उभय दिशिसों शरसेतू ॥ भीष्म अमृतके हितसब तैसे। लरतलरे दितिसुत सुर जैसे ॥ आमिष हेतु बाज युगभिरिकै । लरत लरत तिमि युगदलथिरिकै ॥ ऐसेमें करि बिक्रम चावन । रक्षहु जाय भीष्मकहँ भावन ॥ यह सुनि अश्वत्थामा परखत । चलो भीष्मके ढिग शरबरषत ॥ इतनेमें दशभट रणचारी । भिरे भीमसों प्रबलबिचारी ॥ कृपभगदत्त शल्यकृतबर्मा । चित्रसेनदुर्मर्षणशर्मा ॥ सुभट बिन्द अनुबिन्द नरेशा । बीर जयद्रथ अनुपम भेशा ॥ अरु तो सुत विकर्ण धनुधारी । येदशबीर बिदित भटभारी ॥ दोहा ॥ येदशबीर महारथी सहित सुभट समुदाय । भीमसेनके सुरथपहँ देतभये शरछाय ॥ नवनवशर कृपशल्यके कृतबर्माके तीनि । लगिबेधतभे भीमको देह अनूपम पीनि ॥ चित्रसेन भगदत्त अरु भट बिकर्ण बलवान । भीमसेन कहँ घेरिकै मारे दशदशबान ॥ हन्यो जयद्रथ तीनिशर दुर्मर्षण शरबीश । हनेविंद अनुबिंद नृप पांच पांच शरईश ॥ सोरठा ॥ बहुशर तिनकेकाटि भीमसेन अतिक्रोधकरि । गरजि सिंह सम डांटि हनत भयो तिनकहँ बिशिख ॥ चौपाई ॥ आठबाण कृतबर्महि मारे । शल्यहि सात बाण अनियारे ॥ कृपको धनुषकाटि

धनुधारी । हने सातशर अरि रणचारी ॥ तीनतीन शर तीक्षण चीन्हें । विन्द और अनुविन्दहि दीन्हें ॥ दुर्मर्षण पहँ वीस प्रहारे । चित्रसेन परशर शर डारे ॥ दशशरहन विकर्ण सुयोधहि । आठ जयद्रथ नृपति सक्रोधहि ॥ कृप तवगहि सुआन कोदण्डहि । दशशर मारे भीम प्रचण्डहि ॥ तहां भीम अति रिससों सनिकै । कृपाचार्य्य कहँ वहुशर हनिकै ॥ तुरग जयद्रथ नृप के रथके । वधत भयो जे गरुवे गथके ॥ फिरि हनि एक वाण मजवूतहि । दयो गिराय सचिव सम सूतहि ॥ तव रथ त्यागि जयद्रथ आरय । वहुशरहन्यो सुजय के कारय ॥ सोलखिभीमवीर अतिरोखे । काटिदयो धनुहनि शरचोखे ॥ चित्रसेन के रथपै तवहीं । गयो भूपभो विनु धनुजवहीं ॥ अति विक्रम तेहिदिनके रणमें । कीन्हो भीमसेन तेहिक्षणमें ॥ काटि काटि सवके अगणित शर । सब कहँ हनि वेधत भो तेहि थर ॥ तिहि क्षण शल्य आदि सवयोधा । मुरिफिरि जुरि कीन्हें अवरोधा ॥ अव रहु खरोभागु मति कहिकहि । वरषे शर असंख्य रिस गहिगहि ॥ दोहा ॥ तहँ सवके तनमें हने पांच पांच शर भीम । सत्तरि मारे शल्यकहँ जे अति तीक्षण भीम ॥ पुरुषसिंह फिरि सिंहसम गरजि वाणदश मारि । सवपै डारेवाणवहु सव के वाणन वारि ॥ शल्य शल्य समवाण नव तेहि हनिभयो विशल्य । मारि विशोकहि एकशर कियो प्रगट कौशल्य ॥ सोरठा ॥ भीमसेन तेहिकाल सेन समान परो निरखि । इतकेभट खग माल लसे कालवश विवश सम ॥ ते वहुभट वहुवार हने भीमकहँ वाणवहु । वहुविधि वहुशर धार भीम हने तिन वहुन कहँ ॥ तोमर ॥ तिहि समय सव क्षितिपाल । शर तीनि तीनि विशाल ॥ भट भीमसेनहि मारि । भे मुदित धनु टंकारि ॥ तव भीमवीर प्रचारि । शर तीनि शल्यहि मारि ॥ भगदत्त कहँशत वान । भोहनत जानिअमान ॥ कृतवर्मको धनुकाटि । भो वाण

मारत डाटि ॥ सो भूपगहि धनुऔर । शरहनत भो झूठौर ॥ तब भीमतिन केगात । मधि किये बहुशर पात ॥ तब तजे ये भट सर्ब । बहु अस्त्र गहिगहि गर्ब ॥ सब काटि सो रणधीर । भोहनत बहु शरबीर ॥ बहुभटनसों तेहि याम । लखि घिरो भीमहिआम ॥ भट प्रवल फाल्गुणकोपि । शर पात प्रलय अ-रोपि ॥ जेमुभट भीमहि घेरि । हैलरत तिनकहँ हेरि ॥ तिन सबन पै शरजाल । हनिभयो कढ़त बेहाल ॥ अति प्रबल भट दृढ़घाय । तेबीर दोऊभाय ॥ सह बिशद बज्र सुचक्र । सम शक्र अरुउपशक्र ॥ भटदितिज केमनमोरि । जयस्वर्ग लीन्हों छोरि ॥ दोहा ॥ भीमार्जुन को निरखि तब अति बिक्रम तिहि याम । कहो सुशर्म्मा बीरसों दुर्योधन ह्वै क्षाम ॥ अमर असुर पति सदृश ये डारि अस्त्र गिरि भूरि । भीष्म अमृतके हेतदल उदधि मथतु बलपूरि ॥ ताते तुम सहसैन बढ़ि बीरभाव सों जूटि । भीमार्जुनको बध करहु परम अगम जय ऊटि ॥सोरठा॥ दुर्योधनको बैन समुझि सुशर्मा सैनसह । बढ़ि बुधि बिक्रम ऐन भिरो आर्जुन भीमसों ॥ चौपाई ॥ तिहिक्षण पाण्डुतनय दोउ भाई । भूपति कीन्हों कठिन लराई ॥ सबके बाण हजारन छेदे । सबके गात शरन सों भेदे ॥ बहु शरकाटि पाण्डवन केरे । ये बहुशर तिनके तनमेरे ॥ भीमपार्थ जग जीतन लायक । तजि सबदिशनिअनगिने शायक ॥ बिदित एकादश भट जे इतके । करता अबिरलनद शोणित के ॥ क्षणमें तिनकहँ मोहित करि-कै । बधे सहस्रन भटमुद धरिकै ॥ गज हय धनुध्वज अगणित काटे । भीषम तारण महिमधि पाटे ॥ कालसदृश तहँ पार्थहि ज्वैकै । भगी फौज अतिब्याकुल ह्वैकै ॥ भीमार्जुन को बिक्रम देखी । दुर्योधन भूपति अवरेखी ॥ नहिं तहँ बढ़ि तिनसों मुंह जोरे । खिसिलि गये भीषम के धोरे ॥ सुभट एकादश तेतहँ थिरिकै । लरे भीम अर्जुन सों भिरिकै ॥ तहां शल्य बिक्रम

बिस्तारो। भल्लपार्थके उरमधिमारो॥ सोसहि पार्थकोपिशर चोखो। काटे तासु धनुष अतिनोखो॥ तब गहि आन धनुष नृपचायक। हने पार्थकहँ तीनि सुशायक॥ पांच बाण केशव के तनमें। नवशर हने भीमकहँ रनमें॥ तेहिक्षण भीमार्जुन बल भारे। शर झरि प्रलय पयोधिपसारे॥ दोहा॥ तहि शासन तो तनय को तेहिक्षण गे तेहि देश। शर बर्षत भटद्रोण अरु जयत्सेन मगधेश॥ जयत्सेन तहँ भीम के बहुमारे बसुबान। तेहि पन्द्रह शर हन्विबध्यो सूतहि भीम अमान॥ बिना सूतसब तासुहय रथ लैभागेतासु। लखि पैंसठिशर भीमकहँ द्रोण हने तब आसु॥सोरठा॥ तबहीं भीम सुबीर हन्यो द्रोणके गातमधि। पैंसठि तीक्षण तीर हर्षि गर्वसों कराषिधनु॥ अर्जुन बहुशर मारि बधि सुशर्म्मादिकनकहँ। अनुपमधनु टंकारि मदल चलो बढ़िभीष्मपहँ॥चौपाई॥ सुभटाशिखण्डिहि आगेकरिकै। भीषमके बधको प्रणधरिकै॥ पाण्डवसकल सहित सबयोधा। चलेबिदारतभटअवरोधा॥ धृष्टद्युम्नकोशासनलहिकै। बढ़ोचतुर्विधि दल बिधिगहिकै॥ भीष्म आदि इतकेभटरूरे। तिनसों भिरे रोषसोंपूरे॥ यहसुनिकै धृतराष्ट्रउवाचे। कहोलरे किमिते रिस राचे॥ सुनि संजयबोले सुनुराजा। लरे यथाभट सहितसमाजा॥ भीष्मार्जुन को दुसह समागम। भयोअजय जयलयको आगम॥ बाहनसहस सुभट रथघोरे। बधे भीष्म अगणित रथतोरे॥ नृप तेहिक्षण में भीषमज्ञानी। गहि निर्वेद दशाअनुमानी॥ चाहिस्वबध करुणासों सानी। बोले धर्मभूपसों बानी॥ हे सर्वज्ञ युधिष्ठिरआरय। नितिजन बधको गुणि निज कारय॥ मोकहँ भइ गलानि अबताते। करौप्रयत्नबधो मोहिं जाते॥ जो हे तात मोर हितुचाहो। तौ बधिमोहिं वचन मम पाहो॥ यह सुधिसब पांडवमुद लहिकै। बढ़तभये जेंश्रियपति कहिकै॥ चले सुभट भीषम पै तैसे। बहु हरिद्ध द्विरद पहँ

जैसे ॥ दोहा ॥ धृष्टद्युम्न भाषत चल्यो चलोचलौ रणधीर । बधत भीष्मकहँ आजुहठि पार्थ शिखंडी बीर ॥ तेहिक्षण तोसुत सर्वअरु द्रोणादिक भटसर्व । घेरिभीष्म कहँ बढ़िभिरे तिनसों गहि अति गर्व ॥ पांचालन सुभटन सहित पारथ वर्षतयत्र । आगेराखि शिखंडिकहँ चलो भीष्म हे तत्र ॥ सोरठा ॥ जे इत के रणधीर तेहि क्षणबढ़ि आड़ेपरे । तिनसों उतके बीर भिरे प्रचारि प्रचारिइमि ॥ चौपाई ॥ सात्वकि भिरो द्रोण के सुतसों । धृष्टकेतु पौरवबल युतसों ॥ भट अभिमन्यु धनुष टंकारी । दुर्योधनसों भिरोप्रचारी ॥ भिरोभीम भगदत्त नृपतिसों । गजानीक मर्दत बलअतिसों ॥ सहित बन्धुसह सैन सुभेशा । भिरो द्रोणसों द्रुपद नरेशा ॥ भिरो बृहद्बल नृपके छोहन । पार्थतनय सों लै दल गोहन ॥ पार्थ शिखण्डी सों बलभारे । भिरे नृपन सह सब सुत थारे ॥ यहिबिधिसकल सुभट भिरिभिरिकै । कठिन युद्ध कीन्हों थिरि थिरिकै ॥ घोर युद्ध माचो तेहि पल में । गिरे असंख्य सुभट दुहुँदलमें ॥ शब्द अघात मढ़ो महिदिव लों । कियेयुद्धसब भिरिपुर शिवलों ॥ दुर्योधनअभिमन्यु महासै । कीन्हें घोरयुद्ध तजित्रासै ॥ अगणितबाण काटिकैताके । नवशरहने भूप बरभाके ॥ तब अभिमन्यु सुशक्तिचलाई । नृप तेहि शरसों काटि गिराई ॥ पार्थतनय तब नृपके उरमें । तेरह बाण हने अति तुरमें ॥ इमितेहि भूप भूपकहँसोऊ । हनिअति बिक्रमकीन्हों दोऊ ॥ यहिप्रकार सिगरे भटराजा । कीन्होंमहत युद्ध सहसाजा ॥ दोहा ॥ काटि काटिधनुध्वजलरे डाटिडाटिरिस पूरि । बारि बारिअगणित बिशिख मारिमारिशरभूरि ॥ सुवन भूप शिशुपालको धृष्टकेतु बलवान । अरुपौरव ये भट तहां किये कठिन घमसान ॥ टारि टारि डरमरण को डारि डारिबहु बाण । छेदि छेदि शरशार हने भेदि भेदि तनुत्राण ॥ हठ धरि धरि करि करि विधनु बाधि बाधितुरग समस्त । रिस सों भरि

भरि लरतभे गहिगहि खंग प्रशस्त ॥ सोरठा ॥ जूटि जूटिस-
बिधान उठि उठि फिरि फिरिचक्रसम । टूटि टूटि बलवान छूटि
छूटि जुटिछुटिजुटे ॥ तहँ लरि लरि यहिभांतिह्वै अचेतागिरि
गिरिलसे । लहि लहि अनुपम कांति जिमि दहि दहि पुष्पतरु
लसे ॥ जयत्सेन तबजाय लयोपौरवहि सुरथपर । उतसहदेव
सचाय चेदिपतिहि रथपैलयो ॥ माहेश्वरी ॥ तिहिसमय लहि नर-
पतिहि सों अभिमन्यु ह्वै गरवित खनो । नृप कोशलेश बृह-
द्वलहि हनिवाण कीन्हों अनमनो ॥ शरपांच हनि फिरि बीस
शर नृपबृहद्वल तेहि हनतभो । अभिमन्यु तेहिशर आठहनि
तब काटिधनुशर हनतभो ॥ गहि आनधनु नृप बृहद्वल अभि-
मन्यु कहँबहु शरहने । अभिमन्यु ताकहँ हन अगणित बाण
अति अनुपम बने ॥ इमि उभयभटले विशद विक्रम बितरि
अति संगर करे । सब सुभट यहि बिधि करे अतिशय युद्ध अ-
ति अमरषभरे ॥ दोहा ॥ जिन जिनसों भिरणी भई तेतेभट तेहि
ठौर । कीन्हें अद्भुत युद्धतहँ बूझिलेहु करिगौर ॥ अर्जुन अग-
णित भट मरदि प्रतिद्वन्दिन बिचलाय । सहित शिखण्डीभी-
ष्मढिग आयो दलहि दबाय ॥ तेहिक्षणमें भगदत्त नृप गजा-
रूढ़ भटउद्ध । जायशीघ्र आड़त भयो त्यागिभीमसों युद्ध ॥
सोरठा ॥ दयो शरनसों छाय प्राग्ज्योतिष पति पार्थकहँ । हन्यो
पार्थ दृढ़घाय तेहि बहुशर सबकाटिशर ॥ चौपाई ॥ तहँ भगदत्त
भूप भिदि लहिदुख । रहिनहिंसको पार्थके सन्मुख ॥ गजचला-
य जियबे कि रीतिसों । जाय भिरतभो द्रुपद नृपतिसों ॥ पार्थ
शिखण्डी सों तब सादर । कह्यो चलौभीषम पहँ सादर ॥ तेहि
क्षणमें इतके बहुयोधा । भिरे पार्थ सों करिअवरोधा ॥ माच्यो
घोरयुद्ध तहँ राजा । कटे असंख्यन भट सहसाजा ॥ भीषम के
बध रक्षण लागी । लसे सकलभट संशयत्यागी ॥ युद्ध युवाभट
खेलनहारे । प्रणसमभीषम सुख दुखद्वारे ॥ तेहि क्षण भीषम

गौरवलीन्हें । भूप सुनहु अति विक्रम कीन्हें ॥ चौदह सहस सुभट बधिडारे । अगणित गजहय सुरथ बिदारे ॥ तजि पाण्डवन भूपतेहि पलमें । तजे धीरसब भट वहिदलमें ॥ अस नहिं एकरह्यो उतकोई । उवरत गुणै आपुकहँ जोई ॥ नृप तेहि समय शिखण्डीविनुडर । हनेभीष्म कहँ तीक्षणदशशर॥ तब भीषम तिहि लखोतिरीछे । युवति बिचारिन बधिबोईछे ॥ कहो पार्थ नृप सुत सों तेहि क्षण । अब बढ़ि बधौभीष्म कहँ गहि पण ॥ नहिं तुम बिनु यहि दलमें चायक । है कोउ भीष्महि बधिबे लायक ॥ यह सुनि सुभटशिखंडी बढ़ि कै । गरजो भीष्महि शर सों मढ़िकै ॥ दोहा ॥ तृणसमान तिन शरनकहँ जानिभीष्म अनखाय । तोमर शर भल्लान सों दयो पार्थकहँ छाय ॥ मण्डल सम कोदण्ड करि बरषि बज्र समबान । अगणित हय गज सुभट बधि पूरो प्रलय महान ॥ तिहि क्षणपाण्डव सैन सह धरि धीरज करिकोप । बढ़ि भीषम सों भिरत भे गहिबधिबे कीचोप ॥ सोरठा ॥ परदल मधितेहि काल लसो भीष्म अस्त्रन सहित । जिमिलहि कै तरु जाल ज्वलित ज्वलिन ज्वालन सहित ॥ वसुकला ॥ तहां तिहि याम । बली भट आम ॥ दुःशासन कर्षि । सुआयुध वर्षि ॥ असंख्य रथीन । कियेरथहीन ॥ अनेकरथान । अमानवबान ॥ किये तहँगाजि । हतेबहु वाजि ॥ लख्योतेहिठौर । मनोयमऔर ॥ धनंजयदेखि। भिरो तबलेखि ॥ उभयभटउद्ध । किये अतियुद्ध ॥ दोहा ॥ लरि मुहूर्त में फालगुण भूपजीति तहँताहि । सहित शिखण्डीभटन सह चलो भीष्मपहँ चाहि ॥ भीषमके भुजबलबिशद के पनाह में आय । रहि बढ़ि मुरि रहि बढ़ि बहुरि सहै दुशासन घाय ॥ सोरठा ॥ तेहि क्षण भीषमपार्थ भट समूहसों लरत हे । द्रुपदपुत्र गुणिस्वार्थ बर्षत होशर भीष्मपहँ ॥ चौपाई ॥ भीषमसहै तासु शर कैसे । मैगलमत्त बारि भरिजैसे ॥ इतके सब सुभटन सों

ताक्षन । कुरुपति कहे शोचयुत करिमन ॥ बढ़ि बढ़ि लरौंपार्थ सों भिरिकै । सादर बधौ शिखंडिहि थिरिकै ॥ सोसुनि सबभट संशय त्यागी । भिरे पार्थ सों नृपहित लागी ॥ तहँ इतकेसुभटनको रक्षण । भीष्मकरत हे हनिपर पक्षण ॥ अंग बंगकालिंग सुरथ के । कोकण कैकयआदि नगरके ॥ सकल दिशनके नृप उमदाने । भिरेपार्थ सों अमरष साने ॥ दिव्य शरन सों पारथ क्षणमें । सदल तिन्हें जीतेतेहि रणमें ॥ अगणितहय गजभट बधिडारे । अगणित भगेन साथसिहारे ॥ तिहि क्षणपारथसुभट अमाना । सधनुसरथक्के चक्रसमाना ॥ नृपसमूहबधिसहित समाजा । सबथर पूरिबाण सुनि राजा ॥ दुश्शासनकहँ हनि वहुबाना । तुरग सारथिहि बध्यो अमाना ॥ नृप विविंशतिहि हनि वहुशायक । कीन्हों विरथ भटनको नायक ॥ हनि वहु शायक शल्य नरेशहि । अरुविकर्ण कृप सुभट सुभेशहि ॥ कीन्हों बिरथ मारिसब सूतन । अरु सुदेशके हय मजबूतन ॥ क्कै ह्वै बिरथ भागिते योधा । गये दूरकढ़ि तजिअवरोधा ॥ दोहा ॥ महारथिन कहँ जीति तहँ गयेदिवस युगयाम । तरुण तरणि सम दुसहभो पारथ सुभट ललाम ॥ शर किरणन सों करषिभट शास्यनको रसधीर । बर्षावतभो रुधिरजल रविसमपारथबीर ॥
इतिभीष्मपर्वणिदशमदिनयुद्धयुगयामसमाप्तिर्नामद्वात्रिंशोऽध्यायः३२ ॥
रोला ॥ उभय दिशिके भटनको तहँ लख्यो करतब जौन । गूंग कैसो स्वप्नअब नहिं जात भाषो तौन ॥ चित्रसेन विकर्ण कृप अरु शल्य तो सुतवीर । विरथ ह्वै दुरिआय फिरि चढ़ि सुरथ पै रणधीर ॥ धनुष कर्षन बाण वर्षत जायफिरि तेहिठौर । लगे मर्दन पांडवीदल गहे अनुपम डौर ॥ व्यथित ह्वै तेहि समय परदल लसतभो यहि भाव । लसै बरधित सरितमें जिमि बायुबश परिनाव ॥ वीर भीषम विरचि अविरलसेततजि शार भूरि । रुण्ड करपग मुण्ड सों रणभूमि दीन्हीं पूरि ॥ पार्थ

आदिक सुभटउतके बर्षि आयुध सर्ब । बधे अगणित सुभट गज हय जूहते तेहि पर्ब ॥ सुभट सिगरे दुहूंदलके जीविताशा बारि । घोर संगर किये लैलै नाम टेरिप्रचारि ॥ भीष्मपै वै चले इतशर आड़िबे के हेत । डरैंनाहिं नाहिं टरैंमारैं मरैं रचि शरसेत ॥ दोहा ॥ तेहिक्षण भीषम रामकी दई शस्त्र बिधिसर्ब। ह्वै ताड़ित शरपातसों प्रगट कियो गाहिगर्ब ॥ पांच हजार रथीवधे बधेसहस्र नरेश । हय पैदर चौदह सहस सहस मतंग सुभेश ॥ मारे सात महारथी अरु बिराटको भाय । शतानीक तेहि बधतभो मारिवाण दृढ़घाय ॥ जेनृप पारथके अनुग बढ़ि आये सहसैन । तिन्हैं मारि यमपुर दयो भीष्मबीर जगजैन ॥ सोरठा ॥ इमि हति सुभट समूह चमूमध्य बिलसत भयो । तहँ उत के भटजूह लखि न सके दिशि भीष्मकी ॥ चौपाई ॥ भीषम को इमि बिक्रम देखी । कहे पार्थसों प्रभु अवरेखी ॥ तो दल मरदि भीष्म रणधीरा । लसत सैनमधि अनुपम बीरा ॥ बधौ ताहि अति बिक्रम करिकै । तौ जय लहौ सिन्धुरण तरिकै ॥ तुम बिनु आन न सुभट अमाना । सहि जो सकै भीष्मकर बाना ॥ यहसुनि पार्थ मारि शर चीन्हें । सरथभीष्मकहँ गोपित कीन्हें ॥ तहँभीषम सिगरे शरतासू । काटि दये बाणनसों आसू॥ तिहि क्षण धृष्टकेतु धनुधारी । सहदेव नकुल भीम रणचारी ॥ चेकितानअरु द्रुपद नरेशा । धृष्टद्युम्न सात्वकि भट वेशा ॥ पांचभायकेकयपति राजा । अरु बिराट नृप सहित समाजा ॥ कुन्तिभोज हैडम्ब सोहाये । द्रौपदेय सौभद्र गनाये ॥ सुभट सुशर्मादिक तहँ लरिकै । भीष्म बाण सागरमें परिकै ॥ बूड़त हे व्याकुलता गाहिकै । तरे पार्थ बल बोहित लहिकै ॥ धारिधीरज जय सों अनुरागे । ह्वै सरोष रण बिचरन लागे ॥ पारथ सों रक्षित भयहीना । रथी शिखंडी सुभट नवीना ॥ बिगतभीति बिक्रमसों सरस्यो । शर समूह भीषमपै बरस्यो ॥ सुभटनसहित

पार्थतेहि क्षनमें। चल्यो भीष्मपहँ गर्वित मनमें ॥ दोहा ॥ चेकितान सात्वकि द्रुपद धृष्टद्युम्न सहदेव। चलेभीष्मपहँ हनत शर नकुल विराट सुभेव ॥ द्रौपदेय अभिमन्यु ये वर्षत शायक भूरि। भिरे भीष्मसों प्रबलभट महा क्रोधसों पूरि ॥ इनसबके अगणित विशिख काटि भीष्मरणधीर। सहि असंख्य शर शर वरषि वधे अनगिने बीर ॥ सोरठा ॥ होतभयो तेहिकाल उभय ओर के भटन सों। कठिन युद्ध बिकराल पृथक्पृथक्को कहिसकै ॥ भुजंगप्रयात ॥ धनंजय सुनो भूप तेहां सुयोधा। गुणीअस्त्रओ शास्त्रमें जो सुबोधा ॥ मढ़ो भूरि नीहारको भानु जैसे। इतै के सुयोधानको टारितैसे ॥ वली दीहकै कै शिखण्डीहि आगे। चल्यो भीष्मपै छोह औ मोह त्यागे ॥ अनेकै सुयोधान के बाण आड़े। घनेबाण सों भीष्मको गातमाड़े ॥ दोहा ॥ तिहिक्षण सेनापति प्रभृत उतके योधासर्व। अगणित आयुध भीष्म पहँ डारेगहि गहिगर्व ॥ तिनसों मर्दित ह्वै सुभट भीष्मभूप तेहि काल। नेकु जनायो नहिं व्यथा भयोकोपि बिकराल ॥ चौपाई ॥ तेहि क्षण भीषमधीर धुरीना। रोप्यो प्रलयकाल कालीना ॥ चाप ज्वलन शर ज्वाल महाना। पर चतुरंगी जगतसमाना ॥ दिव्य अस्त्र मारुत समघोरा। करि दीन्हीं व्यापित चहुँओरा ॥ रुधिर वृष्टि तेहि दिनकी बर्षा। सदृशभई अतिशय उतकर्षा ॥ क्षण परदल मधि क्षणनिज दलमें। क्षणदलसे भीष्मतेहिपल में ॥ धुनि धनु नेमिअस्त्र वर्मनकी। महत गरजबारिद शर्मन की ॥ यहि विधि प्रलय काल समकरिकै। बध्यो असंख्यनसुभट विचरिकै ॥ भीम धनंजय द्रुपद बिराटहि। सात्वकि धृष्टद्युम्न भटडाटहि ॥ हनि अगणित शर बेधि प्रचारे। ते अगणित शर शर सों वारे ॥ तेषट भट दशदश शर चीन्हों। मारि भीष्मकहँ बेधित कीन्हों ॥ भीषमको तन शर सों मढ़िकै। शर झरि कियो शिखण्डी बढ़िकै ॥ हनि क्षुरप्रशरपारथ तबहीं। का-

ट्यो धनुष लख्यो सो सबहीं ॥ सो साहिसके न शल कृतबर्मा । द्रोण जयद्रथ शल्य सुपर्मा ॥ भूरिश्रवा कठिन रणचारी । अरु भगदत्त विदित धनुधारी ॥ दिव्यशरनकी वर्षा करि करि । भिरे पार्थसों अति रिस धरिधरि ॥ मारुमारुधरु मारु पुकारत । गे परदलमधि अतिभय भारत ॥ दोहा ॥ सो लखि सात्वकि भीम अरु द्रुपद बिराटनरेश । अरु अभिमन्यु घटोत्कचधृष्ट-द्युम्न शय वेश ॥ द्रोणादिक भटसातसों भिरिये सातौं बीर । घोर युद्ध कीन्हों तहां सत्रदुर्मद रणधीर ॥ रक्षित पारथसुभट सों अभय शिखण्डीतत्र । अधनु भीष्मपहँ बराषिशर ध्वजका-ट्यो हनि पत्र ॥ गहोभीष्म तब और धनु सोऊकाटो पार्थ । ग-हत मात्रइमि बहुत धनु काटे गुणिकै स्वार्थ ॥ सोरठा ॥ सुनो भूप तेहिकाल भीषम अतिशय क्रोधकरि । मारीशक्तिबिशाल तेहिकाट्यो शरपांच हनि ॥ महिवरी ॥ तहँकटे बहुनिजधनुषपर-बल शक्तिव्यर्थ निहारिकै । इमिभये मनमें गुणतभीषम शोच अति बिस्तारिकै ॥ हमएक धनु सों पांडवन कहँ बधन शक्ति अमान हैं । परमरैं बै किमि जासुरक्षक कृष्णप्रभु भगवान हैं ॥ यहि हेतु वे सब अवधहैं अरु द्रुपद सुत तिय भाव सों । नहिं लहब उनसों जीति नाहक लहब दुखशर घावसों ॥ पितुदयो जो बरदान मोहिं स्वच्छन्द मरण सुतोषिकै । अबआजुआयो समय सो अवमरैं हम मन मोषिकै ॥ यह समुझि आशयभी-ष्म की गगनस्थ बसुऋषि कहतभे । तुम सुने सोमत श्रेष्ठयह सुनि भीष्म आनँद गहतभे ॥ यह सुनो भीषम सुबुधिकै हम सुनो सुमुनि प्रभाव सों । तब बजी दुन्दुभि गगनमें सुरझरे सुमन सुचावसों ॥ तेहि समय भीषम ज्ञानबर तहँ भये मृदु रिस त्यागिकै । लखि सह शिखण्डी पार्थ भे अति प्रबलरिस सों पागिकै ॥ बहुशर शिखण्डी हने भीषम तिन्हैं मृदु तृण समगने । तब पार्थधनु गांडीवकहँ टंकारि बहुशायक हने ॥

दोहा ॥ तिहि क्षण बहुभट वज्रसम हनेअनगिने वान । तिनपै शर वर्षत भयो भीषमवीर अमान ॥ द्रुपद तनयके शरनसों भीष्महिं अव्यथित देखि । वज्रसदृश अगणित विशिख हने धनंजय लेखि ॥ फिरि काटत भो भीष्म को धनु क्षुरप्र शरमारि । काटि धनुष अगणित विशिख मारेमरण विचारि ॥ सोरठा ॥ तब भीषम धनुआन गहितिहि मारे तीनिशर । हनि क्षुरप्र दरवान पारथकाटो सोउधनु ॥ चौपाई ॥ इमि जेजेधनु भीषम धारे ।तेते पारथ द्वैकरिडारे ॥ काटिकाटि धनु अगणितबाना । हन्योभीष्म कहँपार्थअमाना ॥ अतिवेधितभीषमतेहिक्षनमें । कह्योदुशासन सों गुणि मनमें ॥ अमर असुरकहँ जीतनलायक । पारथ हनत वज्रसम शायक ॥ बाणसहस्रनसों सम्भगातहि । वेधत उपलपात जिमि पातहि ॥ पारथहने बाणनहँ जिमिजिमि । कहतभये भीषमइमि तिमितिमि ॥ पारथकेयेशरअनियारे । हैं नशिखण्डी भटके मारे ॥ वज्र सारसम गरुतापूरे । ममगातहि वेधतजेरूरे ॥ ते येशर अर्जुनके डारे । हैं नशिखण्डी भट के मारे ॥ जेमम गातहि वेधत तैसे । वरमाघमहिं सँगवाजैसे ॥ अतितीक्षण अर्जुनके येहैं । नहिं नहिंबाण शिखण्डी केहैं ॥ कालदण्ड समलागत जेते । नहिं शिखंडिके अर्जुनके ते ॥ रुद्र शूलसम जेशर चोखे। अरु कोपित फणिपति समजोखे ॥ अतिअविरल मम तनमेंलागत । जिनके लागत धीरज भागत ॥ तयेशर अर्जुन के सिगरे । नहिं शिखंडि के लागतनिगरे ॥ जयेलागि ममजीवहि करषत । तेयेबाण धनंजयवरषत ॥ दोहा ॥ आयुध सिगरे भटनके तिमिनाहिं व्यथवत तात । जिमि पारथके वज्रसम वर बाणनकेघात ॥ इमिकहि भीषमपार्थकहँ मारीशक्तिकराल । तीनि बाणसों पार्थतेहि काटिदयो क्षितिपाल ॥ तिहिक्षण इत के भटनसों उतके सबभट जूटि । लरतरहे नहिं भीष्मपहँ जाय सक्यो कोउछूटि ॥ सोरठा ॥ तबतहँ भीषम कोपि खड्ग चर्मवर

गहतभे। मनमें ध्रुवप्रणरोपि मरिबेको जयलहनको ॥ लखिहनि अगणित वाण विदित धनुर्द्धर पार्थभट। काटिचर्म तनुत्राण शतधा कीन्हो निमिष में ॥ चौपाई ॥ नृपति युधिष्ठिर यहगति देखी। अति प्रसन्नता सों हियभेखी ॥ कह्योभटनसों अनतन थिरहू। सादर बढ़ि भीषमसों भिरहू ॥ सोसुनिकै सबभट धनु करषत। चले भीष्मपर आयुधबरषत ॥ जिमि सुरपति कोशासन लहिकै। व्रजपैचले मेघमुद गहिकै ॥ तिमि इतके सब योधा फिरिफिरि। सिमिटि लरैंफिरितिनसों भिरिभिरि ॥ घोर युद्धमाचो तेहिथलमें। कटी असंख्य वाहिनीपलमें ॥ पूरिमांस शोणित सों धरणी। भई भयावनि विशद बिवरणी ॥ तिहिथर पार्थ विदित धनुधारी। करिअद्भुत विक्रम रणचारी ॥ मारि असंख्यनभट जगजेना। दई बिडारि तावकी सेना ॥ जे इतके वरणेवर योधा। तिन न तजेतहँ को अवरोधा ॥ पतित मतंगन समबल आगर। विहरेलहि अनुपम रणसागर ॥ मारुमारुधुनि अति शय घोरा। रह्योपूरि तेहिक्षण चहुंओरा ॥ सहितशिखंडिपार्थभट लायक। वर्षतभयो भीष्मपहँ शायक ॥ तेहि क्षण भीषम सुभट सुमेधा। रह्यो न कहुंतिलभरि बिनुवेधा ॥ भिदिभो भीषमको तनतैसो। लसत कुम्भ झिझियाको जैसो ॥ भीष्म सुबुधिहे ताहू क्षनमें। भूपति रह्योन बिक्रम तनमें ॥ दोहा ॥ इमि बेधितह्वै भीष्मके भयेशिथिल सबगात। मूंदिगयेचष तपित ह्वै छूटिपरो धनुतात ॥ रहे कछूदिन भीष्मतब व्यथित दशा यह पाय। प्राचीदिशि शुचि शीशकरि गिरे ईश्वरहि ध्याय ॥ पतत भीष्मके होतभो हाहा धुनिसबठौर। गिरोकेतु सबभटन को सुबुधिनको शिरमौर ॥ इते लगेहे भीष्मके तनमाधि दीरघ बान। जिनपैराहिनाहिं भूमिकहँ परस्यो भीष्मसुजान ॥ तेहिक्षण कीन्होंभीष्ममहँ दिव्यभाव आवेश। भई प्रकम्पित मेदिनीघनबरषे तेहिदेश ॥ सोरठा ॥ रहि मूर्च्छित क्षणएक फिरि सचेत

ह्वै भीष्मतहँ। ज्ञाता शास्त्र विवेक सुने सुरनके वचनये ॥ दक्षि-
णायन सुभान शुचि न कालतन तजनको। यहमुनि भीष्म
सुजान कहोनकछुदिनतजव तन ॥ गेला ॥ जानिभीषमकोपतन
सुरसरितकरि अनुमान । तहांपठयेऋषिनकहँ तेचले हंससम-
मान ॥ हंसरूपी आयते ऋषिदेखि भीष्माहिंतत्र । करिप्रदक्षिण
चलत ऐसे कहनलागे तत्र ॥ दक्षिणायन भानुहैं यहि समय
माहिं सुजान । भीष्मकैसे देहतजिहैं वीरवर बलवान ॥ भीष्म
आशय समुझितिनको कहतभे इमितात । दक्षिणायन सूर्य
तौलगि तजब नहिं हमगात ॥ पिता हमको दयोवर स्वच्छन्द
मरण अबाध । समय लहि तन तजबकरि तेहि वचनको
अवराध ॥ भीष्मको लखि पतन पाण्डव सैनसह हरषाय ।
कियो पूरित शंखधुनि जयदुन्दुभी बजवाय ॥ भये अतिशय
व्यथित सब तो तनयसैन समेत । रहे ठगि नहिं सके करि
करतव्य कछु जयहेत ॥ वचन यह सुनि कहतभेधृतराष्ट्र नृप-
ति सशोक । तबहिं हम यहगुणो व्यवहाति गयो बलवृतओ-
क ॥ जबहिं भीषमकहो सुवनि शिखंडि सों न कदापि । लरब
हम तजिहियो अतिभृत विषाद बृताहि उथापि ॥ भीष्मकोसु-
नि मरण मोहिय वज्रसदृश कठोर । नहीं दरकत हाय यासों
कौनकष्ट अथोर ॥ रामसों लरि बहुत दिन नहिंगयो हाति जो
बीर । ताहि मारयो द्रुपद सुत हनि होति अतिशयपीर ॥ भीष्म
जब शर तल्पपरपरि लसे तदुपरि जौन । भयो सहित विधान
अवइत कहोसंजय तौन ॥ भूप के ये वचन सुनिकै कहेसंजय
बैन । गिरत भीष्महिं देखिइतको भयो चूरणचैन ॥ उतैपूरो
मोद सों थरलसो तेहिक्षणतात । कुमुद कंजन सहितशरजिमि
होत लहि परभात ॥ धाय कौरव सकल पांडव आय भीष्महिं
घेरि । तजत चषजल भये ठाढ़े शोकसों मनमेरि ॥ सिद्धचारण
ऋषय मानव गहे शोच महान । करीअस्तुति भीष्मकी करि

कर्मकृत गुणगान ॥ भीम आदिक भटनसों कर्णादि भटमनमो-
रि । धारि तीक्ष्ण लाज तहँ नहिं सकेइक्षणजोरि ॥ पायशासन
भूपको तेहि समयसुरथ चलाय । गयो दुश्शासन रहेजहँ द्रोण
लरत सचाय ॥ द्रोणसों भो कहतनिपतन भीष्मकोसुनिताहि ।
शोच क्षणक अचेत रहि फिरि चेति इतउत चाहि ॥ युद्धकरिबो
वारि भटन समेत आयुध त्यागि । द्रोणआये भीष्मके ढिगमन-
हत दुखसों पागि ॥ दूत सबथर पठै पांडवकियो युद्ध निवृत्त ।
सकल पुरुषप्रधान आये तहां शोच प्रवृत्त ॥ प्रजापति के नि-
कट सुरगण सदृश भट समुदाय । लसे शरशय्यास्थ योगी
भीष्मके ढिग आय ॥ देखि प्रांजलि खरेकुरु पाण्डवनकहँबि-
लखात । भीष्मबूझो कुशल सब सों बचन कहि अवदात ॥
कह्योफिरि मम शीश अधको लंबि अति दुखदेत । देहु शुचि
उपधान तिहि अवलम्ब ताके हेत ॥ सुनत तोसुत दीर्घमृदु उप-
धान शुचिसँगवाय । देन चाहो भीष्मतेहि लखि कहतभे अन-
खाय ॥ सुनो ऐसी बीरशय्याको न यह उपधान । भाषिइमितहँ
देखि पार्थहि कह्योकहि अनुमान ॥ देहु तुम उपधान पारथ उ-
चित जैसोअत्र । बचनयहसुनि पार्थ शरधनु पाणिमेंकरितत्र ॥
गरो गदगदकरें जल सों पूरि आयत नैन । देहु आज्ञा करों
सोमें कहेऐसे बैन ॥ बहुरिआज्ञा भीष्मकी लै मंत्रि तीनिसुबा-
न । योजि धनुमें त्यागि दीन्हों बिरचि शुचिउपधान ॥ तूलके
समपायके उपधानभीषममोदि । कहेबहुतप्रशंसि पार्थहिनिरखि
के सबकोदि ॥ जोन देते पार्थ तुम उपधान शय्यारूप । पावते
तो शापहमसों हरण सत्वअनूप ॥ नृपन सों फिरिकहे हमइमि
रहबजों लगिसूर । जाइहैं नाहिं दिशाउत्तर शुभद आनँदपूर ॥
इतेमें बहु भिषजआये शल्य उधरण हार । लिये निजहथियार
औषध जासुसगुण उदार ॥ तिन्हें लखि तो तनय नृप सोंकहे
भीषम बैन । इन्हें धन दै मुदित करिकै बिदा करहुसचैन ॥ पाइ

ऐसी दशा अबकछुभिषजको नहिं काम । पालिक्षात्र सुधर्म अब हम लही गति अभिराम ॥ खोदि परिखा चहूँदिशि इत गातरक्षक राखि । जाहुनिज निज सिविर प्रति सब मोहमनको नाखि ॥ शरन सह मम दग्धकरियो भूप सुनि यह बात । किये धन दै बिदा सिगरे भिषज गणको तात ॥ आदि परिखायतन सब करवाय नृपति अखर्व । तीनि तीनि प्रदक्षिणा करि नौमि बिधिवतसर्व ॥ भीष्मकीसुमहानताको करत वर्णनमोहि । जाय निजनिज सिबिरप्रति करतव्यकीन्हेंजोहि ॥ भीष्मभटकेपतन सों अति मुदितपाण्डवयत्र । रहेकेशवकहोतिन सोंजायनिशिमें तत्र ॥ सुरासुरहू सों अजेयसुवीर योधापर्म । भीष्मजूझे आजु सो तो तेजसों हेधर्म ॥ कहेतबनृपधर्म प्रभु तो कृपासोंसबहोत । तरत भवनिधि जपतजेतो नाम करण उद्योत ॥ जगतउतपति करण पालन हार कृत संहार । होति मम हित चरत महिहि कहा यह उपचार ॥ सत्यजो तुम कहेऐसो भाषि प्रभु सुखदाय । जातभे निज सिविर कहँ सब भांति सुख सरसाय ॥ रजनिबीते उभय नृप अरु सकल पुरुषप्रधान । गये जहँ शर तलपपै हे भीष्म धारे ध्यान ॥ नारि नरजन नगरसों तहँ आय लहि दु-ख पूर । भये बरषत भीष्मपहँ स्रक लाज चन्दन चूर ॥ शस्त्र कवच बिहीन नृप अरु भटनको समुदाय । बन्दि भीष्महि भ-ये बैठत महत दुखसों छाय ॥ भीष्म तब शरघात वेदन ग्रहण करि चपखोलि । देहु पानी पियनको इमिकहे धीरे बोलि ॥ वा-रिशीतल भोज्य अनुपम तनय तो मँगवाय । देन चाहे भीष्म तबइमि कहतभे अनखाय ॥ बाणशय्या प्राप्त हमहिं न उचित मानुष भोग । देन चाहतल्याय जोबिनु लखे उचितप्रयोग ॥ भाषि इमितहँकहो भीषम कहां अर्जुन स्यात । पार्थ उठिकर जोरि बोले देहुआज्ञा तात ॥ भीष्म बोले पार्थतो शरघातसों ममगात । तपित वेदन दुसह पूरित वदन सूखतजात ॥ देहु

पानी यथा बिधिसुनि पार्थ धनुष चढ़ाय । सुरथपै चढ़ि करि प्रदक्षिण दाहिनी दिशिजाय ॥ धनुष कहँ टंकारिकै परजन्य अस्त्र लगाय। तानिश्रुतिलों त्यागिवेध्यो भूमिकहँ दृढ़घाय ॥ प्रगटितासों भीष्मके मुख परी अमलउदार ।सौरभित अति परम शीतल अमृत सम जलधार ॥ पार्थको यहअति अमानुष कर्म अद्भुत जोय । साचरज ह्वै ह्वै रोमांचित त्रसे इत सबकोय ॥ अमृत सम जलपान करिकै तृप्तह्वै गांगेय । करि प्रशंसा पार्थकी इमिकहे बचन अमेय ॥ पार्थतुमसों कौन जगमें धनुर्द्धर तपधाम । नारदसों हम सुनेतो व्याख्यान सर्ब ललाम ॥ तेजवतमें श्रेष्ठरबि जिमि बिहँगमें बिहगेश। धनुषधर में तथा हौतुम श्रेष्ठबीर बिशेश ॥ रामहम कृपब्यास संजय बिदुर द्रोणाचार्य । कहे बहुबिधि सुनोनहिं धृतराष्ट्र सुवन अनार्य ॥ कछूदिनमें तौनभटसह बन्धुनृप समुदाय। सुनहुपारथ समर महिमधि गिरीहवैहतकाय ॥ भाषिइमिदुर्योधनहिंलखि दुखित बिवरण रूप । कहेतासों भीष्मत्यागो क्रोध हेकुरुभूप॥ करत पारथ धनुष बिधिमें जौन अद्भुतकर्म । तासुकर्ता कौन जगमें गहेक्षात्र सुधर्म ॥ जितेदिव्य सुअस्त्रहैं तिन सर्बको ज्ञातार । एकपारथ जगतमें कैकृष्ण जगकरतार ॥ सर्बबिधिसर्बज्ञ पारथ सर्बथा जगजैन । सुरासुर गंधर्वहूसों जेयकबहूँहैन ॥ सुनोतात ताततासों मिलौताजि सबबैर । निरखि इनको कर्म त्यागो गर्बगुरताधैर ॥ बन्धुनृपहतशेष सबनाहिं जाहिजौंलगि मारि । करौतौलगि पांडवनसों मेलनीति बिचारि ॥ हाइ अब मम मरणलों यहियुद्ध बरकोअन्त । बचे अबतक बचेजेते सदल सबक्षितिकन्त ॥ हमैंयहमत रुचतहै कल्याणकोकरतार । औशि करिबे योगहै गुणिशुद्ध शुभउपचार ॥ देहुआधोराज्य उनको इन्द्रप्रस्थ सुधाम । हस्तिनापुर रहौतुमसब पूर्बवत ह्वै आम ॥ भाषिऐसे बचन भीषम शल्य प्रतपितगात । मूंदिचष

फिरिरहे चुपह्वै योगविधिगहिताल ॥ परमसुखद सनीति ऐसे भीष्मकेयेबैन । रुचेनहिं तोसुतहि जिमि म्रियमानपथ्यगहैन॥ दिव्य योगी भीष्मकहँ तब निरखि ध्यानावस्थ । गयेसब दुहुं ओर निजनिज सिबिर स्वस्थ अस्वस्थ ॥ दोहा ॥ तबभीषमको चिन्तिकै अनुपम दिव्य प्रभाव । कछुशंकितह्वैकै तहां आयो करण अचाव ॥ भीषम के ढिगभो खरो महत मोहसों मोहि । चारुजन्न शय्यास्थप्रभु कार्त्तिकेय समजोहि ॥ महाबाहुहे भीष्महे हे योगीकुरुश्रेष्ठ । प्रभु निरखौ राधेयमें कीजैकृपायथेष्ट॥ यहसुनि भीषम नेहयुत एक सुपाणि पसारि । कर्णहि अंकलगाइकै कहो रक्षकन टारि ॥ सोरठा ॥ वत्सन तुम राधेय नारद व्यास यहहै कहे । सूर्य सुवन कौन्तेय तुम सुवननसुत सूतके॥ जयकरी ॥ हौतुमदान शीलमतिमान। क्षात्रधर्ममहँ प्रौढ़महान॥ अर्जुन सदृश धनुर्द्धरवीर । सर्व अस्त्र ज्ञाता बरवीर ॥ काशीपुरमें नृप समुदाय । तुमजीते धनुविधि शरसाय ॥ जरासंध अतिशय बलवान । भयो न रणमें तुम्हैंसमान ॥ हौतुम सर्व भांति गुणवान । इतोदोषहो करताम्लान ॥ कौरवअरु पांडव मेंबीच । तुमजातन हेगहिमतनीच ॥ मंत्र करत हेवर्द्धन वैर । कहतरहे कटुवचन सघैर ॥ सोयह सूतसंगकोदोष । होतोमधि अवगुणको कोष ॥ ताते हम निदरतहैं तोहि । कुलभेदन कृत अनरथजोहि ॥ अबतुम जो इतआये हाल । ताते हमप्रसन्न यहिकाल ॥ हम अबकहैं सुनो तुमतौन । करौकाज कुलरक्षक जौन ॥ पांडव अरु तुम सोदरभाय । मिलोप्रेमसों वैरविहाय॥ तुम्हरे मिलतमिलैंगे सर्व । मिटिहिनाशको कारणखर्व ॥ मम वध प्रभृत भारतीयुद्ध । राखिप्रसिद्ध मिलोह्वैशुद्ध ॥ यहसुनि कह्यो कर्णप्रणवान । तातकहे तुमसत्यनआन॥ दृढ़व्रतीयोगी मतिमान । कस न कहौ अस सहित विधान ॥ दोहा ॥ पर यह सुनियेत्यागमम कुन्तीकीन्होतात । वर्द्धितकीन्हो सूतनृप दियो

मोद अवदात ॥ यथा पाण्डवनके परम हितकेशव विख्यात। तिमि हम हित कौरवनके हैंप्रसिद्ध यहबात ॥ महिवरी ॥ यह बात पालन हेत हमकहँ औशि करिबो उचितहै । धन पुत्र तन तिय त्यागिसों कुरुनाथकहँ जो रुचितहै ॥ प्रभु होत जो भवितव्यसो नहिं टरतटारे होतहै । सबचरितसो अनुक्रमण गहि भवितव्य करजो सोतहै ॥ हमगुणत पाण्डव सर्व सबसों समरमध्य अजेयहै। है एक हमसों जेय जगमें यदपि प्रबल अमेयहै ॥ अब वैर करब निवृत्त नहिं ममसुवश हमसति कहतहैं । ध्रुवभयो तिनको चहै फल जे होत असगुण महतहैं ॥ हमकरब संगर पार्थसों तुम देहुशासन मोदिकै । तो कृपाते जयलहब अरिदल मध्यप्रविशिबिनोदिकै ॥ कटुवचन बहु अज्ञानवश हम कहे तुमकहँ तातजे । तेक्षमहु सब पितु क्षमत जिमि शिशु कहत अनुचित बातजे ॥ सुनि कहे भीषम कर्णसों इमि सत्य जो यह तुमकहे । नहिं टरति भावी लरौ ताते स्वर्ग हित प्रणकरि अहे ॥ तजिशङ्क सम्मुख समरमें लरि मरबसोगति पर्म है । लरिकरौ विक्रम यथारुचि यह क्षत्रियनको धर्महै ॥ दोहा ॥ इमिकहि भीषममूंदि चष भे फिरि ध्यानावस्थ । नौमि कर्णरथ चढ़िगये जहँ कुरुनाथ अस्वस्थ ॥ भीष्मपर्वमेंनृपभयो यहिविधिदशदिन युद्ध । पढ़िहिसुनिहि जो याहिसो लहिहि चारुपदशुद्ध ॥ सोरठा ॥ मूको बांचै बेद पंगु तरै गिरि ध्यायजेहि । अगमजासु शुचिभेद तासु कृपालहि इमि कहे ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबंदीजनकाशीवासिगोकुलनाथात्मजेनगोपीनाथेनकाविनाविरचितेभाषायां महाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिदशमादिन युद्धवर्णनोनामत्रयस्त्रिंशोध्यायः ॥ ३३ ॥

भीष्मपर्वसमाप्तः ॥

महाभारतदर्पणे ॥

द्रोणपर्वदर्पणः ॥

दोहा ॥ नमस्कार नारायणहि करि नरोत्तमहि नौमि । वन्दि गिराव्यासहि रचत भारतभाषा सौमि ॥ जयकरी ॥ रामचन्द्र के पद जलजात । मधि बसायमन अलिअवदात ॥ पाय अमल महिमा मकरन्द । करतगान भारत शुभछन्द॥ जोश्रुति परशत सबसुखदान । करनहार सर्वज्ञ सुजान ॥ प्रभु सर्वज्ञ सर्व कृत जौन । सनधर सोईदूजो कौन ॥ जोईछितजो सोई होत। औरन करताकछू उदोत ॥ यह विचारि तजिसंशय सर्व । विरचत भाषा भारत पर्व ॥ ताकी ईहाकी अनुसार । लहव भारत्त अरणव कोपार ॥ श्रीश्री सीतापति श्रीराम । सिद्ध करत निज जनको काम ॥ दोहा ॥ पारथ के स्वारथभये सारथि परम अनूप। तेसारथ देहें बिरचि भारत भाषारूप ॥ सोरठा ॥ वन्दौं कपिवर बीर राम परमपद पारषद । मंगल मूरति धीर पारथ स्वरथ ध्वजस्थ वर ॥ सुमिरि उच्छलनि अक्ष उदधि उलंघन समयकी। भारतसमुद प्रतक्ष भाषाकरि चाहत तर्यो ॥ जनमेजयउवाच॥ चौपाई॥ जब प्रभु परमामधि मनमोये । भीषम शरशय्यापर सोये ॥ किये कहातव सहित समाजा । निज निज शिविर जाइ सवराजा ॥

वैशम्पायन मुनि यह सुनिकै। कहतभये भूपतिसों गुनिकै ॥ तिहिदिन संजय दलमधि आई। संध्याभये भूपपहँ जाई ॥ करि प्रणाम शोकाकुल भूपहि। बैठे ध्याय श्यामघन रूपहि ॥ तहँ उसास लै शोक महासों। भूपति कहत भये इमि तासों ॥ तात भयो तदनन्तर जैसो। पृथक्पृथक् अब कहु सबतैसो ॥ सुनि संजय बोलेताजि अनदै। भूपति सब सुनियेसो मनदै ॥ फिरि लरिबे कहँ अमरष भारे। उभय भूमिपति सैन सँवारे ॥ घने निशान गहगहे बाजे। बने निशान बहबहे राजे ॥ नृपतेहि समयताबकी सेना। भई बिना भीषम जगजेना ॥ जिमि अजयुद्ध वृकनसों घेरित। रक्षक बिना होइ भयमेरित ॥ बलि बिनु भयो असुरदल जैसो। भयोभीष्म बिनुतोदल तैसो ॥ तहँइत के सबभट गुणि मनमें। करण करण कीन्हें तेहिक्षनमें ॥ भीषम सदृश बिदित धनुधारी। करण बीर कर्कश रणचारी ॥ परशुराम सों धनुबिधि सीखो। सब धनु धरके पहिलेलीखो ॥ दोहा ॥ महीरथी मणिकरण तेहि कहे अर्द्धरथियत्र। भीषम सो सुनिकै करण कियो प्रतिज्ञा तत्र ॥ जौलगि भिरि पाण्डवनसों भीषम करिहैं युद्ध। हम तबलगि नहिंधनुगहब पालि प्रतिज्ञाशुद्ध ॥ भीष्म जीतिहैं पाण्डवन कहँ तोभूति बिहाय। हम भूपतिसों ह्वै बिदा बसब बिपिन मधि जाय ॥ पाण्डव बधिहैंभीष्मकहँ जोतौ लरि हमएक। मारि पाण्डवन भूपकहँ देबराज्य गहि टेक ॥ करि ऐसो प्रण दश दिवस लरोनहीं रणधीर। अब लरिकै यहि सैनको रक्षणकरो सुबीर ॥ रोला ॥ समुझि बिक्रम पार्थको गहि भूरिभीति अपार। भीष्म भटके गिरे नृपसब भये बिनु त्रातार ॥ भाषिऐसे बोलि करणहि कहेनृपति समस्त। भीष्म पारथ के सदृश तुम करणबीर प्रशस्त ॥ सिन्धु बिक्रम पार्थ कोतेहिमध्य परिहमसर्ब। होनचाहत मगन रक्षण करोतुम यहि पर्ब ॥ नृपनकी यहदशा सुनि धृतराष्ट्र नृपति अचैन। कहो यह

सुनि करणतिहि थर कहे कैसेवैन ॥ कहो संजय नृपनकेये वचन सुनि रणधीर । करण धीर अभीतवत इमिकह्यो वचन गँभीर॥ वुद्धि विक्रम शक्ति स्मृति धृतिधर्म तेज असेग । दिव्य अस्त्रन की कुशलता आदि सुगुण अनेग ॥ जासुमाधिसो भीष्मरण में गयोवधिजों तात । तौन इतभट एकको अव वाचिवो लखि जात ॥ व्रतीदेव समान कुरुकुल वृद्ध भीषमवीर । गिरो रणमें समुझियह नहिं गहत मोमनधीर ॥ भाषि ऐसो करण लागे रुदनकरण सक्षोह । तदनु नृपसव उच्चस्वर सों किये रुदन समोह ॥ वहुरिधीरजधारि ऐसो कह्यो करण सुजान । सत्य जगत अनित्य जोगिरि परो भीष्म अमान ॥ वध्यो भीष्महि पार्थ तासों भिरैगो भटकौन । सहैकिमि तेहि वृक्षउलटै गिरि-नकहँ ज्यों पौन ॥ रहे जिमि यहि दलहि रक्षत भीष्म उनसों जूटि । तथाअव हम करव रक्षण लरव उनसों ऊटि ॥ शरन सों वधि पाण्डवन कहँ देउँगो यम लोक । वधिहि हमकहँ समरमें कै पार्थ विक्रम ओक ॥ सर्व पाण्डव कृष्ण सात्वकि वृहत विक्रम भौन । जूटि तिनसों युद्ध करिकै वचिहि दूजोकौन॥ तपहि वांधत वृहत तप अरु वलहि वल नहिं आन । जीति उनसों लहव हम मन होत उत्सववान ॥ मित्रसो जो करैसङ्कट समयमें उपकार । वूझिसो हमहोव उत्रिण भूप सों यहिवार ॥ भाषि यहि विधि करणवीर सुवीर रससों छाय । वस्त्रभूषणक-वच नूतन गहत भे मँगवाय ॥ भयो धारत अस्त्रधनुष तुणीर आदि अशेष । चपल अश्वन लायरथमें लस्यो अनुपमभेष॥ पूर्ण दधि सों पात्र लखिकै दुन्दुभी वजवाय । कहतभो इमिजो-रियुगकर भीष्मके ढिगजाय ॥ करण हमहैं देवव्रत करिकृपाहेरो मोहि । कहौमंगलप्रद वचन कल्याण कारण जोहि ॥ कोपअर्जुन करणमंत्री व्यूहवितरनहार । भूप के अवकौन तुमसों अरिनको हन्तार ॥ मृगनको क्षयकरत जिमि मृगराज तिमि अरितास ।

तुम्हैं बिनु सब कौरवनको कियो चाहत नास ॥ बज्रसदृशअ-
मोघ धनु गाण्डीवको शरपात । समुझि शङ्कित कौरवी दल
तुम्हैं बिनु हे तात ॥ पार्थ के रथनेमिकी धुनि धनुषकी टंकार ।
शरनकी झरसहै ऐसो और कौन उदार ॥ लहे जय भृगुराम
सों तुम ताहि जीत्यो जौन । पार्थ तासों सकैलरि असबीर दू-
जो कौन ॥ कृपा लहिकै आपुकी हमचहत जीतन ताहि । देहु
शासन सुजय हित चित चावयुतकरिचाहि ॥ कर्णके सुनिबच-
न भीषमदेशकाल विचारि । करि प्रशंसा तासुतासों कहेसरुचि
निहारि ॥ सर्व दिशिके नृपन कहँ तुम जीति करि रणघोर । दये
करि कुरुनाथ के बशमारि सुभट अथोर ॥ बंधुसम बन्धीन सोहे
मित्र जगमें श्रेष्ठ । कहतहैं हम मुदित ह्वै तुमकरो युद्ध यथेष्ठ ॥
यथाकौरव पौत्र मम तुम तथाहौ प्रिय मोहि । होइहितकुरुनाथ
को तिमि करोबिक्रम जोहि ॥ भीष्मके ये बचन सुनिकै नौमि
कर्ण सचाय । गयो योधन सहित जेहि थर रहे कुरुकुलराय ॥
देखि कर्णहि युद्ध हित सन्नद्ध तो सुतसर्व । सहित योधनभये
मोदित बहुरि गहि बरगर्व ॥ कह्यो दुर्योधन नृपति इमि कर्ण
सों सविचार । लरैं केहिबिधि शत्रुसों अब कहौ सो उपचार ॥
कर्णयह सुनिकह्यो नृपतुम सकल भांति सुजान । आपुकहिये
समुझि अब करतव्य जौन विधान ॥ कर्णके ये बचन सुनि कै
कह्यो कुरुकुल भूप । सैनपति ह्वै भीष्म दशादिनकियो युद्ध अ-
नूप ॥ परोसो शरतल्प पर अब सैनपति करिकाहि । लरैंताहि
बताय दीजै तेजबल बुधि चाहि ॥ बिना सेनापति सयनजिमि
बिना करिया नाव । सकति नाहिं करतव्य करि बिन सूतरथजे-
हि भाव ॥ भूप के ये बचन सुनिकै कह्यो बचन सुबीर । सैनपति
के योग्यहैं इतसकल नृप रणधीर ॥ बुद्धि विक्रम धैर्य्य युत हैं
सकल सब कुलवान । रुचै ताकहँ करो सेनाधिपति सहित
विधान ॥ मांन्यसब कहँ वृद्धगुरु हैं द्रोणधीर धुरीन । रुचै

तौ तेहि करो सेनाधिपति यह मतपीन ॥ और ह्वै है सैनप-
ति तो बढ़िहि इर्षा दोष। द्रोणह्वै है सैनपति तौ सबन के
सन्तोष ॥ मंत्र यह सिद्धांत करिकै भूपनृपन समेत। करि
प्रशंसा द्रोण सों इमिकह्यो निजजय हेत ॥ तात ह्वै सेनाधिपति
तुम करहु रक्षण सैन। पाय तुमकहँ अधिप ह्वै है सैनममजग
जैन ॥ भूप के ये बचन सुनिकै कह्यो द्रोणाचार्य्य। होव हमसे-
नाधिपति तो सुयश हित हे आर्य्य ॥ सर्व विद्या शस्त्र विधिअ-
भ्यासित सब व्यवसाव। करबहमभिरि पाण्डवनसों गहे अनु-
पमभाव ॥ मारि सुभटन पाण्डवनकहँ देउँगो करि मौन। धृष्ट-
द्युम्न न बध्य हमसों प्रगट कारणतौन ॥ बचन यह सुनिमुदित
ह्वै सह नृपन सहित विवेक। भूप द्रोणहि कियो सेनाधिपति
को अभिषेक ॥ बजे अगणित वाद्यमे उत्साहयुत सबवीर। क-
ढ़ोसबके बदन सों इतजयति शब्द गँभीर ॥ सैनपति ह्वैद्रोण
विरच्यो शकटव्यूह अभेद। राखि सबथर सुभट ज्ञाताशस्त्रसं-
गर भेद ॥ भूप सैन्धवकालिंगको अरु भट विकर्ण ससैन। अरु
जयद्रथ रहे दक्षिण ओर दायकचैन ॥ सहित हयदल शकुनिसब
गन्धारभटन समेत। रहो तिनकोपक्ष रक्षसचाव चपलसचेत ॥
चित्रसेन ससेन कृप कृतवर्म कृत रणउद्ध। भट दुशासन अरु
बिविंशित लये योधा शुद्ध ॥ बामदिशि हेरहे तिनके पक्षरक्षक
बीर। यवन सककाम्बोज गणसह नृपसुदक्षिण धीर ॥ शिवय
मद्र त्रिगर्त्त मलु अम्बष्ट आदिकसर्व। भटनसहतोतनय भूपति
गहेगुरुतागर्व ॥ सहित द्रोणाचार्य्य कर्णहि किये आगे भूप।
पृष्ठरक्षक लसो मधिमें समर मखको जूप ॥ शकटव्यूहअभेद्य
इतको धर्मभूप निहारि। रचेनिजदल मध्यअनुपम क्रौंचव्यूह
विचारि ॥ व्यूहमुखमेंरहोअर्जुन विदितधीरधुरीन।रहेसबथरपूर्व-
वत सबसुभट योधापीन ॥ विरचियहि विधिव्यूह अगणितदुन्दु-
भी बजवाय। युद्धहित बढ़िचले दोऊ भूप सदल सचाय ॥ घोर

असगुनहोतभे तेहि समय सुनिये तात । तुरगगज नर नृपनके जे नाश करणविख्यात ॥ घोर संगर कियो तेहिदिन सुभट सिगरे जूटि । द्रोण पारो प्रलय परदल मध्यजय यशऊटि ॥ पांचदिन अतियुद्ध करिकै भटनको शिरताज । द्रोण हति अक्षौहिणीसों अधिक सैनसमाज ॥ धृष्टद्युम्न सुधीरसोंलहि नाश तनतजि जाय । भयो निवसत जहां बिलमत शूर शुचि पद पाय ॥ परम आनँद लहे पाण्डव पायजय अभिराम । सैनसह तोसुवन सबभे दुसह दुख लहि छाम ॥ मढ़त हाहाकार धुनि तरि बिसत बेलाधीर । भरत भो तोसैन महिं मधि शोकसिंधु गँभीर ॥ दोहा ॥ द्रोणाचारयको मरण सुनि धृतराष्ट्र सुभूप । कुलिशपातसों हत सदृश भेभयरत गतरूप ॥ जकि अबोल रहि घरिकलों फिरिलै ऊबिउसांश । संजयसों बूझतभये तजि निज जयकी आश ॥ सिगरे दिव्य सुअस्त्रको शीक्षक द्रोणाचार्य्य । धृष्टद्युम्न ताको बध्यो करिकै सोरणकार्य्य ॥ भयो बिरथकै बिधुनकै कैभो मोहित धीर । जाते रणमें बधिगयो परशुराम समधीर ॥ जयकरी ॥ मरणद्रोणको सुनि हे तात । अब मोसों कछुकहो न जात ॥ चाहत दैवहोतसो अर्थ । सिगरो पुरुष पराक्रम व्यर्थ ॥ कुलिशहुते मम हृदय कठोर । फटत न सुनिए सोदुखघोर ॥ द्रोणहि रक्षतहे तेहिकाल । केके इतके सुभट बिशाल ॥ केके सुभट उतैसोंऊटि । लरद्रोणासों सम्मुख जूटि ॥ लहि पाण्डव भटको शरजाल । केइतकिये स्वर्गपथ चाल ॥ केके भगे द्रोणकहँ त्यागि । केके लरे बीररसपागि ॥ किहि किहि बधे द्रोण वहिओर । किन्हैं भगायो करिशर जोर ॥ कैसोसंगर भोतेहिठौर । जूझो जहां सुभट शिरमौर ॥ रणमें सुभट द्रोणको पात । कबहूंरहो न जानोजात ॥ तौन अनर्थ भयो यह हाय । अब मोसों कछुकहो न जाय ॥ करिप्रलाप यहि बिधि बहुबार । गिरोभूप लहिशोक अपार ॥ भूपहि मुरछित ल-

खिलहि त्रास। दौरि उठाये दासी दास॥ अतिशीतल जल सों मुखधोय। अँगमें अतर गुलाबसमोय॥ गतमुरछा लखिकै सुखपाय। सिंहासनपरधरे उठाय॥ शोकाकुलह्वै व्याकुलफेरि। बूझतभे नृपदुखहि बखेरि॥ दोहा॥ एकधनुर्द्धर विदितजो सब जगको जेतार। धृष्टद्युम्न तेहि किमि वध्यो कहो तौनउपचार॥ तृणवन दाहत अगिनि जिमि तिमिमरदत परसैन। द्रोणहि बारिद सदृश केहि कियो शमित गहिचैन॥ वरणि बरणिगुण द्रोणके अरु विक्रम व्यवहार। वार वार बूझो नृपति भोजिमि युद्धबिहार॥ सोरठा॥ मोहित भये अचैन नृपलहि दशाप्रलाप की। भरोशोकसों ऐन बूझेकहे अनेक विधि॥ जासु सहाई बिष्णु उतपति पालन नाशकृत। सकल भांतिसों जिष्णु कहि प्रभावप्रभुके कहे॥ दोहा॥ व्रजमथुरा द्वारावती सांजे अद्भुत कर्म। कियेकृष्ण सोसकलकहि कहे भूप गुणिमर्म॥ चौपाई॥ जोजो जोकृत चाहै मनमें। प्रगटहोइ सोसो सबक्षनमें॥ सो सारथी धनंजय सुरथी। जीतै ताहि कौन जयअरथी॥ येयुग नरनारायण जाने। दुर्योधन तिनसों रणठाने॥ किमि कल्याण होइ मम सुतको। कसन होइ हित इच्छित उतको॥ भयोकाल बशनृप दुर्योधन। करत न प्रभु महिमाकोशोधन॥ जगजेतार अवध्य सुआरय। बिदितभीष्म अरु द्रोणाचारय॥ ते जूझे लखि अजों नचेतत। नहिं हठतजि कुलरक्षण हेतत॥ जौ बि-भूति तव लखि ये माखे। पाण्डव तासु द्विगुण अभिलाखे॥ होइहि सिद्धि अवशि सोकारय। जोजूझेये युगभट आरय॥ धन्य युधिष्ठिर जाहित कारण। इमि विचरत जगभार निवा-रण॥ मरण द्रोण अरु भीषम केरो। संजयसहि न सकत मन मेरो॥ कढ़त न प्राण गहत निठुराई। अब मोसों कछुकहो न जाई॥ होत चहत है धरमी जोई। चहत अधरमीसो नहिंहोई॥ ममसुतके जय हेतुअरूझो। कैसो बिक्रम करिहिज जूझो॥

किमि उतके योधाभट नायक । चले द्रोणपहँ बरषत शायक ॥
किमिशर बरषत इतके योधा । बादि तिनको कीन्हों अवरोधा ॥
दोहा ॥ कहो पांचदिन तहँ भयो केहिप्रकारको युद्ध । लरे मरे
किमि किमिचरे केके योधाउद्ध ॥ वृद्ध भूपके ये बचन सुनि सं-
जय मतिमान । कहे सुनो मनदैकहत हमसब सहित विधान ॥
सोरठा ॥ लहि अभिषेक अनंद सेना अधिपतिको सविधि । पूरे
परम अनंद ह्वै प्रसन्न नृपसों कह्यो ॥ जयकरी ॥ भीषमके पीछे
हित जोहि । तुम कीन्हीं सेनापति मोहि ॥ ताते हम प्रसन्न
यहिकाल । मांगो ईछित सुबर रसाल ॥ सुनिभूपति हरषे जय
हेत । दुःशासन अरु करण समेत ॥ करिकै मंत्र कहेहरषाय ।
जीवत पकरि धर्मकहँ ल्याय ॥ देहु मोहिं मांगों बरयेहु । यह
सुनिबोले द्रोणसनेहु ॥ धन्ययुधिष्ठिरनृपतुम जासु । चाहेग्रहण
नवधकुलनासु ॥ निराखिधर्मको धर्मअनूप । अहितौ चरत सुहित
अनुरूप ॥ अथवापाय सुजयगहिचैन । रक्षणहेतु सुहित कुल
सैन ॥ आधोराज्य देन अनुमानि । मांगे तुम यहबरनयजानि ॥
द्रोणाचारय के येबैन । सुनिदुर्योधन भूप सचैन ॥ सके छपायन
हियकी बात । कहेद्रोणसों गुणि अवदात ॥ कपट न छपत छ-
पाये तात । आपुहि प्रगटि होत बिख्यात ॥ कह्योभूप सुनिये
यह नीति । धर्महि मारिन पाइब जीति ॥ नृपति युधिष्ठिर को
वध देखि । सबकहँ बधी पार्थ भट लेखि ॥ सब पाण्डव कहँ
मारैजौन । ऐसोबीर सुरासुर कौन ॥ बचिहि पांचमें जो भट
एक । नाशिहि सबकहँ सोगहिटेक ॥ दोहा ॥ तातेयह मत जय-
दहै धर्म नृपति गहिल्याय । खेलिद्यूत फिरिजीतिकै वनकहँदेहु
पठाय ॥ सत्य प्रतिज्ञा धर्म जब बसिहैं बनमें जाय । भीमआदि
सब तासु सँगजैहैं तजिब्यवसाय ॥ करि निबन्ध बहुदिवसको
रचि जूवाजयपाय । होब बहुत दिनकहँ सुचित यह ममंमत
सुखदाय ॥ सोरठा ॥ कपटभरे दुखदान नृपके ऐसे बचन सुनि ।

द्विजवरकरि अनुमान बोले बरबाधक बचन ॥ करि अद्भुतरण रंगतब हम भूपहि सकबगहि। जोरहि नृपके संगलरिनाहिं पाहै पार्थ भट ॥ चौपाई ॥ रणमें पाहत पारथजाही। पकरिनसकैइन्द्र यम ताही ॥ भूपसुवीर पार्थयुत जबलों। रविसमलखिवोयोगन तबलों ॥ मम सुशिष्य अरु तरुणउजागर । धर्म शील विक्रम को सागर ॥ दिव्य अस्त्रदेवनसों लहिकै। हम सों अधिकभयो बृत गाहिकै ॥ तापै केशव तासु सहाई । ताढिगधर्महि सकबन पाई ॥ ताते तुम सब सम्मत करिकै । रचिउपचार चाव सोंच-रिकै ॥ पार्थहिकीन्हेंउ नृपसोंन्यारे । नृपहिदेबहमहाथतुम्हारे ॥ यह सुनि तो सुतअति हरषाने । धर्म भूपकहँ निजकर जाने ॥ भयो द्रोणसों जो सम्भाषन । तेहिको दृढ़ करिबे हितशासन ॥ सबदलमें बजवाइ नगारे । सब सुभटनके श्रुतिमधिडारे ॥ इत के सबयोधा सोसुनिकै । हरषितभे सहजाहिजय गुनि कै ॥ सु-नि यह सब वृत्तान्त सोहाये । चारधर्म कहँ जायसुनाये ॥ सुनि यह वाणी निज चारनकी । नृपगुणि विधि सों विधि टारनकी॥ भट बन्धुनकहँ निकट बोलाये । सबसों यह वृत्तान्त सुनाये ॥ कह्यो धनंजय सो तुमतैसे । रहे हुन लहै मोहिं द्विजजैसे ॥ द्रो-णाचारय मम हित कारण । कीन्हेंयह अन्तर बरवारण ॥ दोहा॥ ताते तुम रक्षत रहेहु मोहिं सदासबठौर। जाते नहिं ईक्षितल-है दुर्योधन यहिठौर ॥ भूपतिकेये वचन सुनि पार्थ कहेभवित-व्य । त्याग आपुको द्रोणको बनन हमैं करतव्य ॥ मम जीवत कुरुनाथको सिद्ध न यहअनुमान । तुम्हैं गहनको जो लहैशक्र-हुसों वरदान ॥ सोरठा ॥ अर्जुन के ये बैन सुनि पाण्डवनृपचैन लहि । उमँगि चलाई सैन बजवावतदुन्दुभिघने ॥ चौपाई ॥दुं-दुभिशंख आदि सब बाजे । अगणित दहूँओरसों गाजे ॥ भरो वीर रससबके मनमें । लागोहोन युद्धतेहि क्षनमें ॥ माचतभयो युद्ध अति घोरा । पूरि रहे आयुध दुहुंओरा ॥ बढ़ि बढ़ि योधा

भरि भरि रिस सों । डारनलगे अस्त्रदुहुं दिशिसों ॥ थिररहुखरो देखु वकि वकि कै । मारन लगे बाण तकितकि कै ॥ मारुबचाउ आउकहि कहिकै । झेलनलगे शक्तिगहि गहिकै ॥ बरषतशर वढ़ि द्रोणाचारय । भो प्रविशत परदल मधि आरय ॥ क्षणदा समजहँ तहँ दुहुंदलमें । विचरतभयो द्रोणतेहिपलमें ॥ अति- शय चपल धनुषरथ करिकै । लसो अनेक सदृश रणचरिकै ॥ ज्वलित कृशानुचरै जिमि बनमें । तिमि बलसों परदल मधि रनमें ॥ रथीपदाती भटहयसादी । मारिअसंख्य गजरथप्रमा- दी ॥ बरधित कियो रुधिर को सागर । बिशद बिक्रमी द्रोणउ- जागर ॥ निज दलमर दत द्रोणहिदेखी । सुभटन सहितयुधि- ष्ठिर तेखी ॥ चले द्रोण पहँ बरषत शायक । सो लखिकै कौरव कुलनायक ॥ सुभटन सहित शरासनकरषत । तिनसों भिरत भये शर बरषत ॥ शकुनि सुभट सहदेवहि तकिकै । भिरोबीर रस बरसों छकिकै ॥ दोहा ॥ शर क्षुरप्रसों काटिध्वजबांधि सूत को गात । माद्री सुतके गात पै करतभयो शरपात ॥ तासुसूत धनुध्वज तुरगबन्धि शरनसों बीर । शकुनिहि मास्यो साठिशर माद्री सुत रणधीर ॥ सोरठा ॥ शकुनिवीर उद्दण्ड कूदिसुरथ सों गहिगदा । भट सह देव प्रचण्डके देखत सूत हिवध्यो ॥ चौपाई ॥ लखिसह देव विदित रणचारी । गहि गुरुगदात्यागिरथभारी ॥ फेरत दण्ड दण्ड के डौरणि । गहत पैंतरे के सब ठौ रणि ॥ झपटत करत उदावद पटिकै । दारुण दण्ड पाणिसम दटिकै ॥ चाहि चटकता सों चढ़ि अड़दै । मास्यो गदागदापै धड़दै ॥ छू- टतजुटत छूटिकैछावन । लगेलरनलखि चषललचावन ॥ थिरि थिरिउचटिउचटिफिरि फिरिफिरि । घनेघाव घालेघिरि घिरि घिरि ॥ खरेखेलारबली भट दोऊ । कोपित गणेन गोपितकोऊ ॥ धृष्टद्युम्न भटवर सों भिरिकै । लागे लरन द्रोण तहँ थिरिकै ॥ भिरो विविंशतिभीम प्रबलसों । धनु करषत शरबरषत बल-

सों ॥ शायक बीस परम अनियारे। भीम बिविंशतिके तनमारे॥ बीर बिविंशति हनिशरचोखे। वधेभीमके तुरग अनोखे ॥ धनु ध्वजकाटि गरव गहितोखो। तदनु वृकोदर भट अनिरोखो ॥ गदापाणिह्वै कूदि झपटिकै। बधेतासु सबतुरग दपटिकै ॥ गहिअसि चर्म बिविंशतियोधा। सुभट भीमसों भिरो सक्रोधा॥ शल्य नकुलसों भिरिकै चावन। लखो पराक्रमभय सरसावन॥ धृष्टकेतु सों भिरि कृपआरय। कीन्हों घोरयुद्ध जयकारय ॥ दोहा ॥ भिरे सात्वकी सोंगरजि कृतवरमा रणधीर। घोरयुद्ध कीन्हों तहां तेदोऊ बरबीर ॥ सुभट सुशरमा सभापति भिरि कीन्हों अतियुद्ध। ससयनकरण विराट भिरि कीन्हों संगरउद्ध॥ जूटिद्रुपद भगदत्त नृप कलित कराल कठोर। बारि बारि शर मारि शरकीन्हों संगरघोर ॥ भिरोशिखण्डी बीरसों भूरिश्रवा अमान। शक्तिभल्ल तोमरबरसि कियो कठिनघमसान॥ चौपाई ॥ राक्षस प्रबल अलम्बुष वीरा। भिरो घटोत्कचसों रणधीरा ॥ दोऊमाया विदरणचारी। दोऊबली विदित भटभारी॥ गुप्त प्रगट ह्वैह्वै बहु विधिसों। कीन्होंयुद्ध राक्षसी सिधिसों ॥ ल-क्षण कुँवरक्रोधसों मढ़िकै। अभिरो क्षत्रदेवसों बढ़िकै॥ नृप अनुविन्द महारिसकीन्हों। चेकितानसों भिरिरणलीन्हों॥ ल-खिसौभद्रहि प्रबलविचारी। ढूँढ़ो नृप हार्दिक्य प्रचारी॥ तेहि अभिमन्यु जानि रणकरकश। कीन्हों बाणवृष्टि करि बरकश॥ पौरव बरषि बाणवर चीन्हें। तापहँ शरपंजर करिदीन्हें ॥ अ-र्जुनको सुतरचि शरसेतू। काटेतासु क्षत्रधनु केतू ॥ बहुशर हनि पौरव केतनमें। बेधेतुरग सारथिहि क्षनमें ॥ फिरिअमोघ शर योजितकरिकै। गरजो अरिवधको प्रणधरिकै ॥ लखिपौ-रव करिलाघव करसों। काट्यो तासुधनुष युगशरसों ॥ तब अभिमन्यु तौन धनुतजिकै। खड्ग चर्म गहि कूदि गरजिकै॥ चंचल चरत पैंतरे पथपै। गो हार्दिक्य भूप के रथपै ॥ करिपद

घात सूतके उरमें । दयो गिराय सुरथते तुरमें ॥ असिसों काटि ध्वजामणि भूषित । गहेभूपके चिकुर अदूषित ॥ दोहा ॥ परो सिंह वशद्विरद सम नृपहार्दिक्यहि देखि । गहि असि चर्म चलो गरजि नृपति जयद्रथ तेखि ॥ आवत देखि जयद्रथहि तजिहार्दिक्यहि वीर । कूदिगर्जितापै चलो अर्जुन सुतरण-धीर ॥ तेहिक्षण इतके भटहने तोमर पट्टिश बान । तिन्हैंकाटि नृपसोंभिरो भटअभिमन्यु अमान ॥ सोरठा ॥ क्रुद्धिक्रुद्धि भटउद्ध जूटिछूटिजुटि छूटिजुटि । खड्गयुद्ध बिधियुद्धशुद्धवीररस गहि करो ॥ रोला ॥ ढालमें अभिमन्यु केलागि भूपकी तरवारि । टूटि आधी गिरीसोनृप सिन्धुनाथ निहारि ॥ चपलतासों तुरितषट पद कूदिपीछू जाय । वेगसों फिरिबीर आयो सुरथपै अनखाय॥ मत्तगजहि भजाय गरजत करतचालनशुण्ड । लसैजिमि गज-राज तृणसम गुणत करिवर झुण्ड ॥ करतचालन खड्गगर-जत लखत लसत निशङ्क । खरोतिमि अभिमन्यु कहँलखि शल्यअरिगज पङ्क ॥ शक्तिडारत भयोतहँ अभिमन्यु आवत देखि । कूदि गहिकै बध्योतासों तासु सूतहि तेखि ॥ देखिकै अभिमन्यु कोयह अतुल बिक्रमभूरि । सकल पाण्डव तेप्रशं-सत महामुद्सों पूरि ॥ पांडवनको हरषलखि तातनयसबदुख पाय । बाण बरषत भयेतापै गर्वसों सरसाय ॥ पार्थसुतको दे-खि बिक्रम शल्यधीर धुरीन । कूदिरथसों चलोगहिकै गदा अतिशय पीन ॥ दोहा ॥ इमि शल्यहि आवत निरखि दण्ड पाणिसमचण्ड । कालदण्डसम गदागहिसो चलोभीमउदण्ड॥ आउशीघ्र भाषतखरो पार्थतनय कहँबारि । आउइतै इमिभूप सों भाषत भयोप्रचारि ॥ सोसुनिकै अभिमन्यु पहँगयो न नृप रणधीर । रहु उतही रहुउतहि इमि कहि बाढ़िभिरो सुबीर ॥ सोरठा ॥ दोऊखरे खेलार दोऊ वरणे बिक्रमी । दोऊ रणजेतार गदायुद्ध कीन्हों तहां ॥ चौपाई ॥ अद्भुतयुद्ध किया तहँ दोऊ ।

दोऊप्रबल कहैं सबकोऊ ॥ दोऊघूमि चक्रसम झपटैं । घालैं
चाव चावसों दपटैं ॥ दोऊदटि दटि दुहुँन प्रचारैं । कूदिकूदि
हठिबढ़ि बढ़िमारैं ॥ दोऊमन ममतासों माड़ैं । सहैंघाव नहिं
धीरज छाड़ैं ॥ दोऊ घालैं गदा उकाढ़ैं । दोऊ गदा गदासों
झाढ़ैं ॥ लागैगदागदा पहँजबहीं । कढ़ैं फुलंग दुहुनसों तबहीं ॥
दोऊलसे रजनि महँजैसे । युगतरु वर जुगुनू युत तैसे ॥ दोऊ
गात दुहुँनके थूरे । दोऊरुधिर धारसों पूरे ॥ दोऊ कूदि कूदि
दुरिजातिसों । टूटिटूटि अभिरैं बलअतिसों ॥ दोऊगदा हनैं
अतिबलसों । दोऊगात बचावैं कलसों ॥ दोऊभट रणद्वन्द
मचावहिं । अरदित भयेगदाके घावहिं ॥ इमिदोऊ लरि थिरि
थिरिथिरिकै । मुरछिपरे महिपैगिरि गिरिकै ॥ लखि कृतबरमा
तुरता करिकै । नृप शल्यहि निजरथपै धरिकै ॥ पांडवगणसों
शंकित मनमें । रथचलाय दुरिगो भटगनमें ॥ क्षणमें चेति
भीम रसपागो । बहुरिखरोह्वै गरजन लागो ॥ माचो घोरयु-
द्ध तेहिपलमें । कटेअसंख्य सुभट दुहुंदल में ॥ दोहा ॥ ह्वैमर-
दित पांडवनसों बिमुखभई मम सैन । बजवाये जय दुन्दुभीधर्म
भूप जगजैन ॥ सोलखिकै वृषसेन भट सुवन कर्णकोवीर । मर-
दतभो दल पांडवीकरिशर झररणधीर ॥ बधिसहसनहयगज
सुभट बरधित करि यम लोक । कुपित कालसम लसतभो रण
महिमधि बलओक ॥ सोरठा ॥ नकुलतनय रणधीर शतानीक
तासों भिरो । दोऊभट बरबीरघोरयुद्ध कीन्हों तहां ॥ गुरुतोमर ॥
तहँ करणको सुतकोपिकैं । निहि बाण बरषो तोपिकै ॥ बरभटन
की बिधिठाटिकैं । भो मुदित धनुध्वज काटिकै ॥ सोतासु सोदर
देखिकै । भिरिकरणसुतसोंतीखिकै ॥ भटप्रबल धनुषबिधानसों ।
तेहि छायदीन्हों बानसों ॥ वृषसेनकहँशर धारमें । लखि मगन
तेहि रणगारमें ॥ भट द्रोण सुवनहिं आदिकै । भेभिरत तिनसों
नादिकै ॥ सोदेखिभट वहि ओरकै । बल बुद्धिसैन अथोरकै ॥

बढ़िभिरेइनसोंहांकिकै । येभिरेउनसोंदांकिकै ॥ तेहिसमयसंगर घोरभो।थिर मारु माख्यो शोरभो ॥ भीमादि भट तेहि कालमें । चरिकालसमभटजालमें ॥ इतप्रलयपूरपसारिकै। बहुसुभटगज हय मारिकै ॥ शर शक्तिपट्टिश छायकै । भे नदतदल बिचलाय कै ॥ निज भटन बिचलत हेरिकै । जनियुद्धत्यागहु टेरिकै ॥ दै धीर तिनकहँ फेरिकै । भट द्रोण क्रोध बखेरिकै ॥ करिदुसहदुर-दिनबान सों । बढ़िबितरिबिधि घमसानसों ॥ गोप्राविशिपरदल बीचमें । बधिकरत बहुभट कीचमें ॥ दोहा ॥ बरषतशर मरदत भटन चलो भूपकीओर । हने युधिष्ठिर द्रोणकहँ तीक्षणबाणअ-थोर ॥ काटि बाण सबभूप के काटि कठिन कोदण्ड । चलोबेग सों गहनको द्रोणाचार्य प्रचण्ड ॥ सोरठा ॥ धृष्टद्युम्नरणधीरतेहि क्षण बढ़िआवत भयो । भयो युद्ध गम्भीर धृष्टद्युम्न अरुद्रोण सों ॥ चौपाई ॥ तहां द्रोण अति बिक्रम कीन्हों । सब दिशि शर पंजर करि दीन्हों ॥ द्वादश बाण शिखण्डिहि मारे । उत मौजा पहँ बीश प्रहारे ॥ हने पांच शर नकुल सुबीरहि । हने पांच सात्वकि रणधीरहि ॥ द्वादश बाण भूप के तनमें । हन्योसात सहदेवहि क्षनमें ॥ द्रौपदेय गण कहँ गानिनोखे । मारेतीनितीनि शर चोखे ॥ दशशर मारि मत्स्यपति राजहि । व्यथितकियो परसेन दराजहि ॥ इमि हनि सबकहँ मोहित करिकै । चलो भूप पहँ प्रणअनुसरिकै ॥ तेहिक्षण हांकि जुगन्धर राजा । भिरत भयो बढ़ि सहित समाजा ॥ भल्लप्रहारिताहि बधिआरय । बहुरिभूप पहँ चलो अचारय ॥ तबफिरिबढ़ि कीन्हों अवरोधा। पांचभायकेकयपतियोधा ॥ द्रुपदबिराट सात्वकीबीरा । सिंहसेन शिविभट रणधीरा ॥ व्याघ्रदत्त असबभटनायक । भिरेद्रोण सों बरषतशायक ॥ तहँअतिबिक्रम करिरणचारी । सबपैअगणित बाणप्रहारी ॥काटिअसंख्यन शरसबहीके । द्वैद्वैकरि सबके धनु नीके ॥ बधिकै व्याघ्रदत्तबलओकहि । भेजिसिंहसेनहिंयमलो-

कहि॥सबदिशिसेतुशरनकोजोरे। गयोधर्मकेरथकेधोरे॥ दोहा॥
तेहि क्षणमें वहिसेनमें भयोशोर हे आर्य्य। गहिभूपहि लैजान
अब चाहत द्रोणाचार्य्य॥ यहि दलमें आनँद भयो भयोशब्द
गम्भीर। भूपहिगहि ल्यावत अवशि भटअचार्य रणधीर॥
ताही क्षणमें पार्थभट प्रबल बायुसम आय। बाणबेगबशकरि
द्विजहि देत भयो बिचलाय॥ लखि पार्थहि आचार्यतजि नृप-
ति गहनकी आस। युद्धत्यागि रथहांकिकै आये नृपके पास॥
इतने में सन्ध्याभई तजितजि रण उपचार। आय जाय निज
निज शिविर किये अहार विहार॥

इतिमहाभारतदर्पणेद्रोणपर्वणिप्रथमदिनयुद्धसमाप्तिर्नामप्रथमोऽध्यायः १

दोहा॥ निज सुपर्वके प्रथम दिन कीनिशिमध्य विचारि।
द्रोण कहत भे भूप सों बिहित बचन निरधारि॥ रोला॥ भूप तुम
सों प्रथमही हम कहे करि अनुमान। धर्मके ढिगरहिहि जब
नहिं पार्थ सुभट अमान॥ तबहि हमगहि धर्म नृप कहँदेब तुम
कहँ ल्याय। रहे पार्थहि भूप कहँनाहिं सकिहि सुरपति पाय॥
सुनौताते कहैं हम जो करौ तौन उपाय। युद्धहित कोउ उठै
पार्थहि अनतकहुं लैजाय॥ इतैतब हम जीति सबकहँ पकरि
भूपहि भूप। देब तुमकहँ लहेहु जय निज मंत्रके अनुरूप॥
द्रोण को सुनि बचन भूप त्रिगर्त्त पति गहि शोष। कहानृपसों
पार्थको कहिपूर्व रण कृत दोष॥ पार्थ कीन्होंपूर्ब हठकरिबहुत
मम अपकार। करत प्रति अपकार तेहिलै अनत लरिय-
हिबार॥ भाषियहि बिधि सत्यरथ अरु सत्य बरमहि आदि।
पांच भाय त्रिगर्त्त पतिरथ अयुत सहित प्रमादि॥ तंडकर
सुमालवहिके बीरधीर धुरीन। तीन सहस रथीनसह तिमि
करतभे प्रणपीन॥ सुभट मावेल्लकललिस्थन युतअयुत रथ-
वान। नृप सुशर्म्मा प्रस्थलापति कियोतिमि प्रणठान॥ और
बहु देशीय भूपति अयुत सुरथीबीर। किये सम्मतसर्ब साठि

हजार योधाधीर ॥ द्विजनकहँ दैदान बिधिवत पूजिसुर समु-
दाय। ज्वलनकहँ तहँ ज्वलितकरि सबकिये शपथ सचाय ॥
हरैजो परदत्तवा निजदत्त जो ऋतुकाल। रमैनहिं निजतरुणि
सों रहिस्वस्थ कुमति कराल ॥ तजै जो शरलाग तनकहँ करै
द्विजको द्वेष। करैजो अपकार दाहैग्राम जौनकुभेष ॥ श्राद्धके
दिनकरै मैथुन जौन अरुजे मूढ़। देहिपिण्डा जीव गणकहँ करै
ममतारूढ़ ॥ औरपाप अनेक करिकरि लहै नरगति जौन।
तजैरण बिनुबधे पार्थहि लहैं सोगति तौन ॥ शपथकरि यहि
भांति भाषो पार्थसों भटउद्ध। चलो दक्षिणओर काढ़िके करौ
हमसोंयुद्ध॥ पार्थतिनके वचनसुनि गहिक्रोध रणउत्साह। धर्म
नृपसों कहतभे करिशत्रुबध की चाह ॥ सर्ब संसप्तक करत हैं
युद्धहित आह्वान। जात हैं हमलरन तिनसों करहु शासन-
दान ॥ पार्थसों इमिकहें भूपति कियोजो प्रणद्रोन। सुनेहौतुम
तौनकीजै होइजाते सोन ॥ कहो पारथ सत्यजितहै परमभट
रणधीर। जियततौके तुम्हैंगहिनहिं सकिहि कोऊबीर ॥ सत्य
जित रणसिंह बिधिबश जायजब हतिअत्र। युद्धतजि तबशीघ्र
आयहु रहैंहम नृपयत्र ॥ भाषिइमि पदबन्दि नृपके पार्थ आ-
शिषपाय। गयेतहँ जहँरहेभूप त्रिगर्त्तके समुदाय॥ देखिपार्थहि
जातउतकुरुनाथ अतिहरषाय। सैनसहबाढ़िभिरे नृपसों दुन्दु-
भी बजवाय ॥ उतैपार्थहि देखि संसप्तक सुयोधा सर्ब। भेरि
दुन्दुभि कियेअतिशय घोरधुनि गहिगर्ब ॥ देखितिनकहँ मृत्यु
बश गुणिपार्थ शंखबजाय। कियेशंकित सहित बाहन सकल
भटन अचाय॥ धीरधरि तेभये बरषत बाण धनुबिधिठाटि।
सहस पन्द्रह बाणसों सबपार्थ दीन्हेकाटि ॥ बाणदशदश हने
पार्थहि सुभटसब तेहिठौर। पार्थतिनके हनेशायक तीनितीनि
सडौर॥ पांच पांच सुबाणते सबहने पार्थहिफेरि। पार्थतिनके
गात द्वैद्वै बाणदीन्हें मेरि ॥ पूरिदीन्हो पार्थकोरथ डारितेशर

भूरि। यथावारिद वारिधारन देतसरवरपूरि॥ कृष्णपारथ सुरथपर इमिपरे शायकघोर। यथा पुष्पित तरुनपै अलिवृन्द वितरतशोर॥ काटि तिनके बाण अगणित पार्थधीर धुरीन। हने सबके गातमधि बहुबाण तीक्षणपीन॥ पार्थके सुकिरीट मध्य सुबाहु हनिशर तीस। भयो गरजत मेघसम जयजानि बिस्वे बीस॥ काटिताको धनुष पारथ हनेतेहि बहुबान। भूपतहँ तेहि समय तिनसों भयोअति घमसान॥ भटसुशर्म्मा सुधनु सुरथ सुधर्म्म गहिगहि टेक। हनेपार्थहि पार्थ तिनकहँ हने बाणअनेक॥ काटिधनुध्वज मारिसूतहि बिधिसुधन्वहि बीर। कियो सबकहँ व्यथित तेहिक्षण पार्थ भट रणधीर॥ लखिसुधन्वहि गिरत रथसों भेरे अनुचरतासु। रहेजहँ कुरुनाथ दलसह गये तहँ सबआसु॥ पार्थके शरजालसों ह्वै व्यथित तजि उत्साह। नहींभट संसप्तकन तहँ भागिवे की चाह॥ कह्यो तबहिं त्रिगर्त्त पतिकरि शपथको अनुमान। लरौंधीरज धारि जैहैं एकदिन कढ़ि प्रान॥ बचन यह सुनि सुभट सिगरे बहुरि धीरजधारि। लगे बरषण बाण बधबधि जायबो निरधारि॥ महासंगर घोर पारथ दिव्य अस्त्रचलाय। दियेमरि सबपर भटनके आपने मनकाय॥ सूतरथ ध्वज धनुष भूषण बसन देखि अभेद। लगे मारन परस्पर सबजानि पार्थ अखेद॥ जानिकै सबपार्थ निज भट मारिगहि गहिमोद। दुन्दुभी बजवाय बहुरूप लगेकरन बिनोद॥ सुभट अगणित पार्थ सों भिरिदये शरसों छाय। कृष्ण पारथ तुरँग तहँनहिं परेनेकु लखाय॥ कहे तेहिक्षणपार्थ सों यदुनाथ ह्वै अतिखिन्न। जियतहौ कै नहीं कै तुमभये रथ सों भिन्न॥ कृष्ण केये बचन सुनिकै पार्थ अतिअनखाय। अस्त्र बर बायव्य तजिकै दयेमारुतछाय॥ उड़ेशर संसप्तकनके परणसम सबओर। तुरँग गज रथ सुभट लागे भ्रमण सभय अथोर॥ बाहुपग कटिशीश जानूभटन को तेहिकाल। भयो

काटत शरनसों तहँपार्थ भटबिकराल ॥ धनुष ध्वजकर गजन के अरुहथन केशिरपाय । काटि दीन्होंपाटि महिशर रुधिरको सरसाय ॥ इतैद्रोणाचार्य्य बिरचे बिशद गारुड़व्यूह । राखि बिधिवत अंगप्रति अति रथी योधा जूह ॥ लसे गारुड़ व्यूह को मुख आपु द्रोणाचार्य्य । लसेबन्धुन सहित शिरह्वै भूप गुणि जयकार्य्य ॥ कृपाचार्य्य सुबीर अरु कृतवर्म भूपसुभेश । लसेयोधन सहित गारुड़ व्यूह के चखदेश ॥ भूत शर्माक्षेम-शर्माअरु नृपति करकर्ष । यवनसक कम्बोजसिंहलअरुकालिंग सहर्ष ॥ शूरसेन अभीर कैकय दरदभट समुदाय । लसे गारुड़ व्यूहको ह्वैग्रीव धनुषचढ़ाय ॥ शल्य भूरिश्रवा बाह्लीक सो-मदत्त नरेश । एक अक्षौहिणि सैनसह लसेदहिने देश ॥ नृप सुदक्षिण वेद अरु अनुबिन्दु नृप सहसैन । बामदिशि होद्रोण को सुतबिदित भट जगजैन ॥ मद्रमागध पौंड्र अरु सांबष्ठ अरु गान्धार । पार्वती भट पीठि थरमधि लसेरण करतार । कर्ण वैकर्त्तन सपुत्र सज्ञातिसैनसमेत । लसे गारुड़व्यूहको ह्वै पुच्छ गर्बनिकेत ॥ जयद्रथसम्पाति भोजअरु भीमरथवृषपर्ब । का-थनैषध भूमिजय उरभये सदल सगर्ब ॥ देखि गारुड़व्यूह इत सेनाधिपति करिऊह । रचेबिधिवत अर्द्धचन्द्राकार अनुपम व्यूह ॥ देखिगारुड़ व्यूह इतको धर्मनृपति सशंक । गहे धृष्ट-द्युम्न सुबीरसों इमि कह तत्रसशंक ॥ गहैहमाहिं न द्रोण जाते करेहुसो उपचार । बचन यहसुनि कह्यो नृपसों धृष्टद्युम्न उदार ॥ हमहिं जीवत तुम्हहिं गहिनाहिं सकिहि द्रोण कदापि । आजु महिमा द्रोणकी करियुद्ध देउँ उथापि ॥ भाषिइमि बजवाइ दुन्दुभि सैनसह बढ़िवीर । द्रोणसों भिरिलरन लागो द्रुपदसुत रणधीर ॥ दुहूं दिशिसों चलनलागेशक्तिशरदुहुँओर । दुहूंदि-शिके भटनसों तहँमचोसंगरघोर ॥ दोहा ॥ धृष्टद्युम्नकहँद्रोणसों युद्धकरत तहँदेखि । धृष्टद्युम्नसों भिरतभो तासुतदुर्मुखतेखि ॥

तेयुग योधा उद्भट कियेतहां अतियुद्ध । जीति दुर्मुखहि द्रोण सों भिरोद्रुपद सुतक्रुद्ध ॥ फिरि दुर्मुख अतिक्रोधकरि बरषि वज्रसम बान । धृष्टद्युम्न सों भिरिगयो करन कठिन घमसान ॥ चौपाई ॥ द्रोणाचार्य्य कोपि तेहि पल में । पारे प्रलय पाण्डवी दलमें ॥ भिरेपदातिनसों पदचारी । भिरेरथिनसों रथी प्रचारी ॥ भिरे हयस्थनसों हय सादी । भिरे गजस्थ गजस्थ प्रमादी ॥ हांकिहांकि बढ़िबढ़ि भिरिभिरिकै । लागेकरनयुद्धथिरिथिरिकै ॥ तोमर शक्ति भल्ल अनियारे । भिन्दिपाल आदिक प्रहारे ॥ आयुध विविध विविध विधि मारण । लगे बीरपर ब्यूह बिदा-रण ॥ कितने द्विरद अभट ह्वैह्वैकै । लागेलरन सन्मुख ध्वैध्वै कै ॥ जुटैं कुम्भ कुम्भनसों गरजैं । हटि हटाय अतिबल सों तरजैं ॥ गहिगहि करन करनसों झटकैं । दौरैं रदन रदनसों हटकैं ॥ अभिरैं रदन रदनसों जबहीं । प्रगटै अगिनि रदनसों तबहीं ॥ रदक्षत युत कितने गज सोहैं । झरना सहित शैल समसोहैं ॥ कितने हटिडरि चिक्करत भागे । गरजत फिरै जाकिं सँग लागे ॥ इमि निज निज अधिपनके प्रेरण । लरें अनेक तुरँग मद मेरण ॥ यहिविधि सबेयुद्ध है आरन । चलो अर्जकहँ गहन अचारज ॥ बाणवृष्टि करि ब्यूह बिदारण । सरकत भरत भूरिभय भारण ॥ मण्डल समको दण्डहि कीन्हें । फिरत चक्र सम गुरुता लीन्हें ॥ दोहा ॥ इमि बिनहि आवत निरखि नृपति युधिष्ठिर कोपि । बाणवृष्टिकरि द्रोणकहँ दयेनिमिष में तोपि ॥ काटिशरन सों सकल शर भयो भयानकरूप । चलो द्रोण तेहि क्षण उठै हाहाधुनि भोभूप ॥ सोरठा ॥ तेहि क्षणह्वै अतिचण्ड सुभट सत्यजित वेगसों । टंकारतको दण्ड भिरत भयो बरषत विशिख ॥ चौपाई ॥ भिरो सत्यजित द्विजसों तैसे । भिरो वृत्र बासवसों जैसे ॥ दोऊ बीरधां दुरे गाये । करामतंग नाहिं जिमि छाये ॥ धीर धुरीणधनुपविविधचारिचारि । तोमर भल्लनि कीं मारि

करिकरि ॥ भरे गर्ब्ब भिरि सहित समाजा । घोर युद्ध कीन्हों सुनुराजा ॥ बरषि सत्यजित शरवर धरके । काटि अनगिने शर द्विज वरके ॥ पांचसुबाण सूतकहँ मारे । दशदश शर सब हयन प्रहारे ॥ उभय पार्श्व रक्षित के तनमें । दशदश शर मारे तेहि क्षनमें ॥ बहुरि विरचि बाणन के सेतुहि । काटतभयोद्रोणके केतुहि ॥ सोलखि द्रोण महारिस लीन्हें । शरसों तासु धनुष द्वै कीन्हें ॥ भिरि दश बाण परम अनियारे । बीर सत्यजित के तनमारे ॥ सोधनु त्यागि औरधनु गहिकै । नृप शरतीस हन्यो थिरुकहिकै ॥ तेहिक्षण वृकभट उतसों बढ़िकै । भिरो द्रोणसों इतलखु पढ़िकै॥ अतिशयबाण वृष्टिकरितुरमें । हन्योसाठिशर द्विजके उरमें ॥ तेहिक्षण रिसकरि द्रोणाचारय । भयोकाल सम ताबध कारय ॥ तिनदूनौं भटके धनुनोखे । काटतभयो मारि शर चोखे ॥ फिरिहनि एकबाण मजबूतहि । भेज्यो यमपुर वृक के सूतहि ॥ दोहा ॥ करि अतिशय करलाघवै बधिसब हयबल ओक । शरक्षुरप्रसों वृकहिबधि देतभयोसुरलोक ॥ तुरितसत्य-जित और धनुगहिहनि अगणितबान । तुरँगसूतसह द्रोणकहँ वेधतभोबलवान॥ तोमर ॥ तेहिसमयद्रोणाचार्य्य । बधतासुगुणि जय कार्य्य ॥ शरभल्लको समुदाय । हनिदियेतापैधाय ॥ फिरि धनुषताकोकाटि ।भोहनतबहुशरडाटि ॥ गहिसत्यजितधनुऔर। भोहनतबाणसडौर ॥ तवद्रोणकरि अतिकोप । गहितासु बधको चोप ॥ शरअर्द्धचंद्राकार । हनिबधेतेहितेहिबार ॥ जबसत्यजित रणधीर । मरिगिरो महिपैबीर ॥ तेहिसमय सबपांचाल । भेव्य-थित विकल बेहाल ॥ दोहा ॥ सत्य जितहि निपतत निरखि कै नृपधर्म विरूप । बैठियामिनी तुरँग पहँ गयेदूरिकढ़ि भूप ॥ चेदि मत्स्य कारूषपति अरु केकय पांचाल । अरु कोशलपति द्रोणसों भिरतभये तेहिकाल ॥ तिनसबके माधि नृपतहां लसो द्रोण भटनाह । लसत प्रज्वलित ज्वलन जिमि महागहन बन

माह ॥ चौपाई ॥ मत्स्यराज को अनुज सुवीर। शतानीक अनुपम रणधीर ॥ सूत तुरँग अरु द्विजके तनमें। हनत भयो षट शर तेहिक्षनमें ॥ फिरिसगर्वह्वै घनसम नादित। द्रोणहिंकीन्हीं शरसों छादित ॥ सबशरकाटि द्रोणअति रोखो। बध्योताहि हनिशर अतिचोखो ॥ भगे मत्स्यपतिके भटसिगरे। गणे रहे जे बली अदिगरे ॥ पुरुषसिंह द्विजवरकी दपटैं। दावानलसम शरकी लपटैं ॥ सहि न सके उतके भटएकौ। थिरनसके धरि धीरज नेकौ ॥ प्रलयकालके रुद्रसमाना। लसतभयो तहँ द्रोण अमाना ॥ हय गज रथ भट अगणित काटे। रुण्डमुण्ड सों रणमहि पाटे ॥ बरधित कियो रुधिरकी सरिता। निज विक्रम गिरिवरकी चरिता ॥ निज विक्रमकी गुरुतालीन्हें। सबथरपर विनुधरभटकीन्हें ॥ यहिविधि निजदल मरदित देखी। सदल संबन्धु धर्मनृप तेखी ॥ घनसमूह समबढ़ि अतिबलसों। भिरे आइ द्विजराज सदलसों ॥ घोरयुद्ध माचो नृपतिनसों। पृथक् पृथक् कहि निबरैकिनसों ॥ पांचबाण अतिशयअनियारे। वीर शिखण्डी द्रोणहिमारे ॥ पांचबाणवसुदानप्रहारे। सात्वकि शत शरमारिप्रचारे ॥ दोहा ॥ उतमौजाशरतीनिअरुयुधामन्युवसुबान। वीसबाण मारतभयो क्षात्रधर्म बलवान ॥ धृष्टद्युम्न दशबाण अरु क्षत्रदेव शरसात। तीनि वाण मारतभयो चेकितान दृढ़ गात ॥ द्वादशशर मारतभयो धर्मभूप ह्वैचण्ड। काटे तिनके बहुविशिख द्रोण कर्षिको दण्ड ॥ सोरठा ॥ विरचि शरनको सेतु सब वीरनपहँ द्रोणतहँ। भटदृढ़सेन सचेतु ताहिवधो हनिवर विशिख ॥ सबके अगणितबान काटिकाटि सबकहँ विशिख। हनिनवबाण अमान बधतभयो भट क्षेमकहँ ॥ महिधरी ॥ हनि शिखंडिहि बाणद्वादश वीस उतमौजहि हने। नृप क्षत्रधर्महि हनतभो शर असी अतिअनुपम बने ॥ वसुदान कहँ हनि भल्ल तीक्षण बधितुरित यमपुर दयो। बधिक्षत्रदेवहि भल्लशरसों

गरजि घनसम मुदलयो ॥ नृपभट सुदक्षिण बीरतेहि तकिबाण छब्बिस हनतभो । हनियुधा मन्युहि बाण चौंसाठि सेतु शरको तनतभो ॥ भट सात्वकिहि हनि तीसशर द्विजराज घनसम गरजिकै । सब भटनपहँ इमिबाण बरषत चलो नृपपहँ तरजि कै ॥ दोहा ॥ इमिद्रोणहि आवत निरखि भूपभूरि भयपाय । गये दूरि कढ़िबेगसों चंचल तुरँगचलाय ॥ तेहिक्षण नृप पांचाल को सुवन सुरथहि बढ़ाय । भिरोद्रोणसों हांकिकै बरषत बाण सचाय ॥ हतिताके सूतहि तहां काटिधनुष बधिताहि । मर्दत भो सब भटन कहँ द्रोणसुभट जयचाहि ॥ चौपाई ॥ उड़ैबायुबश ह्वै तृणजैसे । भयेपराजित परभटतैसे ॥ द्विजके शरभर सों तेहि पलमें । हाहाकार मचो परदलमें ॥ यहसुनि वृद्धभूप लहि आनँद । संजयसों बूझै सुनुमानद ॥ इबिधिरुद्र समद्रोणहि देखी । केभट तहां थिरे अवरेखी ॥ कुरुपति लसो मोदलहि कैसो । अबकहु शीघ्र सूतसुत तैसो ॥ संजय कह्यो सुनो तेहि क्षनमें । कुरुपति ह्वै अतिमोदित मनमें ॥ कह्यो कर्णसों यहि पलमाहीं । द्विजसों जूटिसकत कोउनाहीं ॥ अगिनि अलात अनगिने देखी । भगेंकरिनि जिमि भयसों भेखी ॥ तिमिलखि बाणजाल द्विजवरके । थिरि न सकत अवयोधा परके ॥ जिमि सिंहहि लखि मृगगण भाजत । भगेजात तिमिभयसों पागत ॥ थिरिहैं ये लहि निजनिज ठीहा । नहिंफिरिहैं गहिरणकीईहा ॥ सगरव भीम क्रोधगहि गाढ़ो । है अवलरत अकेलो ठाढ़ो ॥ देखियाहि मोमन मुदरांचत । बधोजात अवयह नहिंबांचत ॥ यहसुनि कर्णकहो सुनुराजा । भीम बधिहि सबसैन समाजा ॥ बधै भीमकहँ को असयोधा । करिहि भीमकर को अवरोधा ॥ पाण्डव सब अजेय अनुमानो । विचलित लखिमति निजजय जानो ॥ दोहा ॥ सुनिगरजनि भट भीमकी क्षणमेंफिरि सबबीर । तोदलमें चाहत प्रलय पारण सबरणधीर ॥ परन चहतहै द्रोण

पहँहुसह युद्धकोभार । तातेढिगचलि द्रोणको रक्षणकरो सवार ॥
समुझिकर्णके वचनये दुर्योधनसहसैन । शीघ्रद्रोणके ढिगगये दुंदुभिभेरिसिचैन ॥ चौपाई ॥ इतनेमें पांडवकीसेना । फिरतभई दुमंद जगजेना ॥ सात्वकिआदि वीरभटरूरे । चलेद्रोण पहँ अमरषपूरे ॥ इतकेसव योधाजयऊटे । पृथक्पृथक तिनसों इमि जूटे॥तो सुत दुर्मुख भट रणचारी । भिरो भीमसों धनुटंकारी ॥
सात्वकि सों कृतवरमा भिरिकै । घोरयुद्ध कीन्हों तहँ थिरिकै ॥
भिरो क्षत्रधर्मा सों राजा । नृपति जयद्रथ सहित समाजा ॥
लखि युयुत्सुकहँ भिरो प्रचारी । तोसुत भट सुवाहु धनुधारी ॥
करि अतियुद्ध युयुत्सु अखेदे । शर सों तासु उभयभुजछेदे ॥
भिरो युधिष्ठिर सों रण कर्कस । सह्यभूप रणधीर अधोकस ॥
नृप वाह्लीक सदलवढ़ि हदसों । भिरो ससैन महीप द्रुपदसों॥
भूप विन्द अनु विन्दरिसारे । भिरि विराटसों रणविस्तारे ॥शतानीकजोसुवन नकुलको । तासों भूतकर्म भिरि पुलको ॥ शतानीकताको वध करिकै । मर्दनभो मम दल रणचरिकै ॥ जोसुत सोमविदित भट तासों । भिरो विविंशति क्रोध महासों॥ श्रुतिकरमासों भिरि रिस लीन्हे । चित्रसेन अति संगर कीन्हे ॥नृप प्रति विन्ध्य विदित जयकामा । तासों अभिरो अश्वत्थामा ॥
दोहा ॥ अर्जुन सुत श्रुतिकीर्त्ति जो तासों भिरोप्रचारि । दुःशासनको सुत वरषि शायक धनुटंकारि ॥ तासु सूत ध्वज धनुष कहँ तीनि बाण सों काटि । अर्जुनको सुत द्रोणपहँ चलो वीर बिधि ठाटि ॥ सोरठा ॥ तव लक्ष्मण रणधीर वढ़ि ताकहँ आड़त भयो । लरिकाट्यो वर वीर लक्ष्मणको ध्वजअरुधनुष ॥ तव लक्ष्मण बलवान आन धनुष गहिक्रोधकरि । कियो कठिन घमसान श्रुति करमा रणधीरसों ॥ चौपाई ॥ मारु मारु धरु मार्यो रटसों । भिरो विकर्ण शिखंडी भटसों ॥ अंगदवीर भिरोअति बलसों । उत मौजा नरनाह सदलसों ॥ प्रनी पुहुमिपालक पुर-

जितसों । भिरो दपटि दुर्मुखभट इतसों ॥ दुर्मुखके भ्रूमधिहनि शायक । किये सनाल कमलमुख लायक ॥ पांचभाय नृपकेकय पति सों । भिरो ससैन कर्ण अतिबलसों ॥ तिन्हैंकरण करणहि ते चीन्हे । शर घनमें गोपित करि दीन्हे ॥ दुर्जय भिरोनील सों राजा । जयत्सेनसों विजयसमाजा ॥ तोसुतजयभटअनुपम योधा । कियो काशिपतिको अवरोधा ॥ क्षेमधूर्ति अरु बृहत सुबाई । सात्वकिसों भिरि कियो लराई ॥ भिरो अम्बष्ट भूप सों चावन । चेदिराज रणद्वन्द मचावन ॥ चेदिराज सों लरिअति जिदिकै । गिरो अम्बष्ट शरन सों भिदिकै ॥ बार्धक्षेमसों भिरो प्रचारी । कृपाचार्य्य अनुपम रणचारी ॥ भिरोभूप मणिमन्त बलीसों । भूरिश्रवा नृप भांति भलीसों ॥ भूरिश्रवाकाटि धनु तासू । काटत भयो छत्रध्वज आसू ॥ काटि पताकहि घनसम गरज्यो । बधि सूतहि तड़ितासम तरज्यो ॥ तब मणिमन्तभूप असिगहिकै । कूदो रथसों थिरु थिरुकहिकै ॥ दोहा ॥ असिसों बध्यो तुरंगसब अरु सूतहि नरनाह । तबहिंकूदि भूरिश्रवागयो और रथमाह ॥ पांडवभूपसों भिरतभो भट वृषसेन ससैन ।घोर युद्ध कीन्हों तहां ते दोऊ दलजैन ॥ भिरो घटोत्कच असुरसों असुर अलम्बुषबीर । घोरयुद्ध कीन्हों तहां ते दोऊ रणधीर ॥ यहि विधि द्वन्दहजार जुटि कीन्हों युद्धअपार । पृथक् पृथक् सो सब बरणिसकै भूप कापार ॥ सोरठा ॥ यहसुनि वृद्धनरेशसंजय सों बूझतभये । इबिधि जूटि तेहि देश कीन्हों कैसो युद्ध सब ॥ संजयउवाच ॥ चौपाई॥ यहि विधि जूझे सुभट समाजा । गजानीक सह बढ़ि कुरुराजा ॥ सगरब चलो भीमपहँ तैसे ।चले जलद जुरिवृज पहँ जैसे ॥ भूपहि निरखि भीम धनुकरषत । सम्मुख भयो भूरि शर बरषत ॥ भीमसेनकी शरकी बरषा । सहिनसको गजदलगहि धरषा ॥ बहुगज भागिचलेभय पूरे । जिमि मारुत बश ह्वै घनरूरे ॥ गजदल विचलत लखिदुर्यो-

धन। अतिरिस गहिकरि धनु विधि शोधन॥ भीमसेनकहँबहु शर मारे। जेतरु पाहनवेधनहारे॥ भीमसेन तब अति रिस लीन्हे। नृपहि शरनसों छादित कीन्हे॥ काटि धनुष ध्वजछत्र-हि क्षनमें। बहुशर हने भूपके तनमें॥ दुर्योधनहि विकलतहँ देखी। बंगाधिपतिभूप अति तेखी॥ मैंगलमत्तबढ़ायप्रचारत। भिरो भीमसों धनु टंकारत॥ तेहि लखि भीम विशिख अनि-यारे। तासु द्विरदके शिरमधि मारे॥ लागेबाण द्विरदशिरधुनि कै। गिरोभूमिपै आरत धुनिकै॥ मैंगलगिरो भूमिपहँ जबलों। भीमबधे तेहि भूपहितबलों॥ नृपहि मरतलखि नृपके अंगी। भागिचलेमरदत निजसंगी॥ भूपहि तेहिक्षण भीमप्रमाथी। बधे असंख्यन भट हय हाथी॥ दोहा॥ गजानीक विचलतनि-रखि असुर राज भगदत्त। चलो गरजिकै भीमपहँ चंचलकरि गजमत्त॥कसि मस्तकहि वितुंडसोगरजत शुंडउठाय। धायजाय युग पायसों बध्यो तुरग समुदाय॥ बधि तुरंग महिरथ मरदि जब गरजो गजघोर। तबहिं भीमगे द्विरद के पिछिले पगकी ओर॥ चौपाई॥ लगो पिछौंहि मूक प्रहारण। घूमन लगो द्विरद गुणिधारण॥ फिरो चक्र सम मैंगल जिमि जिमि। तासँग फिरो वृकोदर तिमि तिमि॥ यहिविधि घारिकघूमि रणकर्कश। कूदि सामने गयो अधर्कश॥ तबकर कुण्डलमधि तेहि करि कै। पगसों हनन लगो गज अरिकै॥ तब गहि शुण्ड घूमि सो भटवर। गयो मत्त मैंगल के उत्तर॥ तेहिक्षण शोरभयो वहि दलमें। भीमहिं बध्यो द्विरद यहिपलमें॥ सो सुनि धर्म शोच सों माढ़िकै। घेर्यो गजहि रथिन सह बढ़िकै॥ सहसन वीर रथी उतकरषे। सगज भूप पहँ शायक बरषे॥ तेहिक्षण नृप अंकुशकेचारण। किये असंख्य शरनकेबारण॥ चलोबढ़ाय द्विरद भयछावन। पगसों चाहि रथिनमरदावन॥ तब निज द्विरद बढ़ाय सुबीरा। भिरो दशार्णाधिप रणधीरा॥ प्राग्ज्यो-

तिष बरबलसों पूरण । बधै अरिहि जो रणमें तूरण ॥ भिरि भे लरत द्विरदते तैसे । लरैं सपक्ष शैल युग जैसे ॥ गजप्रमत्त भगदत्त असुरको । ताके गजहि बध्यो बल पुरको ॥ हनि भगदत्त सातशर रूरे । बधि दशार्णपति कहँ मुद पूरे ॥ उतके महारथी सब दिसिसों । हने असंख्यन शरभरि रिसिसों ॥ लगे शरन सहनृप गज कोहे । लघु तरुबन सह गिरिसम सोहे ॥ दोहा ॥ पाय इशारा भूपको बढ़ि सो गजबल भूरि । सहय सात्वकी के रथहि फेंकि दैत भो दूरि ॥ तुरित कूदि तेहि सुरथसों सात्वकिबीर उदण्ड । राजि और रथपैभयो टंकारतकोदण्ड ॥ जेहि भटकी दिशि लखत भो नृप सो गजतेहिकाल । रथचलायसो दूरगो जानिकाल बिकराल ॥ रोला ॥ मारि बहुगज मर्दि अगणित सुभट हय रथसाज । प्रलय पारतभयो परदल मध्य सो गजराज ॥ सुभट भीम रथस्थ ह्वै तेहि समय सुरथ बढ़ाय । चलत भो भगदत्त नृपपहँ तजतशर दृढ़घाय ॥ देखि भीमहिं बली वारण शुंडमधिभरि बारि । दूरहीं सों भयो बरषत भीमपहँ बहुधारि ॥ लगे सो जलधार ताके सुरथके हय सर्ब । सके नहिं समुहायरथलै दूरि गे तजिगर्ब ॥ देखि सो रुचिपर्ब नृपरथहांकि धनुटंकारि । विशिखबरषत भिरतभो भगदत्त सों ललकारि ॥ रोंकिताहि सुपर्बभूपहि बज्रसम हनिबान । बेधि हिय बधिलख्यो वृत्रहि मारि जिमि मघवान ॥ देखिसो सौभद्र अरुसुत द्रौपदी के बीर । धृष्टकेतु युयुत्सु अरुनृप चेकितान सुधीर ॥ भये बरषत बाण तबबढ़ि गरजिसो गजराज । गहि युयुत्सु सुबीरको रथ कियो चूर्ण ससाज ॥ कूदि बीर युयुत्सुतब गो औररथपहँधाय । बाणबरषतभये सबभट द्विरदपहँ भय पाय ॥ क्रोधसों युत उग्रउन्नत करेंरदशिरशुंड । चपल सब दिशि घुमड़ि गरजत काल सदृश वितुंड ॥ सुभट उतके भीति गहि गहि द्वाररहिफरकोल । रहे बरषत प्रबलगजपहँ बरशर-

नके गोल ॥ देखिवन मांजार कहँ जिमि करे पक्षी शोर। तथ-उतके रथी सवरव किये रहि चहुँओर ॥ भीति पूरित निज भाटनको शब्द सुनि यहि ओर। अरु नृपति भगदत्त को गज गरजकी धुनिघोर ॥ कह्यो पारथ कृष्णसों उत शब्द भीषण होत। जानियत भगदत्त ममदल मध्य प्रलय तनोत ॥ इन्द्र के गजराजके कुल जनित तासु मतंग। जानियतु यहि समय मरदत सैन के सब अंग ॥ भूप वह अतिप्रवल अरु अति प्रबल वह गजराज। तुम्हें विनुउत तिन्हें जीतै कौन सुभट समाज ॥ दोहा ॥ वेगि उतैअब चलहुप्रभु नातरु वह जगजैन। प्रलय पारियहि दिवस में वधिहि सकल ममसेन ॥ यह सुनि केशव हांकिरथ शीघ्र चले वहिओर। लखि पीछू टेरत चले संसप्तक भटघोर ॥ चौपाई ॥ चौदह सहस रथी वलभारे। फिर-हुफिरहु इमि टेरिप्रचारे ॥ सो सुनि अर्जुन इत उत गुनिकै। रथफिरवाय भिरो धुनि धुनिकै ॥ चौदह सहस रथी अति हरषे। वाण असंख्य पार्थपहँ वरषे ॥ तहां पार्थ अतिकोपप्रकाशे। ब्रह्म अस्त्रसों सब कहँ नाशे ॥ क्षणमें तिन्हें जीति रणजेता। वहुरिचलो अति सुवल निकेता॥ तदनु सुवन्धु सुशरमाराजा। चलो प्रचारत सहित समाजा ॥ तब पारथ अति चिन्तित ह्वैकै। फिरि भो भिरत धर्म निज ज्वैकै॥ वेधि सुशरमहि सात शरनसों। धनुध्वज काटि क्षुरप्रवरनसों ॥ बन्धुसुशरमा को रणधीरा। सहय ससूत वध्यो तेहिवीरा ॥ देखि सुशरमा अति रिस गहिकै। मार्‍यो शक्ति खरोरहु कहिकै ॥ पारथ निरखि वाण विधि ठाटी। तीनिवाण सों वीचहिकाटी ॥ तोमर तज्यो कृष्ण कहँ देखी। काटो ताहि पार्थअवरेखी॥ वहुरिअसंख्यन शर परिहरिकै। नृपति सुशरमहि मोहित करिकै ॥ नृप आयो ममदल कहँ कैसे। वन वरषत घन गिरिपहँ जैसे ॥ लखितेहि साहस गहि भटएकौ। बढ़ि भिरि आड़ि सकौ नाहँ नकौ ॥

निपतै बाज लवा पहँ जैसे । भिरो असुर भूपति सों तैसे ॥ दोहा ॥ बज्र सदृश शरवृष्टि करि सिगरो दल बिचलाय । नृप प्रमत्तभगदत्त पहँ देतभयो शरछाय ॥ दशहजार धनुधररथी नृप तेहि क्षण धरिधीर । भिरि बरषेशर पार्थ पहँ घनजिमि गिरिपहँ नीर ॥ भिरि तिनसों पारथ तहां शरदुरदिनताछाय । बधे असंख्यन सुभटभट अगणित दयेभगाय ॥ चौपाई ॥ लखि भगदत्त क्रोधकरि मनमें । द्विरद बढ़ायचलो तेहि क्षनमें ॥ पारथ लखि शरपंजर कीन्हों । द्विरद प्रमत्तहि बढ़नन दीन्हों ॥ तब भगदत्त शरासन करष्यो । अबिरलबाण पार्थपहँबरष्यो ॥ पार्थ काटि अगणित शरतासू । हने असंख्यन शर तेहि आसू ॥ तिमि शर काटि हनत भो बानन । नृप भगदत्त पुरुष पञ्चानन ॥ रथी गजी दोऊ बलधामा । यहि बिधि कियो घोर संग्रामा ॥ मचो घोर संग्राम गरजिकै । द्विरद पार्थ पहँ चलो तरजिकै ॥ कृष्णहांकि तब तुरग सुसजके । रथलै गये बामदिशि गजके ॥ बढ़ि सम्मुखसों गंजरिस लीन्हें । बहु हय भट रथ मरदित कीन्हें ॥ सुनि धृतराष्ट्र कह्यो कहु तैसो । तदनन्तर तिन कीन्हों कैसो ॥ संजय कह्यो भूप तेहि पलमें । भोअतिघोर युद्ध सब दलमें ॥ भूपपार्थके शरदुहुँ दिसिसों । चले यथा अहि पूरित रिसिसों ॥ नृपभगदत्त प्रबलभटरोखो । कृष्णहि हन्यो बाण अतिचोखो ॥ नृपको धनुष काटि तब पारथ । बरषत भयो बाण गुणे स्वारथ ॥ तुरित और धनु गहि नृप मारे । चौदह तोमर अति अनियारे ॥ एक एक शर हनि तिन सबमें । पार्थ दिये करि द्वैद्वै मगमें ॥ दोहा ॥ काटि असंख्यन बाणवर मारि असंख्यन बान । मत्तद्विरद को बरम बर काट्यो पार्थ अमान ॥ टूक टूकह्वै आयसी बरम गिरो महि पाहि । तब बेधित भो शरनसों मैगल बिगत पनाहि ॥ तज्यो कृष्ण पहँ शक्तिवर प्राग्ज्योतिषपति धीर । ताहि बीचहीबाण

सों काट्यो पार्थ सुवीर ॥ सोरठा ॥ बाण अनगिने काटि काटि छत्र अरु काटि ध्वज। हने नृप गजहि डाटि पार्थ सिंह दश बाण नख ॥ बाण अनगिने काटि साठिबाण फिरि हनतभो। घोर धनुषविधि ठाटि हनत भयो फिरि उभय शर ॥ चौपाई ॥ रहि सधीर तहँ धीरधुरीना। नृप भगदत्त सुभट कालीना ॥ बिधिवत मंत्र सुवैष्णव पढ़िकै। बर प्रभाव अंकुश मधि मढ़िकै ॥ भोडारत पारथ पै तैसे। बासव बज्र वृत्रकहँ जैसे ॥ कृष्ण देखि तेहि अनरथ चीन्हों। ह्वै सन्मुख निज उरपहँ लीन्हो ॥ उरहि परसि सोऽस्त्र सुहायो। बैजयन्ति स्रजह्वै छबिछायो ॥ सोलखि पारथभटअभिमानी। कह्यो कृष्णसों अनुचितजानी॥ मोहिं अछत प्रणतजि हे आरय। कतकीन्हों तुम ऐसोकारय॥ हम अशक्य जब होब गुसाईं। तब तुम उचित किहेहु यहि ठाईं ॥ यहसुनि कृष्ण मोदसों पागे। अस्त्र प्रभाव बतावनलागे ॥ तात सुनहु यह कथा सोहावनि। हैं मम चारिमूर्त्ति मन भावनि॥ करै उग्रतप महिपै एका। एकलखै सत असत बिबेका ॥ एक लोकके आश्रित ह्वैकै। करैं कर्म निज मायाज्वैकै॥ सहसचौकड़ी युगयक सोवति। जागि बहुरि जगरचि मुद मोवति ॥ सोवह मूर्त्ति जगतको नायक। जे बरयोग्य तिन्हैं बरदायक ॥ तेहि तेहि समय देतबर देखी। मांगत भई भूमिमुद भेखी ॥ दानव देवतादि गण सबसों। होइ अबध्य सुअनमम अबसों ॥ दोहा ॥ नरकासुर सुत तासु तेहि ह्वै प्रसन्न तेहि काल। अस्त्र सुवैष्णव दीन हम सो यह अस्त्र बिशाल ॥ याके सहिबे योगनहिं और तिहूंपुर माह। ताते हम याकहँ कियो व्यर्थ सुनो भटनाह ॥ यथा पूर्व नरकासुरहि हम माख्यो हे तात। तथाऽबधो तुम याहि अब बेधि शरनसों गात ॥ सोरठा ॥ सुनि केशवके बैन पार्थ ऐनबल बुद्धिको। धनु टंकारि सचैन रचतभयो शरसेतु फिरि॥ छाय असंख्यन बान मारि असंख्यन

बाणवर । पारथबीर अमान भगदत्तहि ब्याकुल कियो ॥ तोमर ॥ तहँ बरषि शर रणधीर । भटपार्थ अनुपमबीर ॥ अतिदीर्घ तीक्षण बान । सबिधान करि सन्धान ॥ अति दीह बलको भौन । गजमत्तनृपकोजौन ॥ तकितासु कुम्भनकेर । मधिभाग उन्नतफेर ॥ मोहनतबज्रसमान । सोधस्यो पुरुषप्रमान ॥ बढ़ि चलनको तेहि देश । नृपदयो गजहिनिदेश ॥ गजदयो शासन टारि । जिमि दारदीकी नारि ॥ करि आर्त्तधुनि बलवान । गज गिरतभो तजिप्रान ॥ दोहा ॥ चख उघरन के हेतु नृप लटके पलन उठाय । रहत रह्यो बांधे सदा सुबसन पट्टबनाय ॥ सुनि नभबाणी सुरनकी ताहि बाणसोंकाटि । हन्यो भूपके हृदय मधि भल्लपार्थ भटडाटि ॥ अर्द्धचन्द्र शरमारि भिरि धरसोंशीश बिदारि । भटप्रमत्तभगदत्तकहँ दीन्हों महिपैडारि ॥ सोरठा ॥ हतिभगदत्तहि तत्र धीर धनुर्द्धर पार्थभट । अगणित सुभटएकत्र करत भयो यमलोकमें ॥ चौपाई ॥ तदनुबीर गान्धार राज सुत । परपुर जयकर बर तेजमयुत ॥ निजदल दलत देखि तेहि क्षनमें । वृषकाचल गरबित ह्वैमनमें ॥ बरषतबाण सदलबढ़िभिरिकै । लगे लरन पारथसों थिरिकै ॥ सौबल ते युगबंधु अमाना । कीन्हेंतहां कठिन घमसाना ॥ रचिशरजाल पार्थतहँ तेहिक्षन । हने असंख्यन शर सबके तन ॥ गरजि सिंहसम धनुबिधि ठाटे । हयधनु सूतध्वजकके काटे ॥ वृषकाचलके समबलभारे । सुभट पांचशर तेहिक्षाण मारे ॥ निज रथ त्यागि बिचरि रणपथपै । वृषकगयो काचलके रथपै ॥ एक रथस्थ बन्धुदोउ बीरा । घोरयुद्ध कीन्हो रणधीरा ॥ इनबहु बाण पार्थ पहँडारे । पार्थ इन्हैं अगणित शर मारे ॥ ये बहुबाण पार्थके छेदे । इनके बहुशर पारथभेदे ॥ क्षणमें पार्थ बाण झरि करिकै । बेधे तिन्हैं गिरे ते मरिकै ॥ युग मातुलन प्राण बिनु ह्वैकै । रुदन किये तौ सुतमुद ग्वैकै ॥ निज बन्धुन कहँ निपतित देखी । माया कियो शकुनि अति तेखी ॥

आयुध भेद जगतमें जेते । लागे गिरन पार्थपहँ तेते ॥ भूत पिशाच सिद्ध वृक व्याला । रीछ शृगालगीध विकराला ॥ करत घोर धुनिभरि अति रिसि सों । चले धनंजय पहँ सब दिसिसों ॥ दोहा ॥ दिव्य अस्त्रसों पार्थ तब माया सकलविनाशि । शरबरषत भो शकुनि पहँ धनुष विधान प्रकाशि ॥ सो लखि बिरची तममयी माया शकुनि सचाय । अर्जुनकेरथपै गयो महाघोर तम छाय ॥ ज्योति शस्त्रसों पार्थ तब लोप करतभो तासु । शकुनि देखि सो जलमयी माया कीन्हीं आसु ॥ तब आदित्य सुअस्त्रको अर्जुन कियो प्रयोग । भो लोपित जलधारसब उत हरषे सबलोग ॥ इमि निज माया व्यर्थ लखि लहिबाणन को घात । चढ़ि सुअश्वपै भगतभो शकुनिबीर विख्यात ॥ सोरठा ॥ तेहिक्षण पारथबीर कालरुद्र सम चण्डह्वै । बरषिबाण रणधीर दलत भयो दलकौरवी ॥ महिस्वरी ॥ तेहि समय इतके सुभट सिगरे विकलह्वै अति भयपगे । तजि सखास्वामीपिता पुत्रन हांकि गजरथ हय भगे ॥ बहुगये ढिग कुरुनाथके बहु द्रोण द्विजके ढिग गये । बहुगये कढ़िअति दूरि फिरि नाहिंलखे उत अतिभय मये ॥ करि श्रुवासम बरबाण अगणित पार्थसब थरगवनके । रण अग्नि रणमहँ कुण्ड मधिबहुसुभट दीन्हें हवन कै ॥ करिचक्र समरथ धनुष इत सबठौर तांहिविचरत तहां । नहिं भये सम्मुख सुभट कोऊ भगेहे निरखत जहां ॥ गजतुरग अगणित सुभट रथशर बरषि पारथ बधतभो । तेहि समयनृप तौ सैनमधि अतिप्रलय पूरणनधतभो ॥ यहि भांति तौ दलमर्दि अर्जुन बहुरिदक्षिण दिशिगये । गाण्डीव धनु धुनिदुसहधुनि सह सर्प समशर भरिदये ॥ इतसैन आरत देखिद्रोणाचार्य अति कोपित भये । निज धनुष चक्रसमान करि परसैन मांझे शर भरि दये ॥ गजतुरग भट समुदाय बेधत बधत शरपंजर करे । भो चलत धर्मनरेश पहँ तेहि गहनको मन प्रणधरे ॥ दोहा ॥

तेहिक्षण सात्वकि भीम अरु धृष्टद्युम्नरणधीर । चलेबेगसों द्रोण पहँ सहित सुदल नृपबीर ॥ यहि विधि आवत द्रोणपहँ निरखिपाण्डवी सैन । सदल गयोढिग द्रोणके तौ सुतनृपबल ऐन ॥ बिपिन बासको दुखसमुझि तजिजीवनकी आस । पाण्डव तेहिक्षण करत भे अतिशय युद्ध प्रयास ॥ सोरठा ॥ जैसायुद्ध महान नहिं वृद्धन देख्यो सुन्यो । भो तैसो घमसान सुनो भूप तेहिक्षण तहां ॥ चौपाई ॥ कम्पित भई भूमि तेहि पलमें । कटे असंख्यन भट दुहुँदल में ॥ परदल दलतद्रोण जहँ फिरिकै । आड़त धृष्टद्युम्न तहँ भिरिकै ॥ तिहि क्षण नील नृपति भटभारी । मरदतभो ममदल रणचारी ॥ निज दल मरदत नीलहि देखी । टेरिकह्यो इमि द्विजसुत तेखी ॥ हे नृपनील आइभिरु मोसों । मैंजयलेन चहतहौं तोसों ॥ यह सुनि नील भटनपरिहरिकै । भिरो द्रोण सुतसों शर झरिकै ॥ तहँ द्विजसुत्त करि लाघव ठाट्यो । धनु ध्वजछत्र नृपतिको काट्यो ॥ तबगहिखड्ग चर्म रथ तजिकै । नृपति विप्रपहँ चलो गरजिकै ॥ तिमिआवत लखि अश्वत्थामा । मारि भल्ल शर अति अभिरामा ॥ शिर बिनु कियो नीलके गातहि । दियो अतुल आनँद तौ तातहि ॥ लखि सबपाण्डव अतिदुख लीन्हें । द्रोण तनय परशर झरि कीन्हें ॥ भीम गरजि निज धनुटंकारे । द्रोणहि साठि बाण बर मारे ॥ दशशर हन्यो कर्णके तनमें । भीमभीम भटगर्वितमनमें ॥ छब्बिसबाण द्रोण तेहिमारे । द्वादश शरबर करणप्रहारे ॥ सात सुबाण द्रोण सुत दीन्हें । षटशर हनि कुरुपति मुद लीन्हें ॥ अगणित बाण काटि तिन केरे । भीम तिन्हें शर हने घनेरे ॥ दोहा ॥ तेहिक्षण धर्मनरेश कर अनुशासन सुनिधाय । आवत भे ढिगभीमके घनेसुभट समुदाय ॥ इतके उतके अतिरथीबरणे बीरअमान । गरजिगराजि भिरिभिरि तहां कियेघोरघमसान ॥ सोरठा ॥ यथाघेरिघहराय बारिबूंदबरषतजलद । तथासुभटसमु-

दायटेरिटेरिबरषेबिशिख ॥ चौपाई ॥ तोमर शक्तिभल्लअनियारे । गदापरश्वधशरभय भारे ॥ खड्ग शतघ्नी आदिकरूरे । आयुध भेददुहूँदिशिपूरे ॥ गजहय सुभट असंख्यन मारिकै । शोभित भयेरुधिर मधिपरिकै ॥ बहुभटभिरि मूर्च्छित ह्वैगिरहीं । चेति टेरि फिरिफिरि उठिलरहीं ॥ मारेमरे किते हयसादी । मरेअनगिने गजीप्रमादी ॥ मरेअसंख्य रथी तेहिक्षणमें । हाहाकार मचतभो रणमें ॥ उमगिबही शोणितकी तरणी । रुण्ड मुण्ड मयमहा बिबरणी ॥ नृप तेहिक्षण सेनापति उतको । बिदित बीर अनुपम युत बलको ॥ सदल द्रोणके ढिगानियरानो । बरषत दिव्यअस्त्र मनमानो ॥ सो लखिनृप अरु अश्वत्थामा । करण शल्य भूपति बलधामा ॥ भूपविन्द अनुविन्द ससाज । अरु जगजैन जयद्रथ राजा ॥ बरषत बाण मंत्रपढ़ि पढ़िकै । तासों भिरतभये बढ़िबढ़िकै ॥ तहांद्रोण अतिबिक्रम कीन्ह्यों । अगणित भटन कालपुर दीन्ह्यों ॥ ताहीक्षण अर्जुन भटगायो । संसप्तकन जीति तहँआयो ॥ बिरचि बाणपंजर सब थलमें । पार्‍योप्रलय तावकी दलमें ॥ प्रति सन्धान अनगिनी सेना । मारतभयो बीर जगजेना ॥ दोहा ॥ व्याकुल ह्वै इतके सुभट सके न धीरज धारि । भागिकरणके ढिग गये पाहकप्रबल बिचारि ॥ सोलखि करण प्रचण्डभट कोदण्डहि टंकारि । भिरत भयोभट पार्थसों बरषत बाणप्रचारि ॥ काटिअनगिने बाणकरि पारथक्रोध अमेय । प्रलयकरन भटकर्णपहँ तज्योअस्त्र अग्नेय ॥सोरठा॥ दिव्य सुअस्त्रचलाय दिव्यअस्त्र धारतभयो । करण बीर दृढ़घाय धीरधनुर्द्धर बिदितभट ॥ प्रबलउभयरणधीर घोर युद्ध कीन्होंतहां । डारि सुअस्त्रगँभीर वारि सुअस्त्र अमोघसों ॥ चौपाई ॥ भीमसेन सात्यकि भटनागर । धृष्टद्युम्न दलपति बल आगर ॥ तीनि तीनि शर करणहिं मारे । जे शरपाहन बेधनहारे ॥ तेहिक्षण काटि पार्थके बानन । रिसकरि करण पुरुष पं-

चानन ॥ काटि शरनसों तिनकेचापन । लागेबाण पार्थपर धा-
पन ॥ तबते भटअति रिस बिस्तारी । तीनि सुशक्ति करणपहँ
डारी ॥ तीनि तीनि तीक्षण शरबरसों । काटेतिन्हैं करणतेहि
थरसों ॥ शक्ति न काटिशरासन करषत । भयोबाण पारथपहँ
बरषत ॥ काटितासु अगणित शरनोखे। पार्थहने तेहि बसुशर
चोखे ॥ होलघुबन्धु करण को ताको । नाशकियो हनिशर बर
भाको ॥ शत्रुंजयहि मारि षटशायक । बधतभये पारथ भटना-
यक ॥ बहुरिठाटि धनुधर के ठाटहि । बधत भयो भटबीर बि-
पाटहि ॥ यहि बिधि तीनि सुबन्धु करणके । बधे पार्थ रचिसेतु
शरणके ॥ तेहि क्षण भीम क्रोधसों नहिकै । रथसों कूदि चर्म
असि गहिकै ॥ बधतभयो रणरंग बिचक्षण । पंद्रह सुभट कर-
णके पक्षण ॥ बहुरिजाय रथपै तेहि क्षनमें । दशशर हन्यो
करणके तनमें ॥ एक सुबाण सारथिहि मारे । चारिबाण तुर-
गनहिं प्रहारे ॥ दोहा ॥ धृष्टद्युम्न असि चर्मगहि कूदि सुरथसों
धाय । दृहच्छत्र नैषध नृपहि बधत भयो रिसछाय ॥ तदनु च-
न्द्रबर्मानृपहि बधि निजरथ पै जाय । धनु गहिबाण तिहत्तरि
हने करणके काय ॥ सात्वाकिभट धनु आनगहि चौंसठि शर
अवदात । हने प्रचारिप्रचारिकै करणबीर के गात ॥ फिरिसा-
त्वाकि बरभल्लसों धनुषकरण को काटि । तीनिबाण मारतभयो
गरजि सिंहसमडाटि ॥ सोरठा ॥ तौसुत नृपसो देखि द्रोण जय-
द्रथ सैनसह । बरषत शायक तेखि भिरे सात्वकी भीमसों ॥
जयकरी ॥ इतउतके योधा तेहियाम । भीषण युद्ध कियो अभि-
राम ॥ बधिबधि भट गजबाजी भूरि । नदी रुधिरकी दीन्ही
पूरि ॥ पगकरशुण्डमुण्ड अरुरुण्ड । कटेतुरगरथ ध्वजाबितुण्ड॥
परेजासु मधियाद समान । बिलसे घने घने मयदान ॥ दोहा ॥
यहिप्रकार सबद्योस लरि जानिअस्तगत सूर । युद्धत्यागि डे-
रनगये उभयभूपबलपूर ॥ करिआहारादिकक्रियाइतउतसुभट

समस्त । निशिबितई कथिंपार्थको विक्रम परम प्रशस्त ॥

इतिश्रीद्रोणपर्वणिद्वितीयदिनयुद्धसमाप्तिर्नामद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

दोहा॥ व्यर्थ प्रतिज्ञा द्रोणकहँ लखि दूजे दिनभूप । कपटजानि तौ तनयनृपशोचतभये विरूप॥ तीजेदिनके भोरही सबके सुनत अचाय । पाणिजोरिकै द्रोणसों कहतभये अनखाय॥ जयकरी ॥ रणमें देखि आपुके कर्म । हमैंपस्यो यहजानि अमर्म ॥ समनम शत्रुन मधि समप्रीति । करिराखत तुम युग दिशि रीति ॥ तातै नृपहि निकट ह्वै पाय । गह्यो न तुम प्रण दयो भुलाय॥ जो तुम गहन चाहते ताहि । तौनसकत यमशक्रौपाहि ॥ रोला ॥ भूपके ये वचन सुनिकै कह्यो द्रोणबुझाय। नृपतितासों लहै को जय कृष्ण जासुसहाय ॥ महारथ भटविदित पुरुषप्रधान योधा एक । देव हमबचनाययोहिदिनकहतहौंगहिटेक ॥ आजुविरचब्यूह और नजासुजानत भेद । पार्थहि लैजायकोउ दूरि काढ़ितजिखेद ॥ द्रोणके येवचन सुनिकुरुनाथ पायेमोद । पारथहिलैजायसतक कियेयुद्धबिनोद ॥ द्रोणतबइत रच्यो अनुपम चक्रव्यूह अमान । तासुमधि अभिमन्यु पैठ्यो गरजि बरषतबान ॥ करिअमानुष कर्म अगणित सुभट बधिसो तत्र । गयोबधि षट वीर बरसो भयो आनँद अत्र ॥ कहैतब धृतराष्ट्र नृप सुनि सूतसुतकी बात । मरणसुनि अभिमन्यु को मोहिं होत करुणा तात ॥ कहो अब सबदशा तहँकी पृथक् पृथक् बुझाय । गयोबधि अभिमन्यु जिमिधसि व्यूहमध्य सचाय ॥ कह्यो संजयसुनो भूपति द्रोण जिमिकरि ऊह । चक्रव्यूह अभेद बिरच्यो राखि योधा जूह ॥ महारथ भटअयुत कृत अरु कर्णआदिक वीर । सहित मधिमें रह्यो तौसुत भूप अतिरणधीर ॥ पाण्डवन की सैन सम्मुख लसोद्रोण अडोल । रह्यो ताथर नृपजयद्रथ विदितबीर अतोल ॥ सिन्धुपति के पास होसुत द्रोणको विख्यात । तौस तौ सुतशकुनि भूरिश्रवा शल्य विभात ॥ लसे सुभट असंख्य

सबदिशि कइक मंडलजोरि । कौन योधा जौन तामधिजाय मण्डल तोरि ॥ भीम आदिक बीर उतके भिरे धनुटंकारि । भयो ताक्षणयुद्ध सोकहि सकैको निरधारि ॥ तहांअद्भुत लख्यो बिक्रम द्रोणको तेहिकाल । देतभो मढ़िप्रातिभटन पहँ तोमरन को जाल ॥ शरनसों दल पांडवनको मर्दि बिरचतराह । जान चाह्यो धर्मनृप पहँगहन कीगहिचाह ॥ दोहा ॥ इमिदल मरदत द्रोणकहँ निजदिशि आवतदेखि । कहतभये अभिमन्यु सों धर्म नृपतिअवरेखि ॥ चक्रव्यूहबिरच्यो कठिनद्रोण बुद्धिबलधाम । हमकोऊ जानतनहीं तासुभेद अभिराम ॥ तुम अर्जुनके कृष्ण अरु कैप्रद्युम्न बलवान । चक्रव्यूहके भेदकहँ जानत औरन आन ॥ जयकरी ॥ तातें दै मम प्रियबरदान । चक्रव्यूहभेदौ मतिमान ॥ जाते पार्थ न निंदै मोहिं । सोई करौ समौ यह जोहि॥ भेदि व्यूहमधि प्रविशौ तात । देहु मोहिं जययश अवदात ॥ धर्मभूपके सुनिये बैन । कहतभयो अभिमन्यु सचैन ॥ तौहित हेत भेदि यहव्यूह । मर्दि शत्रुके सुभट समूह ॥ जाब मध्यमें रचि शरसेत । पै नृप इतनो सुनो सहेत ॥ व्यूह मध्य जैबेकी राह । हम जानत हैं सुनो सचाह ॥ भीरपरे कढ़िबेको ठौर । नाहिं जानत सुनु नृप शिरमौर ॥ दोहा ॥ राह प्रगटकरि व्यूह मधि तुम प्रविशौ बलऐन । सो मग गहितौ अनुगमन हम सबकरब ससैन ॥ भीम कह्यो सुतव्यूह कहँ भेदि देखावहु राह । हमतौ सँग अतिरथिनको नाशकरब सहचाह ॥ सोरठा ॥ धसबकढ़ब बहुबार सुततौ सँगलखिराह हम । मैं करिहौं संहार गने गने भटबरनको ॥ चौपाई ॥ तबअभिमन्यु धनुषटङ्कारे । बोले बचन बीररस भारे ॥ बाणन मर्दि शत्रु भट जूहहि । भेदि अभेद बिकट यह व्यूहहि ॥ हम प्रविशत तुम लखि मुद धरिये । बिक्रम करतबनैसो करिये ॥ इमि कहिकहो सूतसों कारज । रथलै चलहु द्रोणपहँ आरज ॥ सूतकह्यो सुनु हे भटनायक । द्रोणाचा-

र्य न जीतन लायक ॥ नहिं अति कठिन युद्ध तुम देखे। व्यूह विदारब लघु अवरेखे ॥ हौंबालक मति साहस करहू। बूझि विचारि काजअनुसरहू ॥ सुनत वचन सुनि हँसिरणचारी। बोलो अर्जुनसुत धनुधारी ॥ कहा द्रोण आदिक भटरूरे। जिन्हें देखि तुम भय सों पूरे ॥ विष्णु विश्वजित मातुल मम हैं। पिता आरजुनको जेहि सम हैं ॥ हमलरि इन्द्रहि जीतनचाहत। जाहि संग रहि सुरगण पाहत ॥ चलो सुरथलै शङ्क बिहाई। देखहु मम विक्रम प्रभुताई ॥ यह सुनि सूत हांकि सबघोरे। रथलै चलो द्रोणके धोरे ॥ तीनि बारषिक रथके वाजी। चले बेगसों गहिगति ताजी ॥ धनु टंकारत बरषत शायक। तासँग चले सुभट भट नायक ॥ असुर सैनमुख शक्रहि जैसे। चलत चलै सँग सुरगण तैसे ॥ दोहा ॥ इमि आवत अभिमन्यु कहँ लखि द्रोणादिकबीर। भिरेयथा घनघोर सों भिरै सतेजसमीर ॥ घोरयुद्ध तेहिक्षणमचो कहैं कहांलोंभूप। रुण्डन मुण्डनसोंमही भई भयानक रूप ॥ चौपाई ॥ मचो घोर संगरहे आरज। पार्थतनय करि अद्भुत कारज ॥ मारि विदारि डारिसम्मुखसों। इतके भटन पूरिदै दुखसों ॥ पूरि पयोधि प्रलयको पलमें। व्यूह विदारि धस्यो मम दलमें ॥ सके न पैठि और भट तितके। राखे रोकिसुभट सब इतके ॥ पार्थ सुतहि निजदल मधि लहिकै। इतके सुभट मारु धरु कहिकै ॥ रथीगजी हयसादी योधा। सब दिशि घेरि कियो अवरोधा ॥ आयुध भेद सर्व सब दिसिसों। मारन लगे भरे अति रिसिसों ॥ वाद्यभेद बजवावन लागे। हयगज रथिन नचावन लागे ॥ अब रहु खरो भागु मति कहि कहि। शर झरकरी क्रोध सों नहि नहि ॥ तहँ अभिमन्यु सुभटवर धानुष। भूप करतभो कर्म्म अमानुष ॥ मण्डल सदृश शरासन करिकै। चक्रसमान सुथल पै चरिकै ॥ अगणित सुभट शीश विनु कीन्हें। अगणित विनुकरपग करिदीन्हें ॥ अ-

गणित भटनकिये बिनुबाहन। बिनुभटकिये असंख्यनबाहन॥ अगणित धनुध्वज रथहय काटे। अगणित द्विरदकाटि महि पाटे॥ अगणित बिधिके अगणित शायक। काटत भयो बीर भटनायक॥ हियो बेधि अगणित भटमारे। भाल बेधि बहुभट महिडारे॥ दोहा॥ यथा त्रिपुरके सैनमधि पूर्ब लसे त्रिपुरारि। तिमि ममदल मधि लसतभो पार्थ तनय धनुधारि॥ तेहिक्षण भट अभिमन्युसों ह्वै मर्दित रणधीर। बंधु पिता सुत तजि भजे जे भट बिदित सुबीर॥ सोरठा॥ निजदल बिचलत देखि दुर्योधन अनरथ समुझि। बरषत शायक तेखि भिरत भयो अभिमन्युसों॥ चौपाई॥ तासों भिरत भूपतिहि देखी। द्रोण महा अनरथ अवरेखी॥ कहत भये सुभटनसों ततक्षण। सादरकरहु भूपको रक्षण॥ सुनिकृप करण बृहद्बलराजा। शकुनि शल्य शल सहित समाजा॥ कृतबरमा अरु अश्वत्थामा। भूरिश्रवा भूरिजय कामा॥ पौरव अरुवृषसेन उजागर। सहित द्रोण सब बिक्रम सागर॥ करि करि कोदण्डन को करषण। लगे पार्थसुत पै शर बरषण॥ काटि असंख्यन शायक इनके। बरषि बाण दिनमणि रणदिनके॥ क्षणमें सबहि पराजित करिकै। गरज्यो पार्थ तनय मुद धरिकै॥ तब ये सहे न गरजनि तासू। फिरि फिरि फिरि अभिरतभे आसू॥ सब दिशिसों अभिमन्युहि घेरी। अब मति भरमि भागु इमि टेरी॥ बरषण लगे बाण अनियारे। जेसपक्षअहिसम भयकारे॥ काटिशरन सों सबकेबानन। भट अभिमन्यु पुरुष पञ्चानन॥ सबकेतन मधि शायक मारे। लखि सबअद्भुत कर्म बिचारे॥ तब सिगरे भट कोपितह्वैकै। चक्रसमान चरत तेहि ज्वैकै॥ भांति अनेक बाण झरि कीन्हें। सब अभिमन्यु ब्यर्थ करि दीन्हे॥ रविके किरण सदृश बरभाके। सब थर पूरिरहे शरताके॥ दोहा॥ तेहि क्षण दुस्सह हनतभो अभिमन्युहि नवबान। हनतभयो द्वादश

विशिख दुःशासन बलवान ॥ द्रोणहने सत्रह बिशिख कृतवरमा शर सात । हनो विविंशत क्रोधकरि सत्तरि शर अवदात ॥ कृपाचार्य्य भूरिश्रवा तीनि तीनि बर बान। हने तासु षट हनत भो शल्यनरेश अमान॥हने वृहद्वल आठशर अश्वत्थामासात। दुर्योधन नृप हनत भो तीनि नराच बिभात ॥ सोरठा ॥ शकुनि महीप प्रवीन दोयबाण मारतभयो । तीनि तीनिशर पीन हन्यो सबहि अभिमन्युभट ॥ चौपाई ॥ असमक नृपको सुवन तरपिकै। अतितीक्षणदश वाण अरपिकै॥ थिररहु थिररहु कहि रण-चारी । बहुरिकियो योजित शर भारी ॥ लखि अभिमन्यु गर्ब गहि मनमें । मारिबाणदश ताहीक्षनमें ॥ हय सारथी ध्वजा धनु तासू । काटि शीश काटत भो आसू ॥ ताहि मरत लखि भरि अतिभयसों । इतके सुभटमोरि मनजयसों ॥ शोचन करिसनीर चखनीरज । भागत भये दूरि करिधीरज ॥ ताक्षण बिचलत लखि निजसेना । करण द्रोण कृपशल्लजगजेना ॥ सोमदत्तकृप अश्वत्थामा । भूरिश्रवाशल्य गुणधामा ॥ वृन्दारक वृषसेन सु-बीरा । नृप सुखेन अनुपमरणधीरा ॥ सुभट कुंडभेदी नरनाहू । भूप विविंशत दीरघबाहू ॥ नृपति प्रबाहु ललित्थ प्रतर्दन । दुर्योधन घनसदृश ननर्दन ॥ गराजिघेरि तजि जियको भरषा । करी पार्थ सुत पै शरवरषा ॥ अगणित बाण भटनके सहिकै । अगणित बाण काटि विधि गहिकै ॥ मारत भयो करणके तनमें । अतितीक्षण शरगहिप्रण मनमें ॥ सोशर भेदि करणके गातहि । अति दुख दयोभूप तोतातहि ॥ ह्वैबेधित कांप्यो सो परणी। जिमि गिरि कँपत कँपेते धरणी ॥दोहा॥ बहुरि बरषि शर भटनपहँ बधिसुखेन कहँबीर। दीर्घलोचनहि बधतभो हनि अतितीक्षण तीर॥बध्योकुण्डभेदी भटहि हनि अतितीक्षणबान। रचतभयो शरसेत फिरि पार्थ तनय बलवान ॥ मारे करण पचीस शर अभिमन्युहिं तेहिकाल । अश्वत्थामा हनतभो बीसबाण बिक-

राल ॥सोरठा॥ रचि सब दिशि शरजाल शक्रात्मजको आत्मज । मास्यो बाण बिशाल शल्य भूपके हृदयमधि ॥ बसुकला ॥ वह लगे बान । सोनृप अमान ॥ शर धनुषडारि । युतभुज पसारि ॥ तजि चेतमोहि । गिरिपस्यो सोहि ॥ बरबल निकेत । शल्यहि अचेत ॥ सब सुभट देखि । अनरथ सरेखि ॥ मन भीत मेरि । भगिचले फेरि ॥ तहँ लसो धीर । अभिमन्यु बीर ॥ जिमि बणयनाह । गजगोल माह ॥ दोहा ॥ यहसुनि दुख लहि वृद्धनृप कह्यो कहो तेहिठौर । भिरतभये अभिमन्युसों कौन सुभट करिगौर ॥ संजय बोले तेहि समयतो दल सागर ताहि । मथत पार्थसुत मन्दर-हि अनुज शल्य को चाहि ॥ धनुटंकारि प्रचारिकै डारिदीहदश बान । अभिमन्युहि हय सूतसह ताड़ित कियो अमान ॥सोरठा॥ हनि तीक्षण शर भूरि काटि बाहुधनु छत्रध्वज । पार्थतनयरथ तूरि तासु शीश छेदन कियो ॥ चौपाई ॥ तासु मरणलखि अनु-चर ताके । रथीगजी हयसादी वाके ॥ मारु मारु धरु मारुपुका-रत । बरषत बाण धनुष टंकारत ॥ पार्थसुतहि सब दिशि सों घेरी । लगे प्रहारण थिरुथिरु टेरी ॥ तेहिक्षण पार्थतनयब्यव-साई । दरशायो बिक्रम अधिकाई ॥ सिखी कृष्ण अर्जुन सों जेती । कीन्हो प्रगट अस्त्रबिधि तेती ॥ धनुष अलातचक्रसम करिकै । घूमि असंख्यन शर परिहरिकै ॥ द्रोणादिकन भटन कहँ डाटत । तिनके हने बाण सब काटत ॥ शल्य अनुजनरप-ति के दलमें । पारतभयो प्रलयतेहि पलमें ॥ पलमें बधेअन-गिनेहाथी । रथीगजी घोरे सहसाथी ॥ ह्वै मरदत बहुभट भय पागे । तजिरणखेलखेततजिभागे ॥ सोदल मरदिबीर उत्करष्यो । शर द्रोणादि भटन पै बरष्यो ॥ तेहिक्षण तासु पराक्रम देखी । द्रोण हियो आनँद सों भेखी ॥ कृप सों कह्यो लखौ हे आरय । करत पार्थसुत कैसो कारय ॥ अनुपम पिता पुत्रये दोऊ । नहिं इनसम रण कोबिद कोऊ ॥ पार्थ सदृशयह यहिसम पारथ ।

तिहुंपुर जीतन योग यथारथ॥ गहिअपूर्व विधिकरषिशरासन। आज चहत यह सबदल नाशन॥ दोहा॥ द्रोणाचारयके बचन सुनि सुप्रशंसा तासु। करणादिक सों कहतभो दुर्योधन गहि गासु॥ अभिषेकित धनु धरणको शीक्षक द्रोणाचार्य। करत नहीं अभिमन्यु के मरिबे लायक कार्य॥ रोला॥ शिष्यपुत्र सु शिष्य के ये पुत्रवत श्रुति बैन। बचन सो गुणि ताहि रक्षतमूढ़ विक्रमऐन॥ जौनमर्माहित होयकरिबो तौन गुणिनिजधर्म। करौ वध अभिमन्युको निज प्रतिम करिकरि कर्म॥ सुनत दुःशासन बचन यह कहतभो गहिगर्व। वधत हैं हम याहि ठाढ़े लखैं योधा सर्व॥ भाषि इमि करि मुदित भूपहि गरजि धनुटंकारि। जाय सम्मुख पार्थ सुतके भयो भिरत प्रचारि॥ क्रोध करिअभिमन्यु मारे बाण छब्बिसताहि। ताहि दुःशासन हनत भो वाण चौदह चाहि॥ चक्र सम रथ दुहूंदिशिते फेरि फेरि सक्रोध। लरे करि करि शर बरनसों शरनकोअवरोध॥ कहो तो सुतबीर सो अभिमन्यु सत्व अगाध। सभामधि हठि कियेतुम गहि बसन जो अपराध॥ आजुलेहों बैर सो तौ नाशकरियहि काल। भाषि ऐसो हन्यो ताके हिये बाण विशाल॥ दोहा॥ अति तीक्षण सो शर धस्यो हियमधि पुंख प्रमान। मास्यो फेरि पचीसशर पार्थ तनय बलवान॥ तब मूर्छित ह्वै सुरथपै गिरत भयो रणधीर। रथलै भागो सारथी दुखित भयोरणधीर॥ सोरठा॥ तौसुत भूपति देखि दुःशासनकी दुरदशा। महाव्यथित ह्वै तेखि कह्यो धनुर्धर करणसों॥ चौपाई॥ अर्जुनसुत ममदल मधि धसिकै। द्विरदन मध्य सिंहसम लसिकै॥ विरचत चण्ड तरणिकी नाईं। सब कहँ वध चाहत यहि ठाईं॥ निजविक्रम प्रगटित करि आसू। मित्र करहु अब तुम वधतासू॥ सोसुनि करण क्रोध अति कीन्हें। तापहँ शरपंजर करि दीन्हें॥ काटि असंख्य बाण अनियारे। तिहिंसत्तरि शर करणहि मारे॥ ताहू

क्षण द्रोणादि गमनसों। लरत रह्यो सो पूरोप्रनसों ॥ अगणित दिव्य अस्त्र भयमाड़त। भो अभिमन्यु करण पहँ छाड़त ॥ राम शिष्य अस्त्रनकी झरिकै। वार्‌यो सकल अस्त्रगण धरिकै ॥शर झरि करि करणहिकहि मोहित। काट्यो धनुष पार्थसुतकोहित॥ जौलगि करण गह्यो धनुबाना। तौ लगि हन्यो अनगिनेबाना॥ गहिधनु आन करण धनुधारी। वारत भयो बाण झरि भारी॥ फिरि अभिमन्यु धनुष बिधि ठाट्यो। सूतसुवनको धनु ध्वज काट्यो ॥ लखि यह दशा गोलसों काढ़िकै। भिरो सूतको लघु सुत बढ़िकै ॥ तिहि दशबाण हन्यो तेहि क्षनमें। प्रबलपार्थसुत भट के तनमें ॥ तब अभिमन्यु महत शर मारे। काटि तासु शिर महिपै डारे ॥ निरखिबन्धुको बध है राजा। करण व्यथित भो सहित समाजा ॥ दोहा ॥ तब करणानुज के सुभट रथगज तुरँग बढ़ाय। भिरि अभिमन्यु सुबीरकहँ दियेशरन सों छाय॥ तिनमें अगणित भटनकहँ बधि निशंक रणधीर। मर्दि पराजित करत भो अगणित भटन सुवीर ॥ फिरि करणहि बेधत भयो मारि अनगिने बान। तब चढ़ि चंचल तुरँग पै करणभगो तजिसान ॥ सोरठा ॥ क्रोध गर्बसों पूरि यहिबिधि करणहिं बिमुखकरि। बरषतभो शर भूरि और भटनके रथनपै ॥ भुजंगप्रयात ॥ बली बीर वीराधिको वार बांको। दल्यो तो दलै जो वलै वारिधाको ॥ करी रुण्ड मुण्डानमें मेदिनीये। नदीलोहु की भीरुही खदनीये ॥ गजी बाजिसादी रथी के गरट्टैं। डरै तासुमारे अरेमारु रट्टैं ॥ घने पाणि ऊरू परेतासु काटे। लसे तेमनोजादके जूहपाटे ॥ दोहा ॥ बहुबिनुपग बहुबिनुचरण बहु बिनुकर बिनुमुण्ड। लखेतासु काटेबिना बहु बिनुमुण्ड बितुण्ड॥ मरे अधमरे अधकटे कटेलटे भटभूरि। भूपलखे जहँपार्थ सुत युद्धरच्यो रिसपूरि॥ अगणित हयगज रथनके कटेपरे सब अंग। धनु ध्वजछत्र किरीटबहु लखेतासु कृतभंग ॥ सोरठा ॥

बिदित धनुर्द्धर उद्ध श्रीअभिमन्यु उदण्ड भट । काल रुद्रसम क्रुद्ध बिलसत भो तौसैन मधि ॥ चौपाई ॥ ऐसोतासु पराक्रम सुनिकै । बूझतभयो वृद्धनृप गुनिकै ॥ इबिधि कुमार अकेले आयो । ममदल मध्य करत मनभायो ॥ तब भीमादि वीरबर गाये । रहेकहां तहँ कत नहिंआये ॥ संजयकह्यो सुनो नयगामी । चारोभाय धर्मजय कामी ॥ सात्वकि धृष्टद्युम्नभट नागर । द्रुपद बिराट बुद्धिबल सागर ॥ धृष्टकेतु आदिक भटरूरे । चले तासुपीछू बलपूरे ॥ भट अभिमन्यु बिदित धनुधारी । धस्यो सैनमधि व्यूह बिदारी ॥ भीमादिकन भटनसो भिरिकै । राख्यो रोकि जयद्रथ थिरिकै ॥ सुनि धृतराष्ट्र कह्योसुनि येहू । संजय मोहिंभयो सन्देहू ॥ भीमादिकपर सुभट समाजा । रोक्योतिन्हैं जयद्रथ राजा ॥ भीषमद्रोण जिन्हैं नहिंजीते । तेकतभे विक्रम सों रीते ॥ जाते रोकि जयद्रथ राख्यो । कहौभेद ममनन अभिलाख्यो ॥ संजय कह्यो सुनो मनभावत । भेद तुम्हैंहम भूप बतावत ॥ द्रुपदसुताहि जब बनसों हरिकै । चल्यो जयद्रथ लै प्रणधरिकै ॥ जीत्योताहि भीमतेहि क्षनमें । तबनृप अतिगलानिकरि मनमें ॥ रहि इकान्त करि शम दम साधन । सविधि शम्भुको कियो अराधन ॥ दोहा ॥ कछुदिनमें हरस्वपमें कह्यो मांगु बरदान । तबहिं जयद्रथ भूपयह बरमांग्यो मनमान ॥ सदलसर्ब पांडवनकहँ रणमेंकरि विनुगर्ब । जीतिअकेले आडि हम राखैंदीजै सर्ब ॥ कह्यो शम्भुबिनु आरजुन लहिहौ सबसों जीति । नृपतेहि बरके भेवइमि राख्योआड़ि सनीति ॥ सोरठा ॥ सदल जयद्रथ भूप लरिससैन पांडवनसों । करो भयानकरूप युद्धभूमि अतियुद्ध करि ॥ चौपाई ॥ शायक बरषत व्यूह बिदारत । मग जाननहित गजबधि डारत ॥ जेहि मगगयो बिदित धनुधारी । पार्थतनय अनुपम रणचारी ॥ सो मगकियो भटन सों पूरित । सैंधवनृप हरबरसों नूरित ॥ पांडव सदल न आवन

पाये । किये कितक बिक्रम मनभाये ॥ समदल मध्य अकेलो धसिकै । भट अभिमन्यु भटनसों गसिकै ॥ बिशदवीर अति विक्रम कीन्हों । अगणित भटन स्वर्गपुर दीन्हों ॥ रथसमूहसों घेरित ह्वैकै । वृषसेनहि अतिगरबित ज्वैकै ॥ तासु धनुषध्वज शरसों काटे । सूतहिमारि हयन कहँ डाटे ॥ रथलैभगे सूतबिनु बाजी । मरदतनिज पैदर भटराजी ॥ तबनिज रथहिबढ़ाइ बिशारद । शत्रुनबर बिक्रमको भारद ॥ अगणित बाण धनुषध्वज काटत । भो बसातपति भूपहि डाटत ॥ तिहिनृप साठिबाण अनियारे । ताहीक्षण अभिमन्युहि मारे ॥ तब अभिमन्यु अरुण करिईक्षण । किये तासुबध हनिशर तीक्षण ॥ भरेक्रोध इत अगणित योधा । शर बरषतहैं करिअवरोधा ॥ करिअभिमन्यु बाणविधि शोधन । होतहँ मर्दत अगणित योधन ॥ काटिअसंख्यन शर सबहीके । भयोबधत अगणित भटनीके ॥ दोहा ॥

सबके बहुशर काटिसहि हनिसबके तनबान । लसतभयो अभिमन्युतहँ बिचरत शक्रसमान ॥ सिगरेभट अभिमन्युपहँ इमि डारतहैं बान । जिमिगिरि शृंगहि घेरिकै जलबरषत जलदान ॥ बधत रह्यो बहुभटनकहँ यहिबिधिसों दृढ़घाय । जिमि सागर मथि महतझष लघु मीननकहँ खाय ॥ सोरठा ॥ पार्थतनयबलधाम सरत चक्रसम भ्रमततहँ । भयो अलख तेहियाम निज पुर शरके जालमधि ॥ चौपाई ॥ तहँ गोलबहु यहिओरके । भजिचले सुभट अथोरके ॥ अभिमन्युके शरघातसों । जिमिपात रंभसबातसों ॥ तब शल्यनृप बलधामको । सुत रुक्मरथ शुभ नामको ॥ इमिकह्यो सबसों टेरिकै । फिरिलरहु दुन्दुभि भेरिकै ॥ हम बधतयाहि बरबाणसों । कैलेतगहि सहप्राणसों ॥ इमि भाषिधनु टंकारिकै । अभिमन्यु भटहि प्रचारिकै ॥ हँकवाइरथ अतितोरसों । शरतीनि मारयो जोरसों ॥ अभिमन्यु तबअति कोपसों । भरि बीररसको ओपसों ॥ भोबधत ताकहँ डाटिकै ।

शिरकाटि युगभुज काटिकै ॥ बध रुक्म रथको देखिकै । तब तासु अनुचर तोखिकै ॥ बरबुद्धि विक्रम बेषके । जे जैनसैन अशेषके ॥ भटराजसुत शततरपिकै । तेहिघेरि शायक अरपिकै ॥ तहँ दयेताहि अदेखिकै । बधकरणको अवरेखिकै ॥ अभिमन्यु तबभट ठानसों । गन्धर्वअस्त्र विधानसों ॥ तहँ बिचरि तनकोनाशकै । भोनदत बदन सहासकै ॥ सोदेखि इतअतित्रास भो । तौ सुतहि शोच उसासभो ॥ दोहा ॥ तेहिक्षण दुर्योधन नृपति सह चतुरंगिनि सैन । बढ़िताकोंभिरि घेरिकलरि नहिं थिरिसको सचैन ॥ यहसुनिकै धृतराष्ट्रनृप कहे तासुरणकर्म । सुनि संजय मोहिं लगतहै अति आश्चर्य समर्म ॥ विमुखभयो मोसुवननृप तबके भटरणधीर । तासों भिरे प्रचारिकै कहो बुद्धि गंभीर ॥ सोरठा ॥ संजयकह्यो नरेश भगत देखि दुर्योधनहिं । डरपि त्यागिसो देश भगी सैन सबकौरवी ॥ चौपाई ॥ दल बिचलत लखिकै कृतबरमा । द्रोण द्रोण सुत पूरित परमा ॥ शकुनि बृहद्बल कर्ण सुवीरा । दुर्योधन भूपति रणधीरा ॥ अति विक्रमकारि करि धनुकरषत । भये पार्थ सुत पै शरबरषत ॥ तहँ अभिमन्यु अकथरण कीन्हें । क्षणमेंतिन्हैंविमुखकरिदीन्हें ॥ तिन्हैं बिमुखलखिकै तेहिक्षनमें । लक्ष्मणकुवँर कोपकरिमनमें ॥ थिररहु अब न भागुयहि रटसों । भिरतभयो अभिमन्यु सुभटसों ॥ तहँ लक्ष्मणहिं भिरत लखि तासों । फिरे द्रोण आदिक भरिभासों ॥ ते युगबन्धु सुवीर परस्पर । लगे हनन अति तीक्षणशरबर ॥ अब तू मरि देखत यमलोकहि । इमि सुनाय लक्ष्मण बलओकहि ॥ मारि क्षुरप्र सुबाण अदूषित । काटेउ चारुशीश मणि भूषित ॥ बधि लक्ष्मणहिं पार्थसुत तरज्यो । पुरुषसिंह सिंहहि सम गरज्यो ॥ लक्ष्मण मरयो भूप तेहिपल में । हाहाकार मच्यो यहि दलमें ॥ शोकाकुल नृप धीरज धारत । मारुमारु इमि भयो पुकारत ॥ तब कृपद्रोण करण कृत-

वरमा। सुभट बृहद्बल भूप अभरमा॥ अश्वत्थामा भट धनुधारी। येषट महारथी रणचारी॥ धनु टंकारि भिरे अति रिसिसों। बरषण लगे बाण सब दिसिसों॥ दोहा॥ तहँ सब दिशि शरसेत रचि तिनसबकहँ बिचलाय। पलटि जयद्रथ पहँचलो भट अभिमन्यु सचाय॥ तब तेहि अंतर मधिरहे जेते नृपभट जूह। ते सब आड़त भे बरषि तीक्षणबाण समूह॥ क्राथ नृपति को पुत्रअरु अरु कलिंग पतिभूप। अरु निषादपति सदल ये बिदित भयानकरूप॥ सोरठा॥ अगणित योधन मारि काटि असंख्यन बाणतहँ। भट अभिमन्यु प्रचारि बध्योक्राथ नृपके सुतहि॥ चौपाई॥ बिदितबीर अद्भुत रणकरता। धीर धुरीनधराधुरधरता॥ क्राथसुवनके जूझतराजा। भीतिभगे सबसुभट समाजा॥ फिरिकृपद्रोण कर्ण कृतबरमा। भूप बृहद्बल पूरित परमा॥ अरु अश्वत्थामा धनुधारी। येषटमहारथी रणचारी॥ घेरि ताहि धनुकर्षण लागे। बाणजाल बहु बर्षणलागे॥ तेहि क्षण भीमादिक भटरूरे। अति बिक्रम कीन्हें बलपूरे॥ सदल जयद्रथ इमिशर छाये। नाहिं सुतके ढिग आवन पाये॥ करि अभिमन्यु वीर विधिपालन। तिनषटरथिन बाणके जालन॥ छायकाटि अगणित शर तिनके। बचै न तरु गण लागे जिनके॥ बाण पचास द्रोण कहँ मारे। बृहद्बलहि शरबीस प्रहारे॥ असी बाण कृतबरमाहिं हनिकै। मारेकृपहि साठिशर गनिकै॥ दशशरमारे अश्वत्थामाहिं। एक सुबाण कर्णबलधामाहिं॥ हनि अमोघ अति तीक्षण तीरहि। बधतभयो वृन्दारक बीरहि॥ ताहि पचीसबाण अनियारे। मारिद्रोणसुत धनुटंकारे॥ हन्यो द्रोणसुतकहँ शर चोखो। पार्थ तनयभटबीर अनोखो॥ बहुरि द्रोणसुत धनुटंकारी। हनेताहिशर साठि प्रचारी॥ दोहा॥ अगणितशर सब भटन के काटिसुभट अभिमन्यु। फिरिअश्वत्थामहि हने तीस सुशर करिमन्यु॥ शतशर मार्यो द्रोणतेहि

कृपाचार्य दशवान । अश्वत्थामा आठशर बाइसकर्णअमान ॥ मारतभयो पचासशर नृपति वृहद्बल वीर । गरजत भो हनि वीसशर कृतबरमा रणधीर ॥ सोरठा ॥ भटअभिमन्यु अमान भ्रमत चक्रसम बरषिशर । दशदश तीक्षणबान हनत भयो सब भटनकहँ ॥ महिखरी ॥ फिरिकोशलपति वृहद्बल को वेधि तीक्षण बानसों । नृपकाटि धनुध्वज सूत तुरगन बधेशरहनि ठानसों ॥ कै बिरथ बिधनु महीपसों असिचर्म गहि रथत्यागि कै । भो चलतभट अभिमन्युपहँ अति क्रोधसों मन पागिकै ॥ तिमि देखि तेहि अभिमन्यु ताक्षण बाण तीक्षण मारिकै । हिय वेधि करि बध तासु गरजत भयो धनु टंकारिकै ॥ दशसहस योधा बधे तबलों पार्थसुत तेहि दिनतहां । भटद्रोण आदिक दुसहाविक्रम करत हे सबक्षणजहां ॥ बधि वृहद्बल नरपतिहि भट अभिमन्यु धनु टंकारिकै । शरकर्णिमारे करणभटके कर्ण माधि हुंकारिकै ॥ फिरि हनेबाण पचास कर्णहि कर्ण तितनेते- हिहने । इमि लरिपरस्पर उभय शोणित भरे तनअनुपमबने ॥ षटसचिव हे भटकर्णकेअति प्रबलपरदल दरगने । तेहिसमय तिनकहँ बधतभो अभिमन्यु हनिहनि शरघने ॥ फिरि मारि दशदशबाण सबकहँ बाणसबके काटिकै । मगधेशकेसुत अश्व- केतुहि बध्यो धनुबिधि डाटिकै ॥ दोहा ॥ कुंजरकेतन भोजनृप कोबधकरि तेहिकाल । चरत चक्रसम भटनपहँ रचत भयो शरजाल ॥ दुःशासनके सुतहने अभिमन्युहि दशबान । ताहि सात शर हनतभो भटअभिमन्यु अमान ॥ मारि सातशर क- हतभो भागिबचो तोतात । अबयहि क्षणतोहिं बधतहौं मारि बाण अवदात ॥ सोरठा ॥ इमि कहिकै जयकार्य्य बाणवज्र सम हनतभो । सोशर द्रोणाचार्य्य काटिदये शरतीनसों ॥ चौपाई ॥ तब अभिमन्यु कोप अतिकीन्हों । केतुद्रोणको द्वैकरिदीन्हों ॥ तीनिबाण नृपशल्यहि मारे । शल्यताहि नवबाण प्रहारे ॥ तब

अभिमन्यु काटिध्वज तासू । बधि सारथिहि मारिशर आसू ॥ षटशर हने शल्यके तनमें । मुरछित भयो भूप तेहिक्षनमें ॥ तब अभिमन्यु बिदित भटनायक । शत्रुंजयहि बध्योहनि शा- यक ॥ वध्यो चन्द्रकेतुहि रणकरकश । वध्यो सूर्य्य भासहिकरि शरकश ॥ मेघबर्चसहि बधिमहि डास्यो । बधि सुबर्चगहि धनु टंकास्यो ॥ बधिइन पांचभटन भटनोखो । शकुनिहि हनतभयो शरचोखो ॥ सौबल ताहि तीनिशरमारी । चिन्तित भो अति प्रबल बिचारी ॥ अद्भुत तासु युद्धबिधि देखी । द्विजसों कह्यो कर्ण अवरेखी ॥ शक्रसमान सुयुद्ध बिशारद । शक्र सुवन को सुत रणभारद ॥ अविरल बाण बज्रसम बाहत । क्रमसों सबहि बधन यहचाहत ॥ रुद्रसरिस रणबिधि अवगाहत । दावानल सम दल बनदाहत ॥ यहगुणि दयाधर्म्म मतिगहिये । अब याके बधकी बिधिकहिये ॥ यहसुनि बोले द्रोणाचारय । आजु करतयह अद्भुतकारय ॥ सबदिशि धनुमण्डल दरशावत । कोऊसुभट छिद्रनहिं पावत ॥ दोहा ॥ काटत सबके बाणअरु मारत सबकहँ बान । निजपर शरके जालमधि बिचरत चक्र समान ॥ मारिमारि शरबज्रसम कीन्हेसि पीड़ितमोहि । तऊ मोहिं अतिहोतसुख तासुपराक्रम जोहि ॥ सोरठा ॥ यहसुनि करण बिचारि कहतभयो इमिद्रोणसों । आजुहि सबदल मारि देनचहत यह पितुहितय ॥ चौपाई ॥ गुणिनिज धर्महि धीरज धरिकै । हैंअबहम इतठाढ़े अरिकै ॥ नातरुतासु शरनके धाव- न । चाहत पीड़ित प्राणपरावन ॥ सुनियह सूत सुवनकी बानी । द्रोणाचार्य्य कह्यो अनुमानी ॥ हमअर्जुनहि दये मनमानत । कवच अभेद्य तौनयह जानत ॥ जोबधि सकहुतासु हयसूतहि । काटिसकहु जोधनु मजबूतहि ॥ पहिले बिरथ बिधनुकरि पाछे । लहिहौ बधिबेकी विधिआछे ॥ सरथ सधनुयह बिचरत जब- लों । सकैं न जीति सुरासुर तबलों ॥ यहसुनि करण धनुष

विधिठाटे। प्रथमहितासु शरासनकाटे॥ भोजभूप अश्वनबधि डारे। उभयपारस्निन गौतममारे॥ तिसिहि सारथीको बधकीन्हों। बाणतानिकै चोखोचीन्हों॥ इमिकरि विरथ विधनु सुदलीन्हे। सिगरेरथी बाणझरिकीन्हे॥ तब अभिमन्यु चर्मअसि गहिकै। बलसों कूदिगगन मधिरहिकै॥ घनसम गरजत विक्रमअतिसों। भ्रमतभयोअसिविधिकी गतिसों॥ तबसबगुणि निपतत ममभूरध। तकितकि तजनलगे शरऊरध॥ तहांद्रोण करि सविधि निरीक्षण। काटो खड्गमारि शरतीक्षण॥ तबराधेय वीर दृढ़घायक। काटोचर्म मारि बहुशायक॥ ह्वैविनु खड्ग चर्मरिसिछायो। फिरि अभिमन्यु भूमिपै आयो॥ दोहा॥ गरजि सिंहसम वीरतब लैरथांग दृढ़चक्र। चलो द्रोणपहँ वेगसोंकरि दीरघ भ्रूवक्र॥ चक्रपाणि सम लसतभो चक्रगहे सोवीर। देखि भयानक रूपतेहि भेसब सुभट अधीर॥ आयत चख कुन्तल विशद रुधिर भरो वरगात। अनुपमभट अभिमन्यु तहँ अनुपमभयो विभात॥ सोरठा॥ लगे अनगिने बाण चूरचूरभो चक्र वह। तब अभिमन्यु अमान गहत भयो अतिगुरुगदा॥ चौपाई॥ गहि गुरुगदा पुरुष पञ्चानन। चलो द्रोणसुतको तनभानन॥ लखितेहि गुणि करता बधरुजको। रथतजि कूदिगयो सुतद्विजको॥ तब बधिसूत तुरग सबतासू। बध्यो कालिकेयहि हनि आसू॥ मरण बन्धुको लखितेहि क्षनमें। शकुनिभयो शोकाकुल मनमें॥ कालिकेय भटके अनुचारी। सातबधे गुरुगदा प्रहारी॥ बहुरि बधे दशरथी बसाती। पार्थतनय अरिसैन विघाती॥ रथी सातबधि केकय थरके। बध्यो द्विरददश दीरघ करके॥ कूदिजायकरि शृंगखसानिसी। हनिप्रचारि गुरुगदा असनिसी॥ दुःशासनके सुतके रथके। बधितुरंग सब गरुवे गथके॥ तब तो तनय तनय भटभारी। दीर्घगदागहि भिरयो प्रचारी॥ तेयुग बन्धुविदितरणकरता। बधिपरदल शोणितनद

भरता ॥ हांकि हांकि सबादिशि चरिचरिकै । बिधिवत गदायुद्ध करिकारिकै ॥ मुरछित ह्वैह्वै महिपै गिरिगिरि । राजत भये मृतकसम थिरिथिरि ॥ महाश्रमित बलबुद्धि निकेतन । पार्थ तनय न प्रथमभो चेतन ॥ चेतिप्रथम उद्भट रण करकश । दुःशासनको सुतअति धरकश ॥ उठोसँभारिभुजनतन देखत । तेहि अचेत लखिबध अवरेखत ॥ दोहा ॥ दीर्घगदागहि व्योम भरि कारिकशीश मनमान । हन्योतासु शिरमधितबहिभोकुमार गतप्रान ॥ द्विरद यूथसमदलमरदि पार्थतनय जयकाज । रण मधि परोअप्राण ह्वै यथावधो मृगराज ॥ निजकरमारेदशसहस योधन सहित अनूप । लसोलसत तारन सहित जिमि सुधांशु शुचिरूप ॥ महिखरी ॥ तहँ रुण्डमुण्ड असंख्य मधिइमि लसो सो शोणित भरो । बहु राहु केतु अनेक सँगलै सूरमनु सोवत परो ॥ ढिगजाय निरखनलगे तेहि सब सुभट ह्वै सबादिशि खरे । मनु गिरो महिपै इन्द्र धनुषहि लखतजन अचरजभरे ॥ लखि मरोभट अभिमन्यु कहँ तो तनय अति आनँद लह्यो । बहु सुबुधि जन लहि दुसह दुख भो युद्ध अधरम इमिकह्यो ॥ तहँ किते भट अभिमन्युकी बरबीरता बरणत भये । अरुतासु शरसों भिदे पीड़ित किते सुख दुख सँगलये ॥ दोहा ॥ जानि मरण अभिमन्युको पांडव भट समुदाय । मोहित ह्वै जो दुख लहो सो कासों कहिजाय ॥ इतनेमें सन्ध्या निरखि जय दुन्दुभि बजवाय । आवतभयो निवासथर कुरुपति सदलसचाय ॥ सोरठा ॥ शोकाकुल भरि मोह पांडव निज डेरन गये । शोचत दुसह बिछोह छोहपात्र अभिमन्यु कर ॥

इतिश्रीद्रोणपर्वणिअभिमन्युवधवर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

दोहा ॥ तेहि तीजे दिनकी रजनि मधि अति दुखसोंग्रस्त । धर्म नृपति कहँ घेरिउत बैठे नृपति समस्त ॥ बरणि बरणि अभिमन्युके गुण बिक्रम अभिराम । नृपति युधिष्ठिर करतभे

अति विलाप तेहियाम ॥ गीता ॥ गहे करुणा करतजहँ नृपधर्म पूरितमोह। तहांआये व्यासमुनि लखिसमय करिअति छोह॥ देखि व्यासहि धर्म नृप बैठारि करि सत्कार। कह्योजिमि लरि गयो बुधिबर विदित सुभट कुमार॥ शोक दुखसों भरो भूपहि जानि बोले व्यास। भूप करुणा त्यागकरि अब करौ धीरज पास॥ मृत्युलोक प्रसिद्ध यह जो धरत तन इत आय। मृत्यु वश सो होत विधिवत समय बिरचित पाय॥ बचन यह सुनि धीर धरि इमि कह्यो नृपति अचाय। मृत्यु को किमि भई प्रगटित कहो मुनि समुझाय॥ धर्म नृपको बचन यहसुनि कह्यो मुनिवर व्यास। सुनो भूपति कहत हैं हम पूर्वको इतिहास॥ नृप अकम्पन सों कह्यो जो नारदमुनि तपधाम। पाप दुख शोकघ्न है इतिहास सो अभिराम॥ रह्यो सतयुग में अकम्पन भूप सो रणमाह। युद्धकरि अतिघोर अरिबश भयो हेनरनाह॥ तासुसत अति प्रबलहो हरिरहो ताकोनाम। मस्यो सो तेहिठौर करिकै परम दुस्तर काम॥ पुत्र बिक्रम सों अकम्पन विजय तेहिदिनपाय। तदनु शोकाकुल भयो निज मरणपै मनलाय॥ जानि भूपहि शोकबश तहँ सुमुनि नारद आय। भये बैठत यथाबिधि सत्कार विधिवत पाय॥ करत करुणा भूप सुतको बरणि गुण व्यवसाय। कियो नारद सुमुनि सों नृप प्रश्न यह सुखदाय॥ शक्रसम अति बिक्रमी ममपुत्र बलवधि भौन। मृत्युके बश भयो मुनिको मृत्यु कहिये तौन॥ बचन यहसुनि कह्यो नारद सुनो नृप मतिमान। कहत हैं हम जन्म आदिक तासु सब व्याख्यान॥ प्रथमबिरचो जगत जब बिधि बिरचि भौतिक भूरि। जननके समुदाय सो तब गयो सब जगपूरि॥ रही उत्पति होततब नहिं होतहो संहार। भई पीड़ित भूमि तबलहि जननको अतिभार॥ जायजाते होत क्रमसों नाश सो उपचार। रचनको बिधिकियो शोच न लही

तासु निकार ॥ लहेबिनु उपचार बिधिके क्रोधभो त्यहिकाल। भयो प्रगटित चखन सों तब ज्वालजाल कराल ॥ लगो भस्मित होन तासों सकल जगत सत्रास। देखि सो करि दया पशुपति गये बिधिके पास ॥ देखि शिवहि बिरंचि बूझ्यो आगमनको काज। कह्यो शिव केहिहेत जारत सकल भूत समाज ॥ यत्नकरि जेहि रच्यो तेहि मति इबिधि नाशो नाथ। क्षमो क्रोधानलहि सुनि ममबिनय होइ न नाथ ॥ शम्भुके ये वचन सुनिकै बारिजासन ईन। करी क्रोधानलहि फिरि निज आत्मामें लीन ॥ लीन विधिमें भयो क्रोधज अग्नि को रुचि जाल। ज्वालते तेहितहां प्रगटित भई युवति कराल ॥ अरुण चखमुख जासु श्यामलगात अनुपम रूप। कुण्डलादिक सकल भूषण धरे सो वह भूप ॥ भई ठाढ़ी बिश्वपति के जाय दक्षिण ओर। कह्यो तासों बिश्वपति करि कृपायुनचखकोर ॥ मृत्यु अब तुमकरौ क्रमसों प्रजन को संहार। करी तुम कहँ प्रगट हम यहि हेतु यहि उपचार ॥ वचन यह सुनि मृत्यु लागी रुदन करन सशोक। तासु आश लये करता करन को करिओक ॥ महा दुख सों रुदन करिकै मृत्यु धीरज धारि। कहोइमि चतुरास्यसों सोकर्म निंद्य विचारि ॥ नाथ कत मोहिंकरी प्रगटित क्रूर कारजहेत। जाहिअधम अधर्म शंकित होतहै ममचेत ॥ मातु पितु सुत बन्धु जिनके मरहिंगे तेभूरि। पीठि उर शिर रुदन करिहैं महा दुखसों पूरि ॥ दशासो अवलोकि ह्वैहै महाकरुणा तात। तहांनिरदै भयेह्वैहै पापअसह अघात ॥ सदन जनके जावनाहिं हम सुनो करुणाऐन। धेनुकाश्रम जायकै हमकरब तप गहिचैन ॥ बचन यह सुनि कह्यो वेधा प्रजनके क्षयकाज। तोहिं प्रगटित करीहमसों करो तजि डरलाज ॥ दीनह्वै करि गात कम्पित मृत्यु युग करजोरि। कही प्रभु यहि कर्ममें नहिंहोति थिरमति मोरि ॥ अम्बुजासन

बचन यहसुनि रहो ताक्षण मौन । बन्दि पगसो धेनुकाश्रम ओर कीन्होंगोन ॥ धेनुकाश्रम जाय इन्द्रिन नियमि सविधि सहर्ष । रहीठाढ़ी एकपदसों पद्म षोड़शवर्ष ॥ भांति यहिसब पुण्यथरमें प्रेमपूरित जाय । कइक अयुत हजार बरषन कियो तप मनलाय ॥ कृपाकरि तब अम्बुजासन जाय ताके पास । कह्यो चरि तपउग्र तू कत करति इतक प्रयास ॥ मृत्यु यह सुनि कह्यो प्रभुमैं चहतिहौं चरपर्म । मोहिं करन न परै हिंसा कर्म अदय अधर्म ॥ बारिजासन कह्यो सुनु ममवचन व्यर्थ न होत । जीव करषण करोतुम तजिशङ्क करुणा सोत ॥ जीव करषण करै कोनहिं पाप ह्वैहै तोहि । हेतु याके कहतहौं सो मानु श्रेयद जोहि ॥ बूंद आंशुनके गिरेतो चखन सों ते सर्व । बिबिध बिाधके रोगभैहैं हरण बलबुधि गर्व ॥ जीर्णकरि तेहि अयश लैहैं करषियो तू प्रान । तुम्हैं अयश अधर्म सों नहिं होयगो पहिंचान ॥ बचन यहसुनि कही ताक्षण मृत्युयुग कर जोरि । नाथशासन देतहौ सोकरबहम प्रणतोरि ॥ लोभचिंता मोहईर्षा बिसनरिस अविचार । देहुमोहिं सहाय कर्त्ता सिद्धि यह उपचार ॥ बचन यहसुनि कह्यो बेधा यह तथास्तु सवार । मृत्यु तब संहार करिबो कियोतहँ स्वीकार ॥ रोगवशकै समर में कैकरि असत व्यवहार । मरत जननहिं मृत्युमारति करिसु-दण्ड प्रहार ॥ देव मानुष आदि जितने जन्तुजग बिधिचारि । नशै आयू मृत्युवश सब होतलेहु बिचारि ॥ समरमें मरिगयो सुरपुर तनय तो सुनुभूप । त्यागिदुख धरिधीर भगवत भजन करहु अनूप ॥ सुमुनि नारदसों इविधि सुनि मृत्युको व्याख्या-न । नृप अकम्पन शोक त्यागित कियोकरि अनुमान ॥ मृत्यु ऐसेभईऐसे चरितहैं मतिमान । धीरधरि अब जीतिबेको गुणो विशद बिधान ॥ व्यासमुनि तपधामसों सुनिवचन परम पुनी-त । करिप्रशंसा कह्यो फिरिइमि धर्म भूप सनीत ॥ पूर्व पुरुष

महान जनकेइ बिधिके इतिहास । औरकहिये सुमुनिजाते लहै चित्तसुपास ॥ प्रश्न यहसुनि कहो मुनिसुनुभूप बलबुधिधाम । रह्यो संजय भूमिपति निजधर्मयुत अभिराम ॥ सुमुनि नारद सुऋषि पर्वतरहे ताकेमित्र । सदा नृपढिग रहत हे ये कथत पूर्वचरित्र ॥ एकदिन ये उभयमुनि नृपरहे बैठेयत्र । चारुकन्या भूमिपातिकी मुदितआई तत्र ॥ सुमुनि पर्वत देखि ताकहँ कहत भे मुसुकाय । कौनकी ये सुता अनुपम देतिआनँदछाय ॥ भूप बोले सुतामम यह चहतबर गुणखानि । सुनत नारद कहोदीजै मोहिं यहिगहि पानि ॥ बचन नारदको सुनत यहभरेपर्वतकोप । कह्यो याके बरणको मैं कियो मनमेंचोप ॥ ताहि मांगी प्रथम तुमतौ सुनो ऐसोशाप । स्वर्गअब मतिजाहु तुम यहिकर्म को लहिपाप ॥ कह्यो नारद गुणेमनमें नहीं भार्याहोति । होतिबि-धिवतकिये पाणिग्रहण अग्निउदोति ॥ शापदीन्हों बिनाकारण सुनोताते येहु । मोहिं बिनुमति कबहुँ तुमहूँ स्वर्गको पथलेहु ॥ परस्पर इमि शापदैदै उभयमुनि तपगेह । बसे संजय नृपतिके घर गहे सरस सनेह ॥ वेदपारग बिप्रअगणित नृपति संजय ल्याय । संगतिनके कियो सेवा पुत्रहित मनलाय ॥ दोहा ॥ कछु दिनमें सबद्विज कह्यो नारदसों यशलेहु । नृपति चहतहैं सुत नृपहि नृपति सदृश सुतदेहु ॥ सो सुनिकै करिअतिकृपा नारद मुनि तपधाम । कहोभूप मांगो चहत जैसोसुत अभिराम ॥ जयकरी ॥ नृपसंजय सुनि इच्छितबैन । कहतभये इमिपायसचैन ॥ सुवनदेहुमुनि बलबुधिधाम । दातासुयशी शूरललाम ॥ तेजवान अरिदमन अनूप । मन्मथसदृश मनोहररूप ॥ मूत्रपुरीषस्वेद कफजासु । कनकहोइ तनते कढ़ि आसु ॥ सो सुनिकैनारदमुनि राय । कह्यो तथास्तु कृपासरसाय ॥ लहिमुनिवरकी कृपा बि-शाल । तैसोसुवनलहउ क्षितिपाल ॥ भूपभयोतबधनपतिएक । रचेकनकके धाम अनेक ॥ सरवापीपरिखा प्राकार । और जिते

नृपसाजउदार ॥ रचे कनककेनृपमतिमान । देनलगो विप्रनक-
हँदान॥सुनि यहखबरिचोर समुदाय। निशि निशीथमें नृपघर
आय ॥ लागे करन मंत्रनिरधार । लेहिं कहासो करौविचार ॥
तब सब कीन्ह्यो यह सिद्धान्त । लीजै भूपतिको सुत दान्त ॥
जौन कनक को प्रभव अमन्द । लीन्हे ताहि होब निरदन्द ॥
यह विचारकरि तस्करसर्ब । लिये भूमिपतिको सुतसर्ब ॥ गये
ताहि लै जहँ बनघोर । तहांजाय अविचारी चोर ॥ कनकहेत
सब करिकै गौर । फारो तासु उदर तेहि ठौर ॥ दोहा ॥ कनक
लखे नहिं उदरमधि तबते सब करिशोच । लाइ परस्पर दोष
तहँ लरे मरे मतिपोच ॥ नाश निरखि प्रियपुत्रको शोकाकुल
ह्वै भूप । लागोकरन विलाप अति ह्वै व्याकुल गतरूप ॥
भूपहि करत बिलापगुणि नारदमुनि तहँजाय । मे समुझावत
भूपकहँ पावनिकथासुनाय ॥ सुनो भूप भो मृत्युबश मरुतभूप
अभिराम । जाहिकराये यज्ञइत आयजीव तपधाम ॥ जाहि
दये भगवानप्रभु धनअसंख्य परतक्ष । मख असंख्य कीन्हे
सबिधि मरुत वेदविद दक्ष ॥ देव पितर गन्धर्व ऋषि साध्य
प्रकट जहँ आय । भये सदस्य सप्रेमरहि लखिनृप तपगहि
चाय ॥ मणि सुवर्ण अन धेनु धन बसन भूमिमनमान । जेहि
दीन्हे द्विजवरनकहँ प्रतिदिन सहित विधान ॥ सोऊ मरो न
थिर रहो होत महाबलकाल । कहा आपने सुवनको शोचकरो
क्षितिपाल ॥ नृपसुहोत्रभो कालवश नीति निपुण बुधिऐन ।
एक बीर जो जगत में हो बरणो जगजैन ॥ जाके तप बलसों
जलदपति अनुशासन पाय । सुबरण बरषैं प्रतिबरष हरषभरे
नभछाय ॥ नदी हिरण्यमयी बहै जासु नगरके पास । जामें हैं
जलजंतु सब सुवरणके छबिरास ॥ अश्वमेध अगणित किये
कुरुजांगल में भूप । दिये असंख्यन द्विजन कहँ बांछितबस्तु
अनूप ॥ सोऊ मरो न थिर रहो होत महाबलकाल । कहा आ-

पने सुवन को शोचकरौ क्षितिपाल ॥ अंग नृपति जगजैन जिहि किये हजारन यज्ञ । दई असंख्यन दक्षिणा विप्रनकहँ सरवज्ञ ॥ सोऊ मरो न थिर रहो होत महाबल काल । कहा आपने सुवनको शोचकरो क्षितिपाल ॥ भूपउशीनरको सुवन शिवि क्षितिपाल अमान । किये असंख्यनयज्ञतेहिदिये असंख्यन दान ॥ अगणित गिरि पकवान के गोरसके सर भूरि । सितायुक्त जो रहतहो सदारचे मुद पूरि ॥ खाहुखाहु पकवान अरु करौ क्षीर दधिपान । जासु राज्य में शब्द यह सुनियत हेनहिं आन ॥ अलंकारयुत गाय तेहि जिती दई करियज्ञ । तिनकी गिनती करिसकै कोऐसे सरवज्ञ ॥ अक्षय धन को बर रहो लह्यो शम्भुसो तौन । भूपति तासु बिभूतिकी कथासकै कहि कौन ॥ सोऊ मरो न थिर रहो होत महाबल काल । कहा आपने सुवन को शोच करो क्षितिपाल ॥ भे अदृश्य इत आइ कै दाशरथी प्रभुराम । जासु नाम जपि भक्तियुत जीवलहत परधाम ॥ भयो भगीरथ भूमिपति सार्ब्व भौम विख्यात । गंगहिल्यायो भूमिपै जो तपबलसों तात ॥ भूषित सुवरण हेमसों सहसनकन्या चारु । बिप्रन कहँ दीन्हीं सरुचि जौन भूमि भरतारु ॥ प्रतिकन्या रथएक प्रति रथशत गज सँगलाय । प्रति रथ तुरग हजार अरु प्रतिरथ शतशतगाय ॥ मणि सुबरण भूषित सबै सहित दक्षिणाभूरि । जिहि दीन्हीं द्विजवरनकहँ महामोदसों पूरि ॥ सोऊ मरो न थिररहो होतमहाबलकाल । कहा आपने सुवन को शोचकरो क्षितिपाल ॥ इल्विल भूपति को सुवन हो दिलीप नरनाह । सकल भूमिपति गहतहे जासु भजनकी छाह ॥ अश्वमेध मख आदिमख किये असंख्यन जौन । दियो दक्षिणा जितकनहिं कह्योजात सबतौन ॥ सोऊ मरो न थिररहो होतमहाबल काल । कहा आपने सुवन को शोचकरो क्षितिपाल ॥ जयकरी ॥ होयुवनाश्व भूमिभरतार । सो

गो खेलन विशदाशिकार ॥ बनमें भयो पियासोतौन । देख्यो जाय यज्ञको भौन ॥ तहां सुपात्र मध्यघृत देखि । कियो पान पानी अवरेखि ॥ तासों तासु सुउरमें भूप । रह्योगर्भ अतिअमलअनूप ॥ जबभोगर्भ पुष्ट लहिमास । तबनासत्य जाइ नृप पास ॥ कछु उपाय करि ते बुधिधाम । बाहेरकियो पुत्र अभिराम ॥ नृपहे पुत्रहि लीन्हें गोद । तहँ आये सुर करतबिनोद ॥ कह्यो परस्पर इमिकरि छोह । अबका धारि करिहि यह द्रोह ॥ तब करि कृपा कहे सुरराज । मांधारे जीवनके काज ॥ इमि कहि शक्र मोदसों जाय । अँगुरी दयो बालमुख नाय ॥ तासों कढ़ी क्षीरकी धार । तृप्तभयो पी भूपकुमार ॥ तिहि पयके प्रभाव क्षितिरौन । द्वादशबार्षिक समभो तौन ॥ मांधारे जो ऐसो बैन । कहेउ शक्र करि कृपा सचैन ॥ तातें मान्धाता यह नाम । भयो तासुसुनु नृप गुणधाम ॥ सो मान्धाता भूप उदार । भयो सर्ब महिको भरतार ॥ एक दिवस में सबदिशि घूमि । बरषि बाण जीती सबभूमि ॥ दोहा ॥ किये असंख्यन यज्ञ अरु दई दक्षिणाभूरि । ग्राम असंख्यन द्विजन कहँ दिये मोदसों पूरि ॥ सोऊमरो न थिररह्यो होत महाबलकाल । कहा आपन सुवन को शोच करत क्षितिपाल ॥ नृप ययातिसुत नहुषको जासुकला बिख्यात । अगणितमख बहु बार जिहि किय वेद बिधिज्ञात ॥ प्रतिक्षण प्रतिदिन द्विजन कहँ तृप्त करतहो राय । दान धर्म नृप नीतिसों बिरहत रह्यो सचाय ॥ सोऊमरो न थिररह्यो होत महाबलकाल । कहा आपने सुवनको शोचकरत क्षितिपाल ॥ अम्बरीष नाभागको सुवन भूप बलभौन । सहसन भूपनसों लही जीति एक दिन जौन ॥ किये असंख्यन यज्ञजेहि भूरि दक्षिणादान । रह्यो जाहि प्रणतीनि निति रणजय अरु मखदान ॥ जीति हजारन नृपन कहँ दये द्विजनको जौन । लहै जासु तुलताभयो ऐसो दूजो

कौन ॥ सोऊ मरो न थिररहो होत महाबल काल । कहा आपने सुवनको शोचकरत महिपाल ॥ हो शशिबिन्दु नृपालमणि सकल कलामें दक्ष । जासुयज्ञमें सुमनसब भये सदस्यप्रदक्ष ॥ लाख युवति ताके रहीं त्रियपति सहसकुमार । तेजवान दाता यशी सबै यज्ञ करतार ॥ अश्वमेध शुभयज्ञ करि नृप शशिबिन्दु सुजान । तिन सब पुत्रनको दयो विप्रवरण कहँ दान ॥ शतशत रथ शत शत द्विरद त्रिदश तुरंग सदाय । प्रति तुरगन सँग करिदिये महामोदसों छाय ॥ एकएक श्यामा तरुणि प्रति कुमार दे भूप । प्रति तिय शतगज गजनप्रति शतरथ दयेअनूप ॥ प्रतिरथ शतशत तुरग अरु प्रतिहय गऊहजार। अजापांच शतप्रतिगऊ दई भूमि भरतार ॥ कोश कोशके बिस्तरित भोज्यबस्तुके ढेर । जासु यज्ञके अन्तमें उबरिरहे सब फेर ॥ सोऊमरो न थिररहो होत महाबल काल । कहा आपने सुवनको शोच करत क्षितिपाल ॥ होगय भूप सुजान जो परम प्रेमसों पूरि । करतभयो शतबरषलौं अविच्छिन्न मखभूरि ॥ लहिशुचि आहुति शतबरष हुतभुक्कै संतुष्टह्वै प्रसन्न नृपसों कहो नृपमांगो बरपुष्ट ॥ तब जोजो भायो नृपहि लैसोसो बरदान । लस्यो भूमिपै प्रबलह्वै प्रतपित तरणिसमान । सोऊ मरो न थिररहो होत महाबल काल । कहा आपने सुवन को शोचकरत क्षितिपाल ॥ होसंकृत नृपको सुवन रन्तिदेव मति पीन । दोय लाख जाकेरहे करता पाकप्रवीन ॥ भोजन हित अतिथीनके पशु यकईस हजार । बधेजात हे रोज जहँ सुनो भूमि भरतार ॥ निति चर्मनके ढेरसों कढ़ो जुबारि प्रवाह । चर्मण्वती नदीवही सोई अगम अथाह ॥ दान यज्ञको जाहिहो नित्य सुइष्ट प्रयोग । द्विज करतलसों जासुकर क्षणनाहिं लहो बियोग ॥ जासुकोष ऐश्वर्य्यको निरखिसमान बिभात । सुरपति अरु धनपाल निति मनमेंरहे सिहात ॥ सोऊमरो न थिररहो

होत महाबल काल। कहा आपने सुवनको शोचकरत क्षिति-
पाल॥ सुवनभूप दुष्यन्तको भरतभूप बलभौन। रदगाहिगज
सुप्रतीक कहँ निजवश कीन्हों जौन॥ अश्वमेध आदिक स-
कलमख कीन्हों बहुबार। कियो विश्वजित यज्ञजो प्रबलभूमि
भरतार॥ मणिसुवरण भूषण बसन भूमि सवत्सागाय। अग-
णित जासों लहतहे नित्यविप्र समुदाय॥ सोऊ मरो न थिर
रहो होत महाबलकाल। कहा आपने सुवनको शोच करत
क्षितिपाल॥ पृथुभूपति क्षितिपालमणि जाके सुगुण अनेक।
ब्रह्मानिज करसोंकियो जाहि राज्यअभिषेक॥ महिजाकी पुत्री
भई ताते पृथ्वीनाम। कीन्हें अगणितयज्ञजिहि किये अमानुष
काम॥ सोऊ मरो न थिररहो होतमहाबल काल। कहाआपने
सुवनको शोचकरत क्षितिपाल॥ परशुराम अवतारजो जासु
कीर्त्ति विख्यात। समयपायकै नहिंरहिहि तिनहूँको यहगात॥
सोरठा॥ संजयनृप मतिमान सुनिषोड़श नृपकीकथा। त्यागि
मोहअज्ञान बन्देमुनिके कमलपद॥ तब नारदमुनिराय कह्यो
भूपसों करिकृपा। मनवांछित सुखदाय बरमांगो संजयनृपति॥
सुनिसंजय क्षितिपाल पाणिजोरि मुनिसों कह्यो। मुनिकरिकृपा
विशाल तुम्हेंरुचै सो देहुअब॥जयकरी॥ सहमुनिकै नारदमुणि
सुत्र। कीन्हों प्रगट तासु वहपुत्र॥ लहिनिज पुत्रभूप सुखपा-
य। मुनिको पूजनकियो सचाय॥ लहि अपमृत्यु भूपसुततौन।
कीन्हेंरहो निरयमधिगौन॥ तातेमुनिको तपबलपाय। आयो
इतै मोदसोंछाय॥ धसिपरदल मधिकरि अतियुद्ध। नृपअभि-
मन्यु त्यागितनशुद्ध॥ सुरसुरनाथ बसतहैंयत्र। जायसमुदमल
शतहे तत्र॥ नहिंइत आइहि सोधलत्यागि। तजोशोकधीरज
सोंपागि॥ इमि कहि व्यास गये निजधाम। भये अशोक भूप
गुणग्राम॥ संशप्तकन जीति तेहिधाम। निजदिशि चलोपार्थ
अभिराम॥ मगमें कह्यो कृष्णसों बैन। तातहोत मम हृदय

अचैन ॥ कम्पित तपित होत ममगात । बहुविधिके अपशकु-
न लखात ॥ नृपहैं कुशलन धौं सहभाय । ऐसो अनरथ परत
लखाय ॥ यह सुनिकृष्ण कह्यो अनुमानि । नृपको शोच परत
नहिं जानि ॥ और बिघ्नकछु जानोजात । उतलों चलो धीर
धरितात ॥ इमि बतरात उभयरणधीर । आवत भे निज दल
के तीर ॥ सुने न जय दुन्दुभिकोशोर । पारथकीन्ह्यों शोचअ-
थोर ॥ दोहा ॥ बजत न दुन्दुभि शंखअरु गायक करतनगान ।
बन्दीजन नहिं यशपढ़त भो कछु अनरबिधान ॥ है हत श्री
सब सैनअरु नहिंकोऊ सबिधान । मम सम्मुखचख करत हैं
भो कछु अनर महान ॥ रोला ॥ शोक पूरित सकल जन लहि
परतव्याकुल मोहि । गिरतसबके चखनसों जलधार मो कहँ
जोहि ॥ करत इमि अनुमान नृपके शिविरमधिसों जाय । तहां
सबकहँ निरखि बैठे भरे शोक अचाय ॥ भरे करुणा कह्यो पा-
रथ सुनो हे भट सर्ब । परतनाहिं अभिमन्यु लखि जो बिदित
बीर अखर्ब ॥ सुन्योहोहमआजु बिरच्यो द्रोणचक्रव्यूह । तासु
मधि तौ नहिंगयो गहि तोरिबे को ऊह ॥ रहे तासों कहे ताम-
धि जाइबे की डौर । कही नहिंकटिआइबेको घातजौनसगौर ॥
मानि सबको बचन करिकै ब्यूहमध्य प्रवेश । मारि तौ नहिं
गयो अनुपम बीरलरि तेहि देश ॥ सिंहसम अति बिक्रमीअ-
तिरथी अरिदलजैन । प्राणसम मोहिं परमप्रियसुतसकलगुण
को ऐन ॥ यशी सुबुधि सुशील सुकृती तेजवान बिभात । गयो
हति अभिमन्यु तौ हमतजब अब यहगात ॥ दोहा ॥ जलजन-
यन कुंचित चिकुर स्मित मुखबाहु बिशाल । आयतउर घन-
नादकरि कलभ समान बिशाल ॥ बालवृद्धसम मंत्रबिद परम
मनोहररूप । गुरुशासनकृत नमितरहि कहिप्रियबचनअनूप ॥
चौपाई ॥ परमपियारो सब गुरुजनको । कृतीकृतज्ञ शुद्धअतिमन
को ॥ जो अभिमन्यु मरोरे भाई । तो अब मोकहँ मरे बड़ाई ॥

सादर शालवृक्षसम बाढ़ो । मत्त द्विरदसम भयो उकाढ़ो ॥ सब धनुधर सों गुरुता गहिकै । बिलसत भयो प्रशंसा लहिकै ॥ अनुचितकहत करतजेहि कबहूं । लह्यो न काहू तबहूं अबहूं ॥ जो जूझ्यो ऐसोसुत आरय । तौ अब मोहिं मरब बरकारय ॥ वज्रसदृश मम हियो अनैसो । जो नहिं कढ़त पायदुख ऐसो ॥ अति प्रियसुतको मरिबो सुनिकै । मरहि सुभद्रा शिरउर धुनिकै ॥ सबतियमम बिक्रमाहिं निदरिहैं । मरिसुत शोकागिनि में जरिहैं ॥ समुझि तासुगुण रूपबड़ाई । धीर न धरतबनत रे भाई ॥ मणिमय शय्या पै हो बिलसत । सो मरिभयो भूमि पै निवसत ॥ शुचिसुकुमारि युवति जेहितनसों । बिलसत रही मोदगहि मनसों ॥ तासों जम्बुक काग बिनोदत । यहदुखपरशु हियो मम खोदत ॥ दूरि खरेरहि शुचिपद गावत । जेहिबन्दीजन रहे जगावत ॥ जुरे गीधसो गात बिदीरन । क्वैहैं करत धरतमन धीरन ॥ हायन अब निजसगुण लखाइहि । तात तात कहि मोढिग आइहि ॥ दोहा ॥ भीरपरे मम आगमन चाहि चाहि अनखाय । तनत्यागो ह्वैहै सुवन यहदुख सहोनजाय ॥ इविधि भरोसुत शोकसों रोदन करत अचैन । पार्थहि केशव अंक लै कहत भये ये बैन ॥ चौपाई ॥ मति इमि शोककरहु हे आरय । है सबकहँ निरमित यह कारय ॥ है विशेषसों यहगतिवाकी । क्षत्रिहि युद्ध जीविका जाकी ॥ परमपुण्य कृत शूर सोहावन । मरि रणमध्य लहत पदपावन ॥ सब सुबीर इमि मरिबो चाहत । समर अग्निमधि धसितन दाहत ॥ गो सुरपुर अभिमन्यु सुबीरा । त्यागिशोक अबधारहुधीरा ॥ तुम्हैं बिकल इमि लखि दुखभारे । भे अधीर सब बन्धु तिहारे ॥ धरहु धीर तुम परमसयाने । करौ जौन करतब अनुमाने ॥ पारथ वचन कृष्ण के सुनिकै । बन्धुन सों इमि बोले गुनिकै ॥ करिकै सो बिक्रम प्रणधारी । किमिजूझ्यो ममसुत रणचारी ॥ कहां रहैं

सब युद्ध बिचक्षण । कत न करो ममसुतको रक्षण ॥ हीनपराक्रम हौ तुम सिगरे । आपुहि आपुहि गनत अदिगरे ॥ कवच धनुष आयुध बहुबिधिके । हौधारे सबहित छबिसिधिके ॥ निजजीवनकी आशा गहिगहि । सके न रक्षणकरिढिग रहिरहि ॥ इमि सक्रोध अर्जुनहिं निहारी । कोऊसको न बोलि बिचारी ॥ तबउसासलै पूरित दुखसों । कहोधर्म भूपतिरिजुरुखसों ॥ जिमि रचि व्यूहद्रोण धनुकरषत । चलो बधतभटशायकबरषत ॥ दोहा ॥ व्यूहभेदि दलमधि प्रबिशि जिमिअभिमन्युअभर्म । लरि जैसे जिमि बधिगयो कह्योतौन नृपधर्म ॥ शिवबरके बल सिंधुपति जिमिआड़ेउ दलसर्ब । पृथक्पृथक्सो सबकह्यो धर्ममहीप अखर्ब ॥ सुनि सुतको बिक्रम महत महामोहसोंपूरि । ह्वैअचेत महिपैगिरो पार्थशोक करिभूरि ॥ रोला ॥ निरखि मुरछितपार्थकहँ सबलोगसबदिशि प्रेरि । महाअनरथसमुझिव्याकुलरहे अनिमिष हेरि ॥ चेतिक्षणमें स्वेदपूरित तजत चखसोंवारि । कँपत लेत उसास ऐसेकह्यो भटन निहारि ॥ सत्यप्रणकरि कहतहौं यहसुनो सबभट जूह । काल्हिबधिहौं जयद्रथ कहँ बरषिबाण समूह ॥ कृष्णको अरु भूपको जो गहैशरणन आय । जीवको करिलोभजो कहुँदुरै नहिं कढ़िजाय ॥ बधौंगो तौकाल्हि ताकहँ सुनो यह ममबात । बधौं नहिंतौ जाउँतेहि थर जहँ कृतघ्नी जात ॥ पिता माता द्विजन दुखदै लहत जनजोलोक । जो न मारों जयद्रथ कहँ लहौंतौ तहँओक ॥ करिअगम्यागमन अरु हरिजीविका जेलोग । अरु कृतघ्नी छलीपावत जौन थलको भोग ॥ करतजो अपकार अरु बिश्वासघाती जौन । जातजहँ तहँजाउँ मारों काल्हि ताकहँ तान ॥ चुगुल निन्दक चोरअरु जे कहत मिथ्याबैन । वृद्धगुरु अरु साधुकहँ जे निदरि करत अचैन ॥ गऊब्राह्मण अग्निकहँ जे चरणसोंछुइलेत । करतमुत्र पुरीष जलमें जौन अपगतचेत ॥ करत आतमघात जो अरु

जौन वृषली नाथ। करत तासों दगाजो नितरहत जाकेसाथ॥ देतनाहिं बालकनकहँ जे मीठ आपुहि खात। पाय पातकजौन ये सब जौनथलमें जात॥ पायपातक तौन सबतो जाउँमें तेहि देश। जौन कालिह जयद्रथहिबधि करौं कीरतिवेश॥ एकप्रण मैं करत औरो सुनो सोभटपूर। जौ न मारौं कालिह ताकहँ रहे जौलोसूर॥ भानुअथये त्यागि शरधनु त्यागिकवच बिभात। पैठि ज्वलित कृशानुमधि तौं दहौं अपनोगात॥ शक्र वरुण कुबेर यमकेपास जो भगिजाय। तऊमारौं तहां ताकहँ शरन सों दिशिछाय॥ दोहा॥ इमिकहि धनुष चढ़ाइकै करिसबदिशि टंकार। सब दिशिमें पूरितकियो दुसह सुशब्द उदार॥ सुनि सुप्रतिज्ञा पार्थकी केशव अतिहरषाय। पूरिदियो दिशिशब्द सों अनुपम शङ्खबजाय॥ शङ्खबजाये सबनृपन बजे बाद्यगण भूरि। नभमहिलों सब दिशनमें गई घोरधुनि पूरि॥ चौपाई॥ सुनिअति घोरशब्द परदलमें। भो सभीत ममदल तेहि पल में॥ कीन्हों जौन प्रतिज्ञा पारथ। चारणगणसों तौन यथा-रथ॥ सुनिकै सिन्धुनाथ तेहि क्षनमें। कंपित भयो सांच गुणि मनमें। परो शोकसागर मधिडूबत। गो दुर्योधन के ढिगऊब-त॥ पारथ कियो जौन प्रणतीक्षण। सो कहि कह्यो सजल करिईक्षण॥ करिहिंआशि जो प्रणकरिभाख्यो। यहगुणिधीर रहत नहिंराख्यो॥ ताते मोहिं देउ अनुशासन। बसों जाइ गहि गोपित आसन॥ कै कृपद्रोण कर्ण दुःशासन। आदिभ-टनसों करिसम्भावन॥ राखहुसबै कहें जो रक्षण। नातरुबेगि कहौ मोहिं गक्षण॥ दुर्योधन भूपति यह सुनिकै। निजकारज को साधन गुनिकै॥ नाम प्रबल योधनके कहिकै। कह्यो जय-द्रथ सों करगहिकै॥ ये सब जबलागि जीवत रनमें। तबलागि लगिहि न शर तोतनमें॥ अर्जुनसम तुमआपु उजागर। कत डरपतहौ हे भटनागर॥ इमिकहि सुनिते द्विजढिग आये।

प्रणपारथको ताहि सुनाये ॥ कहि निजशोच जयद्रथ तासों ।
कहत भयो इमि पूरिप्रभासों ॥ हमजो करतप्रश्न तुमताको ।
उत्तर कहो यथाविधि याको ॥ दोहा ॥ धनुधरके जे सकल गुण
तिनमें अधिकीकौन । हमकै पारथ बूझिकैद्रोण बताओतौन ॥
कहोद्रोणधनुविधिसिखी समतुमपारथवीर । भयो योगअभ्यास
सों अधिक पार्थ रणधीर ॥ चौपाई ॥ सुनिप्रण तासु शंक मति
करहू । संशय त्यागहु धीरज धरहू ॥ ऐसोव्यूह रचवतो स्वा-
रथ । सकैन जासु अन्तलहि पारथ ॥ फिरि दृढ़करि साहस
लरिबेको । तजहु शोक रणमें मरिबेको ॥ परमपुण्य कृत क्षत्री
आरज । रणमें लहत मृत्युशुभ कारज ॥ मृत्युलोक यहजो तन
धारत । मरत अवशिसो कोतेहि टारत ॥ द्रोणाचारयकी यह
बानी । सुनिदुख तजो जयद्रथ ज्ञानी ॥ गह्यो चाव लरिबेको
राजा । मोदितभो सब सुभट समाजा ॥ जाय उतैके चारसो-
हाये । पृथक् पृथक् यह खबरि सुनाये ॥ सो सुनिकै सबकै दो-
चितसे । कहो पार्थसों अतिशोचितसे ॥ पारथ तुम दुस्तरप्रण
कीन्हों । साध्य असाध्य शोचि नहिंलीन्हों ॥ रलहत सागरमधि
परिबो । हैयहि विधिको यहप्रण करिबो ॥ रक्षक जासुद्रोण जय-
कामी । ये षटरथी जासु अनुगामी ॥ कृपअरु कर्ण शल्य बल-
धामा । भूरिश्रवा अरु अश्वत्थामा ॥ अरु वृषसेन अतुलभट
जानो । बधिबो तासुसहज मतिमानो ॥ राखिचतुर विधि सेना
पचिकै । चहुँदिशि शकटव्यूहबर रचिकै ॥ मधिमें कमलव्यूहकी
रचना । करिद्रोण पुनि करिकैसचना ॥ दोहा ॥ पत्रनअरु केशरन
सम राखि भटन प्रणरोपि । बीजसमान जयद्रथहि मधिमें
राख्यो गोपि ॥ महारथी षटभट प्रबल द्रोणअजेय प्रसिद्ध ।
तिन्हैं जीतिताको बधब शतधा सखा असिद्ध ॥ यातेयह प्रण
त्यागकरि करि मंत्रिनसों मंत्र । करौ और अनुमान कछु जो
श्रमसाध्य स्वतंत्र ॥ जयकरी ॥ कृष्णचन्दके सुनियेबैन । पार्थकह्यो

करिराते नैन ॥ जिन पटभटन सराहततात । कहत महारथमें विख्यात ॥ तिन्हैं अर्द्धरथ समसबठौर । हम जानतहैं कहत न और ॥ वधिवधि अगणित भटन सँघाय । अगणित भटन मारि विचलाय ॥ सबदिशि रचत शरनको सेत । तरिपरदल भटनीर निकेत ॥ पद्मव्यूह मधिजाव विभात । जिमिवारिज माधि मधुकर जात ॥ वधिजयद्रथहि दुखहि दुराय । विहरब जयदुन्दुभि बजवाय ॥ प्रभुतुम जासु सहायक संग । होय न कबहुँ तासु प्रणभंग ॥ अवमति तातबढ़ावहु शोच । कियो न जात सुप्रणको मोच ॥ शीघ्रसुभद्राके ढिगजाय । कहतवनैसो कहौ बुझाय ॥ यहसुनि कृष्णमौन रहियत्र । गेहीरुदतसुभद्रा तत्र ॥ कहिकहिसुतके शीलसुभाव । गुणिस्वरूप विक्रम व्यव-साव ॥ मोहितरुदन करति भरिशोक । देखि सुभद्रहि करुणा ओक ॥ लोकवेद विधिवचन सुनाय । वारवार बहुविधि समु-झाय ॥ आदि द्रौपदी तिय समुदाय । रुदन करतही तिन्हैं बु-झाय ॥ भवभंजन रंजन निजदास । कृष्णगये पारथकेपास ॥ दोहा ॥ तबलहि शासनपार्थको सिगरे भटसमुदाय । निजनिज डेरन जातभे भरे विषाद अचाय ॥ कृष्णचन्द्र पारथ सहितपा-रथके गृहजाय । गोमय सों महि शुद्धकरि शुचिशय्या बिछ-वाय ॥ प्राणायामादिक क्रिया अर्जुनसों करवाय । करितापै आसीन सब दिशि आयुध धरवाय ॥ निशिमें शम्भुहिउचित बल सो विधिवत अरचाय । कहोपार्थसों करहुइत शयनगिरी-शहिध्याय ॥ सोरठा ॥ इमिपारथसों भाषि राखि सकल दिशि पारषद । केशव जय अभिलाषि दारुकसह डेरनगये ॥ रोला ॥ जायशय्या चारुपै आसीनह्वै यदुराय । कह्यो दारुकसों कियो प्रण पार्थजो अनखाय ॥ महादुस्तर तौनसोनहिं होयगो तौ तात । निरखि संध्या अग्निमें वह दहैगो निजगात ॥ पार्थ हमकहँ परमप्रिय वहिलखे बिनुक्षण एक । लोकमेंनहिं सकत

रहि हमसुनो यह ममटेक ॥ जोजयद्रथ कहँ न पारथ सकिहि
बधिकरियुद्ध । तौबध्यब हमताहि करि अतियुद्धगंहिप्रणशुद्ध॥
सुनोतातेसाजि ममरथ सकल आयुधभारि । रहहुतुमसन्नद्ध
समतन कवच अतिदृढ़ धारि ॥ सुनहु जबहिं अमर्षयुत मम
शंखकी धुनियत्र । शीघ्ररथलै आइयो तब रहबजहँ हमतत्र॥
भाषिऐसे पार्थके जय लहनको अनुमान । करनलागे कृष्ण
करुणासिन्धु सत्वनिधान ॥ जानि निजप्रण कठिन चिन्तत
पार्थतहँ तेहियाम । स्वप्नमेंसहकृष्ण शिवके पासजायसकाम॥
बन्दिसरुचि प्रशंसि पशुपति अस्त्रकहँफिरिपाय । पायबर मन
मान केशव सहित सुख सरसाय ॥ बहुरिआये शिविर कहँनृप
इतेमें भोभोर । लगेपारथ कृष्णजागे जगेभट सबओर ॥प्रात-
कृत्य सरीति लागे करन पूरितहर्ष । लगी दुन्दुभि बजन अ-
गणित गहेभटउत्कर्ष ॥ पढ़नलागे बिरद बिधिवत सूतमागध
भूरि । गानलागेकरन गायक स्वरनसोंथलपूरि ॥ दोहा ॥तृतिय
दिवसकी निशिभई जोबार्त्ता तेहिपर्व । संजय इमिधृतराष्ट्रसों
कहत भयेसो सर्व ॥

इतिश्रीद्रोणपर्वणितृतीयदिनरात्रौअर्जुनप्रतिज्ञावर्णनोनामचतुर्थोऽध्याय:

सोरठा ॥ चौथे दिनकेप्रात वाद्यनाद सुनि प्रभुहिं गुणि ।
जागिधर्म विख्यात नित्यकृत्य कीन्हों सविधि ॥ रोला ॥ दये
आहुति अग्निमें अरु पूजिद्विजन सचाय । दयेबत्सन सहित
भूषित तरुणवय शतगाय ॥ भूरिकांचन बसन हयदे पहिरि
भूषणबस्त्र । सभागृहमें जायबैठो धारि अनुपम अस्त्र ॥ तहां
आये कृष्णअरु सबबन्धु अरु नृपसर्ब । यथाबिधि सत्कार
सबको कियोधर्म अखर्ब ॥ कृष्णसों इमिकह्यो प्रभु कुरुसैन
उदधिअगाध । तासुतरिबे हेत बोहित हमहिं तुव अवराध ॥
पार्थ कीन्होंकठिन प्रणतेहि समुझि सूखतप्रान । आपुकोसँग
समुझि हम ध्रुवगुणत निज कल्यान ॥ होइमम कल्याण तैसे

चरल परदल माह । रहत रविके मारिजाते जायसों नरनाह ॥
बचन यहसुनि कहो केशव भूपआरोधीर । जूटिआई पार्थकहँ
है कौनऐसोवीर ॥ पार्थजीत्यो शक्रकहँ सोबातहैविख्यात ।मर्दि
परदल जयद्रथकहँ बधिहि पारथतात ॥ इतेमहँ तहँ पार्थआये
देखि पार्थहिभूप । धर्मनृपउठि अंकलायो भरेक्षोभ अनूप ॥ बैठि
अर्जुनतहां नृपसों कह्योविधिवततौन । रजनिमें उतरहेदेखे स्वप्न
सुखप्रदजौन ॥ स्वप्नसो सुनिमुदित ह्वैसब कियो हरहिप्रणाम ।
सभाकरिवरखासरथपै पार्थवीर अक्षाम ॥ चढ़े निज निज वा-
हननपै भूप भट समुदाय । बाद्य लागे बजनमंगल पढ़तद्विज
सुखदाय ॥ पूजि अश्वन चढ़ोरथ पै पार्थवीर अमान । चढ़ेतव
श्रीकृष्ण अरु भट सात्वकी बलवान ॥ देखिबहु शुभ सगुन
तेहिक्षण पार्थ अति हरषाय । कहतभेयुयुधान सों ध्रुव विजय
सो लखिजाय ॥ भाषिऐसो कह्यो सात्यकि वेगिनृपपहँ जाय ।
साथरहि सबठौर रक्षत रहो नृपहिं सचाय ॥ एक रक्षण भूप
कोहै सबहि कारजपर्म । सदासयतन रहेहु जातेरहैं मोदितधर्म ॥
पार्थके ये बचन सुनिकै कहितथास्तु सचैन । सात्वकी तहँगयो
जहँ हैं धर्मनृपति ससैन ॥ सूत सुतके बचन सुनिकै वृद्धनृपति
सशंक । कह्यो अनरथ समुझि निशिदिन दहतहै मम अंक ॥
कर्ममूल अनर्थ के जे किये मोसुतमूढ़ । तासुशाखा प्रगटिबढ़ि
अब भये सेजेरूढ़ ॥ विदुर भीषमद्रोण हम बहुबार कहिकहि
नीति । कह्यो कितक बुझाय सोनाहिं सुन्यो सोगहि रीति ॥
राज्यमें जिमि अंशइनको तथा उनको तात । कौन गोपनकरै
ताको बात जो विख्यात ॥ पूर्वको अपकार इनको दुरैधर्मनरेश ।
आय बनतेसनय मांगत भये आधो देश ॥ परमसुहितसुजान
केशव आयभाष्यो तौन । नहीं मान्यो मोहवश मम पुत्र अव-
गुणभौन ॥ इतेहूपै अनरबारण हेत धर्म्म उदार । वंश रक्षण
हेत मांगे पांचग्राम बिहार ॥ नहीं सोऊदये ममसुत भरो गर्ब

नदान । कहो संजय तासुकैसे होइ अब कल्यान ॥ शकुनिदुः-
शासन कर्णको मानिमतगहिगर्ब । निदरि सबकेबचन शतधा
कियो कारज खर्ब ॥ धर्मशील नरेशयोधापार्थ सो रणधीर ।
कृष्णमंत्री जासु तासों लहैजयको बीर ॥ अवशिहोनीहोतसं-
जय कहो सहित विधान । करि प्रतिज्ञा कियो जैसो युद्धपार्थ
अमान ॥ सुभटइत उतके यथाजुटि कियो संगरघोर । कहो सं-
जय सुन्यो सो सब चहतहैं मनमोर ॥ बचन ये धृतराष्ट्रकेसुनि
कह्योसूत सयान । जितो अनरथ भयो करता तासु तुम नहिं
आन ॥ आपुजो नहिंचाहते नहिं होनपावततौन । आपुकोनहिं
कह्यो मानै रह्यो ऐसो कौन ॥ जो न मानत कहोतौ तेहि कुरुण
सो बँधवाय । डारिबेरीराखते नहिंहोत अनर अचाय ॥ रुच्यो
तबतौ राज्य सबलहि पुत्रको ऐश्वर्य । कहत अब इमि लगो
जबदुख देन बढ़ि बहमर्य ॥ गयोजब जलनिकारि तबका बांध
बांधे होत । चूकतबको मिटतका अब कियेशोच उदोत ॥ भयो
तबसो भयोअब जोभयो सुनिये तौन । भोर भूपतिजयद्रथसों
कह्यो द्विज बुधिभौन ॥ कर्णभूरिश्रवाकृप वृषसेन शल्यउदार ।
सहित ममसुत संगलै तुमरथी साठि हजार ॥ लाखहयसादी
चतुर्दश सहससैगल मत्त । सहस इकइस संग लीजै धृतभुशु-
र्डीपत्त ॥ रहौ इनके मध्यतुम षटकोश पीछे जाय । कहा अ-
र्जुन शक्रयम नहिं सकहिं तुमकहँ पाय ॥ द्रोणके ये बचनसुनि
सो भूप शोच दुराय । दश अयुत तुरंग सवारनिज अरु तिते
भट समुदाय ॥ द्रोणजिनकहँ कहेतिनषटरथिन सहितसचाय ।
जायपीछे कोशषटभो लखतकोट बनाय ॥ द्रोण बिरचत भयो
नृप तब शकटव्यूह महान । पूर्व पश्चिम तासु चौबिसकोशको
परमान ॥ कोश दशको व्यामताको तासुमाधि करिऊह । बिर-
चिपद्म सुव्यूह ताके मध्यसूचीव्यूह ॥ बिरचिराख्योतासु मधि
में सिन्धुपतिहि सयत्न । यथा राखत बिबिधाविधिसों कृपिण

पाय सुरत्न ॥ रचे पद्मसुब्यूहके उत गर्वब्यूह अभेद । राखिबिधिवत प्रबल योधा जिन्हैं नाहिं श्रमखेद ॥ रह्योसूचीब्यूह के मुख भूप भट कृतवर्म । रह्यो तबतो तनयनृप जलसन्ध कर्ण अभर्म ॥ प्रबल प्रबल प्रसिद्ध भटन ससैनक्रमसों भूप । राखि सब दिशि द्रोण बिरच्यो ब्यूह परमअनूप ॥ जयद्रथ सों रह्यो आगू द्रोण भटषटकोश । सुभटरदनसुब्यूहको सोबदनअगम अदोश ॥ बदनरक्षक सैनसहहोसुवन तो बलवान । जौनदुर्मर्षण प्रबल भट प्रलयकरन अमान ॥ रह्यो पीछू तासु दुःशासन विकर्ण ससैन । यथाक्रम इमि रहे सिगरे सुभट बलबुधि ऐन ॥ देखि ऐसो ब्यूह मोदित भयो कुरुकुलराय । यथा निरखिमरीचिकाकहँ मृगाहोत सचाय ॥ उतै बिरचे ब्यूह विधिवतनकुलसुत रणधीर । शतानीक उदार मति अरु धृष्टद्युम्न सुबीर ॥ तीर भरिबढ़ि सैनसों करि धनुषको टंकार । शंखधुनिभो करत पारथविदित बीरउदार ॥ पांचजन्यसुशंखकी धुनिकरीयदुकुलचन्द । जलदगणसमभयो गरजतकपिध्वजरथअमन्द ॥ भयो अतिशय दुसह शब्द सशंकभोममसैन । दये मूत्र पुरीखकरि ह्वैतुरँग द्विरदअमैन ॥ देखि दुर्मर्षणहिं पारथकह्यो हयदुराय । शीघ्रयाके निकट रथलै चलो तुरँग चलाय ॥ वज्रसम शरवृष्टि करिकरि मर्दियह दलसर्व । ब्यूहमध्य प्रवेश कीजै तोरि सबको गर्व ॥ पार्थके ये बचन सुनिकै मोदकेशव आसु । सुरथ रन्ध सवायुसम लैगयेघोरे तासु ॥ भयो बरषत बाण इनपै पार्थधीरधुरीन । सुभट इतके भये बरषत पार्थपै शरपीन ॥ करि अलात सुचक्रसम धनुबरषि शायक भूरि । सैनमधि तोतनयके तिहिदये सबथर पूरि ॥ काटि अगणित शक्तितोमर बाणरथ धनुकेत । दयेकाटि असंख्य शिर करचरण रचि शरसेत ॥ एक पारथ सुभटसों बढ़ि सुभट कइक हजार । भिरे तिनकहँ वधत पारथ करै नेकु न बार ॥ तुरँग गज भट काटि अगणित डारि

महिपै तत्र । कियो भीषम रूप धरणिहि पार्थरणकृत सत्र ॥ मचो हाहाकार तेहिसमय सैनमें तेहिठौर । बिकल ह्वैभटभगे अगणित तजि भटनकोतौर ॥ धीर धरिधरि तासुसम्मुख गये जे बलवान । भयेते सबज्वलनके ढिगजात शलभ समान ॥ दोहा ॥ इमि मर्दित ह्वै भटनसह दुर्मर्षण तजिधीर । भागि पिछिलि आयो रह्यो जहँ दुःशासन बीर ॥ यह सुनिकै धृतराष्ट्र नृप करिकै मनहिं मलीन । कहो कहौ संजय तदनु भिरोकौन भटपीन ॥ चौपाई ॥ संजय सुनि भूपतिकी बानी । कहतभयेसुनु नरपति ज्ञानी ॥ दल बिचलाय शरासन करषत । पारथचलो बाणबर बरषत ॥ कालानल समान भय छावत । दल मर्दत पार्थहि लखि आवत ॥ योधन सहित क्रोधसों मढ़िकै । भिरतभयो दुःशासन बढ़िकै ॥ क्रोधित सहस द्विरद मतवारे । तिनपै चढ़े सुभटप्रणधारे ॥ घण्टनकी धुनिसों नभपूरत । धनु टंकारनसों श्रुति थूरत ॥ शर शक्तिन की बरषा कीन्हें । बढ़ि आगू आड़े प्रणलीन्हें ॥ शुण्ड उठाय करत धुनिघोरा । चले द्विरद पारथकी ओरा ॥ सो गजयूथ निरखि कपिकेतू । रचत भयो अबिरल शरसेतू ॥ काटि असंख्यन आयुध इतके । काटतभो धनु ध्वज करकितके ॥ किते गजनके कुम्भ बिदारे । कितेगजस्थ सुभट बधिडारे ॥ अगणित द्विरदकिये बिनुस्वामी । बहुगजस्थ कीन्हें पदगामी ॥ अगणित द्विरदनके रदकाटे । अगणित शुण्ड काटि महिपाटे ॥ बारिबूंद सम सबके तनमें । लगे पार्थके शर तेहि क्षनमें ॥ यहि बिधिपारथ शर सन्धाने । ह्वै ब्याकुल तहँ शेष पराने ॥ तबहयसादी रथी सुयोधा । बढ़ि ताको कीन्हें अवरोधा ॥ दोहा ॥ मण्डल समकोदण्डकरि शर झर प्रलय अरोपि । क्षणमें मरदनभो तिन्हें पार्थ धनुर्द्धरकोपि ॥ मारि असंख्यन तुरँग भट धनुध्वज अगणित काटि । करनपगन शिरधरनसों दई मेदिनी पाटि ॥ सोरठा ॥ थिरनसको

धरिधीर भगो सोऊ हत शेषदल । दुःशासन लहिपीर भगो समुझि अपराध निज ॥ जयकरी ॥ इविधि जीति तो सुतहि स-सैन । पार्थ धनुर्द्धर बलबुधि ऐन ॥ द्रोणाचारयके ढिगजाय । करन जोरि इमि कह्यो बुझाय ॥ हे प्रभुतौ अनुकम्पा पाय । पैठि व्यूहमधि बल दरशाय ॥ मर्दिसैनकरि युद्ध विनोद । बधि जयद्रथहि चहत सुमोद ॥ तातरहै जाते ममटेक । उचित तुम्हैंसो करब बिबेक ॥ पाण्डुसदृश अरु धर्मसमान । केशवसम तुम मोहिं न आन ॥ रक्षणीय जिमि तुमकहँ तात । निति अश्वत्थामा गुरुगात ॥ तिमि हमार रक्षण सबठौर । है तुमकहँ करतव्य सडौर ॥ जाते रहै मोरप्रण पर्म । सोई करौ बूझिकै मर्म॥सुनि हँसि बोले द्रोण यथार्थ । हमहिं बिनाजीते हे पार्थ॥ सिन्धुपतिहि नहिं सकिहौ पाय। ताते करौयुद्ध मनलाय ॥ इमि कहिकैकरि धनु सन्धान । हने पार्थकहँ तीक्षण बान ॥ पारथ तजत भयो शरभूरि। बहु शरतजे द्रोण रिसपूरि ॥ दोऊसुभट धनुर्द्धर ख्यात । कियो घोर रणते दृढ़घात ॥ द्रोणाचार्य्य धनुष बिधि ठाटि । दीन्हींतासु प्रत्यञ्चा काटि ॥ दोहा ॥ तबचढ़ाइ कै औरज्या पारथ धीर धुरीन । भो मारतषट शत बिशिख अति अनियारे पीन ॥ फेरि हन्यो शरसातशत फिरि सहस्रशर मारि । दश हजार शर हनतभो गाण्डीवहि टङ्कारि ॥ चौपाई ॥ कैएक अयुत बाणतजि पलमें । भयो प्रलय पारत ममदलमें॥ भट द्रोणाचारय के साथी। बधे असंख्यनबधि हयहाथी ॥ दावा सदृशतासु शरगण में । दलबन दहत देखि तेहि क्षणमें ॥ बारिद सरिस बरषि जल शायक। रक्षण कियो द्रोण दृढ़घायक ॥ काटि असंख्यन शायक तासू । हने तासु उरमाधि शरआसू ॥ ह्वै बिह्वल फिरि धीरज धरिकै । पार्थहने शर अतिरिस करिकै ॥ द्रोण पांचशर कृष्णहि हनिकै । पार्थहिहने तिहत्तरि गनिकै ॥ ध्वज मधिहने तीनिशर ओपित। कीन्हों रथहि शरन

सोंगोपित ॥ पार्थ काटि सबशर अनियारे । अगणित बाणद्रोण कहँमारे ॥ दोऊदिव्यअस्त्र बहुडारैं । दोऊ अस्त्रअस्त्रसों बारैं ॥ यहिविधि दोऊधनुधर नायक । कीन्ह्यों घोरयुद्ध रणचायक ॥ लखियुग भटनप्रबल अनुमानी । कृष्ण पार्थसोंकही सुबानी ॥ द्रोणहिजीति चलन जोचैहौ । तौइतही सबद्योस बितैहौ ॥ ताते त्यागि द्रोणसों लरिबो । चलो चहत जो नृपबध करिबो ॥ यह सुनि कहो कृष्णसों पारथ । आपुकहोसो बचनयथारथ ॥ बेगि चलौ रथलै दलमाहीं । जीतन योग द्रोण भटनाहीं ॥ दोहा ॥ यह बिचारकरि द्रोणकहँ करिप्रदक्षिणानौमि । चलोपार्थगर्जत रचत शायक जालअसौमि ॥ द्रोण टेरितब इमिकह्यो कहांजात तजिमोहिं । बिनुजीतेशत्रुहि अनतजैबो उचितनतोहिं ॥सोरठा॥ यहजोकह्यो अचार्य्यसो सुनिकैपारथकहो । तुममम गुरुहैआर्य्य नाहिं ममशत्रु प्रसिद्धयह ॥ चौपाई ॥ इमिकहिबरषतशरदल मरदत । चलोपार्थ घनसदृश ननरदत ॥ युधामन्यु उतमौजा दक्षक । हेसँग तासुपीठिके रक्षक ॥ पार्थहि यहिबिधि आवतदेखी । कृतवरमा भूपति अतितेखी ॥ अरुकाम्बोज श्रुतायूराजा । आड़तभे भिरिसहित समाजा ॥ सूरसेन अभिषाह सुभेशी । शिवयबसायत केकयदेशी ॥ चौवाइ तरुवरसोंजैसे । भिरैभिरे पारथ सोंतैसे ॥ तेहिक्षण पार्थचक्रसमचरिकै । मण्डल सदृशशरासन करिकै ॥ अगणित गुल्मलता तरुबनमें । लपटनदहै दवानल क्षनमें ॥ तिमि असंख्य भटगजहयपलमें । बाणन बधतभयो ममदलमें ॥ राजरोग सम ममदल तनमें । लखिपार्थहि अति रिसकरि मनमें ॥ जाइ भिषज सम द्रोण अमाना । दयोबाण विषबटी समाना ॥ पार्थहि द्रोण द्रोणकहँ पारथ । हनतभये बहु शरगुणिस्वारथ ॥ बहुविधि दिव्यअस्त्रकीवर्षा । करीपरस्परगहि उतकर्षा ॥ दिव्यअस्त्र अस्त्रनसों काटत । सरथ चक्रसमफिरि फिरि डाटत ॥ घोरयुद्ध कीन्होंतेदोऊ । जिनदोउनसम तृतिय

न कोऊ ॥ बरषत सहतबाणवन कोहे । दोऊगिरि बारिदसम सोहे ॥ दोहा ॥ हनि पचीसशर पार्थकहँ कृष्णहि सत्तरिबान । हनेद्रोणद्रोणहिहने बहुशरपार्थअमान ॥ अतिशय विक्रमकरि तहां बरषि बाण समुदाय । द्रोणपार्थके सुरथपै सबदिशिदीन्हें छाय ॥ तबपारथकी ओरलखि कृष्णचन्द्र मुसुकाय । कृतबरमाकी फौजमधि रथलैगयेबढ़ाय ॥ चौपाई ॥कृतबरमा काम्बोज सुदक्षिण । भिरेधनंजयसो सहदक्षिण ॥ बरषि असंख्यन शर अनियारे । कृतबरमा तेहि दशशर मारे ॥ पारथकृतबरमाकेतन में । शतशर हनतभयो तेहिक्षनमें ॥ तब कृतबरमा धनुटंकारे । पार्थहि बाण पचीस प्रहारे ॥ बाणपचीस कृष्णकहँहनिकै । गरजत भयो क्रोधसों सनिकै ॥ तबपारथ करिकै धनु छेदन।हनेएकैस बाण गिरि भेदन ॥ नृप कृतबरमा बरधनुगहिकै । दशशर हने खरोरहु कहिकै॥ नवशर कृतबरमाके धरमें । मारेपार्थपरखि तेहिथरमें ॥ काटि मारि सहि सहि बहुशायक । घोरयुद्धकीन्हों दृढ़घायक ॥ तबकेशवपारथसों भाखी । कहासमुझिमृदुता गहिराखी ॥ बेगिजीति यहि आगे चलहू । नृपति श्रुतायुध कोदल दलहू ॥ सुनिपारथअति धनुबिधि कीन्हें । कृतबरमहि मोहित करिदीन्हें ॥ कृतबरमाकहँ मोहित करिकै । चलतभयो शरसेतु बितरिकै ॥ चेति निमिषमें भट कृतबरमा । गहेबीररस बरकी परमा ॥ युधामन्युउतमौजा राजहि । आइत भयोचिन्ति जयकाजहि ॥ तिनसों मचो युद्ध तेहिथलमें । तीनौ प्रबलगने धनुबलमें ॥ दोहा ॥ तौलगिबढ़ि आये इतै पार्थगहे जयचाह । तेयुगनृपतहँ गौनकी बहुरि न खाईराह ॥ चौपाई ॥ दलमर्दतपारथकहँ आवत । निरखिश्रुतायुध भो शरछावत ॥ पार्थहिमारि तीनि शर क्षनमें । सत्तरिहने कृष्णके तनमें ॥ सो लखिकैअर्जुन अतिरोखे । ताहिहने नब्बेशर चोखे ॥ हन्यो अर्जुनहि नृपति श्रुतायुध । शर सतहत्तरि बनमें आयुध ॥ पार्थकाटि अतिदृढ़

धनुतासू । मारे ताहि सात शर आसू ॥ तबसो धारिआन धनु तुरमें । नवशर हने पार्थके उरमें ॥ शततुरंग बधि नृपके रथके । पारथकिये पथिक नभ पथके ॥ तब गहिगदा श्रुतायुध राजा । भोगरजत बजवाइ सुबाजा ॥ भूपप्रभाव गदाको सुनिये । सो सुनि प्रभुकी महिमा गुनिये ॥ पनसा नामानदी सुहावनि । सोही नृपकी जननी पावनि ॥ प्रगटित भयो बरुणसों तासों । नृपति श्रुतायुध भरो प्रभासों ॥ पनसा कही बरुणसों येहू ।प्रभु मम तनय अमरकरिदेहू ॥ यह सुनिकह्यो बरुण अनुमानी । नरनहिं होत अमर सुनुमानी ॥ गदा समंत्रदेत यहि ऐसी । जौन अरीन बज्रताड़ि तैसी ॥ तासु प्रभाव लहिहि जयसबसों । बिनु प्रतिद्वन्दिहि हनिहिन जबसों ॥ जब अयुद्धकरतापहँडारिहि । तबयह गदापलटियहि मारिहि ॥ दोहा ॥ इमिकहिकैदीन्ही बरुणगदाअमोघ समंत्र । होनृप जासु प्रभावते राखतसुजय सुतंत्र ॥ भयो कालबश तेहि समय भूलि बरुणको बैन । गदा चलायो कृष्णपहँ बिदितबीर बलऐन ॥ लरतरह्यो अर्जुनतजी गदाकृष्णपहँ भूप । बध्योनृपाहिताते पलटिगदाभयानकरूप ॥ तोटक ॥ इमि देखि श्रुतायुधको मरिबो । सबलोग धरे बिस्मय करिबो ॥ बिचलोदल भूप श्रुतायुधको । तजिशोच सुबाहन आयुधको ॥ यह देखि सुदाक्षिणबीरखरो । रथहांकिभिरो अतिरोषभरो ॥ तिहिपार्थ तहां शर सातहने । तिमि पार्थहिसोदश बाण बने ॥ हनि कृष्णहि तीनि सुबाणखरे । फिरि पार्थहिसात हने बड़रे ॥ तहँपार्थ रच्यो शरजाल महा । नृपतासु स्वरूपन जात कहा ॥ धनुकेतुहि काटि गिराय दये । शर तासुहियेहनि मोदलये ॥ तब बीर सुदाक्षिण शक्तिगहो । तजिपारथपै मति भागुकहो ॥ दोहा ॥ पार्थकाटि तेहि बीचही फिरि चौदह शर मारि । तुरँग सकल अरु सारथिहि दीन्हेंमहि पैडारि ॥ फेरि बज्र समशर हने भूपतिके उरमाह । ह्वै अप्राण महिपै गिरो

बिदितबीर नरनाह ॥ सुवन भूप काम्बोजको मरो सुदक्षिणबीर । भगीतासु सेना करत हाहाकार अधीर ॥ चौपाई ॥ सोलखिकै अति अमरष पूरे । गर्बि असंख्यन नृप भटकरे ॥ घेरि लगे सबआयुध डारन । मारुमारु धरु मारु पुकारन ॥ तेहिक्षण पार्थ चक्रसमनाचिकै । सबदिशि सेतु शरनको रचिकै ॥ बधिअगणित हय गज भट पलमें । प्रलयकाल पूयो तेहिदलमें ॥ पार्थहि जानिकाल जगजेना । बिचलत भईभूप तोसेना ॥ सोलखि अच्युतायु नृपयोधा । अरु श्रुतायु कीन्हों अवरोधा ॥ तेयुग बन्धुभरे अतिरिसिसों । हनेअसंख्यन शरयुगदिसिसों ॥ तिनके काटि असंख्यन शायक । बहुशर हन्योपार्थ दृढ़घायक ॥ तबश्रुतायु तोमरशर चोखो । हनोतासुउरनिरखि अनोखो ॥ अतिदृढ़घाव लगेतहँपारथ । मोहित भयो भूलिनिजस्वारथ ॥ प्रबलबीर तुरतहि सोजागो । सिंह समान क्रोधसों पागो ॥ अच्युतायु नृपताहीक्षनमें । शूलहन्योपारथकेतनमें ॥ लगेशूलफिरि मुरछित ह्वैकै । रह्यो ध्वजासोंलागिवलग्वैकै ॥ सोलखि पारथको बधजानी । हरषेभटगण जयअनुमानी ॥ केशव लखि अतिबिस्मय लहिकै । किये सचेत बचन कछु कहिकै ॥ तौलगिते युगभटरिस लीन्हें । रथहि शरन सोंगोपित कीन्हें ॥ चेति धनंजय भट रणचायक । तजोऐन्द्रअस्त्र जयदायक ॥ दोहा ॥ तिन सों सहसन बाणकढ़ि काटिदये सबबान । तिन्हैंबध्यो तब दिव्यशरहनिभटपार्थअमान ॥ मारिश्रुतायुसुबीरकहँअच्युतायु कहँ मारि । मारि पञ्चशत रथिन कहँ दीन्हें महिपैडारि ॥ चौपाई ॥ अगणित हय गजबधि भय त्यागे । मरदत सैन चले फिरि आगे ॥ निज जन कन कहँ निरखि गतायू । भटदीर्घायू अरुणिअतायू ॥ वर्षि बाण पारथके रथपै । जाल बिरचिदीन्हों नभ पथपै ॥ पार्थअसंख्यन शरपरि हरिकै । बाण जालको छेदन करिकै ॥ हनि हनि दिव्यअस्त्र अरिखेदन । करतभयोतिनको शिर

छेदन ॥ बांधि तिनकहँ कोदण्डहि करषत । अगरो अविरल शायक बरषत ॥ जिमिगजयूथमध्य पंचानन । कलभनदपटत बधत अमानन ॥ तथा भटनपर शायकडारत । चलेगणे सुभटन संहारत ॥ लखि कलिंग आदिक नृप योधा । कैएकसहस किये अवरोधा ॥ अरु दक्षिण दिशिके बहुराजा । आइतभेभरि सहित समाजा ॥ सहसन मत्त द्विरद मतवारे । तिनपै चढ़ेसुभट भयधारे ॥ धनुटंकारि घेरि सब दिसिसों । बरषन लगेबाण भरिरिसिसों ॥ तहांपार्थ अति बिक्रम कीन्हों । सब दिशि शरपंजर रचिदीन्हों ॥ तजितजि दिव्यअस्त्र अनियारे । अगणित द्विरद निमिषमें मारे ॥ बधि अगणितगजरथ धनुधारी । करत भयो यमपुर पथ चारी ॥ रचि सब दिशि अविरल शर सेतू । काट्योअगणित शर धनु केतू ॥ दोहा ॥ कटेकुम्भकररद चरण द्विरदनसों तेहि याम । कियो भयानक रूपमहि पार्थबीर अभिराम ॥ सद्विरद द्विरदस्थन भटन बधित अशेषन टारि । चलो पार्थभट मनु चलो रबिघनपटल बिदारि ॥ सोरठा ॥ सो लखिकै जय ऊटि सक पारद अरु यवनगण । टेरिटेरिबाढ़ि जूटि बरषन लागे शक्तिशर ॥ तोमर ॥ तेहि समयपार्थ अमान । तहँ घूमि चक्र समान ॥ शर जाल सबके काटि । शरसेतुसबपैठाटि ॥ हतशेष भटन भगाय । शरबरषि सब दिशिछाय ॥ फिरिचलत भो रणधीर । हनि बधत अगणितबीर ॥ तबभिरतभे बढ़िजाय । जे म्लेच्छ उन्नत काय ॥ जे दरद अरु अतिसार । अरु दार्व पुण्डउदार ॥ येभट असंख्यनसर्व । सबओर घेरिसगर्व ॥ जे आयुधनके भेद । तेलगे हननअखेद ॥ तहँपार्थ करिसन्धान । करि व्यर्थ सबके बान ॥ शरसेतु अविरलघोर । सचितंत्र रचि सबओर ॥ षटसहस योधन मारि । भोदेत महिपैडारि ॥ अरु बधेएक हजार । जे भटनके सरदार ॥ बहुचरणकरन बिहीन । भो करत योधापीन ॥ इमिप्रलय पूरिपसारि । हतशेष भटनवि-

डारि ॥ भटपार्थ सुयश बिचारि । फिरचलो धनुटङ्कारि ॥ दोहा ॥ तबबढ़ि पारथसों भिरो सुभट श्रुतायूतौन । भूपदश अम्बष्टको बरणोयोधाजौन ॥ सो पारथके सुरथपै देतभयो शरपूरि । सब शरकाटोनिमिषमें पार्थमारि शरभूरि ॥ बाणनसों बधितुरँगसब काटिदियो धनुतासु । तब अँबष्टपति गहिगदाचलो सुरथतजि आसु ॥ सोरठा ॥ शरक्षुरप्रसों पार्थ काटिदेतभो सो गदा । तब सो नृपगुणि स्वार्थ और गदागहि चलतभो ॥ पारथ बीर नि-हारि शीघ्र काटि सोऊगदा । बाण अमोघ प्रहारि बध्योताहि सुनु भूपमणि ॥ चौपाई ॥ इमिदलमर्दित लखि दुर्योधन । लख्यो न अर्जुनको अवरोधन ॥ अतिब्याकुल तासों मनमेलो । गयो द्रोणकेपास अकेलो ॥ व्यूहद्वारपै रह्यो अचारय । तासों कहत भयो सुनु आरय ॥ कोप बायुयुत पार्थ दवानल । दहत जात कक्ष समादल ॥ बड़ेबड़े सुभटनकहँ जिमिजिमि । बधत जात उतपारथ तिमितिमि ॥ शंकितहोत भूपमम पक्षक । नृपतिजय-द्रथके जे रक्षक ॥ इमिसब जानतरहे यथारथ । द्विजसों बढ़न न पैहै पारथ ॥ बिनु तुमकहँ जीते दल जीतत । जात चलो वह नृप बध चीतत ॥ हम सबविधि तुम्हारि सेवकाई । करत जानि गुरुदेव सहाई ॥ तुम नित उनहींकी जयचाहत । उन्हें दलतदल नाहें तुम पाहत ॥ प्रथमहि आपु न रक्षण भाखित । तौन जयद्रथकहँ हम राखित ॥ ताते तात करहु सो काजा । जाते बचै जयद्रथ राजा ॥ यमके डाटतरे परिकोई । बचै न बचिहि पार्थसों सोई ॥ जौंपारथ वहि देखन पाइहि । तौं तुरतै यमलोक पठाइहि ॥ जौं नहिं आड़े तुम दृढ़ घायक । तौ को पार्थहि आड़न लायक ॥ सुनि ममबचन रोष मति आनो । भूपबचै सो विधि अनुमानो ॥ दोहा ॥ भूपतिके ये बचन सुनि कह्यो द्रोण सुनु भूप । हय तुणीर धनु सारथी अर्जुन के अनु-रूप ॥ तजतबाण जौलगि गिरत तौन बाण हेतात । तौ लगि

सो तेहि बाणते अगारि कोशभरि जात ॥ तरुण पुरुष वहवृद्ध हम कैसे आड़ो जाय । छपो न बिक्रम पार्थको जानतहौ कुरु-राय ॥ जयकरी ॥ नृपतियुधिष्ठिर सेन बढ़ाय । लरत व्यूहके मुख पै आय ॥ जौ हम त्यागि व्यूहको द्वार । जाब उतै सुनु भू भर-तार ॥ तौ इत ऐसो योधा कौन । आड़िहि भीम आदिकन जौन ॥ धृष्टद्युम्न आदिक भटचण्ड । दलमधि धसिहैं धुनिको दण्ड ॥ तब नहिं करतबनी कछुकाज । लहिहि जीति पाण्डव महराज ॥ ताते जायलरो तुमभूप । दोऊबन्धु बली अनुरूप ॥ हैअसहाय रथी वहएक । तुम्हैंसहायक रथीअनेक ॥ तुमकहँ लरत देखि सबवीर । नहिं टरिहैं लरिहैंधरिधीर ॥ यहसुनिकै कुरुनाथ नरेश । कह्योसुनो आचार्य सुभेश ॥ तुम्हैंआदियोधन कहँजौन । जीतिगयोपारथबलभौन ॥ हमकिमितासोंलरियेता-त । कहियेआपुसमुझि यहबात ॥ यहसुनिकह्यो द्रोणमतिमान । नृप तुम कह्यो सांच नहिं आन ॥ देततुम्हैं हम कवचअभेद । ताहि धारिकै लरो अखेद ॥ जौन वृत्तसों लरिवेअर्थ । शक्ति-हि दीन्हेशम्भु समर्थ ॥ शक्र अंगिरहि दयो स्वतंत्र । अंगिर जीवहि दयो समंत्र ॥ दयो अग्निवेश्यहि गुरुताहि । हमहिं दयो तिन धनुधर चाहि ॥ दोहा ॥ देततुम्हैं हम कवचवह धा-रण करियेतात । अस्त्रअमोघौ अरिनके नहिं परशैं तो गात ॥ इमि कहि द्रोण समंत्र वह कवच तासु अँगबांधि । कह्यो सु आशिषदै लरो निरभय हरहि अराधि ॥ महिबरी ॥ लहिकवच चारु अभेद उग्र प्रभाव अति आनँदभरो । भट पार्थसों भिरि लरनको तो तनय नृप साहसधरो ॥ रथसहस अरु गजसहस प्रबल प्रमत्त भट जिनपै चढ़े । दशलाख तुरँग सवार जे भट बीर कवचनसों मढ़े ॥ लैसंग बहु बजवाय दुन्दुभि चलो अति आनँदगहे । जहँरहो पारथ लरत दलमधि प्रलय अति पूरण तहे ॥ खुरथार छार अपार सों नभ भू धुरित सबदिशि भयो ।

दिनमध्यके शशि सम समय तेहि देव दिनमणि लखिगयो ॥
दोहा ॥ तो सुत नृप जब चलो गहि जय लहिवेकी हौंस । दोय याम दिन तेहि समय भो व्यतीत तेहि द्यौस ॥ राम राम श्री राम सिय जपिश्री सीताराम । द्रोणपर्व भाषा कियो चौथेदिन युगयाम ॥

इतिश्रीद्रोणपर्वणिकौरवदलेअर्जुनप्रवेशोनामपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

दोहा ॥ कवचधारि कुरुनाथनृप चलोपार्थकी ओर । इतमम दल अरु पांडवन सों रण माचो घोर ॥ चौपाई ॥ द्विजभट धृष्टद्युम्न वरपनके । शोभितभये खम्भ समरनके ॥ दोऊ दावानल समदरशे । दोऊ शरवन घनसम वरशे ॥ दोऊ अगणित भट बधिडारे । दोऊ दुहुंदिशि प्रलय पसारे ॥ इहि विधि दुहुँदिशिके भटरूरे । कियेयुद्ध भिरि भिरि रिसपूरे ॥ तो सुत भट विकर्ण धनुधारी । चित्रसेन अनुपम रणचारी ॥ सहित विविंशति दोनों भाई । भिरे भीमसों ओज वढ़ाई ॥ भिरो द्रौपदेयनसों राजा । बढ़ि नृपभट बाह्लीक समाजा ॥ दुःशासन सात्वकिसों भिरिकै । कीन्ह्यो घोरयुद्ध तहँ थिरिकै ॥ माद्री सुतसों भिरे सक्रोधा । विन्द और अनुविन्द सुयोधा ॥ सुभट घटोत्कचसों गहि आयुध । अभिरो राक्षसवीर अलायुध ॥ कुन्तिभोजसोंभिरो अलम्बुख । काल करालसदृश भयदंमुख ॥ यहिविधि द्वन्द हजारन भिरिभिरि । घोरयुद्ध कीन्हों तहँ थिरि थिरि ॥ धृष्टद्युम्न अरु द्रोणाचारय । कियेतहां अतिअद्भुतकारय ॥ अगणित वाण परस्पर डारैं । अगणित वाण शरनसों वारैं ॥ अगणित भटन बेधि बधि डारैं । फेरि परस्पर वाण प्रहारैं ॥
दोहा ॥ त्यागि धनुष असिचर्मगहि धृष्टद्युम्न अनखाय । द्रोण सुभटके सुरथपै जान चह्यो रिसछाय ॥ तिमि तेहि लखि आचार्य्य तहँ यों मारतभो वान । निकट जाइबेको न क्षण लह्यो वीरबलवान ॥ चपल रह्यो इमिसुरथपै धृष्टद्युम्नरणधीर । ताके

तनशर हनतभो क्षण न लह्यो द्विजबीर ॥ चौपाई ॥ तुरँग युवा ईर्षापर इतउत। चरत रह्यो पक्षीसम बलयुत ॥ तहँतहँ द्विज बल बुद्धि निकेतू। अबिरलरचै शरनके सेतू। खड्ग चर्म अरु तुरतागतिसों। तिनकहँ व्यर्थकरै सो जतिसों ॥ तहां द्रोणकर-लाघव करिकै। साठि बाण तुरँगन पहँ धरिकै ॥ काट्योचर्म मारि शतबाणा। दशशायक हनि काटि कृपाणा ॥ युग शरसो काट्यो ध्वजकेतू। सूतहि बधत भयो जयहेतू ॥ तब अमोघ शर योजित करिकै। तापहँ तज्यो मंत्र बिधि भरिकै ॥ हनि चौदह तोमर शर ताही। काटि दयो सात्वकि जयचाही ॥ यमके मुखमधिसों अभिमानिहि। सात्वकि काट्यो भटसेना-निहि ॥ लखि उतके भट अनरथ चीन्हें। सेनानिहि गोपित करिलीन्हें ॥ इन सेनानिहि रक्षित देखी। द्रोण सात्वकी पहँ अति तेखी ॥ तुरतहि छब्बिस बाण प्रहारे। फिरि छब्बिसशर उरमधिमारे ॥ अमरष गह्यो द्रोण यह सुनिकै। वृद्धभूप बूझै जय गुनिकै ॥ सोअब बेगि भाषु हे आरय। सात्वकि कोजो कियो अचारय ॥ सोसुनिकै हँसि संजय भाषो। तबद्विजताको बध अभिलाषो ॥ कीन्ह्यो अति विक्रम मनभायो। नेकु न ताहि सुबश करिपायो ॥ दोहा ॥ नागराज सम श्वसत भरि रिसकरि रातेनैन। अधर दाबिकै रदनसों द्रोण बीरबलऐन ॥ तुरँग तुरंगन चपलकरि चलिसात्वकिकी ओर। अबरहुखरो न भागु कहि बरषो बाण अथोर ॥ सात्वकि तिमि वर्षत बि-शिख कह्यो सूतसों बैन। शीघ्रसुरथ मम द्रोणके ढिगलैचलो सचैन ॥ सोरठा ॥ जौन त्यागि निज धर्म भो आश्रित नृप सु-वनको। गहि क्षत्रिनको कर्म चरततासु बिक्रमलखो ॥ चौपाई ॥ इमिकहि रचत शरनकोसेतू। भिरो द्रोणसों बुद्धि निकेतू ॥ द्रोणताहि सहसन शरमारे। सो सहसनशर द्विजपहँ डारे ॥ दोउनके दोऊ सहसन शर। काटि काटि मारे बहुशरबर ॥

दोऊ अद्भुत विधिसों चरहीं। दोऊ दिशि शरपंजर करहीं ॥ दोऊ भट शरपंजर काटैं। दोऊ दोउन हनि हनिडाटैं ॥ दोऊ छत्र दुहुँन के भेदे। दोऊ दोउनके ध्वजछेदे ॥ दोउनके शर मढ़ि सब दिशिमें। अन्धकार कीन्ह्यो जिमि निशिमें ॥ दोऊ अनुपम भट विधि साजे। दोऊ भिरे रुधिरसों राजे ॥ दोऊ मण्डल सम धनुलीन्हें। चक्रसरिस चरि अतिरणकीन्हें ॥ दुहुँ दिशिके योधा तेहि क्षनमें। लखि दोउन कहँ विस्मित मनमें॥ त्यागि त्यागि संगरको करिबो। लखिलखि रहे दुहुँनको लरि- बो ॥ सुरगण तहां आइरणचाहे। दोउनकहँ बहुभांतिसराहे॥ दोऊ गहिगहि अति उतकरषा। कीन्हों दिव्य शरनकी बर- षा॥ दिव्य दिव्य अस्त्रनसों दोऊ। वारतभये लखैं सबकोऊ॥ इमि लरि सात्वकि लाघव बरसों। धनुष द्रोणको काट्यो शर सों॥तुरित द्रोणधनुऔरउठायो। सात्यकि सोऊकाटिगिरायो॥ दोहा ॥ फेरि द्रोण धनु और गहि बरषन लागो बान। सोऊ काटतभो तुरित सात्वकिवीर अमान ॥ यहि प्रकार षोड़श धनुष काटे सात्वकिवीर। करी प्रशंसा सुमन कहि सात्वकि अनुपमवीर॥ साचार्य्यितक्कै द्रोणतहँ करतभये अनुमान। भी- षम अर्जुनसम करत सात्वकि धनुष बिधान ॥ चौपाई ॥ तबगहि और धनुष रिस लीन्हें। दिव्य अस्त्रकी बरषा कीन्हें ॥ जितने अस्त्रतजे रणवारण। सात्वकि तिनको कीन्हों बारण॥ जेजे अ- स्त्र द्रोणतहँडारे। सात्वकि तेई अस्त्रप्रहारे॥ तब अनुमानि द्रोण अभिमानी। डारो आग्निबाण सन्धानी ॥ वारुणअस्त्रसात्वकी मारो। अभिरो युग शरवर्च सँभारो ॥ प्रलयकरन दोऊ भय धारे। भिरि निजनिज प्रभाव विस्तारे ॥ अन्धकार सबदिशि महँ छायो। भरिगो घोरशब्द अनमायो ॥ तेहिक्षण धर्म नृप- ति सबभाई। भये तासु रक्षक ढिगआई ॥ धृष्टद्युम्न केकय क्षितिपालक। सदल विराट शत्रुकुल घालक ॥ पर्वतीसाण

मंत्र पढ़ि पढ़िकै । भिरे द्रोण भटसों बढ़िबढ़िकै ॥ दुःशासनहि आदि भटरूरे । राजकुमार क्रोधसों पूरे ॥ द्रोणहिं रक्षित तिन सों भिरिकै । घोरयुद्ध कीन्हों तहँ थिरिकै ॥ इतउतकेभट सहितसमाजा । अति बिक्रम कीन्हों तहँ राजा ॥ भो अतितुमुल युद्ध तहँ सबसों । पृथक् पृथक् सब कहिये कबसों ॥ हय गज सुभट असंख्यन जूझे । निज परसैन न कोऊ बूझे ॥ बहीरुधिरकी सरिता भारी । तहँकर रुण्ड मुण्ड जलचारी ॥ दोहा ॥ काटे धनुरथ छत्रध्वज भूषण बसन अनेक । याद जलज सम तासुमधि निरखे सहित बिबेक ॥ शैल शिखर समलखिपरेमरे डरे गजराज । समुनि गुफासम बधितभट सहित अँबारी साज ॥ सोरठा ॥ सुनोभूप तेहिकाल हांकि सुरथ अतिबेगसों । भट अवन्ति क्षितिपाल गये पार्थसों लरनकहँ ॥ चौपाई ॥ ते ढिग जाइ प्रचारि प्रचारी । बरषे बिशिख सिहारि सिहारी ॥ साठि बाण अर्जुन कहँ मारे । कृष्णहि सत्तरिबाण प्रहारे ॥ तुरगन हने बाणशत क्षनमें । तब अर्जुन कोपित ह्वै मनमें ॥ बिन्द और अनुबिन्द नृपतिके । धनुकाटे हनिशर त्रय अतिके ॥ तबते शीघ्र और धनु गहिगहि । मारे बाण खड़ोरहु कहिकहि ॥ पारथ तेऊ काटि शरासन । हति युग सूतन अरुहयशासन ॥ मारि बज्रसम शर गिरिभेदन । कियो बिन्द नृपको शिर छेदन ॥ निज गुरु बन्धुहि मृतकनिहारी । नृप अनुबिन्द बिदित रणचारी ॥ तब तजिसुरथ गदाकरगहिकै । चलोपार्थपहँ थिरु थिरु कहिकै ॥ अर्जुनमारि पांचशरआसू । काटो शीश चरणभुजतासू ॥ तिनको मरण देखितेहि पलमें । हाहाकारमचोममदलमें ॥ तेहिक्षण तासु अनुगभट रूरे । भिरे पार्थ सों अतिरिसपूरे ॥ तोमरशक्तिभल्ल अनियारे । पट्टिशगदा परशुबध भारे ॥ भिन्दिपाल आदिक सब चोखे । आयुधबरषतभे अति रोखे ॥ पार्थ काटि सब आयुध तिनके । काटे शिरपग सुभटअ-

गिनके ॥ अगणित भटन पराजित करिकै । मर्दतसैन चलो प्रण धरिकै ॥ दोहा ॥ तब अगणित भूपतिसदल भिर प्रचारि प्रचारि । तिन्हैं बधत टारतचलो पार्थ विचारि विचारि ॥ करत पराजित जंगमन दहत थावरन भूप । चलत दवालिमिसैन मधि चलोपार्थ रविरूप ॥ रोला ॥ बरषि शायक बधत विचलित करत दलचतुरंग । करत रथतिमि सुपथपारथ चले जात सुढंग ॥ मनहुँ फारत गिरिहि मधिकै जातकोऊ देव । बहति शोणित धारतहिमग लसति सँग यहिभेव ॥ मनु भगीरथ सरिस कोऊ भूप बीर उदार । जात बेधत भूमि लीन्हैं भारतीकी धार ॥ करत जिमि बाणेतप्रण तहँ पार्थ भट अवदात । करत सारथिपनो तैसो कृष्ण रथ लैजात ॥ कह्यो धीरे कृष्णसों तहँ पार्थ सुनु हे तात । अश्वभे अतिश्रमित बेधित शायकनसों गात ॥ सदातुव मतपाय पाण्डव लहत जय सब ठौर । यत्न जो करतव्य अब सो कहौ प्रभुकरि गौर ॥ खरो करिरथ खोलि अश्वन काढ़िबाणसमस्त । विगतश्रम करिलेहु तुम हम करत युद्ध प्रशस्त ॥ पार्थके ये बचन सुनिकै कह्यो केशव हौशि । चहतहैं यह कहन हमकरतव्य है यह औशि ॥ बचन यह सुनि उतरि रथते पार्थबीर अमान । लगो बरषन भटनपहँ सब ओर अविरल बान ॥ देखि महि पै पार्थ कहँ लखि समय भूपतिभूरि । सदल बढ़ि बढ़ि घेरि सबदिशि दये शायक पूरि ॥ पार्थ रचि शरसेतु सब दिशि बाणसबकेकाटि । हने सबके गातमधि बहुबाण धनुबिधिठाटि ॥ एकपारथ भूमिगत तेहि सुभट अगणित घेरि । भये वर्षत शस्त्र सब दिशि तुरँगरथ हयफेरि ॥ नेकशंकित भयो नहिंतहँ पार्थभट रणधीर । नहींपाये छुवन एकोबाण तासुशरीर ॥ कृष्णहयन विशल्यकरिकै कहो सुनि हेपार्थ । विगत श्रमनाहिं होत हैं सब अश्व बिकल जलार्थ ॥ बचनयहसुनि पार्थमंत्रित बाणमहिमधिमारि । कियो

प्रगटित तहांसरवर पूर्णअनुपम वारि ॥ मत्स्यकूर्म सुवारि जन्तुत परमपावन रूप । अश्वपान सुनामसरसो लसो परम अनूप ॥ तासु दरशन हेतु तेहिक्षण आयनारदतत्र । देखिताकहँ कह्यो पारथ लहोशुभ जयपत्र ॥ कृष्णलखि हरषाय सरमधि तुरँग सबलैजाय । वारिपानकराय धोवन लगे तहँ पयराय ॥ पार्थसरके सकल दिशि अतिघनेशायक छाय । अमल अनघ अभेद अनुपमदयो गेहबनाय ॥ जलदगण समसुभट अगणितघेरि झुकि सबओर । गरजि गरजि प्रचारि बरषै शस्त्र वारिअघोर ॥ पार्थहरिसम शैलसम शरगेह रचनाधारि । दये परन न कृष्ण ब्रज पहँ नेकु आयुध वारि ॥ कियो तेहिक्षण पार्थ जैसो धनुषधरको काज । आजुलौं नहिं और कोऊकियो ऐसो साज ॥ सुचित रहि तहँ कृष्ण अश्वन धोइबाहर आइ । जोरि रथमें चढ़े पार्थहि लखि सराहि सचाइ ॥ सुरथपै चढ़िपार्थफिरि सब ओर वर्षत बान । चलो सिन्धु महीपकी दिशि दलहि दलत अमान ॥ गहे सब नृपग्लानि ताको लखि अमानुषकर्म । गुणो सिन्धु महीपको बधिजाब औशिअमर्म ॥ मृगनमधिमृगराज सम भट पार्थ क्रीड़त जात । एक भटहिअनेक भटनाहिं सकत जीतिलजात ॥ भाषिऐसे परस्पर नृपभटनके समुदाय । देहिं पारथबीर पहँ शर शक्ति तोमर छाय ॥ काटि आयुध सकल तिनकहँ बेधि बधि बिचलाय । पार्थ बरषत बाण सब दिशिचलो जाय सचाय ॥ पार्थ अगणित शस्त्रहानि फल करत लसत सचेत । एकलोभ अनेक गुणकहँ व्यर्थजिमि करिदेत ॥ सुभट अगणित भिरैं तेहि बिधि पार्थसों तेहि ठौर । जात पुष्पितविपिन मधि गजमत्तसो जिमि भौर ॥ गर्ब गहिगहि भिरत बाढ़ि बढ़ि शूर भूपनि जौन । उदधि गतजिमि सरितजलतिमि नहीं बहुरे तौन ॥ लखतही डरिभगैंकेते बीरतजि भटलीक । बेद पथसों होत जैसे विमुखजे नास्तीक ॥ दोहा ॥ इमि मर्दत

चतुरङ्गिणी जात पार्थकहँदेखि । कितनेनृपगणनृपनसों कहत भये अवरेखि ॥ सिन्धुनृपति केबधनकी करी प्रतिज्ञा पार्थ । सोसुनि जान्यो अवशिवह निजप्रण करिहि यथार्थ ॥ ताके बधिबेकी रही इतीआश बलवान । छुटन न पैहैंद्रोणसों यद्यपि पार्थ अमान ॥ फारि द्रोणदल जाल जब कढ़ोपीन भटमीन । तब मोहियते काढ़िगई वहआशा ह्वैक्षीन ॥ जीतिद्रोण कहँ जात तेहि आड़ैको बलऐन । गिरिहि उड़ावत पौनतेहि तरु गण रोकि सकैन ॥ सोरठा ॥ भुजबलसों भोपार उदधि पराक्रम द्रोणके । तेहि करि बाहु बिहार भट बहु शरतरिबो कहा ॥ झ-पट्यो सिंह सचाय कोपि गराजि जेहिबधनकहँ । तेहि द्विरदहि न बचाय सकत द्विरद समुदाय जुरि ॥ चौपाई ॥ जेहि दलमध्य जयद्रथ भूप । सो दल निरखिभयो तेहिरूप ॥ मृगके निकट जाय मृगराज । होत यथा गहिबेके काज ॥ जबलगि इनहिं न परतलखाय । तबलगि जियत जयद्रथराय ॥ लखितहि यहलेहैं वहिमारि । लेतबाज जिमि पक्षिहि धारि ॥ इतनेमें नृप तोसुत बीर । पहुंचो जाय पार्थके तीर ॥ अति सुबेग सोंसुरथ बढ़ाय । सम्मुख भयोपार्थ के जाय ॥ ताक्षणतो दलमें क्षितिपाल । बाजे दुन्दुभि शंख बिशाल ॥ सिन्धुराजके रक्षक सर्ब । हर्षित भयो गहेगुरुगर्ब ॥ भयो सैनमें शोर अमन्द । भिरो पार्थसों कुरुकुलचन्द ॥ कितने अति धीरज अनुमानि । चितै रहे अति अचरज जानि ॥ कितने सुभट कहैं इमिआम । भूप-हिं पार्थबधत यहि याम ॥ कृष्ण भूप कहँ सम्मुखदेखि । कहो धनंजयसों अवरेखि ॥ आजु दैव वश सुनु कुलदीप । दुर्योधन कहँ लहो समीप ॥ इनकीन्हें जितनेअपकार । सोसबसमुझि२ यहिबार ॥ दुसह क्रोध प्रगटित करिअत्र । भेजहुइन्हैं रहतयम यत्र ॥ है यह सब अनरथको मूल । बैरवारिसरिताको कूल ॥ दोहा ॥ द्रुपदसुताकेकच ग्रहण समुझि समुझि बनवास । अवशि

बधौ यहि दैवबश लहे आजु तुम पास ॥ पार्थबचन यह सुनि कहो सांचकहे तुम जौन। हांकि तुरंगन तासु ढिग शीघ्र चलो बलभौन ॥ सोरठा ॥ यह सुनि कृष्ण सडौर चले सुरथ लैतासु दिशि। दुर्योधन करि गौर कहत भयो इमि पार्थ सों ॥ पारथ क्षिति पै आय दिव्य अस्त्र जितने लहे। सो बिक्रम व्यवसाय प्रगट करहु जो शुद्ध भट ॥ तुव बिक्रम अधिकार सुने बहुत देखे नकछु। होहु पांडुके बार जो तौ दरशावहु हमैं ॥ चौपाई ॥ इमिकहि तीनिबाण अनियारे। ताकि पारथके उरमाधि मारे ॥ चारिबाण घोरनकहँ हनिकै। कृष्णहिं मारे दशशर गनिकै ॥ पार्थहने तेहि चौदह शायक। जेतरुपाहन बेधन लायक ॥ ते सबबाण कवचमें भिरि भिरि। धसे न परे सुरथपै गिरि गिरि ॥ तिन बाणनकहँ निष्फल देखी। फिरिमारे चौदह शर तेखी ॥ तेऊ गिरे कवच छ्वै कैसे। पाहन पाहनमों लगि जैसे ॥ इते पार्थके बाण अमोले। निष्फलदेखि जनार्दनबोले॥ वज्रसदृश तोशर यहि क्षनमें। कतनाहिं धसत शत्रुके तनमें॥ कै ऋजुभो गांडीव शरासन। कै घटिगो तोबलअरिनाशन ॥ जातेबाण गिरततन छ्वैकै। मोहिं होत बिस्मय यह ज्वैकै ॥ यहसुनि पार्थकह्यो यदुबरसों। बांध्योआपु द्रोण निजकरसों ॥ कवच अभेद तासु तनमाहीं। ताते ममशर प्रविशत नाहीं ॥ सोवह कवच छिदित नहिंकबहूं। लखो याहि जीतत हमतबहूं॥ इमिकहि शायकमंत्रितकरिकै। धनुतकितज्योपार्थरिसभरिकै ॥ लखिदूरहिते अश्वत्थामा। काटिदियो सोशरअभिरामा ॥ तब पारथअतिबिस्मितह्वैकै। बरष्योबाण सकलदिशिज्वैकै॥ दोहा॥ बरषि असंख्यन बाणतहँ काटि असंख्यन बान। घोरयुद्ध कीन्होंतहां दोऊ बीर अमान ॥ नवनव शर तो सुतहने कृष्ण पार्थकेगात। सोलखि इतके सुभटसब सुख लहिभये बिभात॥ सोरठा ॥ काल कराल समान ह्वै तेहिक्षण पारथतहां। बधेमारि

बहुबान नृपकेरथते तुरँगसब॥ चौपाई॥ हनि अमोघशर सूतहि मारे। पार्श्व रक्षकन बधि महिडारे। धनुषहि काटि बिधनुकरि दीन्हे। करतलमधि शरहनि मुदलीन्हे॥ मारिमारि बहुशायक चीन्हे। रथके सब अँग चूरणकीन्हे॥ शर भरि मधि तहँ भो नृपतैसे। वायु भौंर मधि लघुतरु जैसे॥ इमि आपदा भूपपहँ देखी। बढ़िबढ़ि अगणित भट अवरेखी॥ पार्थहि घेरिलेत भे चाड़े। सादर नृपहिं करतभे आड़े॥ अगणित हयरथ सुभट पदाती। जेप्रसिद्ध अरिसेन निपाती॥ सबदिशि घेरिगहे उतकरषा। करीघने आयुधकी बरषा॥ कोश भरेलौं अविरल योधा। जिमि ह्वैपरे किये अवरोधा॥ स्तम्भितकरि दीन्हेंरथ तासु। दुसह दवासम शरभर जासु॥ सो लखि केशव अति अमरषिकै। कहो धनंजयकी दिशि लखिकै॥ कत ऋजु भये धनुष बिसफारत। नहिं बाणनसों अरिदलटारत॥ सुनिपारथ अति बिक्रम करिकै। मण्डल सरिस शरासन करिकै॥ रबिकरसम बाणनके भारन। कियेनिहार सदशदल बारन॥ अगणित हयगजभट बधिडारत। पारत प्रलय सुराह सिधारत॥ सिन्धु नृपतिके बध कीरतिसों। चलो बेगि बुधि बिक्रम अतिसों॥ दोहा॥ सिन्धु नृपतिके निकट तेहि आवत जानिसबेग। अतिजवसों बढ़ि बढ़ि भिरे भटषट रथी सशेग॥ पांचजन्यशंखहि तबहिं कृष्ण बजायो चाहि। देवदत्त शुभ शंखजो पार्थ बजायोताहि॥ दुशह शब्द तिनको मचो जिमि घनगरजनि घोर। शंकित भे ममसैनमधि भटलखि प्रलय अथोर॥ सोरठा॥ तेहिक्षण घने निशान बाजत भये ममसैनमधि। मचो घोरघमसान पारथसों षटरथिन सों॥ शंख बजाय बजाय अगणित नृपति ससैनबढ़ि। मण्डल घने बनाय घेरिलेत भे पार्थकहँ॥ चौपाई॥ बाणतिहत्तरि अतिअभिरामा। हनंकृष्णकहँअश्वत्थामा॥ तीनिभल्ल अर्जुनकहँ मारे। अश्वनपहँ शरपांचप्रहारे॥

तब अर्जुन अतिरिस बिस्तारे । शतषटशर तेहिमारि प्रचारे ॥ दशशर हने कर्णके तनमें । तीनि कर्णके सुतकहँ क्षनमें ॥ मारि क्षुरप्रबाण बरगति को । काट्यो धनुषशल्य नरपति को ॥ गहिधनु और शल्य भटनोखो । माऱ्यो ताहिबाण अतिचोखो ॥ धनुटंकारि कर्णभट नायक । मारतभो बरबत्तिस शायक॥ शल्यहने दशशायक गनिकै । गरज्यो कृपदश शायक हनिकै ॥ भूरिश्रवा तीनिशर मारे । सातबाण द्विजको सुतडारे ॥ तिनसबकहँ पारथभयधारे । हने असंख्यनशर अनियारे ॥ भरेक्रोध गहिगहि उतकरषा । कियोपरस्पर शरकी बरषा॥तकि तकि शायक हनिहनिडाटैं । अगणित बाण परस्परकाटैं ॥ अगणितबाण रथनकी गतिसों । व्यर्थ कियो सारथी सुजतिसों॥ अगणित बाणहने तनमाहीं । अगणितकटत देखि पछिताहीं॥ यहिबिधिबाणनकी झरिशरसे । रविकीकिरणिन रथतनपरसे॥ दोहा ॥ बाणजालसों सुभटषट देहिं पार्थकहँ तोपि । काटिजाल पारथतिन्हैं देइ शरणसों गोपि ॥ इहिबिधि परस्पर शरनकी बरषाकरितेसर्व । घोरयुद्ध कीन्होंतहां भरेक्रोध गहिगर्व ॥सोरठा॥ यहसुनि वृद्ध महीप कह्यो सूतके सुवनसों । अबकहु हे कुलदीप युद्ध ब्यूहके द्वारको ॥ चौपाई ॥ संजय कह्योसुनो नरनायक। हैवह संगरसुनिबे लायक॥ जबसों धस्यो ब्यूहमधि पारथ । तबसों धर्मनृपति गुणि स्वारथ ॥ सदल ब्यूहमधि जैबो गुनिकै । सदलकियो अतिरण धनुधुनिकै ॥ द्रोणआदि इतकेभट स्रूरे । अतिबिक्रम कीन्हें बलपूरे ॥ धृष्टद्युम्न आदिक भटभाये । लरि शोणितकी नदीबहाये ॥ कीन्हें कितक यत्न मनभाये । ब्यूहमध्य नहिं पैठनपाये ॥ तीजे पहर युधिष्ठिर राजा । कै अति क्रोधित सहित समाजा ॥ अतिगह्वर बजवाइ नगारे । द्रोणहिं जीतन हेत पधारे ॥ तिनकहँ झुकत द्रोणपहँ देखी । ममदलके योधा अति तेखी ॥ है जिताजित तितातितसों सादर । चलिचलि

तिनसों भिरे उजागर ॥ वृहत्क्षत्र नृपकेकयपतिसों । अभिरो क्षेमधूर्तिबल अतिसों ॥ धृष्टकेतु शिशुपाल तनय सों । भिरो वीरधन्वा रणनयसों ॥ कियो नकुल भटको अवरोधा । तासुत वीर विकर्ण सुयोधा ॥ भिरतभयो सहदेव सुभटसों । दुर्मुख इतै आउ यहि रटसों ॥ सात्वकि सो भोभिरत प्रचारी । व्याघ्रदत्त दुर्मद रणचारी ॥ भिरो वृकोदर भटसों चावन । आर्घ्यशृङ्ग रणदुन्द मचावन ॥ दोहा ॥ बरषत शर जे द्रोण पहँ जातरहे जयऊटि । घोरयुद्ध तिनसों कियो इमि इतके भट जूटि ॥ भूप युधिष्ठिर द्रोणकहँ मारे नव्वे बान । तेहि पचीस शर हनतभो द्रोण विदित बलवान ॥ फिरि सब हयध्वज सूत पहँ तजे पचीस सुबान । करि करलाघव नृप तिन्हैं काटिदये सविधान ॥ सोरठा ॥ तब तीक्षणशर मारिकाटि युधिष्ठिरकोधनुष। करि शरवृष्टि विचारि क्षणमें दिये अदृश्य करि ॥ मधुभारा ॥ नृप कहँ अदेष । लखि भट अशेष ॥ जाने विचारि । नृपगयोमारि ॥ तब नृपति धर्म । गहि धनुष पर्म ॥ शरसेत ठाटि । सबबाण काटि ॥ करि रिस अथोर । गहिशक्तिघोर ॥ जेहि लगे आठ । घण्टा सुपाट ॥ सोकरि कशीश । मार्‍यो क्षितीश ॥ तेहि द्रोण देखि । अनुमानितेखि ॥ डार्‍योअमान । ब्रह्मास्त्रबान ॥ सोशर अनीच । लागि शक्तिबीच ॥ तेहि तुरित जारि । निज रुचि पसारि ॥ फिरि चलो ताहि । नृपधर्म्म चाहि ॥ ब्रह्मास्त्र मारि । तेहि दये वारि ॥ द्रोणहि नराच । भो हनत पांच ॥ फिरिबाण एक । हनिकै सटेक ॥ वरधनुष तासु । काट्यो जु आसु ॥ दोहा ॥ द्रोणाचारय विधनु ह्वै गदा चलाई चाहि । धर्म निरखि हनि निज गदा मगहि गिराई ताहि ॥ क्रोधिद्रोण वरधनुषगहि हनि तीक्षण शर चारि । वधि नृपके रथके तुरँग दीन्हें महिपैडारि॥ अति तीक्षण शर एकसों काटि दये धनुतासु । केतु काटि पुनि तीनिशर भूपहि मार्‍यो आसु ॥ सोरठा ॥ विरथ विधनुह्वै भूप

खरोभयो रथसों उतरि । तब द्विजह्वै रबिरूप गहन चलो ब-
रषत बिशिख ॥ तब करिकै अनुमान चढ़ि रथपै सहदेवके ।
भागो नृपति सयान हांकि चपल तुरकीहयन ॥ चौपाई ॥ क्षेम-
धूर्ति नृप धनुबिधि ठाटे । वृहत्क्षत्र नृपको धनु काटे ॥ धनुष
काटि बहुशर अनियारे । वृहत्क्षत्रके तनमाधि मारे ॥ वृहत्क्षत्र
नृपबर धनुधारी । बध्यो तासु सूतहि शरमारी ॥ फिरि रिस
गहिकरि राते ईक्षण । बध्यो नृपहि हनि शायकतीक्षण ॥ क्षेम-
धूर्ति कहँ बधि सो राजा । दल मर्दतभो सहितसमाजा ॥ धृष्ट-
केतुसों भिरि जयकारण । नृपति बीरधन्वा भयभारण ॥ घोर
युद्ध कीन्हों तेहि क्षनमें । जे लखि भटभे मोहित मनमें ॥ लरैं
यथा युगमैगल भिरिकै । ते तिमि तहां लरतभे थिरिकै ॥ नृ-
पति बीरधन्वा दृढ़ घायक । काट्यो तासु धनुष हनि शायक ॥
धृष्टकेतु तब अति रिस गहिकै । मारयो शक्ति खरोरहुकहिकै ॥
लखि सोशक्ति बेधि उरतासू । कीन्हों तेहि यमपुर गतआसू ॥
गिरो बीरधन्वा अरिजेना । भगी त्रिगर्त देशकी सेना ॥ सह-
देव दुर्मर्षण रणजेता । अतिशय युद्ध किये अरिनेता ॥ चाहि
चाहि बधगहि उत्कर्षा । करत भये बाणनकी बर्षा ॥ अगणित
शायक हनि हनि डाटैं । अगणित बाण बाणसों काटैं ॥ दोऊ
अति अमरषसों पूरे । हनैंपरस्पर शायकरूरे ॥ दोहा ॥ अति
कर लाघव करितहां माद्रीसुतबलवान । काट्यो तौ सुतको ध-
नुष केतुमारि युगवान ॥ करिसूतहि बधि बधतभो चारों तुरँग
चलांक । दुर्मर्षणके हिय हन्यो शायक पांच निशांक ॥ तब
दुर्मर्षण बिकलह्वै तजि निज रथहि सवार । चढ्योजाय निर-
मित्रकें रथपै गह भयभार ॥ सोरठा ॥ लखिप्रकोपि सहदेवबर्षि
बाण टंकारिधनु । मारिभल्लबर भेव बेधि बध्यो निरमित्र कहँ ॥
रथसों भिरो उदार नृपत्रिगर्तपतिको सुवन । तेहिक्षण हाहाकार
भयो तास दलमें महा ॥ चौपाई ॥ व्याघ्रदत्त सात्वकिसों भिरि-

के । घोरयुद्ध कीन्हो तहँ थिरिकै ॥ बलसों वर्षि असंख्यन बानहि । कियो अदृश्य वीर युयुधानहि ॥ करि मण्डलसम धनुष विशालहि । सात्वकि काटि तासु शरजालहि ॥ ध्वज काट्यो सारथिहि निपात्यो । अश्वन बधि आनँदसों रात्यो ॥ हनि मंत्रित शर बज्रसमाना । वध्यो व्याघ्रदत्तहि बलवाना ॥ गिय्यो मगधपतिको सुत मरिकै । लखि मागधभट अतिरिसधरिकै ॥ रथी गजी पैदर हयसादी । भिरे प्रचारिप्रचारि प्रमादी ॥ सात्वकि को बध करिबो परखे । विविध भांतिके आयुधबरखे ॥ तहँ सात्वकि अतिधनु बिधिधारे । अगणित भटन निमिषमें मारे ॥ अगणित भटन पराजित करिकै । दल मर्दतभो सब दिशि चरिकै ॥ तेहिक्षणमें सात्वकिके सम्मुख । कोऊ भट न सकतहै करिरुख ॥ तब सात्वकिसों भिरो अचारय । किये उभयते अद्भुत कारय ॥ भिरो द्रौपदेयनसों राजा । सोमदत्तको सुवन समाजा ॥ पांचपांचशर सबकहँ हनिकै । मारे सातसात शरगनिकै ॥ द्रौपदेयशरअति बलधारे । तीनि तीनिशर ताकहँ मारे ॥ सोमदत्त तबतिन्हैंप्रहारे । पांचपांच शायकअनियारे ॥ दोहा ॥ मारि मारि अगणित विशिख काटिकाटि बहुबान । घोर युद्ध कीन्ह्योतहां तेसिगरेबलवान ॥ तासु तुरँगसबपार्थसुतबधे मारि शरचारि । धनुकाटतभो भीमकोतनयधनुष टंकारि ॥ शर क्षुरप्रसें धर्मको सुत काटतभो केतु । तनय नकुलको सूतकहँ वध्योविरचि शरसेतु ॥ सोरठा ॥ अर्द्धचन्द्रसमबाणमारि सुवन सहदेवको । कीन्हों ताहि अप्राण काटि शीश शिर त्राणसह ॥ सोमदत्तको पूतभाई भूरिश्रवाको । मरोवीर मजबूतभो हाहाध्वनिसैनमधि ॥ तोमर ॥ भिरि भीमसों तेहि काल । भट आर्षश्रृंग कराल ॥ करि विषद धनुष विधान । मोहनत अगणित बान ॥ भटभीम सब शर काटि । तेहि हन्यो नवशर डाटि ॥ तबगरराजि राक्षस चण्ड । टंकारिकै कोदण्ड ॥ बहु काटि शायक तासु ।

शर पांच मार्‍यो आसु ॥ तब भयो भीम अचैन । फिरि बेधि तेहि बलसेन ॥ करिघने आयुध पात । भोबधतभट शतसात ॥ फिरि चेतलखि क्षण मांह । भटभीम दीरघ बांह ॥ तेहि अ-सुर पै शरसेतु । भो रचतजय यश हेतु ॥ भिरि लख्योअसुर अमान । प्रफुलित पलाश समान ॥ इमि कहत भो करिटेर । नहिं बचत तू यहि बेर ॥ इमि भाषि मायावान । ह्वैगयो अ-न्तर्द्धान ॥ तहँ बरषि शायक भूरि । भोदेत सब दिशि पूरि ॥ बिनु लखे भीम सचाय । शर दियो नभ पै छाय ॥ भिदि शरन सों असुरेश । भोभ्रमत महि नभ देश ॥ बहु बिरचिमायाघोर । भो करत प्रलय अथोर ॥ दोहा ॥ गरजि गरजि घनसम घुमड़ि बरषि अस्त्रसमुदाय । अगणित हय गजभटन बधि यमपुर दये पठाय ॥ भीमतजे ब्रह्मास्त्र तब तासों शर समुदाय । प्रगटित ह्वैके आसुरी माया दई नशाय ॥ लागि असुरके गातमधि अगणित शायकघोर । दये बिकल करि तब गयो भागि द्रोण कीओर ॥ सोरठा ॥ इमिअलम्बुषहि जीति भीमसेन अतिप्रबल भट । सादर जययश चीतिभो मरदत दलकौरवी ॥ चौपाई ॥ तहँ अलम्बुषहि जात निरेखी । भिरोघटोत्कचबध अवरेखी ॥ ते युग राक्षसबीर अमाना । कीन्हे तहांघोर घमसाना ॥ बिबि-ध भांतिकी माया करि करि । लरे शक्र सम्बरसम चरिचरि ॥ माया कुशल कराल कठोरा । दोऊ घनसमान बरजोरा ॥ मारि मारि सहि सहि बहु त्राना । किये युद्ध अभिशेष महाना ॥ ति-न्हें लरत लखिकै तेहि क्षनमें । पाण्डव भट अतिरिसगहिमन में ॥ झुके अलम्बुष भट पै तैसे । बहु हरि मत्तद्विरदपै जैसे ॥ तहँ सबके अगणित शर काटत । सब कहँ अगणितशर हनि डाटत ॥ ह्वैमण्डलकेबाहेरगरजो । बीरअलम्बुष रहोनबरजो ॥ तिमि तहँ लर्‍यो लसै जिमि बढ़िकै । मैगल दावा मधिसोंक-ढ़िकै ॥ गरजि भीमकेतन मधिमारे । शर पचीसअतिशयअनि-

धारे ॥ धर्महि हन्यो तीनि शर चीन्हें। पांच घटोत्कच के तन दीन्हें ॥ सहदेवहि शरसातप्रहारे। बाण तिहत्तरिनकुलहिमारे॥ हन्यो द्रौपदेयन के तनमें। पांचपांचशायक तेहि क्षनमें॥ यहि प्रकार बाणनकी झरिकै। लरत भयो राक्षस रिस भरिकै॥दोहा॥ भीमसेन तव हनतभो नव शर ताके काय। भूपयुधिष्ठिर हनत भो शतशरको समुदाय॥ चौंसठि शरमारे नकुल पांच बाण सहदेव। तीनि तीनि शर हनतभो द्रौपदेय वरभेव॥ वीरघटोत्कच हनतभो शर पचास अति चण्ड। फिरि सत्तरि शर हनि भयो टंकारत कोदण्ड॥ सोरठा॥ पांचपांच शर चण्ड सबकहँ हन्यों अलम्बुषों। तेसब भट उद्दण्ड ताहि हने अगणित बिशिख॥ चौपाई॥ भीमहि आदि सुभट रिस पूरे। हनेबज्र सम शायक रूरे॥ तिनबाणन सों वेधित ह्वैकै। भयो अचेत सुविक्रमग्वैकै॥ भट अलम्बुषहि मूर्च्छित देखी। भीमसुवनराक्षस अवरेखी॥ सादर कूदि गर्वि मनमाहीं। गयो अलंबुष के रथ पाहीं॥ रथसों ताहि गिराइ मरदिकै। फिरि उठाय तजिगहि ननरदिकै॥ जिमि वरव्यालहि गरुड़ पकरिकै। झटकिपटकि गहि तजि फिरि धरिकै॥ पटकि अप्राण करै तेहि जैसे। वध्यो अलंबुष कहँ सो तैसे॥ मम दल तासु नाश अवलोकी। भो जिमि रवि अथये चककोकी॥ परको सैन भयो तेहि भेशा। जिमि घन मण्डल नशे दिनेशा॥ दुख लहि वृद्धनृपति यह सुनिकै। बूझतभये हरष कृतगुनिकै॥ व्याघ्रदत्त मगधेशहि वधिकै। जब सात्वकि विक्रम करि अधिकै॥ मरदतहो मम दलतब तासों। भिरि द्विजकहाकिये कहु म्हासों॥ संजयकहत भयोसुनु राजा। तेहि लखि मरदत सैन समाजा॥ द्रोणाचारय धनुटंकारी। ताके सम्मुख चलोप्रचारी॥ लखि द्रोणहिसात्वकि भटनायक। मारतभयो पचीससुशायक॥ तबअति कोपिद्रोण जयचाही। पांचबाण हनि वेधे ताही॥ दोहा॥ तबसात्वकि शर

अर्द्धशत हन्यो द्रोणकेगात । सात्वकिके तनपैकियो द्विजअगणित शरपात ॥ दोउनपै दोऊतहांतजैं शरनकेजाल । काटिजालबेधैं दुहुँन दोऊबीर बिशाल ॥ सोरठा ॥ मार्‍यो द्रोणअमानबाण वज्रसम सात्वकिहि । तासों भिदि बलवानमुरछिरह्यो ध्वजसों अभिरि ॥ मणिबाह ॥ भट सात्वकिको मुरछायुत देखि । तहँ धर्म महीपहिये अवरेखि ॥ भट भीमहि आदिक जे बलऐन । तिन्हैं तहँ भेजिदिये सहसैन ॥ तहँआइ अचारयसों सबजूटि । शरकी बरषा बिरचे जयऊटि ॥ तजिकै तिनपै शरजाल नवीन । रण सागर को द्विजधीवरपीन ॥ करिकै जिमिजालन में गतमीन । बधि योधन सो दलकीन्हेंउ क्षीन ॥ बनको जिमि दाहतिभूरि दवागि । तिमिभो दलमर्दत तोहितलागि ॥ सबके शरजालन काटतजात । सबपै करिकै बहु आयुधपात ॥ परके दलमाहँ प्रलय परवाह । द्विजपूरत भो नहिंजो अवगाह ॥ दोहा ॥ धृष्टद्युम्न के अनुग प्रिय महारथी रणबीर । समबल बुद्धि यशी सुभट तिहि क्षण बधे सुबीर ॥ कैकेयनमें बधत भो शतयोधा सरदार । इबिधि हजारन भट बध्यो तेहिक्षण द्रोण उदार ॥ तेहिक्षण भो वहिसेन मधि हाहाकार महान । कोपोकाल कराल सम द्रोणाचार्य अमान ॥ सोरठा ॥ सुरगण चढ़े बिमान निरखिपराक्रम द्रोणको । बहुबिधि किये बखान जानिअमानुष कर्मकर ॥ घोरयुद्ध तेहियामहोतभयो तेहिकाल तहँ । दिनको तीजोयाम भो व्यतीत सियराम जपि ॥

इतिद्रोणपर्वणिचतुर्थदिनयुद्धतृतीयप्रहर समाप्तिर्नामषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

दोहा ॥ सुनोभूप तीजोपहर बीततहँ नृपधर्म । सुने नधुनि गाण्डीव की बिकल भयेगहि भर्म ॥ रोला ॥ सुनै बिनुगाण्डीव धनुकी दीह धुनिनृप धर्म । सात्वकी शुचिशूरसों इमि कहोकरतव्य कर्म ॥ सात्वकी तुम दक्षबहुबिधि सुनेशास्त्र अशेष । कार्य जे सत असत हैं सामान्य और बिशेष ॥ जानि तिनको भेद

तुम सतकाज करन प्रसिद्ध । जौन चाहत करन तुमसों होत सादर सिद्ध ॥ वृष्णिकुलमें परमयोधा दोयभाषत सर्व । कृष्ण सुवन प्रद्युम्नके तुम करनकाज अखर्व ॥ द्वैतवनमें पार्थहमसों कहत हे बहुबार । परमहित मम सात्वकीहै कृष्णासदृशउदार॥ एक धनुधर दलन अरिदल पुरुषसिंह प्रवीन । परे मोपै भीर ममहित करिहि संगरपीन ॥ शिष्य अतिप्रिय सखाहमजिमि कृष्णके तिमि तौन । सखा अतिप्रिय शिष्य ममबल बुद्धि बिक्रमभौन ॥ रोज तुमहिं प्रशंसि बहुविधि कहैपार्थ सप्रेम । परे संकट युद्धमें मम करिहि सात्वकिक्षेम ॥ कहत हैं जो पार्थसो नहिं असत सत्य प्रयोग । सात्वकी तुम सकलभांति सराहिबे के योग ॥ शुद्ध सुहित सुवीर शुचि सरवज्ञ सुखद सरूप । कलित कुलके कमल कोमल कठिन अनख अनूप ॥ कृष्णपारथ मोहिं जिमि प्रिय तथा तुमको मोहिं । परम आनँदलहत हौं मैं सात्वकी लहि तोहिं ॥ बहुत भांति प्रशंसि इमितेहि कहो भूप सुजान । सखा अरु अति परमप्रिय तो गुरूपासअमान॥ गयोपरदल मध्य जबसो पार्थ तबसों तात । लह्यो तासुन खबरि कछुअब शोच बाढ़तजात॥ सुनतहे गाण्डीवकी धुनिरहो तबलों धीर । सोन अब सुनिपरत ताते बढ़त शोच गँभीर ॥ सुनो ताते करो अपने योगकर्म उदण्ड । जाहु पारथ कृष्णके ढिग बेधि ब्यूह प्रचण्ड ॥ भीमआदिक भटन सहहै लरतद्विज सों जूटि । जाहु तुमढिगपार्थके मम सुजय करिबो ऊटि॥ दोहा॥ मित्र हेत जीतिहु मरेहु मिलत तौनफलतात । दिये सकल पृथिवी मिलै जौन सुफल अवदात ॥ जिहि तो विक्रम विशद को जो दिन आये पार्थ । आश गहे हे सोइहै सो अबकरहु यथार्थ ॥ प्रीतियुक्त अति मधुर प्रिय उचितधर्मके बैन । सुनि प्रसन्न ह्वै कहत भो सात्वकि बलबुधि ऐन ॥ चौपाई ॥ भूप शिरोमणि ज्ञातापर्म । आपुकहे करतब्य सुकर्म ॥ पारथके हित

लागि यह देह। तजब मोहिं तृण सरिस अनेह॥ पारथके हित लरौं अभर्म। शक्र बरुण यमसों सुनुधर्म॥ व्यूह बिदारि मर्दि परसैन। जाव पार्थ के पास सचैन॥ यामेंमोहिं न संशयनेक। है मम मनमें संशयएक॥ सो हमकहततासुनु जौन। उचित होइ नृप कहिये तौन॥ रथपै चढ़ि अर्जुन रणधीर। अरिदल मुखजब चलो सुबीर॥ सुनत कृष्णके हमसों तत्र। कह्योरहो तुम सात्वकिअत्र॥ धर्महिं पकरनको प्रण पूर्ब। कियो भूपसों द्विजभट गूर्ब॥ जब हम उतै जाब तबबिप्र। लरि भूपहि गहि लेइहि क्षिप्र॥ तातै इत रहि है भटरत्न। बिधिवत किहेहु भूप करयत्न॥ यहिप्रकार कहि कहि बहुबार। नृपतो रक्षणके उपचार॥ अर्जुन हमैं गये इतराखि। द्विजकेप्रणको संशयनाखि॥ तातै तजि तो ढिगको बास। किमि हम जाहिं पार्थके पास॥ तुम्हैं पकरि जो पाइहि दुष्ट। बहुरिकरिहि निज कारयपुष्ट॥ जीति पार्थ फिरि लहिहैं हारि। कहा कहैंगे हमैं निहारि॥
दोहा॥ कृष्ण सहित अर्जुन सुभट तीनिलोक कोजैन। तापर संकट परन कीसंशय हमकोहैन॥ ममगुरुके गुरुपति तुमबूझि कहो अबजौन। उचित जानिसो शीशधरि शीघ्रकरैं हमतौन॥
रोला॥ सात्वकीके बचन सुनिकै धर्मनृप गुणिमर्म। कह्योसात्वकि कहत तुमसो सांचपै ममभर्म॥ तासुसुधि बिनुलहे मिटिहि न सुनोतातै तात। शीघ्रतुम उतजाहु जेहिथर पार्थ बीर बिभात॥ भीम नकुलबिराट द्रुपद शिखण्डि अरु सहदेव। द्रौपदीके सुवन अरु कैकेय सबशरभेव॥ भट घटोत्कच धृष्टकेतु सुकुन्तिभोज अमान। करेंगेममसदा रक्षण सदल सब बलवान॥ भूपके ये बचनसुनिकै गुण्यो सात्वकि बीर। जावनहिं तौ सुभट कहिहैं मोहिं सडर अधीर॥ चिन्तिऐसो कह्यो सात्वकि एवमस्तु नरेश। जाबहम ढिगपार्थके दलिशत्रु सैन कुभेश॥ पार्थहैषटकोश कोहैकोशषटकोफेर। तीनियोजन चले

मिलिहैं पार्थअरि मृगशेर ॥ बाजि गज अरु रथनके असवार पैदरभूरि । व्यूहमुख अरुउतै लोहैं खरे अविरलपूरि ॥ युद्धकी विधि जीति तिनमें दक्षसिगरे भूप । सदलराके राहठाढ़े लसैं कालस्वरूप ॥ जीति सबकहँ पार्थके ढिग जाब हम क्षणमाह । आयुधन सों सुरथ मम भरवाइये नरनाह ॥ बचन यह सुनि मोदिपारथ सकल आयुधभेद । पृथक् पृथक् असंख्य रथपैंद्ये राखि अखेद ॥ चपल नूतन पुष्टप्रवल सुजाति हय समुदाय । सुरथपै लगवाइदीन्हे मद्यपानकराय ॥ चारुकवच अभेदसोंकरि तिन्हैं छादित चाहि । अनुज दारुकको परमपटु कियो सारथि ताहि ॥ स्नानकरिकै दानदै सन्नाहधारि अमान । सुमधूकला-तक अमल तेहि सुपान करि मन मान ॥ बन्दिपग नृपधर्मके चढ़ि सुरथपै बलऐन । जानुपै धरि धनुष मम दिशिचलोसुनि स्वस्तैन ॥ भीमभट सँगचलो ताकहँ बहुतभांति बुझाय । नृपहि रक्षण हेत सात्वकि दयो फेरि सचाय ॥ दोहा ॥ इतके भट सब सात्वकिहि जात द्रोणपहँ जानि । चले कोलाहल करत नहिं जान देत अनुमानि ॥ तब उतके भीमादि भट बरषतशर समुदाय । बढ़िबढ़ि तिनसों भिरिकरे घोरयुद्ध दृढ़घाय ॥ सोरठा ॥ अगणितभट रणधीरभिरे सात्वकी सुभटसों । तिनमधि सात्वकि बीर लसो मृगनमधि सिंह सम ॥ चौपाई ॥ शिष्य पार्थको धीर धुरीन । रचि अद्भुत शरसेतु नवीन ॥ बधि अगणित योधन प्रणधरिकै । अगणित भटन पराजित करिकै ॥ व्यूहभेदि जेहि मग गोपारथ । तेहि मग चलतभयो गुणि स्वारथ ॥ तबआइत भो द्रोणाचारय । धनु विधि करत अमानुष कारय ॥ काटि असंख्यन शायक नोखे । मारेताहि पांचशर चोखे ॥ काटि द्रोणके अगणित शायक । हन्यो सातशर सात्वकिचायक ॥ बहुरिद्रोण तेहि षटशर मारे । सात्वकि तेहि दश बाणप्रहारे ॥ फिरि सो द्रोणहि षटशरहनिकै । हनत भयो वसुशायक गनिकै ॥ सूत

ध्वजा घोरनके तनमें । हनेपरम परशर तेहिक्षन में ॥ दोऊबीर
बीर प्रणलीन्हें । अतिशय तुमुल युद्ध तहँकीन्हें ॥ करिसात्व-
किहि शरनसों गोपित । बिप्रकह्यो करिप्रलय अरोपित ॥ तो
आचार्य पार्थहमसों भिरि । करिनहिं सक्यो युद्ध सम्मुखथिरि॥
जिमि कापुरुषजातरणताजिकै । हियेहारितिमि कढ़िगो लजिकै॥
तू जीयत फिरि जाय न पैहै । जौनपार्थ जिमिगो तिमिजैहै ॥
ऐसे वचन द्रोणके सुनिकै । सात्वकि कहतभयो इमि गुनिकै ॥
मम अचार्यके आपु अचारय । सबबिधि हमहिं पूज्य हेआरय ॥
दोहा ॥ लहि आज्ञा नृपधर्मकी हम पारथपहँ जात । करि अनु-
कम्पा शीघ्र उत जान दीजियेतात ॥ इमिकहिकै निजसूत सन
कहत भयो मतिमान । तजिद्रोणहि रथहांकि अब शीघ्र चलो
सबिधान ॥ सोरठा ॥ यह सुनि सूतसुजान रथहि बढ़ायोयुक्तिसों ।
सब दिशि बरषत बान भटन बधत सात्वकि चलो ॥ चौपाई ॥
इमि सात्वकि कहँ जातनिरेखी । बरषो बाण द्रोण अति तेखी
नहिंपलटो सोबीर बिचारी । मरदत सैन चलो रणचारी ॥ तहँ-
हीं परी कर्णकी सेना । तामधि प्रविशतभो जगजेना ॥ लहि
अजयूथ अरक्षक जैसे । निरभय बिक मरदै निजलैसे ॥ यथा
सूत सुतको दलमरद्दत । भोजसैन दिशिचलो ननरदत ॥ इमि
निज दलमुख आवत चाही । कृतबर्मा रोकतभो ताही ॥ चारि
बाण अश्वनकहँ हनिकै । हन्यो सात्वकिहि षटशर गनिकै ॥
काटि तासु बहुशर अनियारे । सात्वकि तेहि षोड़शशरमारे ॥
तब कृतबर्मा अतिशय रोखो । तासु हिये मास्यो शर चोखो ॥
बेधिकवच गातहि सो कढ़िकै । धरणीमधि प्रविशतभो बढ़िकै॥
फिरि कृतबर्मा हनि बरशायक । काट्यो तासुधनुष दृढ़घायक ॥
सात्वकि तुरत और धनुगहिकै । बरषोबिशिख खरोरहुकहिकै ॥
हनिक्षुरप्रशायक मजबूतहि । बध्यो भोज कुलपति के सूतहि ॥
बिना नियामक सबहय रथके । भागिभे गामी इतउत पथके ॥

तब निज करसों भट कृतवर्मा । रोकिहयनभो लखतअभर्मा ॥
तौलगि सात्वकि भट तेहि पलमें । गो काम्बोज भूपकेदलमें ॥
दोहा ॥ सोलखिके बढ़ि सात्वकिहि रोकनचह्यो अचार्य । भीमादिक वरभटनसों जान न पायो आर्य ॥ और सूतकहँ सुरथपै लै कृतवर्मावीर । शीघ्रजाय भीमादिसों भिरत भयो रणधीर ॥ अद्भुत विक्रम करतभो कृतबर्मा तहँजाय । पाण्डुनृपतिके सुतनपै देतभयो शरछाय ॥ सोरठा ॥ भीमसेन शरतीनि कृतबर्माके तनहने । बीससुबाण नवीन हनतभयो सहदेवभट ॥ नकुल हने शतबान द्रौपदेय सत्तरि विशिख । राक्षसवीर अमान गरजो सात सुबाण हनि ॥ चौपाई ॥ धृष्टद्युम्न शरतीनि प्रहारे । द्रुपद बिराट बाणदश मारे ॥ पांच सुबाण शिखण्डी हनिकै । मार्‍यो फेरि बीसशर गनिकै ॥ अगणितबाण काटि सबहीके । सबकहँ मारि बाण बहुनीके ॥ कृतबर्मा हनु मारु पुकारत । भीमहिभयो सातशरमारत ॥ काट्यो तासु शरासनकेतू । रचि सबदिशि अबिरल शरसेतू ॥ ऐसे बिधनु भीमकहँ करिकै । हनत भयो बहुशर प्रणधरिकै ॥ सोलखि उतकेभट रिसपूरे । घेरि हनतभे शायकरूरे ॥ करि अतिक्रोध भीम रणचारी । मारत भयो शक्ति अतिभारी ॥ मारि दोयशर पूरित पर्मा । काट्यो ताहिबीर कृतबर्मा ॥ सो लखि भीम औरधनुधारी । हन्योपांच शर ताहि निहारी ॥ बेधि नृपहि हनि शायक चीन्हें । अरुण पुष्पयुत तरुसम कीन्हें ॥ कृतबर्मा नृप सबकहँ डाटत । सबके अगणित शायक काटत ॥ अद्भुत विक्रम करिभटनायक । सबके तनमार्‍यो बहुशायक ॥ काटि शिखण्डीकोधनु नोखो । मारत भयो बाणतजि चोखो ॥ बिधनु शिखण्डी भट असिगहिकै । मारत भयो भागुमति कहिकै ॥ काटितासु धनुअसि छबिरासी । गिरी भूमिपै थिरि तड़ितासी ॥ दोहा ॥ तेहि अन्तरमें धनुष गहि द्रुपदतनय रणधीर । कृतबर्महि बेधतभयो हनिबहुचोखे

तीर ॥ तुरित और धनुगहि नृपति करि विधिवत सन्धान । सबके तनमधि हनतभो तीनि तीनि बरवान ॥ बीर शिखण्डी को हियो बेध्यो अतिरिस पागि । मुरछित ह्वै रथपै गिरो द्रुपद-तनय धनुत्यागि ॥ निरखि शिखण्डिहि मूर्च्छित पाण्डव भट समुदाय । कृतबर्मा कहँ घेरिकै देतभये शरछाय ॥ सोरठा ॥ कृतबर्मा जयहेतु अद्भुत बिक्रम तहँकियो । बिरचि शरनको सेतु सब कहँ मोहित करतभो ॥ बधतभयो तेहिकाल अगणितनर गज तुरँगतहँ । प्रलयकाल बिकराल रोप्यो परदल मध्यनृप॥ तोमर ॥ निज सेनमध्य अपार । सुनि घोर हाहाकार ॥ भट सात्वकी अनखाय । निज रथहि शीघ्र फेराय ॥ नृप भोजपतिसों जूटि । भोलरत जययश ऊटि ॥ नृप भोजनाथ अमान । तेहि हनत अगणित बान ॥ सो भोजपतिके गात । भोकरतबहुशर पात ॥ हनि चारिशर अरतश्व । भो बधत चारों अश्व ॥ फिरि बाणतीक्षण मारि । बधिदयो सूतहि डारि ॥ फिरि मारि बहुशर चाहि । करिदयो मुरछित ताहि ॥ सो तासु सुभट निहारि । लै भगो रथपै डारि ॥ कृतबर्मकहँ इमिजीति । परदेश दलको ईति॥ फिरि बध्यो गज समुदाय । दिशि सब्यद्विजके जाय ॥ तहँ बिकल लखिगजसैन । जलसन्ध नृप बलऐन ॥ निजमत्तगजहि बढ़ाय । शरजाल दीन्हों छाय ॥ फिरि मारि शायक एक । धनु दयो काटि सटेक ॥ धनु काटि मागधबीर । भोहनत पांच सुतीर ॥ तब सात्वकी धनु आन । गहिहने साठिसुबान ॥ दोहा ॥ शरक्षुरप्र हनि मूठि ढिग काटि दियो धनु तासु । फिरि प्रचारि कै तीनिशर हन्योतासुतन आसु ॥ तब जलसन्ध सुखड्गगहि भेरि मारि ह्वै चण्ड । चारु धनुष सैनेयको काटि कियो द्वैखंण्ड ॥ तुरित और कोदण्डगहि सात्वकिबीर अमान । काटिदियो नृपके भुजन हनिक्षुरप्रयुगबान ॥ सोरठा ॥ फिरि क्षुरप्रशरमारि काटिभूपको चारुशिर । दीन्हों महिपै डारि तालवृक्षछे सुफल

सम ॥ चौपाई ॥ अतिशय हाहाधुनि ममदलमें। तेहि क्षणहोत भयो सबथलमें ॥ मागधपति नृपको वधदेखी। द्रोणाचार्य धनुर्द्धर तेखी ॥ सादर जाय तहां रणचारी। मुनि पुंगवसों भिरो प्रचारी॥ अतिरिसगहि दुर्योधन राजा। आवतभो तहँ सहित समाजा ॥ घेरि सात्वकिहि शरकी वर्षा। करत भयेगहि अति उत्कर्षा ॥ द्रोण सात्वकी के तनमारे। सतहत्तरि शायक अनियारे ॥ दुर्मर्षण मार्‍यो द्वादशशर। दुःसह हन्यो वाणदश अतिबर ॥ हन्यो बिकर्ण तीसशरचोखे। दुर्मुख हने वाणदश नोखे ॥ दुःशासन मारे बसुबाना। द्वैशर चित्रसेन बलवाना ॥ दुर्योधन बहुबाण प्रहारे। अगणित बाण रथी सबडारे ॥ तेहि क्षण सात्वकि भट बर धानुष। भूपति कीन्हों काजअमानुष ॥ करि सबके बहुशायक भगनित। मारत सब कहँ शायक अगनित ॥ दुर्योधन भूपतिके तनमें। हन्यो अनागिने शर गुणि मनमें ॥ ते युगबीर क्रोधसों भरिकै। कीन्हों घोरयुद्ध शरझरिकै ॥ सात्वकिमारि बाण बरभाको। दीन्हींकाटि शरासनताको ॥ जौलगिभूप और धनुलीन्हें। तौ लगिहने बाण बहु चीन्हें ॥ दोहा ॥ हन्यो सात्वकिहि बहुविशिख भूपति गहि धनुआन। भूपहि पीड़ित करतभो सात्वकिहनि बहुबान ॥ भूपहि पीड़ित देखिकै सब तोसुत अनखाय। भटसात्वकि रणधीर पै देतभये शरछाय ॥ रचि सब पै शरसेत तहँ अगणित शायक काटि। सात्वकि सबकहँ हनतभो पांचपांच शरडाटि ॥ अति तुरताकरि नृपतिको धनुध्वज काटि सुवीर। बधिघोरन सूतहि बध्यो हनिक्षुरप्र बहुतीर ॥ सोरठा ॥ विरथ विधनु करि ताहि हनत भयो अगणित बिशिख। इमि भूपतिकहँ चाहि हाहा धुनिभो सैनमधि ॥ तब अति भयसों पागि दुर्योधन तो सुवननृप। गो तुरिताकरिभागि चित्रसेनके सुरथ पै ॥ चौपाई ॥ तहँ हाहाधुनि सुनिसुनु आरज। कृतबरमा नृप गुणिजयका-

रज ॥ रथ हकवाइ सुधनु टंकारी । भिरोसात्वकीसोंरणचारी ॥
बर्षिअसंख्यन शर अनियारे । छब्बिसबाण सात्वकिहिमारे ॥
सात्वकि अगणित बाण बरषिकै । अगणित शायक काटिदर-
शिकै ॥ दीरघ कठिनबाण अति तुरमें । माख्यो कृतबरमाकेउर
में ॥ ताके लगे भूपभो तैसो । क्षितिके कँपे होत गिरिजैसो ॥
साठिबाण घोरन कहँ हनिकै । सूतहिं हन्योसातशर गनिकै ॥
फिरियमदण्ड सरिसशरमारी । कृतबरमा कहँहन्यो बिचारी ॥
बेधि हियो सो शायक कढ़िगो । दश ब्यामहुँ के आगेबढ़िगो॥
इमि बेधित ह्वै भटकृतबर्मा । भो मुरछित धनु रहो न कर्मा ॥
रथपर परो मृतक समह्वैकै । सात्वकि तब तेहिहन्योनज्वैकै॥
काटत गदा शक्तिअसि शायक । बेधतबधतभटनभटनायक॥
मर्दत सैन चलो जहँ पारथ । सोलखिद्रोण बूझि तोस्वारथ ॥
जानि सात्वकिहि अति रणकरकश । भिरोकरत धनुबिधि क-
रिसरकश ॥ चेतिजाय भूपति कृतबरमा । भिरो पांडवन सों
गहि मरमा ॥ भिरि सात्वकिसों द्विजरिस लीन्हें । बाणनको दु-
रदिन करिदीन्हें ॥ दोहा ॥ द्रोण सात्वकी करत भे घोरयुद्धतेहि
काल । बिरचिकाटि रचि काटिरचि काटि शरनके जाल ॥ द्रो-
णहिं सात्वकि सात्वकिहि द्रोण हने शरभूरि । तुरँग सूत के
तनदये अगणित शायक पूरि ॥ सोरठा ॥ द्रोण मारि वरबान
काट्यो सात्वकि को धनुष । तब सात्वकिबलवान त्यागि धनुष
झेल्यो गदा ॥ तोमर ॥ द्विज ताहि शरसों काटिकै । तेहि हन्यो
शायक डाटिकै ॥ तब सात्वकी अनुमानिकै । गहि और धनु
सन्धानिकै ॥ बहुबाण द्विजके गातमें । हनि हन्यो ध्वज अव-
दातमें ॥ भटद्रोणशक्ति सुधारिकै । परसारथी पै डारिकै ॥ क-
रि दिये मोहित तेखिकै । भट सात्वकी सों देखिकै ॥ करिआपु
कारज सूतको । हनि बाणसार अकूतको ॥ हो द्रोणको जो सा-
रथी । तेहि बध्यो गहि गति पारथी ॥ तबसूतबिनु हयबिप्रके ।

भे भ्रमत अति गति क्षिप्रके ॥ जहँ भ्रमे हयभय पागिकै । तहँ गये भट सँग लागिकै ॥ यहदशा द्विजकी पेखिकै । तेहिकाल सम अवरेखिकै ॥ बहुबीर साहस त्यागिकै । कढ़िगये इतउत भागिकै ॥ हयव्यूह द्वारे जायकै । भे रुकत साहसपायकै ॥ तहँ और सूत चढ़ायकै । द्विज फिरो ओज बढ़ायकै ॥ तबसात्वकी भट ठानसों । इमि कह्यो सूत सुजानसों ॥ अब चलो रथ लै वेगसों । चलि मिलैं पार्थ असेगसों ॥ सुनि सूतबीर बिशाल सों । तहँ चलो अद्भुत चालसों ॥ दोहा ॥ ग्रीषमकेदिन मध्यगत मारतण्डसम चण्ड । शरकर पूरित करततहँ चलोबीरउद्दण्ड॥ शरबरषत मरदत भटन सो सात्वकिहि देखि । बीर सुदर्शन भूमिपति भिरतभयो अवरेखि ॥ अरिदलगरसम सात्वकी भट करषन अरिप्राण । ताहि सुदर्शन हनत भो अतिदुख दरशन बाण ॥ तेहि सात्वकिसों सात्वकिहि शरजालनसों गोपि । बा-रिवारि शरमारिशर दीन्हों प्रलय अरोपि॥ सोरठा ॥ नृपकेअनुग अनेक हैं मारत अगणित विशिख । तिन्हैं काटिगहिटेक सा-त्वकि बहुयोधन वध्यो ॥ चौपाई ॥ नृपबहुशर सात्वकिकहँमारे । सात्वकि तेहि बहुबाण प्रहारे ॥ भूपतिकोपि अरुणकरिईक्षण । मास्योताहि तीनिशर तीक्षण ॥ कवच छेदि तनमधिधसिकै । अतिदुख देत भये तहँ बसिकै ॥ तब सात्वकि अतिशय रिस करिकै । वध्योतासु तुरगन प्रणधरिकै ॥ हनिबरभल्ल सूतकहँ बधिकै । बाणक्षुरप्र शरासन मधिकै ॥ करिकसीश तजिध्यावत ईशहि । काटतभयो भूपके शीशहि ॥ वधिभूपति तजि सुभट घनेरे । चलो बीर पारथके नेरे ॥ पुरुषसिंह अनुपम रणचारी । सारथि सों तहँकह्यो विचारी ॥ द्विजदल अरणव अगम अ-गाधा । नांघो ताहि न अब कछुबाधा ॥ अब सब सैनलगत मोहिं तैसो । पक्षिहि लगै अल्पशर जैसो ॥ म्लेच्छनकीयह सेना गाढ़ी । मोहिं दहनकहँ सम्मुख ठाढ़ी ॥ सादरतासुमध्य

चलि आरज । देखहु ममअद्भुत रणकारज ॥ सादरसुनि
सुवचन अतिबलके। सादर निकट गयो तेहि दलके ॥ लखि
सात्वाकिहि निकट सब योधा । बरषत बाण किये अवरोधा ॥
सात्वकि काटत शायक तिनके। काट्यो शिरभुज सुभट अगि-
नके ॥ बरषि सुमंत्रित शायक चीन्हें। प्रलयकाल आरोपित
कीन्हें ॥ दोहा ॥ मण्डलसम कोदण्डकरि सात्वकिबीरअमान ।
अगणित योधन बधतभो भूपतिप्रति सन्धान ॥ बर्बरसक का-
म्बोज अरु दस्युसबर किरात । म्लेच्छ असंख्यन निमिषमें
बधेबीर अवदात ॥ रचि शर पंजर सकलदिशि सबके आयुध
बारि। रुण्ड मुण्डमय मेदिनी कियो भटन संहारि ॥ सोरठा ॥
अनुपम रणबिधि ठाटि निरमित करिसर रुधिरको । रथ हय
भट गज काटि पूरिदयो जलयादसम ॥ चौपाई ॥ दावानलसम
दलबन जारत । लखि हतशेष सुभट कै आरत ॥ भये परा-
जित साहस तजिकै। तब सात्वकि भटचलो गराजिकै ॥ इमि
सो सैन जातजगजेना । चलोबीर मरदत ममसेना ॥ अगणि-
त भटन बेधिबधि डारत । बेधिबेधि बहुभटन बिडारत ॥ जात
बिभात सात्वकी तैसे । मृगगण मध्यकेशरी जैसे ॥ नृप तेहि
क्षण दुर्योधन राजा । जाय बेगसों सहित समाजा ॥ तेहिपीछू
सो भयेपुकारत । सुनि फिरिभिरो बीरशर डारत ॥ तिमि आ-
ड़ेउ सुभटनकी रेला । जिमि आड़त अरणवकहँ बेला ॥ अ-
तिशय अद्भुत बिक्रम सचिकै । सात्वकि सेतु शरनकोरचिकै ॥
बध्यो तीनिशत घोरे क्षनमें । हन्योचारिशत गजगुणि मनमें ॥
सबकेबाण असंख्यनकाटत । सबकहँ शायक हनिहनिडाटत ॥
रथ गज तुरंग सवार अनेगण । बधतभयो सैनेय गहेप्रण ॥
भूपति तहँ बिचित्रगति देखे । ईश्वरकी महिमा अवरेखे ॥
व्यर्थ होहिं सब शायक इतके। अति अमोघजे जाने नितके ॥
जितेतज्यो सात्वकि दृढ़घायक । व्यर्थ न भे ते एको शायक ॥

तहांतासु विक्रम अनुमाने । पारथसों अधिकीकरिजाने ॥ दोहा ॥ तासु सूत अरु हयनकहँ पांचवाण हनि भूप । सात्वकि केतन हनतभो ग्यारहवाण अनूप ॥ दुःशासन षोडश विशिख चित्र-सेन शरपांच । शकुनिभूप मारतभयो तकि पचीस नाराच ॥ दुःसहि मारे सात्वकिहि पांच बाण अवदात । तीनि तीनिशा-यक हन्यो सात्वकि सबके गात ॥ सोरठा ॥ सौबलको धनुकाटि भूपहि मास्यो तीनि शर । चित्रसेन कहँडाटि तीक्षण शतशर हनतभो ॥ चौपाई ॥ दशशर दुःसहके तनमारे । दुःशासनकहँवीस प्रहारे ॥ गहि धनु आन शकुनि क्षितिपाला । मास्यो तेरहवाण विशाला ॥ दशशर मारतभो दुःशासन । तीनि बाण दुस्सहदढ़ आसन ॥ तीस बाण हनि भूपति गरजो । दुर्मुख द्वादश शर हनि तरजो ॥ बरषि असंख्यनशरवर फबके । काटि असंख्यन शायक सबके ॥ पांच पांच शायक अनियारे । सात्वकि सब कहँ मारि प्रचारे ॥ फिरि हनि एक बाण मजबूतहि । बधिडा-स्यो भूपहि के सूतहि ॥ बिना सूत हय ह्वै निज सबके । सा-त्वकि के सम्मुख सों खसके ॥ गये दूरि निज मन के पथलै । इतउत भ्रमत भये सो रथलै ॥ दुःशासन आदिकभटरूरे । गये भूप के सँग भयपूरे ॥ सौबल जीति धनुष टंकारत । सात्वकि चलो भटन संहारत ॥ सात्वकि को इमि विक्रम सुनिकै । नृप धृतराष्ट्र कहतभे गुनिकै ॥ द्रोण आदि सुभटन कहँ जीतत । सात्वकि जात सैनमम रीतत ॥ पाण्डवके भाग्यनकी गुरता । यह औ कृष्ण दयाकी पुरता ॥ मन्दभाग्य सब सुवन हमारे । कैसेजीति लहैं अघमारे ॥ अब कहु सूत भयो फिरि जैसो । सुख दुख दायक नीक अनैसो ॥ दोहा ॥ यह सुनि संजयकहत भे मन दे सुनु नृपतौन । तो सम्मत कृतकर्मको मिलत भयो फल जौन ॥ दुर्योधन क्षितिपालको लहि अनुशासनफेरि । दुःशासन भट सुदल फिरिलिये सात्वकिहिघेरि ॥ पारथसकवा-

ह्लीक गण अरु कुनिन्द अम्बष्ट । पार्बतीय पैशाचजे सीखे युद्धसपट्ट ॥ महारथी शतरथ सहस सहसतुरंग सवार । रण कोबिद अति प्रबलभट द्विरद सवार हजार ॥ सोरठा ॥ दुःशासन रणधीर तिनकहँ शासन देतभो । तुम सब अनुपमबीर बेगि सात्वकिहि बधहु अब ॥ चौपाई ॥ बहुबिधि के आयुध समुदाय । दीन्हें सब सात्वकिपै छाय ॥ धनुटंकारि प्रचारि प्रचारि । बरषे बाण सिहारि सिहारि ॥ तेहिक्षण तहँ सात्वकि रणधीर । कियो अमानुष कर्मगँभीर ॥ इमि बिरच्यो शरपंजर आसु । लहे न एकौ शर तन तासु ॥ सब सुभटनके आयुध सर्व । काटिबारि करि व्यर्थ सगर्व ॥ सब सुभटनपै रचि शरसेत । बध्यो बध्यो कियोगतचेत ॥ हय गजसूत सुभट सरदार । बध्यो निमिषमें कइकहजार ॥ रथके अंगधनुषध्वजछत्र । अगणितकाटिगिराये तत्र ॥ यथाहोत अबिरलजलघात । भयेप्रचण्ड बातउतपात ॥ होतअजनको यूथअचैन । नृपतिमिविकल भईतोसैन ॥ दुःशासन सोदशा निहारि । पार्बतिनसों कह्योबिचारि ॥ तुम सबशूर सुभटममपक्ष । उपलयुद्धमें हौअतिदक्ष ॥ सात्वकि नहिंजानत सोयुद्ध । ताहि बधौ तुम सबभटउद्ध ॥ सुनि शतपांचबीर बलवाना । गजशिरके समभूरि पषाना ॥ डारनलगे सात्वकीपाह । तब सात्वकी धनुर्द्धर पाह ॥ करत भयो तिमि युद्ध ललाम । खरदल मध्य कियो जिमि राम ॥ दोहा ॥ प्रति पषाणमें कइक शर हनि हनिबीर अचूक । दियो फेरि ममसैन मुख करि करि अगणित टूक ॥ तासु शरन के घातसों टूटिटूटि पाषाण । पलटि पलटि लगि लगि करे अगणित भटन अप्राण ॥ तेहिक्षण बाण पषाणसों ह्वै मरदित तो सैन । ह्वै आरत हाहाकरतबिचलत भई अचैन ॥ सोरठा ॥ फिरि दशशत रणधीर जूटि उपलबरषन लगे । सात्वकि अनुपमबीर फिरि कीन्होसो दक्षता ॥ चौपाई ॥ तोरितोरि सब शिला सोहाये । प्रति योधनके शीशगिराये ॥

मारैं शिला सुभटरिस पागिपागि । तिनमें अगणित शायक लगिलगि ॥ फेरि फेरि सुभटनपै झेलैं । महि अहिदानव कन्दुक खेलैं ॥ अबिरल शिलापात के घातन । भई सैन नृपसों कहि जातन ॥ अगणित मरेपरे बहु घायल । चले भागि अगणित भट चायल ॥ तासु शरनसों इतके पाहन । लगिलगितथाकिये दलदाहन ॥ जिमि नदान निज सुहित अमेइ । मिलिसुजान अरिसों दुख देइ ॥ हाहाकार भूप तेहि पलमें । होतभयो तेहि थल मम दलमें ॥ घोरशोर तेहि थलको सुनिकै । द्रोणकह्यो सारथिसों गुनिकै ॥ दावानल सम ह्वै यहिक्षण में । सात्वकि बिहरतकुरुदल बनमें ॥ हाहाकार होत जहँभारी । तहँ ममरथ लै चलु रथचारी ॥ द्रोणाचारय सो सुनि येहु । सूत कहतभो सहित सनेहु ॥ इतपाण्डवपांचाल सोहाये । बलसों चहतव्यूह मधि आये ॥ जबलुम उतहि चलहुगे स्वामी । आड़िहि उन्हें कौन जयकामी ॥ भटन मरदि दलमाधि धसिऐहैं । नृपसात्वकि सम प्रलय मचैहैं ॥ यहाबिचारि मम संशय खोई । शासनकरौ करैं हम सोई ॥ दोहा ॥ नृप इतनेमें तो तनय दुःशासन भयपागि । रणतजि मर्दित भटनसह गो द्विजके ढिग भागि ॥ अति व्याकुल तेहि तो सुतहि लखि भय पूरित क्षीण । उचितबचन इमि कहतभो द्रोणाचार्य्य प्रवीण ॥ रोला ॥ कहो नृपहैं कुशल अरुहैं कुशल सब तो भाय । सिन्धुपति है कुशल अरुहै कुशल भटसमुदाय ॥ महारथ युवराज नृपके बन्धु तुम मतिमान । युद्ध तजि कतभगे डरिकै त्यागि बल अभिमान ॥ द्रौपदी को बसनगहिकै सभामधि तुमल्याय । पाण्डवनके सुनत तुम जो कहे ओज बढ़ाय ॥ जुवामें तूगई जीतीभई अब मम चेरि । कर्मदासिनिको करहुसो कर्म अपनो हेरि ॥ संगये सब सुपति तेरे त्यागि इनको गर्ब । उदर पालन करहु करिकै काज खर्ब अखर्ब ॥ पूर्व ऐसो कहो तुमहीं आजु तौन भुलाय । सात्वकी

सों सकतनाहिं लरिभजतगर्ब गँवाय ॥ भीमसों अरु पार्थ सों जब मचिहि संगर घोर । करोगे तब कहा भगिकाढ़ि जाहुगेके- हि ओर ॥ जीवलै जो भजत रणसों सकत नहिं मरि जीति । करौ जैसो कहत हम जो जौनि नृपकी नीति ॥ जानि आपुहि निबल उनसों मानि आपनि खोरि । चहैं वे महि जिती तितनी देहु मिलि करजोरि ॥ मारि नृपहि सबन्धु जौलगिलेहिं नहिं वेभूमि । देहु तौ लगि आपुसों मिलि चरण मुखसों चूमि ॥ न तरु शंक बिहाय उनसों लरो थिरि धरिधीर । युद्धमें मरिलहत उत्तमठौर क्षत्रीबीर ॥ बचन सुनि तो तनय नहिं कछु दयोउत्तर ताहि । सदल चलिगो सात्वकी सों लरन जययशचाहि ॥ द्रो- ण धसि पांचाल के दलमध्य वर्षत बाण । तुरंग गजबाधि धनुष ध्वजरथ छत्र शर तनु त्राण ॥ गदा पट्टिश शक्ति आदिककाटि आयुध भूरि । मारि अगणित भटन क्षणमें दियो परलै पूरि ॥ देखिइमि निज सैन मरदत बीरकेतु कुमार । भिरो सादर द्रोण सों करि धनुषको टंकार ॥ काटि अगणित बाण द्विजके बीरकेतु अमान । द्रोणके तनहने दीरघ पांच तीक्षणबान ॥ दोहा ॥ अग- णितशायक द्रोणके काटिकाटि गहिटेक । सातबाणसूतहि हन्यो ध्वजमथि मारो एक ॥ वीरकेतु रणधीरके काटि अनगिने बान । द्रोणतासु हिय मधिहन्यो शायक बज्रसमान ॥ फोरिशिला सम तासुउरकढ़िगो शायकचंड । ह्वैअप्राण रथसों गिरो नृप सुत बीर उदंड ॥ सोरठा ॥ मरि निपततलखिताहि तासु सहोदरचारि भट । द्रोणहि मारण चाहि भिरेशरनको जाल रचि ॥ चित्रकेतु रणधीर सुभट सुधन्वा चित्ररथ । बरषत बिशिख गँभीर भिरो चित्रवर्मा बली ॥ चौपाई ॥ तेसब सुभट बिदित भटनायक । तजे द्रोण पहँ अगणित शायक ॥ कछुक्षण तिनसों लरिरिस ली- न्हें । द्विज तिनको शिर छेदनकीन्हें ॥ निजबंधुन कोमरण निरे- खी ॥ धृष्टद्युम्न सेनापति तेखी ॥ शोचतबारि चखनसों मोचत।

भिरो अचारयसों बधरोचत ॥ रचिशरजाल हन्यो तेहिक्षनमें। नब्बेबाण द्रोणके तनमें ॥ अति दृढ़बान लगे सुनि आरय। मुरछित भोभट द्रोणाचारय ॥ द्रोणहि मुरछित लखि अनुमानी। धनुतजि धृष्टद्युम्न अभिमानी ॥ गहिअसि चर्मकूदि चरिपथपै। गोद्रोणाचारय केरथपै ॥ इतनेमें द्विजचेतित ह्वैकै। धृष्टद्युम्न कहँ निजढिगज्वैकै ॥ अतिलघु लघुशायक अनियारे। अविरलसेतु बिरचि तेहि मारे ॥ नहिंबढ़िसको पाय अवरोधा। पलटिगयो निजरथपै योधा ॥ धनुटंकारिगहो उतकरषा। करतभयो बाणनकी बरषा ॥ ताहिप्रचारि द्रोणलरि तेहिक्षिन। करत भयो बाणनको दुरदिन ॥ दोऊ अतुलविक्रमीगाये। अद्भुत युद्धकियो मनभाये ॥ अद्भुतभांति शरासन करषे। अद्भुत बिधि सों आयुध बरषे ॥ अद्भुत विधिसों आयुधकाटो। अद्भुतविधि शरहनिहनि डाटो ॥ दोहा ॥ धृष्टद्युम्नके सूतकहँ मारि वज्रसम बान। बधिगिराय गरजतभयो द्रोणाचार्य्य अमान ॥ विना नियामक तुरँगसब रथलैगये पराय। अगणित भट तेहिक्षण वध्यो द्रोणबीर दृढ़घाय ॥ इविधिजीति पांचाल दल फिरि निज दलमधि आय। व्यूहद्वारपै लसतभो द्रोणाचार्य्य सचाय ॥ सोरठा ॥ दुःशासन तो पुत्र सदलजाइ उतवेगसों। गहे जीति को सुत्र भयो प्रचारत सात्वकिहि ॥ चौपाई ॥ सुनि प्रचारि सात्वकि रणचारी। फिरो सिंहसम धनुटंकारी ॥ तो सुत साठि वाण तेहिक्षनमें। मारतभो सात्यकिके तनमें ॥ भटसबतो सुतके अनुगामी। बरषेभूरि बिशिख जयकामी ॥ नृप तेहिक्षण सात्वकि धनुधारी। करतभयो बिक्रम अतिभारी ॥ बरषि असंख्यन शरवर फबके। काटि असंख्यन शायक सबके ॥ प्रति भट जालशरनको रचिकै। सिगरे दलमधि शायक खचिकै ॥ अगणित हय गज भटबधि पलमें। प्रलय पसारतभो तेहि दलमें ॥ क्षणमें काहुहि बचत न जाने। आरतह्वै हतशेष

पराने ॥ तोसुत भगत देखि निजसेना । ईर्षावश न टरो जग जेना ॥ शत शर सात्वकिके तनमारे । तुरँगन कहँशर चारि प्रहारे ॥ तब सात्वकि अति तुरतालीन्हें । ताहि शरनसों गोपित कीन्हें ॥ दुःशासन कहँगोपित देखी । दुर्योधनभूपति अवरेखी ॥ दल त्रिगर्त्तको तुरित पठाये । तीनि हजार रथी मन भाये ॥ चाहि सात्वकी को अवरोधा । पहुँचे निकट प्रबल ते योधा ॥ सात्वकि बीरतिन्हैं लखि आवत । बढ़ि तिनसों अभिरो शर छावत ॥ ह्वैसब सुभट कालमुख गतसे । भये अधीरज बिक्रम हतसे ॥ दोहा ॥ तिनमें योधा पांचशत हेअगरे गहिगर्ब । क्षणमहँ तिनकहँ बधत भो सात्वकि सुभट अखर्ब ॥ लखि तिनको बधबिकल ह्वै भगिगे भट तजिदर्प । दुखमुख डगरे द्विजपतिहि लखिजिमि बिलमुखसर्प ॥ सोदल बिचलित करि गरजि चलोपार्थकी ओर । तबप्रचारि नवशरहने दुःशासन करिजोर ॥ सोरठा ॥ सात्वकि बीरउदण्ड पलटि खिझाये उरग सम । पांच बाणअतिचण्ड दुःशासन के तनहन्यो ॥ चौपाई ॥ फिरि तोतनय तीनि शर मारे । सात्वकि तेहिशर पांच प्रहारे ॥ फिरिहनि शरक्षुरप्र अतिचोखो । काट्यो तोसुतको धनु नोखो ॥ काटि तासुधनु निजधनु करषत । चलो पार्थकीदिशि शरबरषत ॥ तबतोसुत करिक्रोध अथोरा । मारतभयो शक्ति अतिघोरा ॥ हनिअनेक शायक मनभाये । सात्वकि ताकहँकाटि गिराये ॥ तबतो तनय और धनुगहिकै । शतशर हन्यो खरोरहु कहिकै ॥ तो सुतके उरसों धनुधारी । हन्यो तीनि शायक अति भारी ॥ तबमुरछित ह्वै तोसुत सोई । परोसुरथपै बिक्रम गोई ॥ तदनु सात्वकी हनिशर चारी । बधतभयो सबहय रथचारी ॥ बधि सारथिहि मारि वर शायक । धनुध्वज काटिचलो भटनायक ॥ भीमसेनकोप्रण अनुमानी । बध्योन दुःशासनहि सुज्ञानी ॥ लखि त्रिगर्त्तपति मन निरभैकै । भगोताहि निजरथपै लै-

कै ॥ दुःशासनहि जीतियहि विधिसों। चलो पार्थपहँ भरिजय रिधिसों ॥ नृप तेहिसमय न कोउवीरा। भयोतासु सम्मुख धरि धीरा ॥ जेधरिधीर गयेढिगतासू। तेमहितजि यमपुरगेआसू ॥ यथापतंग ज्योतिढिग जाई। होत भये तितभट समुदाई॥ दोहा॥ संजयसों यहसुनि कह्योवृद्धभूप दुखपाय। संजय चाहत दैवसों करत न रोकोजाय ॥ शक्रबरुण ममसैन मधिधसि जिमिसकतन जाय। तथा अकेलो सात्वकी गोबधिभट समुदाय॥ तदनन्तर जिमियुद्धभो सोकहु सूतसुजान। यहसुनि नृपसों कहतभो संजय अतिमति मान ॥ सोरठा॥ महाराज तेहिकाल करिसम्मत पांडव सकल। रचत शरनको जालपैठन चाहे व्यूहमधि ॥ तेहिक्षणतो सुतभूप भिरि तिनसों बरषत बिशिख। बिक्रम कियो अनूप जो लखि बिस्मितभे सुमन॥ निशाकर॥ दल नलिन वनमाह। द्विरद सम नरनाह॥ धसि गहे उत्कर्ष। भयोदलत सहर्ष ॥ भटनको समुदाय। बधतभो दृढ़घाय॥ बधिद्विरद हयभूरि। रुधिरकोसर पूरि ॥ सकल थरनि सचाय। शक्तिशर सरसाय॥ चक्रके सम- घूमि। कियो भीषम भूमि ॥ बिरचि शरके सेतु। काटि बहु धनु केतु ॥ कियोअद्भुत युद्ध। भूमिपति भटशुद्ध ॥ दोहा॥ ओजअख- एडल सरिसकरि मंडलसम कोदंड। परदलमधि पाखोप्रलय तोसुतबीर उदंड ॥ इमि दलमर्दत निरखितेहि भीमादिकभट सर्व। भिरत भये अति बेगसों वरषत बाण सगर्व ॥ भीमसेन कहँ बाणदश धर्म नृपतिकहँ सात। द्रुपद बिराटहि बाणषट मारे तोसुत तात ॥ शतशर हन्यो शिखण्डिकहँ धृष्टद्युम्नकहँ बीश। सहदेवहि नकुलहिं हन्यो षट शायक अवनीश ॥ हन्यो द्रौपदीके सुतन तीनि तीनि नाराच। सकल भटनकहँ हनतभे शरदश बसुषट पांच ॥ सोरठा॥ तहां युधिष्ठिरभूप हनि तीक्ष्ण युगभल्लबर। नृपको धनुष अनूप काटि हनतभे बाणदश ॥ लागि लागिते बान धसे न बर्म अभेदमें। तब नृपगहि धनु

आन भिरो युधिष्ठिर भूपसों ॥ चौपाई ॥ सोलखि सब पाण्डव भयपूरे। धर्महिं घेरि लये भटरूरे ॥ दुर्योधनपहँ चले प्रचारी। भट पाञ्चाल रथी धनुधारी ॥ सोलखि द्रोण धनुर्द्धर योधा। बढ़ि तिनको कीन्हों अवरोधा ॥ तेहिक्षण घोरयुद्धभो राजा। मरे असंख्यन सुभट समाजा ॥ भीषमशब्द भयो दुहुँदलमें। कटे असंख्यन हयगज पलमें ॥ जहँअर्जुन जहँ सात्वकिवीरा। तहां मचो अति शब्द गँभीरा ॥ द्रोण पार्थ सात्वकि तेहि दिनमें। किये लोकक्षय बाणागिनमें ॥ द्रोणक्षात्रिआतंक तेहि क्षणमें। तोसुत नृपको हित गुणि मनमें ॥ कोपित कालकराल समाना। परदलमांधि बिहरो बलवाना ॥ काटत अगणितशर सबहीके। बध्यो असंख्यनभट उनहींके ॥ इमिदल मर्दत ताहि निहारी। बृहच्छत्र नृपभिरो प्रचारी ॥ सबकेकयन मध्य गुरु भरता। महारथी अरिदलदर दरता ॥ तुरगनकरिअति चंचल भूपर। बरष्यो बिशिख द्रोणके ऊपर ॥ द्रोण कोपकरिताहि प्रहारे। बाण पंचदश अति अनियारे ॥ तिनमें पांच पांचशर हनि हनि। बृहच्छत्र काटतभो गनि गनि ॥ द्विजबर बहुरि आठशर डारे। बसुशर मारि तिन्हैंनृपवारे ॥ दोहा ॥ ब्रह्मअस्त्र तब तजतभो कोपिविप्र रणधीर। ब्रह्मअस्त्र तजितेहि समित कीन्हों क्षितिप सुवीर ॥ अस्त्र अस्त्रसों वारि नृप हन्यो साठि शर क्षिप्र। अति अनियारे बाणबहु भूपहि मार्योबिप्र ॥ फिरि नृप सत्तरि शरहन्यो तबभट द्रोण अमान। भूपहि ब्याकुल करतभो बरषि बज्रसम बान ॥ बधिअश्वन अरु सूतकहँकाटि छत्र कोदण्ड। भूपतिको बध करतभो मारिबाण अतिचण्ड ॥ सोरठा ॥ बृहच्छत्रको नास लखि परभट हाहाकरे। तबकरिक्रोध सहास धृष्टकेतु बढ़ि भिरतभो ॥ चौपाई ॥ अगणितकाटि बिप्र के शायक। हन्योसाठिशरसो भटनायक ॥ मारिक्षुरप्रबाण अतिचोखो। काट्योद्रोण तासुधनु नोखो ॥ धृष्टकेतु तब बर धनु

गहिकै । बरष्यो बिशिख खरोरहु काहिकै ॥ तबद्विज अति कर-लाघव कीन्हें । सब हयसूत तासु बधि दीन्हें ॥ तब शिशुपाल तनयरथ तजिकै । डारतभो बरगदा गरजिकै ॥ मारि कइक शायक अनियारे । द्रोणकाटि तेहि महिपै डारे ॥ तबसो हन्यो शक्ति अतिभारी । काट्यो ताहि द्रोण धनुधारी ॥ शक्तिकाटि द्विजशर अतितीक्ष्ण । मारतभयो अरुणकरि ईक्षण ॥ लखिसो बाण बेधि उरतासू । धसोजाइ धरणीमधि आसू ॥ भयो बिदीरण हियबलवाना । गिरो भूमिपै ह्वै गतप्राना ॥ तबसुत तासु भिरो द्विजबरसों । बध्योताहि द्विजचरबरशरसों ॥ चेदिराज सुतको बध देखी । जरासन्धको सुत अतिनेखी ॥ बर्षि असंख्यन शर ह्वै कोपित । द्रोणहिं कियो निमिषमें गोपित ॥ द्रोणकाटि सिगरेशरताके । बध्योताहि हनिशर बरमाके ॥ क्षत्री मर्दन बीर अचारय । नृपतहँ कियो अमानुष कारय ॥ बधि अगणित हय गज भटरूरे । हाहाधुनि परदलमधि पूरे ॥ दोहा ॥ संजय अरु पांचाल अरु पांडवके दलमाह । सुनि हाहाधुनि भिरतभो क्षत्रधर्म भटनाह ॥ शर क्षुरप्रसों द्रोणको धनुपकाटि रणधीर । हनि बहुशर बेधित कियो द्विजको चारु शरीर ॥ तुरित और को दण्डगहि द्रोणाचार्य असान । क्षत्रधर्मको बध कियो मारि बज्रसमबान ॥ धृष्टद्युम्नके सुवनको बधन निरखि अनखाय । चेकितान नृपविप्रसों अभिरो ओज बढ़ाय ॥ सोरठा ॥ दशशर द्रोणहिंमारि चारिबाणसूतहिहन्यो । तबद्विजधनुटंकारि षोड़शशरभूपहिहन्यो ॥ फिरिहनिशायकएक बध्योभूपकेसारथिहि । बिनासूतगहिटेक तुरँगमुरथलैदूरिगे ॥ भुजंगप्रयात ॥ महावीर वीरानको यूथदर्त्ता । अवीरानहू को बलीबीर कर्त्ता ॥ भरो गर्व भूभारको नाशचोप्यो । भलै कालसों ह्वैप्रलयकाल रोप्यो ॥ करी शुण्डसे चण्ड दोर्दंडचारी । करे मंडलाकार कोदण्डभारी ॥ करी वाजियोधा घने काटिडारयो । मही रुण्ड औ मुण्ड

सों पाटिडार्यो ॥ घने हांक दैकै घनेबाण ठाटे । घनेपाणि ऊरू घने शीशकाटे ॥ घनेभल्ल नाराचके जालपूरे । घनेघातलीन्हें घने गातथूरे ॥ नता ठौर कोऊ सकोयूथ तासों । भगे भूरि योधौ भरे भीति भासों ॥ भिरे बीर जे बीर तासों रँगेसे । भये हालते काल केते गालगेसे ॥ दोहा ॥ ह्वै आरत जिमि शीत-लहि कम्पत गउनको जूह । द्रोणभीतिसों तिमिकँपो अरिदल सुभट समूह ॥ द्रुपद बिराटादिक तहां कर्ण द्रोणको देखि । अ-ति बिस्मित ह्वै शोचि इमि कहतभये अवरेखि ॥ वृद्धपचासी वर्षको करत युवा समयुद्ध । अतिगुरु तपकरि बिप्रयह लह्यो बीरताशुद्ध ॥ सोरठा ॥ इमिकहि द्रुपद विराट देसाहस लैभटन सँग । द्विजहिजानि भटराट लरतभये रहि यतनसों ॥ महिखरी ॥ यहिभांति उत्तम सैन जलनिधि मध्य अतिअनुपम बनो । भट सुवन सिनिके सुवनको रणधीर अतिधनुधरगनो ॥ तहँरचत अविरल सेतुचारु सुशायकनके गरजिकै । रथतुरँग गज भट डुंसह लहरिन सबिधि मरदत बरजिकै ॥ जलजाद समजेभ-यसंमुख तिन्हैं मरदत मदमयो । भटपार्थ अकथिक कूलपर तेहि पथिकसम निअरत भयो ॥ जिमि नाग हितनागान्त उ-दधिहि परनसों अरदत भयो । तिमि सिन्धुपति लगिपार्थमम दल शरणसों अरदत भयो ॥ दोहा ॥ यहिप्रकार जननाशहित नृप तो सम्मतपाय । पाण्डवसों तोसुतलरे नाहक बैरवढ़ाय ॥

इतिद्रोणपर्वणिचतुर्थदिनयुद्धचतुर्थयामारम्भेसात्वकिप्रवेशोसप्तमोध्यायः

दोहा ॥ सात्वकि कहँ ढिग पार्थके गयेदेर गुणिशोचि । धर्म भूमिपति भीमकहँ उतै पठैबोरोचि ॥ कह्यो सूतसों सुरथ लै चलो भीम है यत्र । सो सुनि सारथि सुरथलै शीघ्रजात भो तत्र ॥ रोला ॥ भीमके ढिग जाय मोहित भयो धर्मनरेश । देखि मोहित भूपको इमि कह्यो भीम सुभेश ॥ भूमिपतिसो कहो मोहित भये हौ जेहि हेत । मोहिंआछत आपुप्रभुकत शोचि

होतअचेत ॥ करौंशासन शीशधरिसो करौं मैं यहिकाल । भीमके ये वचन सुनिकै कहत भो क्षितिपाल ॥ पाञ्चजन्यसुशंखकी धुनि परतसुनिबहुबार । सुनो परत न मोहिं अबगांडीव को टंकार ॥ जानि ताते परतनाहिं है कुशल पार्थअमान । त्वरतकेशव करत ताते शंखको आह्वान ॥ बूझि यह उत प्रथम भेज्यो सात्वकी कहँतात । गयो सोऊ भयो कैसो शोचबाढ़त जात ॥ जाहु ताते शीघ्रउत तुम बिदित भट शिरताज । कृष्ण पारथ सात्वकी के कुशल रक्षण काज ॥ भूपके ये वचन सुनिकै कहो भीम सचाय । पार्थ को नहिं कछू संशय कृष्णजासुसहाय ॥ आपुआज्ञा करत हमउत अवशिजैहैं भूप । भाषिइमि गो भीम जहँहो धृष्टद्युम्न अनूप ॥ कह्यो तासों मोहिं भेजत भूप है जितपार्थ । भूपको तुम किहेहुरक्षण सदा सविधि सदार्थ ॥ भाषिइमि मधुपान करि सन्नाहधारि नवीन । देत विधिवत दानअरुस्वस्त्ययन सुनतप्रवीन ॥ करिप्रदक्षिण भूपतिहि टंकारि वर कोदण्ड । चलत भो ममव्यूह मुखदिशि पुरुषसिंह उदण्ड ॥ दुन्दुभी बजवाइ सहदेव आदिमबभटजूह । चलेपीछू तासु मम दिशि तजतबाण समूह ॥ ताहि आवत देखि यहि विधि इतैके भटसर्व । भिरेबढ़िकै गरजि बरषत भूरिबाणसगर्व॥ भीम तिनपै बरषि शररथ बेगसों हँकवाय । व्यूहमुख पै द्रोण हो तहँ चलो शायकछाय ॥ द्विरददल तबभयो आड़त भीम तेहिं विचलाय । द्रोणके ढिग गयो बरषत बाणभट हढ़घाय ॥ भीमसों द्विज कह्यो अब इत विनाजीते मोहि । व्यूहमधिनहिं धसन पैहौ फिरो मोकहँ जोहि ॥ व्यूहमधिगो पार्थसो कछुकृपा मेरीपाय । सुनौ ताते व्यूहमधि तुमनहीं सकिहौजाय ॥ द्रोणके ये वचन सुनिकै कह्यो भीमबुझाय । मान्य सब विधि हमें तुम हौ पिता ममसुखदाय ॥ लागिअरिसँग करत हौ जो अरिन के समकाज । सुनो तौ अरिसरिस ह्वैहम कहत हैं द्विजराज ॥

सुनो अर्जुन हैंन हम हम भीमसेन प्रसिद्ध। जावदलमधि शी-
घ्र तुमकहँ जीति है द्विजवृद्ध ॥ भाषि इविधि अमोघ गरुईग-
दामाख्योभीम । देखितेहि गोकूदि रथसों द्रोणबीर अधीम ॥
गदासो लागि तुरँगसूतहि मारिकरिरथ चूर्ण । धुन्यो अगणि-
त भटनधुनिया धुनत जैसे ऊर्ण ॥ देखि द्विजकी दशा यह तो
सुवन कहि हाहाय। घेरिद्रोणहि और रथपै लये तुरितचढ़ाय॥
बीरदुःशासन तजत भो शक्तितापहँ डारि। भीमफिरि हनिबाण
तीक्षण कुंड भेदिहिमारि ॥हतिसुखेनहिबधि सुनेत्राहिदियेमहिपै
डारि। मारिबाणनप्रलय रोप्यो लग्योनाहिं अबारि॥रौद्रकर्महि
मारिफिरि हन्तारकहि बधिबीर । दुर्बिमोचन कहँबध्यो बधि
अभयकहँ रणधीर ॥ बध्योफेरिसुवर्मणाहि तहँ बरषि अगणित
बाण। बाणमारिसुदर्शनहिं फिरिभयोकरत अप्राण ॥ बरषि
अबिरल बाण अगणित विविध आयुध काटि । बेधि बधि
बिचलाय अगणित भटलधनुबिधि ठाटि ॥ गरजि गरजि प्र-
चारि यहि बिधि भीमसेन अमान। बधोबलिके पशुनसम तो
सुवन नव बलवान॥ रहे जे हतशेष ते इमिबधत बन्धुनदेखि।
बेगसों हँकवाइ रथगे दूरि कढ़ि अवरेखि॥ सिंहके भयभगत
जैसे द्विरदको समुदाय। भगेतिमि तो तनय सिगरे देवपितर
मनाय॥ दोहा ॥ इबिधि जीति तो सुतन कहँ पांडव धनुटंकारि।
द्रोणाचारयसों भिरो बरषत बाण प्रचारि ॥ तहांद्रोण अरु
भीमसों भयोयुद्ध बिकराल । दोऊ दोऊ दिशिदये बिरचि शरन
के जाल ॥ चौपाई ॥ तेहिरथ भीमसेन बलवाना । करिनिज का-
रजको अनुमाना॥ रथ सोंकूदि द्रोणके सम्मुख। चलो सहत
शायक दायकदुख॥ मैगल मत्त चलैसहि जैसे । जलके बूंद
पवनमुख तैसे ॥ जायबेगसों गहिरथ भारी। फेंकत भयो बीर
रणचारी ॥ तेहिसुजान सों कूदि अचारय। चढ़ो और रथपै
भट आरय॥ फिरि न भीमसों भिरो बिचारी। थिरोव्यूह मुख

पै धनुधारी ॥ घनसम गरजि भीमभट नागर। चढ़ोसुरथपै वि-
क्रम सागर ॥ योधन बेधत बधत ननरदृत । चलोतुरँग रज
गज भटमरदृत ॥ जीति भोजदल अरु काम्बोजहि । जीति
म्लेच्छ सेनावर ओजहि ॥ जीतत सदल और बहुभूपन।
करत पराजित भीषम रूपन ॥ लरतरह्यो सात्वकि जेहि थल
में । तेहिथल जातभयो ममदल में ॥ तहँसो बढ़िमरदृत मम
सेना । लखो अर्जुनहिं अरिदल जेना ॥ तहँगरजतभो मेघ
समाना । आयोभीम पार्थ सुनिजाना ॥ अति हर्षित ह्वै केशव
पारथ । गरजतभये पुष्टगुणि स्वारथ ॥ वार वारते गरजि गर-
जिकै । लरेमेघसम तरजि तरजिकै ॥ धर्मभूपसों गरजनि सुनि
कै । मोदित भये कुशल सब गुनिकै ॥ दोहा ॥ यहसुनिकै धृत-
राष्ट्र नृप ह्वै अतिबिकल बिहाल । संजयसों बूझै सुनो जन्मे-
जय क्षितिपाल ॥ इबिधि मर्दिदल जाइ तहँ गरजो भीम सुबीर।
तबवासों तेहिथरभिरो को योधा धरिधीर ॥ हयसों हय गजसों
द्विरद रथरि प्रहारि प्रहारि । बधैभीम तासों भिरो को कहुसो
निरधारि ॥ सोरठा ॥ सुनि भूपतिकै बैन संजय ऐसो कहतभो ।
लखि भीमहि बलऐन कर्णडाटि बढ़ि भिरतभो ॥ चौपाई ॥ बढ़ि
बढ़ि उभय बीरबलपागे । अविरल बाण प्रहारन लागे ॥ मारि
काटि अगणित शररूरे । अगणित बाण दुहूंदिशिपूरे ॥ धनुटं-
कारि प्रहारनि गरजनि । कोअति शब्द सुभटहिय दरजनि ॥
पूरित करिकरि गौरवलीन्हें । भटहय द्विरदन शंकित कीन्हें ॥
धर्मगुणो सुनिशब्द गँभीरा । भिरो भीमसों कर्णसुबीरा ॥ भी-
महि कर्ण बीस शर हनिकै । सूतहि हन्यो पांचशर गनिकै ॥
चौंसठि बाण भीम तेहि मारे । तापहँ कर्ण चारिशर डारे ॥ तिन
कहँ काटि भीम शरछाये । अतिशय करलाघव दरशाये ॥ अ-
गणित काटिभीमके बाना । छाइदियोशरकर्ण अमाना ॥ भीम
कर्णको काटि शरासन । मार्यो दृशशार अरिकुल नाशन ॥

रिस करिकर्ण और धनु धरिकै । बेध्यो भीमहिं शरपरिहरिकै ॥ शायक तीनि कर्णके उरमें । माखो भीमसेन अतितुरमें ॥ बिल मधि अधप्रविशे अहिगनसे । तिन्हैं अधधसेलखि जन मन से ॥ इमि भिदिकैरहिक्षणक अचायक । कर्णभयो बर्षत बहु शायक ॥ भीमफेरि काट्यो धनुतासू । सूतहि बेधि बधत भो आसू ॥ बाजिन मारिभेजि यमलोकहि । बहुशरहन्यो कर्णबल ओकहि ॥ दोहा ॥ तुरित कूदि तेहि सुरथसों कर्णबीर अनुमानि । जाय सुरथ वृषसेन के बैठो आनि गलानि ॥ इबिधि जीतिकै कर्ण कहँ गरजो भीम अमान । कर्णहि जीत्यो भीमसुनि धर्म किये अनुमान ॥ अर्जुन सात्वकि भीमकहँ निजदल मर्दत दे- खि । जाय द्रोणपहँ तो तनय कहत भयो अवरेखि ॥ सोरठा ॥ तुम्हैं जीति हेतात सात्वकि अर्जुन भीमभट । मर्दिसैन अव- दात गये सिन्धुपतिके निकट ॥ तो जीतव बलभौन भयो सिंधु शोषण सरिस । अबहैं करतव जौन तासु बचन कासों कहों ॥ जयकरी ॥ दुर्योधन नृपके सुनिबैन । कहो द्रोण यह मिथ्याहैन ॥ हमैं जीति ते सुभट अमान । गेतो दलमधि बरषत बान ॥ तुम कीन्हेंहौ अनरथ कर्म । जानो यह ताको फलपर्म ॥ कुत्सित मंत्र शकुनिको मानि । तव जीते जूवाहित जानि ॥ सो जीतव नहिं जीतिललाम । युद्धजुवा जीतव अभिराम ॥ जामधि पाँसा आयुध सर्व । क्षेत्र चारु गृह निशिदिन पर्व ॥ नरद चारि रँगकी सब सैन । दाव द्रव्य महिदायक चैन ॥ तुम अरु धर्म महीप खेलार । सोदर वन्धु मंत्रदातार ॥ यह जूवा जो जीतै तात । सोई जीति जीति बिख्यात ॥ आजुखेलारध- नंजय बीर । दाव जयद्रथ भूपति धीर ॥ सात्वकि भीम सहा- यी तासु । खेलि चहतहैं जीतनआसु ॥ तातेजायभटनलैसंग । खेलौ युद्ध जुवा बदरंग ॥ युद्ध जुवा यह भीषम रूप । हैन श- कुनि के बश हे भूप ॥ जीति हारि ईश्वरके हाथ । लरोजाय लै

सुभटन साथ ॥ हम इत आड़ि सुभट समुदाय । करबयुद्ध अविरल शर छाय ॥ यहसुनि दुर्योधन क्षितिपाल । चलो पार्थ पहँ लै भटमाल ॥ दोहा ॥ उतमौजा क्षितिपाल अरु युधामन्यु नरनाहँ । चक्र रक्ष जे पार्थके हैं आये दलमाह ॥ तिन्हें लरत निज भटनसों मगमें भूपति देखि । भिरतभयो अति कोपकरि तिनको बधअवरेखि ॥ सोरठा ॥ नृपहि निरखि तेवीर भिरे प्रचारि प्रचारि कै । तीक्षण तीस सुतीर युधामन्यु मारत भयो ॥ हनि सूतहि शर बीश तुरगन मार चारिशर । युगशर हनिअवनीश काट्यो तासु ध्वजा धनुष ॥ चौपाई ॥ उतमौजा हनि शर मजबूतहि । बधत भयो भूपति के सूतहि ॥ बधिताके सूतहि दुर्योधन । बध्यो हयन हनि शर तन शोधन ॥ उतमौजा तेहि रथसों कढ़िकै । युधामन्यु के रथपै चढ़िकै ॥ भूपतिके रथके सब घोरे । बधत भयो हनि बाण अथोरे ॥ युधामन्यु हनि शायक चोखो । काट्यो भूपतिको धनु नोखो ॥ तब हनि गदा भूप दृढ़ घायक । बधि तिनके घोरन क्षितिनायक ॥ फिरि नृप मद्रनाथ के रथमें । चढ़िभो चलत पार्थ दिशि पथमें ॥ और रथनपैचढ़ि बल अगरे । तेयुगभूप पार्थमुख उगरे ॥ तहँ धृतराष्ट्र भूपमुनि ऐसो । बूझै कियो कर्ण फिरि कैसो ॥ जब तेहि जीतिभीमरण चारी । चलो पार्थपहँ धनुटंकारी ॥ भीषम द्रोण पार्थसमयोधा । कर्ण कियो तब किमि अवरोधा ॥ सो सविधानसूत सुतभाषो । सुनिबे को ममभन अभिलाषो ॥ वृद्धभूप की सुनि यहबानी । कहत भयो संजय शुचिज्ञानी ॥ कर्णहि जीति भीमजवराजा । चलो बधततो सुभट समाजा ॥ तब राधेय और रथ बरपै । चढ़ि टंकारि धनुष तेहि थरपै ॥ कहतभयो अतिरिससोंपागो । अब कितजात वृकोदर भागो ॥ दोहा ॥ कुन्ती पुत्रन उचित इमि अरिहि देखावब पीठि । फिरि मम सम्मुख युद्धकरु जोरि डीठिसोंडीठि ॥ ऐसोकरकशवचनसुनि भीमसेनबलवान । सादर

फिरिराधेयपै बरषो अबिरल बान ॥ सोरठा ॥ तासु शरनके जाल काटि कर्णबरसों बिशिख । दोऊबीरबिशाल कियेभयानकयुद्धत-हँ ॥ चौपाई ॥ यथा अचारय शिष्यहिशीक्षत । कर्ण लरतहो तिमि जय ईक्षत ॥ भीम सकल निज पौरुष करिकै । रह्यो लरत बध को प्रण धरिकै ॥ करै बाण बिधि भीम सुबीरा । लखिसोहँसै कर्ण रणधीरा ॥ देखि तासु हँसिबो अति रिसिकै । बाण जाल मधि भीम प्रबिसिकै ॥ बाण पचीस कर्ण के तनमें । माऱ्योबध को प्रणकरिमनमें ॥ दोऊबीर शरनकी बरषा । कियो परस्पर गहि उतकर्षा ॥ दोऊ सेतु शरन के रचिरचि । काटि काटिबहु शायक नचिनचि ॥ दोउन कहँ अगणित शर दोऊ । मारतभये लखै सब कोऊ ॥ हनि चौंसठि शर कर्ण सुप्रनको । काट्योक-वच भीमके तनको ॥ काटि कवच करि करि शरपातहि । बेधत भयो भीमके गातहि ॥ पुष्पित किंशुकसुतरु समाना । लसत भयोतहँ भीम अमाना ॥ भीमसहेताके शरतैसे । कामीबचनकु-तियकेजैसे ॥ तिमिसहिबाण काजनिजगुनिकै । भीमबरषि शाय-क धनु धुनिकै ॥ काटि कर्णको धनु भटनायक । तुरगन बध्यो मारि बहुशायक ॥ बधि सूतहि हनि शायक भारी । बेध्योसूत सुतहि रणचारी ॥ बिरथ बिधनुह्वै सो रथतजिकै । कर्ण और रथपै गो लजिकै ॥ दोहा ॥ इबिधि पराजय कर्णको सुनि धृत-राष्ट्र महीप । कहे कर्ण लहिहारिका कियो भापु कुलदीप ॥ यह सुनि संजय कहतभो चढ़ि रथबरपै फेरि । कर्ण भीमपै चलत भो धनुटंकारत टेरि ॥ सोरठा ॥ दोऊबीर अमान मत्त द्विरदसम जूटितहँ । करतभये घमसान करकोदण्डन चपल करि ॥ मंत्र कर्णकोपाय कियेकर्म तौ तनयके । समुझि भीम अनखाय बर-षो शायक कर्णपहँ ॥ चौपाई ॥ सूतज तासु धनुष बिधि देखी । हँसि अगणित शरताजि अवरेखी ॥ काटि अनगिने शायक ताके । हनतभयो नवशर बरभाके ॥ तब अतिकोपि शरासन

करषत । भीमसेन अविरल शर वरषत ॥ काल कराल समान करेरुख । गरजत चलो कर्णके सन्मुख ॥ सो लखिवरषतअगणित शायक । तापहँचलो कर्णभट नायक ॥ ऋक्षसमान कर्णके घोरे । हंससमान भीमकेधोरे ॥ श्यामसेत वारणसे भिरिकै । शोभित होत भये तहँ थिरिकै ॥ दोऊ भट कोपित ह्वै मनमें । अद्भुत कर्म कियो तेहि क्षनमें ॥ मण्डलसम धनु करिकरि शरसे । दुहुँ दिशि अविरल शायक वरसे ॥ अगणित शायक काटि गिराये । अगणितवाण दूरिलों छाये ॥ अहि सपक्षसे शायक रूरे । अविरल दोऊ दुहुँ दिशि पूरे ॥ अगणितशर गातनमधि हनि हनि । गरजत भये खरोरहु भनि भनि ॥ टेरि टेरि करि करि चपराते । वरषे वाण गर्वमदमाते ॥ दोऊ महामोदसों चरि चरि । लरे शरनको दुरदिन करि करि ॥ शायक तीन परम अनियारे । कर्ण भीमके तनमें मारे ॥ धनुष कर्णको हनिशर तीक्षण । काट्यो भीम अरुणकरिईक्षण ॥ दोहा ॥
बधि सूतहि हनिवाण वर दीन्हों महिपै डारि । तब सूतजवर शक्तिगहि मारत भयो प्रचारि ॥ जौ लगि धार्यो औरधनु तौ लगि कैयकवान । हन्यो कर्णके गातमें भीमसेन बलवान ॥ तुरित कर्ण धनु और गहि वरष्योवाण अनेग । सोसबकाट्यो शरनसों भीमसुवीर असेग ॥ फिरिक्षुरप्रशर मारिकै काटि कर्णको चाप । बधि घोरन अश्वन बध्यो भीमभूरि परताप ॥ सोरठा ॥ विरथ विधनु करिताहि बेध्यो अगणित शरनसों । सूतज इत उत चाहि रह्यो न तबकछु करिसको ॥ कर्णहि पीड़ित देखि दुर्योधन भेज्यो तहां । दुर्जय कहँ अवरेखि जाय भिरोसो भीमसों ॥ मधुभार ॥ भीमहि प्रचारि । नववाण मारि ॥ हनिषट सुवान । सूतहि अमान ॥ ध्वजमधि नवीन । हनिवाण तीन ॥ वहुवाणकाटि । पाण्डवहिडाटि ॥ फिरि तासुगात । शर हने सात ॥ तवभीम कोपि । परलै अरोपि ॥ बधि सूततासु ।

हतिहयनआसु ॥ दुर्जयहि मारि । भोदेतडारि ॥ बलबुधि नि-
धान । तोसुत अमान ॥ करितासुनास । पाण्डव सहास ॥ रथ
पर निहारि । कर्णहि प्रचारि ॥ तुरता बढ़ाय । शर दिये छाय ॥
बहुबार हारि । तोहित बिचारि ॥ नहिं टरो नेक । सूतज सटेक ॥
भोरचत हाल । शरसेतु जाल ॥ इमि उभयबीर । बरषे सुतीर ॥
दोहा ॥ भीमकर्णके तनहने शायक दशअरुबीश । कर्ण ताहि
नवशर हने बल करि हे अवनीश ॥ फेरि भीम तिरसठिबिशि-
ख हने कर्णके गात । कर्ण तासु तनमधि कियो अति तीक्षण
शरपात ॥ बेधिभीमकहँ सो बिशिख गयोपार कढ़ि भूप । भीम
कोपि तब हनतभो गदा भयानक रूप ॥ सोरठा ॥ हनि सो गदा
उदण्ड बध्यो कर्णके हयनकहँ । फिरिहनि शायक चण्ड बधि
सूतहि काट्यो ध्वजा ॥ तबतेहि सुरथहि त्यागि कर्ण भूमिमें ह्वै
खरो । महाक्रोधसों पागि बरषतभो अविरल बिशिख ॥ चौपाई ॥
तेहिक्षण कर्ण महारिस लीन्हें । भूपति अति बिक्रम तहँकीन्हें ॥
बिरथी भीमसरथिसों भिरिकै । घोर युद्ध कीन्हों तहँ थिरिकै ॥
दुर्योधन सो लखि दुखपायो । दुर्मुख कहँतहँ तुरित पठायो ॥
लखि दुर्मुखहि भीमलहि आनँद । बरषि कर्णपै शरसरदानद ॥
भिरि दुर्मुखसों हनिनवशायक । बधिभेज्योयमपुर भटनायक ॥
सूतज तोसुतको बध देखी । चषजल तजत अनर अवरेखी ॥
मोहक्रोध गहिरथपर चढ़िकै । भिरो वृकोदर भटसों बढ़िकै ॥
तेहि अन्तरमें चौदह बाना । हन्यो कर्णकहँ भीमअमाना ॥ ते
शर तासुगात मधिधसिकै । शोणित पिये उरग सम बसिकै ॥
चौदहबाण भीमके तनमें । मारतभयो कर्ण तेहि क्षनमें ॥ तब
करिकोप भीम रणचारी । कर्णहि हने तीनिशर भारी ॥ सूतज
तिनसों वेधित ह्वैकै । ह्वै अतिपीड़ित इतउत ज्वैकै ॥ चढ़ि तुर-
की घोरेपर सादर । रणतजि भगो भगतजिमि कादर ॥ कर्णहि
जीति धनुपटंकारत । गरजत खरोरहो तहँभारत ॥ यह सुनि

वृद्धभूप दुखलहिकै। बूझत भयो शोचसों नाहिकै॥ संजय ई-श्वर चाहतजोई। मिटत न कबहुँ होतहै सोई॥ दोहा॥ भीषम कर्ण समानजो सबजगको जेतार। कर्ण लहतसो भीमसों इ-विधि हारिबहुबार॥ अयुतनागको जासुतन बलतेहि भटसों जूटि। हास्यो सूतज तबभिरो कौनबीर जयऊटि॥ यह सुनिकै संजय कह्यो तोमतको फलएहु। सहौताहि धरिधीरमति दोष ईश्वरहि देहु॥ निरखिपराजित कर्णकहँ तेहि गरजत लखि तत्र। सहि न सके तौ पांचसुत गये भीमहोयत्र॥ दुर्मद दुर्धर दुसहअरु दुर्मर्षण रणधीर। अरुदुर्जयये भिरतभे रचि शर जाल गँभीर॥ सोरठा॥ भिरत भीमसों देखि तिनकहँ रथचढ़ि कर्ण फिरि। हियोक्रोधसों भेखि भिरो भीम भटसोंगराजि॥ तेहि क्षण भीम अमान भूपति अति विक्रम कियो। सबपर बरषत बान काटे सबके सब विशिख॥ चौपाई॥ कर्णहि आड़ि शरनके जोरण। हनिपचीस शायक तन तोरण॥ बधि सारथी तुरँगसब तिनके। बधेतिन्हैं जेमणिकुल दिनके॥ बधि तो पांच सुतन रण-चारी। गरजो भीम धनुषटंकारी॥ आड़ि कर्णकहँ तिनकोबधि-बो। लखिसब गुणे असधको सधिबो॥ लखि राधेयग्लानिउर आनो। कहो भीष्मको सतिकरिमानो॥ गरजि पांचशर भीमहिं हनिकै। फिरि मारे सत्तरि शर गनिकै॥ कर्णहि मारि बाणषट सोऊ। काट्यो धनुषलख्यो सब कोऊ॥ तब राधेय और धनुग-हिकै। बरषो बाणखरो रहुकाहिकै॥ भीमकाटि सबशायक तासू। बध्यो हयन अरु सूतहि आसू॥ फेरि काटि धनुषहि दृढ़ घायक। कर्णहि हनतभयो बहुशायक॥ तब चढ़ि कर्ण और रथपाहीं। तज्यो गदाकहि बाचत नाहीं॥ हनि बहुबाण काटि तेहिमगमें। गरजो भीम विदित भट जगमें॥ गदहि काटि परव्यूह बि-दारण। भीमतजतभो बाण हजारण॥ काटि सकल शर हनि शर अगणित। हन्यो बीसशर सूतज भगणित॥ हनि नव

बाण भीम भट दक्षिण । बेध्यो सूतज को भुजदक्षिण ॥ फेरि गरजि अतिरिस सों शरसों । अगणित बाण कर्णपै बरसो ॥ दोहा ॥ तब सूतज अति बिकल ह्वै रहि न सकतभो तत्र । रण तजि सादर जातभो शरन जातहो यत्र ॥ सुनि दुर्योधन भूप को अनुशासन तब भूप। तुरित भीमसों भिरतभे तोसुतबीर अनूप ॥ चित्रायुध उपचित्र अरु चित्रशरासनधीर । चारुचित्र चित्राक्ष अरु चित्रबर्म रणधीर ॥ लखिसब तिनसों निमिषमें एक एक शर मारि । बधि तिन सबकहँ भीमभट दीन्हों महिपै डारि ॥ गिरत बायु बश अरुणसम निरखि तजत चपचारि । कर्ण भीमसों फिरि भिरो बरषत बाण प्रचारि ॥ सोरठा ॥ दोऊ बीर प्रचण्ड गरजि गरजि बरषे बिशिख । दोऊ धुनि कोदण्ड काटि दिये अगणित बिशिख ॥ छत्तिस बाणकराल भीमहने तन कर्णके । बाण पचास बिशाल कर्णभीमके तनहने ॥ तोमर ॥ भिदि उभय भट अवदात । ह्वै रुधिर पूरित गात ॥ अति बीर दोऊ शुद्ध । तहँ कियो अद्भुत युद्ध ॥ भिरिमत्तद्विरदसमान । करि परस्पर आह्वान ॥ ते उभयबीर बिशाल । रचिउभय दिशि शर जाल ॥ फिरि गरजि गरजि प्रचारि । बहुबाणबाणनवारि ॥ अति कठिन धनुटंकारि । बहुबाण गातन मारि ॥ तजि दुहूंदिशि शरधार । करि दये अन्धाकार ॥ तहँ भीमअतिशय कोपि । भोदेत कर्णहि गोपि ॥ तब बिकल कर्णहि देखि । तो तनय नृप अवरेखि ॥ तहँ दिये तुरित पठाय । भट पांच सोदर भाय ॥ तेबीर सादर जाय । भेतजतशर समुदाय ॥ लखि भीम तिनसों जूटि । निजदशा मनमें ऊटि ॥ हनिसातशर दुखदाय । बधिदिये तिनहिं गिराय ॥ सो निरखिसबसरदार । इत किये हाहाकार ॥ तकि हनत कर्णहि बान । भोबधत तिनहिं अमान ॥ यह देखि सबनरनाह । जाकि रहेगुणि मनमाह ॥ दोहा ॥ शत्रुंजय अरु शत्रुसह दृढ़विचित्र रणधीर । चित्रसेन

चित्रायुधौ अरु विकर्ण वर वीर ॥ यकतिस भ्रातन को मरण लखि तेहि दिन दुखपाय। दुर्योधन गुणि विदुरको वचनरह्यो पछिताय ॥ समुझि समुझि अपराध निज शोकाकुलकै भूप। वारिधार चषसों तजत मोहिं भयो गतरूप ॥ सोरठा ॥ कर्णवीर तेहिकाल बरषो शायक भीमपहँ। भीम सुवीर कराल बरषो शायक कर्णपहँ ॥ चौपाई ॥ हे क्षितिपालकछू कहिजातन। भीम कर्ण के शरके घातन ॥ अगणित हय गजभट ममदलमें। घायल भये मरेतेहि पलमें ॥ सोलखि अगणित योधा डरिकै। गये दूरिकरि हाहाकरिकै ॥ दोऊ विदित वीर बलवाना। दोउधनुर्द्धर धीर अमाना ॥ गरजि गरजि बढ़ि बढ़ि थिरि थिरिकै। दपटि दपटि दड़िदड़ि फिरि थिरिकै ॥ अवनहिं वचत भागुमतिभनि भनि। अगणित बाण परस्पर हनिहनि ॥ भिदिभिदि भरे रुधिर सों शोभित। भये उभयभट अनघ अक्षोभित ॥ सबदिशिजाल शरनके पूरे। अगणित छत्र धनुष ध्वजतूरे ॥ काटि असंख्यन शर शरगण सों। अगणित बाणहने भरि प्रणसों ॥ कुण्डल एक कर्णकी श्रुतिको। काट्योभीमसेन अति द्युतिको ॥ कुण्डल काटि भीमभट हँसिकै। तजतभयो दश शायक कसिकै ॥ ते दशबाण भाल मधि लगिलागि। धसि धसि लसे रुधिर सों पगिपगि ॥ तेहिक्षण सूतज मूर्छित ह्वैकै। ध्वजसों लागिरहो बल ग्वैकै ॥ तुरितहि चेति क्रोधसों पागो। कर्ण कराल काल सम जागो ॥ घनसम गरजि बाण घन बरसो। चहिअरिरवि-हि राहुसम गरसो ॥ तेहिक्षण भीमकाटि धनु ताको। गरजि वीर रस बरसों छाको ॥ दोहा ॥ तुरित कर्णधनु औरगहि करि अद्भुत सन्धान। भीमसेन के सकल दिशि छाय देतभो बान ॥ भीम कर्ण तेहिक्षण किये अद्भुत विक्रम भूप। पूरिदेतभोगगन में बाण भयानक रूप ॥ शरन शरनके भिरनसों नभमें कढ़त कृशान। जानिपरै मणिमय मनोतनो विचित्र वितान ॥ सोरठा ॥

धनुटंकार कराल चलनि भिरानिसों शरनकी । अतिशय शब्द कराल मढ़त भयो तेहिक्षण तहां ॥ अति बरषनि शरजूह निरखिभीमअरुकर्णकी। सुमनससुमनसमूह बरषे तिन्हैंप्रशंसितहँ॥
चौपाई ॥ इमिमाचे भीषम संग्रामा। कर्णकियो तहँ अद्भुतकामा ॥ हनि क्षुरग्र शायक रणचारी । काट्योतासु धनुष अतिभारी ॥ फिरि बधि सब अश्वन हनि शायक । छत्रकेतु काट्योभटनायक ॥ मारे पांच बाण तेहिक्षन में। बिदित बिशोक सूतके तन में ॥ तजिअबाजि रथसों चलिपथपै। गोनृप युधामन्युके रथ पै ॥ तब अतिकोपि भीम अरिनासी। फेंकत भयोशक्तितड़ितासी ॥ तेहि आवत लखिकर्ण अमाना। काटत भयोमारिदशबाना ॥ तब भटभीम चर्म असिलीन्हों। कर्ण काटि चर्महि युग कीन्हों ॥ तब असिफेंकिमारिसो सरुषा। काट्योसूतजको धनु परुषा ॥ तुरितहिं करषि और धनु गहिकै। अब मतिभागु खरो रहुकहिकै ॥ अगणित शायक अति अनियारे। भीमसेन के तनमधि मारे ॥ तब करि भीम क्रोधकी गुरुता । प्रगटकरी बिक्रम की पुरुता ॥ हय गजरथ अर्जुन के काटे। परेरहे भीषमता ठाटे ॥ तहँ चलि रथ हय गज लैलै कै । डारतभयो सुमन निरभय कै॥ सोलखि कर्ण धनुर्द्धर आरज। करतभयो तहँ अद्भुत कारज ॥ मारिमारिअगणित शरमगमें। काटे सब करि बिक्रम अगमें ॥ दोहा ॥ तहां भीम अति क्रोधगहि करिमुष्टिका प्रहार । बधन चाहि तेहि नहिं बध्यो करिकै पूर्ब बिचार ॥ कर्णहिं बधिबेकी किये रहे प्रातिज्ञा पार्थ। तेहि पारथके बचन कहँ करिबो गुन्यो यथार्थ ॥ सोरठा ॥ अगणित तीक्षण बान हन्यो भीमकहँ कर्णतहँ। ह्वै मुर्छित बलवान गिरो भूमिपै भीम तब ॥ चौपाई ॥ लखि भीमहिमुर्छित रणधीर। कूदि सुरथसों कर्ण सुबीर ॥ मोहित परो निरायुध यत्र । होभट भीम जातभो तत्र ॥ कुन्ती मांगेही बरपूर्ब। बधेहु न ममपुत्रन भटगूर्ब ॥ सो

तहँ समुझि पालनिज धर्म । बध्यो न ताहि धर्मविदपर्म ॥ तासु उदरमें धनुष लगाय । खोदतभो अतिगर्व बढ़ाय ॥ लागत धनुष भीमअनखाय । कुपित सिंहसम उठो रिसाय ॥ बामपाणिसों धनुगहि तासु । मुष्टिक हन्यो शीशमें आसु ॥ हँसिकै कर्ण कह्यो तेहिकाल । नहिं तू युद्ध योगहे बाल ॥ भयावृकोदर खाय मोटाय । नहिंकर्त्तारणमें व्यवसाय ॥ सादरबसौ बिपिनमेंजाय । मुनिव्रत गहौ कन्दफलखाय ॥ नहिंममसम सुभटन के संग । हौ करिबे लायक रणरंग ॥ सूत सुवनके सुनिये बैन । हँसिकै कह्यो भीमबलऐन ॥ कैयकबार आजुलहि हारि । निलजकहत इमि तुरित बिसारि ॥ जोआपुहि जानत बलवान । तोकरु मल्ल युद्ध नहिंआन ॥ यथाकीचकहि डार्‌यों मारि । तेहि बिधिबधिहौंतोहिं पछारि ॥ यहसुनि बूझि भीमकोभाव । रथचढ़ि तुरितकर्ण गहि चाव ॥ रथहँकवाइ बेगसों जाय । भिरो धनंजयसो शर छाय ॥ भीमसेन तबगुणि मनमाहँ । चढ़ो सात्वकीके रथपाहँ ॥ सात्वकि भीम सुबीर अनूप । युधामन्यु उतमौजा भूप ॥ शर बरषत मरदत ममसैन । गये पार्थके पास सचैन ॥ दोहा ॥ कर्ण आरजुन भिरि तहां कीन्ह्यो अद्भुत युद्ध । दोऊ धनुर्द्धर बिदितभट दोऊ क्षात्र बिशुद्ध ॥ गरजि गरजि दुहुंदिशन सों दोऊ भयेकराल । दुहुंदिशि दीन्हें छायशर दोऊबीर बिशाल ॥

इतिश्रीद्रोणपर्वणिचतुर्थयामेभीमप्रवेशोनामअष्टमोऽध्यायः ८ ॥

दोहा ॥ कर्ण भीमको युद्धसुनि यहिविधि चौथेयाम । संजय सों बूझत भयो वृद्ध नृपति ह्वै क्षाम ॥ क्षणक्षणछीजत सैनमम होतसदाममहारि । दैवचहतजो सोकरत पुरुष पराक्रमटारि ॥ सोरठा ॥ तदनंतर भो जौन सो अब संजय शीघ्रकहु । सुनि संजय मति भौन कहत भयो इमि भूपसों ॥ चौपाई ॥ अर्जुनकर्ण बिदित धनुधारी । कीन्हो तहां युद्ध अतिभारी ॥ बहुविधि सेतु शरन के ठाटे । क्षणमेंबाण असंख्यन काटे ॥ बढ़ि बढ़िअगणितबाण

प्रचारे। अगणितबाण परस्पर मारे॥ बज्रसमान बाण मन भायो। पारथ कर्णहिं टेरिचलायो॥ ताहि चलत लखि अश्व-त्थामा। काटिदियो हनिशर अभिरामा॥ पार्थहि प्रबलजानि तेहि क्षनमें। टेरिगो अनत कर्णदुरि मनमें॥ चौंसठि शायक अति अनियारे। अश्वत्थामहि पार्थ प्रहारे॥ तब द्विजको सुत पीड़ित ह्वैके। गजनमध्य दुरिगो भय ग्वैके॥ महाराज पारथ तेहि पलमें। प्रलयकाल रोप्यो ममदलमें॥ हयगज भटन बधत रणधीरा। चलो कर्णपहँ सात्वकिबीरा॥ सोलखि निजसेनासों कढ़िकै। भिरो अलम्बुष भूपति बढ़िकै॥ तेयुग बीर बिदित धनुधारी। अतिरण कियो प्रचारि प्रचारी॥ मारि बज्रसम शर अतिभारी। बध्योताहि सात्वकि रथचारी॥ बधि अलम्बुषहि भारतसेना। चलोपार्थपहँ अरिदलजेना॥ सोलखि भूरिश्रवा रणरंगी। भिरो सात्वकीसों सहसंगी॥ ते युगबीर कठिनरण करकश। किये अबाण अनेकन तरकश॥ दोहा॥ दोऊमारे दुहुँनकहँ क्षणमहँ अगणित बान। दोऊकाटे दुहुँनके अगणित शर सविधान॥ फेरि फेरिरथ सकलदिशि टेरि टेरि सहगर्ब। हेरि हेरि बर्षे बिशिख घेरि घेरि दिशि सर्ब॥ काटि काटि गहि गहि धनुष कहि कहि जियत न जात। दोऊ दोउ-नपै किये अबिरल शायक पात॥ चौपाई॥ दोऊबधि दोउन के घोरे। बधि सूतन रथके अँगतोरे॥ दोऊ दुहुँन बिधनु करि करिकै। तीक्षण खड्ग चर्मधरि धरिकै॥ करत पैतरबाढ़ि भिरि भिरिकै। लरतभये थिरि थिरि फिरि फिरिकै॥ दोऊ खड्ग युद्धबिधि सीखे। सब सुभटनके पहिले लीखे॥ अद्भुत खड्ग युद्ध तहँकीन्हें। जो लखि सबभट बिस्मय लीन्हें॥ असिअरु चर्म दुहुँनके क्षणमें। भंगभये तेहिबिधिके रणमें॥ तबते उभय बीर बलभारे। भिरि भिरि मल्लयुद्ध बिस्तारे॥ कर अरुचरण शीशके घातन। भेतहँ शब्द तौन कहिजातन॥ मत्त द्विरदसम

योधा दोऊ । कीन्हो युद्ध लखो सबकोऊ ॥ जूटें छूटें जुटैंफिरि छूटें । दैदै ताल सिंहसम टूटें ॥ झपटि लपटि गिरि उलटि पलटिकै । उठि उठि लरैं न टरु रटि रटिकै ॥ अतिशय समित सात्वकी ताही । भयो पछारत नृप जयचाही ॥ बलसों सिनि पुङ्गवहि पछारी । उरमें हन्यो लात अविचारी ॥ बामपाणिसों गहिकच तासू । दक्षिण करमें गहि असिआसू ॥ चह्यो सात्वकी को शिरकाटन । सो लखिकह्यो कृष्ण जय आटन ॥ पारथ सुबश सात्वकिहि करिकै । भूरिश्रवा बधत कच धरिकै ॥ दोहा ॥ फेरिग्रीव इतउत घुमरि अवलों बाचोजात । बेगितासु रक्षण करहु करि तीक्ष्णशरपात ॥ सो सुनि पारथ बिनुलखे तजिक्षुरत्र शरचण्ड । काटो भूरिश्रवाको दक्षिणभुजा उदण्ड ॥ रोला ॥ कटे दक्षिण पाणि भूरिश्रवा कुरुकुलराय । सात्वकिहि तजि पार्थसों इमि कहतभो अनखाय ॥ अरे पांडव विदित भटह्वै किये कुत्सित कर्म । करब ऐसो क्षत्रियन कहँ सदा अनुचित धर्म ॥ कबहुँ ऐसो कर्मकुत्सितकियो नहिं कुरुबंश । रह्योऐसो कर्मकुत्सित वृष्णिकुलके अंश ॥ करै किमि नहिं कर्मकुत्सित गोपमंत्री जासु । करत सँग असतीनको निजुबुद्धि बिगरति तासु ॥ लरतहे हम औरसों तुमकियो ममभुज भंग । कियोतुम यहकर्म लहि वसुदेव सुतको संग ॥ बचनयहसुनि कह्योपारथ सुनो कुरुकुल चन्द । सात्वकी ममशिष्य अतिप्रिय सखा दायक नन्द ॥ करत दुस्तर कर्म ममहित निकट पहुँचो आय । दीनगति लहितासु मरिबो कहोकिमि सहिजाय ॥ एक भटसों लरत अगणित बीरधीर प्रमान । कहो इतअब रह्यो केहिथल धर्मयुद्ध विधान ॥ युद्धमें ममसबल दक्षिणबाहु सात्वकिबीर । तासु रक्षण कियोहम सो अनयनहिं ममतीर ॥ गुणोतुम जोभई सो विधिब्यर्थ तुमतेहि हेत । रुचतसो हौं कहन रिसबश भये अपगत चेत ॥ पार्थके ये बचन सुनिकै भूपकरि अनुमान ।

वाम करसों भूमिपै तहँडासि अविरल बान ॥ बैठितापै योग बिधिसों ब्रह्मभो मनलाय । मूंदि नयनन ग्रीव नतकरि रह्यो अचल सचाय ॥ देखिसो सब नृपति इतके महादुखसों पूरि। लगे निन्दय पार्थकहँ कहिकियो अनुचितभूरि ॥ कहो पारथ कहततुम सब भूलि अपनो कर्म । बधोतुम अभिमन्यु कहँतब कियेकौन सधर्म ॥ भाषिइमि करिनृपन लज्जित कृष्ण पार्थ सचैन । भूप भूरिश्रवासों भेकहत ऐसेबैन ॥ धर्मके अरु भीम के समभूप तुमप्रिय मोहि । जाहु तनतजि स्वर्गकहँ पदपरम उत्तम जोहि ॥ दोहा ॥ इतनेमें उठि क्रोधबश सात्वकि गहि तर-वारि । बधन चलोतेहि भूपकहँ संशय हियसों टारि ॥ तब उत-मौजा भीमअरु युधामन्यु अरु पार्थ । अरु नृप इतके ताहि भे बरजत गुणि अयथार्थ ॥ सुन्यो न काहू को बचन भयो क्रोधबश वीर । काट्यो भूरिश्रवाको शिर सात्वकि रणधीर ॥ सोरठा ॥ तेहिक्षण इतके सर्व सुभटताहि निन्दत भये । सुमन यक्ष गन्धर्ब भये प्रशंसत भूपतिहि ॥ चौपाई ॥ बधितेहि नृपहि सकलदिशि देखी । कहत भयो सात्वकि अतितेखी ॥ मतिबधु मतिबधु मतिबधु याही। कहतभये जोतुमसबचाही ॥ धर्मशील तुमनहिं यहलीन्हें।बधत बालकहि धर्मनचीन्हें ॥ अबतुम सब निजहानि निहारी । बरजत यथा धर्मपथ चारी ॥ हमकीन्हें हैं यहप्रण भाई । ममतन हनिहि चरण जो आई ॥ बधब ताहि हम संशय टारी । होइजऊ वहमुनि ब्रतधारी ॥ इन मार्यो पद ममउर माहीं । याहिवधे मोहिंपातक नाहीं ॥ जेहिबिधि जासु मरण जेहि जनसों । देत बिरचि विधिजेहि सुयतनसों ॥ होत अवशिसो यह गुणिलेई । अवमति हमहिं दोषकछु देई ॥ यह सुनि भये मौन सबयोधा । फिरि बढ़िबढ़ि कीन्हों अवरोधा ॥ माचो घोरयुद्ध तेहिपलमें । कटे असंख्यन भट ममदलमें ॥ यहसुनि वृद्धभूप अनुमानी । कहत भये सुनुसंजय ज्ञानी ॥

द्रोण कर्ण आदिक भट जनसों। गो न जीति जो ममसुत गन सों॥ सो किमिह्वै विक्रमसों रीतो। गो इमि भूरिश्रवासों जीतो॥ यहसुनि संजय नृपसों भाषो। सुनो जौन सुनिवो अभिलाषो॥ यामें कछू पूर्वको कारण। है कहियतुसो संशयवारण॥ दोहा॥ रच्यो स्वयम्बर देवकी को देवक क्षितिपाल। जायतहां तेहि सभामधि रथचढ़ि सिनि तेहिकाल॥ करि साहस हरि देवकिहि निजरथपै बैठाय। हेत भूप वसुदेवके लै तेहि चले सचाय॥ सोरठा॥ सोमदत्त कै चण्ड तव ताकहँ आड़तभयो। दोऊ भट उद्दण्ड बाहु युद्ध कीन्हों तहां॥ चौपाई॥ दोय पहर करि युद्ध बिशाल। ताहि पछार्यो सिनि क्षितिपाल॥ चरण बज्रसम उरमधि मारि। गह्यो केश करगहि तरवारि॥ लखत अनेक नृपनके भूप। कियो न बोधकरि कृपाअनूप॥ तेहि अमरष वश आनि गलानि। सोमदत्त भूपति अनुमानि॥ शङ्कर को कीन्हों अवराध। ह्वै प्रसन्न शिव सत्य अगाध॥ कह्यो मांगु भूपति वरदान। तब इमि कह्यो भूप मतिमान॥ मोहिं देहु सुत बलबुधि भौन। सिनिके सुतहि पछारै जौन॥ लखत नृपनके लहि अवकासु। मारै चरण हिये में तासु॥ यह सुनि कहि तथास्तु त्रिपुरारि। भे अदृश्य दायक फलचारि॥ तेहि बरके प्रभाव यहि याम। सोमदत्तको सुत अभिराम॥ जीत्यो ताहि सुनो क्षितिरौन। नहिं तेहि जीतन लायक कौन॥ यह सुनि सो संशय बिलगाय। बूझतभयो वृद्ध क्षितिराय॥ फिरि जिमि भयो युद्ध सो सर्व। पृथक् पृथक् कहु सुमति अखर्व॥ भूपतिसों सुनिकै ये बैन। कहतभयो संजय मतिऐन॥ भूरिश्रवा को नाश निहारि। बीर धनंजय धनुटंकारि॥ बर्षतशर मर्दत ममसैन। चलो जयद्रथ पहँ जगजैन॥ दोहा॥ बधि अगणित हय गज तुरँग सुभटनको समुदाय। पारथ सारिता रुधिरकी दई तहां उमँगाय॥ इमि निजदल मर्दत निरखि तो

सुत भूभरतार । कर्णशल्य कृप द्विजतनय अरुवृषसेन उदार ॥ सोरठा ॥ बर्षत बिशिख सगर्ब भिरतभये सब पार्थसों । घोरयुद्ध तेहि पर्ब होतभयो तेहिक्षण तहां ॥ चौपाई कर्णादिक करि क्रोध अपारा । तजतभये अस्त्रनकी धारा ॥ काटि सकल आयुद्ध तेहि क्षनमें । पार्थ हने शर सबके तनमें ॥ कृप दशबाण पार्थ कहँ हनिकै । कृष्णहि हन्यो सातशर गनिकै ॥ करि अतिबेग पार्थ भटनायक । सबके काटि असंख्यन शायक ॥ नव नवशर सबके तनमारे । अगणित भटन मारि महिडारे ॥ शरपचीस अतिशय अभिरामा । हन्यो पार्थ कहँ अश्वत्थामा ॥ सातबाण वृषसेन प्रहारे । शल्य तीनिशर मारि प्रचारे ॥ घेरि सकल दिशि सहित समाजा । हन्यो बीसशर तो सुतराजा ॥ सिगरे सुभट रोषसों पूरे । धनु धुनिधुनि बरषे शरकूरे ॥ अगणित दिव्य अस्त्र सबडारे । दिव्य अस्त्रसों पार्थ निवारे ॥ व्यर्थ करत आयुध भटगनके । रुधिर बहावत सबके तनके ॥ सबकहँ व्यथित करत अरु डारत । चलो सिन्धुपतिपै भयभारत ॥ सो लखि कर्ण शरासन करषत । भिरो पार्थसों शायक बरषत ॥ दशशर हन्यो पार्थ तेहि देखी । हन्यो तीनि शर सात्वकि तेखी ॥ मास्यो भीम तीनिशर चोखे । पार्थहने शरसात अनोखे ॥ साठि साठि शायक अनियारे । कर्ण तिन्हें हनि धनुटंकारे ॥ दोहा ॥ अति विक्रमकरि कर्णतहँ तीनि भटनसों तत्र । लरत भयो घनसम गरजि बर्षि बारिसम पत्र ॥ कैयकशत शायक हन्यो पार्थ कर्णके गात । भरो रुधिरसों कर्ण तहँ अनुपम भयो बिभात ॥ सोरठा ॥ कर्ण पचास सुबान अर्जुनके तन हनतभो । पारथवीर अमान काटिदियो धनुकर्णको ॥ चौपाई ॥ काटि कर्ण को धनु भटपारथ । हनतभयो नवशर गुणि स्वारथ ॥ तौलगि कर्ण और धनु गहिकै । बरषो बिशिख खरोरहु कहिकै ॥ तिन कहँ पार्थ बर्षिबहुबाना । कियो बायुबश शलभसमाना ॥ सूत-

जके बधको प्रण धरिकै। पार्थ तज्यो शर योजित करिकै॥ हनि क्षुरप्रशर अश्वत्थामा। काटिदयो सोशर अभिरामा॥ सूतज अतिकर लाघव लीन्हे। ताहि शरनसों गोपित कीन्हे॥ अर्जुन धनुधरके धुरनादित। कर्णहिं कियो शरन सों छादित॥ दोऊ रचि शरपंजर ओपित। कीन्हे दुहुँन शरनसों गोपित॥ दोऊ महाक्रोधसों नहि नहि। अब मतिभागु खरोरहु कहि कहि॥ अगणित दिव्यअस्त्र परिहरि हरि। कियो युद्ध अति विक्रम करि करि॥ दोऊ दिव्यअस्त्र बहुडारे। दिव्य दिव्य अस्त्रनसों बारे॥ मैं अर्जुन तू बचत न मोसों। मैंहों कर्ण लेत जय तोसों॥ इमि कहिकहि दोऊधनुधारी। कीन्हो युद्धभयानक भारी॥ सो लखिसुरगण दुहुँन सराहे। कहे न ऐसे धनुधरचाहे॥ इविधि कर्णकहँलरत निरेखी। कह्यो भटनसों नृपअवरेखी॥ बढ़िबढ़ि तुमसब युद्ध विचक्षण। सादरकरहु कर्णकोरक्षण॥ दोहा॥ आजु बधे बिनु अर्जुनहिं फिरहि न कर्ण सुवीर। यह हमसों है कहि गयो सूततनय रणधीर॥ इतने में पारथ सुभट पांचबाण बर मारि। बधि तुरँगन अरु सारथिहि दीन्हों महिपैडारि॥ इविधि विरथकरि कर्णकहँ हन्यो अनगिने बान। मोहितह्वै नहिं करि सक्यो सूतज युद्धविधान॥ सोरठा॥ सोलखि द्विजसुत वीर लै कर्णहि निज सुरथपै। बर्षत अविरल तीर भिरो पार्थ रणधीर सों॥ चौपाई॥ कृप वृषसेन शल्य तेहिक्षनमें। बहुशरहने पार्थ के तनमें॥ तिन्हैं पार्थ अगणित शरमारे। तेबहुबाण पार्थपहँ डारे॥ बढ़ि बढ़ि इतके सुभट समूहा। घेरि अर्जुनहिकरि अ-तिहूहा॥ अस्तहोब सूरयको चाहत। गर्वित मोदसिन्धु अव-गाहत॥ शक्ति शरनकी वर्षाकीन्हे। सरथ ताहि गोपित करि दीन्हे॥ तेहिक्षण पार्थ सुभटह्वै दारुण। प्रगटित कियो अस्त्र बरबारुण॥ सबके शस्त्र व्यर्थकरि तासों। पूरिसबहि भयभूरि महासों॥ सबके गातकियो हनिबाना। बरझ्झिझियाके कुम्भ

समाना ॥ अगणितमरैं गिरैं बहुघायल। भगैंअनेक हयनकरि चायल ॥ अगणित योधा धीरज धरिधरि। भिरैंजाय शरकी झरि करिकरि ॥ बननिवासको दुख गुणिमनमें। चलोसिन्धु-पतिपै तेहिक्षनमें ॥ रथी गजी हयसादीरूरे। बढ़ि बढ़ि भिरैं रोषसोंपूरे ॥ तोमरशक्ति शरनकीबर्षा। करैंगहे अतिशय उत-कर्षा ॥ तिनमधि लसो पार्थ तहँकैसे। केशरि द्विरद यूथमधि जैसे ॥ दोहा ॥ बिबिधभांतिके दिब्यशर तजितजि पारथबीर। लसो दवानल सम दहत मम दलबन गम्भीर ॥ हयगजभट रथध्वज धनुष रुण्डमुण्ड पग पानि। काटिअसंख्यन देतभो रुधिर धार मधिसानि ॥ सोरठा ॥ मारतण्ड समचण्ड भयोपार्थ तेहिक्षण तहां। दलघन घेरि घमण्ड बेधत नृप गिरिपैचलो॥ चौपाई ॥ कृप वृषसेन कर्णधनुधारी। अरुअश्वत्थामा रणचारी॥ दुर्योधन नृप सहित समाजा। मातुल मद्रदेशको राजा ॥सहि सहि पारथके शररूरे। आड़त भये क्रोधसोंपूरे ॥ रहि तिनके आड़ तेहिक्षनमें। सिन्धु अधीश नृपति गुणि मनमें ॥ आठ बाण घोरन कहँ हानिकै। कृष्णहिहन्यो तीनिशर गानिकै ॥ सो लखि पार्थमारि शरआसू। दीन्हेंकाटि केतु रथतासू ॥ बधि सूतहि यमलोक पठाये। अबिरल बाण भूपपहँ छाये ॥ लखि षटरथी अनर पहिंचाने। कीन्हों अतिबिक्रम मनमाने ॥ अ-बिरल सेतु शरनके ठाटे। अगणित बाण पार्थकेकाटे ॥ सोल-खि कृष्णचन्द्र अनुमानी। पारथसों बोले हितबानी ॥ ये षट-रथी जियत हैं जौलों। भूपहि बधन न पैहौतौलौं ॥ थोरोरहो द्योस अबयाते। सोगुणिकरौ लहौ जयजाते ॥ रबिहि करतहम तमसों छादित। निशिगुणिकैहैं शत्रुप्रमादित ॥ तबलहि घात बधेहु तेहि भूपहि। निशिलखि गुणेहु न सुपन अनूपहि ॥इमि कहि कृष्ण योगबिधिकीन्हें। तममधि रबि गोपित करिदीन्हें॥ सो लखिकै इतके सबयोधा। ह्वैमोदिततत्यागे अवरोधा ॥दोहा॥

रविअथयो अब पार्थनिजु जरिहै चितावनाय । यहगुणि सव भट सुचितकै निरखन लगेसचाय ॥ नृपति जयद्रथ व्यूहके बाहर कढ़िभय त्यागि । लखिसंध्या पार्थहि लखन लगो मोद सों पागि ॥ सोरठा ॥ सोलखि कृष्ण सचैन पारथसों फिरिकहत भो । अव न चूकु जग जैन शीघ्र मारु यहिभूपतिहि ॥ चौपाई ॥ यहि नृपके बधिबेको डौर । सुनु हमसों हेभट शिरमौर ॥ याको भयो जन्म जेहिकाल । भो तेहिक्षण नभ शब्द रसाल ॥ हेनृप वृद्धक्षेत्र तोपुत्र । ह्वैहै तो अन्वयके सुत्र ॥ दातायशी शूरमति-मान । अतिधनुधर ह्वैहै बलवान ॥ पै याको कोऊ रणमाहँ । काटिशीश डारिहि महिपाहँ ॥ वृद्धक्षेत्र सुनि यह नभवैन । पुत्र मरण गुणिभयो अचैन ॥ तबतप बलसों धीरजआनि । कह्यो सुबन्धुनसों अनुमानि ॥ यह ममसुतको शिर अभिराम । जो डारिहि महिपै जेहियाम ॥ ताहीठौर कठिनशिरतासु । शतधा फटिहि मरहि सोआसु ॥ ऐसोबचन भाषि वहभूप । लगोतप-स्याकरन अनूप ॥ अब स्यमन्तपंचकके पार । हैतप चरतभूमि भरतार ॥ शीघ्रकाटि याको उतमंग । डारिदेहु वाकेउतसंग ॥ तौ बचिहौ तुम हे मुदभौन । मरिहिडारि महिपै शिरतौन ॥ यह सुनि दिव्यअस्त्र सन्धानि । मास्योपार्थ तासुवधजानि ॥ वज्र सदृश सो शरछवि ठाटि । शीशजयद्रथ नृपकोकाटि ॥ तिमि लै चलो बाज अवदात । जिमितरुसों पक्षिहि लैजात ॥ दोहा ॥ फिरिक्रमसों अगणित विशिख तेहि सुशीशमेंमारि । वृद्धक्षेत्रके गोदमें देत भयो सोडारि ॥ वृद्धक्षेत्र संध्याकरत रहो ताहिक्षण शीश । गिरो गोदमें तव झझकि उठत भयो अवनीश ॥ तासु गोदसों भूमिपै गिरो शीश तेहिहेत । फटो शीशनृपको मरो नृप तप तेज निकेत ॥ बधि जयद्रथहि पार्थ लहि प्रण सागर को पार । शंख बजावतभो तदनु गरजो भीम उदार ॥ सो सुनि जान्यो धर्मनृप बध्यो सैन्य वहि पार्थ । बजवायो जय दुन्दुभी

सिद्धि जानिकै स्वार्थ ॥ सोरठा ॥ आठ क्षौहिणी सैन तेहि दिन लौं तहँ बधिगयो। तो मतिअवगुण ऐन को यहफल प्रगटित भयो ॥ महिखरी ॥ सुनिबध जयद्रथ नृपतिको धृतराष्ट्रनृप अति दुखमये। इमि कहे नृप बधिगयो जब ममसुभट कैसे तबभये ॥ सुनि कहे संजय मरो नृप तब द्रोणसुत कृप रिसभरे। भिरि पार्थसों करि हस्तलाघव घने शरपंजर करे ॥ तहँ पार्थरचि शरसेतु क्षणमें काटि तिनके शरघने। भो हनत सबके गातबहु नाराच अति तीक्षण बने ॥ शर बज्रसम अतिघोर कृपकेहिये मधि मारत भयो। कृप गिरे रथपै मृतकसम तबसूत रथलै कढ़िगयो ॥ दोहा ॥ मृतक सदृश कृपकहँ निरखि पारथ आनि गलानि। क्षात्रधर्म कहँ धिक्कहो अति दुरयश अनुमानि ॥ अतिखेदित पार्थहि निरखि सूतजधनुटंकारि। रथ बढ़ाइकै चलतभो शरपंजर बिस्तारि ॥ लखि सात्वकि टेरतभयो इतै आउ कितजात। सुनि सात्वकिपहँ चलतभो कर्णवीरअवदात ॥ सोरठा ॥ यहसुनि वृद्धमहीप कह्यो बिरथ ह्वै सात्वकी। कहँ रथलह्यो समीप जापै चढ़ि फिरि लरतभो ॥ चौपाई ॥ यह सुनि संजय नृपसों भाखो। पहिले कृष्ण यतनकरिराखो ॥ जब सात्वकिहि बिरथ लखि पाये। तब अमरष युतशंख बजाये ॥ दारुकसूत शब्दसो सुनिकै। कृष्णचन्द्रको शासन गुनिकै ॥ गरुड़ केतुरथ सादर ल्यायो। सोरथलखि सात्वकि छबिछायो ॥ चढ़ोपाइ प्रभुको अनुशासन। लगो शरनसों ममदल नाशन ॥ नृपति जयद्रथके बधऊपर। भिरे कर्ण सात्वकि रण भूपर ॥ युधामन्यु उतमौजा राजा। हैं सात्वकि सँग रक्षणकाजा ॥ सात्वकि कर्ण बिक्रमी चीन्हों। अद्भुत युद्धभूपतहँ कीन्हों ॥ अबिरल सेतु-शरनके ठाटे। अगणित अस्त्र अस्त्रसों काटे ॥ अगणितशार गातनमें हनि हनि। अब मतिभागु खरोरहु भनि भनि ॥ सब दिशि चक्रसदृश फिरिफिरिकै। तजे दिव्यआयुध

थिरिथिरिकै ॥ दिव्यअस्त्र दोउनके दोऊ। दयेवारि निरखेसब कोऊ ॥ सिंह सिंह गजगज भिरि जैसे। लरें लरेतहँ युगभट तैसे ॥ तहँ दोऊकहँ लरिबो देखी। किये प्रशंसा सुमनवरेखी॥ तहँ सात्वकि विक्रम विस्तारे। अगणितबाण कर्णकहँ मारे ॥ हनि क्षुरप्र शायक अतिचोखो। काटतभयो शरासन नोखो ॥ दोहा ॥ हति सूतहि घोरन बध्यो केतुकाटि हनिबान। बहु शायक कर्णहिं हन्यो सात्वकि बीरअमान ॥ कर्णहिं बधिवेकीरह्यो किये प्रतिज्ञापार्थ। सोगुणि कर्णहिं नहिं वध्यो सात्वकि गुणो यथार्थ ॥ तेहिक्षण हाहाकारभो ममदलमें सो देखि। दुर्योधन के सुरथपै गयो कर्ण अवरेखि ॥ सोरठा ॥ तब दुःशासनआदि तौसुत सात्वकि सों अभिरि। सब दिशि घेरिप्रमादि वर्षतभो अविरल विशिख ॥ चौपाई ॥ लरितिनसों अति रिसगहि मन में। सात्वकि विरथ विधनुकरि क्षनमें ॥ समुझि वृकोदर को प्रण पूरे। बध्यो नहीं तजि दयो अधूरे ॥ सुनि धृतराष्ट्र शोचसों नहिकै। फिरि बूझतभे धीरज गहिकै ॥ कृष्णचन्द्रके वाही रथपै। रहि सात्वकि विचरो रणपथपै ॥ कै फिरि चढ़ो और रथ गहिकै। सो समुझाउ सूतसुत कहिकै॥ संजयकह्यो सुनो महिन्नाता। अति प्रवीण दारुकको भ्राता ॥ सुरथ सकल आयुधसों भारो। सिंहकेतु युत सरस सवारो ॥ परम वेगसों तहँ लैआयो। चढ़ि तापै सात्वकि भट गायो ॥ अगणित हय गज भट बधिडारयो। प्रलयकाल ममदलमधि पारयो ॥ तिमि सूतजको सूत प्रवीना। आयो तहँलै सुरथ नवीना ॥ चढ़ितापै भटकर्ण विचक्षण। करतभयो निजदलको रक्षण ॥ भीमसेन अति अमरष लीन्हे। पारथसों सम्भाषण कीन्हे ॥ कइकबार हम हनि शर चीन्हें। कर्णहिं त्रिरथ त्रिधनु करिदीन्हें ॥ भावी वशजब सूतज हमकहँ। विरथ कियो तब गर्वितह्वै तहँ ॥ बहु दुर्वचन कहतभोजाते। दहतहृदय ममशोच महाते॥ जातहोय

हियो मम शीतल । सोकरि यशसों भरहु महीतल ॥ दोहा ॥ यह सुनि भाष्यो कर्णसों पारथबीर उदार । देखत सबकेभीम तोहिं बिरथकियो बहुबार ॥ भीम न अनुचित कछुकह्यो जबतू जीत्यो मूढ़ । तबभीमाहिं वहु दुर्बचनभाषे गर्वारूढ़ ॥ सोरठा ॥ तू अधर्म करतार तोहिंनडरपरलोकको । करिअधर्म उपचार बधवायो अभिमन्युकहँ ॥ बसुकला ॥ बिनुरहेमोहि । तुवदावजोहि ॥ ममसुतहि पाय । दीन्हों बधाय ॥ मैंकहतटेरि । तुव लखतघेरि ॥ बलबुद्धि भौन । तौतनयजौन ॥ तेहिबाणमारि । बधिहौं प्रचारि ॥ अति भयोघोर । सुनि प्रण कठोर ॥ लहि दशापोच । इतबढ़ोशोच ॥ तब भयो अस्त । दिनकर प्रशस्त ॥ दोहा ॥ पारथसों केशवकहो इमि यहि दलमें आय । जिमिपाये तुम सुजय तिमि सकै और को पाय ॥ सुनि पारथ प्रभुसोंकह्यो तुव अनुकम्पापाय । हम पायो इमि सुजय नहिं ममबल बुद्धिउपाय ॥ सोरठा ॥ सुनि केशव मुसकाय समुद हांकिरथ बेगसों । लखत मृतकसमुदाय आये धर्म महीपपहँ ॥ लखि धर्महियहुराय कहोपाय तोभाग्य बल । परसेनामधिजाय पार्थ जयद्रथ कहँ बध्यो ॥ तोमर ॥ सुनि कृष्णके ये बैन । नृप धर्म लहि अतिचैन ॥ तकि उतरि रथसों धाय । मिलि कृष्णसों लपटाय ॥ भरि मोद जलसों नैन । इमि कहे हे मुदऐन ॥ सो होत बिस्वेबीश । जो चहत तुमजगदीश ॥ तुम रचत जग बहुरंग । तुम करतपालनभंग ॥ सब अचरचर सबलोक । जे चरतश्रुति चषओक ॥ तो बिशदमायासर्ब । इमि कहत सुमति अखर्ब ॥ महि सरित सागरशैल । शशि सूर नभ दिशि गैल ॥ ते संकल तो प्रति अंग । नितरहत हैं तो संग ॥ हैं जिते खिन्न अखिन्न । नहिं एक तुम सों भिन्न ॥ नहिं बारिसों कछुऔर । जिमि लहरिसों तेहि तौर ॥ जिमि कनक भूषण भेद । तिमि कहत सब श्रुतिवेद ॥ तिहिसमुझि योगी जौन । ताकिरहत तुमकहँ तौन ॥ मिलिजात तुम

महँ क्षिप्र । यह कहत ज्ञानीविप्र ॥ जिमि बिनाबायु बिकार । नहिं लहरिको अधिकार ॥ जिमिनशे भूषण साखि । मिरिजात कनकै भाखि ॥ दोहा ॥ इमि अस्तुतिकरि कृष्णसों कह्यो युधिष्ठिरभूप । तुव अनुकम्पासोंलह्यो पारथ सुजयअनूप ॥ जाहि जितावन हेतु इमि बसत संगतुम तात । सोजीतै सबलोककहँ कहाकुरुनकी बात ॥ इमिप्रभुसों कहि पार्थ सों मिले पुलकसों पूरि । सात्वकिसों अरु भीमसों मिले मोदलहि भूरि ॥ सोरठा ॥ युधामन्यु क्षितिपाल सों मिलि उतमौजहि मिले । कहि कहि बचन रसाल दूरि कियेश्रम खेदसब ॥ चौपाई ॥ नृपति जयद्रथ को वधदेखी । नृप दुर्योधन अनरथ लेखी ॥ तजत चषनसों जलकी धारा । भरो शोच दुखगहे अपारा ॥ विना दशन के अहिसमदीना । मरेजयद्रथकेहवैक्षीना ॥ ऊबिउसांसलेतअति आतुर । गयो द्रोणके ढिगनृपचातुर ॥ तहां शोचसों हीरोदहि दहि । पार्थ भीमके विक्रम कहिकहि ॥ अरु सात्वकिको विक्रम रूरो । कहतभयो अमरष सों पूरो ॥ तुमहिंजीति ये सब दृढ़ घायक । बधत असंख्यन भट नरनायक ॥ षटयोजन ममदल मधि घसिकै । द्विरदयूथ मधि हरिसम लसिकै ॥ व्यूहभेदिप्रण कियो यथारथ । बधि जयद्रथहि योधा पारथ ॥ रक्षण करि न सके भट तेऊ । गणेरहे अतिरथमें जेऊ ॥ हम अति आश कर्ण की राखत । रहे रहे सो सब थरमाखत ॥ कर्ण भीम कहँ अनुचित भाख्यो । तहँ हम मान कर्णको राख्यो ॥ जीत्योताहि सात्वकी क्षनमें । लखि गलानि उपजी ममनमें ॥ सहित बन्धुसुत सहित समाजा । मम हित बधिगे अगणित राजा ॥ पापकर्म कीन्हों हम जैसो । लहो पापको सागर तैसो ॥ दोहा ॥ परम भरोसो आपको मोकहँ सदा अचार्य । सो तुम अर्जुन परकृपा करि न करत ममकार्य ॥ भूपतिके ये वचनसुनिकह्यो द्रोण अनखाय । वाक शरनसों भूपकत घालत ममउरघाय ॥

शकुनि कर्णको मंत्रसुनि कीन्हें अनुचितकर्म । द्रुपदसुता सों निजसभा मधिजो किये अधर्म ॥ सोरठा ॥ बिदुर कहे जे बैन नीति रीति हित धर्ममय । तुम प्रमादके ऐन सुनेन तेहिदीन्हें निदरि ॥ अब ताको फल जौन सो सबप्रगटित होतहै । शोच करत हौ कौन दैवचहत जो सो करत ॥ रोला ॥ लरो एकइस दिवस जो भृगुरामसों प्रणधारि । लखत सबके पार्थता कहँ दियो महिपै डारि ॥ मारि द्विरदहि बधत भो भगदत्तकहँ जो बीर । बधे अगणित नृपनकहँ जे गणे भट रणधीर ॥ पार्थ पै करिकृपा इतहम दयोदलमधिजान । रहे अगणित बीरमधिमें गणे बीर अमान ॥ कर्णकृप वृषसेन ममसुत शल्य सुभट अनेक । आपु हेतहँ मर्दि सबदल गयोपारथ एक ॥ बधे कतनहिं ताहि कतनहिं लये गहि सहचेत । बधन दीन्हें सिंधुपति कहँ कहो सो केहि हेत ॥ जानि बिक्रम पार्थको नृप हमाहिं लावत दोस । शोचिलीन्हों पूर्व नहिं अब करत हौ अफसोस ॥ बिप्र को नहिं कर्म लरिबो लरत को द्विजऔर । गह्यो हमपर धर्म ताको लहतफल यहिठौर ॥ भूमिपति तौ बाकशरसों बिदित हम यहिकाल । पैठि परदल मध्यबल मितकरब रणबिकराल ॥ आजु रातिहु युद्ध करिबो चहतहम हे भूप । किहेहु तुम निज सैन रक्षण सबहुकरि जेहिरूप ॥ द्रोणके सुनि बचन भूपति कर्णके ढिगजाय । गरोगद्‌गद करें ऐसेकहे शोचबढ़ाय ॥ आजुतौ बसुदेव सुतकी पार्थपाय सहाय । कियो अद्भुत कर्म जैसो तौन नहिं कहिजाय ॥ द्रोण आदिक उद्भटन कहँ जीति रचिशरसेत । लखत सबके सिन्धुपति कहँ बध्यो जय यश हेत ॥ लखे अगणित द्विरद हय भट द्विरदके समुदाय । बधे पारथ बीरके महिपरे लसत अचाय ॥ पार्थ पै करिकृपा दीन्ही राह द्रोणाचार्य्य । नतरु किमि इतआइ पारथ करतऐसो कार्य्य ॥ भूपके ये बचन सुनिकै कह्यो कर्ण बिचारि । द्रोणकोमति

दोष दीजै भूप हानि निहारि ॥ तरुण पारथ कृष्णसारथिदिव्य हय तूणीर। दिव्य धनुगाण्डीव किमि जयलहैं नहिं वहवीर ॥ दोहा ॥ यथा पराक्रम लरत द्विज तो जयहेत विचारि। अवशि होति होनी नृपति सकै न कोऊ टारि ॥ करोयुद्ध प्रारब्ध गुणि करि सबसंशयदूरि। यहसुनि नृपपर सैनपहँ चलोक्रोधसोंपूरि ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेद्रोणपर्वणिजयद्रथवधोनामनवमोऽध्यायः ९ ॥

दोहा ॥ द्रोणपर्व चौथे दिवस लहि संध्या प्रणरोपि। सिन्धुपतिहि पारथबध्योसो लखि अतिशयकोपि ॥ दुर्योधननृपकर्ण अरु सूतज सों बतिआय। सदल पाण्डु दलपहँ चलो बहु दुन्दुभि बजवाय ॥ चौपाई ॥ दुहूंओर के योधारूरे। बढ़ि बढ़ि महाक्रोध सों पूरे ॥ कहि कहि नाम प्रचारि प्रचारी। लागेकरन युद्ध अतिभारी ॥ तोमर शक्ति भल्ल अनियारे। बाणपरस्परपट्टिशमारे ॥ लगेदुहूंदिशिसों शर डारन। मारु मारु धरु मारु पुकारन ॥ दुर्योधन भूपति तेहि क्षनमें। धसि पाण्डव दल में गुणि मनमें ॥ अति विक्रम कीन्हों हेराजा। बध्यो असंख्यन सैन समाजा ॥ निशिमें घोरयुद्ध तहँमाच्यो। मानहु कालकोप करिनाच्यो ॥ तोसुत मर्द्यो परदलतैसे। मत्तद्विरद नलिनीवन जैसे ॥ दुर्योधनसों मर्दित ह्वैकै। परदलभगो भीतिसों ग्वैकै ॥ सोलखिकै भीमादिकयोधा। बढ़िताको कीन्हों अवरोधा ॥ भीमहि भूपबाणदशमारयो। षटशर माद्रीसुतनप्रहारयो ॥ द्रुपदबिराटहि षटशर हनिकै। हन्यो शिखण्डिहि शतशरगनिकै ॥ धृष्टद्युम्न कहँ सत्तरि शायक। हन्यो क्रोधकरि कुरुकुलनायक। पांच पांच शायक अनियारे। सिगरे द्रौपदेय पहँडारे ॥ पांचबाण सात्वत कहँ दीन्हों। बेधिघटोत्कच कहँ मुदलीन्हों ॥ धर्महि हन्यो सात शर चोखे। औरन बहुशर हन्यो अनोखे ॥ दोहा ॥नृपति युधिष्ठिर कोपितब दीन्हधनुष टंकारि। दुर्योधन नृपसों भिरो सोढिग आउप्रचारि ॥ दोऊभ्राता भिरितहां कीन्होंयुद्धउदण्ड।

भुजदण्डन करिचपल धरि मण्डल सम कोदण्ड ॥ सोरठा ॥
निजजय यशके हेत महित्राता भ्राताउभय । रचे घने शरसेत
काटि दये अगणित बिशिख ॥ चौपाई ॥ दुर्योधन क्षितिपति धनु
धारी । दशशर धर्महि हने प्रचारी ॥ काटि भूपके धनुमजबूतहि।
हन्यो प्रचारि तीनि शर सूतहि ॥ चारिबाण तुरगनके तनमें ।
हनिध्वज काटि दयो तेहि क्षनमें ॥ धर्मभूप अति रिससों न-
हिकै । तुरतहि और शरासन गहिकै ॥ अब थिररहुइमि कहि
अति तुरमें । मारयो दुर्योधन के उरमें ॥ लगे बाण अतिदुखसों
ग्वैकै । परो भूमिपति मुर्छित ह्वैकै ॥ हाहामरो भूप दुर्योधन ।
कहि कहिभट कीन्हों अवरोधन ॥ दुर्योधन कहँ मुर्छित देखी ।
द्रोण महाअनरथ अवरेखी ॥ शोणितकी सरिता अतिबलसों।
प्रगटकियो पाण्डवके दलसों ॥ चेति भूप धनुगहि उठि हेरयो।
अबमति भागु खरोरहु टेरयो। इतउतके योधा रणचारी। त्यागि
शङ्क निजमरण बिचारी ॥ भिरि भिरि जययशको प्रण लीन्हें।
अतिशय घोरयुद्ध तहँ कीन्हें ॥ मुद्गरगदा शक्ति असिबाना ।
भल्ल परस्वध आयुधनाना ॥ नभ समपूरिदये सबथलमें। मा-
चयो घोरशब्द दुहुंदलमें ॥ भो अति तुमुल युद्धतेहि निशिमें ।
मरे असंख्यन भटदुहुंदिशिमें ॥ मारयो मारु मारु धुनि छाई।
बहीरुधिरकी नदी सोहाई ॥ दोहा ॥ तारागण सहलसतभो यथा
गगन अभिराम । तिमिभूषण मणिशरन सों लसी भूमि तेहि
याम ॥ तेहिक्षण परदल मधिलसोद्रोणाचारयबीर । जैसे नीरस
तरुन मधि बिचरत ज्वलन अधीर ॥ हयगज रथपैदर सुभट
जे भेसम्मुख तासु ॥ तेसब बेधित गाततजिगये कालपुरआसु॥
सोरठा ॥ बध्यो द्रोण तेहि काल कैकेयन के सुवनबहु । धृष्टद्युम्न
को बाल बध्योमारि शर बज्रसम ॥ चौपाई ॥ इमिदलमर्दतद्रोण
हि देखी। भिरत भयो शिविभूपति तेखी ॥ शिविहि द्रोणदश
शायक मारे। द्रोणहि शिविशर तीसप्रहारे॥ मारिबज्रसम शर

मजबूतहि। नृपभो बधत द्रोणकेसूतहि ॥ तबहिं द्रोणकरला-
घव अतिकै। नृपके सूत तुरँग सब हतिकै ॥ अर्द्धचन्द्र समशर
गहिडाट्यो। मारिशीश शिविनृपको काट्यो ॥ तौलगि सूतसु
और अकादर। चढ़ो द्रोणके रथपर सादर ॥ इमिजेगे द्विजके
सम्मुखमें। ते मनुपरे कालके मुखमें ॥ नृपकलिंगपति को सुत
योधा। भीमसेन कहँ लखि अतिक्रोधा ॥ शायक पांचभीमकहँ
हनिकै। मारे फेरिसातशर गनिकै ॥ पितुको मरण समुझिअ-
तिरोखो। सूतहि हन्यो तीनिशर चोखो ॥ रथसों कूदि भीम
तब गरजो। रुको न भूप तनय को वरजो ॥ मारतभयो वज्र
समसूका। मरोभूपसुत लखि ह्वै मूका ॥ तबध्रुववीर कर्ण को
भाई। भिरो भीमसों अतिअनखाई ॥ भीमसेन तेहिदेखिदपटि
कै। तासु सुरथपै जाइझपटिकै ॥ मूकामारिबधतभोताही। भगे
निकटकेभटतेहिचाही ॥ तब जयरात भूपकेरथपै। गयोसिंहसम
लसिकैपथपै ॥ दोहा ॥ गरजिमारि करतलदुसह बधतभयोफिरि
ताहि। कर्णकोपि तबभीमपहँ शक्तिचलायोचाहि ॥ तुरितभीमसो
शक्तिगहि तज्योकर्णपै फेरि। बाणमारि तेहि बीचही काट्योसौ-
बल हेरि ॥ ऐसे दुस्तर कर्मकरि पाण्डवभीम अमान। बहुरि
जाय निज सुरथपै बरषनलागो बान ॥ सोरठा ॥ सो लखिकै
बलधामतो सुत दुर्मदनामजो। तजत शरनकेदाम भिरो भीम
सों गरजिकै ॥ पज्झटी ॥ करिपाणि लाघव रथबढ़ाय। सोभीम
पै शर दयोछाय ॥ हँसि भीमताकेहयन मारि। अरु सारथिहि
बधिदयोडारि ॥ तोतनय तब निजसुरथत्यागि। दुष्कर्मकेढिग
गयोभागि ॥ युगबन्धुतेह्वै एकठौर। बहुबाण बरषतभेसडौर ॥
तब कूदिरथते भीमधाय। दुष्कर्मके रथपाहँजाय ॥ करिपाद
तलसों रथहि चूर्ण। हनिमूक तिनकहँ बध्योतूर्ण ॥ तेहिकाल
हाहाधुनि महान। ममओरभो अनरथ बिधान ॥ गहिभीति
भागे भटसमस्त। कर्णादिकी द्युतिभई अस्त ॥ दोहा ॥ नृपति

युधिष्ठिर आदिउत सिगरेभट समुदाय । कियो प्रशंसाभीमकी महा मोदसोंछाय ॥ सोमदत्त भूपाल तहँ लहि सात्वकिहि समीप । पुत्रबधनके क्रोधबश कहतभयो कुलदीप ॥सोरठा॥रेशठ सात्वकि मूढ़तजि सुधर्म क्षत्रियनको । तस्करकर्म अगूढ़ किये गर्वगहिनाचतू ॥ चौपाई ॥ बिरथ बिधनुबिनु भुजरण तजिकै । नतकरि ग्रीव योगबिधि सजिकै ॥ बैठिरहोममसुततेहिनाहक । बध्यो मूढ़ तू अघको गाहक ॥ ताते तोहिंमारि यहि निशिमें । करिहौं प्रकट कीर्ति सबदिशिमें ॥ कृष्ण पार्थके बिना बचाये । जो न बधौं बिनु वचिकै आये ॥ तौ मैं परौं कुरौरौ माहीं । पार्थ बचावै तौबशनाहीं ॥ यह सुनिकै सात्वकि रणचारी । सोमदत्त सों कह्यो प्रचारी ॥ नहिं कौरव दलमें असकोई । मोहिं लगै डर जाकहँ जोई ॥ शपथकृष्णके पदकी करिकै । सबहि सुनाय कहत प्रण धरिकै ॥ जो न भागिजैहै रण तजिकै । तौ बधिहौं मैं तोहिं गरजिकै ॥ उभय बीरते तहँ इमि कहिकहि । बर्षन लगे बाण रिस गहिगहि ॥ दुर्योधन भूपति तेहिक्षनमें । सह सब रथिन सहितगुणि मनमें ॥ घेरिसोम दत्तहि ह्वै ठाढ़ो । रक्षतभयो यतनकरि गाढ़ो ॥ लै अगणित हयसादी योधा । कीन्हों शकुनिबीर अवरोधा ॥ सो लखि धृष्टद्युम्न अनखाई । तिनसों भिरो सैनसह जाई । तहां उभय दिशिके भट गण सों । माचो घोरयुद्ध अतिप्रण सों ॥ मथतासिन्धु प्रगटी धुनि जैसी । तेहिथर मढ़तभई धुनितैसी ॥दोहा॥ सोमदत्त नृपहनत भो सात्वकिकहँ नवबान । भूपहि नवशर हनतभो सात्वकिबीर अमान ॥ तिनसोंबेधित ह्वै नृपति रथपैचलो अचेत । रथचलाइ तबदूरिगो सूत सुबुद्धिनिकेत ॥सोरठा॥ भूपहिमुर्च्छित देखिद्रोण सात्वकी पहँचलो । लखि पांडव अवरोखि बढ़िसरोष आड़त भये ॥ चौपाई ॥ सुनो भूमिनायक तेहिपलमें । द्रोणाचार्य्य पांडवीदलमें ॥ मण्डल सदृश शरासन करिकै । अनरथ करतभयो

प्रणधरिकै ॥ जे भटभये तासु चखचारी। तिन्हैं किये यमलोक विहारी ॥ अति तीक्षणशर धर्महिं हनिकै। हन्यो सात्वकिहि दशशर गनिकै ॥ भीमसेनकहँ नवशर मारे। धृष्टद्युम्न कहँ बीसप्रहारे ॥ हति तीक्षणशर धर्महिं गरज्यो। सहदेवहि वसु शरहनि तरज्यो ॥ द्रुपदहि दशशर हनि दृढ़घायक। हन्योशिखण्डी कहँ शतशायक ॥ सिगरे द्रौपदेयके तनमें। मार्योपांच पांचशर क्षनमें ॥ उतमौजहि हनि षटशर नोखे। हन्यो विराटहि वसुशर चोखे ॥ सबके हनेबाण बहुकाटत। सबपहँ बाण जालरचि डाटत ॥ अगणित हयगज रथ बधिडार्यो। शत्रु सेनमें प्रलय पसार्यो ॥ मर्दित कै भट पांडव दलके। भगे गने जेऊ बरबलके ॥ अर्जुन लखि विचलित निजसेना। चलोद्रोण की दिशिजग जेना ॥ द्रोणपार्थ कहँ निजदिशि आवत। लखि बढ़िचलो बर्षिशर छावत ॥ पार्थहिजात द्रोणपहँ देखी। पलटे उतके भट अवरेखी ॥ निरखि द्रोणगहि अति उतकर्षा। तिनपै कियो शरनकी वर्षा ॥ दोहा ॥ जेजे भटभे द्रोणके सम्मुख तिनके गात। भिन्नभिन्नकै प्राणबिनु महिपैभये विभात ॥ सहसन शर अरिसैन मधि डारत प्रति सन्धान। बधत असंख्यनभट भयो विरचत द्रोण अमान ॥ सोरठा ॥ कोपित कालकराल गुणि द्रोणहिं उतके सुभट। बहुरि भगे तेहिकाल तजिसाहस संगिहि विकल ॥ बसुकला ॥ सोगति निहारि। पारथ विचारि ॥ भोकहत येव। हैं बासुदेव ॥ जहँ द्रोण विप्र। तहँ चलो क्षिप्र ॥ सुनि कृष्णचन्द। तुरगन अमन्द ॥ करिगयेतत्र। होद्रोणयत्र ॥ लखि भीमसेन। अरि विहँग सेन ॥ निजसूत जौन। बलबुद्धिभौन ॥ तासों सुधीर। इमि कहे बीर ॥ दोहा ॥ जात धनंजय द्रोणपहँ चलो सुरथलै तत्र। सुनिसो आयो बेगसों रहो किरीटीयत्र ॥ अर्जुन भीमहि द्रोणसों भिरत देखि गहिगर्व। पलटि फेरि आये उनै उतके योधा सर्व ॥ सोरठा ॥ अर्जुन दक्षिण ओर उ-

त्तर दिशिरहि भीमभट । सदल जूटि तेहि ठौर सदल द्रोण सों लरत भे ॥ चौपाई ॥ इतके सुभट बेगसों टूटे । जाइ तहांतिन सब सों जूटे ॥ भो अति घोरयुद्ध तहँ राजा । मरे असंख्यन सैन समाजा ॥ धृष्टद्युम्न तहँ सादर आयो । चलो तितै सात्वकि भटगायो ॥ द्रोण तनय सात्वकिहि निहारी । भूरिश्रवाको बधन बिचारी ॥ बर्षत शायक धनुटंकारी । चलो बेगसों ताहि प्रचारी ॥ लखि असुरेश घटोत्कच योधा । बढ़िताको कीन्हों अवरोधा ॥ सैन राक्षसी महा भयानक । बिबिध भांतिके बाहन बानक ॥ गरजि गरजि अतिरिससों पूरे । बर्षन लागे आयुध रूरे ॥ चारिहाथको निष्कप्रमाना । चारिनिष्कको नल्वमहाना ॥ तीस नल्वको रथबिस्तारो । रचो बिचित्र आयुधनभारो ॥ तापरचढ़ो धनुष टंकारत । बर्षत बिशिखभूरिभय भारत ॥ भूधर सम असुरेशहिज्वैकै । खसके सुभट भीतिसों ग्वैकै ॥ बिबिध भांतिके आयुधभेदा । अरु पषाणदायक अतिखेदा ॥ नभसों गिरनलगे दलमाहीं । जानिपरो कोउबाचत नाहीं ॥ तेहि क्षण कर्णादिक भट डरिकै । खरेहोत भे इत उत टरिकै ॥ तहँ थिरि द्रोणतनय रणचारी । अति बिक्रमकीन्हों प्रणधारी ॥ दोहा ॥ दिव्य शरनसों आसुरी माया सकलबिदारि । बधतभयो अगणित असुर असुराधिपहि प्रचारि ॥ कोपि घटोत्कच तबहन्यो द्रोण सुतहि बहुबान । ते तनमधि धसिपियतभे शोणितउरग समान ॥ सोरठा ॥ द्रोणतनय दशबान टेरि असुरपतिकहँन्यो । तब असुरेश अमान तज्योचक्र हरिचक्र सम ॥ चौपाई ॥ हनि बीचहि बहु शर अभिरामा । काटिदियो तेहि अश्वत्थामा ॥ सोलखि अंजन पर्बन नामा । सुवन घटोत्कचको बलधामा ॥ भिरो द्रोण सुतसों भटनायक । गर्जत घनसम बर्षत शायक ॥ दोऊ बलि बासवसम भिरिकै । घोरयुद्धकीन्हों तहँ थिरिकै ॥ तहँ अश्वत्थामा प्रण धरिकै । धनुष कर्षिकरलाघव करिकै ॥

काटि तासुधनुध्वज बाधि सूतहि । बध्यो हयन करिबेग अकूत-हि ॥ तब अंजन पर्वन असि गहिकै । भयोचलावत थिरु थिरु कहिकै ॥ असुर तनय तब रिससों सनिकै । मार्यो गदा न बाचत भनिकै ॥ द्रोण तनय तब शरसों काट्यो । हनि बहुशा-यक असुरहि डाट्यो ॥ तबसो कूदिघूमि नभमाहीं । बरषो वृक्ष द्रोणसुत पाहीं ॥ तेहिक्षण द्रोणतनय बलवाना । धनुषहिकरि जलयंत्र समाना ॥ तज्यो उर्द्ध बाणनकी धारा । तब ह्वै व्याकुल असुर कुमारा ॥ आइभूमिपै रथपहँ राज्यो । धनुगहि सेतु शरनको साज्यो ॥ असुरहि हनि बहुबाण प्रचारी । वधत भयो द्विजसुत धनुधारी ॥ पुत्र मरण लखिकै अति कोप्यो । बीर घटोत्कच प्रलय अरोप्यो ॥ अविरल शरपंजर रचिदीन्हों । तिन्हें द्रोणसुत निष्फल कीन्हों ॥ दोहा ॥ निज निज बिक्रम बे-गकी गारिमा कहि कहि धीर । लरे शिष्य गुरु के सुवन विप्र रजनिचर बीर ॥ मायावी राक्षसकियो बहुमाया बहुवार । दिव्य शरन सों द्रोण सुत तासु कियो संहार ॥ महा भयानक अति प्रवल राक्षस भट समुदाय । करत कोलाहल बाढ़ि दये अवि-रल आयुध छाय ॥ सोरठा ॥ तिन्हें निरखि अति चण्ड त्रासित निरखि दुर्योधनाहिं । द्विजसुत सुभट उदण्ड कहतभयो कुरुनाथ सों ॥ चौपाई ॥ नृप मति आनु शोच कछु मनमें । ये सबलहत कालपुर क्षनमें ॥ वन्धुन सहित धीर धरि देखौ । निजजयश-त्रुपराजयलेखौ ॥ इमिकहि शर परदल मधिछाये । अगणित राक्षसमारि गिराये ॥ सबके बाणशरनसोंवारत । सबकेतनमधि शायक मारत ॥ द्रोण समान द्रोण सुत राज्यो । कालकराल सदृश ह्वै गाज्यो ॥ तेहि क्षणकरि निजजयबिधि शोधन । कह्यो शकुनिसों नृप दुर्योधन ॥ साठिहजार रथी सँगलैकै । जाहुपार्थ पहँ मन निर्भयकै ॥ कृपवृषसेन कर्ण कृतबर्मा । बिजय सुतापन अरु जयधर्मा ॥ शल्य पुरंजय जय दुःशासन । इन्द्रसेन दृढ़रथ

अरिनाशन ॥ नृपकमलाक्षनिकुम्भ पताकी । नीलसुदर्शन क्राथ सुसाकी ॥ नृप पुरुमित्र सुतापन राजा । कुम्भभेदि सहसैन समाजा ॥ धर्म भीमआदिकपहँ जाई । ममहित दुस्तरकरैंलराई ॥ बधि राक्षसन बिप्रजय लेइहि । सबपाण्डवनभूरि दुख देइहि ॥ तोसुत नृपको लहि अनुशासन । ते सिगरेभट करिसंभाषन ॥ हय गज रथी शत्रुदलघाती । अरुषट अयुत प्रमत्त पदाती ॥ बर्षत विशिख मारु यहि रटसों । भिरेजाय भीमादिक भटसों ॥ दोहा ॥ महाभयानक युद्धअति होत भयो सबठौर । भई रजनि कल्पान्तके प्रलयकालके डौर ॥ अश्वत्थामा द्रोणसुत अरु राक्षस भटउद्ध । कोपि शक्र प्रह्लादसम कीन्हों अद्भुत युद्ध ॥ सोरठा ॥ हन्यो भीम सुतरक्ष अश्वत्थामहि बाणदश । भिदितन सों द्विजदक्ष होतभयोकछु कस्मलित ॥ तोमर ॥ फिरि भीम सुवन प्रचारि । अति कठिन धनु टङ्कारि ॥ हनि अंजलिक शर डारि । धनु दियो द्विजको काटि ॥ तब विप्रगहि धनु आन । तकि भयो बर्षत बान ॥ असुराधिपातिहि अनेक । शर भयो हनत सटेक ॥ बधिअसुर योधा भूरि । महिरुण्ड मुण्डनपूरि ॥ गज तुरँग अगणित मारि । मोदत महिपै डारि ॥ जिमिशम्भु महिमा ऐन । बधि त्रिपुरकी सबसैन ॥ भेलसत तिमि तेहि ठौर । द्विजतनयभट शिरमौर ॥ दल आसुरी बलवान । अक्षौहिणीपरमान ॥ तहँ मर्दिगहि अवदात । असुरेश बधकोघात ॥ भो लसत भट उद्दण्ड । करि चक्रसम कोदण्ड ॥ तबभट घटोत्कच हेरि । सब राक्षसनसोंटेरि ॥ इमि भयोकरत पुकार । यहि बधोरे यहिबार ॥ सुनि सकल राक्षस बीर । करि घोरधुनि गम्भीर ॥ तकि तजत आयुध सर्ब । बढ़ि भये भिरत सगर्ब ॥ लहि रजनि निशिचर जाल । अति लसतभे विकराल ॥ दोहा ॥ द्रोणतनय तेहिकाल तजि दिव्यशरनके सेत । काटि काटि तिनके सकल आयुध बुद्धि निकेत ॥ बाधिडार अगणित असुर

घायल कियो अनेक। लखि लखि कोपितहवै असुर बढ़िबढ़ि भिरेसटेक॥सोरठा॥ तहँद्विजतनय सुवीर नृपअद्भुत विक्रमकियो। एक सुभट रणधीर लरो असंख्यन असुरसों॥ चौपाई॥ विप्रहि निजदल मर्दतदेखी। असुरघटोत्कच अतिशय तेखी॥ मलि करतल दसि रदछद रदसों। घनसम गरजि पूरिबल मदसों॥ शक्ति आठ घण्टायुत भारी। द्रोणतनय पहँ तज्यो प्रचारी॥ तेहि आवतलखि कूदियतनसों। अश्वत्थामाभट गहिपदसों॥ छांड़्यो फेरि घटोत्कचपाहीं। देखि घटोत्कच गुणि मनमाहीं॥ रथसों कूदि गयो बलवाना। परी सुरथपै शक्ति महाना॥ शक्तिप्रभाव दिव्यसों राजा। रथ भस्मितभो सहित समाजा॥ धृष्टद्युम्नके रथपर जाई। गरजो राक्षस धनुष चढ़ाई॥ अश्वत्थामहि अरिहि निहारी। लागोवर्षनबाण प्रचारी॥ धृष्टद्युम्न पाण्डव दलनायक। द्रोणतनयपहँ बरष्यो शायक॥ द्रोण तनय तेहिबहुशरमाख्यो। बहु नराच राक्षसहि प्रहाख्यो॥ तेहिक्षण तहां वृकोदर आयो। रथहजार सहओज बढ़ायो॥ षटहजार योधा हयसादी। भट गजरथ त्रयशत उनमादी॥ लैसँग आइगहे उतकर्षा। करत भयो अस्त्रनकी वर्षा॥ तेहि क्षण द्रोण तनय भट आरज। करत भयोतहँ अद्भुत कारज॥ मारुतसम सबहीसों भिरिकै। कीन्ह्योयुद्ध चक्र सम फिरिकै॥ दोहा॥ भीम घटोत्कच सैनपति सों लरिआड़ि सडौर। बध्यो असंख्यन सुभट गज हय तेहिक्षण तेहिठौर॥ सरिता शोणितकी सरस उमगिचलीं नृपतत्र। अश्वत्थामा कालसम लस्योकालजेहि यत्र॥ बहुशर मारिघटोत्कचहि हनि भीमहि बहुबाण। द्रुपद तनय भट सुरथकहँ करतभयो गतप्राण॥ सोरठा॥ भट शत्रुंजय नाम द्रुपदतनय तेहि बधि बहुरि। द्रोणतनय बलधाम बलानीकको बधकियो॥ गुरुतोमर॥ फिरि जयानीकहि मारिकै। बधि जयाहि महिपै डारिकै॥ भटश्रुतायुषको नासिकै। लखि

गर्जि बदन सहासिकै॥ यमदण्ड सम शर तानिकै। तकि मर्म थल अनुमानिकै॥ असुरेशकेहिय देतभो। भिदि असुरपति गत चेतभो॥ दोहा॥ मूर्च्छित देखि घटोत्कचहि धृष्टद्युम्न अनुमानि। रथचलाय कढ़ि दूरिगो अतिशय अनरथ जानि॥ महिखरी॥ इमि द्रोणसुत लहि परमजय अति मोद गहि गरजत भयो। सुनि पांडवन को हियोतजि दुखदुसहसों दरजत भयो॥ लखि आपुके सब सुवन नृप निज बिजय की गौरव गहे। सब सुभट इतके देखि अद्भुत कर्म्म बिप्रहि धनिकहे॥ सुर पितर ऋषि गन्धर्ब गण लखि तासु बिक्रममुदभरे। द्विज द्रोण सुवन उदग्र भटकी अति प्रशंसा सबकरे॥ जयदुंदुभी बजवाइ तौसुत भूप गर्बित मुदभयो। इमि सुभट सबलरिपांडवन सों लेहु जय शासनदयो॥ दोहा॥ घोरयुद्ध तेहिक्षण मचो कहँ कहांलोंभूप। रुण्डमुण्डसों मेदिनीभई भयानकरूप॥ सोरठा॥ रहे अभय तेहि याम अभय किये घनश्याम ज्यहि। प्रभुमूरतिको धाम जासु हियो अभिराम अति॥

इतिमहाभारतदर्पणेद्रोणपर्बणिरात्रियुद्धबर्णनोनामदशमोऽध्यायः १०॥

दोहा॥ चौथेदिनके रजनिमधि तदनु भयो जिमियुद्ध। सो सुनु हे भूपालमणि मनकरि अचपल शुद्ध॥ द्रोणतनयको जय अजय भीमतनयको देखि। कुन्तिभोज अरु द्रुपदके पुत्रनको बध पेखि॥ सोरठा॥ भीम सात्वकिहि आदि सुभट उतैके क्रोधअति। गहिगाहिगर्ब प्रमादि भिरे इतैके भटन सों॥ चौपाई॥ भो अति घोरयुद्ध तेहिपलमें। गिरे असंख्यन भट दुहुंदलमें॥ सोमदत्त सात्वकि कहँ देखी। शर बरष्यो निजप्रण अवरेखी॥ भीम सात्वकी के जयकारण। नृपहि हन्योदश शरप्रणबारण॥ सोमदत्ततेहि शतशर माख्यो। अगणित शर सात्वकि पहँ डाख्यो॥ सात्वकि तेहि सत्रह शर हानिकै। माख्यो शक्तिभागुमति भानिकै॥ माख्यो परिघ भीमरिस पागो। सोनृपके मूरध मधि

लागो ॥ सात्वकि हन्यो बाण बरज्वैकै। भूप गिरो तव मूर्च्छित ह्वैकै ॥ सोमदत्तकहँ मूर्च्छितलखिकै। भिरो भूप बाह्लीक बिलखिकै ॥ भीम सात्वकिपहँ सो राजा। वर्षो अविरल विशिख समाजा ॥ काटि असंख्यन शर रणपतिके। भीमहन्यो नवशर अयअतिके॥ तब बाह्लीक शक्तिवर गहिकै। मारत भयोभागु मतिकहिकै ॥ तासों भिदि ह्वै क्षणक अचेतन। चेति भीमबल बुद्धि निकेतन ॥ गर्जि भूप बाह्लिकहि प्रचारी । मारत भयो गदा अतिभारी ॥ लागि बज्रसम सोअरि खेदन । करतभयो नृपको शिर छेदन ॥ नृप बाह्लीक गिरो महिपाहीं। भो हाहा धुनि ममदलमाहीं ॥ सो लखि तो दशसुत भटनायक । भिरे भीम सों वर्षत शायक ॥ दोहा ॥ नागदत्त दृढ़रथ बिरज दृढ़ सुहस्तरणधीर। वीरबाहु उग्रज अजय अयभुज प्रमथसुवीर॥ ये सिगरे भिरि भीमसों कियो घोर संग्राम। क्रमसोंक्षणमें बधि तिन्हैं भीम दयो यमधाम ॥ सोरठा ॥ तब वृकरथ रणधीरसूतज भ्राता कर्णको। हन्यो भीमकहँ तीर भीम तुरित तेहि बधतभो ॥ चौपाई ॥ सोलखि शकुनि भूप के योधा। रथीसाथ कीन्हों अवरोधा ॥ भीमसेन अति रिसगहि मनमें। तिनकहँ बधत भयो तेहि क्षनमें ॥ सोलखिपांच शकुनि के भ्राता । विभुगवाक्षशात चन्द्र बिख्याता ॥ शरभ महारथ भटनरनायक। भिरे भीमसों बर्षत शायक ॥ भीमवर्षि शर करि चखराते । पांच शरन सों तिन्हैं निपाते ॥ यहि विधि भीम बिरचितेहि पलमें । प्रलय काल रोप्यो मम दलमें ॥ तेहि विधि कोपि युधिष्ठिर राजा। बध्यो असंख्यन सैन समाजा ॥ धर्महि निजदल मर्दतदेखी। द्रोणाचारय अतिशय तेखी ॥ शर बायव्य भूपपहँ डारचो। दिव्य अस्त्रसों तेहिनृप वारयो ॥ बारुण याम्य त्वाष्ट्र आग्नेया। अरु सावित्रि सुअस्त्र अमेया ॥ क्रमसों नृपपहँ तज्यो अचारय। तहँ नृप कीन्हों अद्भुत कारय ॥ तजितजि दिव्य बाण

नरनायक । व्यर्थ किये सब द्विजके शायक ॥ तब आचारयत-
ज्यो प्रचारी । प्राजापत्य अस्त्र अतिभारी ॥ तब माहेन्द्रअस्त्र
तजि भूपा । व्यर्थ कियो सो अस्त्र अनूपा ॥ निज सब दिव्य
अस्त्रलखि निष्फल । करि अतिकोप अचारय अतिबल ॥ धर्म
भूपको बध अनुमानी । डार्यो ब्रह्म अस्त्र अतिआनी ॥ दोहा ॥
ब्रह्मअस्त्रसों धर्मनृप व्यर्थ कियो तेहि तत्र । तब बिचारितजि
नृपहि द्विज चलो द्रुपदहेयत्र ॥ पाञ्चालन मर्दत द्विजहि जात
द्रुपद पहँ देखि । बर्षत शर आड़त भये भीम पार्थ अवरेखि ॥
सोरठा ॥ किये घोर संग्राम तेहिक्षण युगदिशिके सुभट । उमगत
भई अक्षाम शोणितकी सरिताभयद ॥ रोला ॥ पांडवनसों देखि
मर्दित सैन निज अनखाय । कर्णसों इमि कहतभो तो तनय
कुरुकुलराय ॥ मित्रबत्सल मित्रउद्भट मित्रका उपकार । करत
जेहि दिन आजुहै यह समय तौन अपार ॥ प्रबल पांडवदलत
ममदल करौ रक्षण तासु । लहैं जाते विजय हम तिमिकरौ
बिक्रमआसु ॥ भूप के सुनि बचन बोलो कर्ण सगरब बैन ।
भूप चिन्ता करहुमति हम वधब सब अरिसैन ॥ बधब हमअ-
र्जुनहि ताते हारि पांडवसर्ब । भागि बसिहैं जाय बनमें दीनह्वै
तजिगर्ब ॥ जीति सब पांचाल्ल केकय भटनके समुदाय । देउँगो
तो सुबश करि सब भूमि अरिन नशाय ॥ कर्णके सुनि बचन
बोले कृपाचार्य रिसाय । सत्यसत्य सुबचन जो तुम कहत कर्ण
बनाय ॥ भरे बिक्रम बचन तो सुनि परत नृपके पास । पार्थ के
ढिग परतनहिं लखि कछू बिक्रम आस ॥ लयेगहि गन्धर्बगण
कुरुपतिहि तब तेहि ठौर । गउन हेतु बिराट पुरमें भयो संगम
और ॥ तहां तुम जिमि पार्थसों जयलह्यो तौन बिख्यात । तऊ
तुम तजि लाज फिरि फिरि कहत ऐसी बात ॥ शरद के घन
यथा गर्जत बहुत बर्षत थोर । तथा थोरो कर्ण तुम बहुकहत
मनके जोर ॥ तुम्हैं गर्जब होत दुर्लभ निकट पार्थहि जोहि ।

कहत मिथ्याभूपके ढिग कर्ण उचित न तोहि ॥ कर्ण सुनिये
वचन कृप के कह्यो गर्जव मोर । घोर वर्षा समयके घन गर्ज
सम नहिं ओर ॥ कहतहौं फिरि जीति परदल फाल्गुण कहँ
मारि । भूप के वश करोंगो महि सकल सम्पति भारि ॥ कर्ण
के ये वचन सुनिकै कह्यो कृप द्विजराज । मोहिं होति प्रतीति
नहिंगुणि सधिहि नहिं यह काज ॥ सर्वगुणसों पूर्ण अतिशय
धर्मशील सुजान । विगत दूषण नीति युत सर्वज्ञ नम्रमहान ॥
प्रबलउद्भट सहित बन्धुन धर्मनृप जगजैन । तासु संग सहाय
कर्त्ता कृष्ण महिमा ऐन ॥ भूप द्रुपद विराट केकय अधिप
सह परिवार । परम धनुधर जासु सँग रहि करतयुद्ध विहार ॥
भट घटोत्कच आदि अगणित सुभट विदित अमान । जासु
अनुचर सकै ताकहँ जीतको बलवान ॥ नृप युधिष्ठिर धर्म में
बरभीम बलमें श्रेष्ठ । पार्थ धनुमें तथा तुम बहुबचन कहत
यथेष्ठ ॥ शम्भु शक्रादिक सुरनसों लहेअस्त्र अशीस । पार्थ
तेहि तुम बधन भाषत झूठ विस्वेबीस ॥ वचन यहसुनि अ-
रुण चखकरि कर्णबोलो क्षिप्र । पाण्डुसुत सबप्रबल हैं तुम स-
त्यभाषत विप्र ॥ शक्रदीन्हों मोहिं शक्ति अमोघताहि प्रहारि ।
लखत सबकेपार्थ कहँ बधि तुरित देहौं डारि । पार्थबिनु ह्वै
विकल पाण्डव सकलसाहस त्यागि । जाय बसिहैं विपिनमें
सहसेन रणतजि भागि ॥ लहि अकण्टक भूमि करिहैं भोग
कुरुकुलचन्द । कहत हैं हमसत्य यह है वृद्ध द्विज मतिमन्द ॥
पाण्डवनके नेहवश तुम कहत ऐसेबैन । शत्रु विक्रम बरणिभय
युतकरत नृपकीसैन ॥ अरेदुर्मति वचन ऐसे कहैगो जो फेरि ।
काटिहौं तौ जीभतेरी कहतहौं यहटेरि ॥ कर्णके ये बचन सुनिकै
द्रोणसुत अनखाय । काढ़िकै तरवारि तापैचलो कहत अघाय ॥
वृद्धमानी मान्यसबको धनुष बरविख्यात । सुनै वचन प्रलाप
तेरो कह्योसत्य सुबात ॥ तौन सुनितू बचन अतिकटुकहं जौरिस

धारि।खड्गसों तौशीशतेरो काटिदेहौंडारि ॥ कहतऐसे सूतसुत पहँ द्विजहिजात निरेखि । भयोबारत बिनय करितो तनय नृप अवरेखि ॥द्रोणसुत इमिकह्यो नृपके कहेछांड़त तोहि । फाल्गुण यहिवचनको फल अवशि देहैजोहि ॥दोहा॥ यहप्रपंच लखिसन्धिगुणि पाण्डव उतसोंटूटि । आइ तहां लागे लरन प्रतिसुभटनसों जूटि ॥ तिन सब सों भिरिकै तहां सूतज बीरअमान । करषि धनुष शायक बरषि कियो घोर घमसान ॥ सोरठा ॥ तहँ सूतजहि निहारि पाण्डव अरु पांचाल गण । बध बिचारिप्रण धारि घनेबाण बरषतभये ॥ चौपाई ॥ यह अनरथको मूलमहाना । बधौ याहिहनि शक्तिकृपाना ॥ इमि कहिकहि उतके भट नायक । भिरे कर्णसों बर्षत शायक ॥ तिनसों भिरो सूतसुत तैसे । तेज बायु वृक्षनसों जैसे ॥ एक कर्ण अगणित भट गण सों । अद्भुत युद्ध कियो अति प्रणसों ॥ दुर्योधन नृपको हितकारी । कर्णप्रसिद्ध दुसह रणचारी ॥ असुर सैन मधि शक्र समाना । परदल माधिभो लसत अमाना ॥ काटि असंख्यन शर सबहीके । बरष्यो शायक शोषक जीके ॥ अगणित पैदर रथी सँहारे । अगणित हयसादिन बधि डारे ॥ अगणितकेशिर छेदनकीन्हें । काटि असंख्यन कर पग दीन्हें ॥ अगणितधनुष केतु रथ छेदे । अगणित योधनके हियभेदे ॥ अगणितहयगज मारि गिराये । शोणितकी सरिता उमगाये॥इमि मर्दितह्वैयोधा उतके । भगे छोड़ि सँग हितपितु सुतके ॥ पारथ निजदल विचलत देखी । चलो कर्णपै अतिशय तेखी ॥ धनु कर्षतघन सदृश ननर्दत । शर बर्षत ममसेना मर्दत ॥ पार्थहि जातकर्ण पहँ पेखी । दुर्योधन भूपति अवरेखी ॥ कह्यो द्रोणसुतसों यहि भावै । पार्थकर्णकहँ बधन न पावै ॥ दोहा ॥ सो सुनिकै सुतद्रोण को कृप अरु शल्य नरेश । अरु हार्दिक्य ससैनये चलतभये तेहि देश ॥ पांचालन सह फाल्गुण महाबेगसों जाय । धीर

धनुर्द्धर कर्णपहँ देतभयो शरछाय ॥ सोरठा ॥ कर्ण विदित बानैत पारथपै बरषो बिशिख । दोऊ भट अमनैत घोरयुद्ध कीन्हों तहां ॥ चौपाई ॥ दोऊभट धनुविधिमें पूरे । काटे अगणित शायक क्रूरे ॥ दोऊअगणित शरकेसैरी । अरुप्रसिद्ध नितिकेअति बैरी ॥ अगणितबाण शरासनकरषे । अविरल बाण परस्परबरषे ॥ काटि पार्थके बहुशर नोखे । मारेकर्ण तीनिशर चोखे ॥ जौं लगि तीनि बाणसों मारो । तौलगि पारथ तीस प्रहारो ॥ बहु शर काटि अरुणकरि ईक्षण । हन्यो वाम करमें शर तीक्षण ॥ लागत बाण कर्णके करसों । गिरो धनुष सबपूरे डरसों ॥ तुरतहिकर्ण धनुषसों गहिकै । बर्षोविशिख खरोरहु कहिकै ॥ दोऊ अद्भुत धनुविधि लीन्हें । भूपति घोरयुद्ध तहँ कीन्हें ॥ पार्थ अपूरब धनुविधि ठाट्यो । शरसों धनुष कर्णको काट्यो ॥ घोरन बधे मारिशर चारी । सूतहि हन्यो सुबाण प्रहारी ॥ विधनु विरथ करि गरजि प्रचारो । शायकचारि तासुतन मारो ॥ तब सूतज डरि निजरथ तजिकै । गोकृपके रथपै अतिलजिकै ॥ सूत सुवनकी दशा निहारी । ममभट विचले गर्व बिसारी ॥ निजदल विचलत लखि दुर्योधन । इमि कहि कहि कीन्हों अवरोधन ॥ फिरहु फिरहु सबभीति बिहाई । क्षत्रिहि नहिंचाहत कदराई ॥ दोहा ॥ देखो ममविक्रम विशद सबसों कहत पुकारि । बर्षिबाण बधिपार्थकहँ देहौंमहिपैडारि ॥ इमिकहि भूपतिक्रोध वश दीहधनुष टंकारि । सदल पार्थपहँ चलतभो शरवर्षत प्रणधारि ॥ महाक्रोध वश पार्थपहँ भूपति जात निरेखि । अश्वत्थामासों कह्यो कृपाचार्य अवरेखि ॥ सोरठा ॥ अमरष वश भूपाल जात धनंजयसों लरन । अब न बचिहि यहिकाल ताते जान न देउयहि ॥ चौपाई ॥ कृपाचार्य के सुनि ये बैन । अश्वत्थामा बलबुधिऐन ॥ जायभूपसों कह्योबुझाय । जीवतहमैं सुनो कुरुराय ॥ तुमकहँ उचित न करिबोयुद्ध । हममारि तुम्हैं

देव जयशुद्ध ॥ तुम रहिखरे लखौरणरंग । मैं लरिकरत पार्थ बलभंग ॥ यहसुनि दुर्योधन क्षितिपाल । कह्यो बिप्रसों बचन रसाल ॥ ममशत्रुनकहँ द्रोणाचार्य्य । पुत्र सदृश रक्षतहेआर्य्य॥ तुमहूँ तिन्हैं बंधुप्रिय जानि । करतसदारक्षण अनुमानि ॥ यह मम मन्दभाग्यकोकर्म । कैलघुभो तो बिक्रमपर्म ॥ मोहिं युद्ध कहँ धिक्जोहि काज । मरत असंख्यन सैन समाज ॥ को ऐसी सीखे धनुरीति । जेहि न सकौ पितुसह तुमजीति ॥ जो मोहिं लरन जाननहिं देत । तौ करिकृपा सुजयके हेत ॥ करिबर बिक्रम निज अनुरूप । मोहिं देहु तुमबिजय अनूप ॥ यह सुनि द्रोणतनय बलधाम । कह्यो भूपसों बचन ललाम ॥ नृप तुम कह्यो सत्य यहबात । वै मम कृपापात्र अवदात ॥ तबहूँ यथा शक्ति व्यवसाय । करत युद्ध सबनेह भुलाय ॥ रणमेंकरतकृपा नहिंनेक । चाहत उन्हैं बधन गहिटेक ॥ दोहा ॥ शक्र असुर गन्धर्व सों पाण्डव बधन न योग । अतिबिक्रमी प्रसिद्धवै शीक्षक शस्त्र प्रयोग ॥ अगणित योधा बधब हम बाण बरषि यहि याम । बिकल करब सब पाण्डवन लखो भूप बलधाम॥ सोरठा॥ द्रोणतनय बलधाम इमि कहितोसुत भूपसों । बरषत शर अभिराम चलोपाण्डवी सैनपर ॥ चौपाई ॥ जे कैकय पांचाल सुबीरा । तिनसों टेरिकह्यो रणधीरा॥लरोआय मोसों सबयोधा॥ सोसुनि सब कीन्हीं अवरोधा ॥ बारिद बारिधार जिमि बर्षत। तिमि सबबर्षत भेधनुकर्षत ॥ तहांबिप्र बिक्रम बिस्तार्‍यो। दश पांचाल रथी बधिडार्‍यो॥ बधि अगणित पैदर हयसादी। गर्जो ब्राह्मण प्रबल प्रमादी ॥ तेहिक्षण धृष्टद्युम्न रणचारी । चलो बिप्रपहँ धनुटंकारी ॥ शतसह शूर सुभट सँगलीन्हें । द्रुपदतनय अतिगौरव कीन्हें ॥ द्रोणतनय सों कह्यो प्रचारी । मति हत नरबधुद्विज अबिचारी ॥ शूरहोसि तौ मोसों भिरिकै। धीरयुद्ध करु इक्षण थिरिकै ॥ इमिकहि कोपिअरुण करिईक्षण।

हन्यो बिप्रकहँ बहुशर तीक्षण ॥ तिनसों भिदि द्विजसुवन सो-
हायो। कह्यो भूपसुतसों मनभायो ॥ धृष्टद्युम्न सम्मुख थिरु
तौलों। भेजों तोहिंकालपुर जौलों ॥ इमि कहि काठिन शरासन
करष्यो। धृष्टद्युम्नपहँ शायक बरष्यो ॥ काटि असंख्यन शायक
तासू। धृष्टद्युम्न बोलतभोआसू ॥ हेद्विज सुनु यह ममप्रण भा-
री। बधौंसपितु तोहिं तौ धनुधारी ॥ तजि द्विजधर्म क्षत्रगुण
धारे। तेहि गुणआजु जाततुम मारे ॥ दोहा ॥ दुर्योधनमें अ-
धिक अरु पाण्डवमें कमप्रीति। करतसपितु तुमतासुफल ल-
हिहौआजुसनीति ॥ यह सुनिकै अति क्रोधकरि थिररहु थिररहु
भाषि। धृष्टद्युम्नपहँ द्रोणसुत छायदयो शरनाषि ॥ सोरठा ॥
धृष्टद्युम्न रणधीर करलाघवकरि क्रोधगहि। बर्षोविशिख गँ-
भीर अश्वत्थामा बीरपहँ ॥ चौपाई ॥ दोऊकरि विक्रमबहुताई।
करत भयेतहँ तुमुल लराई ॥ बिबिध भांति बाणनकी बर्षा।
करतभये गहि गहि उत्कर्षा ॥ अगणित बाण बाणसों दोऊ।
दीन्हों काटि लखे सबकोऊ ॥ दोऊ भटवर दोउन पाहीं। छाय
दये शर सबदिशि माहीं ॥ लखि तिनको विक्रम तेहिक्षनमें।
भयेप्रशंसित सुरगणमनमें ॥ दोऊचढ़े वीररस चावन। लहे
मुहूर्त्त एक समभावन ॥ तदनु द्रोणसुत थिरु थिरु भनिकै।
काट्योतासु धनुष शरहनिकै ॥ ध्वजअरु छत्रहि काटिगिरायो।
सूतहिबधि यमलोक पठायो ॥ बधि तुरंग यमपुरगत कीन्हों।
अगणित भटन कालपुर दीन्हो ॥ धृष्टद्युम्न सों जयलहिऐसो।
बिलसो तहां बिप्र सुत तैसो ॥ मत्तमतंगहि बधि मृगराजा।
जेहि बिधि मर्दै द्विरद समाजा ॥ द्रोण तनय सों मर्दितह्वैकै।
भगो तासुदल भयसों ग्वैकै ॥ धृष्टद्युम्नकी दशानिरेखी। पांचा-
लनकहँ बिचलत देखी ॥ धर्म भूप भीमादिक योधा। कियेद्रो-
ण सुतको अवरोधा ॥ सो लखि दुर्योधन कुलनायक। सदल
भिरतभो बर्षत शायक ॥ महाराज सुनिये तेहि पलमें। घोर

युद्धमाचो वहि थलमें ॥ दोहा ॥ भीम आरजुन तेहिसमय अवि-
रल शायक छाय । बधि हय गजभट रुधिरकी नदीदई उमँ-
गाय ॥ तथाद्रोण उतशरनको दुरदिन करि हे भूप । बधिअग-
णितभट मेदिनिहि कियो भयानक रूप ॥ सोरठा ॥ महाघोर
संग्राम मध्य सोमदत्तहि निरखि । सात्वकि भट बलधाम भिरत
भयो अति बेगसों ॥ तोमर ॥ लखि सात्वकिहि कुलदीप । भट
सोमदत्त महीप ॥ ह्वै चपलदर्प बढ़ाय । भोदेत शायकछाय॥
भट सात्वकिहु रणधीर । भोतजत अविरलतीर ॥ नृपसोमदत्त
अमान । तेहि हन्यो साठि सुबान ॥ भट सात्वकी औ ताहि ।
बहुबाण मारे चाहि ॥ भरि रुधिर सों सबगात । भे उभयबीर
बिभात ॥ रथफेरि सब दिशिघूमि । शरवृष्टि कीन्हींभूमि ॥ तब
सोमदत्तनरेश । हनिशर क्षुरप्र सुभेश ॥ धनुकाटि दीन्होतासु ।
तब आन धनुगहि आसु ॥ भट सात्वकी अनखाय । तकिबर-
षि बाण सचाय ॥ नृप सोमदत्तहि डाटि।शर मारिकै धनुकाटि॥
फिरि मारि तीक्षण पत्र । तकिकाटि दीन्हों छत्र ॥ फिरि धनुष
गहि अवनीश । तेहि हने बाण पचीश ॥ तब नृपहि भीमउद-
ण्ड । भो हनत दशशार चण्ड ॥ नृप सोमदत्त सटेक । तेहिहने
बाण अनेक ॥ तब सात्वकी सहजोर । भो तजत परिघ कठोर॥
दोहा ॥ सोमदत्त नृप सो परिघ काट्यो हनि शर चण्ड । फिरि
सात्वकि काटत भयो भूपति को कोदण्ड ॥ नृपके रथके तुरँग
सब बधेचारिहनि बान । फेरि बधतभो सारथिहि सात्वकिबीर
अमान ॥ पुरुषसिंह सात्वकिं बहुरिबाण बज्रसम मारि । सोम-
दत्त भूपतिहि बधि दीन्हों महिपै डारि ॥ सोमदत्त बाह्लीक
सुत कोबध लखि तेहिकाल । चले सात्वकी पहँ गरजि इतके
सुभट कराल ॥ सोरठा ॥ तेहिक्षणधर्मनरेश द्रोण चमू मर्दतभयो।
सो लखि द्रोण सुभेश भिरो युधिष्ठिर भूप सों ॥ चौपाई ॥ पांच
बाण अतिशय अनियारे । द्रोण युधिष्ठिर नृपकहँ मारे ॥ धर्म

गंचशर द्विजहि प्रहार्यो । तब द्विज अति विक्रम विस्तार्यो ॥ नारिमारि युग शायक चोखे । काट्यो नृपके ध्वजधनुनोखे ॥ तुरेत और धनुगहि नरनायक । हन्यो द्रोण कहँ अगणित शायक ॥ तिन बाणनसों बेधित ह्वैकै । मूर्च्छिचेति फिरि इत उत ज्वैकै ॥ द्रोणअस्त्र बायव्य सँचार्यो । दिव्य अस्त्रसों नृप तेहि वार्यो ॥ बहुरिभूप हनिबाण उदण्डहि । काट्यो द्विजवरके कोदण्डहि ॥ तब द्विजराज और धनुगहिकै । बरषो विशिखभागु मतिकहिकै ॥ तेहिक्षण बासुदेव हितकारी । धर्म नृपतिसों कह्यो विचारी ॥ तुम मतिलरहु द्रोण सों राजा । दुर्योधन पहँ जाहु समाजा ॥ भूपहि उचित भूप सों लरिबो । लरब और सों अनुचित करिबो ॥ चाहत तुमकहँ गहन अचारय । तातें तासों भिरो न आरय ॥ सुनि विचारिपांडवक्षितिपालक । गो जहँ रहो भीम अरिघालक ॥ द्रोणाचार्य्य वीररस पागो । पांचालन कहँ मर्दन लागो ॥ तथा भीम अर्जुन धनुधारी । बहु भट किये गगनपथ चारी ॥ तिमि इत उतके योधा भिरिकै । घोरयुद्ध कीन्हों तहँ थिरिकै ॥ दोहा ॥ इविधि घोरसंगर मचो अस्तभयो शशिनाथ । पूरिगयो तम नहिं परै निरखि पसारे हाथ ॥ तब निजनिज दिशिदेत भे शासन उभय नरेश । पैदर सबै प्रदीप गहि खरेहोहिं सबदेश ॥ सुनि शासन रणपतिनके सब पैदर समुदाय । गहिगहि चारुप्रदीप भे खरेचारुताछाय ॥ रथप्रति पांचप्रदीप अरु गजप्रति तीनि मशाल । मम दिशि प्रति हय भे ज्वलित एक मशाल विशाल ॥ दश प्रदीप प्रति रथ इतै गजन गजनप्रति सात । दोय दोय प्रति हयउतै भये प्रदीप बिभात ॥ महिखरी ॥ अति शुचि सुगन्धित तैल भाजन एककर लीन्हें भरे । मणिमये मंजु मशाल प्रज्वालित एककर लीन्हें खरे ॥ प्रति तुरँग रथगजसकल दिशिरहिचपल थिर सबगति धरे । दुहुंओरपैदर सुभट अगणित लसे छविअनुपम

करे ॥ मणिमुकुट भूषण आयुधन मधिदीप अगणित लखिपरे। प्रतिबिम्बप्रति प्रतिबिम्बतिनमें बिबिध बिधि अगणितअरे ॥ तहँ भई प्रगटितदुहूंदल मधिपरमअनुपम छबिनई। रहिचपल कइक हजार चपला नचति मनु सब्बदिशिभई॥ दोहा ॥ तिमि नभपै गन्धर्बसुर किन्नर यक्षसमस्त । पूरि सनेह सुसौरभित गहे प्रदीप प्रशस्त ॥ बेधित ह्वै ह्वै शूरतन तजि चढ़ि दिब्य प्रमान । महि तजिऊरध जात बहु पूरत प्रभामहान ॥ नभते सुर गन्धर्बगण तहँ आवत हित मानि । नृपताते महिदिव परो एक नगर समजानि ॥ सोरठा ॥ महि नभ भरो प्रदीप लसत भयो तेहि निशि तहां । मनुमधि जम्बूद्वीप लगी अग्नि कल-पान्तकी ॥ तामधि कृष्ण कृपाल उत्पति पालन प्रलय कृत । कौतुक करत बिशाल निज भक्तनके तरणहित ॥

इतिद्रोणपर्बणिचतुर्थदिनगतेरात्रियुद्धेप्रदीपप्रकल्पनोनामएकादशोध्यायः

दोहा ॥ उभय भूप निजनिज दलन बहु प्रदीप बरवाय । बहुरि जूटि लागे लरन जय दुन्दुभि बजवाय ॥ चौपाई ॥ अति-शय घोर युद्ध तेहि निशिमें । मचो मढ़ी अति धुनि दुहुँदिशि में ॥ तेहि क्षण पारथ धनुटंकारत । अगणित हय गज भट बधिडारत ॥ ह्वै अतिप्रबल धसो ममदलमें । प्रलयकाल पूरत सब थलमें ॥ सो लखि इतके भट दृढ़घायक । कर्ण विकर्ण शल्य नरनायक ॥ द्रोणाचार्यहिं रक्षत बिधि सों । तासों भिरे भटनकी अधिसों ॥ जुटि इतउतके भट बलधामा । कीन्हों तहां घोर संग्रामा ॥ मचो रउद्रयुद्ध तेहि पलमें । मरे असं-ख्यनभट दुहुँदलमें ॥ धर्म महीपालकतेहि क्षनमें । कह्योभटन सों इमि गुणिमनमें ॥ द्रोणहि जायबधौ तेहि लरिकै । सोसुनि सुभटचले प्रणधरिकै ॥ सो लखिकै इतके सबयोधा । बढ़ितिन को कीन्हों अवरोधा ॥ भिरो युधिष्ठिर सों कृतबर्म्मा । सात्यकि सों भट भूरि अभर्म्मा ॥ आड्यो कर्णबीर सहदेवहि । तोसुत

भूप भीम वर भेवहि ॥ भिरो नकुलसों शकुनि सुवीरा । भिरो शिखंडी सों कृत वीरा ॥ भट प्रतिविंध्यहि करषि शरासन । आड़तभयोवीर दुःशासन ॥ असुरघटोत्कच अतिबलधामा । तेहि आड़तभो अश्वत्थामा ॥ जातद्रोणपहँ द्रुपद्नसेना । तेहिआड़तभोभट वृषसेना ॥ दोहा ॥ नृप विराटसों भिरतभो शल्यभूप सहसैन । शतानीकसोंभिरतभो चित्रसेनअरिजैन ॥ भिरोफाल्गुन वीरसोंआलम्बुष असुरेश । धृष्टद्युम्नसोंभिरतभो द्रोणभयानक भेश ॥ सोरठा ॥ इमिइत उतके वीरवृन्द हजारन जुटतभे । मचो युद्धगम्भीर महाराजतेहिक्षण तहां ॥ चौपाई ॥ बाणपचीस परम अनियारे । धर्म भूप कृतवर्महि मारे ॥ काटि भूपको धनुयुत पर्मा । मारो सात बाण कृतवर्मा ॥ धर्म भूप तव वर धनु गहिकै । दशशर हने भागु मति कहिकै ॥ फिरिशर मारि काटि धनुतासू । मारे ताहि पांचशर आसू ॥ तव सो भूप और धनु धारो । सत्तरि शर नृपधर्महि मारो ॥ धर्म कोपि मारो शर तीक्षण । सो कढ़िगयो बेधि भुज दक्षिण ॥ तेहि अन्तरमें धर्म अमाना । मारोकृतवर्महि बहुबाना ॥ तेहिक्षण कृतवर्मा वर धानुष । भूप करतभो काज अमानुष ॥ बर्षि असंख्यन शरवर धरके । काटि असंख्यन शरनर वरके ॥ विरथ विधनु धर्महि करि दीन्हों । तव नृपधर्म चर्म असिलीन्हों ॥ तव बहुभल्ल बाण हनि राजा । काटि दयोअसि चर्म ससाजा ॥ तव नृपधर्म्म शक्ति तजि डाट्यो । तेहिकृतवर्म्मा बीचहि काट्यो ॥ अगणित बाण भूपके तनमें । मारे कृतवर्म्मा तेहि क्षनमें ॥ तिन बाणन सों मर्दित ह्वैकै । भगो धर्मनृप धीरज ग्वैकै ॥ धर्महि जीति मुदितकरिपक्षण । लगो भूपभट द्रोणहिरक्षण ॥ भिरि सात्वकि सों कुरुकुल भूषण । भूरि करतभोयुद्ध अदूषण ॥ दोहा ॥ वरषि बरषि अगणित विशिख काटि मारिशर भारे । भूरि भूप सात्वकि किये घोरयुद्ध रिसपूरि ॥ शर क्षुरप्रसों भूरिको धनुवकाटि

सो बीर । गरजि सिंह सम हनतभो अतितीक्षण नवतीर ॥ कोपि तुरित गहि आन धनु भूरि भूपबलवान । मारिसात्वकि-हि तीनि शर धनुकाट्यो हनिबान ॥ सोरठा ॥ बिधनुसात्वकीबीर शक्तिहनतभो बज्रसम । लगे ताहि रणधीर भूरि गिरोगतप्राण ह्वै ॥ चौपाई ॥ भूरि नृपतिकहँ मरत निरेखी । अश्वत्थामाअति-शय तेखी ॥ गुणि भट सात्वकिको बध करिबो । चलोघटोत्क-चसों तजि लरिबो ॥ कह्यो घटोत्कच रिससों पगिकै । तजि मम निकट जात कित भगिकै ॥ आजुकालतो शिर चढ़िनाच-त । मोसों बिना बधो नहिं बाचत ॥ जियको लोभत्यागिलरु फिरिकै । करिमन भरि विक्रम मरु थिरिकै ॥ यहसुनिबिप्रफिर-तभो तैसे । सुनिगज गरज केशरी जैसे ॥ बीरअसुरगहिअति उतकर्षा । कियो द्रोण सुतपै शरबर्षा ॥ द्रोणतनयअतिगौरव लीन्हों । दुसहशरनको दुर्दिनकीन्हों ॥ दोऊअद्भुतबिधिधनुक-रषे । अगणित दिव्यअस्त्र बरबरषे ॥ दिव्यअस्त्र अस्त्रन सों लागैं । तिनसों कढ़ि फुलिंग बढ़ि जागैं ॥ दोऊबरषि दिव्यशर डाटे । दोऊ दिव्य शरन सों काटे ॥ दोऊ दुहुँन बाण बहुहनि हनि । अबमति भागुखरोरहु भनि भनि ॥ कीन्हें घोरयुद्ध तहँ राजा । लखिबिस्मित भे सुमनसमाजा ॥ तेहिक्षण असुरभीम सुत तुरमें । दशशरहन्यो विप्र केउरमें ॥ भिदितिनसों द्विज मूर्च्छितह्वैकै । क्षणक अचलरहिगो ध्वजज्वैकै ॥ बहुरिचेतिबर धनु टङ्कारो । बज्रसमान बाण तेहि मारो ॥ दोहा ॥ लागिघटो-त्कचके हिये बेधिगयो वह बान । मूर्च्छित ह्वै रथपैपरो भीम तनय बलवान ॥ सो लखि असुर सुसारथी रथलै भागोक्षिप्र । विजय पाय गर्जत भयो पुरुषसिंह भट बिप्र ॥ सोरठा ॥ भीमसेन कहँदेखि जात द्रोण पहँ सैनसब । दुर्योधन नृप तेखि भिरोस-दल वर्षत विशिख ॥ तोमर ॥ भट भीमसेन अमान । तेहिहन-तभो नवबान ॥ तो तनय भट अवनीश । तेहि हनतभो शर

बीश ॥ तेउभय सुभट सचाय । नभदिये शर सों छाय ॥ रचि बाण जाल गँभीर । लखिपरे ते युग बीर ॥ जिमिघने घनमधि भूप । शशिसूरलसत अनूप ॥ तो तनय बीर उदण्ड । तेहि हन्यो शर शर चण्ड ॥ तब भीम धनु विधि ठाटि । ध्वज धनुष नृपको काटि ॥ फिरि बाण नव्वेमारि । भो नदत धनु टंकारि ॥ गहि धनुष नृप रिसपूरि । भो बाण वर्षत भूरि ॥ तहँभीम नृपहि प्रचारि । बरबाण बाणन वारि ॥ करि सविधि धनुषकशीस । भो हनत बाण पचीस ॥ तब भूमिपति बलवान । हनि शर क्षुरप्र महान ॥ भट भीमकोधनु काटि । दशबाण मारयोडाटि ॥ तब भीमगहि धनु और । शर हन्यो सात सडौर ॥ तब भूप सोऊ चाप । भो काटि देत सदाप ॥ तबभीम गहिधनु आन । भो करत अति घमसान ॥ दोहा ॥ दुर्योधन काटतभयो सोऊ धनुष कठोर । इविधि पांचधनुभीमके काट्यो करि शरजोर ॥ विधनु भीम अति कोपकरि शक्तिचलायोटेरि । बाण मारितेहि बीचहीभूपति काट्योहेरि ॥ तब अतिगरुईगदा गहि मारयो भीम अमान । ताहि लगे हय सारथी होतभये गतप्रान ॥ सोरठा ॥ तब तो तनयनरेश गोनन्दक के सुरथ पै । नृपहिजात तेहि देश लख्यो न भीमादिक सुभट ॥ मरोभूप अनुमानि प्रबल भये उत सुभट सब । इतसब अनरथ जानि जीवनाशतजि तजि लरे ॥ चौपाई ॥ भिरि सहदेव कर्ण रणचारी । कीन्ह्यो घोरयुद्ध धनुधारी ॥ बाण अठारह अति अनियारे । सहदेव कोपि कर्ण कहँ मारे ॥ कर्णमारि शतशर सहदेवहि । धनु काट्यो हनि शर वरभेवहि ॥ तब सहदेव और धनुधारो । शायक बीस कर्णकहँ मारो ॥ कर्ण तासु शर हय वधिडारो । सूतहिबधिनहिंवचनपुकारो ॥ माद्रीसुवनचर्म असिलीन्हों । कर्णतिन्हैं दशधाकरि दीन्हों ॥ तबमाद्रीसुत गदा चलायो । ताहिसूतसुत काटि गिरायो ॥ पांडवतदनु शक्तितजिडाट्यो । तेहिराधेयबाण

हनिकाट्यो॥तबसहदेवचक्रगहिभारी।मारतभोसूतजहिंप्रचारी॥
सूतसुवन तेहि शतधाकीन्हों। लखिमाद्रीसुत अनरथचीन्हों॥
ईर्षादंड युवा ध्वजरूरे। कटेगजनके अंग अधूरे॥ मरेपरे हय
मानुष गाहिगहि। मारतभयो भागुमति कहिकहि॥ मारि मारि
अगणित शर तिनमें। कर्ण गिराइ दयो तेहिक्षनमें॥ तबमा-
द्रीसुत विस्मित ह्वैकै। त्यागो युद्ध प्रबल तेहि ज्वैकै॥ तब
हँसिकर्ण कहत भो थिरिकै। लरुनिज सदृशभटनसों भिरिकै॥
मोसों आइ भिरो तू भोरे। अबजाभागि पार्थके धोरे॥ दोहा॥
गुणि कुन्तीको वचन नहिं बधत तोहिं यहि याम। इमिकहिकै
पांचाल दल बधन लगो बलधाम॥ कर्ण बलीके बाकशर सों
पीड़ित सहदेव। जनमेजय पांचालकेरथपै गयोसुभेव॥सोरठा॥
कियो घोर घमसान शल्य बिराट नरेशतिमि। दोऊ प्रबलअ-
मान दोऊ भूपति विदितभट॥ चौपाई॥ बलिबासव सम दोऊ
राजा। लरत भये भिरि साहित समाजा॥ तहांशल्य अतिवि-
क्रमं करिकै। क्षणमें अगणित शर परिहरिकै॥ बधि बिराट के
सूत सुघोरन। काट्यो केतुछत्र शर जोरन॥ ह्वैहत हयबिराट
नरनायक। जाय भूमिपै बर्षो शायक॥ सो लखि नृपबिराटको
भ्राता। शतानीक धनुधर विख्याता॥ सुरथ बढ़ायधनुषटंका-
रत। शल्य नृपति सों भिरो प्रचारत॥ शर वर्षत भिरि ओज
बढ़ाई। करत भयो सो तुमुल लराई॥ शल्य भूपकर लाघव
कीन्हों। शतानीककहँ यमपुरदीन्हों॥ सो लखिनृप बिराटचलि
पथपै। जातभयो भ्राताकेरथपै॥ अतिशय क्रोध शोकगहिमन
में। वर्षतभयोविशिख तेहिक्षनमें॥ लखिनृपशल्यक्रोधबिस्ता-
रो। ताहिय बाण बज्रसममारो॥ तासों भिदिनृपमूर्च्छितह्वैकै।
परो सुरथपै बिक्रमग्वैकै॥ सो लखिसूतसुरथलै भागो। शल्य
तासुदल मर्दनलागो॥ भगीफौजसो भयसोंभरिकै। बिनालरे
कोउ कोउकछुलरिकै॥ सोदलबिचलतलखि तेहिपलमें। चले

कृष्णपारथ तेहिथलमें ॥ लखिप्रचारि आलम्बुपयोधा। करत भयो तिनको अवरोधा॥ दोहा ॥ क्षणमहँ ताकहँकरि विधनु बिरथ विमुख तेहिठौर। चलो द्रोणपहँ पार्थभट वर्षत बिशिख सडौर॥ शतानीक सुत नकुलको बढ़ि मर्दत सबसैन। चलो भिरो तासों गरजि चित्रसेन बलऐन॥ दोऊ बर्षे दुहुँनपै शायक कइक हजार। दोऊ काटे दुहुँनके शरसमूह बहुबार॥ सोरठा ॥ दोऊ बीर अमान बाणहने तन दुहुँनके। दोऊ शर सन्धान करि काटे धनु दुहुँनके॥ चौपाई ॥ दोऊबीर धनुषधरि धरिकै। बाणनकी बर्षा करि करिकै॥ कीन्हींघोरयुद्ध तेहिक्षन में। जो लखि जन बिस्मित भे मनमें॥ शतानीक अति विक्रम कीन्हीं। नृपतौ सुतहि बिरथकरि दीन्हीं॥ तो सुत थिरि न सको तेहि थरपै। गोकृतवर्मा के रथबर पै॥ शतानीक यहि विधि जय लहिकै। लगो दलनदल गौरव गहिकै॥ द्रुपदहि जात निरखि जगजेना। आड़तभयो वीर वृषसेना॥ दोऊ भरे वीर रस हरषे। अबिरल बाण परस्पर बरषे॥ शायक साठि परम अनियारे। द्रुपद कोपि वृषसेनहि मारे॥ सूततनयको सुत दृढ़घायक। द्रुपदहि हन्यो अनगिने शायक॥ भिदे शरन सों अतिशय कोहे। सुभट शल्यकी समनेसोहे॥ कर्ण तनय सुभटनको शासी। द्रुपदहि मारोबाणनबासी॥ द्रुपद कोपि वृषसेनहिं डाट्यो। शरसों तासु शरासन काट्यो॥ तब धनु गहि वृषसेन अमाना। द्रुपदहि हन्यो बज्रसम बाना॥ सोशर लागि बेधि हियतासू। धस्योजाय धरणी मधि आसू॥ अति बेधित ह्वै द्रुपद महीपा। मूर्च्छिपरो रथपै कुलदीपा॥ सूत भूपतिहि मूर्च्छित ह्वैकै। भयो सुरथलै चिन्तितज्वैकै॥ दोहा ॥ इमिपांचाल महीपतिहि जीतिसूतसुतपुत्र। भो मर्दत पांचाल दल चाहि सुजय शुचि सुत्र॥ भिरि प्रतिविंध्य महीप अरु दुःशासन तेहि राति। घोरयुद्ध कीन्हों तहां अगणित भटन

निपाति ॥ सोरठा ॥ भूप शकुनि तोसार नकुल बीरसों भिरितहां कीन्हों युद्ध अपार बर्षि बिशिख बहुभांतिके ॥ चौपाई ॥ नकुल सुबीर अरुण करिईक्षण। नृपतिहि हन्यो साठिशर तीक्षण ॥ धनुध्वज काटि सारथिहि हतिकै। शकुनिहि हन्यो बाणरिस अतिकै ॥ लागि बेधिभूपति को हीया। धसो धरणि मधिशर कमनीया ॥ मूर्च्छि गिरत भो शकुनि सुराजा। भे हर्षित पर सुभट समाजा ॥ शकुनि भूपतिहि मूर्च्छित देखी। रथलै भगो सूत अवरेखी ॥ जीतिशकुनि कहँ नकुलननर्दत। चलो द्रोण पहँ ममदल मर्दत ॥ भिरो शिखण्डीसों अरिदरता। कृपाचार्य्य अद्भुत रणकरता ॥ शम्बरशक्र सदृशते भिरिकै। कीन्ह्यों घोर युद्ध तहँ थिरिकै ॥ दोऊ बिदित पुरुष पंचानन। गगन पूरि दीन्ह्यों बर बानन ॥ बाणन करि अगणित शर भगणित। दोऊ दुहुँन हनेशरअगणित ॥ कोपिशिखण्डी हनिशरचोखो। काटि दयो द्विजकोधनुनोखो ॥ तबकृपतज्यो शक्तिअतिचण्डी। काटिदियोतेहिबीर शिखण्डी ॥ गहिधनुआन बिप्रभटनायक। हन्यो शिखण्डिहि तीक्षण शायक ॥ भिदि तासों मूर्च्छित ह्वै सोई। परो सुरथपै बिक्रम गोई ॥ सुभट शिखण्डिहि मूर्च्छित लखिकै। सब पांचाल सुबीर बिलखिकै ॥ घेरि शिखण्डिहि रिससोंपागे। कृपपहँशायकबर्षणलागे ॥ दोहा ॥ सोलखिकैइतके सुभट कृपहि घेरि अनखाय। उतके सुभटन पहँलगे बर्षणशर समुदाय ॥ लहि निशीथ बेला बिकट मचोघोर संग्राम। उमँगि बहो सर रुधिर को सागर सरिस अक्षाम ॥ सोरठा ॥ मचोघोर संग्राम कर्षत धनु बर्षत बिशिख। धृष्टद्युम्न बलधाम चलो द्रोणपहँ गरजिकै ॥ गुरुतोमर ॥ सो मर्दि सुभटन जायकै। द्विज द्रोणपै शर छायकै ॥ शरपांच द्विजके गातमें। भोहनत चरि-धनु घातमें ॥ तब द्रोणधनुष कशीसकै। तेहिहने बाण पचीसकै ॥ फिरि भल्ल तीक्षण मारिकै। धनुदयो काटि प्रचारिकै ॥

सो धीर वरधनु धारिकै। वध विप्रके सो विचारिकै॥ शरपरम भीषम लायकै। भो तजत अति अनखायकै॥ तेहि कर्णबारह बानसों। भो काटिदेत सुठान सों॥ शर चारि मृतज टेरिकै। बहुबाण मार्‍यो हेरिकै॥ दोहा॥ अश्वत्थामा पांचशर हन्यो द्रोण शरपांच। शल्यहन्योनवबाणअरुशकुनिपांचनाराच॥दुर्योधन शर बीसअरु दुःशासनषटबान। धृष्टद्युम्नके तनहने भिरिभट सातअमान॥ इनसबकेअगणित विशिख काटिद्रुपदसुतवीर। सबके तनमें हनत भो तीनि तीनि वरतीर॥ सोरठा॥ तेहिक्षण धनुटङ्कारि भिरतभयो द्रुमसेनभट। धृष्टद्युम्न शर मारि बध्यो ताहिसबकेलखत॥ चौपाई॥ कर्णहिटेरि शत्रुदलनायक। काट्यो धनुष मारि वर शायक॥ तुरित और धनुगहि राधेया। बर्‍यो तापै बाण अमेया॥ तिमि षटरथी क्रोधसों पूरे। वर्षे तापहँ शायकरूरे॥ धृष्टद्युम्न अतिविक्रमकीन्हों। सबपैबाणजालरचि दीन्हों॥ सुनोभूमिपति तेहिथल माहीं। परीभीर अतिदलपति पाहीं॥ सो लखिकै सात्यकि भटगायो। वर्षतविशिख तुरितनहँ आयो॥ ताहिप्रचारिकर्ण बढ़ितुरमें।मारतभयोबाणदशउरमें॥ सात्यकि त्यहि दशशरहनि हेर्‍यो। अवमति कर्ण भागु इमि टेर्‍यो॥ सात्यकि कर्ण विदित धनुधारी। कीन्ह्यो तहांयुद्ध अति भारी॥ धनु टङ्कारनसों दिशिभारो। बाणन नभ छादितकरि डारो॥ काटि कर्णके बहु शर बानन। सात्यकि विदित पुरुष पंचानन॥ वज्रसमान बाणजय देनहिं। मारतभयो वीर वृष- सेनहिं॥ भिदि तासों वृषसेन अमाना। मूर्च्छित भयो विदित बलवाना॥ तेहिगत प्राण सूतसुत जानी। हने अनगिने शर अनुमानी॥ चेति सूतसुत को सुत क्षनमें। हन्यो बाण सात्व- किके तनमें॥ सात्यकि तिन्हें बाण बहु हनिहनि। काट्यो वि- शिख भागुमति भनि भनि॥ दोहा॥ पितापुत्र अति चपलते गहि गहि वरकोदण्ड। सात्यकि सुभट अमान पहँ वर्षे बाण

उदण्ड ॥ सात्वकि तिनपहँ करतभो शर दुर्दिन त्यहि काल । तुमुलयुद्ध कीन्हों तहां ते सबबीर बिशाल ॥ सोरठा ॥ यहि प्रकार भट सर्व रथी गजी पैदर सुभट । हयसादी गहिगर्ब घोरयुद्ध कीन्हों तहां ॥ रोला ॥ पार्थ तिमि गांडीवकी धुनि सकल दिशिमें पूरि । बर्षि शायक बधतहो सन्धान प्रतिभट भूरि ॥ घोरधुनि गाण्डीवकी सुनिकर्ण बीर बिचारि । कहतभो तौ तनय नृपसों कुशल हेतु निहारि ॥ मोहिंजानोपरतसुनि गांडीव को टङ्कार । आजु पारथ करत सब तो सैनको संहार ॥ रुद्रसम सो करत जेहिथल घोरयुद्ध बिहार । होतहै तेहि ठौर ममदल मध्यहाहाकार ॥ सकलपाण्डव प्रबल योधा गर्जिगर्जि सगर्ब । शरन ममदल मर्दि चाहत लेन बिजय अखर्ब ॥ गर्बगहि मम निकट आयो सात्वकी भट एक । घेरि यहि अभिमन्यु सम हम बधब आजु सटेक ॥ द्रोणके ढिग गयोतेहिबिधि धृष्टद्युम्न ससैन । जाहि बधिये उभयभट तौमिलै सुजय सचैन ॥ प्रबल प्रबलसुभटन भेजौ लरत पारथ यत्र । पार्थसों भिरि लरैं ते सब जाय सादर तत्र ॥ पार्थ जौलागि सुनै नाहिं इनयुग भटन को घेरि । भेजिकै यमपुरहि जययश लेहिं सबदिशिटेरि ॥ कर्ण को मत समुझि तोसुत शकुनिसों तेहि याम । कह्यो प्रबल सुसैन सह तहँ जाहुतुम बलधाम ॥ दश सहस सुरथी संगलै लैतितेद्विरद सवार । दुःप्रधर्षण दुर्विषह्यसुबाहुबीरअपार ॥ सुभट दुःशासन सहित तहँ जाहु जहँहै पार्थ । बचन यहसुनि शकुनिगो तहँ जानि बिजय यथार्थ ॥ सूतसुत तब सैन सह बाढ़ि सात्वकी कहँघेरि । लगे बर्षण बाण सात्वकि भागुमति इमिटेरि ॥ तुरँग सादी रथी इतके गजी भटसमुदाय । सात्वकी कहँ घेरि लागे देन शायक छाय ॥ घूमिसात्वकि चक्रसमकरि चक्रसमकोदण्ड । वर्षि शरभो बधत हय गज सुभटबीर उदण्ड ॥ शीश करपग शुण्ड धनुध्वज बाणशक्ति समूह । भयो

काटत सात्वकी तहँ वर्षि शायकजूह ॥ दोहा ॥ प्रतिरथ हयगज प्रतिभटन रचि अविरल शरसेतु । प्रलयकाल समपरत भो सात्वकि जययश हेतु ॥ त्यहिक्षण हाहाकार भो ममदल मधि तेहि ठौर । पीड़ित ह्वै ह्वै टरतभे सुभट त्यागि भटमौर ॥ सोरठा ॥ निजदलमर्दितदेखि दुर्योधन भूपालमणि । कह्यो सूतसोंतेखि चलु सात्वकि ढिग सुरथलै ॥ चौपाई ॥ सोसुनि सूत चपलकरि घोरे । गोरथलै सात्वकिके धोरे ॥ सात्वकि नृपहि देखि रिस धारो । अति तीक्षण द्वादश शरमारो ॥ भूपति कोपि अरुण करि ईक्षण । हन्यो सात्वकिहि दशशर तीक्षण ॥ तेहि थर इत उतकेभट गणसों । भूपति मचो युद्ध अति पणसों ॥ भट सात्वकि अरु नृप दुर्योधन । भिरि करिकरिवरधनुविधिशोधन ॥ छाय छाय शायक दुहुंदिशिमें । घोरयुद्ध कीन्हींत्यहि निशिमें ॥ सात्वकि करलाघव विस्तारो । असीवाण भूपतिकहँ मारो ॥ तुरगन वध्यो मारि बहुशायक । बधि सूतहि गर्ज्योंदृढ़घायक ॥ तऊभूप तेहि रथपै रहिकै । वर्षोविशिख क्रोधसों नहिकै ॥ नृपके तजे पांचशत बाना । काटि सात्वकी सुभट असाना ॥ अर्द्धचन्द्रसम शायक मारी । काट्यो नृपकोधनुष प्रचारी ॥ तबसो सुरथ त्यागि चलिरथपै । करतभयो अति युद्ध अकथपै ॥ सो इमि नृपहि पराजितकरिकै । मर्दत भयो सैनशर झरिकै ॥ जाइ पार्थ पहँ सहितसमाजा । युद्धकरतभो सौबलराजा ॥ रथीगजी हयसादी योधा । सुभटपार्थको करि अवरोधा ॥ गर्जि गर्जि अमरषसोंपूरे । लगेप्रहारण आयुधरूरे ॥ दोहा ॥ पारथधनुधर कोपितहँ अद्भुत धनु विधिठाटि । अगणितकरशर शीश पग डारिदेतभोकाटि ॥ सबआयुध प्रति भटनके काटि काटि हनि बाण । अगणितहयगजभटनकहँ करतभयोगतप्राण ॥ सोरठा ॥ सौबलबीर असान अरिदल मर्दन पार्थतेहि । मारिबीस बर बान रथ आरोहणि वाणशत ॥ चौपाई ॥ पार्थवीर अति रिस

गहि मनमें । हनिशर बीस शकुनिके तनमें ॥ बधि अगणित हय गज भटपलमें । प्रलयकाल रोप्यो तेहि थलमें ॥ कुण्डल कवच किरीट बिभाते । भूरिहार अंगद करिराते॥महिगतकिये पार्थ धनुधारी । बधि बहुभूपन बाणप्रहारी ॥ इमिबिक्रम करि रिसबिस्तारो । फेरि पांचशर शकुनिहि मारो ॥ सुवन उलूक शकुनिको ताही । पारथ हन्यो तीनिशर चाही ॥ भट उलूक तब अतिशय रोखो । हन्यो केशवहि शर अतिचोखो ॥ काटि शकुनिको धनुभट पारथ । बध्यो तुरँग सबगुणि निजस्वारथ॥ तब सौबलनृप निजरथ तजिकै । गोउलूकके रथपै लजिकै ॥ कै अतिप्रबल पार्थ रणचारी । मम दल मर्दत भयो प्रचारी॥ मर्दितह्वै अति भयसों पागे । त्यागि सुधीर बीर सब भागे॥ धृष्टद्युम्न द्विजबरसों भिरिकै । घोरयुद्ध कीन्ह्यों तहँ थिरिकै॥ शायक तीनि द्रोणकहँ हनिकै । काट्यो धनुषभागुमति भनिकै ॥ सादर द्रोण और धनु गहिकै। बर्षेबिशिख भागुमति कहिकै ॥ द्रोणहि आड़ि बर्षि बहुशायक। बध्यो असंख्यन भट दलनायक ॥ धृष्टद्युम्न सों मर्दित ह्वैकै । ममदल भगो भीतिसों ग्वैकै ॥ दोहा ॥ इमि भीमादिक सुभट मम भटन भगाय भगाय । भेबिलसत रणभूमि मधि शङ्ख बजाय बजाय ॥ इबिधि घोर संगरभयो तेहि रजनी मधिभूप । शोणित की सरिताबही महा भयानक रूप ॥ सोरठा ॥ उभय सैनकेबीच बैतरणी समसो लसी । मेद गूद तहँ कीच हय गज रथभट याद सम ॥ केशव जासु सहाय तासु पार सोई लहै । बिनुप्रभु कृपा सचाय कौन तरै सागर अगम ॥

इतिद्रोणपर्बणिचतुर्थदिनगतेरात्रियुद्धेद्वन्द्वयुद्धबर्णनोनामद्वादशोऽध्यायः ॥

दोहा ॥ प्रलय कराणि तेहि रजनिमधि बिचलत लखिनिज सैन । द्रोणकर्णसोंकहतभो दुर्योधन तजिचैन ॥ जयकरी ॥ तोबिक्रम केवलगहिमैंर । हम कीन्हों पांडव सों बैर ॥ सोतुम बि-

क्रम निजअनुरूप । करत न ममहित हेतुअनूप ॥ जोहमतुम्हैं त्याज्य यहिठौर । तौ तिमिलशौ रुचै जेहिडौर ॥ जोहम तुम्हैं त्याज्य नहिंतात । तौ करिये विक्रम विख्यात ॥ दोहा ॥ यहि बिधि वाकप्रतोदसों ह्वै ताड़ित तेहियाम । द्रोण कर्ण परसैन मधि किये अमानुषकाम ॥ करिअति अद्भुत धनुष विधि रचि अविरल शरसेत । अगणित हय गज भटनबधि दीन्हों काल निकेत ॥ सोरठा ॥ पीड़ित ह्वै तेहिकाल भगतभयोपांचालदल । सो लखि बीरविशाल भीमगयो तहँ सैनसह ॥ चौपाई ॥ अर्जुन निरखि प्रलय निज दलमें । सादर सदल गयो तेहि थलमें ॥ भीमार्जुनहिं जाततहँ देखी । फिरे सुभट सब जय अवरेखी ॥ पूर्ण शशिहि लखि सागर जैसे । उमँगत फिरेशत्रुदल तैसे ॥ भो अतिघोर युद्ध तेहि क्षनमें । जो लखि सुमन मुदितभे मन में ॥ तहँलखि धृष्टद्युम्नके उरमें । मार्‌यो कर्णबाण दशतुरमें ॥ धृष्टद्युम्न अधरथिहि प्रचारी । मारतभयो पांचशर भारी ॥ ते युगवीर विदित रणचारी । कीन्हों घोरयुद्ध हठधारी ॥ अग-णित बाण परस्पर मारे । अगणित बाण शरनसों वारे ॥ तहां कर्ण विक्रम विस्तारो । तासु तुरँग सूतहि बधिडारो ॥ तौनहुँ बधि तुरगन चलि रथपै । गोसहदेव वीरके रथपै ॥ चह्योफेरि सूतज पहँ आवन । आवन दयो न नृपमनभावन ॥ कर्णमुदित ह्वै शङ्ख बजायो । सूत और हय रथमें लायो ॥ धृष्टद्युम्नकी हारि निरेखी । सब पांचाल सुभट अतितेखी ॥ कर्णवीर वरको बध गुनि गुनि । बर्षत भये विशिख धनु धुनिधुनि ॥ तहांकर्ण अति विक्रम कीन्हों । क्षणमें तिन्हैं बिकलकरिदीन्हों ॥ दोहा ॥ तोमर भल्ल सुअर्द्ध शशि बाणवर्षि पणधारि । अगणित हय गज भटन बधि दीन्हों महिपैडारि ॥ मर्दित ह्वै भट कर्ण सों भगे सकल पांचाल । सोलखि अर्जुन वीरसों कह्यो धर्मक्षिति-पाल ॥ सोरठा ॥ यहि निशीथ मधिचण्ड ग्रीषमके मार्त्तण्डसम ।

सूतजबीर उदण्ड नाशत ममदलतमानिकर ॥ चौपाई ॥ अबतैसो बिक्रम करुभाई । जाते ममदल मारि न जाई ॥ सोसुनिपारथ जय अभिलाषो । सादर श्रीयदुपति सों भाषो ॥ सूतसुवनको बिक्रम देखी । भयेसभीत धर्मअवरेखी ॥ ताते शीघ्रचपलकरि घोरे । रथलै चलो कर्णकेधोरे ॥ सोसुनिकृष्णकहो सुनुपारथ । यहिक्षणसो कुरुपतिके स्वारथ ॥ बिहरतकाल करालसमाना । आड़िसकै तेहि को बलवाना ॥ तुमका असुर घटोत्कचयोधा । करिबेयोगतासु अवरोधा ॥ पै यह एक सुनहु भटनायक। यहि क्षण तुम्हैं न भिरिबे लायक ॥ शक्ति अमोघ शक्रकी दीन्ही । लीन्हे वहतो बधहितचीन्ही ॥ ताते यहिक्षण असुर अमाना । भिरैं कर्णसों बर्षतबाना ॥ इमि पारथसोंकहि यदुस्वामी । कहो घटोत्कचसों जयकामी ॥ तुम बल बिक्रम बुद्धि निधाना । मायाबिद धनुधर बलवाना ॥ धीरबीर साहसी महाना । शूर असुरपति सरससुजाना ॥ इतै न तुमसम और बिचक्षण । जौं-न करै यहि क्षण दल रक्षण ॥ कर्णबाण बर्षतसब दिशिमें । रुद्र सदृश बिहरत यहि निशिमें ॥ उभय बंशको गुण अनुसरिकै । तुम तेहि समिति करौपणधरिकै ॥ दोहा ॥ पार्थकह्यो मम सुजय हित भिरो कर्णसों तात । करिहि तिहारो अनुगवन सात्वकि भट बिख्यात ॥ कृष्ण पार्थके बचनसुनि असुरकह्यो गहिटेक। कर्णहि जीतन हेतुहौं सदा प्रबल मैं एक ॥ सोरठा ॥ इमि कहि असुर अमान गर्जि धनुष टङ्कारिकै। बर्षत अबिरलबान चलो कर्ण रणधीरपै ॥ चौपाई ॥ असुरहि निजपहँ आवत देखी। हँसि बढ़ि भिरो कर्ण अति तेखी ॥ बलि बासव सम भिरि रिसपा-गे। ते युगबीर लरन तहँलागे ॥ तिन्हैंलरत तो तनयनिहारी। दुःशासनसों कह्यो बिचारी ॥ भिरो कर्णसों असुर अमाना । मायावी सो अति बलवाना ॥ तुम सँग लै बहु युद्धबिचक्षण। जाय करहु सूतजको रक्षण ॥ इतने में नृपके ढिगजाई। सुवन

जटासुरको बलदाई ॥ कहत भयो नृप तो अरिजेते । आजु तिन्हैं हम नाशब हेते ॥ अर्जुन मम पितु को बधकीन्हो। हमवह वैर चहत अब लीन्हो ॥ यहसुनि दुर्योधन लहि आनँद। कह्यो असुरसों ह्वै अतिमानद ॥ द्रोण कर्ण अरु हम सह सेना । बधब पाण्डवन हे जगजेना ॥ भीमतनय यह असुर अमाना । है अति प्रबल विदित बलबाना ॥ ममहित हेतु बधौ तुम ताही । बिकल होहिं सब पाण्डव चाही ॥ यह सुनि असुर गर्वसों रजिकै । भीमतनय पहँ चलो गरजिकै ॥ तेहि लखि भीमतनय असुरेशा । त्यागि कर्णसोंयुद्ध सुभेशा ॥ चलो जटासुरके सुतपाहीं । टेरत आजु बचत तू नाहीं ॥ सुनि निज बिक्रम भाष्यो सोऊ । इमि कहि सुनि गर्जें भट दोऊ ॥
दोहा ॥ घोर युद्ध कीन्हों तहां युग रजनीचरवीर । दोऊ प्रबल प्रमत्तभट दोऊ अति रणधीर ॥ माया कीन्हों बिविध विधि भीमतनय बलवान । दिव्य शरनसों वारितेहि राक्षस सुवन अमान ॥ सोरठा ॥ बर्षि असंख्यन वाण व्याकुल करि असुराधिपहि । करतभयो गत प्राण अगणितभटपाण्डवनके ॥ तथा घटोत्कचवीर गर्जि गर्जि करि वाण झरि । असुरहि हनि बहु तीर बधत भयो अगणित भटन ॥ तोमर ॥ बधि असुरके हय सर्व । हति सारथिहि गहि गर्व ॥ बहुबाण असुरहि मारि । भट भीम सुवन प्रचारि ॥ फिरि सूतसुतहि सटेक । भो हनतबाण अनेक ॥ तब असुर रिससों छाय । तजि सुरथ सादर जाय ॥ भट भीम सुतके गात । भोहनत मूक बिभात ॥ तब घटोत्कच धनुत्यागि । तेहि लपटिगो रिस पागि ॥ तेउभययोधा शुद्ध । तहँ कियो मल्लसुयुद्ध ॥ जुटि छूटि फिरि जुटिछूटि । बहु पेंच करिकरि ऊटि ॥ करि मुष्टिकनकोघात । तहँ लरे भटअवदात॥
दोहा ॥ निजवश करि तेहि भीमसुत भयो पछारत भूप। उलटि ताहि ऊपर भयो असुर सुवीर अनूप ॥ बहुरिछूटि आयुधघने

वर्षि प्रचारिप्रचारि । घोरयुद्ध कीन्हों तहां बर बिक्रम बिस्तारि ॥ भीमतनय अतिबिक्रमी गहि तीक्षण तरवारि । काटि शीश तेहि असुरको केश पाणिसों धारि ॥ दुर्योधनके सुरथपै डारि शीशभटचण्ड । फेरिकर्णसों भिरतभो टंकारत कोदण्ड॥ सोरठा ॥ मत्तमतंग समान भिरि राक्षस अरु कर्ण तहँ । कीन्हों युद्ध महान बरषि परस्पर बिशिखबर ॥ चौपाई ॥ दोऊ बिक्रमके मदमाते । गर्जिगर्जि करिकरि चषराते ॥ सुजय चाहि अति गर्बहि धरिधरि । मण्डल सदृश शरासन करिकरि ॥ रहुरहु खरो न बाचत भनिभनि । अगणित बाण शरासन हनिहनि ॥ दोऊ तुमुल युद्ध तहँ कीन्हों । युगदिशि बाणजाल रचिदीन्हों॥ भये भयदहोऊ अति कोहे । दोऊभरे रुधिरसों सोहे ॥ कर्णबीर गहि अति उत्कर्षा । कीन्हो दिब्य शरनकी बर्षा ॥ दिब्यअस्त्र छांड़त लखि ताही । माया कियो असुर जयचाही ॥ अगणित असुर भूरिभय मांड़त । भांति भांतिके आयुधछांड़त ॥ चले सूतसुतपहँ करिहूहा । लखिडरपेइतकेभटजूहा ॥ तहांकर्णअति बिक्रम करिकै । अबिरलदिब्यअस्त्र परिहरिकै ॥ नाश्यो तिन्हैं ब्यर्थकरिमाया । नशे बिकार नशति जिमिछाया ॥ सोनिजमाया निष्फल देखी । बर्षो बिशिख घटोत्कचतेखी ॥ कैयक बाण सूतके तनमें । धसिकढ़िगे महिमाधि तेहिक्षनमें ॥ सूतसुवन अति रिस सों ग्वैकै । असुरहि हन्यो बाणदश ज्वैकै ॥ अति बेधित ह्वै असुर रिसाई । तज्यो चक्र भरि ब्योम उड़ाई ॥ देखि ताहि सूतज भट गायो । बाणजालसों काटि गिरायो ॥ दोहा ॥ निजचक्रहि निष्फल निरखिगर्जि घटोत्कचबीर । बर्षत भोभटकर्णपहँ अबिरल तीक्षण तीर ॥ अगणित शायक असुरके काटि घने शर छाय । असुरहि मास्यो बाणबहु कर्णबीर दृढ़घाय ॥ सोरठा ॥ मास्यो गदा बिशाल असुरताहि काट्यो करण । तब असुरेश कराल कूदि गगनमाधि जातभो ॥ माया-

मयीमहान रथपहँ राजितह्वै तहां। आयुध वृक्ष पषान बर्षो कर्ण सुवीर पहँ ॥ चौपाई ॥ तहांकर्ण अति धनुविधिठाटो। शायक हनि हनि सोसब काटो ॥ विरचि विरचि अविरल शर सेतू। दीन्हों काटि धनुष रथकेतू ॥ मायावी राक्षस धनुधारी। कीन्हों तहां युद्धअति भारी ॥ सूतज दिव्य अस्त्रविद चीन्हों। तासों तासुसदृश रण कीन्हों ॥ दोऊ बधिबे को प्रण लीन्हें। दुहुँदिशि शरपंजर करि दीन्हें ॥ नभगत मायाकी असुरेशा। करि बहुबदन भयानक भेशा ॥ सिगरे बाण कर्णके मारे। करि करि ग्रास व्यर्थकरि डारे ॥ फिरिहत समह्वै कौतुक करिकै। गिरि भो लसत भूमिपर परिकै ॥ सोलखि इत सब भट हर्षाने। मरो घटोत्कच निश्चय जाने ॥ निमिषमात्र तिमिरहि प्रण धरिकै। उठो भयानक रूप बितरिकै ॥ सहसन शिरशत उदर कराला। अगणित पग धनु बाहु विशाला ॥ मन्दर सम वपु धरि भट नागर। मथन लगो मम सेना सागर ॥ सूतसुवन पहँ बर्षत शायक। कहत भयो रजनीचर नायक ॥ सूतज आजु तोहिंबिनु धरणी। करिहौं हनि शायक बरबरणी ॥ इमि कहि अट्टहासकरि बलसों। बर्षो बिशिख राक्षसी कलसों ॥ कर्ण सुबीर पुरुष पंचानन। सब शर काटि देत भो बानन ॥ दोहा ॥ व्यर्थदेखि निज बिशिख सब रजनीचर अति तेखि। अति उतंग गिरि होतभो मायाकरि अवरेखि ॥ तासों मुद्गर मुशल अरु पट्टिश शायक शूल। बर्षतभो भट कर्णपहँ राक्षसवीर अतूल ॥ सोरठा ॥ बर्षि दिव्यशर भूरि कर्ण सुयोधा धनुषधर। कियो निमिष में दूरि भयद शैल माया बिशद ॥ चौपाई ॥ तब सो असुर नील घन ह्वैकै। घुमरि घेरिमढ़ि महिनभ छ्वैकै ॥ गर्जि गर्जि पाहनझरि कीन्हों। सूत सुतहि गोपित करिदीन्हों ॥ तहांकर्ण अतिधीरज धरिकै। दिव्यशरनकी बर्षा करिकै ॥ तजि बायव्य अस्त्र अनुमानी। व्यर्थकियो मायाजल दानी ॥ अति

अमरषगहि असुर अदाया । कीन्हों प्रगट आसुरी माया ॥ अगणितभेद असुर बलवाना । गजरथ तुरगन चढ़े अमाना॥ सबदिशि घेरि घटोत्कच बीरा । चले बधन सूतज रणधीरा ॥ कर्णतहां अतिरिस गहि मनमें । तज्यो असंख्यन शायक क्षन में ॥ काटि कर्णके अगणित शायक । हने पांचशर निशिचर नायक ॥ फिरिहनि अर्द्धचन्द्रशर चोखो । काट्यो सूतजको धनु नोखो ॥ सूतज तुरित और धनु गहिकै । बरषो बिशिख भागु मति कहिकै ॥ बिलसेरुद्र त्रिपुरके दलमें । तिमि राक्षस दल मधि तेहि पलमें ॥ बिहरो कर्ण प्रबल भट गायो । अगणित अरियमलोक पठायो ॥ प्रलय कालके अग्नि समाना । लस्यो असुर दल मधि बलवाना ॥ अबिरल सेतु शरनके ठाटत । बहु हयगज भटरथधनु काटत ॥ कार्त्तिकेय सम निशिचर गण में । लसोकर्ण मनदै जयपणमें ॥ दोहा ॥ तेहिक्षण उतके सुभट नहिं सकेसूतजहि देखि । बचिवेकी आशा तजे अन्तक सम अवरेखि ॥ मायामें दीरघसुरथ बिरचि घटोत्कच बीर । गरजत तापहँ चढ़ि तज्यो घोर अशनि रणधीर ॥ सोरठा ॥ आठ चक्र युत जौनि दुइयोजन दीरघ बनी । योजन आयत तौनि अशनि बज्रसम तजतभो ॥ चौपाई ॥ अग्नि बमत तक्षकसम आवत । देखि ताहि सूतज भट भावत ॥ तुरित कूदि तेहि पकरि तरजिकै । फेरि असुरपहँ तज्यो गरजिकै ॥ सोलखि निशिचर अनरथ गुनिकै । कूदि भूमिपर गो शिर धुनिकै ॥ देव रचित सो रथपर परिकै । सहय सूतरथ भास्मित करिकै ॥ गई धरणि माधि अशनि महाना । रथपर चढ़ो कर्ण बलवाना ॥ बरषोदिब्य अस्त्र सबिधाना । असुर भयो तब अन्तर्द्धाना ॥ फेरिप्रगट परलय करि दीन्ह्यों । दिब्य शरनकी बर्षा कीन्ह्यों ॥ बर्षि दिब्य शर कर्ण प्रचाख्यो । ताके दिब्य अस्त्र सब वाख्यो ॥ तब मायावी भट असुरेशा । कीन्ह्यो प्रगट भयानक भेशा ॥ वृक पिशाच

पञ्चानन घोरा। यातुधान अति प्रबल अघोरा॥ तेसबदुखद घोरधुनि करिकरि। चले कर्णपहँ अति रिस धरि धरि॥ वर्षि दिव्यशर चपकरि राते। क्षण महँ सूतज तिन्हें निपाते॥ सो लखिअसुर महारिस गहि कै। बरषो विशिख भानु मति कहिकै॥ यहि बिधि कर्ण भीमसुत भिरिकै। घोर युद्ध कीन्हो तहँ थिरिकै॥ दोऊ प्रबल प्रसिद्ध अमाना। दोऊ शिक्षक धनुष विधाना॥ वर्षि वर्षि शर दोऊ योधा। किये वायु की गति अवरोधा॥ दोहा॥ मायावी असुरेशको लखि विक्रमतेहि काल। मनमें अति शंकित भयो दुर्योधन क्षितिपाल॥ इतने में राक्षस प्रबलविदित अलायुधधीर। सैन सहित आवतभयो दुर्योधनकेतीर॥ रोला॥ आइ नृपके पास सो इमि कह्यो गर्वित बैन। किये बहु अपराध मेरे भीमभट बलऐन॥ बक हिडम्बहि वध्यो ताके बैर यहि निशि लेन। समयलहि हम आजु आये तुम्हैं आनँद देन॥ सखा सम्बन्धिन सहित सब पाण्डवनकहँ मारि। खाइ हैं सब सखा मेरे महा आनँद धारि॥ युद्ध तजितो सुभट सिगरे लखें मम व्यवसाय। बधब हम सब पाण्डवनक-हँ घने आयुध छाय॥ कह्यो नृप रिस भरे मम भट तजहिंगे नाहिं युद्ध। लरहिंगेतो संगरहि अनुगमन करि भट उद्ध॥ प्रबलमायाबली धनुधर घटोत्कच असुरेश। कर्णसों भिरि प्रलय पूरित किये ममदल देश॥ प्रथम तासों युद्धकरि यम लोक गतकरि ताहि। फेरि सब पाण्डवनको तुम नाशकी जो चाहि॥ बचन यहसुनि गर्जि निशिचर नाथ धनुटंकारि। असुरदलसह भीम सुतपहँ चलो बल विस्तारि॥ दोहा॥ सदल अलायुधनि-शिचरहि निजपहँ आवत देखि। कर्णहिं तजितासों भिरो भीम तनय अति तेखि॥ दोऊ राक्षस अति प्रबल मायावीभटउद्ध। महाराज तहँ भिरि कियो अतिशय अद्भुत युद्ध॥ सोरठा॥ प्रबल असुर सौमुक्त कर्ण मोदि वर्षत विशिख। गर्जन सुगरव-

सुक्तचलो वृकोदर बीरपहँ ॥ चौपाई ॥ अति प्रियपुत्र असुररण चारी । प्रबल असुर बशताहि निहारी ॥ कर्णहिं निदरि भीम धनुकर्षत । चलो अलायुधपै शर बर्षत ॥ भीम सुतहि तजि असुर अमाना । भिरोभीम सों बर्षत बाना ॥ फेरि घटोत्कच सुतजभिरिकै । लगेकरन अति बिक्रम थिरिकै ॥ सिगरेअसुर घोरधुनि करि करि । चले भीमपहँ अति रिस धरि धरि ॥ तहां भीमकर लाघव धारो । पांचपांच शरसब कहँमारो ॥ तासुश-रन सों बेधित ह्वैकै । भगेअसुरअति भयसों ग्वैकै ॥ दलबि-चलत लखि निशिचर नायक । भीमसेन पहँ बरषो शायक ॥ भीम तहां अति गौरव लीन्हें । असुर नाथ पहँ शर झरि की-न्हें ॥ जितने शायक तज्यो वृकोदर । सो सबकाट्योबकके सो-दर ॥ सो लखि भीम गदागहि भारी । निशिचर पति पहँतज्यो प्रचारी ॥ उलकासम तेहि निरखिनिशामें । निशिचर गरूगदा हनितामें ॥ फेरि दियो करिकै अवरोधा । नवशर बरषो भीम सुयोधा ॥ तिमि सो असुर शरनकी बर्षा । कियो भीमपहँगाहि उतकर्षा ॥ पाय अलायुधको अनुशासन । बढ़ि बढ़िलहि सि-गरे मनुजाशन ॥ बधिबधि हय गज मानुष रूरे । प्रलय काल परदल मधिपूरे ॥ दोहा ॥ सो लखि सहदेव नकुल अरु सात्य-कि बीर अमान । भिरे आसुरी सैन सों बर्षत अबिरलबान ॥ महाराज सुनु असुरपति अति बिक्रम करितत्र । काटि धनुष भट भीमको हयन बध्यो हनि यत्र ॥ भीमकूदिकै सुरथ सों त-ज्यो गदा अति चण्ड । ब्यर्थ कियो तेहिकी गदा राक्षसबीर उदण्ड ॥ सोरठा ॥ कोपि भीमरण धीर तज्यो दुसह अगणित गदा । हनिबहु गदासुबीर असुरब्यर्थ कीन्ह्यो सकल ॥ चौपाई ॥ तेयुगबीर महारिस लीन्हें । बढ़ि बढ़ि मुष्टि युद्ध अति कीन्हें ॥ फिरि दुरि दुरिअति रिसि सों नहि नहि । मरे तुरँग गजमानुष गहिगहि ॥ दोऊलगे दुहुनपै डारण । जिमि तरु शाखाद्विरद

पहँ वारण ॥ सो लखि कृष्ण विजय अभिलाषे। टेरिघटोत्कच सों इमिभाषे ॥ तुम सूतजसों रण परिहरिकै। शीघ्रबधौ यहि असुरहि लरिकै ॥ सो सुनि भीमतनय धनुधारी। असुरनाथ सों भिरो प्रचारी ॥ मत्तद्विरद सम दोऊ भिरिकै। घोरयुद्धकीन्हों तहँ थिरिकै ॥ भीम और रथवर पहँ चढ़िकै। भिरो कर्ण योधा सों बढ़िकै ॥ बांधि असुरन सात्यकि रणचारी। अरुसह देव नकुल भटभारी ॥ मर्दत भटन शरासन कर्षत। सूतसुवन पहँगो शर वर्षत ॥ मम भटमाल शरन सों पोहे। पारथरहोद्रोणके सोहे ॥ यहि प्रकार योधादुहुं दलके। भिरि भिरि रहे लरत अति बलके ॥ भिरियुग असुर प्रबल छल बलमें। कीन्ह्योंघोर युद्धतेहिपलमें ॥ गर्जिअलायुधबलविस्तारो। परिघतासुसूरथ मधि मारो ॥ लगेपरिघ कछुमूर्छितहवैकै। भीमतनय तेहि असुरहि ज्वैकै ॥ शतघण्टा युतगदा विशाला। तजतभयो ह्वै अति बिकराला ॥ दोहा ॥ लगे गदा चूरण भये तुरँगसुरथ अरु सूत। तबरथ तजि ऊरधगयो असुरबीर मजबूत ॥ गर्जिभूमिरहि गगनमधि वर्षों रुधिर पषान। सो माया कीन्ह्यो व्यरथ भीम तनय बलवान ॥ पज्झटी ॥ लखि व्यर्थ निज माया महान। भट अलायुध निशिचर अमान ॥ धरिपरिघ मुद्गरगदाशूल। शर शक्तिभल्ल आयुध अतूल ॥ गो शीर्ष अयगुड़ भिण्डिपाल। अरु विविध विधिके तरु विशाल ॥ भट भीम सुतपहँ दयोपूरि। तब भीमसुत तजिबाणभूरि ॥ करि व्यर्थ तासु माया समस्त। तेहि हन्यो बहुत शायक प्रशस्त ॥ तब अलायुधशायक अनेक। भट घटोत्कचहि हन्यो सटेक ॥ बधिभूमि करि करि धनु विशाल। रचिदये दुहुंदिशि बाण जाल ॥ यहिभांति ते युगसुभट उद्ध। नृप कियो तहँ अति घोर युद्ध ॥ दोहा ॥ मायावीदोऊ कियो माया विविध प्रकार। मायाकरि मायाव्यरथ कीन्हीं अगणित बार ॥ तब दोऊ अति क्रोध करिगहिगहि

करतल चर्म । तुमुल युद्ध कीन्ह्यों सबिधि ज्ञाता अरिरणमर्म॥ भरे रुधिर श्रमस्वेद सों दोऊ असुर अमान । लसे सुवारिप्र-बाहयुत युग गिरि शृंग समान ॥ सोरठा ॥ अति बिक्रम तेहि कालकरि हैडम्ब उदग्रभट । काट्योशीशबिशालबीर अलायुध असुरको ॥ चौपाई ॥ शीश काटिगहि चिकुरअजोरे । झेलिदि-यो कुरुपति के धोरे ॥ सो लखि दुर्योधन युत योधन । जरत बिपिन मधिगोप सगोधन ॥ होत बिकल जिमि तिमि ह्वैपी-ड़ित । गुणिनिज कर्म भयो अति ब्रीड़ित ॥ सबपांडव पाञ्चा-ल सोहाये । मोदि बिजय दुन्दुभि बजवाये ॥ जयलहि भीम तनय भटगाढ़ो । ममदलके सन्मुख ह्वै ठाढ़ो ॥ गर्जिगर्जिमृ-गराज समाना । भटन सभीत कियो बलवाना ॥ प्रलयकाल पूख्यो परदलमें । करि अति कोपकर्ण तेहि पलमें ॥ धृष्टद्युम्न उत मौजाराजहि । अरु शिखण्डि सात्यकिभट साजहि ॥ बेधि शरन ब्याकुलकरि दीन्हों । अगणित भट यमपुरगत कीन्हों ॥ निजदल मर्दत कर्णहि देखी । दीह सुरथपहँ चढ़ि अति तेखी॥ भीम तनयघन सदृशननर्दत । भिरो कर्णसों सुभटन मर्दत ॥ ते युगवीर प्रबल रणचारी । घोरयुद्ध कीन्ह्यों पणधारी ॥ अगणित भांति शरासनकर्षे । बिबिध भांतिके शायक वर्षे ॥ दोऊ दोउन के शर रूरे । काटि भूमि बाणनसों पूरे ॥ बढ़ि बढ़ि दोऊ दुहुन प्रचारे । दोऊ दुहुन बाण बहुमारे ॥ करि मण्डल समधनुमन भाये । दोऊदुहुं दिशि शायक छाये ॥ दोहा ॥ निजसम बिक्रम करत तेहि देखि कर्णगहि गर्ब । दिब्य अस्त्रसों बधतभो तासु सूतहय सर्ब ॥ बिरथ भीमसुत गगनगत ह्वै कै अन्तरधान । बर्षो पट्टिश शक्तिशर उलका गदा पषान ॥ खड्ग भल्लमूशल परिघ तोमर परशुअनेक । अशनि बज्रआयुध घने वर्षत भयो सटेक ॥ सोरठा ॥ तहां कर्ण दृढ़घाय निज रक्षणमें बिकलभो । वर्षिबाण समुदाय राखिसको नहिं सकलदल ॥ भुजंगप्रयात ॥रथी

गली मैगलै वाजिसादी। तुरी औरथीपैदरै वीरवादी ॥ अ-
कै मरेत्र्यौ डरे अंगभंगे। घने भीतपूरे भगेत्यागि संगे ॥ अ-
कै परे पाहिरे पाहिवोलैं। घने नैनमूंदे धरे धीर डोलैं ॥ घने
ारुरेमारुरे भाषि घूमैं। अनेकै जरे लोहकेभार भूमैं ॥ दोहा ॥
हि प्रकार पारयो प्रलय ममदल मध्यसटेक। मायावीराक्षस
बल वरणो जाकहँ एक ॥ प्रगटितह्वै अगणित असुर वरषे
ायुध सर्व। हाहाधुनि कीन्हें विकल सिगरे भटतजि गर्व ॥
ोरठा ॥ क्षणमें योद्धा भूरि मरे परे घायल बहुत। गयो महाभय
ूरि सबके मन निज मरण गुणि ॥ चौपाई ॥ जिमि पषाण वर्षत
ोयूती। पाय अटक्ष देश गव्यूती ॥ विकल होत तेहि विधि
बिनुत्राता। विकलभयो ममदलविख्याता ॥ नभतेआयुधवर्षत
देखी। कहतभयेसब भटअवरेखी ॥ पांडवकेजयहितगुणिमनमें।
र्षतअस्त्रसुमन यहिक्षनमें ॥ अब जयजीवन की नहिंआसा।
असुरसों भागि बचैं केहिपासा ॥ इतनेमें राक्षस रणचारी। दु-
स्तर दिव्य सुअस्त्र प्रहारी ॥ वधि सूतजके रथके बाजी। वर्षि
गदा शक्तिकी राजी ॥ रथतजि सूततनय भट नायक। वर्षि
असंख्यन मंत्रित शायक ॥ काटि काटि सब आयुध फरमो।
रहो सधीर नेक नहिं भरमो ॥ तेहिक्षण इतसब नृपतिसकाने।
कर्णहिं तासों बचन न जाने ॥ टेरि टेरिसूतजसों भाखे। शक्ति
वासवी केहिहित राखे ॥ यहि क्षण अब न बचत तुम यासों।
पार्थहि कौन वधिहि फिरि तासों ॥ पहिले निज रक्षण करिली-
जै। तदनु शत्रु वधको प्रणकीजे ॥ ताते मारि शक्तिवहभारी ॥
वधो याहि निज विजय विचारी ॥ सुनि सूतज करतव्य विचा
रयो। शक्ति अमोघ असुर पहँ डारयो ॥ बज्र समान लागि
सो आसू। नभगति भई वधि हिय तासू ॥ दोहा ॥ घूमि गर्जि
गत प्राण ह्वै महिगत भोअसुरेश। शतसहभट दवि मरत भे
देह गिरो जेहि देश ॥ मोदित ह्वै कौरव नृपति जय दुन्दुभि

बजवाय । भयो प्रशंसत सूतजाहि रथपहँ शीघ्रचढ़ाय ॥ सोरठा ॥
असुरहि मरत निरेखि व्यथित भये पांडवसकल । कृष्णचन्द्र
अवरेखि कुशल जानि मोदित भये ॥ महिखरी ॥ सुरनाथ दीन्हीं
शक्तितासों मरत असुरहि देखिकै । उठि कृष्ण हँसिहँसि लगे
निर्तन क्षेम बिधि अवरेखिकै ॥ तहँमुदित कृष्णहि देखिअच-
रज जानि इमि अर्जुन कहो । यह महत दुखको समयतहँ केहि
हेत तुम आनँदगहो ॥ सोकहोजाते मिटै संशयकृष्ण यह सुनि
कहतभे । नृपधर्मअब यहिसमयतुम कहँकुशललहि जयलहत
भे ॥ यह शक्ति परम अमोघतो बध हेतहो अर्जुन करे । सोगई
अब तुम बचे काभो रजनिचर पतिके मरे ॥ तो अजयकी मम
हिये संशयरही सो याहि क्षणगई । यहिहेत मोदितभये हम जो
चहतहै सोबिधिभई ॥ वहिकवच कुण्डलशक्ति यहिबिनु सूत
सुतक्रमसोंभयो । सोधर्मनृपको भाग्यतो चिरकाल जीवन क्रम
जयो ॥ तिन सहित रहतो कर्णतो यमवरुण सुरपतिआदिकै ।
नहिं पावते जय कबहुं लरिबहु द्यौस सरस अमादिकै ॥ अब
सूतजाहि बधि युद्धमें तुम अवशिजय कीरति लहौ । सबभूमि
भोगत धर्म नृपतिहि देखि अति आनँद गहौ ॥ दोहा ॥ जान
जात यहि भांति इत बधि यह असुर अधर्म । तौहमकहँ बधि
बो परत करि दुस्तर रण कर्म ॥ दुःशासन अरु शकुनि अरु
दुर्योधन क्षितिपाल । सब निशिमें राधेयसों कहत रहे लहिना-
ल ॥ दीन्ही शक्ति अमोघ जो शक्रताहि तुम वाहि । बधौ कृ-
ष्णके अर्जुनहिं सादर मम जयचाहि ॥ सोरठा ॥ पै वह तुमकहँ
जोहि भूलिजातहो बचनवह । मम मायासों मोहि सुनोभूप सि-
द्धान्त यह ॥

द्रोणपर्वणिचतुर्थदिवसेरात्रियुद्धेघटोत्कचबधोनामत्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

दोहा ॥ भीमतनयको मरणसुनिशक्तिव्यर्थअनुमानि । कहत
भये धृतराष्ट्र नृप सुख बिषाद उरआनि ॥ रोला ॥ सिंधुपति के

मरण सों रिसि भरे मामकवीर । असुरपतिके मरण सों भीमा-
दिभट रणधीर ॥ लरेकिमि सो कहो संजयवचन यहसुनिभूप।
कह्यो संजय तदनु जैसो भयो युद्ध अनूप ॥ घटोत्कच को वध
निरखि अरु विकल लखि निज सैन । कह्यो भीमसुवीर सों
इमिधर्म नृपति अचैन ॥ प्रबलह्वै पर सुभट मर्दत सैन मम
अवदात । शीघ्र आड़हु तिन्हैं तुम करि बिशद विक्रम तात॥
घटोत्कच को मरण लखि भो मोहवशमम चेत । भाषि इमि
जल तज्यो चषतेधर्मधर्मनिकेत ॥ कृष्ण नृपतिहि देखिविकल
कह्यो इमि समुझाय । भूप व्याकुल होहु मति धरि धीर लरहु
सचाय ॥ तुम्हैं विकलभये जयविधि नशिहि यह अनुमानि ॥
दूरि कीजै शोक ताको मरब मंगल जानि ॥ कृष्ण के सुनि व-
चन भूपति पोंछि नयनजनीर । कहो हो मोहिं परम प्रिय यह
भीमसुत रण धीर ॥ काम्य बनमें जाय यह वहु कियोमम प्रि-
य काम । गन्धमादन अचल वरपहँ चढ़तयहवल धाम ॥ द्रौ-
पदिहिलै कन्धपै तहँ देतहो पहुंचाय । कियोममउपकार कित-
नो युद्धमें इत आय ॥ बालपनसों मोहिं याको लगतहो अति
छोह । रहोहो ममभक्ततातेभयो अतिशयमोह ॥ द्रोण दुर्योधन
करणये बर्षि बाणविभात । बरधिमर्दतसैन मम नहिंसहो मोसों
जात ॥ पाइअभिमन्युहि अकेलो द्रोण कर्ण अशर्म । काटिध-
नबांधि तुरगसूतहि काटिखड्गसुचर्म॥ दयेतहँ बधवाइतेनाहिंगये
वँधि अफसोश । सिंधुपति बधिगयो जाको रहो सूक्षम दोश ॥
द्रोण सूतज जाहि बधि सो करो यह मम मंत्र । द्रोण सों भिरि
लरत यहिक्षण जाइ भीमस्वतंत्र ॥ जातहैं हम कर्ण सों अब
लरन यहि विधि भाखि । धर्म भूपति सूतसुत पहँ चलो अति
रिसराखि ॥ दोहा ॥ पांचसहसहय सहसरथ त्रयशतमत्तमतंग।
सहितशिखण्डी तहँ चलो धर्म नृपतिके संग ॥ अति अमरष
बशकर्ण पहँ धर्महिं जात निहारि । आइतहां नृपसों कह्योव्यास

मुनीश बिचारि ॥ मरो शक्तिसों असुर सो बचो फाल्गुणबीर । यह बिचारिनृपशोक तजिमन में आनहुधीर ॥ सोरठा ॥ तुम न कर्णपहँ जाहु पार्थ लरिहि अब कर्ण सों । तुम्हैं बिजयमहि लाहु होइहि बीते पांचदिन ॥ चौपाई ॥ इमिकहि ब्यास मुनीश महाना । भूप भये तहँ अन्तरध्याना ॥ सोसुनि धर्म नृपति अनुमानी । धृष्टद्युम्नसों कह्यो सुबानी ॥ कुम्भयोनि द्विजके बध हेतू । द्रुपदहि तुम्हैं दियो वृष केतू ॥ तुम्हैं न नेकु द्रोणसों डर है । तासुनाश निर्मितसो करहै ॥ ताते सदल जाययहि क्षनमें । लरो द्रोणसोंबध गुणि मनमें ॥ सात्यकि सहदेव नकुल ससाजा । द्रुपद बिराट आदि सब राजा ॥ सादर जाहु द्रोण सों लरहू । होइ तासुबध जिमिसो करहू ॥ सुनि नृपबचन सकल भट नायक । चले द्रोणपहँ बर्षत शायक ॥ तिन कहँ देखिद्रोण धनु करषो । सबपहँ अविरल शायक बरषो ॥ ससयन दुर्योधन बढ़ि तत्क्षण । लागे करन द्रोणको रक्षण ॥ इतने में युग याम त्रियामा । भई ब्यतीत काल निशि नामा ॥ अति निद्रित ह्वै नर हय हाथी । सकैं न देखि शत्रुअरु साथी ॥ श्रम निद्रा वश ह्वै दुहुँ दलके । हयगज सुभट गणे बरबलके ॥ चेति न सकैं युद्धकरि नेकौ । बाहिन सकैं सुआयुध एकौ ॥ झुकैं चेति उझकैं झुकि उझकैं । परि निद्रावश भये असुझकैं ॥ अति निद्रावश परि परि गाढ़े । गुणि कुलरीति रहे तहँ ठाढ़े ॥ दोहा ॥ अति निद्रित दुहुसैन के हय गज सुभटन हेरि । समय जानि अति दयागहि कह्यो धनंजय टेरि ॥ अति निद्रितह्वै सुभट सब करि न सकत रणकर्म । लखि ज्यों कुरुपति सहितसब नृप मानहुँ गुणि मर्म ॥ सोरठा ॥ तौंसबभट समुदाय ऐसेही थिर रहि इतै । निद्रालेहिं गँवाय फिरिलरिहैं शशिउदय लखि ॥ जयकरी ॥ तेहिक्षण अर्जुनके येबैन । सुनि सब सुभट लहेअति चैन ॥ सबकोउ कीन्हों यह सिद्धांत । पार्थहि लगेप्रशंसन दांत ॥

सिगरे योधा युद्ध बिहाइ। शयन करन लागे क्षण पाइ ॥ हयपहँ हयसादी रणधीर। रथपहँ रथी सारथी बीर ॥ गजपहँ भट गजस्थ समुदाय। निद्रावश ह्वै रहे सचाय ॥ झुकि कुम्भनमधि दै उर भार। सोयरहे गजवान उदार ॥ जिमि उतंग उरजन उर लाय । कामी सोयरहैं लपटाय ॥ महिपहँ परे पदाती जूह । सुपत भये तहँसुभट समूह ॥ धरे सकल आयुध सन्नाह। सोय रहे सबरण महिमाह ॥ इतनेमें पूरुबदिशि भूप । उदयभयो निशिनाथ अनूप ॥ अंशु नखनयुत अमल अमान। नभबनचारी सिंहसमान ॥ गजगण सम तमतुंग विनाशि। चलो प्रतीची दिशि छबिराशि ॥ लखि प्रकाश जगि सुभटसमस्त। करन लगे फिरि युद्ध प्रशस्त ॥ जेहिविधि पथिक यूथलखि भोर। गहिगहि सुपथ चलत सबओर ॥ जाय द्रोणकेढिग तहिकाल। कहत भयो तोसुत क्षितिपाल ॥ क्षणक्षण घटतजात मम सैन। प्रबलहोत पाण्डवबलऐन ॥ दोहा ॥ जोहैयाको हेत सोहमअब कहतपुकारि। विक्रम निज अनुरूप नहिं आपुकरतप्रणधारि ॥ को ऐसो धनुधर लरै जो तो सम्मुख आय । आपु चहैंबध जासुसो लरि कैसे बचिजाय ॥ सोरठा ॥ दिव्य अस्त्र समुदाय के ज्ञाता परसिद्ध तुम। कर्णहिं लरि मनलाय लेत विजय अधि शत्रुदल ॥ चौपाई ॥ यह सुनि द्रोण क्रोधगहि मनमें । कह्यो भूमिपतिसों तेहि क्षनमें ॥ नृपहम विप्रवृद्ध धनुधारी। यथापराक्रम लरत बिचारी ॥ विजय न काहूके आधीना । विधिकृत होत कहत कालीना ॥ तिहुँपुर में असको दृढ़ घायक। जौन पार्थकहँ जीतनलायक ॥ जब जार्‌यो खाण्डववन पारथ। सके न आदिशक्र गुणि स्वारथ ॥ चित्रसेन आदिक गन्धर्बन। जीत्यो सुभट धनंजय शर्मन ॥ जे निवात कवची रण चायक। जिन्हैं न जीति सको सुरनायक ॥ तिन कहँ बध्यो धनंजय रन में। हैयह बात विदित सब जनमें ॥ दानव दल हिरण्यपुर

बासी। तिन्हें बध्यो सोयुद्ध बिलासी॥ लह्यो असुर सुरसों जय ऐसे। नृप तेहि जीतै मानुष कैसे॥ इमि पूरितगरिमा धनु गुनकी। सुनि द्विज सों अस्तुति अर्जुन की॥ क्रोधि कह्यो दुर्योधन राजा। हम अरु कर्ण शकुनि सह साजा॥ अ-बिरल बाण बरषि सब दिशि में। पार्थहि आजु बधब यहि निशि में॥ सुनि नृप बचन द्रोण हँसि भाषे। यहै उचित जो तुम अभिलाषे॥ तुम तीनौं अनर्थ के कारण। करो पार्थ बधको पण धारण॥ पैनाहिं अस भट रच्यो बिधाता। बधै ताहि जो धनुविधि ज्ञाता॥ दोहा॥ निज जयहित तुमसैन सह लरो पार्थसों जाय। हम नाशब पांचालदल करिअति शयव्यवसाय॥ इमि कहि सुनि द्वै यूथकरि दुर्योधनअरुबिप्र-चले पार्थ पाञ्चालपहँ आयुध बर्षत क्षिप्र॥ सोरठा॥ बढ़िपांडव पाञ्चाल भिरितिनसों बर्षे बिशिख। अनुपम शायक जाल बिरचतभे तेहि क्षण तहां॥ चौपाई॥ तब रहिशेष रजनि छबि छाई। पूरबदिशि पसरी अरुणाई॥ अद्भुत युद्धभयो तेहि प-लमें। घोरशब्द माचो दुहुं दलमें॥ तेहिक्षण कृष्णचन्द्र रण चारी। मम दक्षिणदिशि गये बिचारी॥तहँ पारथ बिक्रम बि-स्तारो। प्रलयकाल ममदल मधि पारो॥ सो लखि कर्ण शकु-नि दुर्योधन। शरवर्ष करि धनु बिधि शोधन॥ काटि सकल शर तिनके डारे। पार्थ तिन्हें दशदश शरमारे॥ ते पारथपहँ तिनपहँ पारथ। अबिरल शर बर्षै गुणि स्वारथ॥ तेहि प्रकार सब योधा भिरिभिरि। घोरयुद्ध कीन्ह्योतहँ थिरिथिरि॥ तेज बायु महँ रजकन जैसे। उड़त सुभट शर बर्षै तैसे॥ मारेकितै मरेभट केते। बहुह्वै बिरथमल्ल रणहेते॥ बहु बिनुरथ धनु ह्वै रिस पागे। गहि असि चर्म लरन तहँ लागे॥ ह्वै बिनु बाहन कितने योधा। किये सबाहन को अवरोधा॥ साथहि शर हनि हनि मरिमारिकै। कितेलसे महिपैपरिपरिकै॥ गर्जत

किते धनुष टङ्कारत। बिलसत भये भटन संहारत॥ बिनु हय गज ह्वै ह्वै तजिबाहस। कितने सुभट भये बिनु साहस॥ धनुष करषि शर तजन न पाये। भिरिमरि किते भूमिपैआये॥ दोहा॥ मारौमारु बचाय यह शब्द रह्यो तहँपूरि। बिनुकरशिर पग होतभे हय गज योधाभूरि॥ उत्तर दिशिपर भटनसों भिरि द्विज बीर अचार्य। मंडलसम कोदण्ड करि कियो अमानुष कार्य॥ सोरठा॥ अबिरल शायक छाय कम्पितकीन्हों परशचन। हय गज भट समुदाय अंग भंग करि बेधि बधि॥ चौपाई॥ दावानलसम परदल बनमें। बिलसत भयो द्रोण तेहि क्षनमें॥ जितनेसुभट सामुहें आये। ते मनु भये कालके खाये॥ कितने सुभट शत्रु दल केरे। इत उत भगे न सम्मुखहेरे॥ भिरे प्रचारि क्रोधबशकेते। होहिं अनलगत तृण सम तेते॥ छमि निज सेना मर्दत देखी। भिरे बिराट द्रुपदअति तेखी॥ तीनि पउत्र द्रुपद नरपतिके। हैं प्रसिद्ध योधाबल अति के॥ ते शर वृष्टि द्रोणपहँ कीन्हें। तिन्हैं बध्यो द्विज हनिशरचीन्हें॥ सो लखिते युगनृप नरनायक। द्रोण बिप्रपहँ बरषे शायक॥ काटि काटि बहुबाण अनोखे। तिन्हैं हन्यो द्विज बहुशर चोखे॥ हनि बिप्रहि बहुबाण प्रचारी। बिकलकियो ते नृप रणचारी॥ तहां द्रोण अति धनुबिधि ठाटे। द्रुपद बिराटके रथधनु काटे॥ तुरत बिराट और धनु गहिकै। दशशरहने भागु मति कहिकै॥ तड़िता सरिश भयानक वेशा। शक्ति चलायो द्रुपद नरेशा॥ एक एकमें बहुशर हनि हनि। द्रोणाचारय काट्यो गनिगनि॥ फिरि युगभल्ल हन्यो अति तुरमें। द्रुपदबिराट भूपके उरमें॥ तिनसों बेधितह्वै ते राजा। गेसुरपुर तजिसैन समाजा॥ दोहा॥ द्रुपद बिराटहि मरतलखि परदल भट समुदाय। हाहाकीन्हों त्रासितह्वै गुणि द्विजको व्यवसाय॥ बिबिध भांतिके दिव्यशर वर्षत द्रोणहिं देखि। धृष्टद्युम्न अति क्रोधगहि शपथदिव्य अ-

वरेखि ॥ सोरठा ॥ हटैद्रोणसों जौन अरु जो द्रोणहिं नहिंहनै । अवशि होइगो तौन बुद्धिइष्ट निज धर्म्म बिनु ॥ चौपाई ॥ इमि कहि धृष्टद्युम्न रणचारी । सदल द्रोणसों भिरो प्रचारी ॥ सो लखि कर्ण शकुनि दुर्योधन । बढ़ि तिनको कीन्हों अवरोधन ॥ सो लखि भीमसेन गुणि मनमें । कह्यो द्रुपद सुतसों तेहि क्षनमें ॥ बधि तो पिता पुत्र आचारय । दलमर्दत कुरुपतिके कारय ॥ शपथ तासुबधको तुम कीन्हों । अबकेहि परखत अर्जुतालीन्हों ॥ अब हम मर्दि शत्रुदल दीहा । जात द्रोण पहँ गहि जय ईहा ॥ जिमि हम लरत द्रोणसों भिरिकै । सो अब तुम निरखौ इताथिरिकै ॥ इमि कहिकै घनसदृशननर्दत । चलो द्रोण पहँ समदल मर्दत ॥ धृष्टद्युम्न कोदण्डहि कर्षत । चलो तासुसंग शायक वर्षत ॥ द्रोणानीक मध्यते धसिकै । गजगण मधि केशरि समलसिकै ॥ घोरयुद्ध कीन्हों तहँ राजा । बधे असंख्यन सैन समाजा ॥ तिमि सिगरे इत उतके योधा । बढ़ि बढ़ि भिरि करि करि अवरोधा ॥ तजि तजि बचिरहिबे की आशा । कीन्ह्यो अद्भुत युद्ध बिलाशा ॥ भोचट चटा शब्दतहँ गाढ़ो । लगो दवा बनमें जिमिडाढ़ो ॥ रबिके उदयहोत तहँ जैसो । भीषम युद्ध भयो नृप तैसो ॥ इत कोउ लख्यो सुन्यो नहिं कबहूं । देख्यो सुन्यो परत नहिं अबहूं ॥ दोहा ॥ श्रीसीता पति रामकहि सरुचि ध्यानके काल । जीव असंख्यन देहतजि पाये लोकबिशाल ॥

इतिमहाभारतदर्पणेद्रोणपर्बणिरात्रियुद्धसमाप्तिर्नामचतुर्दशोऽध्यायः १४॥

दोहा ॥ चौथे दिनकी निशिबिते पाय भयानकभोर । उभय सैनके सुभट भिरि युद्ध कियेअतिघोर ॥ रथी रथिनसों भिरत भे गजी गजी सरदार । पैदर पैदर सों भिरे तुरग तुरग असवार ॥ चौपाई ॥ बन्धुनसह दुर्योधन राजा । भिरे नकुल सहदेव ससाजा ॥ भिरो भीमसों कर्ण सुयोधा । भिरो पार्थसों द्रोण

सक्रोधा ॥ यहि विधि सुभट परस्पर भिरि भिरि । घोरयुद्ध कीन्ह्यों तहँ थिरि थिरि ॥ घन समाननभ आयुध छायो । निशि सम अन्धकार मढ़ि आयो ॥ अतिशय घोरशब्दभो पूरित । बहीरुधिर की नदी अधूरित ॥ तेहिक्षण दुःशासन धनुधारी । माद्रीसुत सों भिरो प्रचारी ॥ माद्रीसुत सहदेव अमाना । बध्यो तासु सूतहि हनि बाना ॥ बिना सूतसब हय भय पागे । रथलै इतउत दौरन लागे ॥ भट सहदेव हन्यो तेहि क्षनमें । अगणित शर तासुतके तनमें ॥ दुःशासनअति तुरतालीन्हों । बागपकरि तुरगन बश कीन्हों ॥ भीम कर्णपहँ शर झरिकरिवै । हन्यो तीनि शायक पण धरिकै ॥ बेधित ह्वै सूतज बलवाना । भो पग परशित उरग समाना ॥ सुभट भीम पहँ शायक बर्षो । सो लखि दुर्योधन अति हर्षो ॥ दोऊप्रबलगने दुहुंदलमें ।घोरयुद्ध कीन्ह्यों तेहिथल में ॥ दोऊ गदा दुहुनपै डारे । दोऊगदा गदन सों बारे ॥ भीम कोपि बर गदा चलायो । करन शरनसों ताहि गिरायो ॥ दोहा ॥ भीमगर्जि फिरितजतभो गदा कर्णतेहि देखि । हनि मंत्रित अगणित बिशिख पलटाई अवरेखि ॥परी भीमके सुरथपै मंत्रित उरग समान । ध्वजाभंगभो भीमको मुर्छितसूत सुजान ॥ सोरठा ॥ तब गहिधनु हनिबान भीमसेनअति प्रबलभट । काटत भयो महान धनुष ध्वजाभट कर्ण को ॥ चौपाई ॥ तुरतहि कर्ण और धनु गहिकै । शायक बर्षिभागुमति कहिकै॥उभयपासके सूतन मार्यो । तुरगन मारिभूमिपै डार्यो ॥ भीम कूदि द्वै डग धरि पथपै । सादर गयोनकुलके रथपै ॥ यहि विधि द्रोण पार्थ धनुधारी । कीन्ह्यों तहांयुद्ध अतिभारी ॥क्षत्री ब्राह्मण शिष्य अचारय । कीन्ह्यों तहांअमानुष कारय ॥मण्डल सदृशशरासन करि करि । फिरत चक्रसमरथपै चरिचरि ॥ अतिशय तुमुल युद्ध तहँ कीन्हें । सब के मन विस्मित करिदीन्हें ॥ गर्जि २ अति रिस सों पूरे । बर्षत भये दिव्य शरस्रूरे ॥

तजे अचार्य्य दिव्य शर जेते । पारथ मारिदिव्य शर तेते ॥ वा-
ग्यो द्विजबर के शर सिगरे । पृथक्पृथक् कहिजात न निगरे ॥
याहि प्रकार दोऊ धनुधारी । कीन्ह्यों तहांयुद्ध अतिभारी ॥ ल-
खिगन्धर्ब सुमनमुदराखे । इमिबहु बार परस्पर भाखे ॥ कबहुं
न देव दनुज नरकोऊ । लरेलरत जिमिये भट दोऊ ॥ जो शिव
आपु दोयतन धरिकै । युद्धकरैं अति रिस सों भरिकै ॥ तौइन
के लरिबेकी समता । मिलैन तरु हैं सब में कमता ॥ नहिं अब
ऐसे योधा ह्वैहैं । फेरि न ऐसो संगर ज्वैहैं ॥ दोहा ॥ यहिप्रकार
दोऊ सुभट महा क्रोधसों पूरि । कियो घोर संग्राम तहँ बर्षिदि-
ब्य शर भूरि ॥ यहिप्रकार लरिभिरि तहां सिगरे भटसमुदाय ।
बधिहय गजनर रुधिरकी नदी दई उमगाय ॥ सोरठा ॥ इबिधि
घोर संग्राम मचे शरासन कर्षिकै । दुःशासन बलधाम धृष्ट-
द्युम्न सों भिरतभो ॥ चौपाई ॥ धृष्टद्युम्न अनुपम रणचारी । ताहि
असंख्यनबाण प्रहारी ॥ बिचलित करिघन सहशन्नर्दत । च-
लो द्रोण पहँ ममदल मर्दत ॥ तासों भिरत भयो कृतबर्मा ।
अरु तुम्हार त्रयपुत्र अभरमा ॥ सहदेवनकुल तासुसंगलागे ।
हैं तहँ लरत बीर रस पागे ॥ घोरयुद्ध माचो तेहि पलमें । मरे
असंख्यन भट दुहुंदलमें ॥ सो लखि दुर्योधन धनु कर्षत । चलो
द्रुपद सुतपै शर बर्षत ॥ तेहिक्षण कोपि सात्यकी योधा । बढ़ि
ताको कीन्हों अवरोधा ॥ देखि सात्यकिहि तो सुत भूपा । कहत
भयो इमि बचन अनूपा ॥ हम तुम सखा बालपन केरे । कल
न रहत हेरहे अनेरे ॥ सो अब इमि भिरि करतलराई । त्यागि
त्यागि सब नेह सगाई ॥ धिगधिग धिग क्षत्रिनके कर्महिं । धिग
अमर्ष अरु क्रोध अधर्महिं ॥ जेहि बशह्वै मित्रनसों लरनो ।
परत परत अति अनरथ करनो ॥ सुनि बोलो सात्यकि रण
चारी । सुनु हे राजपुत्रधनुधारी ॥ नहिंयह राजसभाछबिवरहै ।
नहिं द्रोणाचारयको घरहै ॥ यह रण क्षत्रिनके हितकारी । देन

हार सुरपुर फलचारी ॥ क्षोहमोह नहिं इतभलभाई। हैइतमा-
रब मरब भलाई ॥ दोहा ॥ इतको हित हठि मित्र कहँ बधिदीबो
सुरलोक। यह गुणि मम बधहित करहुबिक्रमहे बलओक ॥यह
सुनि भूपति मोह तजिगहि अति क्रोध सगर्ब। गर्जि सात्यकी
सुभटपहँ बर्षो बिशिख अखर्ब ॥ सोरठा ॥ दोऊ अबिरल बान
दोउन पै बरषे तहां । कियो घोर घमसान दोऊ योधा प्रबल
भट ॥ जयकरी ॥ दोऊ अद्भुत धनु बिधि ठाटि । अगणित बाण
परस्पर काटि ॥ अगणित बाण दुहुँन के गात। मारे दोऊ भट
अवदात ॥ दोऊ बिदित बीर बलधाम। कीन्हों तहां घोर सं-
ग्राम ॥ सात्यकिके बाणनसों पीड़ि। दुरिनिजदलमधि भूपति
ब्रीड़ि ॥ फिरि ह्वै स्वस्थ सामुहे जाय । युद्ध करन लागे शर
छाय ॥ कर्ण भूपतिहि सामित निरेखि। चलो सात्यकीपहँअति
तेखि ॥ सो लखि गरजि भीम बलवान । भिरो कर्णसों बर्षत
बान ॥ भीम कर्ण योधा अतिउद्ध। कीन्हों तहां भयानक युद्ध॥
सूतज कोपि काटि धनुतासु। गरजो मारि सारथिहि आसु ॥
तब हनि गदा भीम भट बक्र। तोरो एक तासु रथचक्र॥ एक
चक्र युत रथपै धीर। रवि सम राजिसूत सुत बीर ॥ रहि नि-
हशंक करषि कोदण्ड। बरषत भयो बाण अति चण्ड ॥धनुध-
रिभीम क्रोधसों पूरि। तज्यो कर्णपहँ शायक भूरि॥ दोऊ बिक्रम
बुद्धि निकेत। बिरचे अबिरल शायक सेत ॥ तिमि इत उतके
योधा सर्ब। रचत भये तहँ युद्ध अखर्ब॥ पारथआदि शत्रुदल
जैन। लरि लागे मर्दन मम सैन ॥ दोहा ॥ धृष्टद्युम्नआदिकप्र-
बल जे योधा पांचाल। ते सिगरे भिरि द्रोण सों कीन्हों युद्ध
बिशाल ॥ दिव्य अस्त्र समुदाय को शीक्षकद्रोणाचार्य्य। सुनो
भूप तेहि सैनमें कियो अमानुष कार्य्य ॥ सोरठा ॥ बर्षिदिव्यशर
भूरि अगणित हय गजभटन बधि। दियो काल दिनपूरिबिच-
रिकाल बिकराल सम ॥ रोला ॥ विकल ह्वै पांचाल भट तहँ

कियो आरतनाद । पूर्बसिन्धुहि मथतजैसे व्यथितभे सबयाद ॥ द्विजहि बर्षत दिव्य शर लखि बिकल निजदल देखि । पार्थसों इमिकहतभे यदुनाथ प्रभुअवरेखि ॥ द्रोणकरि झरि दिव्यशर की बधतअब सबसैन । जीतिताकहँ बधैजगमें कौनअस जग जैन ॥ सुजयहितधनुगहेजौलगिलरतद्रोणाचार्य्य ।नहींतौलगि सिद्धह्वैहै धर्मनृपकोकार्य्य ॥एकयाकेमरणकीहैयत्नसुनियेतौन। पुत्रकोसुनिमरणजबधनुतजैयहबलभौन ॥बधैयहितद्रुपदसुत भटधृष्टद्युम्नअमान। कृष्णकेयेबचनसुनिकै भीमकरिअनुमान॥ बाहि गरुई गदा बिधिकै द्विरद अश्वत्थाम । बध्यो अश्वत्थाम कहँ इमि कियो शब्द अठाम ॥ द्रोणसो सुनि क्षोहबश कछु मोह मनमहँ ल्याय । फेरि धीरज गह्यो गुणि निज पुत्रको व्यवसाय ॥ जानि मिथ्या तासु जल्पन महा रिससों पूरि । तजतभो पांचाल दलपै दिव्य शायक भूरि ॥ ब्रह्म अस्त्र प्रयोग करि बधि रथी बीस हजार । सहसगज बधि बध्यो अयुत सुबीर तुरँग सवार ॥ भल्लसों बसुदान नृपको काटिशीशसठौर। पंचशत भट मत्स थरके बधतभे तेहिठौर॥ सुभट संजय देश के षटसहस बधि तेहि काल । कियो भीषमरूप धरणिहि द्रोण बीर बिशाल ॥ करत दावानल सदृश तरु क्षत्रियनको नाश । देखि द्रोणहि आइ नभपै ऋषय ताके पास ॥ अत्रि बिश्वामित्र गौतम जामदग्निमहान । औरबिश्वामित्रकश्यप आदिसुमुनि सुजान ॥ द्रोणसोंइमि कहतभे तुमकरत युद्धअधर्म । नहीं तुम कहँ उचित ऐसे करब अनुचितकर्म ॥ दिव्यअस्त्र अमोघकेजे नहींजानतभेद । दिव्यशरसों बधत तिनहिं न गहत तुम निर वेद ॥ दोहा ॥ प्रातभयोतो मरनदिन अबमतिकरोअधर्म ।तजि आयुध साधन करहु देह पतन के कर्म ॥ मुनि गणके ये बचन सुनि द्रोण बिप्र अनुमानि । सुतबध बूझो धर्म सों अति सतबकता जानि ॥ सोरठा ॥ तेहि क्षणश्रीयदुराय जाय निकट नृप

धर्मके । कहत भये समुझायविजय अजय तो हाथ अब ॥ रोला ॥ आजु जीयत बचहि जो भट द्रोण तौ बलऐन । दिव्य शायक बर्षि तुमकहँ करिहि अवशि असैन ॥ इतौ मिथ्या कहौ सोऊ धर्मको उपचार । भूप ताते बाचिहैं इतजीव कइक हजार ॥ कृष्णके इमि कहत बोले भीम बचन अनूप । जौन मालवदेश को पति इन्द्र बर्मन भूप ॥ रह्यो अश्वत्थाम नामक तासु द्विरद अमान । ताहि बधि हम आजु ऐसो कियो शोर महान ॥ मारि अश्वत्थामकहँ हम दियोमहिपै डारि । द्रोण नहिं परतीति कीन्हों मोहिं झूंठ बिचारि ॥ सुनो ताते कहत केशवताहि गुणि हित आम । द्रोण सों तुम कहौ मारोगयो अश्वत्थाम ॥ भीमके ये वचन सुनिकै धर्म नृप अनुमानि । सुखद शासन कृष्ण को करतव्य अतिशय जानि ॥ गहेभीम असत्यको गुणिसत्यजय कोहेत । द्रोण सों इमिकहतभे नृपधर्मधर्मनिकेत ॥ दोहा ॥ अश्वत्थामा बधिगयो इविधि पुलित स्वर भाखि । कुंजर इमिफिरि कहतभो ऋजु उचार ढिगराखि ॥ नृपके ऐसे वचनसुनि द्रोण सांच अनुमानि । पुत्र शोकते विकलभे निज मरिबो उरआनि ॥ सोरठा ॥ द्रोणहिं विकल निरेखि धृष्टद्युम्न पांचालपति । बध करिबो अवरेखि शर अमोघयोजित कियो ॥ चौपाई ॥ ज्वाल जाल समदीप्त कराला । लखिसो दिव्य सुबाण बिशाला ॥ तासुबारिबे में रहिसयतन । बार्‌यो द्रोण मारिशरबरतन ॥ भिरि दोऊभट अमरष लीन्हें । दिव्यशरनकी बर्षाकीन्हें ॥ द्रोणतहां अति धनुविधि ठाट्यो । शरसों तासुधनुष ध्वजकाट्यो ॥ धृष्टद्युम्न तबबर धनुधारी । बेध्यो द्विजहि मारि शर भारी ॥ द्रोण फेरि बरभल्ल प्रहारी । काट्यो धनुबर तासु प्रचारी ॥ फेरि बर्षि शायक अनियारे । बधिहय तासु भूमिपहँ डारे ॥ बिरथ विधनु तब सों भट ह्वैकै । गहि असिचर्म क्रोधसों ग्वैकै ॥ करत पैतरे इकइसबिधिकै । चालो रचत बाणभट सिधिकै ॥ सो लखि

द्रोण बीर बलधामा । तज्यो अस्त्र बैतस्तिक नामा ॥ नृपतेहि क्षण सात्यकि भटनायक । काट्यो ताहि मारि दशशायक ॥ लखि सात्यकिको कर्म अमानुष । भये प्रशंसत सिगरे धानुष ॥ काटिअस्त्र बैतस्तिकनामहिं । लियोबचै दलपति बलधामहिं ॥ तब कृपकर्ण भूप दुर्योधन । कोपि तासु कीन्हों अवरोधन ॥ अरु भट बिष्वक्सेन अमाना । घेरिलगे बरषन बर बाना ॥ तेहिथर सात्यकि सबसों भिरिकै । घोरयुद्ध कीन्ह्यों तहँ थिरिकै ॥ दोहा ॥ तेहिक्षण बन्धुन सहित बढ़ि धर्म महीप अमान । कर्णादिक सों भिरतभे बर्षत अबिरल बान ॥ धृष्टद्युम्न अरु द्रोणतहँ धनु धुनिसों दिशिपूरि । घोरयुद्ध कीन्हों तहां बर्षि दिव्यशर भूरि ॥ सोरठा ॥ द्रोणाचार्य्यहि देखि अति दुस्तर बिक्रम करत । भीमसेन अवरेखि कहत भये द्विज द्रोणसों ॥ रोला ॥ हेत कुरुपति भूपके तुमकिये बहु ब्यवसाय । बिप्रअब कतनिठुर ह्वै इमि बधत भट समुदाय ॥ पुत्रको सुनि मरण अबहूं गहत नहिं निर बेद । जासु मरिबो सुनेभो मम भटनहूंकहँ खेद ॥ परम धनुधर प्राणसम प्रियपुत्र तासुबिनाश । सुनेहु अबनिज जीयबेकीगहे हौ तुम आश ॥ पञ्चदशकम बरषशत यहि भूमिपै करिभोग । तरुण सुतको मर्णसुनि नहिं तजतशस्त्र प्रयोग ॥ भीमकोसुनि बचन द्विज अति शोकसों ह्वै ग्रस्त । कर्ण कृप तो तनयनृपसों कह्यो बचन प्रशस्त ॥ सुजयहित सब पाण्डवनसों लरेहु सब लसयत्न । होइ तुवकल्याण पावो बिजय अनुपमरत्न ॥ तजत हैं हम अस्त्र ऐसो भाषि योधा बिप्र । धनुष आदिकअस्त्र रथपै राखिदीन्हों क्षिप्र ॥ परमयोगी योगबिधिसों साधि प्राणायाम । ध्यानधरि परमात्माको लसतभो अभिराम ॥ समय लहि तब धृष्टद्युम्न सुखड्ग गहिरथ त्यागि । बेगसों चलि द्रोणके ढिग गयोबधहित लागि ॥ जायताके सुरथपै तेहिखड्ग बाहतहेरि । बधौ मति गहि जियत ल्यावो पार्थभाष्यो टेरि ॥ क्रोधबशसुत

द्रुपदको नाहिं सुन्योसो आह्वान । काटि असिसों शीश द्विजको नदतभो बलवान ॥ केशगहि सो शीशदीन्हों फेलि मम दल माह । देखि सो इतकिये हाहाकार सब नरनाह ॥ सुभट बचे बीर तेऊ भगेतजि उत्साह । यथा टूटतबांधके काढ़िचलत बारि प्रवाह ॥ द्रोणजाय नक्षत्र पथपै लहोस्वर्ग अनूप । व्यासमुनि की कृपाते सो लख्योहम हे भूप ॥ शल्य कृप वृषसेन शकुनि उलूक अरु कृतबर्म । भगेगहि अति भीमभट दुःशासनादिक पर्म ॥ चेदिकेकय अरु प्रभद्रक सह शिखण्डी बीर । रहो तिन सों लरत अनतहि द्रोणसुत रणधीर ॥ तहां सो यहि ओर सुनि अति घोर शब्द समाज । जानि विचलत फौज नृपकी दुचित ह्वै द्विजराज ॥ कछुक लहि अवकाश उतसों भूपकेढिगआय । कह्यो सेना भजतिकत कत दुचित नृप समुदाय ॥ शोकपूरित भूपनाहिं कहि सको गहि अतिलाज । कह्यो कृपसों कहो जैसो भयो अनरथकाज ॥ बचन यह सुनि कृपाचारय कह्यो क्रमसों सर्व । गयो बधि जिमि धनुर्द्धर मणि द्रोण बीर अखर्व ॥ मरण सुनि निज जनकको ह्वै बिकल अश्वत्थाम । धीर धरि फिरि गहतभो अति क्रोधबल बुधिधाम ॥ दुन्दुभी बजवाइ योधन सहित वर्षत बान ॥ जूटि फिरि परभटनसों भोकरत अति घमसान । द्रोणसुत तेहि समय गुणि अरिसैन नाशन योग । अस्त्र नारायण दुसहको भयो करत प्रयोग ॥ भयो तात्क्षण शत्रुदल मधि प्रलयकाल समान । लगे निपतन तुरँग गज गण भूरि ह्वै गतप्रान ॥ पाण्डवी दल मध्य तेहि क्षणभयो हाहाकार । पार्थसों तब कह्यो इमि गुणि धर्मभूपउदार ॥ पितृ बधते गहे अमरष रुद्रसम ह्वै चण्ड । बधत ममदल द्रोणसुत तजि शस्त्र परम उदण्ड ॥ कालमुखगत जन्तुसम अब भई सब मम सैन । तासुरक्षण करौ तुम वरबुद्धि विक्रमऐन ॥ भूपके ये वचन सुनिकै पार्थ धीर धुरीन । द्रोण बधको गहे दुखभो कहत

वचन सुपीन ॥ देवब्रज द्विजगुरू कीन्हेंशस्त्र त्यागनभूप । धारि बिधिवत योगबिधि थिरिरहोसुमुनि स्वरूप ॥ द्रुपदसुत तेहि बध्यो यह भो महा अनरथ तात । भयो पूरित सिन्धु अघको करन अतिउत्पात ॥ केशगहि निज पिताकोशिर छेदिबोसुनि आम । धृष्टद्युम्नहिं बधनकोपणकियो अश्वत्थाम ॥ चरतकाल करालसम यहिकाल योधातौन । सकै ताकहँ आड़ि यहिक्षण सुरासुर नरकौन ॥ दोहा ॥ पारथके ये बचनसुनि भीम कह्यो अनखाय । कतबनबासी सुमुनि सम बोलत वचन अचाय ॥ कर्णादिक सौं सदलतुम युद्ध करौ जयऊटि । गदापाणि कै हम लख द्रोणतनयसौं जूटि ॥ सोरठा ॥ यह सुनिकै तेहिकालकह्यो पार्थसों द्रुपद सुत । यह श्रुति बचन रसाल बिप्रजौन षटकर्म रत ॥ चौपाई ॥ क्षात्र धर्ममें रत रणचारी । करत अधर्मयुद्ध अ-बिचारी ॥ जे नहिं दिव्य अस्त्रहैं जानत । रह्यो तिन्हैं तिनहींसों भानत । करि अधर्म अभिमन्युहि रणमें ॥ जो बधवाइदयो तेहि क्षणमें ॥ जो अमित्र सम पितुको गायो । जाबधहित ममजनम सोहायो ॥ जो मम पितुहि मारिजयलीन्हों ॥ समयपाय हमताब-धकीन्हों ॥ सोनअधर्म सुनो हेपारथ । बूझिलेहु हमकहत यथा-रथ ॥ आगे राखि शिखण्डिहि न्यारे । भीष्मपितामह कहँ तुम मारे ॥ सोनअधर्मनेकु अनुमाने । अवइमि कहतशांतिरससाने ॥ गहौहर्ष अतिशयाहित मानी । युद्धकरौ जय निजबश जानी ॥ सुनि यह द्रुपद तनयकी बानी । कहतभयो सात्यकिअभिमानी ॥ रेगुरुहिंसक मूढ़ अनारय । करि ऐसो अति कुत्सित कारय ॥ लजतन निलज कहत इमि बातै । नहिं गिरि परतबदनतेदांतै ॥ तजे शस्त्रगुरु बिप्रहि हतिकै । निजहि प्रशंसत महिमाअतिकै ॥ जो फिरि इमिकहि है अबिचारी । तौ बधिहौंतोहिं गदाप्रहारी ॥ यह सुनि धृष्टद्युम्न मन कसिकै । तासों कहत भयो इमिहँसिकै ॥ सत्यसत्यसात्यकि तुमधरणी । नहिंतुम समहमकुत्सितकरणी ॥

दोहा ॥ भूरिश्रवापछारिजब हन्यो हियेमें लात। तब न कछूबल करिसको अब यहि बिधि उमदात ॥ पारथदीन्हों काटिभुजतब करि योग विधान। बैठिरहो तब तासु बध तुम कीन्हों मनमान ॥ सोरठा ॥ ऐसो कुत्सित कर्म सोनभयो पातक कछू। हित उपकार सुधर्म ममकृत तेहि पातक कहत ॥ जयकर ॥ जो अब यहि विधि बचनकठोर। फेरि कहैगो ह्वै मुँहजोर ॥ तौ अति तीक्षण बाण प्रहारि। देहौं तोहिं भूमिपै डारि ॥ सुनिसात्यकि करि क्रोध अथोर। रथसों कूदि गदागहि घोर ॥ चलो तहां ताको बध चाहि। सोलखि भीम गहतभे ताहि ॥ सहदेवतासु सामुहें जाय। क्षमित करनलागे समुझाय ॥ तब हँसि कह्यो द्रुपद सुतबीर। छोड़ि देहु आवत रणधीर ॥ हनि हनि तीक्षण बाणअबाध। देहौं दुरैयुद्धकीसाध ॥ यह सुनिसात्यकिवीरउदार। निछुटनको उझकोबहुबार ॥ दोऊ मत्त मतंग समान। चाहैंक- रन घोर घमसान ॥ सो लखि कृष्ण धर्म नृप रत्न। तिन्हैं क्ष- मित कीन्ह्यों करि यत्न ॥ फिरिरथपै सात्यकिहि चढ़ाय। लागे करन युद्ध बेवसाय ॥ तेहिक्षण द्विजसुत बीर उदण्ड। तजि नारायण अस्त्र प्रचण्ड ॥ शत्रुसैनमधि हेक्षितिपाल। रोप्यो प्रलय काल विकराल ॥ प्रगटि प्रगटि शायक समुदाय। पर दल बधन लगे दृढ़घाय ॥ जिमि जिमिलरैं उतैके बीर। तिमि तिमि प्रगटैं अगणित तीर ॥ बधि बधि हय गज योधा भूरि। दई रुधिर की सरिता पूरि ॥ दोहा ॥ दहत अग्नि सों बिपिन तिमि निजदल मर्दत देखि। पार्थहि लखि मध्यस्थसम कह्यो धर्म नृप तेखि ॥ बधवायो अभिमन्यु कहँ जोकरिमहा अधर्म। जो दीन्हों दुर्योधनहि कवचअभेद अभर्म ॥ जौन बर्षिब्रह्मास्त्र कहँ लघुकीन्हीं मम सैन। जौबधि द्रुपद बिराटकहँ कीन्होंमोहिं अचैन ॥ सोरठा ॥ ताको बध यहिकाल नाहिं पार्थहि रोचितभयो। ताते बीर बिशाल लरत न निज बिक्रम सदृश ॥ चौपाई ॥ भी-

ष्म द्रोणको बिक्रम सागर। पार उतरि ममदल भटनागर॥ द्विजसुत बललघुशरमधि डूबत। यह लखि गुणि अबममन ऊबत॥ अब सब जय आशातजितजिकै। निज निज गेहजाहु भजिभजिकै॥ बंधुन सहित अग्नि मधिधसिकै। हमतनदाहब मुनिसम लसिकै॥ यहसुनि केशव बांह उठाई। टेरिभटनसों कहे बुझाई॥ भागहु मति धीरजधरि फिरिफिरि। हमजो कहैं करो सो थिरि थिरि॥ तजितजि आयुध बाहनरूरे। महिपै खरेहोहु मुदपूरे॥ बिनुबाहन बिनु आयुध जाही। लखत न बधत अस्त्र यह ताही॥ यहसुनि सबभट मुदसों पागे। तुरतहि बाहनआयुध त्यागे॥ इतनेमें अति अमरष गहिकै। निज बिक्रमकी गरिमाकहिकै॥ रथ बढ़वाय भीम पण करिकै। द्विजपहँ भीम चलो पण धरिकै॥ अभिमंत्रित बाणनसोंगोपित। भीमहिक्रियो द्रोण सुत कोपित॥ दिब्य शरन मधि भीम अमाना। लसो ज्वाल मधि सूर समाना॥ पार्थ भीमकहँ गोपित देखी। बारुण अस्त्र तजो अवरेखी॥ तेजअस्त्र नारायण बरको। कछु ऋजु करि करि लाघव करको॥ केशव सहित कूदि रथबरसों। चलो भीमके ढिग तेहि थरसों॥ दोहा॥ नरनारायणते उभय निज प्रभावसों भूप। समित करतभे बिप्रकोअस्त्र अमोघ अनूप॥ रथ बढ़ाय अति बेगसों धृष्टद्युम्न तेहिकाल। द्रोणतनयके तन हन्यो साठि शरनको जाल॥ सोरठा॥ द्रोणतनय भटचण्ड ताहि अनगिने शर हने। दोऊबीर उदण्ड घोर युद्ध कीन्हों तहां॥ तोमर॥ भट द्रोण सुवन अमान। तहँ बर्षि अगणितबान॥ धनु ध्वजा काटि सटेक। तेहि हन्यो बाण अनेक॥ सोबीरसात्यकि देखि। बढ़ि भिरो अतिशय तेखि॥ भट द्रोण सुतहि प्रचारि। बसु बीस बाण प्रहारि॥ बधि हयन धनुध्वजकाटि। तेहिहन्यो बहुशर डाटि॥ अति बिकल बिप्रहि पेखि। कृप कर्णसह अवरेखि॥ तो तनय बर्षत यत्र। बढ़ि भिरो तासों तत्र॥ तहँ सात्य-

की भटराज। नृप कियो अद्भुत काज॥ शर बरषि बिक्रम ऐन। करि तिन्हैं बिमुख अचैन॥ बहुसहस योधामारि। भो देत म-हिपैडारि॥ सो देखि अनुपम बीर। भट द्रोणसुत रणधीर॥ शर सुपर्बाण सुनाम। तेहि हनतभो बलधाम॥ सोबेधि ताको गात। भो सर्प सदृशबिभात॥ ह्वै इबिधि बेधित तौन। गिरि परो रथपै मौन॥ तब सारथी भयपूरि। रथ हांकि लैगो दूरि॥ लखि द्रुपदसुत अनखाय। बढ़ि भिरतभो शर छाय॥ दोहा॥ धृष्टद्युम्न अरु द्रोणसुत दोऊ धीर धुरीन। शरपंजर रचि उभय दिशि कियोयुद्ध अति पीन॥ कर लाघवकरि द्रोणसुत द्रुपद तनय के भाल। हन्योबाण तब होतभो मोहित बीर बिशाल॥ सोरठा॥ इमि बेधित ह्वै बीर द्रुपद तनय मोहित भयो। सो लखिकै रणधीर पांच सुभट द्विजसों भिरे॥ माहिछरी॥ गतचेत सेनापतिहि लखतहि भीम पारथ रिसभरे। अरु वृद्धक्षत्र म-हीप अरु युवराज बरणे भटखरे॥ अरु देश मालवको सुदर्शन भूप बरषत शरघने। भिरि द्रोणसुत रणधीरसों भे लरत अति अमरषसने॥ तेहि समयद्रोणाचार्य्यको सुत बीरअति बिक्रम कियो॥ शरकाटि कइकहजार सबके गात अगणित शरदियो॥ वधि वृद्धक्षत्रहि बधतभो युवराज भटहि प्रचारिकै। फिरिनृप सुदर्शन को सुयमपुर दियो बाण प्रहारिकै॥ दोहा॥ लखि ति-नकोबध क्रोधकरि गरजि भीम बलवान। बर्षतभो द्विजबीर पहँ कालदण्ड समबान॥ यहि बिधि शरपंजर कियेदोऊ क्षत्री बिप्र। नहिंजेहिमधि अन्तरलह्यो पावमान गतिक्षिप्र॥सोरठा॥ तकि दोउनके गात दोऊबहुशायक हने। दोऊभट अवदात बहुधनु काटे दुहुनके॥ चौपाई॥ गरजि गरजि दोऊ धनुधारी। कीन्हों तहांयुद्ध अतिभारी॥ भीमसेन तहँद्विजहि प्रचाख्यो। बज्रसरिश शर भ्रूमधि माख्यो॥ तासों भिदि द्विजमुर्छित ह्वै-कै। बहुरि चेति शर बरष्योज्वैकै॥ अतिगर्वितदोऊ गुरुभाई।

नृपकीन्ह्यों तहँ दुसह लराई ॥ भीमसेन के सूत सुजानहि । विप्र व्यथित कीन्हों हति बानहि ॥ मोहित भयो सूत तबताको । भगे तुरंगजे धिनु सबताको ॥ भीमसेनकहँ बिचलत देखी । परदलभगो बिपति अवरेखी ॥ पारथ निजदल बिचलत देखी। भिरयोद्रोणसुतसों अतितेखी ॥ सोलखि उतके योधा रूरे । फिरि फिरि लरनलगे रिस पूरे ॥ भटमणि द्रोणातनय तेहिक्षन में । महा क्रोधसों भरिगुणि मनमें ॥ तजो अस्त्र आग्नेय महाना । जोअति दुसह असोघ अमाना ॥ नभ मढ़ितौन अस्त्र जियकर्षण । लागो उलकासम शरबर्षण ॥ तेहिक्षण हयगज भटअरि दलके । मेतिमि यथा मीन बिनजलके ॥ पूरो प्रलय शत्रु दलमाहीं । पारथ गुन्यो बचतकोउ नाहीं ॥ तब सब अस्त्रशमन अनुमानी । तजतभयो ब्रह्मास्त्र सुज्ञानी ॥ तासों समित भयो अरिशायक । जो क्षणमें दल नाशन लायक ॥ दोहा ॥ तेहि क्षण केशव पारथहि कुशल अछत लखि भूप । मम दिशि पूरो शोचअति पर दिशि हरष अनूप ॥ मंत्रहि अस्त्रहिझूठ गुणि द्विज सुतआनि गलानि । रथ धनुशर तजि चलतभो बन बसिबो अनुमानि ॥ तेहिक्षण वेदव्यास मुनि सादर तेहि थरआय । आगेद्विज सुतबीर के खड़ेभये सुखदाय ॥ सोरठा ॥ वेदव्यास कहँ देखि अश्वत्थामा कहतभो । प्रभु अचरजअवरेखि मोहिंभई अति ग्लानि अब ॥ तज्यो अस्त्र आग्नेय कृष्ण पार्थ के नाशहित । सो वह अस्त्र असेय व्यर्थ भयो वे नहिंमरे॥ तासुहेत समुझाय कहिये जेहि संशय मिटै । सो सुनिव्यास सचाय कहो द्रोण के सुवनसों ॥ रोला ॥ हेविप्र बूझत जौन तुम हौ अर्थ तासुमहान । सुनो मनदै तौन हम अब कहत सहित बिधान ॥ जौन नारायण महाप्रभु पूर्वजनको पूर्व । बिश्वकृत सो धर्म केरो भयो पुत्रसुगूर्व ॥ लगो सो मैनाक गिरिपै करन तप अतिमान । ज्वलित रविसम खरो रहिकरि ऊर्ध्वबाहु महान॥

कियो आठ्ठ सहस बरष सुवायु भुकतप पर्म। पूरिगो तपतेज सौं ब्रह्माण्ड पूरणधर्म॥ तहां आये आपु शम्भु पिनाक तेज- सधाम। देखिनारायण कियोतेहिशिवासहित प्रणाम॥ जोरि पाणि पिनाक धृतहि प्रशंसिसहित सनेहु। कहो करिकै कृपा दुर्लभ सुवर मोकहँदेहु॥ बचन यह सुनि जानि आशय तासु आनँदपूरि। नीलकंठउदार प्रभुइमि कह्योआनँदपूरि॥ होहु परमअमेय बलबुधि पूर्णआतमा तात। सकैंगेनहिं तुम्हैं सहि सबलोकमें जेजात॥ आर्द्रसूखेअस्त्र जितने वायुअग्निमहान। सकैंजे नहिंतुम्हैंरुजकरि बिबिधबिधिकेबान॥ प्राप्तिरणमेंहोहुगे ममसदृश सबबिधिआपु। भाषि ऐसे गयेहरता त्रिबिधबिधके तापु॥ लह्यो यहिबिधि शम्भुसोंवर जौन देवअनूप। सोई ना- रायण द्विधा ह्वै गहतभो नरभूप॥ सोईनारायण सुनर प्रभु भये माया छन्न। करत कौतुक इबिधि के नृप वंशमध्य प्रपन्न॥ शम्भु तुम ये लहे तुमसों पूर्ववर बरदान। होहिंअस्त्रन बिफल कैसे गुणोहो मतिमान॥ बचन यह सुनि द्रोणसुतकरि मनहिं तिनहिं प्रणाम। चढ़ि सुस्यन्दन चलो डेरन परम आनँद धाम॥ भूप दुर्योधनो ससैन तदनु डेरन आय। करतभो अव- हार गुरुबध देखि परम अचाय॥ तहां पारथ दिवसमें कछु महा अचरज देखि। कहतभो मुनि देवसों तेहि समय निज ढिग पेखि॥ सुनो प्रभु हम लरत रणमें लखत अचरज एक। कहत तुमसों तौनदेहु बुझायसहित बिवेक॥ पुरुषपरम प्रग- ल्भ दिव्य स्वरूप तेजसधाम। गहे दीह त्रिशूल कीन्हें पाणि ऊरध माम॥ चलत आगे सुरथके मम जितै रथ चलिजात। छुअत पगसों भूमि नहिं नाहिंतजत शूल अघात॥ बचन यह सुनि कह्यो मुनिसोंशम्भु ईश सुनाथ। सुजय हितलो कृपा करिकै रहतहैं तुवसाथ॥ भाषि यहि बिधि शम्भु प्रभुकी करी अस्तुतिव्यास। तौन बिधिवत कहतहौं मैं भूप तुम्हरे पास॥

स्तोत्र ॥ प्रजापतीनांप्रथमं तैजसंप्रथमंप्रभुं । भुवनंभूर्भुवंदेवंसर्व लोकेश्वरंप्रभुं ॥ ईशानंवरदंपार्थदृष्टवानसिशंकरं । तंगच्छशरणंदेवं वरदंभुवनेश्वरं ॥ महादेवंमहात्मानमीशानंजटिलंशिवं । त्र्यक्षंमहाभुजंरुद्रं शिखिनंचीरवाससं ॥ महादेवंहरंस्थाणुं वरदंभुवनेश्वरं । जगत्प्रधानमधिकं जगत्त्रयमधीश्वरं ॥ जगद्योनिजगद्बीजं जयिनंजगतोगतिं । विश्वात्मानंविश्वसृजं विश्वमूर्तिंयशस्विनं ॥ विश्वेश्वरंविश्वतरं कर्मणामीश्वरंप्रभुं । शम्भुंस्वयम्भूभूतेशम्भूतभव्यभवोद्भवं ॥ योगंयोगेश्वरंसर्वंसर्व लोकेश्वरेश्वरं । सर्वश्रेष्ठंजगत्श्रेष्ठं वरेष्ठंपरमेष्ठिनं ॥ लोकत्रयविधातारमेकंलोकत्रयाश्रयं । सुदुर्जयंजगन्नाथं जन्ममृत्युजरातिगं ॥ ज्ञानात्मानंज्ञानगम्यं ज्ञानश्रेष्ठंसुदुर्विदं । दातारंचैवभक्तानां प्रसादविहितान्वरान् ॥ तस्यपारिषदादिव्यारूपैर्नानाविधैर्विभो । वामनाजटिलामुंडा ह्रस्वग्रीवामहोदराः ॥ महाकायामहोत्साहा महाकर्णास्तथापरे । आननैर्वैकृतैःपादैः पार्थिवेशैश्चवैकृतैः ॥ ईदृशःसमहादेवः पूज्यमानोमहेश्वरः । सशिवस्तात तेजस्वी प्रसादाद्यातितेऽग्रतः ॥ दोहा ॥ तब तुम पावतहौ सुजयमारि महत दल तौन । द्रोण द्रोण सुत कृप करण सों रक्षितहैं जौन ॥ यहि बिधि कहि मुनि पार्थसों मोद हिये में घेरि । शिवकी अस्तुतिफिरिकरी सुनोकहतसोफेरि ॥ शिवस्तोत्र ॥ नमः कुरुष्वकौंतेय तस्मैशान्तायवैसदा । रुद्रायशितिकंठाय कनिष्ठायसुवर्चसे ॥ कपर्दिनेकरालाय वरदायहरायच । याम्यायव्यक्तकेशाय सद्वृत्तेशंकरायच ॥ काम्यायहरिनेत्राय स्थाणवे पुरुषायच । हरिकेशायमुंडाय कृशायतरुणायच ॥ भास्कराय सुतीर्थायदेवदेवायरंहसे । बहुरूपायशर्वायप्रियायाप्रियवाससे ॥ उष्णीषिणेसुवक्त्राय सहस्राक्षायमीढुषे । गिरीशायसुशान्ताय पतयेचीरवाससे ॥ हिरण्यवाहवेराजन्नुग्रायपतयेदिशां । पर्जन्यपतयेचैव भूतानांपतयेनमः ॥ वृषाणांपतयेचैव गवांचपतये

नमः। वृक्षैरावृत्तकायाय सेनान्यैमध्यमायच॥ स्तवहस्तायदेवाय धन्विनेभार्गवायच। बहुरूपायविश्वस्यपतये मुंजवाससे॥ सहस्रशिरसेचैव सहस्रनयनायच। सहस्रवाहवेचैवसहस्रचरणायच॥शरणंगच्छकौन्तेयवरदंभुवनेश्वरं। उमापतिंविरूपाक्षं दक्षयज्ञनिवर्हणं॥ प्रजानांपतिमव्यग्रं भूतानांपतिमव्ययं। कपर्द्दिनंविषावर्त्तं वृषनाभंवृषध्वजं॥ वृषदर्प्पंवृषपतिं वृषशृंगं वृषर्षभं। वृषांकंवृषभोदारं वृषभंभृषभेक्षणं॥ वृषायुधंवृषशरं वृषभूतमहेश्वरं। महोदरंमहाकायं द्वीपिचर्मनिवासिनं॥ लोकेशंवरदंमुंडं ब्रह्मण्यंब्राह्मणप्रियं। त्रिशूलपाणिवरदं खड्गचर्म्मधरंप्रभुम्॥ पिनाकिनंखड्गधरं लोकानांपतिमीश्वरं। प्रपद्येदेवमीशानंशरण्यंचीरवाससं॥ नमस्तस्मैसुरेशाय यस्यवैस्रवणःसखा। सुवाससेनमोनित्यं सुव्रतायसुधन्विने॥ धनुर्द्धरायदेवाय प्रियधन्वायधन्विने। धन्वन्तरायधनुषे धन्वाचार्य्यायतेनमः॥ उग्रायुधायदेवायनमःसुरवरायच।नमोस्तुबहुरूपाय नमोस्तुबहुधन्विने॥ नमोस्तुत्रिपुरघ्नाय भगघ्नायचवैनमः। वनस्पतीनांपतयेनराणां पतयेनमः॥ अपांचपतयेनित्यं देवानांपतयेनमः। पूष्णोदन्तविनाशाय त्र्यक्षायवरदायच॥ हरायनीलकंठायस्वर्णकेशायवैनमः। कर्म्माणियानिदिव्यानि महादेवस्यधीमतः॥ तानितेकीर्त्तयिष्यामियथाप्रज्ञंयथाश्रुतं। दक्षस्ययजमानस्ययज्ञविध्वंसनादिकं॥ इतिशिवस्तोत्रंसमाप्तम्॥

दोहा॥ इमि कहिकै मुनि कहत भे किया शम्भु जो तत्र। कहो तौन हरिवंशमें ताते कहोनअत्र॥ फेरित्रिपुरके दाहकी कथा कही कछुव्यास। कर्णपर्व में सो कियो बिस्तर सहितप्रकास॥ पञ्चवक्त्र प्रभुशम्भु कहँ बालरूप करिअंक। गईपार्वती तहँ लखत त्रिपुर दाहको अंक॥ देखितथा तेहि शम्भुकहँ वज्र उठायो शक्र। भुजथम्भन भो तासु जबशंकर हेरोवक्र॥ सुरन सहित सुरनाथ तब बिधिपहँ जाइस त्रास। कहिनिज दशा

बिरंचिकहँ लै आये शिवपास ॥ आइ सुरन सह बिधि कियो शिवकी अस्तुतिभूरि । अट्टहास तब शिवकियो अनुकम्पा सों पूरि ॥ तबसुरपतिको भुज भयो यथा पूर्ब तेहिकाल । पृथक पृथक तब सुरकियो अस्तुति तासुरसाल ॥ संजयउवाच ॥ यहि प्रकार प्रभु शम्भुकी करि अस्तुति बहुबार । कहतभये इमि पार्थसों ब्यास मुनीशउदार ॥ पूर्ब दिये गिरिपै तुम्हैं बर बरदान गिरीश । तातेचाहत युद्धमें तुमजय बिस्वेबीश ॥ फेरि स्वप्न में अस्त्र सह दिये तुम्हैं बरदान । सोपण पालन हेतु नितितोसँग रहईशान ॥ शम्भु कृपातेलहहुगे अवशि बिजयकरि युद्ध । सर्ब जगत कृत सर्ब प्रभु चाहततो यश शुद्ध ॥ जो पढ़िहैं अस्तोत्र यह सो लहिहैं जयपर्म । शम्भु कृपातापर रहिहिं पूरणानिरखि सुधर्म ॥ सोरठा ॥ यह सुपर्ब मनलाय जे पढ़िहैं सुनिहैं सुनो । परम पुण्य सुखदाय तेलहिहैं यश बिजय गुण ॥ इमि कहिकै मुनिब्यास गुप्तभये तेहिठौरन्नृप । पारथभरे हुलास सैन सहित डेरन गये ॥ रामकृष्ण जगदीश भूपकृपा जापर करत । सुर सुरपति बिधिईश तासु सहायी रहत निति ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्वाज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथकबीश्वरात्मजेन गोपीनाथेनकबिनाबिरचितेभाषायांमहाभारत दर्पणेद्रोणपर्बणिपञ्चदशोऽध्यायः १५ ॥

द्रोणपर्ब समाप्तः ॥

मुंशिनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने लखनऊ में छ..
मई सन् १८६१ ई० ॥

अनेक नीतिकहकर दुर्योधनको युद्धसे निषेध करना और उसे न मानना और दोनों ओर युद्धका उद्योग होना ॥

भीष्मपर्व ॥

भूगोल खगोलादि सृष्टिविस्तार और नदी पर्वतादि संख्या व षट्ऋतु वर्णन अर्जुन व श्रीकृष्ण सम्बाद और भगवद्गीता वर्णन पश्चात् दशदिन भीष्मजीका पाण्डवोंसे युद्ध व बध ॥

द्रोणपर्व ॥

द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, दुश्शासन और दुर्योधनादि बीरोंसे पाण्डवों का घनघोरयुद्ध द्रोणाचार्य कृत चक्रव्यूह निर्मान व चक्रान्तर अभिमन्यु युद्ध व बध पश्चात् द्रोणाचार्य बधादि कथायें वर्णित हैं ॥

कर्णपर्व ॥

पाण्डवों प्रति कर्णका युद्ध व बध कथा है ॥

शल्य व गदापर्व ॥

राजा शल्यका सेनापति होकर दुर्मर्षण, श्रुतान्त, जयत्सेन, सुशर्मा शकुनि और उलूकादिकों समेत युद्ध व बध और दुर्योधन व भीमसेन का गदायुद्ध व दुर्योधनकी जंघभंगादि कथायें वर्णित हैं ॥

सौप्तिक व स्त्रीपर्व ॥

अश्वत्थामा करके पाण्डवोंके सुप्तपुत्रोंका नाश और कुरुक्षेत्रमें कौरवादिकों की रानियोंका विलाप ॥

शान्तिपर्व ॥

इसमें चार प्रकारके धर्म अर्थात् राजधर्म आपद्धर्म दानधर्म और मोक्ष धर्मादिका सविस्तर वर्णनहै सम्पूर्ण विषयवासनारहित शम दम उपरति तितिक्षा श्रद्धा समाधानादि षट्सम्पत्ति साधन योग समाधिकथन ईश्वराराधनासक्त सर्वाहंकार द्वेष ममतादि त्यक्त ध्यानधारणा अन्तरंग बहिरंग साधनादि अनेक मार्गसे मोक्षमार्ग प्राप्तोपाय वर्णन ॥

अश्वमेधपर्व ॥

श्रीकृष्णके उपदेशसे अर्जुन भीमसेन नकुल और सहदेवादि चारों भाइयों को चारों दिशाओंको विजय करके द्रव्योपार्ज्जन पश्चात् राजा युधिष्ठिर को अश्वमेध यज्ञ करना और जरासंधादि राजाओंका बध ॥

आश्रमबास मुशल महाप्रस्थान व स्वर्गारोहण पर्व ॥

युधिष्ठिरादि पांचोंभाइयोंको आश्रममें बास करना पश्चात् छत्तीसवां बर्ष वर्त्तमान होनेपर अपशकुन दृष्टिआना व यदुवंशियोंको मदोन्मत्तहो परस्पर युद्धकर नाशहोना व श्रीकृष्णचन्द्रके पैरमें जरानाम व्याधाको बाण मारना व श्रीकृष्ण बलदेवको परमधामजाना व युधिष्ठिरादि पांचोंपाण्डवों को महाप्रस्थान यात्राकर स्वर्गगमन ॥

अनुशासनपर्व ॥

सम्पूर्ण धर्म्म व दान व सम्पूर्ण ब्रतोंका फल व सम्पूर्ण माहात्म्य व ग्राहयाग्राहय वस्तुविचार व तपस्वी व धर्मात्माओं के लक्षण ॥

हरिवंशपर्व दोभाग ॥

इसके प्रथमभाग में दक्षोत्पत्ति, मारुतचरित्र, पृथूपाख्यान द्वादशादित्योंकी जन्मकथा श्राद्धफल और यदुवंशमें कृष्णजीका उत्पन्नहोके बसुदेवजी के द्वारा मथुरासे गोकुलमें नन्दगृहगमन पश्चात् पूतना वत्सासुर बकासुर अघासुर प्रलम्बासुर और केशीआदिका बधकरना गोबर्द्धनोद्धारण व मथुरा गमन कंसबध और द्वितीयभागमें ऊषाचरित्र कृष्णसे मधुदैत्यका बध वामन नृसिंहादि चरित्र, देवासुर संग्राम, कैलासयात्रा, घण्टाकर्ण मोक्ष, पौण्ड्रक ऐकलव्यबध, श्रीकृष्णजीका पुष्करागमन, विचिक्रबध, कृष्ण बलदेवसे नन्दादिका समागम पर्वानुकीर्त्तन व हरिबंश वृत्तान्तादि कथायें वर्णित हैं ॥

महाभारत सबलसिंह चौहानकृत ॥

तुलसीकृत रामायणकी रीतिपर सुन्दर दोहा चौपाइयों में निर्मितहै-जिस्कदरपर्वं मुद्रित होगई हैं निम्न लिखित हैं ॥

आदिपर्व, सभापर्व, बनपर्व, बिराटपर्व, उद्योगपर्व, भीष्मपर्व, द्रोणपर्व, कर्णपर्व, शल्यपर्व, गदापर्व, स्त्रीपर्व, मुशलपर्व, महाप्रस्थानपर्व ॥